रतननाथ धर सरशार

आज़ाद-कथा

(संक्षिप्त हिंदी फ़साना-ए-आज़ाद)

अनुवाद : प्रेमचंद

[हिन्दीकोश]

Tittle: Azad Katha

Author: Ratannath Dhar Sarshar

Translator: Premchand

Release Date: 20 Jan 2021.

Edition: 1.0

Language: Hindi

While every precaution has been taken in the preparation of this book, the publisher assumes no responsibility for errors or omissions, or for damages resulting from the use of the information contained herein.

Suggestions and corrections are welcome.

Visit https://www.hindikosh.in for more…

भूमिका

पंडित रतननाथ धर 'सरशार' लखनवी उर्दू-भाषा के उपन्यास-साहित्य के नियामक हैं। उनकी रचनाएँ, जिनमें 'फ़साना-ए-आज़ाद' सर्वश्रेष्ठ है, और आज भी उर्दू-साहित्य का मुख उज्ज्वल कर रही है। इस वक़्त तक उर्दू में उपन्यासों की प्रथा न थी। भाषा-शैली भी वही थी, जिसका नमूना 'फ़साना-ए-अजायब' हैं — गद्य में भी अलंकार और तुकों की भरमार होती थी। पंडित रतननाथ ने भी बहुधा उसी ढंग की भाषा लिखी थी। वह जब किसी बाग या दृश्य का वर्णन करने लगते हैं, तो उनकी भाषा 'फसाना-ए-अजायब' के ढंग की हो जाती है। लेकिन उनके पात्रों की बातचीत बहुत ही स्वाभाविक और लखनवी बोलचाल की बहुत ही अच्छा नमूना है। पंडितजी 'अवध अखबार' के संपादक थे, और 'फ़साना-ए-आज़ाद' पहले उसी दैनिक पत्र (1878-80 तक) में प्रकाशित होता था। शायद पहले पंडित जी का विचार कोई बड़ा उपन्यास लिखने का न था। आज़ाद नाम के कल्पित चरित्र द्वारा वह वर्तमान समाज पर कटाक्ष करना और चुटकियों द्वारा उसमें नये भावों और विचारों का बीज बोना चाहते थे। पहली जिल्द के बड़े भाग में आज़ाद ही के सैर-सपाटों का जिक्र है, लेकिन आगे

चलकर प्रेम-चर्चा की जरूरत मालूम हुई, और कथा ने यह रूप धारण किया। अब उसकी बड़ी-बड़ी चार जिल्दें हैं, और उसमें लगभग 4000 पृष्ठ हैं। उनका पूरा हिन्दी अनुवाद किया जाए तो 12000 पृष्ठों का बृहद् ग्रंथ हो जाए, लेकिन पुस्तक में अनेक प्रसंग ऐसे हैं जिनसे न तो पात्रों पर प्रकाश पड़ता है, औ न हास्य या व्यंग्य ही का कुछ स्वाद मिलता हैं। कहीं-कहीं हास्य इतना नीरस और अश्लील हो गया है कि उसका अनुवाद करना अनुपयुक्त हैं। हमने इन प्रसंगों को छोड़ दिया है। फुटकर लेखों को भी हमने एक शृंखला में बाँधने की चेष्टा की है, बोलचाल की भाषा ज्यों-की-त्यों रहने दी है, बहुदा जगह की किफायत के लिए कई-कई वाक्यों को मिला दिया है। अतएव यह 'फ़साना-ए-आज़ाद' का अनुवाद नहीं, उसका एक परिष्कृत संस्करण है।

पंडित रतननाथ लखनऊ में पैदा हुए थे और उनका लड़कपन लखनऊ ही की गलियों में खेलने में गुजरा। उन्होंने लखनवी जीवन के सभी अंगों का अवलोकन किया और वे सारे दृश्य उनके स्मृति-पर अंकित हो गये थे। 'फ़साना-ए-आज़ाद' में आपको लखनऊ के भोले-भाले रंगीन नवाब मिलते हैं, उनके खुशामदी मुसाहबों के दर्शन होते हैं, उनकी बेगमात के हाव-भाव का चित्र नजर आता है। कहीं बाँके आते हैं, तो कहीं अफीमची, कहीं भठियारिनों की तिरछी चितवन है तो कहीं वेश्याओं के नाज-नखरे,

कहीं मदारी के तमाशे है, तो कही सरकस के, कहीं बाजार का मोल-भाव है तो कहीं मजलिसों की राग-रंग। यह सभी दृश्य इतने मनोरंजक, इतने हास्यमय हैं कि पढ़ते ही बनता है। पंडितजी हास्य रस लिखने में सिद्धहस्त थे। 'फ़साना-ए-आज़ाद' ने लखनऊ के उस पुराने विलासमय जीवन में कितना सुधार किया है, इसका अनुमान करना मुश्किल है। 'फ़साना-ए-आज़ाद' के अतिरिक्त 'सैर कोहसार' और 'जामे-सरशार' भी धर महोदय की उत्तम रचनाएँ है। उर्दू में इन पुस्तकों का कितना आदर हुआ, इसका अनुमान इसी से हो सकता है कि इनके आठ-नौ एडीशन हो चुके हैं और अब तक इनकी मांग में कमी नहीं हुई। उर्दू में शरर, मिर्जा रुसवा, हकीम मुहम्मद अली आदि उपन्यासकारों में किसी की रचनाओं का इतना प्रचार नहीं हुआ।

हमारी बहुत दिनों से यह इच्छा थी कि हास्य और विनोद के इस भंडार का मजा हिन्दी के पाठकों को चखाया जाए, लेकिन काम इतना बड़ा और इतने परिश्रम का था कि बार-बार हिम्मत टूट जाती थी। चार हजार उर्दू के बड़े-बड़े पृष्ठों को मथकर हिन्दी के एक हजार पृष्ठों में लाना आसान न था, पर हिन्दी प्रेमियों के प्रोत्साहन ने आखिर यह काम करा ही डाला। दो जिन्दों का इत्र आपकी सेवा में भेंट किया जा रहा है। इसकी सुगन्ध आपको

पसन्द आई, तो शेष दो जिल्दों का इत्र खींचने के लिए फिर कमर बाँधूँगा।

~ प्रेमचंद

आज़ाद-कथा

1

मियाँ आज़ाद के बारे में, हम इतना ही जानते हैं कि वह आज़ाद थे। उनके खानदान का पता नहीं, गाँव-घर का पता नहीं; खयाल आज़ाद, रंग-ढंग आज़ाद, लिबास आज़ाद दिल आज़ाद और मजहब भी आज़ाद। दिन भर जमीन के गज बने हुए इधर-उधर घूमना, जहाँ बैठना वहाँ से उठने का नाम न लेना और एक बार उठ खड़े हुए तो दिन भर मटरगश्ती करते रहना उनका काम था। न घर, न द्वार; कभी किसी दोस्त के यहाँ डट गए, कभी किसी हलवाई की दुकान पर अड्डा जमाया; और कोई ठिकाना न मिला, तो फाका कर गए। सब गुन पूरे थे। कुश्ती में, लकड़ी-बिनवट में, गदके-फरी में, पटे-बाँक में उस्ताद। गरज, आलिमों में आलिम, शायरों में शायर, रंगीलों में रंगीले, हरफनमौला आदमी थे।

एक दिन मियाँ आज़ाद बाजार में सैर सपाटा कर रहे थे कि एक बुड्ढे ने एक बाँके से कहा कि मियाँ, बेधे आए हो, या जान भारी है, या छींकते घर से चले थे? यह अकड़ते क्यों चलते हो? यहाँ

गरदन झुका कर चला कीजिए, नहीं तो कोई पहलवान गरदन नापेगा, सारी शेखी किरकिरी हो जायगी, ऐंड़ना भूल जाइएगा! इससे क्या वास्ता? यह शहर कुश्ती, पटे-बाँक और लकड़ी की टकसाल है। बहुत से लड़ंतिये आए, मगर पटकनी खा गए। हाथ मिलाते ही पहलवानों ने मारा चारों खाने चित्त।

यह सुनते ही वह मियाँ बाँके आग-भभूका हो गए। बोले — जी, तो कहीं इस भरोसे भी न रहिएगा, यहाँ पटकनी खाने-वाले आदमी नहीं हैं, बीच खेत पछाड़ें तो सही; बने रहें हमारे उस्ताद, जिन्होंने हमें लकड़ी सिखाई। टालों की लकड़ी फेंकना तो सभी जानते हैं, मैदान में ठहरना मर्दों ही का काम है। हमारे उस्ताद तीस-तीस आदमियों से गोहार लड़ते थे। और कौन लोग? गँवार-घामड़ नहीं, पले हुए पट्ठे, जिन पर उनको गरूर था। फिर यह खयाल कीजिए कि तीस गदके बराबर पड़े थे, मगर तीसों की खाली जाती थी। कभी आड़े हो गए, कभी गदके से चोट काट दी, कभी बन को समेट लिया, कभी पैंतरा बदल दिया। शागिर्दों को ललकारते जाते थे कि 'लगा दे बढ़ के हाथ, आ घुस के।' और वह झल्ला-झल्ला के चोटें लगाते थे, मगर मुँह की खाते थे। जब सबके दम टूट गए और लगे हाँपने, तो गदके हाथ से छूट-छूट पड़े। मगर वाह रे उस्ताद! उनके वही खमदम, वही ताव-भाव, पहरों लकड़ी फेंकें, मगर दम न फूले; और जो कहीं भिड़ पड़े तो बात की बात में परे

साफ थे। किसी पर पालट का हाथ जमाया, किसी को चाकी का हाथ लगाया। फिर यही मालूम होता था कि फुलझड़ी छूट रही है, या आतिशबाजी की छछूंदर नाच रही है, या चरखी चक्कर में है। जनेवा का हाथ तो आज तक कोई रोक ही न सका; वह तुला हुआ हाथ पड़ता था कि इधर इशारा किया, उधर तड़ से पड़ गया। बस, मौत का तीर था, गदका हाथ में आया और मालूम हुआ कि बिजली लौंकने लगी। मुमकिन नहीं कि आदमी की आँख झपकने पाए। ललकार दिया कि रोक चाकी, फिर लाख जतन कीजिए, भला रोक तो लीजिए। निशाना तो कभी खाली जाने ही नहीं पाता था। फरी उम्र-भर न छूटी। एक अंग ही लड़ा किए। छरहरा बदन, सीधे-सादे आदमी, सूरत देखे तो यकीन न आए कि उस्ताद हैं, मगर एक जरा सी बाँस की खपाच दे दीजिए, फिर दिल्लगी देखिए, कैसे जौहर दिखाते हैं! हम जैसे उस्तादों की आँखें देखे हुए हैं, किसी से दबनेवाले नहीं।

मियाँ आज़ाद तो ऐसे आदमियों को टोह में रहते ही थे, बाँके के साथ हो लिए और दोनों शहर में चक्कर लगाने लगे। चौक में पहुँचे, तो जिस पर नजर पड़ती है, बाँका-तिरछा; चुन्नटदार अँगरखे पहने, नुक्केदार टोपियाँ सिर पर जमाए, चुस्त घुटन्ने डाटे, ढाढे बाँधे हुए तने चने जाते हैं। तमंचे की जोड़ी कमर से लगी हुई, दो-दो विलायतियाँ पड़ी हुई, बाढ़ें चढ़ी हुई, पेशकब्ज, कटार, सिरोही, शेर-

बच्चा, सबसे लैस। बाँके को देख कर एक दुकानदार की शामत आई, हँस पड़ा।

बाँके ने आव देखा न ताव, दन से तमंचा दाग दिया। संयोग था, खाली गया। लोगों ने पूछा — क्यों भाई, क्यों बिगड़ गए?

तीखे होकर बोले — हमको देख कर बचाजी मुसकराये थे, हमने गोली लगाई कि दाँत पर पड़े और इनके दाँत खट्टे हो जायँ, मगर जिंदगी थी, बच निकले।

मियाँ आज़ाद ने अपने दिल में सोचा। यह बाँके तो आफत के परकाले हैं, इनको नीचा न किया तो कुछ बात नहीं। एक तंबोली से पूछा — क्यों भाई, यहाँ बाँके बहुत हैं?

उसने कहा — मियाँ, बाँका होना तो दिल्लगी नहीं, हाँ, बेफिक्रे बहुत हैं। और इन सबके गुरू-घंटाल वह हजरत हैं, जिन्हें लोग एकरंग कहते हैं। वह संदली रँगा हुआ जोड़ा पहन कर निकलते हैं, मगर मजाल क्या कि शहर भर में कोई संदली जोड़ा पहन तो ले एकरंग संदली जोड़ा कोई पहन नहीं सकता; कोई पहने तो गोली भी सर कर दे, इसके साथ यह भी है।

मियाँ आज़ाद ने सोचा कि इस एकरंग का टेटुआ न लिया, तो खाना हराम। दूसरे दिन आप भी संदली बूट, संदली घुटन्ना, संदली अंगरखा और टोपी डाँटकर निकले। अब जिस गली-कूचे से

निकलते हैं, उँगलियाँ उठती हैं कि यह आज इस ढब से कौन निकले हैं भाई! होते-होते एकरंग के चेले-चापड़ों ने उनके कान में भी भनक डाल दी। सुनते ही मुँह लाल चुकंदर हो गया। कपड़े पहन, हथियार लगा, चल खड़े हुए। आज़ाद तंबोली की दुकान पर टिक गए। उनका वेश देखते ही उसके होश उड़ गए। लगा हाथ जोड़ने कि भगवान के लिए मेरी ही टोपी ले लीजिए, या जूता बदल डालिए, नहीं तो वह आता ही होगा, मुफ्त की ठायँ-ठायँ से क्या वास्ता? इनको तो कच्चे घड़े की चढ़ी थी, कब मानते थे, गिलौरी ली और अकड़ कर खड़े हुए।

शहर में धूम हो गई कि आज आज़ाद और एकरंग में तलवार चलेगी। तमाशा देखनेवाले जमा हो गए। इतने में मियाँ एकरंग भी दिखाई दिए। उनके आते ही भीड़ छट गई। कोई इधर कतरा गया, कोई गली में घुसा, कोई कोठे पर चढ़ गया। एकरंग ने जो इनको देखा, तो जल मरा। बोला — अबे ओ खब्ती, उतार टोपी, बदल जूता। हमारे होते तू संदली जोड़ा पहन कर निकले। उतार, उतार, नहीं तो मैं बढ़ कर काम तमाम कर दूँगा।

मियाँ आज़ाद पैंतरा बदल कर तीर की तरह झपट पड़े और बड़ी फुर्ती से एकरंग की तोंद पर तमंचा रख दिया। बस हिले और धुआँ उस पार! बोले और लाश फड़कने लगी! बेईमान, बड़ा बाँका बना है, सैकड़ों भले आदमियों को बेइज्जत किया। इतने चाबुक

मारूँगा कि याद करेगा। अभी उतार टोपी, उतार, उतार, नहीं तो धुआँ उस पार!

संयोग से एक दर्जी उधर से निकला, उसने एकरंग की टोपी उतार जेब में रखी। एकरंग की एक न चली।

आज़ाद ने ललकारा — हौसला हो तो आओ, दो-दो हाथ भी हो जाएँ, खबरदार जो आज से संदली जोड़ा पहना!

शहर भर में धूम हो गई कि मियाँ आज़ाद ने एकरंग के छक्के छुड़ा दिए, चुपचाप दर्जी से टोपी बदली। सच है, 'दबे पर बिल्ली चूहे से कान कटाती है।' मियाँ आज़ाद की धाक बँध गई। एक दिन उन्होंने मुनादी कर दी कि आज मियाँ आज़ाद छह बजे से आठ बजे तक अपने करतब दिखाएँगे, जिन्हें शौक हो आएँ। एक बड़े लंबे-चौड़े मैदान में आज़ाद अपने जौहर दिखाने लगे। लाखों आदमी जमा थे। मियाँ आज़ाद ने नीबू पर निशाना बनाया, और तलवार से उड़ाया, तो निशान के पास खट से दो टुकड़े। कसेरू उछाला और पाँच-छह बार में छील डाला! तलवार की बाढ़ से दस-बारह की आँखों में सुरमा लगाया। चिराग जलाया और खाँड़ा फेंकते-फेंकते गुल काट डाला, लौ अलग, बत्ती अलग। एक प्याले में दस कौड़ियाँ रखीं और दो पर निशान बना दिया। दोनों को तलवार से प्याले ही में काटा और बाकी कौड़ियाँ निलोह बच

निकलीं। लकड़ी टेकी और बीस हाथ छत पर हो रहे। गदके का जरा इशारा किया और बीस हाथ उड़ गए। चालीस-चालीस आदमियों ने घेरा और यह साफ निकल भागे। पलंग के नीचे एक जंगली कबूतर छोड़ दिया गया। उन्होंने उसको निकलने न दिया।

एक फिकैत ने ये करतब देखे तो बोला — अजी यह सब नट-विद्या है, मैदान में आएँ तो मालूम हो।

आज़ाद — अच्छा! अब तुम्हें भी मैदान में आने का दावा हुआ! तुम्हारे एकरंग का तो रंग फीका हो गया, अब तुम मुँह चढ़ते हो, तुम्हें भी देखूँगा।

फिकैत — चोंच संभालो।

आज़ाद — तुम्हारी शामत ही आ गई है, तो मैं क्या करूँ। आजकल में तुम्हारी भी कलई खुली जाती है। तुम लोग बाँके नहीं, बदमाश हो; जिधर से निकल जाओ, उधर आदमी काँप उठें कि भेड़िया आया। कोई हँसा और तुमने बंदूक छतियाई, किसी ने बात की और तुमने चोट लगाई। भाई वाह, अच्छा बाँकपन है! तो बता क्या, जहाँ दस दिन डंड पेले और उबल पड़े, दो-चार दिन लकड़ी फेंकी और मुहल्ले वालों पर शेर हो गए। गुनी लोग सिर झुका ही के चलते हैं।

यही बातें हो रही थीं कि सामने से एक पहलवान ऐंड़ते हुए निकले, लँगोट बाँधे, मलमल की चादर ओढ़े दो-तीन पट्ठे साथ। एक कसेरूवाले के पास खड़े हो गए और उसके सिर पर एक धप लग दी। वह पीछे फिरकर देखता है, तो एक देव खड़े हैं। बोले, तो पथा जाय; कान दबाकर, धप खाकर, दिल ही दिल में कोसता हुआ चला गया।

थोड़ी ही देर में मियाँ पहलवान ने एक खोमचेवाले का ख़ोमचा उलट दिया; तीन-चार रुपए कि मिठाई धूल में मिल गई। जब उसने गुल-गपाड़ा मचाया, तो पट्ठों ने दो-तीन गुद्दे, घूँसे, मुक्के लगा दिए, दो-चार लप्पड़ जमा दिए। वह बेचारा रोता-चिल्लाता, दुहाई देता चला गया।

आज़ाद सोचने लगे, यह तो कोई बड़ा ही शैतान है, किसी के लप्पड़, किसी के थप्पड़, अच्छी पहलवानी है! सारे शहर में तहलका मचा दिया। इसकी खबर न ली, तो कुछ न किया। यह सोचते ही मेरा शेर झपट पड़ा और पहलवान के पास जाकर घुटने से ऐसा धक्का दिया कि मियाँ पहलवान ने इतना बड़ा डील-डौल रखने पर भी बीस लुढ़कनियाँ खाईं। मगर पहलवान संभलते ही उनकी तरफ झपट पड़ा। तमाशाई तो समझे कि पहलवान आज़ाद को चुर्र-मुर्र कर डालेगा, लेकिन आज़ाद ने पहले ही से वह दाँव-पेंच किए कि पहलवान के छक्के छूट गए, ऐसा दबाया कि

छठी का दूध याद आ गया। उसने जैसे ही आज़ाद का बायाँ हाथ घसीटा, उन्होंने दाहिने हाथ से उसका हाथ बाँधा और अपना छुड़ा, चुटकियों में कूले पर लाद, घुटना टेक कर मारा – चारों खाने चित्त! पहलवान अब तक कोरा था, किसी दंगल में आसमान देखने की नौबत न आई थी। आज़ाद ने जो इतने आदमियों के सामने पटकनी बताई, तो बड़ी किरकिरी हुई और तमाम उम्र के लिए दाग लग गया।

अब तो मियाँ आज़ाद जगत्-गुरु हो गए, एकरंग का रंग फीका पड़ गया, पहलवान ने पटकनी खाई, शहर भर में धूम हो गई। जिधर से निकल जाते, लोग अदब करते थे। जिससे चार आँखें हुई उसने जमीन चूम कर सलाम किया। अच्छे-अच्छे, बाँकों की कोर दबने लगी। जहाँ किसी शहजोर ने कमजोर को दबाया और उसने गुल मचाया – दोहाई मियाँ आज़ाद की, और यह बाँड़ी ले कर आ पहुँचे। किसी बदमाश ने कमजोर को दबाया और उसने डाँट बताई – नहीं मानते, बुलाऊँ मियाँ आज़ाद को? शोहदे-लुच्चे उनसे ऐसे थर्राते थे, जैसे चूहे बिल्ली से, या मरीज तिल्ली से। नाम सुना और बगलें झाँकने लगे; सूरत देखी और गली कूचों में दुबक रहे। शहर भर में उनका डंका बज गया।

एक दिन आज़ाद सिरोही लिए ऐंड़ते जा रहे थे कि एक दर्जी की दुकान के पास से निकले। देखते क्या हैं, रंगीले छैले, बाँके जवान

छोटे पंजे का मखमली जूता पहने, जुल्फें लटकाए, छुरी कमर से लगाए दर्जी से तकरार कर रहे हैं — वाह मियाँ खलीफा तुमने तो हमें उलटे छूरे मूड़ा ख़ुदा जाने, किस कतर-ब्योंत में रहते हो। सीना-पिरोना तो नाम का है, हाँ, जबान अलबत्ता, करतनी की तरह चला करती है। तुमसे कपड़े सिलवाना अपनी मिट्टी खराब करना है। दम धागा देना खूब जानते हो। टोपी ऐसी भोंड़ी बनाई कि फबतियाँ सुनते-सुनते नाकों दम आ गया।

दर्जी — ऐ तो हुजूर, मैं इसको क्या करूँ? मेरा भला इसमें क्या कुसूर है? आपका सिर ही टेढ़ा है। मैं टोपी बनाता हूँ, सिर बनाना नहीं जानता।

बाँके — चोंच सँभाल, बहुत बढ़-बढ़कर बातें न बना। बाँकों के मुँह लगता है? और सुनिए, हमारा सिर टेढ़ा है। अबे, तेरा सिर साँचे का ढला है? तेरे ऐसे दर्जी मेरी जेब में पड़े रहते हैं, मुँह बन्द कर, नहीं दूँगा उल्टा हाथ, मुँह टेढ़ा हो जायगा। और तमाशा देखिए, हमारा सिर गोया कद्दू हो गया है।

दर्जी — आप मालिक हैं, मुल मेरी खता नहीं। जैसा सिर वैसी टोपी। ऐसा सिर तो मैंने देखा ही नहीं; यह नई गढ़ंत का सिर है, आप फेरे लें, बस, मैं सी चुका। जब दाम देने का वक़्त आया, तो यह झमेला किया।

यह सुनते ही बाँके ने दर्जी को इतना पीटा कि वह बेचारा बेदम हो गया। आखिर कफन फाड़ कर चीखा, दोहाई मियाँ आज़ाद की, दोहाई मेरे उस्ताद की। आज़ाद तो दूर से खड़े देख ही रहे थे, झट तलवार सैंत दुकान पर पहुँच गए। बाँके ने पीछे फिर कर देखा, तो मियाँ आज़ाद।

आज़ाद — वाह भाई बाँके, तुम सचमुच रुस्तम हो। बेचारे दर्जी पर सारी चोटें साफ कर दीं। कभी किसी कड़े खाँ से भी पाला पड़ा है? कहीं गोहार भी लड़ा है? या गरीबों ही पर शेर हो? बड़े दिलेर हो तो आओ, हमसे भी दो-दो हाथ हो जाएँ। तुम ढेर हो जाओ, या हम चरका खायँ। आइए, फिर पैंतरा बदलिए, लगा बढ़ कर हाथ, इधर या उधर।

बाँके — हैं, हैं, उस्ताद, हमीं पर हाथ साफ करोगे, हम नौसिखिए तुम गुरू-घंटाल। मगर आप इस कमीने दर्जी की तरफ से बोलते हैं और शरीफों पर तलवार तौलते हैं! सुभान अल्लाह! आइए, आपसे कुछ कहना है।

आज़ाद — अच्छा, तौबा करो कि अब किसी गरीब को न धमकायेंगे।

बाँके — अजी हजरत, धमकाना कैसा, हम तो खुद ही बला में फँसे हैं; खुदा ही बचाए, तो बचें। यहाँ एक फिकैत है, उससे हमसे

लाग-डाँट हो गई है। कल नौचंदी के मेले में हमें घेरेगा, कोई दो सौ बाँकों के जत्थे से हम पर हरबा करना चाहता है। हम सोचते हैं कि दरगाह न जायँ, तो बाँकपन में बट्टा लगता है, और जायँ, तो किस बिरते पर? यार, तुम साथ चलो तो जान बचे, नहीं तो बेमौत मरे।

आज़ाद — अच्छा, तुम भी क्या कहोगे! लो, बीड़ा उठा लिया कि कल तुमको ले चलेंगे और सबसे भिड़ पड़ेंगे, दो सौ हों, चाहे हजार, हम हैं और हमारी कटार, इतनी कटारें भोंकूँ कि दम बन्द हो जाय। मगर यह बता दो कि कुसूर तुम्हारा तो नहीं है?

बाँके — नहीं उस्ताद, कसम ले लो, जो मेरी तरफ से पहल हुई हो। मुझसे उन्होंने एक दिन अकड़ कर कहा कि तू तलवार न बाँधा कर। मैं भी, आप जानिए, इनसान हूँ। पित्ता तो मछली के भी होता है। मुझे भी गुस्सा आ गया। मैंने कहा, धत् तू और हमसे हथियार रखवा ले? बस, बिगड़ ही तो गया और पंद्रह-बीस आदमी उसकी तरफ से बोलने लगे। मैंने भी जवाब दिया, दबा नहीं। मगर लड़ पड़ना मसलहत न थी। बाँका हूँ, तो क्या हुआ, बिना समझे बूझे बात नहीं करता। खैर, उसने ललकार कर कहा — अच्छा बचा, दरगाह में समझ लेंगे, अब की नौचंदी में हमीं न होंगे, या तुम्हीं न होंगे।

आज़ाद — अच्छा, तुम, लैस रहना, मैं दो घड़ी दिन रहे आऊँगा, घबराओ नहीं, तुम्हारा बाल-बाँका हो, तो मूँछ मुड़ा दूँ। ये दो सौ आदमी देखने ही भर के होंगे। सच्चे दिलेर उनमें दो-ही चार होंगे, जो आज़ाद की तलवार का सामना करें। मौत से लड़ना दिल्लगी नहीं है; कलेजा चाहिए!

दूसरे दिन आज़ाद हथियार बाँध कर चले, तो रास्ते में बाँके मिल गए और दोनों साथ-साथ टहलते हुए दरगाह पहुँचे।

नौचंदी जुमेरात, बनारस का बुढ़वामंगल मात, चारों तरफ चहल-पहल, कहीं तमाशाइयों का हुजूम, हटो-बचो की धूम; आदमी पर आदमी टूटे पड़ते हैं, कोसों का ताँता लगा हुआ है, मेवे वाले आवाज लगा रहे हैं, तंबोली बीड़े बना रहे हैं, गँड़रिया हैं केवड़े की, रेवड़ियाँ हैं गुलाब की। आज़ाद घूरते-घारते फाटक पर दाखिल हुए, तो देखा, सामने तीस-चालीस आदमियों का गोल है।

बाँके ने कान में कहा कि यही हजरत हैं, देख लीजिए, दंगे पर आमादा हैं या नहीं।

आज़ाद — भला, यहाँ तुम्हारा भी कोई जान-पहचान है? हो, तो दस-पाँच को तुम भी बुला लो; भीड़-भड़क्का तो हो जाय। लड़ने वाले हम क्या कम हैं — मगर दो-चार जमाली खरबूजे भी चाहिए, डाली की रौनक हो जाय।

बाँके — अभी लाया, आप ठहरें; मगर बाहर टहलिए, तो अच्छा है, यहाँ जोखिम है।

आज़ाद फाटक के बाहर टहलने लगे। फिकैत ने जो देखा कि दोनों खिसके, तो आपस में हाँड़ियाँ पकने लगीं — वह भगाया! वह हटाया! भागा है!

उनके साथियों में से एक ने कहा — अजी, वह भागा नहीं है, एक ही काइयाँ है, किसी टोह में गया है।

एक बिगड़ेदिल बाहर गए, तो देखा, बाँके पश्चिम की तरफ गर्दन उठाए चले जाते हैं, और मियाँ आज़ाद फाटक से दस कदम पर टहल रहे हैं। उलटे पाँव आकर खबर दी — उस्ताद, बस, यही मौका है, चलिए, मार लिया है।

बाएँ फाटक से चढ़ दौड़े। ठहर बे, ठहर! बस, रुक जा, आगे कदम बढ़ाया, और ढेर हुए! हिले, और दिया तुला हुआ हाथ। याद है कि नहीं, आज नौचंदी है। लोगों ने चारों तरफ से घेर लिया। बाँके का रंग फक कि गजब ही हो गया! अब कुत्ते की मौत मरे। किस-किससे लड़ूँगा? एक की दवा दो, दो की सौ। मियाँ आज़ाद को कोई खबर कर देता, तो वह झपट ही पड़ते; मगर जब तक कोई जाय-जाय, हमारा काम तमाम हो जायगा। एक यार ने बढ़कर बेचारे मुसीबत के मारे बाँके के एक लठ लगा

दिया, बाएँ हाथ की हड्डी टूट गई। गुल-गपाड़े की आवाज आज़ाद ने भी सुनी। भीड़ काट कर पहुँचे, तो देखा, बाँके फँसे हुए हैं। तलवार को टेका और दन से उस पार हुए। खबरदार खिलाड़ी! हाथ उठाया और मैंने टेटुआ लिया। बाँके के दिल में ढाढ़स हुआ, जान बची, नई जिंदगी हुई। इतने में मियाँ आज़ाद ने तलवार म्यान से निकाली और पिल पड़े। तलवार का चमकना था कि फिकैत के सब साथी हुर्र हो गए, मैदान खाली, मियाँ आज़ाद और बाँके एक तरफ, फिकैत और दो साथी दूसरी रफ, बाकी रफू-चक्कर। एक ने आज़ाद पर तमंचा चलाया, मगर खाली गया। आज़ाद ने झपटकर उसको ऐसा चरका दिया कि तिलमिला कर गिर पड़ा। दूसरे जवान दस कदम पीछे हट गए। बाँके भी खिसक गए। अब आज़ाद और फिकैत आमने-सामने रह गए। वह कड़ककर झुका, उन्होंने चोट रोककर सिर पर हाथ लगाना चाहा, उसने रोका और चाकी का हाथ दिया। आध घंटे तक शपाशप तलवार चला की। आखिर आज़ाद ने बढ़ कर 'जनेऊ' का वह हाथ लगाया कि 'भंडारा' तक खुल गया, मगर फिकैत भी गिरते-गिरते 'बाहरा' दे हो गया। इधर यह, उधर वह धम से गिरे। तब बाँके दौड़े और आज़ाद को उठा कर घर ले गए।

2

आज़ाद की धाक ऐसी बँधी कि नवाबों और रईसों में भी उनका जिक्र होने लगा। रईसों को मरज होता है कि पहलवान, फिकैत, बिनवटिये को साथ रखें, बग्घी पर ले कर हवा खाने निकलें।

एक नवाब साहब ने इनको भी बुलवाया। यह छैला बने हुए, दोहरी तलवार कमर से लगाए जा पहुँचे। देखा, नवाब साहब, अपनी माँ के लाड़ले, भोले-भाले, अँधेरे घर के उजाले, मसनद पर बैठे पेचवान गुड़गुड़ा रहे हैं। सारी उम्र महल के अन्दर ही गुजरी थी, कभी घर के बाहर जाने तक की भी नौबत न आई थी, गोया बाहर कदम रखने की कसम खाई थी। दिनभर कमरे में बैठना, यारों-दोस्तों से गप्पें उड़ाना, कभी चौसर रंग जमाया, कभी बाजी लड़ी, कभी पौ पर गोट पड़ी, फिर शतरंज बिछी, मुहरे खट-खट पिटने लगे। किश्त! वह घोड़ा पीट लिया, वह प्यादा मार लिया। जब दिल घबराया, तब मदक का दम लगाया, चंडू के छींटे उड़ाये, अफीम की चुसकी ली। आज़ाद ने झुक कर सलाम किया। नवाब साहब खुश हो कर गले मिले, अपने करीब बिठाया और बोले — मैंने सुना है, आपने सारे शहर के बाँकों के छक्के छुड़ा दिए।

आज़ाद — यह हुजूर का इकबाल है, वरना मैं क्या हूँ।

नवाब — मेरे मुसाहिबों में आप ही जैसे आदमी की कमी थी, वह पूरी हो गई, अब खूब छनेगी।

इतने में मीर आगा बटेर को मूठ करते हुए आए और सलाम करके बैठ गए। जरा देर के बाद अच्छे मिर्जा गन्ना छीलते हुए आए और एक कोने में जा डटे। मियाँ झम्मन अंगरखा के बन्द खोले, गुद्दी पर टोपी रखे खट से मौजूद। फिर क्या था, तू आ, मैं आ। दस-पंद्रह आदमी जमा हो गए, मगर सब झंडे-तले के शोहदे, छँटे हुए गुरगे थे। कोई चीनी के प्याले में अफीम घोल रहा है, कोई चंडू का किवाम बना रहा है, किसी ने गँड़ेरियाँ बनाईं, किसी ने अमीर-हमजा का किस्सा छेड़ा, सब अपने-अपने धंधे में लगे। नवाब साहब ने मीर आगा से पूछा — मीर साहब, आपने खुश्के का दरख्त भी देखा है?

मीर आगा — हुजूर, कसम है जनाब अमीर की, सत्तर और दो बहत्तर बरस की उम्र होने की आई, गुलाम ने आज तक आँखों से नहीं देखा, लेकिन होगा बड़ा दरख्त। सारी दुनिया की उससे परवरिश होती है, जिसे देखो, खुश्के पर हत्थे लगाता है।

अच्छे मिर्जा — कुरबान जाऊँ, दरख्त के बड़े होने में क्या शक है। कश्मीर से ले कर, कुरबान जाऊँ, बड़े गाँव तक और लंदन से ले कर विलायत तक, सबका इसी पर दारमदार है।

नवाब — मेरा भी खयाल यही है कि दरख्त होगा बहुत बड़ा; लेकिन देखने की बात यह है कि आखिर किस दरख्त से ज्यादा मिलता है। अगर यह बात मालूम हो जाय, तो फिर जानिए कि एक नई बात मालूम हुई। और भाई, सच पूछो, तो छान-बीन करने में जिंदगी का मजा है।

अच्छे मिर्जा — सुना बरगद का दरख्त बहुत बड़ा होता है। झूठ-सच का हाल खुदा जाने; नीम का पेड़ तो हमने भी देखा है, लेकिन किसी शायर ने नीम के दरख्त की बड़ाई की तारीफ नहीं की।

छुट्टन — हमने केले का पेड़, अमरूद का पेड़, खरबूजे का पेड़ सब इन्हीं आँखो देख डाले।

आज़ाद — भला, यहाँ किसी ने वाहवाह की फलियों का पेड़ भी देखा है?

छुट्टन — जी हाँ, एक दफे नैपाल की तराई में देखा था, मगर शेर जो डकारा, तो मैं झप से गेंदे के दरख्त पर चढ़ गया। कुछ याद नहीं कि पत्ती कैसी होती है।

नवाब — खुश्के के दरख्त का कुछ हाल दरियाफ्त करना चाहिए।

अच्छे मिर्जा — कुरबान जाऊँ, इन लोगों का एतबार क्या? सब सुनी-सुनाई कहते हैं! कुरबान जाऊँ, गुलाम ने वह बात सोची है कि सुनते ही फड़क जाइए।

नवाब — कहिए, कहिए! जरूर कहिए! आपको कसम है। मुझे यकीन हो गया कि आप दूर की कौड़ी लाए होंगे।

अच्छे मिर्जा — (कतारे को खड़ा करके) कुरबान जाऊँ, अगर खुश्के का दरख्त होगा, तो इस कतारे के बराबर ही होगा, न जौ भर बड़ा, न तिल भर छोटा।

नवाब — वाह मीर साहब, वाह, क्या बात निकाली!

मुसाहब — सुभान अल्लाह मीर साहब, क्या सूझ-बूझ है!

आज़ाद — आप तो अपने वक़्त के लाल बुझक्कड़ निकले! मालूम होता है, सफर बहुत किया है।

अच्छे मिर्जा — कौन, मैंने सफर! कसम लो, जो नखास से बाहर गया हूँ। मगर, कुरबान जाऊँ, लड़कपन ही से जहीन था। अब्बाजान तो बिलकुल बेवकूफ थे, मगर अम्माँजान तो बला की औरत थीं, बात में बात पैदा करती थीं।

इतने में गुल-गपाड़े की आवाज आई। अन्दर से मुबारककदम लौंडी सिर पीटती हुई आई — हुजूर, मैं सदके, जल्दी चलिए, यह हंगामा कहाँ हो रहा है? बड़ी बेगम साहबा खड़ी रो रही हैं कि मेरे बच्चे पर आँच न आ जाय।

नवाब साहब जूतियाँ छोड़कर अन्दर भागे। दरवाजे सब बन्द! अब किसी को हुक्म नहीं कि जोर से बोले। इतने में एक मुसाहब ने ड्योढ़ी पर से पुकारा — हुजूर, फिर आखिर मियाँ आज़ाद किस मरज की दवा हैं? गँड़ेरी छीलने के काम में नहीं, किवाम बनाना नहीं जानते, बटेर मुठियाना नहीं आता, इनको भेज कर दरियाफ्त न कराइये कि दंगा कहाँ हो रहा है।

मुबारककदम — हाँ, हाँ भेज दीजिए; कहिए, कुत्ते की चाल जाएँ और बिल्ली की चाल आएँ।

मियाँ आज़ाद ने कटार सँभाली और बाहर निकले। राह में लोगों से पूछते जाते हैं कि भाई, यह फिसाद क्या है? एक ने कहा, अजी चिकमंडी में छुरी चली। पाँच-चार कदम आगे बढ़े, तो दो आदमी बातें करते जाते थे कि पंसारी ने पुड़िया में कद्दू के बीजों की जगह जमाल-गोटा बाँध दिया। गाहक ने बिगड़ कर पंसारी की गर्दन नापी। और दस कदम चले तो एक आदमी ने कहा, वह तो कहिए खैरियत गुजरी कि जाग हो गई नहीं तो भेड़िया घर भर

को उठा ले जाता। यह भेड़िया कैसा जी? हुजूर, एक मनिहार के घर से भेड़िया तीन बकरियाँ, दो मेंढ़े, एक खरहा और एक खाली पिंजड़ा उड़ा ले गया। उसकी औरत को भी पीठ पर लाद चुका था कि मनिहार जाग उठा अब आज़ाद चकराए कि भाई अजब बात है, जो है नई सुनाता है। करीब पहुँचे तो देखा, पंद्रह-बीस आदमी मिलकर छप्पर उठाते हैं और गुल मचा रहे हैं। जितने मुँह उतनी बातें। और हँसी तो यह आती है कि नवाब साहब बदहवास होकर घर के अन्दर हो रहे। वहाँ से लौट कर यह किस्सा बयान किया, तो लोगों की जान में जान आई, दरवाजे खुले, फिर नवाब साहब बाहर आए।

नवाब — मियाँ आज़ाद, तुम्हारी दिलेरी से आज जी खुश हो गया। आज मेरे यहाँ खाना खाना। आप ढाल नहीं बाँधते।

आज़ाद — हुजूर, ढाल तो जनानों के लिए है, हम उम्र भर एक-अंग लड़ा किए, तलवार ही से चोट लगाई और उसी पर रोकी, या खाली दी या काट गए। एक दिन आपको तलवार का कुछ हुनर दिखाऊँगा, आपकी आँखों में तलवार की बाढ़ से सुरमा लगाऊँगा।

नवाब — ना साहब, यह खेल उजड्डपन के हैं, मेरी रूह काँपती है, तलवार की सूरत देखते ही जूड़ी चढ़ आती है। हाँ, मिर्जा साहब

जीवट के आदमी हैं। इनकी आँखों में सुरमा लगाइए, यह उफ करनेवाले नहीं।

अच्छे मिर्जा – कुरबान जाऊँ हुजूर, अब तो बाल पक गए, दाँत चूहों की नजर हुए, कमर टेढ़ी हुई, आँखों ने टका सा जवाब दिया, होश-हवास चंपत हुए। क्या कहूँ हुजूर, जब लोगों को गँड़ेरियाँ चूसते देखता हूँ, तो मुँह देख कर रह जाता हूँ।

इतने में मियाँ कमाली, मियाँ झम्मन और मियाँ दुन्नी भी आ पहुँचे।

कमाली – खुदावंद, आज तो अजीब खबर सुनी, हवास जाते रहे। शहर भर में खलबली मची है, अल्लाह बचाए, अबकी गरमी की फसल खैरियत से गुजरती नहीं नजर आती, आसार बुरे हैं।

नवाब – क्यों? क्यों? खैर तो है! क्या कयामत आनेवाली है या आफताब सवा नेजे पर हो रहा? आखिर माजरा क्या है, कुछ बताओ तो सही।

अच्छे मिर्जा – ऐ हुजूर, यह जब आते हैं, एक नया शिगोफा छोड़ते हैं। खुदा जाने, कौन इनके कान में फूँक जाता है। ऐसी सुनाई की नशा हिरण हो गया, जम्हाइयाँ आने लगीं।

कमाली — अजी, आप किस खेत की मूली हैं, हमसे तो बड़े-बड़ों के नशे हिरण हुए हैं। जब पहली तारीख आएगी, तो आँखें खुल जाएँगीं, आटे-दाल का भाव मालूम हो जाएगा। और दो-चार दिन मीठे टुकड़े उड़ा लो। वाह साहब, हम तो ढूँढ़-ढूँढ़ कर खबरें लाएँ, आप दिनभर पीनक में ऊँघा करें, और हमीं को उल्लू बनाएँ। पहली को कलई खुल जाएगी, बचा, सूरत बिगड़ जाए तो सही।

नवाब — क्या! क्या! पहली तारीख कैसी? अरे मियाँ, तुम तो पहेलियाँ बुझवाते हो, आखिर पहली को क्या होनेवाला है?

कमाली — ऐ हुजूर, यह न पूछिए, बस, कुछ कहा नहीं जाता। एक हलवाइन अभी जवान-जहान है। मारे हौंके के औटा हुआ दूध जो पी गई तो पेट फूलकर कुप्पा हो गया। किसी ने कुछ बताया, किसी ने कुछ नुस्खा पिलाया; मगर वह अंटा-गाफिल हो गई। अब सुनिए कि जब चिता पर जाने लगी; कुलबुला कर उठ बैठी। अरे राम! अरे बाप-रे बाप! यू का भवा? हलवाइयों ने वह बम-चख मचाई कि कुछ न पूछिए। 'यू देखो, लहास हिलत है! अरे यू का अंधेर भवा?' आखिरकार दो-चार हलवाइयों ने जी कड़ा करके लाश को घसीट लिया और झटपट कफन फाड़ कर उसे निकाला, तो टैयाँ सी उठ बैठी। हुजूर, कसम है खुदा की, उसने वह वह बातें बयान कीं कि कहीं नहीं जातीं। जब मरी तो

जमराज के दूतों ने मुझे उठा कर भगवान के पास पहुँचाया, सीता जी बैठी, पूरी बेलत रहैं, हमका देख कें भगवान बोले कि इसको ले जाओ। मुझे उसकी बोली तो याद नहीं, मगर मतलब यह था कि पहली को बड़ा अंधेरा घुप छा जाएगा और तूफान आएगा, जितने गुनहगार बंदे है सब जलाए जाएँगे, और अफीमची जिस घर में होंगे उसको फरिश्ते जला कर खाक-सियाह कर देंगे।

नवाब — मिर्जा साहब, ये बोरिया-बँधना उठाइए, आपका यहाँ ठिकाना नहीं। नाहक कहीं फरिश्ते मेरी कोठी फूँक दें तो कहीं का न रहूँ। बस, बकचा संभालिए, कहीं और बिस्तर जमाइए।

अच्छे मिर्जा — कुरबान जाऊँ हुजूर, यह बड़ा बेईमान आदमी है। हुजूर तो भोले-भाले रईस हैं, जिसने जो कहा मान लिया। भला कहीं फरिश्ते घर फूँका करते हैं? मुझ बुड्ढे को न निकालिए, कई पुश्तें इसी दरबार में गुजर गईं, अब किसका दामन पकड़ूँ? अरे वाह से झूठे, अच्छी बेपर की उड़ाई, हलवाइन मरी भी और जी भी उठी, बेसिर-पैर की बात।

नवाब — खैर, कुछ भी हो, आप अपना सुबीता करें। मेरे बाप-दादा की मिलकियत कहीं फरिश्ते फूँक दें तो बस! आप हैं किस मरज की दवा? चारपाइयाँ तोड़ा करते हैं।

अच्छे मिर्जा — वाह री किस्मत? यहाँ जान लड़ा दी, बकरे की जान गई, खानेवाले को मजा न आया। इस शैतान से खुदा समझे, जिसने मेरे हक में काँटे बोए। खुदा करे, इसका आज के सातवें ही दिन जनाजा निकले। जैसे ही आकर बैठा, मेरी बाईं आँख फड़कने लगी, तो यह गुल खिला।

नवाब साहब मुसाहबों को यह नादिरी हुक्म दे कर जनानखाने में चले गए कि मिर्जा को निकलवा दो। उनके जाते ही मिर्जा की ले-दे शुरू हो गई।

कमाली — मिर्जा साहब, अफीम का डब्बा बगल में दबाइए और चलते फिरते नजर आइए। सरकार का नादिरी हुक्म है और छोटी बेगम साहिबा महनामथ मचा रही हैं कि इस बुड्ढे को खड़े-खड़े निकाल दो। सो अब खिसकिए, नहीं बुरी होगी।

झम्मन — वाजिबी बात है, सरकार चलते-चलते हुक्म दे गए थे। हम लोग मजबूर हैं, अब आप अपना सुबीता कीजिए, अभी सबेरा है, नहीं हम पर पिट्टस पड़ेगी। और भाई, जब फरिश्तों के आने का डर है तो कोई तुमको क्यों कर अपने घर में रहने दे? कहीं एक जरा सी चिनगारी रख दें, तो कहिए मकान जल कर खाक-सियाह हो गया कि नहीं, फिर कैसी होगी?

अच्छे मिर्जा — अबे, तो फरिश्ते कहीं गाँव जलाया करते हैं। वह ऊटपटाँग बातें बकता है। लो साहब, हमारे रहने में जोखिम है, जो आठों पहर ड्योढ़ी पर बने रहते हैं। अच्छा अड़ंगा दिया।

झम्मन — अड़ंगा-बड़ंगा मैं नहीं जानता, अब आप खसकंत की ठहराइए, बहुत दिन मीठे टुकड़े उड़ाये, चुगलियाँ खा-खा कर रईस का मिजाज बिगाड़ दिया, किसी से जरा सी खता हुई और आपने जड़ दी। 'भूस में चिनगी डाल जमालो अलग खड़ी।' पचासों भलेमानसों की रोटी लो। इनसान से गलती हो ही जाती है, यह चुगली खाना क्या माने। ओ गफूर मिर्जा ने तुम्हें भी तो उखाड़ना चाहा था?

गफूर — अरे, यह तो अपने बाप की जड़ खोदनेवाले आदमी हैं, भीतर से बाहर तक कोई तो इनसे खुश नहीं।

दुन्नी — मिर्जा, अगर कुछ हया है तो इस मुसाहबी पर लात मरो; जिस अल्लाह ने मुँह चीरा है वह रोजी भी देगा।

मुबारककदम — गफूर। गफूर! छोटी बेगम साहबा का हुक्म है कि इस मुए अफीमची को शहर से निकाल दो। कहती हैं, जब तक यह न टलेगा दाहने हाथ का खाना हराम है।

अच्छे मिर्जा — शहर से निकाल दो। तमाम शहर पर बेगम साहब का क्या इजारा है? वह अभी कल आईं, यहाँ इस घर में उम्र बीत गई।

कमाली — अबे ओ नमकहराम, छोटा मुँह बड़ी बात! बेगम साहबा के कहने को दुलखता है। इतनी पड़ेंगी बेभाव की कि याद करोगे, चाँद गंजी कर दी जाएगी।

अच्छे मिर्जा — अब जो यहाँ पानी पिए उस पर लानत!

यह कहकर मिर्जा ने अफीम की डिबिया उठाई और चले। मुसाहबों ने उनके जलाने के लिए कहना शुरू किया —मिर्जा जी, कभी-कभी आ जाया कीजिएगा।

एक बोला — लाइए डिबिया, मैं पहुँचा दूँ।

दूसरा बोला — कहिए तो घोड़ा कसवा दूँ। मिर्जा ने किसी को कुछ जवाब न दिया, चुपके से चले ही गए।

इधर पहली तारीख आई तो मियाँ कमाली चकराए कि अब मैं झूठा बना, और साख गई। लोगों ने नवाब को चंग पर चढ़ाया कि हुजूर, जो हम कहें वह कीजिए, तो आज की बला टल जाय। नवाब ने मुसाहबों को सारा अख्तियार दे दिया। फिर क्या था, एक तरफ ब्राह्मण देवता बैठे मंत्रों का जप कर रहे हैं, हवन हो

रहा है, और स्वाहा-स्वाहा की आवाज आ रही है, दूसरी तरफ हाफिज जी कुरान पढ़ रहे हैं, और दीवानखाने में महफिल जमी हुई है कि फरिश्तों को झँझोटी को धुना सुना कर खुश कर लिया जाय।

झम्मन — मिर्जाजी न सिधारते तो खुदा जाने इस वक़्त क्या कुछ हो गया होता।

नवाब — होता क्या, कोठी की कोठी भक से उड़ जाती। अब किसी अफीमची को आने तक न दूँगा।

3

नवाब साहब के दरबार में दिनोंदिन आज़ाद का सम्मान बढ़ने लगा। यहाँ तक कि वह अक्सर खाना भी नवाब के साथ ही खाते। नौकरों को ताकीद कर दी गई कि आज़ाद का जो हुक्म हो, वह फौरन बजा लाएँ, जरा भी मीनमेख न करें। ज्यों-ज्यों आज़ाद के गुण नवाब पर खुलते जाते थे, और मुसाहबों की किरकिरी होती जाती थी। अभी लोगों ने अच्छे मिर्जा को दरबार से निकलवाया था, अब आज़ाद के पीछे पड़े। यह सिर्फ पहलवानी ही जानते हैं, गदके और बिनवट के दो-चार हाथ कुछ सीख लिए

हैं, बस, उसी पर अकड़ते फिरते हैं कि जो कुछ हूँ, बस, मैं ही हूँ। पढ़े-लिखे वाजिबी ही वाजिबी हैं, शायरी इन्हें नहीं आती, मजहबी मुआमिलों में बिलकुल कोरे हैं।

एक दिन नवाब साहब के सामने एक साहब बोल उठे — हुजूर, इस शहर में एक आलिम आया है, जो मंतिक (न्याय) के जोर से झूठ को सच कर दिखाता है। मगर खुदा को नहीं मानता, पक्का मुनकिर (नास्तिक) है। मियाँ आज़ाद को तो मंतकी बनने का दावा है। कहिए, उस आलिम को नीचा दिखाएँ।

आज़ाद — हाँ! हाँ, जब कहिए तब, मुझे तो ऐसे मुनकिरों की तलाश रहती है। लाइए मंतकी साहब को, खुदा का वह पक्का सबूत दूँ कि वह खुद फड़क जायँ, जरा यहाँ तक लाइए तो सही, भागे राह न मिले। जो फिर इस शहर में मुँह दिखाएँ, तो आदमी न कहना।

नवाब — हाँ! हाँ! मीर साहब, जरा उनको फाँस-फूँसकर लाइए, तो मियाँ आज़ाद के जौहर तो खुलें।

मीर साहब ने जोर से हुक्के के दो-चार दम लगाए और झप से उस आलिम को बुला लाए। हजारों आदमी बहस सुनने के लिए जमा हो गए, गोया बटेरों की पाली है। इतनी भीड़ थी कि थाली

उछालिए तो सिर ही सिर जाय। आलिम ने आते ही पूछा कि कौन साहब बहस करेंगे?

मियाँ आज़ाद बोले – हम हैं! अब सब लोग बेकरार हो रहे हैं कि देखें, क्या सवाल-जवाब होते हैं, चारों तरफ खिचड़ी पक रही है।

आलिम – जनाब, आप तो किसी अखाड़े के पट्ठे मालूम होते है, सूरत से तो ऐसा मालूम होता है कि आपको मंतिक छू भी नहीं गई।

आज़ाद – जी, सूरत पर न जाइएगा, कोई सवाल कीजिए, तो हम जवाब दें।

आलिम – अच्छा, पहले इन तीन सवालों का जवाब दीजिए –

(1) खुदा है, तो हमें नजर क्यों नहीं आता?

(2) शैतान दोजख में जलाया जायगा। भला नारी (आग से बने हुए) को आग का क्या डर? आग आग में नहीं जल सकती।

(3) जो करता है, खुदा करता हैं, फिर इनसान का कसूर क्या।

चारों तरफ सन्नाटा पड़ गया कि वाह, क्या आलिम है, कैसे कड़े सवाल किए हैं कि कुछ जवाब ही नहीं सूझता। बिगड़े दिल लोग दाँत पीस रहे हैं कि बाहर निकले तो गरदन भी नापें। मियाँ

आज़ाद कुछ देर तक तो चुपचाप खड़े रहें, फिर एक ढेला उठा कर उस आलिम की खोपड़ी पर मारा, बेचारा हाय करके बैठ गया। अच्छे जंगली से पाला पड़ा, मैं बहस करने आया था या लप्पा-डुग्गी। जब कुछ जवाब न सूझा तो पत्थर मारने लगे। जो मैं भी एक पत्थर खींच मारूँ तो कैसी हो? नवाब साहब, आप ही इन्साफ कीजिए।

नवाब — भाई आज़ाद, हमें यह तुम्हारी हरकत पसंद नहीं आई। इस ढेलेबाजी के क्या माने? माना कि मुनकिर गरदन मारने लायक होता है; मगर बहस करके कायल कीजिए, यह नहीं कि जूता खींच मारा या ढेला तान कर मारा।

कमाली — हुजूर, आलिम का जवाब देना कारेदारद है। ढेलेबाजी करना दूसरी बात है।

झम्मन — अजी, इसने बड़े-बड़े आलिमों को सर कर दिया, भला आज़ाद क्या इसके मुँह आएँगे।

नवाब — यह पत्थर क्यों फेंका जी, बोलते क्यों नहीं।

आज़ाद — हुजूर, मैंने तो इनके तीनों सवालों का वह जवाब दिया कि अगर कोई कदरदाँ होता तो गले से लगा लेता और करोड़ों रुपए इनाम भी देता, सुनिए —

(1) खुदा है, सो हमें नजर क्यों नहीं आता?

जवाब — अगर उस ढेले से उनको चोट लगी, तो चोट नजर क्यों नहीं आती?

सुभान अल्लाह का दौंगड़ा बरस गया। वाह उस्ताद! क्या जवाब दिया है कि दाँत खट्टे कर दिए।

(2) शैतान को जहन्नुम में जलाना बेकार है, वह तो खुद नारी (अग्निमय) है।

जवाब — इनसे पूछिए कि यह मिट्टी के ही पुतले हैं या नहीं? इनकी खोपड़ी मिट्टी की बनी है या रबड़ की? फिर मिट्टी का ढेला लगा, तो सिर क्यों भन्ना गया?

तमाशाइयों ने गुल मचाया — सुभान अल्लाह! वाह मियाँ आज़ाद! क्या मुँह तोड़ जवाब दिया है।

(3) जो करता है खुदा करता है।

जवाब — फिर ढेले मारने का इलजाम हम पर क्यों है?

चारों तरफ टोपियाँ उछलने लगीं — वाह मेरे शेर! क्या कहना है! कहिए, अब तो आप खुदा के कायल हुए, या अब भी कुछ मीनमेख है? लाख बातों की एक बात यह है कि जब आपका सिर मिट्टी का है और मिट्टी ही का ढेला मारा, तब आपकी खोपड़ी क्यों

भिन्नाई? मियाँ मुनकिर बहुत झेपें, समझ गए कि यहाँ शोहदों का जमघट है, चुपके से अपने घर की राह ली। आज़ाद की और भी धाक बँधी। अब तक तो पहलवान और फिकैत ही मशहूर थे, अब आलिम भी मशहूर हुए। नवाब ने पीठ ठोंकी — वाह, क्यों न हो! पहले तो मैं झल्लाया कि ढेलेबाजी कैसी; मगर फिर तो फड़क गया।

मुसाहबों का यह वार भी खाली गया, तो फिर हँड़िया पकने लगी कि आज़ाद को उखाड़ने की कोई दूसरी तदबीर करनी चाहिए। अगर यह यहाँ जम गया; तो हम सभी को निकलवा कर छोड़ेगा। यह राय हुई कि नवाब साहब से कहा जाय, हुज़ूर, आज़ाद को हुक्म दें कि बटेरों को मुठियायें, बटेरों को लड़ाएँ। फिर देखें, बचा क्या करते हैं। बगलें न झाँकने लगें तो सही। यह हुनर ही दूसरा है।

आपस में यह सलाह कर एक दिन मियाँ कमाली बोले — हुज़ूर, अगर मियाँ आज़ाद बटेर लड़ाएँ, तो सारे शहर में हुज़ूर की धूम हो जाय।

नवाब — क्यों मियाँ आज़ाद, कभी बटेर भी लड़ाये हैं?

झम्मन — आज हमारी सरकार में जितने बटेर हैं, उतने तो मटियाबुर्ज के चिड़ियाखाने में भी न होंगे। एक-एक बटेर हजार-

हजार की खरीद का, नोकदम के बनाने में तोड़े-के-तोड़े उड़ गए, सेरों मोती तो पीस कर मैंने अपने हाथों खिला दिए हैं, कुछ दिनों रोज खरल चलता था। मगर आप भी कहेंगे कि हम आदमी हैं! इस ड्योढ़ी पर इतने दिनों से हो, अब तक बटेरखाना भी न देखा? लो आओ, चलो, तुमको सैर कराएँ।

यह कहकर आज़ाद को बटेरखाने ले गए। मियाँ आज़ाद क्या देखते हैं कि चारों तरफ काबुकें ही काबुकें नजर आती हैं, और काबुकें भी कैसी, हाथीदाँत की तीलियाँ, उन पर गंगा-जमुनी कलस, कारचोबी छतें, कामदार मखमली गिलाफें, रंग-बिरंग सोने-चाँदी की नन्हीं-नन्हीं कटोरियाँ, जिनमें बटेर अपनी प्यारी-प्यारी चोंचों से पानी पिएँ, पाँच-पाँच छह-छह सौ लागत की काबुकें थीं, खूँटियाँ भी रंग-बिरंगी। दुन्नी मियाँ एक-एक काबुक उतार कर बटेर की तारीफ करने लगे, तो पुल बाँध दिए।

एक बटेर को दिखा कर कहा — अल्लाह रखें, क्या मझोला जानवर है! सफशिकन (दलसंहार) जो आपने सुना हो, तो यही है। लंदन तक खबर के कागज में इनका नाम छप गया। मेरी जान की कसम, जरा इसकी आन-बान तो देखिएगा। हाय, क्या बाँका बटेर है! यह नवाब साहब के दादाजान के वक़्त का है। ऐसे रईस पैदा कहाँ होते हैं! दम के दम में लाखों फूँक दिए, रुपए को ठीकरा समझ लिया। पतंगबाजी का शौक हुआ, तो शहर भर के

पतंगबाजों को निहाल कर दिया, कनकौवेवाले बन गए। अजी, और तो और, लौंडे, जो गली-कूचों में लंगर और लग्गे ले कर डोर लूटा करते हैं, रोज डोर बेच-बेच कर चखौमियाँ करते थे। अफीम का शौक हुआ, तो इतनी खरीदी कि टके सेर से सोलह रुपए सेर तक बिकने लगी। मालवा खाली, चीन खुक्खल, बंबई तक के गन्ने आते थे।

आज़ाद — ऐसे ही कितने रईस बिगड़ गए!

कमाली — रईसों के बनने-बिगड़ने की क्या फिक्र! यहाँ तो जो शौक किया, ऐसा ही किया; फिर भला बटेरबाजी में उनके सामने कौन ठहरता। उनके वक़्त का अब यह एक सफशिकन बाकी रह गया है। बुजुर्गों की निशानी है। बस, यह समझिए कि मुहम्मदअली शाह के वक़्त में खरीदा गया था। अब कोई सौ वर्ष का होगा, दो कम या दो ऊपर, मगर बुढ़ापे मे भी वह दमखम है कि मुर्ग को लपक कर लात दे तो वह भी चें बोल जाय। पारसाल की दिल्लगी सुनिए, नवाब साहब के मामूँ तशरीफ लाए। उनमें भी रियासत की बू है। कनकौवा तो ऐसा लड़ाते हैं कि मियाँ विलायत उनके आगे पानी भरें। दो-दो तोले अफीम पी जायँ और वही खमदम! बटेरबाजी का भी परले सिरे का शौक है। उनका जफरपैकर तो बला का बटेर है, बटेर क्या है, शेर है। मेरे मुँह से निकल गया कि हुजूर को तो बटेरों का बहुत

शौक है, करोड़ों ही बटेर देख डाले होंगे, मगर सफशिकन सा बटेर तो हुजूर ने भी न देखा होगा। बोले, इसकी हकीकत क्या है, जफरपैकर को देखो तो आँखें खुल जायँ, बढ़कर एक लात दे, तो सफशिकन क्या, आपको नोकदम पाली बाहर कर दे। हौसला हो, तो मँगवाऊँ।

'दूसरे दिन पाली हुई। हजारों आदमी आ पहुँची। शहर भर में धूम थी कि आज बड़े मार्के का जोड़ है। जफरपैकर इस ठाट से आया कि जमीन हिल गई, और मेरा तो कलेजा दहलने लगा। मगर सफशिकन ने उस दिन आबरू रख ली, जभी तो नवाब साहब इसको बच्चों से भी ज्यादा प्यार करते हैं। पहले इसको दाना खिलवा लेते हैं, फिर कहीं आप खाते हैं। एक दिन खुदा जाने; बिल्ली देखी या क्या हुआ कि अपने आप फड़कने लगा। नवाब समझे कि बूँदा हो गया, फिर तो ऐसे धारोधर रोए कि घर भर में कुहराम मच गया। मैंने नवाब साहब को कभी रोते नहीं देखा। मुहर्रम की मजलिसों में एक आँसू नहीं निकलता। जब बड़े नवाब साहब सिधारे तो आँसू की एक बूँद न गिरी। यह बटेर ही ऐसा अनमोल है। सच तो यह है कि उसने उस दिन नवाब की सात पीढ़ियों पर एहसान किया। वल्लाह, जो कहीं घट जाता, तो मैं तो जंगल की राह लेता। मियाँ, जग में आबरू ही आबरू तो है, और क्या। खैर साहब, जैसे ही दोनों चक्की खा चुके,

जफरपैकर बिजली की तरह सफशिकन की तरफ चला! आते ही दबोच बैठा, चोटी को चोंच से पकड़ कर ऐसा झपेटा कि दूसरा होता तो एक रगड़े में फुर्र से भाग निकलता। नवाब का चेहरा फक हो गया, मुँह पर हवाइयाँ छूटने लगीं कि इतने में सफशिकन लौट ही तो पड़ा। वाह मेरे शेर! खूब फिरा!! पाली भर में आवाज गूँजने लगी कि वह मारा है! एक लात ऐसी जमाई कि जफरपैकर ने मुँह फेर लिया। मुँह का फेरना था कि सफशिकन ने उचक कर एक झँझौटी बतलाई। वाह पट्ठे, और लगा! आखिर जफरपैकर नोकदम पाली बाहर भागा। चारों तरफ टोपियाँ उछल गईं। आज यह बटेर अपना सानी नहीं रखता। मियाँ आज़ाद, अब आप बटेरखाना अपने हाथ में लीजिए।'

नवाब — वल्लाह, यही मैं भी कहनेवाला था।

झम्मन — काम जरा मुश्किल है।

दुन्नी — बटेरों का लड़ाना दिल्लगी नहीं, बड़े तजरबे की जरूरत है।

आज़ाद — हुजूर फरमाते हैं, तो बटेरखाने की निगरानी मैं ही करूँगा।

कहने को तो आज़ाद ने यह कह दिया; मगर न कभी बटेर लड़ाए थे, न जानते थे कि इनको कैसे लड़ाया जाता है। घबराए, अगर

कहीं नवाब के बटेर हारे तो सारी बला मेरे सिर पर पड़ेगी। कुछ ऐसी तदबीर करनी चाहिए कि यह बला टल जाय। जब शाम हुई तो वह सबकी नजरें बचा कर बटेरखाने में गए और काबुकों की खिड़कियाँ खोल दीं बटेर सब फुर्र से भाग गए। पिंजरे खाली हो गए। कई पुस्तों की बसाई हुई बस्ती उजड़ गई। बटेरों को उड़ा कर आज़ाद ने घर की राह ली।

दूसरे दिन मियाँ आज़ाद सबेरे मुँह-अँधेरे बाजार में मटरगश्त करते हुए नवाब साहब की तरफ चले। बाजार भर में सन्नाटा! हलवाई भट्ठी में सो रहा है, नानबाई बरतन धो रहा है, बजाजा बन्द, कुँजड़ों की दुकान पर अरुई न शकरकंद, जौहरियों की दुकान में ताला पड़ा हुआ है। मगर तंबाकू वाला जगा हुआ है। मेहतर सड़क पर झाड़ू दे रहा है। मैदेवाला पिसनहारियों से आटा ले रहा है। इतने में देखते क्या है कि एक आदमी लुंगी बाँधे, हाथ में चिलम लिए, बौखलाया हुआ घूम रहा है कि कहीं से एक चिनगारी मिल जाय तो दम लगे, धुआँधार हुक्का उड़े। जहाँ जाते हैं, 'फिर', 'भाग' की आवाज आती है। भाई, ऐसा शहर नहीं देखा जहाँ आग माँगे न मिले, जानों इसमें छप्पन टके खर्च होते हैं। मुहल्ले वालों को गालियाँ देते हुए नानबाई की दुकान पर पहुँचे और बोले — बड़े भाई, एक जरी आग तो झप से दे देना, मेरा यार, ला तो झटपट।

नानबाई — अच्छा,अच्छा, तो दुकान से अलग रहो, छाती पर क्यों चढ़े बैठते हो? यहाँ सौ धंधे करने हैं, आपकी तरह कोई बेफिकर तो हूँ नहीं कि तड़का हुआ, चिलम ली, और लगे कौड़ी दुकान माँगने! मिल गई तो खैर, नहीं तो गालियाँ देनी शुरू कीं। सबेरे-सबेरे अल्लाह का नाम न राम-राम। चिलम लिए दुकान पर डट गए। वाह, अच्छी दिल्लगी है! ऐसी ही तलब है तो एक कंडी क्यों नहीं गाड़ रखते कि रात भर आग ही आग रहे। ऐसे ही उचक्के तो चोरी करते है। आँख चूकी, और माल गायब! क्या सहला लटका है कि चिलम ले कर आग माँगने आए हैं। किसी दिन मैं चिलम-विलम न तोड़-ताड़ कर फेंक दूँ। तुम तड़के-तड़के दुकान पर न आया करो जी, नहीं तो किसी दिन ठायँ-ठायँ हो जाएगी।

हजरत की आँखों से खून टपकने लगा, दाँत पीस कर रह गए। यहाँ से चले, तो हलवाई की दुकान पर पहुँचे और बोले — मियाँ एक जरा सी आग देना, भाई हो न! हलवाई का दूध बिल्ली पी गई थी, झल्लाया बैठा था, समझा कि कोई फकीर भीख माँगने आया है। झिड़क कर बोला कि और दुकान देखो। सबेरे-सबेरे कौड़ी की पड़ गई। जाता है, कि दूँ धक्का! रहे कहीं, मरे कहीं, कौड़ी माँगने यहाँ मौजूद। दुनिया भर के मुर्दे नानामऊ घाट! अब खड़ा घूरता क्या है?

चिलमबाज — कुछ वाही हुआ है बे! अबे, हम कोई फकीर हैं, कहीं मैं आकर एक घस्सा दूँ न! लो साहब! हम तो आग माँगने आए हैं, यह हमको भिखमंगा बनाता है! अंधा है क्या?

हलवाई — भिखमंगा नहीं, तू है कौन? लँगोटी बाँध ली और चले आग माँगने! तुम्हारे बाबा का कर्ज खाया है क्या!

बेचारे यहाँ से भी निराश हुए, चुपके से कान दबाए चल खड़े हुए। आज तड़के-तड़के किसका मुँह देखा था कि जहाँ जाते हैं, झौड़ हो जाती है। इतने में देखा कि एक सुनार की दुकान पर आग दहक रही है। उधर लपके। सुनार दुकान पर न था। यह तो हुक्के की फिक्र में चौंधियाए हुए थे ही, झप से दुकान पर चढ़ गए। सुनार भी उसी वक़्त आ गया और इनको देख कर आग-भभूका हो गया। तू कौन है बे? वाह, खाली दुकान पर क्या मजे से चढ़ आए! (एक धप जमाकर) और जो कोई अदद जाता रहता? इतने में दस-पाँच आदमी जमा हो गए। क्या है मियाँ, क्या है? क्यों भले आदमी की आबरू बिगाड़े देते हो?

सुनार — है क्या! यह हमारी दुकान पर चोरी करने आए थे।

चिलमबाज — मैं चोर हूँ, चोरी की ऐसी ही सूरत होती है?

एक आदमी — कौन! तुम! तुम तो हमें पक्के चोर मालूम होते हो। अच्छा, तुम फिर उनकी दुकान पर गए क्यों? दुकानदार नहीं था,

तो वहाँ तुम्हारा क्या काम? जो कोई गहना ले भागते, तो यह तुम्हें कहाँ ढूँढ़ते फिरते।

सुनार — साहब, इनका फिर पता कहाँ मिलता, जाते जमुना उस पार। चलो थाने पर।

लोगों ने सुनार को समझाया, भाई, अब जाने दो। देखो जी, खबरदार, अब किसी की दुकान पर न चढ़ना, नहीं पथे जाओगे। सुनार ने छोड़ दिया। जब आप चलने लगे, तो उसे इन पर तरस आ गया। बोला, अच्छा आग लेते जाओ। हजरत ने आग पाई और घर की राह ली। तड़के-तड़के अच्छी बोहनी हुई, चोर बने, मार खाई, झिड़के गए, थाने जाते-जाते बचे, तब कहीं आग मिली।

मियाँ आज़ाद यह दिल्लगी देख कर आगे बढ़े और नवाब की ड्योढ़ी पर आए।

नवाब — आज इतना दिन चढ़ गया, कहाँ थे?

आज़ाद — हुजूर, आज बड़ी दिल्लगी देखने में आई, हँसते-हँसते लोट जाइएगा। तलब भी क्या बुरी चीज है।

यह कह कर आज़ाद ने सारी दास्तान सुनाई।

नवाब — खूब दिल्लगी हुई। आग के बदले चपलें पड़ीं। अरे मियाँ, जरा खोजी को बुलाना। हाँ, जरा खोजी के सामने सुनाना। किसी दिन यह भी न पिटें।

खोजी नवाब के दरबार में मसखरे थे। ठेंगना कद, काले कौए का सा रंग, बदन पर माँस नहीं, पर आँखों में सुरमा लगाए हुए। लुढ़कते हुए आए और बोले — गुलाम को हुजूर ने याद किया है?

नवाब — हाँ, इस वक़्त किस फिक्र में थे?

खोजी — खुदावंद, अफीम घोल रहा था, और कोई फिक्र तो हुजूर की बदौलत करीब नहीं फटकने पाती। मैं फिक्र क्या जानूँ, 'जोरू न जाँता, अल्लाह मियाँ से नाता।'

नवाब — अच्छा खोजी, इस हौज में नहाओ तो एक अशर्फी देता हूँ।

खोजी — हुजूर, अशर्फियाँ तो आपकी जूतियों के सदके से बहुत सी मिल जायँगी, मगर फिर जीना कठिन हो जाएगा। न मरे सही, लेकिन 'नकटा जिया बुरे हवाल!' न साहब, मुझे तो कोई एक गोते पर एक अशर्फी दे, तो भी पानी में न पैठूँ, पानी की सूरत देखे बदन काँप उठता है।

दुन्नी — कैसे मर्द हो कि नहाने से डरते हो!

खोजी — हम नहीं नहाते तो आप कोई काजी हैं?

आज़ाद — अजी, सरकार का हुक्म है।

खोजी — चलिए, आपकी बला से। कहने लगे सरकार का हुक्म है। फिर कोई अपनी जान दे।

आज़ाद — हुजूर, जो इस वक़्त यह हौज में धम से न कूद पड़ें, तो अफीम इन्हें न मिले।

खोजी — आप कौन बीच में बोलनेवाले होते हैं? अरसठ बरस से तो मैं अफीम खाता आया हूँ, अब आपके कहने से छोड़ दूँ, तो कहिए, मरा या जिया?

नवाब — अच्छा भाई, जाने दो। दूध खाओगे?

खोजी — वाह खुदावंद, नेकी और पूछ-पूछ। लेकिन जरी मिठास खूब हो। शाहजहाँपुर की सफेद शक्कर या कालपी की मिश्री घोलिएगा। अगर थोड़ा सा केवड़ा भी गबड़ दीजिए तो पीते ही आँखें खुल जाएँ।

इतने में एक चोबदार घबराया हुआ आया और बोला — खुदावंद, गजब हो गया। जाँबख्शी हो तो अर्ज करूँ, सब बटेर उड़ गए।

नवाब — अरे! सब उड़ गए?

चोबदार — क्या कहूँ, हुजूर, एक का भी पता नहीं।

मुसाहबों ने हाय-हाय करनी शुरू की, कोई सिर पीटने लगा, कोई छाती कूटने लगा। नवाब ने रोए हुए कहा, भाई और जो गए सो गए, मेरे सफशिकन को जो कोई ढूँढ़ लाए, हजार रुपए नकद दूँ। इस वक़्त मैं जीते जी मर मिटा। अभी साँड़नी सवारों को हुक्म दो कि पचकोसी दौरा करें। जहाँ सफशिकन मिले, समझा-बुझा कर ले ही आएँ।

झम्मन — उनको समझाना, हुजूर, मुश्किल है। वह तो अरबी में बातें करते हैं। सारा कुरान उन्हें याद है। उनसे कौन बहस करेगा?

नवाब — मुझे तो उससे इश्क हो गया था जी, वह नोकीली चोंच, वह अकड़-अकड़ कर काकुन चुनना! सैकड़ों पालियाँ लड़ीं, मगर कोरा आया। किस बाँकपन से झपट कर लात देता था कि पाली भर थर्रा उठती थी। उसकी बिसात ही क्या थी, मझोला जानवर, लेकिन मैदान का शेर। यह तो मैं पहले ही से जानता था कि यह बटेर की सूरत में किसी फकीर की रूह है। अब सुना कि नमाज भी पढ़ता था।

झम्मन — हुजूर को याद होगा कि रमजान के महीने में उसने दिन के वक़्त दाना तक न छुआ; हुजूर समझे थे कि बूँदा हो गया, मगर मैं ताड़ गया कि रोजे से है।

खोजी — खुदावंद, अब मैं हुजूर से कहता हूँ कि दस-पाँच दफा मैंने अफीम भी पिला दी; मगर वल्लाह, जो जरा भी नशा हुआ हो।

कमाली — हुजूर, यकीन जानिए, पिछले पहर से सुबह तक काबुक से हक-हक की आवाज आया करती थी। गफूर, तुमको भी तो हमने कई बार जगा कर सुनाया था कि सफशिकन खुदा को याद कर रहे हैं।

नवाब — अफसोस, हमने उसे पहचाना ही नहीं। दिल डूबा जाता है, कोई पंखा झलना।

मुसाहब — जल्दी पंखा लाओ।

नवाब —

प्रीतम जो मैं जानती कि प्रीत किए दुःख होय;
नगर ढिंढोरा पीटती कि प्रीत करै जनि कोय।

खोजी — (पीनक से चौंककर) हाँ उस्ताद, छेड़े जा। इस वक़्त तो मियाँ शोरी की रूह फड़क गई होगी।

नवाब — चुप, नामाकूल। कोई है? इसको यहाँ से टहलाओ। यह रईसों की सोहबत के काबिल नहीं। मुझको भी कोई गवैया समझा है। यहाँ तो जी जलता है, इनके नजदीक कौवाली हो रही है।

खोजी — खुदावंद, गुलाम तो इस दम अपने आपे में नहीं। हाय, सफशिकन की काबुक खाली हो और मैं अपने आपे में रहूँ! हुजूर ने इस वक़्त मुझ पर बड़ा जुल्म किया।

नवाब — शाबाश खोजी, शाबाश! मुआफ करना, मैं कुछ और ही समझा था। क्यों जी, साँड़नी-सवार दौड़ाया गया कि नहीं?

सवार — हुजूर, जाता तो हूँ, मगर वह मेरी क्या सुनेंगे, कोई मौलवी भी तो साथ भेजिए, मैं तो कुछ ऊँट ही चढ़ना जानता हूँ, उनसे दलील कौन करेगा भला!

आज़ाद — किसी अच्छे मौलवी को बुलवाना चाहिए।

मुसाहिबों ने एक मौलाना साहब को तजवीजा। मगर यारों ने उनसे कुल दास्तान नहीं बयान की। चोबदार ने मकान पर जा कर सिर्फ इतना कहा कि नवाब साहब ने आपको याद किया है। मौलवी साहब उसके साथ हो लिए और दरबार में आकर नवाब साहब को सलाम किया।

नवाब — आपको इसलिए तकलीफ दी कि मेरी आँखों का नूर, मेरे कलेजे का टुकड़ा नाराज होकर चला गया है। बड़ा आलिम और दीनदार है, बहस करने में कोई उससे पेश नहीं पाता, आप जाइए और उसको माकूल करके ले आइए।

मौलाना — माँ-बाप का कड़ा हक होता है। वह कैसे नादान आदमी हैं?

खोजी — मौलाना साहब, वह आदमी नहीं हैं, बटेर हैं। मगर इल्म और अक्ल में आदमियों के भी कान कटते हैं।

कमाली — सफशिकन का नाम तो मौलाना साहब, आपने सुना होगा। वह तो दूर-दूर तक मशहूर थे। जनाब; बात यह है कि सरकार का बटेर सफशिकन कल काबुक से उड़ गया। अब यह तजबीज हुई है कि एक-एक साँड़नी-सवार जाय और उसे समझा-बुझा कर ले आए। मगर ऊँटवान तो फिर ऊँटवान, वह दलील करना क्या जाने, इसलिए आप बुलाए गए हैं कि साँड़नी पर सवार हों, और उनको किसी तदबीर से ले आएँ।

मौलाना — ठीक, आप सब के सब नशे में तो नहीं हैं? होश की बातें करो। खुद मसखरे बनते हो। बटेर भी आलिम होता है, वह भी कोई मौलवी है, ला हौल! अच्छे-अच्छे गाउदी जमा हैं। बंदा जाता है।

नवाब — यह किस कोढ़मगज को लाए थे जी? खासा जाँगलू है।

आज़ाद — अच्छा, हुजूर भी क्या याद करेंगे कि इतने बड़े दरबार में एक भी मंतकी न निकला। अब गुलाम ने बीड़ा उठा लिया कि जाऊँगा और सफशिकन को लाऊँगा। मुझे एक साँड़नी दीजिए, मैं उसे खुद ही चला लूँगा। खर्च के लिए कुछ रुपए भी दिलवाइए, न जाने कितने दिन लग जायँ।

नवाब — अच्छा, आप घर जाइए और लैस हो कर आइए।

मियाँ आज़ाद घर गए तो और मुसाहिबों में खिचड़ी पकने लगी — यार, यह तो बाजी जीत ले गया। कहीं से एक आध बटेर पकड़ कर लाएगा और कहेगा, यही सफशिकन है। फिर तो हम सब पर शेर हो जाएगा। हमको आपको कोई न पूछेगा। खोजी जा कर नवाब साहब से बोले — हुजूर, अभी मियाँ आज़ाद दो दिन से इस दरबार में आए हैं, उनका एतबार क्या? जो साँड़नी ही लेकर रफूचक्कर हों, तो फिर कोई कहाँ उनका पता लगता फिरेगा।

कमाली — हाँ खुदावंद कहते तो सच हैं।

झम्मन — खोजी सूरत ही से अहमक मालूम होते हैं, मगर बात ठिकाने की कहते हैं। ऐसे आदमी का ठिकाना क्या?

दुन्नी — हम तो हुज़ूर को सलाह न देंगे कि मियाँ आज़ाद को साँड़नी और सफर-खर्च दीजिए। जोखिम की बात है।

नवाब — चलो, बस, बहुत न बको। तुम खुद जैसे हो, वैसा ही दूसरों को समझते हो। आज़ाद की सूरत कहे देती है कि कोई शरीफ आदमी है, और मान लिया कि साँड़नी जाती ही रहे, तो मेरा क्या बिगड़ जाएगा? सफशिकन पर से लाखों सदके हैं। साँड़नी की हकीकत ही क्या।

इतने में मियाँ आज़ाद घर से तैयार होकर आ गए। अशर्फियों की एक थैली खर्च के लिए मिली। नवाब ने गले लगा कर रुखसत किया। मुसाहब भी सलाम बजा आए। आज़ाद साँड़नी पर बैठे और साँड़नी हवा हो गई।

4

आज़ाद यह तो जानते ही थे कि नवाब के मुसाहबों में से कोई चौक के बाहर जानेवाला नहीं इसलिए उन्होंने साँड़नी तो एक सराय में बाँध दी और आप अपने घर आए। रुपए हाथ में थे ही, सवेरे घर से उठ खड़े होते, कभी साँड़नी पर, कभी पैदल, शहर और शहर के आस-पास के हिस्सों में चक्कर लगाते, शाम को फिर

साँड़नी सराय में बाँध देते और घर चले आते। एक रोज सुबह के वक़्त घर से निकले तो क्या देखते हैं कि एक साहब केचुललेट का धानी रँगा हुआ कुरता, उस पर रुपए गजवाली महीन शरबती का तीन कमरतोई का चुस्त अंगरखा, गुलबदन का चूड़ीदार घुटन्ना पहने, माँग निकाले, इत्र लगाए, माशे भर की नन्हीं-सी टोपी आलपीन से अटकाए, हाथों में मेहँदी, पोर-पोर छल्ले, आँखों में सुर्मा, छोटे पंजे का मखमली जूता पहने, एक अजब लोच से कमर लचकाते, फूँक-फूँक कर कदम रखते चले आते थे। दोनों ने एक दूसरे को खूब जोर से घूरा। छैले मियाँ ने मुसकराते हुए आवाज दी — ऐ, जरी इधर तो देखो, हवा के घोड़े पर सवार हो! मेरा कलेजा बल्लियों उछलता है। भरी बरसात के दिन, कहीं फिसल न पड़ो, तो कहकहा उड़े।

आज़ाद — आप अपना मतलब कहिए, मेंरे फिसलने की फिक्र न कीजिए।

छैला — गिरिएगा, तो मुझसे जरूर पूछ लीजिएगा।

आज़ाद — बहुत खूब, जरूर पूछूँगा, बल्कि आपको साथ ले कर, गिरूँ तो सही।

छैला — खुदा की कसम, आपके, काले कपड़ों से मैं समझा कि बनैला कुसुम के खेत से निकल पड़ा।

आज़ाद — और मैं आपको देख कर यह समझा कि कोई जनाना मटकता जाता है।

छैला — वल्लाह, आपकी धज ही निराली है। यह डबल कोट और लक्कड़तोड़ बूट! जाँगलू मालूम होते हो! इस वक़्त ऐसे बदहवास कहाँ बगटुट भागे जाते हो? सच कहिएगा, आपको हमारी जान की कसम।

आज़ाद — आज प्रोफेसर लॉक संस्कृत पर एक लेक्चर देनेवाले हैं, बड़े मशहूर आलिम हैं। योरप में इनकी बड़ी शोहरत है।

छैला — भाई, कसम खुदा की, कितने भोंड़े हो। प्रोफेसर के मशहूर होने की एक ही कही। हम इतने बड़े हुए, कसम ले लो, जो आज तक नाम भी सुना हो। क्या दुन्नीखाँ से ज्यादा मशहूर हैं? भाई, जो कहीं 'तुम्हारे घूँघरवाले बाल' एक दफा भी उसकी जबान से सुन लो, तो उम्र-भर न भूलो। वल्लाह, क्या टीपदार आवाज है; मगर तुम ऐसे कोढ़मगजों को गलेबाजी से क्या वास्ता, तुम तो प्रोफेसर साहब के फेर में हो।

आज़ाद — तुम्हारी जिंदगी राग और लै ही में गुजरेगी। इस नाच और रंग ने आपकी यह गति बनाई कि मूँछ और दाढ़ी कतरवाई, मेहँदी लगवाई और मर्द से औरत बन गए। अरे, अब तो मर्द बनो, इन बातों से बाज आओ।

छैला — जी, तो आपके प्रोफेसर लॉक के पास चला जाऊँ? अपने को आपकी तरह गड्डामी बनाऊँ। किसी गली-कूचे में निकल जाऊँ तो तालियाँ पड़ने लगें।

आज़ाद — अब यह फरमाइए कि इस वक़्त आप कहाँ के इरादे से निकले हैं?

छैला — कल रात को तीन बजे तक एक रंगीले दोस्त के यहाँ नाच देखता रहा। वह प्यारी-प्यारी सूरतें देखने में आईं कि वाह जी वाह! किस काफिर का उठने को जी चाहता हो। जलसा बरखास्त हुआ तो बस, कलेजे को दोनों हाथों से थाम कर निकले; लेकिन रात भर कानों में छमाछम की आवाज आया की। परियों की प्यारी-प्यारी सूरत आँखों में फिरा की। अब इस वक़्त फिर जाते हैं, जरा सेक आएँ, भैरवी उड़ रही होगी —

'रसीले नैनों ने फंदा मारा।'

आज़ाद — कल फुरसत हो तो हमसे मिलिएगा।

छैला — कल तक तो मेरी नींद का खुमार ही रहेगा।

आज़ाद — अच्छा, परसों सही।

छैला — परसों? परसों तो खुदा भी बुलाए तो बंदा न जाने का। परसों नवाब साहब के यहाँ बटेरों की पाली है, महीनों से बटेर तैयार हो रहे हैं।

आज़ाद — अच्छा साहब, परसों न सही, मंगल को सही।

छैला — मंगल को तड़के से बाने की कनकइयाँ लड़ेंगी, अभी बनारस से बाना मँगाया है, माही जाल की कनकइयाँ ऐसी सधी हैं कि हरदम काबू में, मोड़ो, गोता दो, खींचो, जो चाहे सो करो, जैसे खेत का घोड़ा।

आज़ाद — अच्छा, बुद्ध को फुरसत है!

छैला — वाह-वाह, बुद्ध को तो बड़े ठाट से भठियारियों की लड़ाई होगी। देखिए तो, कैसी-कैसी भटियारियाँ किस बाँकी अदा से हाथ चमका कर, उँगलियाँ मटका कर लड़ती हैं और कैसी-कैसी गालियाँ सुनाती हैं कि कान के कीड़े मर जायँ।

आज़ाद — बिरस्पत को तो जरूर मिलिएगा?

छैला — जनाब, आप तो पीछे पड़ गए, मिलूँ तो सब कुछ, जब फुरसत भी हो। यहाँ मरने तक की तो फुरसत नहीं, अब की नौचंदी जुमेरात है, बरसों से, मन्नतें मानी हैं, आपको दीन-दुनिया की खबर तो है नहीं।

आज़ाद — तो मालूम हुआ, आपसे मुलाकात नहीं होगी। आज मुर्ग लड़ाइएगा, कल पतंग लड़ाइएगा, कहीं गाना होगा, कहीं नाच होगा, आप न हों तो रंग क्योंकर जमे। मेला-ठेला तो आपसे कोई काहे को छूटता होगा फिर भला मिलने की कहाँ फुरसत? रुखसत।

छैला — ऐ, तो अब रूठे क्यों जाते हैं?

आज़ाद — अब मुझे जाने दीजिए, आपका और हमारा मेल जैसे गन्ना और मदार का साथ। जाइए, देखिए, भैरवी का लुत्फ जाता है।

छैला — जनाब, अब नाच-गाने का लुत्फ कहाँ, वह चमक-दमक अब कहाँ, दिल ही बुझ गया। जो लुत्फ हमने देखे हैं, वह बादशाहों को ख्वाब में नसीब न हुए होंगे। यह कैसरबाग अदन को मात करता था। परियों के झुंड, हसीनों के जमघट, रात को दिन का समाँ रहता था। अब यहाँ क्या रह गया! गली कूचों में कुत्ते लौटते हैं। एक वह जमाना था कि साकिनों के मिजाज न मिलते थे। बाँके-तिरछे, रईसजादे एक-एक दम की दो-दो अशर्फियाँ फेंक देते थे। अब तो शहर भर में इस सिरे से उस सिरे तक चिराग लेकर ढूँढ़िए तो मैदान खाली है। कल नई सड़क की तरफ जो निकला, तो नुक्कड़ पर एक हाथी बँधा देखा।

पूछा, तो मालूम हुआ कि बी हैदरजान का हाथी है। कसम खुदा की, ऐसा खुश हुआ कि आँखों में आँसू आ गया।

खुदा आबाद रक्खे लखनऊ को फिर गनीमत है;
नजर कोई न कोई अच्छी सूरत आ ही जाती है।

आज़ाद — अच्छा, यह सब जलसे आपने देखे और अब भी आँखों सेका ही करते हैं; मगर सच कहिएगा, बने या बिगड़े, बसे या उजड़े, नेकनाम हुए या बदनाम? यहाँ तो नतीजा देखते हैं।

छैला — जनाब यह तो बड़ा कड़ा सवाल है। सच तो यों है कि उम्र भर इस नाचरंग ही के फंदे में फँसे रहे, दिन रात तबला, सारंगी, बायाँ, ढोल, सितार की धुन में मस्त रहे। खुदा की याद ताक पर, इल्म छप्पर पर, छटे हुए शोहदे बन बैठे; लेकिन अब तो पानी में डूब गए, ऊपर एक अंगुल हो तो, और एक हाथ हो तो, बराबर है। आप लोग इस भरोसे में हों कि हमें आदमी बनाएँ तो यह खैर-सलाह है। बूढ़े तोते भी कहीं राम-राम पढ़ते हैं?

आज़ाद — खैर, शुक्र है कि आप अपने को बिगड़ा हुआ समझते तो हैं। कडुवे न हूजिए तो कहूँ कि इस जनाने भेस पर लानत भेजिए, यह लोच, यह लचक, यह मेहँदी, यह मिस्सी, कुछ औरतों ही को अच्छी मालूम होती है। जरा तो इस दाढ़ी-मूँछ का खयाल करो।

छैला — यह भर्रे किसी ऐसे-वैसे को दीजिए, यहाँ बड़े-बड़ों की आँखें देखी हैं। आपके झाँसे में कोई अनारी आए, हम पर चकमा न चलने का।

आज़ाद — आपको डोम-डारियों ही की सोहबत पसंद आई या किसी और की भी? लखनऊ में तो हर फन के आदमी मौजूद हैं।

छैला — हम तो हमेशा ऐसी ही टुकड़ी में रहे। घर फूँक तमाशा देखा। लँगोटी में फाग खेला। मियाँ शोरी के टप्पे, कदर मियाँ की ठुमरियाँ, घसीट खाँ की टीपदार आवाज प्यारे खाँ का खयाल छोड़ कर जायँ कहाँ? सारंगी-मंजीरे की आवाज सुनी तो छप से घुस पड़े, मसजिद में अजान हुआ करे, सुनता कौन है। बहुत गुजर गई, थोड़ी बाकी है।

आज़ाद — लखनऊ में ऐसे-ऐसे आलिम पड़े हैं कि जिनका नाम आफताब की तरह सारी खुदाई में रोशन है। कर्बला और मदीने तक के समझदार लोग इन बुजुर्गों का कलाम शौक से पढ़ते हैं। मुफ्ती सादुल्लाह साहब, सैयद मुहम्मद साहब, वगैरह उल्मा का नाम बच्चे-बच्चे की जबान पर है। अब शायरों को देखिए, ख्वाजा हैदरअली आतश, शेख नासिख अपने फन के खुदा थे। मरसिया कहना तो लखनऊ वालों का हिस्सा है। मीर अनीस साहब को

खुदा बख्शे, जबान की सफाई तो यहाँ खत्म हो गई। मिर्जा दबीर तो गोया अपने फन के मवज्जिद थे। नसीम और सबा ने आतश को भड़का दिया। गोया तो गोया शायरी के चमन का बुलबुल था। मिर्जा रज्जबअली बेग सरूर ने वह नस्र लिखी कि कलम तोड़ दिए। यहाँ के कारीगरों के भी झंडे गड़े हैं। कुम्हार तो ऐसे दुनिया के पर्दे पर न होंगे। मिट्टी की मूरतें ऐसी बनाई कि मुसब्बिरों की किरकिरी हो गई। बस, यही मालूम होता है कि मूरत बोलना ही चाहती है। जिस अजायबघर में जाइएगा, लखनऊ के कुम्हारों की कारीगरी जरूर पाइएगा। खुशनवीसों ने वह कमाल पैदा किया कि एक-एक हर्फ की पाँच-पाँच अशर्फियाँ लीं। बाँके ऐसे कि शेर का पंजा तोड़ डालें, हाथी को डपटें तो चिग्घाड़ कर मंजिलों भागे। रुस्तम और इस्फंदियार को चुटकियों में लड़ा दें। उस्ताद मुहम्मद अली खाँ फिकैत, छरहरा बदन, लेकिन गदका हाथ में आने की देर थी। परे के परे दम में साफ कर दिए। कड़क कर तमाचे का तुला हाथ लगाया, तो दुश्मन का मुँह फिर गया। अखाड़े में गदका लेकर खड़े हुए, तो मालूम हुआ, बिजली चमक गई। एक दफा ललकार दिया कि रोक, बैठ गई! देख सँभल। खबरदार, यह आई, वह आई, वह पड़ गई! वाह-वाह की आवाज सातवें आसमान जा पहुँची। बला की सफाई, गजब की सफाई थी। जो मुँह चढ़ा, उसने मुँह की खाई। सामने गया

और शामत आई। कामदानी वह ईजाद की कि उड़ीसा और कोचीन तक धूम हो गई। लेकिन आपको तो न इल्म से सरोकार, न फन से मतलब; आप तो ताल-सुर के फेर में पड़े हैं।

छैला — हजरत, इस वक़्त भैरवी सुनने जाता था और 'जागे भाग प्यारा नजर आया' सुनने का शौक चर्राया था;लेकिन आपने पादरियों की तरह बकवास करके काया पलट दी। आप जो हमें राह पर लाते हो, तो इतना मान जाओ कि जरा कदम बढ़ाए हुए, हमारे साथ हाथ में हाथ दिए हुए, पाटेनाले तक चले चलो; देखूँ तो परिस्तान से क्योंकर भाग आते हो? उन्हीं हसीनों का सिजदा ना करो, तो कुछ जुर्माना दूँ। उस इंद्र के अखाड़े से कोरे निकल आओ, तो टाँग की राह निकल जाऊँ।

आज़ाद — (घड़ी जेब से निकाल कर) ऐं! आठ पर इक्कीस मिनट! इस खुशगप्पी ने आज बड़ा सितम ढाया, लेक्चर सुनने में न आया। मुफ्त की बकबक झकझक! लेक्चर सुनने काबिल था।

छैला — अल्लाह जानता है, इस वक़्त कलेजे पर साँप लोट रहे हैं! न जाने तड़के-तड़के किस मनहूस का मुँह देखा है कि भैरवी के मजे हाथ से गए?

आज़ाद — आप भी निरे चोंच ही रहे। इतनी देर तक समझाया, सिरमगजन की, मगर वाह रे कुत्ते की दुम, बारह बरस बाद भी वह टेढ़ी ही निकली।

छैला — तो मेरे साथ आइए न, बगलें क्यों झाँकते हो? जब जाने कि निलोह निकल आओ।

आज़ाद — अच्छा चलिए, देखें, कौन सा हसीन अपनी निगाहों के तीर से हमें घायल करता है! बरसों के खयालों को कोई क्या मिटा देगा? हम, और किसी के थिरकने पर फिदा हो जायँ! तौबा! कोई ऐसा माशूक तो दिखाइए, जिसे हम प्यार करें। हमारा माशूक वह है जिसमें कमाल हो। जुल्फ और चोटी पर कोई और सिर धुनते हैं।

खुलासा यह कि आज़ाद छैले मियाँ के साथ हाफिज जी के मकान में जा पहुँचे। महफिल सजी हुई थी। तीन-चार हसीनें मिल कर मुबारकबाद गाती थीं। यही मालूम होता था कि राग और रागिनी हाथ बाँधे खड़ी हैं। जिसे देखो, गर्दन हिलाता है। पाजेब की छमाछम दिल को रौंदती है, कोई इधर से उधर चमक जाती है, कोई ऊँचे सुरों में तान लगाती है, कोई सीने पर हाथ रख कर 'गहरी नदिया' बताती है, कोई नशीली आँखों के इशारे से 'नैना रसीले' की छवि दिखाती है, धमा-चौकड़ी मची हुई है। छैले मियाँ

ने एक हसीन से फरमाइश की कि हजरत मीर की यह गजल गाओ —

गैर के कहने से मारा उसने हम को बे-गुनाह;
यह न समझा वह कि वाकया में भी कुछ था या न था।
याद ऐयामे कि अपनी रोजोशब की जायबाश;
था दरे बाजे बयाबाँ, या दरे मयखाना था।

इस गजल ने वह लुत्फ दिखाया और ऐसा रंग जमाया कि मियाँ आज़ाद तक 'ओ हो!' कह उठते थे; इसके बाद एक परी ने यह गजल गाई —

हाल खुले तो किस तरह यार की वज्दे-नाज का;
जो है यहाँ वह मस्त है अपनी ही सोजोसाज़ में।

इस गजल पर जलसे में कुहराम मच गया। एक तो गजल हक्कानी, दूसरे हसीना की उठती जवानी, तीसरे उसकी नाजुकबयानी। लोग इतने मस्त हुए कि झूम-झूम कर यही शेर बढ़ते थे —

हाल खुले तो किस तरह यार की वज्दे-नाज का;
जो है यहाँ वह मस्त है अपनी ही सोजोसाज में।

अब सबको शक जगह यकीन हो गया कि अब किसी का रंग न जमेगा। हर तरफ से हक्काली गजलों की फरमाइश है। न ध्रुपद

का खयाल, न टप्पे की फिक्र, न भैरवी की धुन, न पक्के गाने का जिक्र, बस हक्कानी गजलों की धूम है।

अब दिल्लगी देखिए कि बुड्ढे-जवान सब के सब बेधड़क उस मोहनी को घूर रहे हैं। कोई उससे आँखें लड़ाता है, कोई सिर धुनता है, कोई ठंडी आहें खींचता है। दो-चार मनचले रईसों ने हसीनों को बुला कर बड़े शौक से पास बैठाया। नोंक-झोंक, हँसी मजाक, चुहल-दिल्लगी, धोल-धप्पा होने लगा। हाफिज जी भी बेसींग के बछड़े बने हुए मजे से चौमुखी लड़ रहे हैं।

बूढ़े मियाँ — आजकल के लड़कों को भी हवा लगी है।

एक जवान — जनाब, अब तो हवा ही ऐसी चली है कि जवान तो जवान, बुड्ढों तक को बुढ़भस लगा है। सौ बरस का सिन, चार के कंधों पर लदने के दिन, मगर जवानी ही के दम भरते हैं।

बूढ़े मियाँ — अजी, हम तो जमाने भर के न्यारिये, हमें कोई क्या चंग पर चढ़ायेगी; मगर तुम अभी जुमा-जुमा आठ दिन की पैदायश, ऐसा न हो, उनके फेर में आ जाओ; फिर दीन दुनिया दोनों को रो बैठो।

जवान — वाह जनाब, आपकी सोहबत में हम भी पक्के हो गए हैं; ऐसे कच्चे नहीं कि हम पर किसी के दाँव-पेंच चलें।

बूढ़े मियाँ — कच्चे-पक्के के भरोसे न रहिएगा, इन हसीनों का बड़े-बड़े जाहिदों ने सिजदा किया है; तुम किस खेत की मूली हो।

जवान — इन बुतों को हम फकीरों से भला क्या काम है, ये तो तालिब जर के हैं और याँ खुदा का नाम है।

हसीना — इन बड़े मियाँ से कोई इतना तो पूछो कि बाल-बाल गल कर बर्फ सा सफेद हो गया और अब तक सियाहकारी न छोड़ी, यह समझाते किस मुँह से हैं? इनकी सुनता कौन है! जरा शेख जी, बहुत बढ़-बढ़ कर बातें न बनाया कीजिए; शाहछड़े वाली गली में रोज बीस-बीस चक्कर होते हैं; ऐ, तुम थकते भी नहीं!

हाफिज जी — शेख जी जहाँ बैठते हैं, झगड़ा जरूर खरीदते हैं। आप हैं कौन? आए कहाँ से नासेह बन के! अच्छा, जी साहब, अपना कलाम सुनाइए; मगर शर्त यह है कि अब हम तारीफ करें तो झुक के सलाम कीजिए।

हसीना — आप हैं तो इसी लायक कि दूर ही से झुक कर सलाम कर लें।

इधर तो यह बातें हो रही थीं, उधर दूसरी टुकरी में गाली और फक्कड़ का छर्रा चलता था। तीसरे में धौल-धप्पा होता था। लड़के, जवान, बूढ़े बेधड़क एक दूसरे पर फबतियाँ कसते थे।

इतने में दोपहर की तोप दगी, जलसा बरखास्त, तबल्चियों ने बोरिया-बँधना उठाया। चलिए, सन्नाटा हो गया।

5

मियाँ आज़ाद की साँड़नी तो सराय में बँधी थी। दूसरे दिन आप उस पर सवार हो कर घर से निकल पड़े। दोपहर ढले एक कस्बे में पहुँचे। पीपल के पेड़ के साये में बिस्तर जमाया। ठंडे-ठंडे हवा के झोंकों से जरा दिल को ढारस हुई, पाँव फैला कर लंबी तानी, तो दीन दुनिया की खबर नहीं। जब खूब नींद भर कर सो चुके, तो एक आदमी ने जगा दिया। उठे, मगर प्यास के मारे हलक में काँटे पड़ गए। सामने इदारे पर एक हसीन औरत पानी भर रही थी। हजरत भी पहुँचे।

आज़ाद — क्यों नेकबख्त, हमें एक जरा सा पानी नहीं पिलातीं। भरते न बनता हो तो लाओ हम भरें। तुम भी पियो, हम भी पिएँ, एहसान होगा।

औरत ने कोई जवाब न दिया, तीखी चितवन से देखकर पानी भरती रही।

आज़ाद — 'सखी से सूम भला, जो देवे तुरत जवाब।' पानी न पिलाओ, जवाब तो दे दो। यह कस्बा तो अपने हक में कर्बला का मैदान हो गया। एक बूँद पानी को तरस गए।

औरत ने फिर भी जवाब न दिया। पानी भर कर चली।

आज़ाद — भई, अच्छा गाँव है! जो बात है, निराली! एक लुटिया पानी न मिला, वाह री किस्मत! लोग तो इस भादों की जलती-बलती धूप में पौसरे बैठाते हैं, केवड़ा पड़ा हुआ पानी पिलाते हैं, यहाँ कोई बात तक नहीं सुनता।

मियाँ आज़ाद को हैरत थी कि इस कमसिन नाजनीन का यहाँ इस वीराने मे क्या काम। साये की तरह साथ हो लिए। वह कनखियों से देखती जाती थी; मगर मुँह नहीं लगाती थी। बारे, सड़क से दाएँ हाथ पर एक फाटक के सामने वह बैठ गई और पेड़ के साये में सुस्ताने लगी। आज़ाद ने कहा अगर यह बर्तन भारी हो तो लाओ मैं ले चलूँ, इशारे की देर है। कसम लो, जो एक बूँद भी पीऊँ, गो प्यास के मारे कलेजा मुँह को आता है और दम निकला जाता है; लेकिन तुम्हारा दिल दुखाना मंजूर नहीं।

हसीना ने इसका भी जवाब न दिया। फिर हिम्मत करके उस बर्तन को उठाया और फाटक के अन्दर हो रही। मियाँ आज़ाद भी चुपके-चुपके दबे पाँव उसके पीछे-पीछे गए। हसीना एक खुले

हुए छोटे से बँगले में जा बैठी और आज़ाद दरख्तों की आड़ में दबक रहे कि देखें, यहाँ क्या गुल खिलता है। उस बँगले के चारों तरफ खाई खुदी हुई थी, इर्द-गिर्द सरपत बोई हुई थी, ऐसी घनी कि चिड़िया तक का गुजर न हो; और वह तेज कि तलवार मात। बड़ा ऊँचा मेहराबदार फाटक लगा हुआ था। वह जौहरदार शीशम की लकड़ी थी कि बायद व शायद। क्यारियाँ रोज सींची जाती थीं, रविशों पर सुर्खी कटी थी, हरे भरे दरख्त आसमान से बातें कर रहे थे। कहीं अनार की कतार, कहीं लखवट की बहार, इधर आम के बाग, अमरूद और चकोतरों से टहनियाँ फटी पड़ती थीं, नारंगियाँ शाखों पर लदी हुई थीं, फूलों की बू-बास, कहीं गुलमेंहदी, कहीं गुल-अब्बास, नेवाड़ी फूली हुई, ठंडी-ठंडी हवा, ऊदी-ऊदी घटा, कलियों की चिटक, जूही की भीनी महक, कनैल की दमक। बाग के बीचों-बीच में एक तीन फुट का ऊँचा पक्का चबूतरा बना था। यह तो सब कुछ था; मगर रहनेवाले का पता नहीं। उस हसीना की चालढाल से भी बेगानापन बरसता था। एकाएक उसने बर्तन जमीन पर रख दिया और एक नेवाड़ की पलंगरी पर सो रही। इनको दाँव मिला, तो खूब छक कर मेवे खाए और बर्तन को मुँह से लगाया, तो एक बूँद भी न छोड़ा।

इतने में पाँव की आहट सुनाई दी। आज़ाद झट अंगूर की टट्टी में छिप रहे; मगर ताक लगाए बैठे थे कि देखें, है कौन! देखा कि फाटक की तरफ से कोई आहिस्ता-आहिस्ता आ रहा था। बड़ा लंबा-तड़ंगा, मोटा-ताजा आदमी था। लँगोट बाँधे, अकड़ता उस बंगले की तरफ जा रहा था। समझे कि कोई पहलवान अपने अखाड़े से आया है। नजदीक आया, तो यह गुमान दूर हो गया। मालूम हुआ कि कोई शाह जी हैं। वह लँगोट, जिससे पहलवान का धोखा हुआ था, तहमद निकला।

शाह साहब सीधे बँगले में दाखिल हुए। औरत को पलंग पर सोता पाया, तो पलंग पर हाथ मार कर चिल्ला उठे – उठ। हसीना घबराकर उठ बैठी और शाह जी के कदम चूमे। शाह जी एक तिरपाई पर बैठ गए और उससे यों बातें करने लगे – बेटी, आज तुमको हमारे सबब से बहुत राह देखनी पड़ी। यहाँ से दस कोस पर एक गाँव में एक राजा रहता है। अस्सी बरस का हो गया; मगर अल्लाह ने न लड़का दिया, न लड़की। एक दिन मुझे बुलवाया। मैं कहीं आता-जाता तो हूँ नहीं, साफ कहला भेजा कि तुम्हें गरज हो तो आओ, खुदा के बंदे खुदा के सिवा और किसी के द्वार पर नहीं जाते। आखिर रानी को लेकर वह आप आया और मेरे कदमों पर गिर पड़ा। मैंने रानी के सिर पर एक बिना सूँघा गुलाब का फूल दे मारा। पाँचवें महीने अल्लाह ने

लड़का दिया और राजा मेरे पास दौड़ा आता था कि मैं राह में मिला। देखते ही मुझे रथ पर बिठा लिया। अब कहता है, रुपया लो, जागीर लो, गाँव लो, हाथी-घोड़े लो। मगर मैं कब माँगता हूँ। फकीरों को दुनिया से क्या काम। इस वक़्त जा कर पीछा छूटा। तुम पानी तो लाई होगी?

हसीना — मैं आपकी लौंडी हूँ, यह क्या कम है कि आप मेरा इतना खयाल रखते हैं। वह पानी रखा हुआ है। आप फूँक डाल दें, तो मैं चली जाऊँ।

यह कह कर वह उठी; मगर बर्तन देखा, तो पानी नदारत। ऐं! यह पानी क्या हुआ! जमीन पी गई, या आसमान। अभी पानी भर कर रखा था, देखते-देखते उड़ गया। गजब खुदा का, एक बूँद तक नहीं; लबालब भरा हुआ था!

शाह जी — अच्छा, तो बता दूँ, मुझे जोग-बल से मालूम हो गया कि तुम आती हो। जब तुम सो रहीं, तो मैंने आँख बन्द की, और यहाँ पहुँच गया। पानी पिया, तो फिर आँख बन्द की और फिर राजा साहब के पास हो रहा। फूँक डालने की साइत उसी वक़्त थी। टल जाती, तो फिर एक महीने बाद आती। अब तुम यह इलायची लो और कल आधी रात को मरघट में गाड़ दो। तुम्हारी मुराद पूरी हो जाएगी।

युवती ने इलायची ले ली। मियाँ आज़ाद चुपके-चुपके सब सुन रहे थे। अब उन्हें खूब ही मालूम हो गया कि शाह जी रँगे सियार हैं। लोटे का पानी तो मैंने पिया, और आपने यह गढा कि आँख बन्द करते ही यहाँ आए, और पानी पी कर फिर किसी तरकीब से चल दिए। खूब खिल-खिला कर हँस पड़े। वाह रे मक्कार! जालिये! इतना बड़ा झूठा न देखा, न सुना। ऐसे बड़े वली हो गए कि इनकी दुआ से एक रानी पाँचवें ही महीने बच्चा जन पड़ी। झूठ भी तो कितना! हद तो यों है कि झूठों के सरदार हैं। पट्टे बढ़ा लिए, तहमद बाँध कर शाह जी बन गए। लगे पुजने। कोई बेटा माँगता है, कोई तावीज माँगता है, कोई कहता है मेरा मुकदमा जितवा दो तो नयाज चढ़ाऊ, कोई कहता है नौकरी दिलवा दीजिए तो मिठाई खिलाऊँ। संयोग से कहीं उसकी मुराद पूरी हो गई, तो शाह साहब की चाँदी है, वरना किसकी मजाल की शिकायत का एक हर्फ मुँह से निकाले। डर है कि कहीं जबान न सड़ जाय। अल्लाह री धाक! बहुत से अक्ल के दुश्मन इन बने हुए फकीरों के जाल में फँस जाते हैं। आज़ाद ऐसे बने हुए सिद्ध और रंगे सियार फकीरों की कब्र तक से वाकिफ थे। सोचे, इनकी मरम्मत कर देनी चाहिए।

शाह साहब ने चबूतरे पर लुंगी बिछाई और उस पर लेट कर दुआ पढ़ने लगे; मगर पढ़े-लिखे तो थे नहीं, शीन-काफ तक दुरुस्त नहीं, अनाप-शनाप बकने लगे।

अब मियाँ आज़ाद से न रहा गया, बोल उठे — क्या कहना है शाह जी, वल्लाह, आपने तो कमाल कर दिया।

अब तो शाह जी चकराए कि यह आवाज किसने कही, यह दुश्मन कौन पैदा हुआ। इधर-उधर आँखें फाड़-फाड़ कर देखा; मगर न आदमी, न आदमजाद, न इनसान, न इनसान का साया। या खुदा, यह कौन बोला? यह किसने टोका? समझे कि यह आसमानी ढेला है। किसी जिन्न की आवाज है। डरपोक तो थे ही, बदन थरथराने लगा, हाथ-पाँव फूल गए, करामातें सब भूल गए, हवास गायब, होश कलाबाजी खाने लगे। कुरान की आयतें गलत-सलत पढ़ने लगे। आखिर चिल्ला उठे — महजरूल अजायब। तो इधर यह बोल उठे — लुंगी मयशाह जी गायब।

अब शाह जी की घबराहट का हाल न पूछिए, चेहरा फक, काटो तो लहू नहीं बदन में। मियाँ आज़ाद ने भाँप लिया कि शाह साहब पर रोब छा गया, झट निकल कर पत्तों को खूब खड़खड़ाया। शाह जी काँप उठे कि प्रेतों का लश्कर आ खड़ा हुआ। अब जान से गए। तब आज़ाद ने एक फारसी गजल खूब

लै के साथ पढ़ी, जैसे कोई ईरानी पढ़ रहा हो। शाह जी मस्त हो गए, समझे कि यह तो कोई फकीर है। अब तो जान में जान आई। मियाँ आज़ाद के कदम लिए। उन्होंने पीठ ठोंकी। शाह जी उस वक़्त नशे की तरंग में थे; खयाल बँध गया कि कोई आसमान से उतरा है।

आज़ाद — कीस्ती वो अज कुजाई व वामनत चे कार अस्त। (कौन है, कहाँ से आता है और मुझसे क्या काम है?)

शाह जी के रहे-सहे हवास और गायब हो गए। जबान समझ में न आई। समझे कि जरूर आसमान का फरिश्ता है। हमारी जान लेने को आया है। दबे दाँतों बोले — समझता नहीं हूँगा कि आप क्या हुक्म देंगे। हमने बहुत गुनाह किए, अब माफ फरमाओ। कुछ दिन और जीने दो, तो यह ठगविद्या छोड़ दूँ। मैं समझ गया कि आप मेरी जान लेने आए हैं।

आज़ाद — यह बुढ़ापा और इतनी बदकारी, यह सिन और साल और यह चाल-ढाल। याद रख कि जहन्नुम के गड्ढे में गिरेगा और दोजख की आग में जलाया जाएगा। सुन, मैं न आसमान का फरिश्ता हूँ, न कोई जिन्न हूँ। मैं हकीम बलीनास की पाक रूह हूँ, हकीम हूँ, खुदा से डरता हूँ, मेरे कब्जे में बहुत से तिलस्म हैं, मेरा मजार इसी जगह पर था जहाँ तेरा चबूतरा है और जहाँ तू

नापाक रहता है और शोरबा लुढ़काता है। खैर, तेरी जहालत के सबब से मैंने तुझे छोड़ दिया; लेकिन अब तूने यह नया फरफंद सीखा कि हसीनों को फाँसता है और उनसे कुछ ऐंठता है। उस जमाने में यह औरत मेरी बीवी थी। ले, अब यह हथकंडे छोड़, मक्र और दगा से मुँह मोड़, नहीं तो तू है और हम। अभी ठीक बनाऊँगा और नाच नचाऊँगा। तेरी भलाई इसी में है कि अपना कुल हाल कह चल, नहीं, तू जानेगा। मेरा कुछ न जायगा।

शाह जी ने शराब की तरंग में मारे डर के अपनी बीती कहानी शुरू की — चौदह बरस के सिन से मुझे चोरी करने की लत पड़ी और इतना पक्का हो गया कि आँख चूकी और गठरी उड़ाई, गाफिल हुआ और टोपी खिसकाई। पहले कुछ दिन तो लुटियाचोर रहे, मगर यह तो करती विद्या है, थोड़े ही दिनों में हम चोरों के गुरू-घंटाल हो गए। सेंद लगाना कोई हमसे सीखे, छत की कड़ियों में यों चिमट रहूँ, जैसे कोई छिपकली, उचक-फाँद में बन्दर मेरे मुकाबले में मात है, दबे पाँव कोसों निकल जाऊँ, क्या मजाल किसी को आहट हो। शहर भर के बदमाश, लुक्के, लुच्चे, शोहदे हमारी टुकड़ी में शामिल हुए। जिसने हेकड़ी की उसको नीचा दिखाया; जो टेढ़ा हुआ उसको सीधा बनाया। खूब चोरियाँ करने लगे। आज इसका माल मारा, कल उसकी छत काटी, परसों किसी नवाब के घर में सेंद दी। यहाँ तक कि डाके मारने

लगे, सड़कों पर लूटमार शुरू कर दी। गोल में दुनियाभर के बेफिक्रे जमा हैं, कोई चंडू उड़ाता है, कोई चरस के दम लगाता है। गाँजे, भाँग, ठर्रे सबका शौक है। तानें उड़ रही हैं, बोतलें चुनी हुई हैं, गड़ेरियों के ढेर लगे हुए हैं, मक्खियाँ भिन-भिन करती हैं, सबको यही फिक्र है कि किसी का माल तार्के। एक दिन शामत आई, एक नवाब साहब के यहाँ चोरी करने का शौक चर्राया। उनके खिदमतगार को मिलाया, नौकरानियों को भी कुछ चटाया, और एक बजे के वक़्त घर से निकले। उसी मुहल्ले में एक महीने पहले ही एक मकान किराए पर ले रखा था। पहले उसी मकान में बैठे। नवाब का मकान कोई पचास ही कदम होगा। तीन आदमी दस कदम पर और पाँच बीस कदम पर खड़े हुए। हम, खिदमतगार और एक चोर साथ चले कि घर में धँस पड़ें। करीब गए तो ड्योढ़ी पर चौकीदार ने पुकारा, कौन? सन से जान निकल गई! उम्रभर में यही खता हुई कि चौकीदार को पहले से न मिला लिया। अब क्या करें। 'पिछली बुद्धि गँवार की!' फिर चौकीदार ने ललकारा — कौन आता है? हमने कहा — हम हैं भाई। चौकीदार बोला — हम की एक ही कही, हम का कुछ नाम भी है?

आखिर हमने चौकीदार को उसी दम कुछ चटा कर सेंद दी। घर में घुसे, तो क्या देखते हैं कि एक पलंग पर नवाब साहब

सोते हैं, और दूसरे पलंग पर उनकी बेगम साहबा मीठी नींद में मस्त हैं, मगर शमा रोशन है। अपने साथी से इशारा किया कि शमा को गुल कर दे। वह ऐसा घबराया कि बड़े जोर से फूँक मारी। मैंने कहा, खुदा ही खैर करे, ऐसा न हो कि नवाब जाग उठें तो लेने के देने पड़ें। आगे बढ़कर मैंने बत्ती को तेल में खिसका दिया, चलिए, चिराग गुल, पगड़ी गायब। बेगम साहबा के सिरहाने जेवर का संदूक रखा था, मगर आड़ में। हम तो महरी की जबानी कच्चा चिट्ठा सुन चुके थे, 'घर का भेदी लंका ढाय', फौरन संदूक उठाया और दूसरे साथी को दिया कि बाहर पहुँचाए। वह कुछ ऐसा घबराया कि मारे बौखलाहट के काँपने लगा और धम से गिर पड़ा।

धमाके की आवाज सुनते ही नवाब चौंक पड़े, शेर बच्चा सिरहाने से उठा, पैतरे बदल-बदल कर फिकैती के हाथ दिखाने लगे। मैंने एक चाकी का हाथ दिया, और झट कमरे से निकल, दीवाल पर चढ़, पिछवाड़े कूदा और 'चोर-चोर' चिल्लाता हुआ नाके बाहर। बे दोनों सिरबोझिए नौसिखिए थे, पकड़ लिए गए। मगर वाह रे नवाब! बड़ा ही दिलेर आदमी है। दोनों को घेर लिया। वे तो जेल खाने गए, मैं बेदाग बच गया। अब मैंने वह पेशा छोड़ा और खून पर कमर बाँधी। एक महीने में कई खून किए।

पहले एक सौदागर के घर में घुस कर उसे चारपाई पर ढेर कर दिया; जमा-जथा हमारे बाप की हो गई। फिर रेल पर एक मालदार जौहरी का गला घोट डाला और जवाहिरात साफ उड़ा लिए। तीसरा दफा दो बनजारे सराय में उतरे थे। हमें खबर मिली कि उनके पास सोने की ईंटें हैं। उनको सराय ही में अंटा-गफील करना चाहा। भठियारे ने देख लिया पकड़े गए और कैदखाने गए। वहाँ आठ दिन रहे थे, नवें दिन रात को मौका पा कर कालकोठरी का दरवाजा तोड़ा, एक बदकंदाज का सिर ईंट से फोड़ा, पहरे के चौकीदार को उसी की बंदूक से शहीद किया और साफ निकल भागे। अब सोचा, कोई नया पेशा अख़्तियार करें, सोचते-सोचते सूझी कि शाह जी बन जाओ। चट फकीरों का भेस बदल कर एक पेड़ के नीचे बिस्तर जमा दिया। पुजने लगे।

एक दिन इस गाँव के ठाकुर का लड़का बीमार हुआ। यहाँ हकीम, न डाक्टर! किसी ने कह दिया कि एक फकीर पकरिया के नीचे बैठे खुदा को याद किया करते हैं, चेहरे से नूर बरसता है, किसी से लेते हैं न देते हैं। ठाकुर ने सुनते ही अपने भाई को भेजा। हम साथ गए। खुशी से फूले न समाते थे कि आज पाला हमारे हाथ रहा तो उम्र भर चैन से गुजरेगी। हमारा पहुँचना था कि सब उठ खड़े हुए। हम किसी से बोले न चाले, जाकर लड़के के पास बैठ गए और कुछ बुदबुदा कर उठ खड़े हुए। देखा,

लड़के का बुरा हाल है, बचना मुहाल है। ठाकुर कदमों पर गिर पड़ा। हमने पीठ ठोंकी और लंबे-लंबे डग बढ़ाते चल दिए।

संयोग से एक योरोपियन डाक्टर दौरा करता हुआ उस गाँव में आया और उसकी दवा से मरीज चंगा हो गया। अब मजा देखिए, डाक्टर का कोई नाम भी नहीं लेता, सब हमारी तारीफ करते हैं। ठाकुर ने हमें एक हाथी और हजार रुपए दिए। यह हमने कबूल न किया। सुभान-अल्लाह! फिर तो हवा बँध गई। अब चारों तरफ हम ही हम हैं, कोई बीमार हो, तो हम पूछे जाएँ, कोई मरे तो हम बुलाए जाएँ। मियाँ-बीबी के झगड़ों में हम काजी बनते हैं, बाप-बेटे का झगड़ा हम फैसला करते हैं। सुबह से शाम तक डालियों पर डालियाँ आती रहती हैं।

आज़ाद ने यह किस्सा सुन कर शाह जी को खूब डाँटा — तू काफिर है, मलऊन है, तू अपनी मक्कारी से खुदा के बन्दों को ठगता है, अब हमारी बात सुन, हमारा चेला बन जा, तो तुझे छोड़ दें। कल तड़के गजरदम गाँव भर में कह दे कि हमारे पीर आए हुए हैं। दो सौ ग्यारह बरस की उम्र बताना। जिसे ज़ियारत करनी हो, आए। शाह जी की बाछें खिल गईं कि चलो, किसी तरह जान तो बची। नूर के लड़के गाँव भर में पुकार आए कि हमारे पीर आए हैं, जिसे देखना हो, देख ले। शाह जी की वहाँ धाक बँधी ही थी, जब लोगों ने सुना कि इनके भी बली-खंगड़

आए हैं, तो शौक चर्राया कि ज़ियारत को चलें। दो दिन और दो रात मियाँ आज़ाद अपने घर पर आराम करते रहे। तीसरे दिन फकीराना भेस बदले हुए हरे-हरे पेड़ों के साये में आ बैठे। देखते क्या हैं, पौ फटते ही औरत-मर्द, ठट के ठट जमा हो गए। हिंदू और मुसलमान, जवान औरतें, गहनों से लदी हुई आकर बैठी हुई हैं। तब आज़ाद ने खड़े हो कर कुरान की आयतें पढ़ना शुरू कीं और बोले — ऐ खुदा के बन्दों, मैं कोई वली नहीं हूँ, तुम्हारी ही तरह खुदा का एक नाचीज बंदा हूँ। अगर तुम समझते हो कि कोई इनसान चाहे कितना ही बड़ा फकीर क्यों न हो, खुदा की मरजी में दखल दे सकता है, तो तुम्हारी गलती है। होता वही है, जो खुदा को मंजूर होता है। हमारा फर्ज यही है कि तुम्हें खुदा की याद दिलाएँ। अगर कोई फकीर, कोई करामात दिखाकर अपना सिक्का जमाना चाहता हो, तो समझ लो कि वह मक्कार है। जाओ, अपना-अपना धंधा देखो।

6

मियाँ आज़ाद मुँह-अँधेरे तारों की छाँह में बिस्तर से उठे, तो सोचे; साँड़नी के घास-चारे की फिक्र करके सोचा कि जरा अदालत और

कचहरी की भी दो घड़ी सैर कर आएँ। पहुँचे तो क्या देखते हैं, एक घना बाग है और पेड़ों की छाँह में मेला साल लगा है। कोई हलवाई से मीठी-मीठी बातें करता है। कोई मदारिये को ताजा कर रहा है। कुंजड़े फलों की डालियाँ लगाए बैठे हैं। पानवाले की दुकान पर वह भीड़ है कि खड़े होने की जगह नहीं मिलती। चूरनवाला चूरन बेच रहा है। एक तरफ एक हकीम साहब दवाओं की पुड़िया फैलाए जिरियान की दवा बेच रहे हैं। बीसों मुंशी-मुतसद्दी चटाइयों पर बैठे अर्जियाँ लिख रहे हैं। मुस्तगीस हैं कि एक-एक के पास दस-दस बैठे कानून छाँट रहे हैं — अरे मुंशी जी, यो का अंट-संट चिघटियाँ सी खँचाय दिहो? हम तो आपन मजमून बतावत हैं, तुम अपने अढ़ाई चाउर अलग चुरावत हौ। ले मोर मुंशी जी, तनिक अस सोच-विचार के लिखो कि फरीक सानी क्यार मुकद्दमा ढिसमिसाय जाय। ले तोहार गोड़ धरित है, दुइ कच्चा अउर लै लेव। आज़ाद ने जो गवाह-घर की ओर रुख किया, तो सुभानअल्लाह! काले-काले चोगों की बहार नजर आई। कोई इधर से उधर भागा जाता है, कोई मसनद लगाए बैठा गँवारों से डींग मार रहा है। जरा और आगे बढ़े थे कि चपरासी ने कड़क कर आवाज लगाई — सत्तारखाँ हाजिर हैं?

एक अफीमची के पाँव लड़खड़ाये, सीढ़ियों से लुढ़लते हुए धम से नीचे! एक ठठोल ने कहा — वाह जनाब, गिरे तो मुझसे पूछ क्यों न लिया?

आज़ाद जरा और आगे बढ़े, तो एक आदमी ने डाँट बताई — कौन हो? क्या काम है?

आज़ाद — इसी शहर में रहता हूँ। जरा सैर करने चला आया।

आदमी — कचहरी में खड़े रहने का हुक्म नहीं है, यहाँ से जाइए, वरना चपरासी को आवाज देता हूँ।

आज़ाद — बिगड़िए नहीं, बस इतना बता दीजिए कि आपका ओहदा क्या है?

आदमी — हम उम्मेदवारी करते हैं। तीन महीने से रोज यहाँ काम सीखते हैं। अब फर्राटें उड़ाता हूँ। डाकेट तड़ से लिख लूँ, नकशा चुटकियों में बनाऊँ। किसी काम में बन्द नहीं। पंद्रह रुपए की नौकरी हमें मिला ही चाहती है। मगर पहले तो घास छीलना मुश्किल मालूम होता था, अब लुकमान बन गया?

आज़ाद — क्यों मियाँ, तुम्हारे वालिद कहाँ नौकर हैं?

उम्मेदवार — जनाब, वह नौकर नहीं है, दस गाँव के जमींदार हैं।

आज़ाद — क्या तुमको घर से निकाल दिया, या कुछ खटपट है?

उम्मेदवार — तो जनाब हम पढ़े-लिखे हैं कि नहीं!

आज़ाद — हजरत, जिसे खाने को रोटियाँ न हों, वह सत्तू बाँध कर नौकरी के पीछे पड़े, तो मुजायका नहीं। तुम खुदा के करम के जमीदार हो, रुपएवाले हो, तुमको यह क्या सूझी कि दस-पाँच की नौकरी के लिए एड़ियाँ रगड़ते हो? इसी से तो हिंदुस्तान खराब है; जिसे देखो, नौकरी पर आशिक। मियाँ, कहा मानो, अपने घर जाओ, घर का काम देखो, इस फेर में न पड़ो। यह नहीं कि आमामा बाँधा और कचहरी में जूतियाँ चटकाते फिरते हैं! मुहर्रिर पर लोट, अमानत पर उधार खाए बैठे हैं।

दूसरे उम्मेदवार की निस्बत मालूम हुआ कि एक लखपति महाजन का लड़का है। बाप की कोठी चलती है। लाखों का वारा-न्यारा होता है। बेटा बारह रुपए की नौकरी के लिए सौ-सो चक्कर लगाता है। चौथे दर्जे से मदरसा छोड़ा और अपरेंटिस हुए। काम खाक नहीं जानते। बाहर जाते हैं, तो मुंसरिम साहब से पूछ कर। इस वक़्त जब दफ्तर वाले अपने-अपने घर जाने लगे, तो हजरत पूछते क्या हैं — क्यों जी, यह सब चले जाते हैं, अभी छुट्टी की घंटी तो बजी ही नहीं।

स्कूल की घंटी याद आ गई!

मियाँ आज़ाद दिल ही दिल में सोचने लगे कि ये कमसिन लड़के, पंद्रह-सोलह बरस का सिन; पढ़ने-लिखने के दिन, मदरसा छोड़ा, कॉलेज से मुँह मोड़ा और उम्मेदवारों के गोल में शामिल हो गए। 'अलिफबे नगाड़ा, इल्म को चने के खेत में पछाड़ा!' मेहनत से जान निकलती है, किताब को देख कर बुखार चढ़ आता है। जिससे पूछो कि भाई, मदरसा क्यों छोड़ बैठे, तो यही जवाब पाया कि उकलेदिस की अक्ल से नफरत है। तवारीख किसे याद रहे, यहाँ तो घर के बच्चों का नाम नहीं याद आता। हम भी सोचे, कहाँ का झंझट! अलग भी करो, चलता धंधा करो, जिसे देखिए, नौकरी के पीछे पड़ा हुआ है। जमींदार के लड़के को यह ख्वाहिश होती है कि कचहरी में घुसूँ, सौदागर के लड़के को जी से लगी है कि कॉलेज से चंपत हूँ और कचहरी की कुर्सी पर जा डटूँ। और मुहर्रिर, मुंशी, अमले तो नौकरी के हाथों बिक ही गए हैं। उनकी तो घूँटी ही में नौकरी है। बाबू बनने का शौक ऐसा चर्राता है कि अक्ल को ताक पर रख कर गुलामी करने को तैयार हो जाते हैं।

यह सोचते हुए मियाँ आज़ाद और आगे चले, तो चौंक में आ निकले। देखते क्या हैं, पंद्रह-बीस कमसिन लड़के बस्ते लटकाए, स्लेटें दबाए, परे जमाए, लपके चले आते हैं। पंद्रह-पंद्रह बरस का सिन, उठती जवानी के दिन, मगर कमर बहत्तर जगह से झुकी

हुई, गालों पर झुर्रियाँ, आँखें गड्ढे में धँसी हुई। यह झुका हुआ सीना, नई जवानी में यह हाल! बुढ़ापे में तो शायद उठ कर पानी भी न पिया जायगा। एक लड़के से पूछा, क्यों मियाँ, तुम सब के सब इतने कमजोर क्यों दिखलाई देते हो? लड़के ने जवाब दिया, जनाब, ताकत किसके घर से लाएँ? दवा तो है नहीं कि अत्तार की दुकान पर जायँ, दुआ नहीं कि किसी शाह जी से सवाल करें।, हम तो बिना मौत ही मरे। दस बरस के सिन में तो बीवी छमछम करती हुई घर में आई। चलिए, उसी दिन से पढ़ना-लिखना छप्पर पर रखा। नई धुन सवार हुई। तेरहवें बरस एक बच्चे के अब्बाजान हो गए। रोटियों की फिक्र ने सताया। हम दुबले-पतले न हों, तो कौन हो? फिर अच्छी गिजा भी मयस्सर नहीं; आज तक कभी दूध की सूरत न देखी, घी का सिर्फ नाम सुनते हैं।

मियाँ आज़ाद दिल में सोचने लगे, इन गरीबों की जवानी कैसी बर्बाद हो रही है। इसी धुन में टहलते हुए हजरतगंज की तरफ निकल गए, तो देखा, एक मैदान में दस-दस पंद्रह-पंद्रह बरस के अंगरेजों के लड़के और लड़कियाँ खेल रहे हैं। कोई पेड़ की टहनी पर झूलता है, कोई दीवार पर दौड़ता है। दो-चार गेंद खेलने पर लट्टू हैं। एक जगह देखा, दो लड़कों ने एक रस्सी पकड़ कर तानी और एक प्यारी लड़की बदन तौल कर जमीन से

उस पार उचक गई। सब के सब खुश और तंदुरुस्त हैं। आज़ाद ने उन होनहार लड़कों और लड़कियों को दिल से दुआ दी और हिंदुस्तान की हालत पर अफसोस करते हुए घर आए।

7

मियाँ आज़ाद साँड़नी पर बैठे हुए एक दिन सैर करने निकले, तो एक सराय में जा पहुँचे। देखा, एक बरामदे में चार-पाँच आदमी फर्श पर बैठे धुआँधार हुक्के उड़ा रहे हैं, गिलौरी चबा रहे हैं और गजलें पढ़ रहे हैं।

एक कवि ने कहा, हम तीनों के तख़ल्लुस का काफिया एक है — अल्लामी, फहामी और हामी; मगर तुम दो ही हो — वकाद और जवाद।

एक शायर और आ जायँ, तो दोनों तरफ से तीन-तीन हो जायँ। इतने में मियाँ आज़ाद तड़ से पहुँच गए।

एक ने पूछा — आप कौन?

आज़ाद — मैं शायर हूँ।

'आप तख़ल्लुस क्या करते हैं?'

आज़ाद ने कहा — आज़ाद।

तब तो इन सबकी बाँछें खिल गईं। जवाद, वकाद और आज़ाद का तुक मिल गया। अब लोग गजलें पढ़ने लगे। एक आदमी शेर पढ़ता है, बाकी, तारीफ करते हैं — सुभान-अल्लाह, क्या तबीयत पाई है, वाह-वाह! फिर फरमाइएगा; कलम तोड़ दिए, कितनी साफ जबान है! इस बोल-चाल पर कुरबान। कोई झूमता है, कोई टोपियाँ उछालता है।

आज़ाद — मियाँ, सुनो, हम शायरी के कायल नहीं। आप लोग तो जबान पर मरते हैं और हम खयालों पर जान देते। हमें तो नेचर की शायरी पसंद है।

फहामी — अख्खाह, आप नेचरिए हैं! अनीसिए और दबीरिए तो सुनते थे, अब नेचरिए पैदा हुए। गजब खुदा का! आपको इन उस्तादों का कलाम पसंद नहीं आता, जो अपना सानी नहीं रखते थे?

आज़ाद — मैं तो साफ कहता हूँ, यह शायरी नहीं, खब्त है, बेतुकापन है, इसका भी कुछ ठिकाना है, झूठ के छप्पर उड़ा दिए। अब कान खोल कर नेचरी शायरी सुनो।

यह कह कर आज़ाद ने अंगरेजी की एक कविता सुनाई तो वह कहकहा पड़ा कि सराय भर गूँज उठी।

फहामी — वाह जनाब, वाह, अच्छी गिट-पिट है! इसी को आप शायरी कहते हैं?

आज़ाद — 'शेख क्या जाने साबुन का भाव!' 'भैंस के आगे बीन बजाए, भैंस खड़ी पगुराय।'

आज़ाद तो नेचरल शायरी की तारीफ करने लगे, उधर वे पाँचों उर्दू की शायरी पर लोट-पोट थे। आतश और मीर की जबान, नासिख, अनीस, जौक़, ग़ालिब, मोमिन-जैसे उस्तादों के कलाम पढ़-पढ़ कर सुनाते थे। अब बताइए, फैसला कौन करे? भठियारिन झगड़ा चुकाने से रही, भठियारा घास ही छीलना जाने, आखिर यह राय तय पाई कि शहर चलिए! जो पढ़ा-लिखा आदमी पहिले मिले, उसी का फैसला सबको मंजूर। सबने हाथ पर हाथ मारा। चलने ही को थे कि भठियारिन ने इनको ललकारा और चमक कर मियाँ जवाद का दामन पकड़ा — मियाँ, यह बुत्ते किसी और को बताना, हम भी इसी शहर में बढ़ कर इतने बड़े हुए हैं। हूँ तो अभी आपकी लड़की के बराबर, मुल सैकड़ों ही कुओं का पानी पी डाला। पहले कौड़ी-कौड़ी बाएँ हाथ से रख जाइए, फिर असबाब उठाइए।

अल्लामी — नेकबख्त, हम शरीफ भलेमानस हैं। शरीफ लोग कहीं दो पैसे के लिए ईमान बेचा करते हैं? चलो, दामन छोड़ दो, अभी दम के दम में आए।

भठियारिन — इस दाम में बंदी न आएगी। ऐसे बड़े साहूकार खरे असामी हो, तो एक गंडा चुपके से निकाल दो न?

वकाद — यह मुड़चिरी है या भठियारिन? साहब, इससे पीछा छुड़ाओ। ऐसी भठियारिन तो कहीं देखी न सुनी।

भठियारिन — मियाँ, कुछ बेधे तो नहीं हुए हो, या बिल्ली नाँघ कर घर से चले थे? चुपके से पैसे रख कर तब कदम उठाइए।

मियाँ जवाद सीधे-सादे आदमी थे। जब उन्होंने देखा कि मुफ्त में घेरे गए, तो कहा — भाई, तुम पाँचों जाओ, हम यहाँ भी भठियारिन की खातिर से बैठे हैं। तुम लोग निपट आओ। वे सब तो उधर चले और जवाद सराय ही में भठियारिन की हिरासत में बैठे, मगर एक आने पैसे न दे सके। दो-चार मिनट के बाद पुकारा — भठियारी-भठियारी! मैं लेटा हूँ। कहीं ऐसा न हो कि तुम्हारे पेट में चूहे दौड़े कि रफू-चक्कर हुए। फिर तीन मिनट के बाद गला फाड़-फाड़ चिल्लाने लगे — भठियारिन, हम भागनेवाले असामी नहीं है, तुम मजे से अपनी दाल बघारो।

जब इन्होंने बार-बार छेड़ना शुरू किया, तो वह आग-भभूका हो गई और बोली — मियाँ, ऐसे दो पैसे से दरगुजरी, तुमने तो गुल मचा-मचा कर मेरा कलेजा पका दिया। आप जायँ, बल्कि खटिया समेत दफन हों, तो मैं खुश, मेरा अल्लाह खुश। ऐ वाह, 'देखी तेरी कालपी और बावन पुरे उजाड़।' मियाँ, हूँ तो अभी जुमा-जुमा आठ दिन की, मुल नाक पर तो मक्खी बैठने नहीं देती!

इधर मियाँ जवाद भठियारिन से चुहल कर रहे थे, उधर वे पाँचों आदमी सराय से चले, तो रास्ते में एक बुजुर्ग से मुलाकात हुई।

हामी ने कहा — या मौलाना, एक मसला हल कीजिए; तो एहसान होगा।

बुजुर्ग — मियाँ, मैं एक जाहिल, बेवकूफ, बेसमझ, गुमराह आदमी हूँ, मौलाना नहीं; मौलाना होना दुश्वार बात है। मुझे मौलाना कहना इस लफ्ज को बदनाम करना है।

हामी — अच्छा साहब, आप मौलाना न सही, मुंशी सही, मियाँ सही, आप एक झगड़े का फैसला कर दीजिए और घर का रास्ता लीजिए। आपका हमारे बुजुर्गों पर और बुजुर्गों के बुजुर्गों पर एहसान होगा। झगड़ा यह है कि यह साहब (आज़ाद की तरफ इशारा करके) नेचरी शायरी के तरफदार हैं, और हम चारों उर्दू-

शायरी पर जान देते हैं। अब बतलाइए, हममें से कौन ठीक कहता है और कौन गलत?

बुजुर्ग — यह तो बहुत गौर करने की बात नहीं। आप चारों मुफ्त में झगड़ा करते हैं। आप सीधे अस्पताल जाइए और फस्द खुलवाइए, शायरी पर जान देना समझदारों का काम नहीं। जान खुदा की दी हुई है, उसी की याद में लगानी चाहिए। बाकी रही दूसरे किस्म की शायरी, मैंने उसका नाम भी नहीं सुना, उसके बारे में क्या अर्ज करूँ?

पाँचों आदमी यहाँ से निराश हो कर आगे बढ़े, तो एक मकतबखाना नजर से गुजरा। टूटा-फूटा मकान, पुरानी-धुरानी दालान, दीवारें बाबा आदम के वक़्त की। एक मौलवी साहब लंबी दाढ़ी लटकाए, हाथ में छड़ी लिए, हिल हिल कर पढ़ा रहे हैं और बीच-पचीस लड़के जदल-काफिया उड़ा रहे हैं। एक लड़के ने दूसरे की चाँद पर तड़ से धप जमाई। मौलवी साहब पूछते हैं — अबे, यह क्या हुआ? लड़के कहते हैं — जी, कुछ नहीं, तख्ती गिर पड़ी। अबे, यह तख्ती की आवाज थी? जी हाँ, और नहीं तो क्या? इतने में दो-चार शरीर लड़कों ने मुँह चिढ़ाना शुरू किया। देखिए मौलवी साहब, यह मुँह चिढ़ाता है। नहीं मौलवी साहब, यह झक मारता है, मैं तो बाहर गया था।

गुल-गपाड़े की आवाज ऐसी बुलंद है कि आसमान की खबर लाती है, कान-पड़ी आवाज नहीं सुनाई देती। जिधर देखो, चिल्ल-पों, जूती-पैजार! मगर सब के सब हिल-हिल कर बड़बड़ाते जाते हैं। किताब तो दो ही चार पढ़ रहे हैं; मगर वाही-तबाही, अनाप-शनाप बहुतों की जबान पर है।

एक — आज शाम को मैं बाने की कनकइया जरूर लड़ाऊँगा।

दूसरा — आगा तकी के बाग में कौवा हलाल है।

तीसरा — अरे माली, तुझे गुलबूटे की पहचान रहे।

चौथा — मौलवी साहब, गो पीर हुए, नादान रहे।

पाँचवाँ —

पढ़ोगे-लिखोगे, तो होगे खराब,
खेलोगे-कूदोगे, होगे नवाब।

मगर सबकी आवाजें ऐसी मिल-जुल गई हैं कि खाक समझ में नहीं आता, क्या खुराफात बकते हैं। लौंडे तो जदल-काफिया उड़ा रहे हैं, उधर मौलवी साहब मजे से ऊँघते हैं। जब नींद खुली, तो एक लड़के को बुलाया — आओ, किताब लाओ, सबक पढ़ लो। वह सिर खुजलाता हुआ मौलवी साहब के करीब जा बैठा, और सबक शुरू हुआ, मगर न तो लड़के ने कुछ समझा कि मैंने क्या

पढ़ा और न मौलवी साहब को मालूम हुआ कि मैंने क्या पढ़ाया। दोपहर के वक़्त लड़के तख्ती ले कर बैठे, कोई गेंदे की पत्ती तख्ती पर मलता है, कोई कौड़ी से तख्ती को चिकनाता है। आध घंटे तक यही हुआ किया। फिर लड़के लिखने बैठे, मौलवी साहब कोठरी से मक्खियों को निकाल और दरवाजा बन्द करके सो रहे। यहाँ खूब लप्पा-डुग्गी हुई। दो घंटे के बाद मौलवी साहब चौंके। कोठरी खोलते हैं, तो यहाँ दो लड़कों में चट-पट हो रही है, दोनों गुँथे पड़े हैं। निकलते ही एक के तमाचे लगाने शुरू किए। जो अमीर का लड़का था और मौलवी साहब की त्यवहारी और जुमेराती खूब दिया करता था, उससे तो न बोले, बेचारे गरीब पर खूब हाथ साफ किया। आज़ाद ने दिल में कहा —

गर हमीं मकतब अस्त वई मुल्ला,
कारे तिकलाँ तमाम ख्वाहद शुद।

(अगर यही मकतब है और यही मौलवी, तो लड़के पढ़ चुके।)

8

एक दिन मियाँ आज़ाद सराय में बैठे सोच रहे थे, किधर जाऊँ कि एक बूढ़े मियाँ लठिया टेकते आ खड़े हुए और बोले — मियाँ,

जरी यह खत तो पढ़ लीजिए, और इसका जवाब भी लिख दीजिए। आज़ाद ने खत लिखा और पढ़ कर सुनाने लगे —

मेरे खूसट शौहर, खुदा तुमसे समझे!

आज़ाद — वाह! यह तो निराला खत है। न सलाम, न बन्दगी। शुरू ही से कोसना शुरू किया।

बूढ़े — जनाब, आप खत पढ़ते हैं कि मेरे घर का कजिया चुकाते हैं? पराये झगड़े से आपका वास्ता? जब मियाँ-बीबी राजी है, तब आप कोई काजी हैं!

आज़ाद — अच्छा, तो यह कहिए कि आपकी बीवी-जान का खत है। लीजिए, सुनाए देता हूँ —

'मेरे खूसट शौहर, खुदा तुमसे समझो! सिकंदर पाताल से प्यासा आया; मगर तुमने अमृत की दो-चार बूँदे जरूर पी ली हैं, जभी मरने का नाम नहीं लेते। कुछ ऊपर सौ बरस के हो हुए, अब आखिर क्या आकबत के बोरिये बटोरोगे? जरा दिल में शरमाओ, हजारों नौजवान उठते जाते हैं, और तुम टैयाँ से मौजूद हो। डंकू फीवर भी आया, मगर तुम मूँछों पर ताव ही देते रहे। हैजे ने लाखों आदमी चट किए, मगर आप तो हैजे को भी चट कर जायँ और डकार तक न लें। बुखार में हजारों हयादार चल बसे, मगर तुम और भी मोटे हो गए। तुम्हें लकवा भी नहीं मारता, लू के

झोंके भी तुम्हें नहीं झुलसाते, दरिया में भी तुम नहीं फिसल जाते, और सौ बात की एक बात यह है कि अगर हयादार होते, तो एक चिल्लू काफी था; मगर तुम वह चिकने घड़े हो कि तुम पर चाहे हजारों ही घड़ें पड़ें; लेकिन एक बूँद न थम सके। वाह पट्ठे, क्यों न हो! किस बुरी साइत में तुम्हारे पाले पड़ी। किस बुरी घड़ी में तुम्हारे साथ ब्याह हुआ। माँ-बाप को क्या कहूँ, मगर मेरी गरदन तो कुंद छुरी से रेत डाली। इससे तो किसी कुएँ ही में ढकेल देते, कसाई के हवाले कर देते, तो यह रोज-रोज का कुढ़ना तो न होता। तुम खुद ही इंसाफ करो। तुम्हारे बुढ़भस से मुझ पर क्या गाज पड़ी। हाथ तो आपके काँपते हैं, पाँव में सकत नहीं, मुँह में दाँत न पेट में आँत, कमर कमान की तरह झुकी हुई, आँखों की यह कैफियत कि दिन को ऊँट नहीं सूझता। लाठी टेक कर दस कदम चले भी तो साँस फूल गई, दम टूट गया। सुस्ताने बैठे, तो उठने का नाम नहीं लेते। सुबह को नन्हीं-नन्हीं दो चपातियाँ खा लीं, तो शाम तक खट्टी डकारें आ रही हैं, तोला भर सिकंजवीन का सत्यानाश किया; मगर हाजमा ठीक न हुआ! हाफिजे का यह हाल कि अपने बाप का भी नाम याद नहीं। फिर सोचो तो कि ब्याह करने का शौक क्यों चर्राया। एक पाँव तो कब्र में लटकाया है और खयाल यह गुदगुदाया है कि दूल्हा बनें, दुलहिन लाएँ। खुदा-कसम, जिस वक़्त तुम्हारा पोपला मुँह, सफेद

भौंह, गालों की झुर्रियाँ, दोहरी कमर, गंजी चाँद और मनहूस सूरत याद आती हे, तो खाना हराम हो जाता है। वाह बड़े मियाँ, वाह! खुदा झूठ न बुलाए, तो हमारे अब्बाजान से पचास-साठ बरस बड़े होंगे, और अम्माजान को तुमने गोद में खिलाया हो तो ताज्जुब नहीं। खुदा गवाह है, तुम मेरे दादा के बाप से भी बड़े हो, मगर वाह री किस्मत, कि आप मेरे शौहर हुए! जमीन फट जाय, तो मैं धँस जाऊँ।

–तुम्हारी जवान बीबी।'

आज़ाद — जनाब, इसका जवाब किसी बड़े मुंशी से दिलवाइए।

बूढ़ा — बुढ़ापे में अब कभी शादी न करेंगे।

आज़ाद — वाह, क्या अभी शादी करने की हवस बाकी है? अभी पेट नहीं भरा!

बूढ़ा — अब इसका ऐसा जवाब लिखिए कि दाँत खट्टे हो जायँ।

आज़ाद — आप औरत के मुँह नाहक लगते हैं।

बूढ़ा — जनाब, उसने तो मेरी नाक में दम कर दिया, और सच पूछो, तो जिस दिन उसको ब्याह लाए, नाक ही कट गई। ऐसी चंचल औरत देखी न सुनी। मजाल क्या कि नाक पर मक्खी बैठ जाय।

आखिर, आज़ाद ने पत्र का जवाब लिखा —

'मेरी अलबेली, छैल-छबीली, नादान बीवी को उसके बूढ़े शौहर की उठती जवानी देखनी नसीब हो। वह जुग-जुग जिए और तुम पूतों फलो, दूधों नहाओ, अठारह लड़के हों और अठारह दूनी छत्तीस छोकरियाँ। जब मैं दालान में कदम रखूँ, तो सब बच्चे, 'अब्बा आए अब्बा आए, खिलौने लाए, पटाखा लाए' कह कर दौड़ें। मगर डर यह है कि तुम भी अभी कमसिन हो, उनकी देखा-देखी कहीं मुझे अब्बा न कह उठना कि पास-पड़ोस की औरतें मुझे उँगलियों पर नचाएँ। मुझे तुमसे इतनी ही मुहब्बत है, जितनी किसी को अपनी बेटी से होती है। अपनी नानी को मैं ऐसा प्यारा न था, जितनी तुम मुझे प्यारी हो। और क्यों न हो, तुम्हारी परदादी को मैंने गोदियों में खिलाया है और मेरी बहन ने उसे दूध पिलाया है। मुझे तुम्हारी दादी का गुड़िया खेलना इस तरह याद है, जैसे किसी को सुबह का खाना याद हो। तुम्हारे खत ने मेरे दिल के साथ वह किया, जो बिजली खलिहान के साथ करती हे, लेकिन मुझमें एक बड़ी सिफत यह है कि परले सिरे का बेहया हूँ। और क्यों न हो, शर्म औरतों को चाहिए, मैं तो चिकना घड़ा हूँ। माना कि आँखों में नूर नहीं, मगर निगाह बड़ी बारीक रखता हूँ, बहरा सही, लेकिन मतलब की बात खूब सुनता हूँ, बुड्ढा हूँ, कमजोर हूँ, मगर तुम्हारी मुहब्बत का दम भरता हूँ। तुम्हारा प्यारा-प्यारा

मुखड़ा, रसीली अँखियाँ, गोरी-गोरी बहियाँ जिस वक़्त याद आती हैं, कलेजे पर साँप लोटने लगता है। तुम्हारा चाँदनी रात में निखर कर निकलना, कभी मुसकराना, कभी खिल-खिलाना-कितना शरमाना? कैसा लजाना? और तो और, तुम्हारी फुर्ती से दिल लोटपोट है, कलेजे पर चोट है। तुम्हारा फिरकी की तरह चारों ओर घूमना, मोरों की तरह झूमना, कभी खेलते-खेलते मेरी चपतगाह पर टीप जमाई, कभी शोखी से वह डाँट बताई कि कलेजा काँप उठा, कभी आप ही आप रोना, कभी दिन-दिन भर सोना, अल्हड़पन के दिन, बारह बरस का सिन, बीवीजान, तुम पर कुरबान, ले कहा मानो, हमें गनीमत जानो। मैं सुबह का चिराग हूँ, हवा चले या न चले, अब गुल हुआ, अब गुल हुआ। डूबता हुआ आफताब हूँ, अब डूबा, अब डूबा। मुझे सताना, मुए पर सौ दुर्रे! तुम खूब जानती हो कि मेरी बातें कितनी मीठी होती हैं। सत्तर बरस हो गए कि दाँत चूहे ले गए, तब से हलुए पर बसर है, फिर जो रोज हलुआ खायगा, उसकी बातें मीठी क्यों न होंगी। तुम लाख रूठो, फिर भी हमारी हो, बीवी हो, वह शुभ घड़ी याद करो; जब हम दूल्हा बने, पुराने सिर पर नई पगड़ी जमाए, सेहरा लटकाए, मेहँदी लगाए, मुर्गी के बराबर घोड़िया पर सवार, 'मीठी पोई' जाते थे, और तुम दुलहिन बनी, सोलह सिंगार किए पालकी में झाँक रही थीं। हमारे गालों की झुरियाँ, हमारा पोपला मुँह, हमारी

टेढ़ी कमर देख कर खुश तो न हुई होगी? और क्या लिखूँ, एक नसीहत याद रखो, एक तो मेले-ठेले न जाना, दूसरे आस-पास की छोकरियों को गुइयाँ न बनाना। खुदा करे, जब तक जमीन और आसमान कायम है, तुम जवान रहो, और नादान रहो; हमारे सफेद बाल तुम्हें भायें, हासिद खार खाएँ।

–तुम्हारा बूढ़ा शौहर'

बूढ़ा — माशा-अल्लाह! आपने खूब लिखा, मगर इस खत को ले कौन जाय? अगर डाक से भेजता हूँ, तो गुम होने का डर, उस पर तीन दिन की देर। अगर आप इतना एहसान करें कि इसे वहाँ पहुँचा भी दें, तो क्या पूछना।

आज़ाद सैलानी तो थे ही, समझे, क्या हर्ज है, साँड़नी मौजूद है, चलूँ, इसी बहाने जरा दिल्लगी देख आऊँ। कुछ बहुत दूर भी नहीं, साँड़नी पर मुश्किल से दो घंटे की राह है। बोले — आप बुजुर्ग आदमी हैं। आपका हुक्म बजा लाना मेरा फर्ज है, लीजिए जाता हूँ।

यह कह कर साँड़नी पर बैठे और छुन-छुन करते जा पहुँचे। दरवाजे पर आवाज दी, तो एक कहारिन ने बाहर निकल कर पूछा — मियाँ कौन हो, कहाँ से आना हुआ किसकी तलाश है?

आज़ाद — बी महरी साहबा, सलाम। हम मुसाफिर परदेशी हैं।

कहारिन — वाह! अच्छे आए मियाँ, यह क्या कुछ सराय है?

आज़ाद — खुदा के लिए बेगम साहबा से कह दो कि बड़े मियाँ ने एक खत भेजा है।

महरी ने एक चौकड़ी भरी, तो घर के अन्दर थी। जा कर बोली — बीबी, मियाँ के पास से एक साहब आए हैं, खत लाए हैं।

वह चौंक उठी — चल झूठी, किसी और को जाकर उड़ाना, यहाँ कच्ची गोलियाँ नहीं खेली हैं। मियाँ किसी कब्रिस्तान में मीठी नींद सो रहे होंगे कि खत भेजेंगे?

महरी — जरी, झरोखे से झाँकिये तो; वह क्या सामने खड़े हैं।

बेगम साहबा झरोखे की तरफ चलीं, तो अपनी बूढ़ी अम्माँ को आईना सामने रखे, बाल सँवारते देखा। छेड़ कर बोलीं — ऐ अम्माँ, आज तो बतौर चोटी-कंघी की फिक्र है। कोई घूरे; तो इनसान निखार करे। कोई मरे, तो आदमी शिकार करे। तुम दो ऊपर अस्सी बरस की हुई, मगर जवानी की हवस न गई। खुदा ही खैर करे।

अम्माँ — मुझ नसीबों-जली की किस्मत में यही बदा था कि बेटी की जबान से ऐसी-ऐसी बातें सुनूँ। कोई और कहती, तो उसकी जबान निकाल लेती; लेकिन तुम तो मेरी आँखों की पुतली हो।

हाय! ममता बुरी चीज है! बेटा, तुम ये बातें क्या जानो, अभी जवान हो, नादान हो, बनावट-सजावट तो मेरी घूँटी में पड़ी थी, और मैं न बनती-ठनती, तो तुम्हारी आँखों को तिरछी चितपन कौन सिखाता? बाहर जाओ, तुम्हारे मियाँ का आदमी आया है।

बीबी ने झरोखे से जो देखा, एक आदमी सचमुच खड़ा है और है भी अलबेला, छैला, जवान, तो तुरंत महरी को भेजा कि जाकर उन्हें बैठने के लिए कुर्सी निकाल दे। आज़ाद तो कुर्सी पर बैठे और चिक के उधर आप जा बैठीं। आज़ाद की उन पर निगाह पड़ी, तो तीर सा लग गया। कमर ऐसी पतली कि साये के बोझ से बल खाए, मुखड़ा बिन घने चाँद को लजाए, उस पर सियाह रेशमी लिबास और हिना की बू-बास। जोबन फटा पड़ता था, निगाह फिसली जाती थी।

महरी ने आज़ाद से पूछा — बड़े मियाँ तो आराम से हैं?

आज़ाद — हाँ, मैं उनका खत लाया हूँ। अपनी बेगम साहबा से मेरा सलाम कहो और यह खत उनको दो।

महरी — बेगम साहबा कहती हैं, आप खत लाए हैं, तो पढ़कर सुना भी दीजिए।

आज़ाद ने खत पढ़कर सुनाया, तो उस नाजनीन का चेहरा मारे गुस्से के सुर्ख हो गया। बिना कुछ कहे-सुने समझ कर वहाँ से

उठीं और अपनी माँ के पास आकर खड़ी हो गईं। अम्माँजान इस वक़्त चाँदनी की बहार देखने में मसरूफ थीं। बोलीं — बेटी, देख तो क्या नूर की चाँदनी छिटकी हुई है, चाँद इस वक़्त दुलहिन बना हुआ है!

बेटी — अम्मीजान, तुम्हारी भी अनोखी बातें हैं। सरदी की चाँदनी, जैसे बूढ़े की नसीबों-जली बीवी की जवानी। आज तो आसमान यों ही झक-झक कर रहा है, आज निकला तो क्या, जब जानें कि अँधेरे-धूप में शक्ल दिखाए।

बुढ़िया ताड़ गई। बोली — बेटी, जरी सब्र करो, अपनी जवानी की कसम, बुड्ढा तो कब्र में पाँव लटकाए बैठा है, आज मुआ, कल दूसरा दिन, फिर हम तुमको किसी अच्छे घर ब्याहेंगे। अबकी खुदाई भर की खाक छान कर वह ढूँढ़ निकालूँ, जो लाखों में एक हो। सुबह-शाम खबर आना ही चाहती है कि बुड्ढा चल बसा।

यह सुन कर बेटी खिलखिला कर हँस पड़ी। बोली — अम्माँ, जब तुम अपनी जवानी की कसम खाती हो, तो मुझे बेअख्तियार हँसी आती है। तुम तो अपने को बिलकुल नन्हीं सी समझती हो। करोड़ों तो आपके गालों पर झुर्रियाँ, बगुले के पर का सा सफेद जूड़ा, सिर घड़ी का खटका बना हुआ, कमर टेढ़ी, मगर मेहँदी का लगाना न छूटा, न छूटा। रंगीन दुपट्टा ही उम्र भर ओढ़ा, जब

देखा, कंघी-चोटी से लैस। खुदा-कसम, ऐसी अनगढ़ बूढ़ी देखी न सुनी।

बुढ़िया ने टुइयाँ तोते की तरह पोपले मुँह से कहा — प्यारी, तुम्हारी बातों से मुझे हौल होता है, अल्लाह मेरी बच्ची पर रहम खाए, बूढ़े के मरने की खबर सुनाए।

महरी — बड़ी बेगम, आपके नमक की कसम, साहबजादी को दिलोजान से आपसे प्यार है; मगर भोली नादान हैं, जो अनाप-शनाप मुँह में आया, कह सुनाया। अल्हड़पने के तो इनके दिन ही हैं, जुमा-जुमा आठ दिन की पैदायस, नेक-बद, ऊँच-नीच क्या जानें। जब सयानी होंगी, तो शहूर आप-ही-आप सीख जायँगी।

बुढ़िया ने एक ठंडी साँस भर के कहा — जो मुझे इनकी बातों से रंज हुआ हो, तो खुदा मुझे जन्नत न दे। मगर करूँ क्या, बुरा तो यह मालूम होता है कि मुझको यह आये-दिन ताने देती है कि तुम बुढ़िया हो, बुढ़ापे में निखरती क्यों हो? मैं किससे कहूँ कि इसके गम ने मेरी कमर तोड़ डाली, इसको कुढ़ते देख कर घुली जाती हूँ, नहीं, अभी मेरा सिन ही क्या है! अच्छा, तू ही ईमान से कह, कोई और भी मुझे बूढ़ी कहता है?

महरी दिल में तो हँसती थी कि इन्हें जवान बनने का शौक चर्राया है, हौवा के साथ खेली होंगी, मगर अभी नन्हीं ही बनी

जाती हैं; लेकिन छटी हुई औरत थी, बात बना कर बोली — ऐ तौबा, बुढ़ापे की आप में तो छाँह भी नहीं, मेरा अल्लाह जानता है, अब आप और बिटिया को कोई साथ देख लेता है, तो पहले आप पर नजर पड़ती है, पीछे इन पर। बल्कि, एक मुई दिलजली ने परसों चुटकी ली थी कि 'छोटी बी तो छोटी बी; बड़ी बी सुभान अल्लाह।' लड़की तो खैर, इसकी माँ ने तो खूब काठी पाई है। आपका चेहरा कुन्दन की तरह दमकता है, जो देखता है, तरसता है।

बुढ़िया तो खिल गई लेकिन बेटी जल उठी। कड़क कर बोली — चल, चुप खुशामदिन! अल्लाह करे, तेरा मियाँ भी मेरे मियाँ का सा बुड्ढा हो जाय। और तुम खुशामद न करो, तो खाओ क्या? अम्माँ पर लोगों की नजर पड़ती है! झूठे पर शैतान की फटकार! बूढ़ी औरत, कुछ ऊपर सौ बरस का सिन, लठिया टेक कर दस कदम चलती हैं, तो घंटों हाँफा करती हैं। दिन को ऊँट और सारस नहीं सूझता, इनके बूढ़े नखरे देख कर हमको हँसी आती है। जी जलता है कि यह किस बिरते पर इतराती हैं, मुँह में दाँत न पेट में आँतें; भला कमर तो मेरे सबब से झुक गई, और दाँत क्या हुए?

आखिर, महरी ने उसे समझा-बुझा कर बात टाल दी, और बोली — वह मियाँ बाहर बैठे हैं, उनके लिए आप क्या कहती हैं? उसने

महरी की बात का कुछ जवाब न दिया। वहाँ से उठ कर बगीचे में आई और इठला-इठला कर टहलने लगी। बाल बिखरे हुए, यही मालूम होता था कि साँप लहरा रहा है। कमर लाखों बल खा रही हैं। मियाँ आज़ाद ने चिक की दराजों से जो उसे बेनकाब देखा, तो सन से जान निकल गई! कलेजे पर साँप लोटने लगा। संयोग से उस रमणी ने कहीं इनको देख लिया कि आँखें सेक रहे हैं और दूर ही से जोबन लूट रहे हैं, तो बदन को छिपाए, आँख चुराए, बिजली की तरह लौंक कर नजर से गायब हो गईं। आज़ाद हैरान कि अब क्या करूँ। आखिर, दिल की बेकरारी ने ऐसा मजबूर किया कि आठ-आठ आँसू रोकर यह गजल गाने लगे —

क्या जानिए कि वस्ल में क्या बात हो गई;
आँखें नहीं मिलाते हैं शरमाए जाते हैं।
दिल मेरा ले के क्या कहीं भूल आए हैं हुजूर?
खोए हुए से आप जो कुछ पाए जाते हैं।
काले डसें जो जुल्फ तुम्हारी कमी छुएँ!
लो, अब तुम्हारे सिर की कसम खाए जाते हैं।

तमकनत को न काम फरमाओ;
एक नजर मुड़के देखती जाओ।

आशिकों से न इस कदर शरमा;
एक निगह के लिए न आँख चुरा।
जाने-जाँ, कुछ तरस न खाओगी?
यों तड़पता ही छोड़ जाओगी?

वह इन-ऐसों की कब सुनने वाली थी, मुड़ कर देखना गाली थी। आज़ाद ने जब देखा कि यहाँ दाल गलने की नहीं, कोई यों टहलते हुए देख ले, तो लेने के देने पड़ें, तो बेचारे रोते हुए घर आए।

उधर उस नाजनीन ने जवानी की उमंग में यह ठुमरी भैरवी की धुन में लहरा-लहरा कर गाई —

पिया के आवन की भई बिरियाँ, दरवजवा ठाढ़ी रहूँ;
मोरे पिया को बेगि ले आओ री, निकसत जियरा जाय;
पिया दरवजवा ठाढ़ी रहूँ!

इसके जवाब में उनकी अम्माँजान टीपदार आवाज में कहती हैं —

जोबनवाँ, हो, चार दिना दीन्हों साथ।
जोबन रितु जात सभी मुख मोरत, 'कदर' न पूछे बात रे।
जोबनवाँ, हो, चार दिना दीन्हों साथ।

मियाँ आज़ाद ने चलते-चलते बाहर से यह तान लगाई —

तेरे नैनों ने मुझे मारा, रसीली मतवारियों ने जादू डारा।

महरी ने देखा कि सबने अपने-अपने हाल के मुताबिक हाँक लगाई। एक मैं ही फिसड्डी रह गई, तो वह भी कफन फाड़कर चीख उठी –

जाओ-जाओ, काहे ठाढ़े डारे गल-बाहीं रे?
घेरे रहत नित नेरे जैसे छाई रे।
जानत हूँ जो हमसे चहत हो
नाहक इतनी बिनती करत हो,
'कदर' करत हो अरे नाहीं-नाहीं रे।
जाओ चलो, काहे ठाढ़े डारे गल-बाहीं रे!

9

आज़ाद को नवाब साहब के दरबार से चले महीनों गुजर गए, यहाँ तक कि मुहर्रम आ गया। घर से निकले, तो देखते क्या हैं, घर-घर कुहराम मचा हुआ है, सारा शहर हुसैन का मातम मना रहा है। जिधर देखिए, तमाशाइयों की भीड़, मजलिसों की धूम, ताजिया-खानों में चहल-पहल और इमामबाड़ों में भीड़-भाड़ है। लखनऊ की मजलिसों का क्या कहना! यहाँ के मर्सिये पढ़ने वाले रूम और

शाम तक मशहूर हैं। हुसेनाबाद का इमामबाड़ा चौदहवीं रात का चाँद बना हुआ था। उनके साथ एक दोस्त भी हो लिए थे। उनकी बेकरारी का हाल न पूछिए। वह लखनऊ से वाकिफ न थे, लोटे जाते थे कि हमें लखनऊ का मुहर्रम दिखा दो; मगर कोई जगह छूटने न पाए। एक आदमी ने ठंडी साँस खींच कर कहा — मियाँ; अब वह लखनऊ कहाँ? वे लोग कहाँ? वे दिन कहाँ? लखनऊ का मुहर्रम रंगीले पिया जान आलम के वक़्त में अलबत्ता देखने काबिल था। जब देखो, बाँकों की तलवार मियान से दो उंगल बाहर। किसी ने जरा तीखी चितवन की, और उन्होंने खट से सिरोही का तुला हुआ हाथ छोड़ा, भंडारा खुल गया। एक-एक घंटे में बीस-बीस वारदातों की खबर आती थी, दुकानदार जूतियाँ छोड़-छोड़ कर सटक जाते थे। वह धक्कमधक्का, वह भीड़-भड़ाका होता था कि वाह जी वाह! इंतजाम करना खालाजी का घर न था। अब कोई चूँ भी नहीं करता, तब छोटे-छोटे आदमी हजारों लुटाते थे, अब कोई पैसा भी खर्च नहीं करता। अब न अनीस हैं, न दबीर, न जमीर हैं, न दिलगीर।

अफसोस जहाँ से दोस्त क्या-क्या न गए;
इस बाग से क्या-क्या गुलेराना न गए।
था कौन सा बाग, जिसने देखी न खिजाँ,
वो कौन से गुल खिले जो मुरझा न गए।

दबीर का क्या कहना था, एक बन्द पढ़ा और सुननेवाले लोट गए। अनीस को खुदा बख्शे, क्या कलाम था, गोया जवाहिरात के टुकड़े हैं। लेकिन हाथी लोटेगा भी, तो कहाँ तक! अब भी इस शहर की ऐसी ताजियादारी दुनियाँ भर में कहीं नहीं होती।

आज़ाद और उसके दोस्त चले जाते थे। राह में वह भीड़ थी कि कंधे से कंधा छिलता था। हवा भी मुश्किल से जगह पाती थी। गरीब-अमीर, बूढ़े-जवान उमड़े चले आते हैं। जिधर देखो, निराली ही सज-धज। कोई हुसैन के मातम में नंगे ही सिर चला जाता है, कोई हरा-हरा जोड़ा फड़काता है। हसीनों की मातमी पोशाक, बिखरे हुए बाल, कभी लजाना, कभी मुसकराना। शोहदों का सौ-सौ चकफेरियाँ लगाना तमाशाइयों की बातें, दिहातिनें बेंदी लगाए, फरिया फड़काय, गोंद से पटिया जमाए बातें कर रही हैं। लीजिए, आगा बाकर के इमामबाड़े में खट से दाखिल। वाह मियाँ बाकर, क्यों न हो, नाम कर गए। चकाचौंध का आलम है। लेकिन गली तंग, तमाशाइयों की अक्ल दंग। मगर लोग घुस-पैठ कर देख ही आते हैं। नाक टूटे या सिर फूटे, आगा बाकर का इमामबाड़ा जरूर देखेंगे।

दोनों आदमी वहाँ से आगे बढ़े, तो कच्चे पुल पहुँचे। देखते क्या हैं, एक बाबा आदम के जमाने के बूढ़े अगले वक्तों के लोगों को रो रहे हैं। वाह-वाह! लखनऊ के कुम्हार, क्या कमाल है। बुड्ढा

ऐसा बनाया कि मालूम होता है, पोपले मुँह से अब बोला, और अब बोला। वही सन के से बाल, वही सफेद भौंहें, वही चितवन, वही माथे की शिकन, वही हाथों की झुर्रियाँ, वही टेढ़ी कमर, वही झुका हुआ सीना। वाह रे कारीगर, तू भी अपने फन में यकता है। वहाँ से जो चले, तो दरोगा वाजिदअली के इमामबाड़े में आए। यहाँ सूरजमुखी पर वह जोबन था कि आफताब अगर एक नजर छिप कर देख पाता, तो शर्म के मारे मुँह छिपा लेता। बेधड़क जा कर कुर्सियों पर बैठ गए। इलायची, चिकनी डली पेश की गई। वहाँ से हुसेनाबाद पहुँचे। सुभान-अल्लाह! यह इमामबाड़ा है या जन्नत का मकान! क्या सजावट थी; बुर्जों पर कंदीलें रोशन थीं, मीनारों पर शमा जलती हुई चिरागों की कतार हवा के झोंकों से लहरा-लहरा कर अजब समाँ दिखाती थी। नजर जो देखी, तो आँखें ठंडी हो गईं।

अब इनके दोस्त को शौक चर्राया कि तवायफों के इमामबाड़ों की ज़ियारत करें। पहले मियाँ आज़ाद झिझके और बोले — बंदा ऐसी जगह नहीं जाने का, अपनी शान के खिलाफ हैं।

दोस्त ने कहा — भाई, तुम बड़े रूखे-फीके आदमी हो। हैदर, मुश्तरी, गौहर और आबादी के मर्सिये न सुने, तो किसी से क्या कहेंगे कि लखनऊ का मुहर्रम देखा। आजकल वहाँ जाना हलाल

है! इन दस दिनों में मजे से जहाँ चाहे जाइए, रंगीन कमरों में दो गाल हँस-बोल आइए, कोई कुछ नहीं कह सकता।

आज़ाद — यह कहिए तो खैर, बंदा भी लहू लगा कर शहीदों में दाखिल हो जाय।

पहले गौहर के यहाँ पहुँचे। अच्छे-अच्छे रईस-जादे बैठे हुए हैं। एक बड़े मालदार जौहरी साहब मटकते हुए आए। दस रुपए की कारचोबी टोपी सिर पर, प्याजी अतलस की भड़कीली अचकन पहने हुए। खिदमतगार के कंधे पर कीमती दुशाला। यह ठाट-बाट, मगर बैठते ही टोके गए। बैठे तो जरीह (ताजिया) की तरफ पीठ करके!

गौहर ने एक अजीब अदा से झिड़क दिया — ऐ वाह, बड़े तमीजदार हो। जरीह की तरफ पीठ कर ली। सीधे बैठो, आदमियत के साथ!

मियाँ आज़ाद ने चुपके से दोस्त के कान में कहा — मियाँ, इस टीम-टाम से तो आए, मगर घुड़की खा कर मिनके तक नहीं।

दोस्त — भाईजान, गौहर लखनऊ की जान है, लखनऊ की शान है। ऐसा खुशनसीब कोई हो तो ले कि इसकी घुड़कियाँ सहे।

लोग अदब से गरदन झुकाए बैठे कनखियों से आँखों को सेक रहे थे, लेकिन किसी के मुँह से बात न निकलती थी। यहाँ से उठे, तो फिरंगी-महल में हैदरजान के यहाँ पहुँचे। वहाँ मर्सिया हो रहा था —

निकले खेमे से जो हथियार लगाए अब्बास,
चढ़ के रहबार पर मैदान में आए अब्बास।

इस शेर को ऐसी प्यारी आवाज से अदा किया कि सुननेवाले लोटन कबूतर हुए जाते थे। राग और रागिनी तो उसकी लौंडियाँ थीं। सबके सब सिर धुनते थे, क्या प्यारा गला पाया है! मियाँ आज़ाद की बाँछें खिली जाती थीं और गरदन तो घड़ी का खटका हो गई थी!

यहाँ से उठे, तो मुश्तरी के कमरे में पहुँचे। देखने वालों का वह हुजूम था कि तिल रखने की जगह नहीं।

'खंजर जो बेसा गाहे पयंबरा पै चल गया' इसको झँझौटी की धुन में इस लुत्फ से पढ़ा कि लोग फड़क उठे।

दोस्त — क्यों यार, क्या लखनऊ में जेवर पहनने की कसम है?

आज़ाद — भाई, तुम बिलकुल ही गँवार हो। मातम में जेवर का क्या जिक्र है? गोरे-गोरे कानों में काले-काले करनफूल, हाथों में

सियाह चूडियाँ, बस यही काफी है। लेकिन यह सादगी भी अजीब लुत्फ दिखाती है।

यहाँ से उठ कर दोनों आदमी मातम की मजलिसों में पहुँचे। जिधर जाते हैं, रोने-पीटने की आवाज आती है; जिसे देखिए, आँखों से आँसू बहा रहा है। सारी रात मजलिसों में घूमते रहे, सुबह अपने घर पहुँचे।

10

वसंत के दिन आए। आज़ाद को कोई फिक्र तो थी ही नहीं, सोचे, आज वसंत की बहार देखनी चाहिए। घर से निकल खड़े हुए, तो देखा कि हर चीज जर्द है, पेड़-पत्ते जर्द, दरो-दीवार जर्द, रंगीन कमरे जर्द, लिबास जर्द, कपड़े जर्द। शाहमीना की दरगाह में धूम है, तमाशाइयों का हुजूम है। हसीनों के झमकड़ें, रंगीले जवानों की रेल-पेल, इंद्र के अखाड़े की परियों का दंगल है, जंगल में मंगल है। वसंत की बहार उमंग पर है, जाफरानी दुपट्टों और केसरिये पाजामों पर अजब जोबन है।

वहाँ से चौक पहुँचे। जौहरियों की दुकान पर ऐसे सुंदर पुखराज हैं कि पुखराज-परी देखती, तो मारे शर्म के हीरा खाती और इंद्र

का अखाड़ा भूल जाती। मेवा बेचने वाली जर्द आलू, नारंगी, अमरूद, चकोतरा, महताबी की बहार दिखलाती है, चंपई दुपट्टे पर इतराती है। मालिन गेंदा, हजारा, जर्द गुलाब की बू-बास से दिल खुश करती है। और पुकार-पुकार कर लुभाती है, गेंदे का हार है, गले की बहार है।

हलवाई खोपड़े की जर्द बर्फी, पिस्ते की बर्फी, नानखताई, बेसन के लड्डू, चने के लड्डू दुकान पर सजाए बैठा है। खोमचेवाले पापड़, दालमोट, सेव वगैरह बेचते फिरते हैं। आज़ाद यही बहार देखते, दिल बहलाते चले जाते थे। देखते क्या हैं, लाला वसंतराय के मकान में कई रंगीले जवान बाँकी टोपियाँ जमाए, वसंती पगिया बाँधे, केसरिये कपड़े पहने बैठे हैं। उनके सामने चंद्रमुखी औरतें बैठी नौबहार की धुन में बसंत गा रही हैं। कालीन जर्द है, छतपोश जर्द, कंबल जर्द, जर्द झालर से मकान सजाया है, वसंत-पंचमी ने दरो-दीवार तक को बसंती लिबास पहनाया है।

कोई यह गीत गाती है —

ऋतु आई वसंत अजब बहार;
खिले जर्द फूल बिरवों की डार।
चटक्यो कुसुम, फूलै लागी सरसों;
झूमत चलत गेहूँ की बार

हर के द्वारे माली का छोहरा;
गरबा डारत गेंदों के हार।
टेसू फूले, अंबा बौरे;
चंपा के रुख कलियन की बहार।
गरबा डारे उस्ताद के द्वारे;
चलो सब सखियाँ कर-कर सिंगार।

कोई मियाँ अमानत की यह गजल गाती है —

है जलवाए तन से दरो-दीवार बसंती;
पोशाक जो पहने है मेरा यार बसंती।
क्या फस्ले बहारी में शिगूफे हैं खिलाए;
माशूक हैं फिरते सरे-बाजार बसंती।
गेंदा है खिला बाग में, मैदान में सरसों;
सहरा वह बसंती है, यह गुलजार बसंती।
मुँह जर्द दुपट्टे के न आँचल से छिपाओ;
हो जाय न रंगे गुले-रुखसार बसंती।

आज़ाद चले जाते थे कि एक नई सज-धज के बुजुर्ग से मुठभेड़ हुई। बड़े तजुर्बेकार, खर्राट आदमी थे। आज़ाद को देखते ही बोले — आइए-आइए खूब मिले। वल्लाह, शरीफ की सूरत पर आशिक हूँ। चीन, माचीन, हिंद और सिंध, रूम और शाम, अलगरज, सारी खुदाई की बंदे ने खाक छानी है, और तू यार जानी है।

सफर का हाल सुन, घुँघरू बोले छुन-छुन। ऐसी बात सुनाऊँ, परी को लुभाऊँ, जिन को रिझाऊँ, मिसर की दास्तान सुनाऊँ।

यह तकरीर सुन कर आज़ाद के होश पैतरे हो गए, समझ में न आया, कोई पागल है, या पहुँचा हुआ फकीर। मगर आसार तो दीवानेपन के ही हैं।

खुर्राट ने फिर बड़बड़ाना शुरू किया — सुनो यार, कहता है खाकसार, हम सो रहें तुम जागो, फिर हम उठ बैठे, तुम सो रहो, सफर यार का है, सोते-जागते राह काटें, सफर का अंधा कुआँ उन्हीं ईंटों से पाटें।

यह कह कर खुर्राट ने एक खोमचेवाले को बुलाया और पूछा — खुटियाँ कितने सेर? बर्फी का क्या भाव? लड्डू पैसे के कै? बोलो झटपट, नहीं हम जाते हैं।

खोमचेवाले ने समझा, कोई दीवाना है। बोला — पैसे भी हैं या भाव ही से पेट भरोगे?

खुर्राट — पैसे नहीं है, तो क्या मुफ्त माँगते हैं? तौल दे सेर भर मिठाई।

मिठाई लेकर आज़ाद को जिद करके खिलाई, ठंडा पानी पिलवाया और बोले — शाम हुई, अब सो रहो, हम असबाब ताकते हैं।

मियाँ आज़ाद एक दरख्त के नीचे लेटे, खुर्राट ने ऐसी मीठी-मीठी बातें कीं कि उन्हें उस पर यकीन आ गया। दिन भर के थके थे ही, लेटते ही नींद आ गई। सोए तो घोड़े बेच कर, सिर-पैर की खबर नहीं, गोया मुर्दों से शर्त लगाई है। वह एक काइयाँ, दुनिया भर का न्यारिया, उनको गाफिल पाया, तो घड़ी सोने की चेन, चाँदी की मूठवाली छड़ी, चाँदी का गिलौरीदान ले कर चलता हुआ।

आध घंटे में आज़ाद की नींद खुली, तो देखा कि खुर्राट गायब है, घड़ी और चेन, डब्बा और छड़ी भी गायब। चिल्लाने लगे — लूट लिया, जालिम ने लूट लिया। झाँसा दे गया। ऐसा चकमा कभी न खाया। दौड़कर थाने में इत्तला की। मगर खुर्राट कहाँ, वह तो यहाँ से दस कोस पर था। बेचारे रो-पीट कर बैठ रहे। थोड़ी ही दूर गए होंगे कि एक चौराहे पर एक जवान को मुश्की घोड़े पर सवार आते देखा। घोड़ा ऐसा सरपट जा रहा था कि हवा उसकी गर्द तक को न पहुँचती थी। अंधेरा हो ही गया था, एक कोने में दबक रहे कि ऐसा न हो, कहीं झपेटे में आ जायँ। इतने में सवार उनके सिर पर आ खड़ा हुआ। झट घोड़े की बाग रोकी और इनकी तरफ नजर भर कर देखने लगा। यह चकराए, माजरा क्या है? यह तो बेतरह घूर रहा है, कहीं हंटर तो न देगा।

जवान — क्यों हजरत, आप किसी को पहचानते भी हैं? खुदा की शान, आप और हमको भूल जायँ!

आज़ाद — मियाँ, तुमको धोखा हुआ होगा। मैंने तो कभी तुम्हारी सूरत भी नहीं देखी।

जवान — लेकिन मैंने तो आपकी सूरत देखी है; और आपको पहचानता हूँ। क्या इतनी जल्दी भूल गए? यह कह कर वह जवान घोड़े से उतर पड़ा और आज़ाद से चिमट गया।

आज़ाद — आपको सचमुच धोखा हुआ।

जवान — भाई, बड़े भुलक्कड़ हो! याद करो, कॉलेज में हम-तुम, दोनों एक ही दर्जे में पढ़ते थे। वह किश्ती पर हवा खाने जाना और दरिया के मजे उड़ाना; वह मदारी खोमचेवाला, वह उकलैदिस के वक़्त उड़ भागना; सब भूल गए? अब मियाँ आज़ाद को याद आई। दोस्त के गले से लिपट गए और मारे खुशी के रो दिए।

जवान — तुम्हें याद होगा, जब मैं इंटरमीडिएट का इम्तिहान देने को था, तो मेरे पास फीस का भी ठिकाना न था। रुपए की तलाश में इधर-उधर भटकता फिरता था कि राह में अस्पताल के पास तालाब पर तुमसे मुलाकात हुई और तुमने मेरे हाल पर रहम करके मुझे रुपए दिए। तुम्हारी मदद से मैंने बी.ए. तक पढ़ा। लेकिन इस वक़्त तुम बड़े उदास नजर आते हो, इसका क्या सबब है?

आज़ाद — यार, कुछ न पूछो। एक खुर्राट के चकमे में आ गया। यहीं घास पर लेट रहा, और वह मेरी घड़ी-चेन वगैरह ले कर चलता हुआ!

जवान — भई वाह! इतने घाघ बनते हो, और एक खुर्राट के भर्रे में आ गए! आप के बटन तक उतार ले गया और आप को खबर नहीं। ले अब कान पकड़िए कि अब फिर किसी मुसाफिर की दोस्ती का एतबार न करेंगे। मिठाई तो आप खा ही चुके हैं, चलिए, कहीं बैठ कर बसंती गाना सुनें।

11

एक दिन आज़ाद शहर की सैर करते हुए एक मकतबखाने में जा पहुँचे। देखा, एक मौलवी साहब खटिया पर उकड़ू बैठे हुए लड़कों को पढ़ा रहे हैं। आपकी रँगी हुई दाढ़ी पेट पर लहरा रही है। गोल-गोल आँखें, खोपड़ी घुटी-घुटाई, उस पर चौगोशिया टोपी जमी-जमाई। हाथ में तसबीह लिए खटखटा रहे हैं। लौंडे इर्द-गिर्द गुल मचा रहे हैं। हू-हक मची हुई है, गोया कोई मंडी लगी हुई है। तहजीब कोसों दूर, अदब काफूर, मगर मौलवी साहब से इस तरह से डरते हैं, जैसे चूहा बिल्ली से, या अफीमची

नाव से। जरी चितवन तीखी हुई, और खलबली मच गई। सब किताबें खोले झूम-झूम कर मौलवी साहब को फुसला रहे हैं। एक शेर जो रटना शुरू किया, तो बला की तरह उसको चिमट गए। मतलब तो यह कि मौलवी साहब मुँह का खुलना और जबान का हिलना और उनका झूमना देखें, कोई पढ़े या न पढ़े, इससे मतलब नहीं। मौलवी साहब भी वाजबी ही वाजबी पढ़े-लिखे थे, कुछ शुद-बुद जानते थे। पढ़ाने के फन से कोरे। एक शागिर्द से चिलम भरवाई, दूसरे से हुक्का ताजा कराया; दम-झाँसे में काम लिया, हुक्का गुड़-गुड़ाया और धुआँ उड़ाया। शामत यह थी कि आप अफीम के भी आदी थे। चीनी की प्याली आई, अफीम घोली और उड़ाई। एक महाजन के लड़के ने बर्फी मँगवाई, आपने खूब डट कर चखी, तो पीनक ने आ दबोचा। ऊँघे, हुक्का टेढ़ा हो गया, गरदन अब जमीन पर आई, और अब जमीन पर आई। हुक्का गिरा और चकनाचूर हो गया। दो-एक लड़कों की किताबों पर चिनगारियाँ गिरीं। अब पीनक से चौंके, तो ऐसे झल्लाए कि किसी लड़के के चपत लगाई, किसी की खोपड़ी पर धप जमाई, एक के कान गरमाए। पीनक में आकर खुद तो हुक्का गिराया और शागिर्दों को बेकसूर पीटना शुरू किया। खैर, इतने में एक लड़का किताब ले कर पढ़ने आया। उसने पढ़ा —

दिलम कुसूद कुसादम चु नाता अत गोई,

कलीदे बागे गुलिस्तान दिल कुसाई बूद।

(जब मैंने तेरा खत खोला, तो मेरा दिल खुल गया; गोया वह पत्र खुशी के बाग के दरवाजे की कुंजी था।)

अब मौलवी साहब का तरजुमा सुनिए —

तरजुमा — दिल तेरा खुला, खोला मैंने जो खत तेरा, कहे तू कुंजी दरवाजे बागदिल खोलने की थी।

माशा-अल्लाह, क्या तरजमा था। न मौलवी साहब ने खुद समझा, न लड़के ने। और दिल्लगी सुनिए कि मौलवी साहब भी शागिर्द के साथ पढ़ते जाते है और दोनों हिलते जाते हैं। जब यह पढ़ चुके, तो दूसरे साहब किताब बगल में दबाए आ बैठे।

मौलवी साहब — अरे गावदी, नई किताबें शुरू कीं, और चिरागी नदारद, शुकराना छप्पर पर! जा, दौड़ कर दो आने घर से ले आ।

लड़का — मौलवी साहब, कल लेता आऊँगा। आप तो हत्थे ही पर टोक देते हैं। आपको अपनी मिठाई ही से मतलब है कि मुफ्त के झगड़े से?

मौलवी — ये झाँसे किसी और को देना! अच्छा, अपने बाप की कसम खा कि कल जरूर लाऊँगा।

लड़का — मौलवी साहब के बड़े सिर की कसम, चढ़ते चाँद तक जरूर लाऊँगा।

इस पर सब लड़के हँस पड़े कि कितना ढीठ लड़का है! कसम भी खाई तो मौलवी साहब के सिर की, और सिर भी छोटा नहीं, बड़ा।

मौलवी — चुप गधे, मेरा सिर क्या कद्दू है? अच्छा, पढ़।

लड़का तो ऊटपटाँग पढ़ने लगा, मगर मौलाना साहब चूँ भी नहीं करते। उन्हें मिठाई की फिक्र सवार है। सोच रहे हैं, जो कल दो आने न लाया, तो खूब कोड़े फटकारूँगा, तस्मा तक तो बाकी रखूँगा नहीं।

दस-पाँच लड़के एक दूसरे को गुदगुदा रहे हैं और मौलवी साहब को दिखाने के लिए जोर-जोर से चिल्ला कर कोई शेर पढ़ रहे हैं।

आज़ाद को मकतब की यह हालत और लौडों को यह चिल्ल-पों देख सुन कर ऐसा गुस्सा आया कि अगर पाते, तो मौलवी साहब को कच्चा ही खा जाते। दिल में सोचे, यह मकतबखाना है या पागलखाना? जिधर देखिए, गुल-गपाड़ा, धौल-धप्पा हो रहा है। मालूम होता है, भरी बरसात में मेंढक गाँव-गाँव या पिछले पहर

कौवे काँव-काँव कर रहे हैं। घर पर आते ही मकतबों की हालत पर यह कैफियत लिख डाली —

(1) नूर के तड़के से झुटपुटे तक लड़कों को मकतबखाने में कैद रखना बेहूदगी है। लड़के दस बजे आएँ, चार बजे छुट्टी पाएँ, यह नहीं कि दिन भर दाँता-किल-किल, पढ़ना भी अजीरन हो जाय, और यही जी चाहे कि पढ़ने-लिखने की दुम में मोटा सा रस्सा बांधे, मौलवी साहब को हवा बताएँ और दिल खोल कर गुलछर्रे उड़ाएँ।

(2) यह क्या हिमाकत है कि जितने लड़के हैं, सबका सबक अलग दो-दो चार-चार, दस-दस का एक-एक दर्जा बना लीजिए, मेहनत की मेहनत बचेगी और काम ज्यादा होगा।

(3) जिधर देखता हूँ, अदब (साहित्य) की तालीम ही रही है। तालीम में सिर्फ अदब ही शामिल नहीं, हिसाब है, तवारीख है, जुगराफिया है, उकलैदिस है; मगर पढ़ाए कौन? मौलवी साहब को तो सौ तक गिनती नहीं आती।

(4) सब लड़कों का गुल मचा-मचा कर आवाज लगाना महज फजूल है। कोई खोमचेवाला, गँड़ेरीवाला, चने-परमल वाला इस तरह चिल्लाए, तो मुजायका नहीं; मटर-सटर, गोल-गप्पे, मसालेदार

बैगन, मूली, तुरई, लो तरकारी — यह तो फेरी देनेवालों की सदा है, मकतब को मंडी बनाना हिमाकत है।

(5) तरजुमे पर खुदा की मार और शैतान की फटकार। 'जाता हूँ बीच एक बाग के; वास्ते लाने अच्छी चीजों के, मैंने देखा मैंने, तू जाता है तू।' वाह, क्या तू-तू मैं-मैं है! तरजुमा सही होना चाहिए, यह तो न कोई आवाज कसे कि लड़के बंगला बोल रहे हैं।

(6) पढ़ते वक़्त लड़कों को हिलना ऐब है। मगर कहें किससे? मौलवी साहब तो खुद झूमते हैं।

(7) मतलब जरूर समझाना चाहिए; लड़का मतलब ही न समझेगा, तो उसको फायदा क्या खाक होगा?

(8) सबक को बरजबान रटना बुरी बात है। किताब बन्द की और फर-फर दस सफे सुना दिए। हाफिजा कुछ मजबूत हुआ सही, मगर सितम यह है कि फिर तोते की तरह बात के सिवा कुछ याद नहीं रहता।

(9) छोटे-छोटे लड़कों को बड़ी-बड़ी किताबें पढ़ाना उनकी जिंदगी खराब करना है। जरा से टट्टू पर जब दो हाथियों का बोझ लादोगे, तो टट्टू बेचारा आँखें माँगने लगेगा, या नहीं? जरा सा बच्चा और पढ़े 'मीना बाजार'।

(10) लड़के को शुरू ही से फारसी पढ़ाना उसका गला घोटना है। पहले उर्दू पढ़ाइए इसके बाद फारसी। शुरू से ही करीमा-मामकीमाँ पढ़ाना उसकी मिट्टी खराब करना है।

(11) मौलवी साहब लड़कों से चिलम भरवाना, हुक्का ताजा करवाना छोड़ दें। इसकी जगह इनको बात-चीत करने और मिलने-जुलने का आदाब सिखाएँ।

(12) अफीमची मौलवी छप्पर पर रखे जायँ। मौलवी ने अफीम खाई और लड़कों को शामत आई। वह पीनक में झूमा करेंगे।

यह इश्तिहार मोटे कलम से लिख कर मियाँ आज़ाद रातोंरात मकतब के दरवाजे पर चिपका आए। झट से निकल करके शहर में भी दो-चार जगह चिपका दिया।

दूसरे दिन इश्तिहार के पास लोग ठाट के ठाट जमा हुए। किसी ने कहा, सम्मन चिपकाया गया है; कोई बोला, ठेठर का इश्तिहार है। बारे एक पढ़े-लिखे साहब ने कहा — यह कुछ नहीं है, मौलवी साहब के किसी दुश्मन का काम है। अब जिसे देखिए, कहकहा उड़ाता है। भाई वल्लहा, किसी बड़े ही फिकरेबाज का काम है। मौलवी बेचारे को ले ही डाला, पटरा कर दिया। मकतबखाने में लड़कों के चेहरे गुलनार हो गए। धत तेरे की! बचा रोज कमचियाँ जमाते थे, चपतें लगाते थे, अफीम घोली और

सिर पर शेख-सद्दों सवार। अब आटे-दाल का भाव मालूम होगा। मौलवी साहब तशरीफ का बकचा लाए, तो लड़के उनका कहना ही नहीं मानते।

मौलवी साहब कहते हैं, किताब खोलो। शार्गिद जवाब देते हैं, बस मुँह बन्द करो। फर्माया कि अब बोला, तो हम बिगड़ जाएँगे। शार्गिदों ने कहा, हम खूब बनाएँगे। तब तो झल्लाए और डपट कर कहा, मैं बड़ा गर्म मिजाज हूँ। एक गुस्ताख ने मुसकरा कर कहा, फिर हम ठंडा बनाएँगे। दूसरा बोला, किसी ठंडे मुल्क में जाइए। तीसरा बोला, दिमाग में गर्मी चढ़ गई है।

मौलवी साहब घबराए कि माजरा क्या है। बाहर की तरफ नजर डाली, तो देखा, गोल के गोल तमाशाई खड़े कहकहे लगा रहे हैं। बाहर गए, तो इश्तिहार नजर आया। पढ़ा, तो कट गए। दिल ही दिल से लिखने वाले को गालियाँ देने लगे। पाऊँ, तो कच्चा ही खा जाऊँ। इतने डंडे लगाऊँ कि छठी का दूध याद आ जाय। बदमाश ने कैसा खाका उड़ाया है! जभी तो लड़के इतने ढीठ हो गए हैं। मैं कहता हूँ आम, वे कहते हैं इमली। अब इज्जत डूबी। मकतबखाने में जाता हूँ, तो खौफ है, कहीं लौंडे रोज की कसर न निकालें और अंजर-पंजर ढीले कर दें। भाग जाऊँ, तो रोटियों के लाले पड़ें। खाऊँ क्या, अंगारे? आखिर ठान ली कि

बोरिया-बँधना छोड़ो मुल्लागीरी से मुँह मोड़ो। भागे, तो घर पर दम लिया।

लड़कों ने जो देखा कि मौलवी साहब पत्ता-तोड़ भागे जाते हैं, तो जूतियाँ बगल में दवा, तख्तियाँ और बस्ते सँभाल दुम के पीछे चले। तमाशाइयों में बातें होने लगीं —

एक — अरे मियाँ यह भागा कौन जाता है बगटुट?

दूसरा — शैतान है, शैतान। आज लड़कों के दाँव पर चढ़ गया है, कैसा दुम दबाए भाग जाता है!

अब सुनिए कि मोहल्ले भर में खलबली मच गई। अजी, ऐसे मकतब की ऐसी-तैसी। बरसों से लौंडे पीटते हैं, एक हरफ न आया। लड़कों की मिट्टी पलीद की। पढ़ाना-लिखाना खैरसल्लाह, चिलमें भरवाया किए। सबने मिल कर कमेटी की कि मौलवी साहब का आम जलसे में इम्तिहान लिया जाय और मुनादी हो कि जिन साहब ने यह इश्तिहार लिखा है, वह जरूर आएँ। ढिंढोरिया मोहल्ले भर में कहता फिरा कि खलक खुदा का, मुल्क सरकार का, हुक्म कमेटी का कि आज एक जलसा होगा और मौलवी साहब का इम्तिहान लिया जायगा। जिसने इश्तिहार लिखा है, वह भी हाजिर हो।

मियाँ आज़ाद बहुत खुश हुए, शाम को जलसे में जा पहुँचे। जब दो-तीन सौ आदमी, अहाली-मवाली, डोम-डफाली, ऐरे-गैरे, नत्थू-खैरे, सब जमा हुए, तो एक मेम्बर ने कहा — हजरत, यह तो सब कुछ है; मगर मौलवी साहब इस वक़्त नदारद हैं। एकतरफा डिगरी न दीजिए। उन्हें बुलवाइए, तब इम्तिहान लीजिए। यों तो वह आएँगे नहीं। हम एक तदबीर बताएँ, जो दौड़े न आएँ, तो मूँछ मुड़ा डालें, हाथ कलम करा डालें। कहला भेजिए कि किसी के यहाँ शादी है, निकाह पढ़ने के लिए अभी बुलाते हैं!

लोगों ने कहा, खूब सूझी, दूर की सूझी। आदमी मौलवी साहब के दरवाजे पर गया और आवाज दी — मौलवी साहब, अजी मौलवी साहब! क्या मर गए? इस घर में कोई है, या सबको साँप सूँघ गया? दरवाजा धमधमाया, कुँडी खटखटाई, मगर जवाब नदारद। तब तो आदमी ने झल्ला कर पत्थर फेंकने शुरू किए। दो-एक मौलवी साहब के घुटे हुए सिर पर भी पड़े।

मौलवी साहब बोले — कौन है?

आदमी ने कहा — बारे आप जिंदा तो हुए। मैंने तो समझा था, कफन की जरूरत पड़ी। चलिए, ईदूखाँ के यहाँ शादी है, निकाह पढ़ दीजिए।

निकाह का नाम सुनते ही मौलाना खमीरी रोटी की तरह फूल गए, अंगरखे का बन्द तड़ से टूट गया। कफन फाड़ कर चिल्ला उठे — आया, आया, ठहरे रहो, अभी आया।

शिमला खोपड़ी पर जमा, अकीक का कंठा हाथ में ले, सुरमा लगा घर से चले। आदमी साथ है, दिल में कहते जाते हैं, आज-पौ-बारह हैं, बढ़ाकर हाथ मारा है, छप्पन करोड़ की तिहाई, हाथी के हौदे में घुटे। लंबे-लंबे डग भरते आदमी से पूछते जाते हैं — क्यों मियाँ, अब कितनी दूर मकान है? पास ही है न? देखें, निकाह पढ़ाई क्या मिलती है? सवा रुपए तो मामूली है; मगर खुदा ने चाहा तो बहुत कुछ ले मरूँगा।

आदमी पीछे-पीछे हँसता जाता है कि मियाँ हैं किस खयाल में! बारे खुदा-खुदा करके वह मंजिल तय हुई, मकान में आए, तो होश उड़ गए। यह कैसा ब्याह है भाई, न ढोल, न शहनाई, हमारी शामत आई। कनखियों से इधर-उधर देख रहे हैं, अक्ल दंग है कि ये सब के सब हमीं को क्यों घूर रहे हैं।

इतने में मीर-मजलिस ने कहा — जिन साहब ने इश्तिहार लिखा था, वह अगर आए हों तो कुछ फर्माएँ।

आज़ाद ने खड़े हो कर कहा — यह जो मौलवी साहब आप लोगों के सामने खड़े है, इनसे पूछिए कि मकतबखाने में अफीम क्यों

पीते हैं? जब देखिए, पीनक में ऊँघ रहे हैं या मिठाई ठूँग रहे हैं। लड़कों का पढ़ाना खाला जी का घर नहीं कि सिर घुटाया और मुल्ला बन गए, चूड़ी निगली और पीर जी बन गए।

मौलवी साहब ताड़ गए कि यहाँ मेरी दुर्गति होनेवाली है। भागने ही को थे कि एक आदमी ने टाँग पकड़ कर आँटी बताई, तो फट से जमीन पर आ रहे। अच्छे फँसे। खूब निकाह पढ़ाया। मुफ्त में उल्लू बने।

खैर, मियाँ आज़ाद ने फिर कहा — मौलवी साहब को किसी मजार का मुजाविर या कहीं का तकियेदार बना दीजिए, तो खूब मीठे टुकड़े उड़ाएँ और डंड पेलें। यह मकतबखाने में उल्लू का दसहरा उनको क्यों बना दिया? लड़कों की कैफियत सुनिए कि दिन भर गुल्ली-डंडा खेला करते हैं, चीखते हैं, चिल्लाते हैं, और दिन भर में अठारह मर्तबा पेशाब करने और पानी पीने जाते हैं। कोई कहता है, मौलवी साहब, देखिए, यह हमारी नाक पकड़ता है, कोई कहता है, यह हमसे लड़ता है। मौलवी साहब को इससे कुछ मतलब नहीं कि लड़के पढ़ते हैं या नहीं। वहाँ तो हिलते जाओ और ऐसा गुल मचाओ कि कान पड़े आवाज न सुनाई दे, उसमें चाहे जो कुछ ऊल-जलूल बको।

मौलवी साहब फिर रस्सी तुड़ा कर भागने लगे। लोग लेना-देना करके दौड़े। गए थे रोजे बख्शाने, नमाज गले पड़ी। चिल्ला कर बोले — तुम कौन होते हो जी हमारा ऐब निकालने वाले, हम पढ़ायें या न पढ़ायें, तुमसे मतलब!

आज़ाद — हजरत, आज ही तो पंजे में फँसे हो। रोज तोंद निकाले बैठे रहा करते थे। यह तोंद है या बेईमान की कब्र? या हवा का तकिया? अब पचक जाय, तो सही। खुदा जाने, कहाँ का गँवार बिठा दिया है। कल सुबह को इनका इम्तिहान लिया जाय।

मौलवी साहब — आप बड़े शैतान हैं!

आज़ाद — आप लंगूर है; मगर हैरत है कि यह ठुड्डी से दुम की कोंपल क्योंकर फूटी!

इस तरह जलसा खत्म हुआ। लोगों ने दिल में ठान ली कि कल चाहे ओले पड़ें, चाहे कड़कड़ाती धूप हो, चाहे भूचाल आए; मगर हम आएँगे और जरूर आएँगे। मौलवी साहब से ताकीद की गई कि हजरत, कल न आइएगा, तो यहाँ रहना मुश्किल हो जाएगा — मौलवी साहब का चेहरा उतर गया था, मगर कड़क कर बोले — हम और न आएँ, आएँ और बीच खेत आएँ। हम क्या कोई चोर हैं, या किसी का माल मारा है?

मौलवी साहब घर पहुँचे, तो आज़ाद को लगे पानी पी-पी कर कोसने। इसकी जबान सड़े, मुँह फूल जाय; सारी चौकड़ी भूल जाय; आसमान से अंगारे बरसें; ऐसी जगह मरे, जहाँ पानी न मिले; डंकू फीवर चट करे; इंजिन के नीचे दब कर मरे। मगर इन गालियों से क्या होता था। रात किसी तरह कटी, दूसरे रोज नूर के तड़के लोग फिर जलसे में आ पहुँचे।

मगर मौलाना ऐसे गायब हुए, जैसे गधे के सिर से सींग। बारे यारों ने तत्तो-थंभो करके सिर सुहलाते, सब्ज बाग दिखलाते घसीट ही लिया।

मियाँ आज़ाद ने पूछा — क्यों मौलवी साहब, किस मनसूबे में हो?

मौलवी साहब — सोचता हूँ कि अब कौन चाल चलूँ? सोच लिया है कि अब मुल्लागिरी छोड़ प्यादों में नौकरी करेंगे। बस, वतन से जाएँगे, तो फिर लौट कर घर न आएँगे। अमीर-गरीब सब पर मुसीबत पड़ती है। फिर हमारी बिसात क्या? चारखाने का अंगरखा न सही, गाढ़े की मिरजई सही। मगर आप एक गरीब के पीछे नाहक क्यों पड़े हुए हैं? 'कहाँ राजा भोज, कहाँ गंगुआ तेली?'

आज़ाद — ये झाँसे रहने दीजिए, ये चकमे किसी और को दीजिए।

मौलवी साहब — खुदा की पनाह! मैं आपका गुलाम और आपको चकमे दूँगा? आपसे क्या अर्ज करूँ कि कितना जी तोड़ कर लड़कों को पढ़ाता हूँ। इधर सूरज निकला और मैंने मकतब का रास्ता लिया। दिन भर लड़कों को पढ़ाया। क्या मजाल कि कोई लड़का गरदन तक उठा ले। कोई बोला, और मैंने टोप जमाई, खेला और शामत आई। समझ-बूझकर चलता था, अगर कोई लड़का मकतब में खिलौना लाता, तो उसे तुरत अँगीठी में डलवा देता। मगर आपने सारी मेहनत पर पानी फेर दिया। आपके सामने मेरी कौन सुनता है।

मीर-मजलिस ने कहा — मियाँ आज़ाद इन्हें बकने दीजिए, आप इनका इम्तिहान लीजिए।

मियाँ आज़ाद तो सवाल पूछने के लिए खड़े हुए, उधर मौलवी साहब का बुरा हाल हुआ। रंग फक, कलेजा शक, आँखों में आँसू, मुँह पर हवाइयाँ छूट रही हैं, कलेजा धक-धक करता है, हाथ-पाँव काँपने लगे किसी तरह खड़े तो हुए, मगर कदम न जमा। पाँव डगमगाए और लड़खड़ा कर गिरे। लोगों ने उन्हें उठा कर फिर खड़ा किया।

आज़ाद — यह शेर किस बहर में है —

मैंने कहा जो उससे ठुकरा के चल न जालिम;

हैरत में आ के बोला — क्या आप जी रहे हैं?

मौलवी साहब — बहर (दरिया) में आप ही गोते लगाइए, और खुदा करे, डूब जाइए। जिसे देखो, हमीं पर शेर है। नामाकूल इतना नहीं समझते कि हम मौलवी आदमी लौंडे पढ़ाना जानें या शायरी करना। हमें शेर से मतलब? आए वहाँ से बहर पूछने!

आज़ाद —

बेशुनो अज नैचूँ हिकायत मी कुनद;
वज जुदाईहा शिकायत मी कुनद।

इस शेर का मतलब बतलाइए!

मौलवी साहब — इसका बताना क्या मुश्किल है? नै कहते हैं चंडू की नै को। बस, उस जमाने में लोग चंडू पीते थे और शिकायत करते थे।

आज़ाद — बकरी की पिछली टाँगों को फारसी में क्या कहते हैं?

मौलवी साहब — यह किसी अपने भाई-बन्द, बूचड़-कस्साब से पूछिए। बंदा न छीछड़े खाय; न जाने। वाह, अच्छा सवाल है! अब मुल्लाओं को बूचड़ों की शागिर्दी भी करनी चाहिए!

आज़ाद — हिंदुस्तान के उत्तर में कौन मुल्क है?

मौलवी — खुदा जाने। मैं क्या देखने गया था कि आपकी तरह मैं भी सैलानी हूँ।

आज़ाद — सबसे बड़ा दरिया हिंदोस्तान में कौन है?

मौलवी — फिरात, नहीं, वह देखिए, भूला जाता हूँ, अजी वहीं, दजला, दजला, खूब याद आया।

हाजिरीन — वाह रे गावदी, अच्छी उलटी गंगा बहाई। फिरात और दजला हिंद में हैं? इतना भी नहीं जानता।

आज़ाद — चाँद के घटने-बढ़ने का सबब बताओ?

मौलवी — वाह, क्या खूब, खुदाई कारखानों में दखल दूँ? इतना तो किसी की समझ में आता नहीं कि फ्रीमिशन क्या है, फिर भला यह कौन जाने कि चाँद कैसे घटता-बढ़ता है। खुदा का हुक्म है, वह जो चाहता है, करता है।

आज़ाद — पानी क्योंकर बरसता है?

मौलवी — यह तो दादीजान तक को मालूम था। बादल तालाबों, नदियों, कुओं, गढों, हौजों से घुस-पैठ कर दो-तीन रोज खूब पानी पीता है; जब पी चुका, तब आसमान पर उड़ गया, मुँह खोला तो पानी रिम-झिम बरसने लगा। सीधी-सी तो बात है।

हाजिरीन — वल्लाह, क्या बेपर की उड़ाई है! आदमी हो या चोंच! कहने लगे, बादल पानी पीता है।

आज़ाद — गिनती आपको कहाँ तक याद है और पहाड़े कहाँ तक?

मौलवी — जवानी में रुपए के टके गिन लेता था; अब भी आठ-आठ आने एक दफे में गिन सकता हूँ। मगर पहाड़े किसी हलवाई के लड़के से पूछिए।

आज़ाद — एक आदमी ने तीन सौ पछत्तर मन गल्ला खरीदा, रात को चोरों ने मौका ताक कर एक सौ पचीस मन उड़ा लिया, तो बताओ उस आदमी को कितना घाटा हुआ?

मौलवी — यह झगड़ा जौनपुर के काजी चुकाएँगे। मैं किसी के फटे में पाँव नहीं डालता। मुझे किसी के टोटे-घाटे से मतलब? चोरी-चकारी का हाल थानेदारों से पूछिए। बंदा मौलवी है। मुल्ला की दौड़ मसजिद तक।

आज़ाद — शाहजहाँ के वक़्त में हिंदोस्तान की क्या हालत थी और अकबर के वक़्त में क्या?

मौलवी — अजी, आप तो गड़े मुर्दे उखाड़ते हैं! अकबर और शाहजहाँ, दोनों की हड्डियाँ गल कर खाक हो गई होंगी। अब इस पचड़े से मतलब?

आज़ाद ने हाजिरीन से कहा — आप लोगों ने मौलवी साहब के जवाब सुन लिए, अब चाहे जो फैसला कीजिए।

हाजिरीन — फैसला यही है कि यह इसी दम अपना बोरिया-बँधना सँभाले। यह चरकटा है। इसे यही नहीं मालूम कि बहर किस चिड़िया का नाम है, बादल किसे कहते हैं, दो तक का पहाड़ा नहीं याद, गिनती जानता ही नहीं, दजला और फिरात हिंदोस्तान में बतलाता है! और चला है मौलवी बनने। लड़कों की मुफ्त में मिट्टी खराब करता है।

12

आज़ाद तो इधर साँड़नी को सराय में बाँधे हुए मजे से सैर-सपाटे कर रहे थे, उधर नवाब साहब के यहाँ रोज उनका इंतजार रहता था कि आज आज़ाद आते होंगे और सफशिकन को अपने साथ लाते होंगे। रोज फाल देखी जाती थी, सगुन पूछे जाते थे।

मुसाहब लोग नवाब को भड़काते थे कि अब आज़ाद नहीं लौटने के; लेकिन नवाब साहब को उनके लौटने का पूरा यकीन था।

एक दिन बेगम साहबा ने नवाब साहब से कहा — क्यों जी, तुम्हारा आज़ाद किस खोह में धँस गया? दो महीने से तो कम न हुए होंगे।

महरी — ऐ, वह चंपत हुआ, मुआ चोर।

बेगम — जबान सँभाल, तेरी इन्हीं बातों पर तो मैं झल्ला उठती हूँ। फिर कहती है कि छोटी बेगम मुझसे तीखी रहती हैं।

नवाब — हाँ, आज़ाद का कुछ हाल तो नहीं मालूम हुआ; मगर आता ही होगा।

बेगम — आ चुका।

नवाब — चाहे इधर की दुनिया उधर हो जाय, मेरा आज़ाद सफशिकन को ला ही छोड़ेगा। दोनों में इल्मी बहस हो रही होगी। फिर तुम जानो, इल्म तो वह समंदर है, जिसका ओर न छोर।

बेगम — (कहकहा लगाकर) इल्मी बहस हो रही होगी? क्यों साहब, मियाँ सफशिकन इल्म भी जानते हैं? मैं कहती हूँ, आखिर अल्लाह ने तुमको कुछ रत्ती, तोला, माशा अक्ल भी दी है? मुआ

बटेर, जरी सी जानवर, काकुन के तीन दानों में पेट भर जाय, उसे आप आलिम कहते हैं। मेरे मैके पड़ोस में एक सिड़ी सौदाई दिन-रात वाही-तवाही बका करता है। उसकी और तुम्हारी बातें एक सी हैं।

महरी — क्या कहती हो बीबी, उस सौदाई निगोड़े को इन पर से सदके कर दूँ!

नवाब — तुम समझी नहीं महरी, अभी तो अल्हड़पने ही के न दिन हैं इनके। खुदा की कसम, मुझे इनकी ये ही बातें तो भाती हैं। यह कमसिनी का सुभाव है और दो-तीन बरस, फिर यह शोखी और चुलबुलापन कहाँ? यह जब झिड़कती या घुड़कती हैं, तो जी खुश हो जाता है।

महरी — हाँ, हाँ, जवानी तो फिर बावली होती ही है।

बेगम —अच्छा, महरी, तुझे अपने बुढ़ापे की कसम, जो झूठ बोले, भला बटेर भी पढ़े-लिखे हुआ करते हैं? मुँह देखी न कहना, अल्लाह लगती कहना।

महरी — बुढ़ापा! बुढ़ापा कैसा? बीबी, बस ये ही बातें तो अच्छी नहीं लगतीं, जब देखो, तब आप बूढ़ी कह देती हैं! मैं बूढ़ी कहो से हो गई? बुरा न मानिए तो कहूँ, आपसे भी टाँठी हूँ।

इतने में गफूर खिदमतगार ने पुकारा — हुजूर, पेचवान भरा रखा है, वहाँ भेज दूँ, या बगीचे में रख दूँ?

नवाब — यह चाँदीवाली छोटी गुड़गुड़ी बेगम साहबा के वास्ते भर लाओ। कल बिसवाँ तंबाकू आया है, वही भरना। और पेचवान बाहर लगा दो, हम अभी आए।

यह कह कर नवाब ने बेगम साहबा के हँसी-हँसी में एक चुटकी ली और बाहर आए। मुसाहबों ने खड़े हो-हो कर सलाम किए। आदाब बजा लाता हूँ हुजूर, तसलीमात अर्ज करता हूँ, ख़ुदावन्द। नवाब साहब जा कर मसनद पर बैठे।

खोजी — उफ् ! मौत का सामना हुआ, ऐसा धक्का लगा कि कलेजा बैठा जाता है, हत तेरे गीदी चोर की।

नवाब — क्यों, क्यों, खैर तो है?

खोजी — हुजूर, इस वक़्त बटेरखाने की ओर गया था।

नवाब — उफ, भई, दिल बेकरार है, खोजी मियाँ, तुमको तो हमारी तसल्ली करनी चाहिए थी, न कि उल्टे खुद ही रोते हो, जिसमें हमारे हाथ-पाँव और फूल जायँ। सब सफशिकन से हाथ धोना चाहिए। हम जानते हैं कि वह खुदा के यहाँ पहुँच गए।

मुसाहब — खुदा न करे, खुदा न करे।

खोजी — (पीनक से चौंककर) इसी बात पर फिर कुछ मिठाई नहीं खिलवाते।

नवाब — कोई है, इस मरदक की गरदन तो नापता। हम तो अपनी किस्मतों को रो रहे हैं, यह मिठाई माँगता है। बेतुका, नमकहराम!

खोजी — देखिए, देखिए, फिर मेरी गरदन कुंद छुरी से रेती जाती है। मैं मिठाई कुछ खाने के वास्ते थोड़े ही मँगवाता हूँ। इसलिए मँगवाता हूँ कि सफशिकन का फातिहा पढ़ूँ।

नवाब — शाबाश, जी खुश हो गया! माफ करना, बेअख्तियार नमकहराम का लफ्ज मुँह से निकल गया, तुम बड़े...

मुसाहब — तुम बड़े हलालखोर हो।

इस पर वह कहकहा पड़ा कि नवाब साहब भी लोटने लगे, और बेगम ने घर से लौंड़ी को भेजा कि देखना तो, यह क्या हँसी हो रही है।

नवाब — भई, क्या आदमी हो, वल्लाह, रोते को हँसाना इसी का नाम है। खोजी बेचारे को हलालखोर बना दिया।

खोजी — हुजूर, अब मैं यहाँ न रहूँगा। क्या बेवक़्त की शहनाई सब के सब बजाने लगे! अफसोस, सफशिकन का किसी को खयाल तक नहीं।

नवाब साहब मारे रंज के मुँह ढाँप कर लेट रहे। मुसाहबों में से कोई चंडूखाने पहुँचा, कोई अफीम घोलने लगा।

13

इधर शिवाले का घंटा बजा ठनाठन, उधर दो नाकों से सुबह की तोप दगी दनादन। मियाँ आज़ाद अपने एक दोस्त के साथ सैर करते हुए बस्ती के बाहर जा पहुँचे। क्या देखते हैं, एक बेल-बूटों से सजा हुआ बँगला है। अहाता साफ, कहीं गंदगी का नाम नहीं। फूलों-फलों से लदे हुए दरख्त खड़े झूम रहे हैं। दरवाजों पर चिकें पड़ी हुई हैं। बरामदे में एक साहब कुर्सी पर बैठे हुए हैं, और उनके करीब दूसरी कुर्सी पर उनकी मेम साहबा विराज रही हैं। चारों तरफ सन्नाटा छाया हुआ है। न कहीं शोर, न कहीं गुल।

आज़ाद ने कहा — जिंदगी का मजा तो ये लोग उठाते हैं।

दोस्त — बेशक, देख कर रश्क आता है।

दोनों आदमी आगे बढ़े। कई छोटे-छोटे टट्टू तेजी से दौड़ते हुए नजर आए। उन पर खूबसूरत काठियाँ कसी हुई थीं और कई लड़के बैठे हुए हँसते-बोलते चले जाते थे। कपड़े सफेद, जैसे बगुले के पर; चेहरे सुर्ख, जैसे गुलाब का फूल।

मियाँ आज़ाद कई मिनट तक उन अंगरेज-लड़कों का उछलना-कूदना देखते रहे। फिर अपने दोस्त से बोले — देखा आपने इस तरह बच्चों की परवरिश होती है।

कुछ और आगे बढ़े, तो सौदागरों की बड़ी-बड़ी कोठियाँ दिखाई दी। इतनी ऊँची गोया आसमान से बातें कर रही हैं। दोनों आदमी अन्दर गए, तो चीजों की सफाई और सजावट देख कर दंग रह गए। सुभान-अल्लाह! यह कोठी है या शीश-महल। दुनिया भर की चीजें मौजूद।

आज़ाद ने कहा — यह तिजारत की बरकत है। वाह री तिजारत। तेरे कदम धो-धो कर पिए।

इतने के सामने से कई बग्घियाँ आईं। सब पर अंगरेज बैठे हुए थे। किसी हिंदुस्तानी का कोसों तक पता ही नहीं। गोया उनके लिए घर से निकलना ही मना है। और आगे बढ़े, तो एक कुतुबखाना नजर आया। लाखों किताबें चुनी हुई, साफ-सुथरी,

सुनहरी जिल्दें चढ़ी हुई। आदमी अगर साल भर जम कर बैठे, तो आलिम हो जाय। सुबह से आठ बजे तक लोग आते हैं, अखबार और किताबें पढ़ते हैं और दुनिया के हालात मालूम करते हैं। मगर हिंदुस्तानियों को इन बातों से क्या सरोकार?

दस बजे का वक़्त आ गया। अब घर की सूझी। बस्ती में दाखिल हुए। राह में एक अमीर आदमी के मकान के दरवाजे पर दो लड़कों को देखा। नख-सिख से तो दुरुस्त हैं; मगर कानों में बाले, भद्दे-भद्दे कड़े पड़े हैं, अंगरखा मैला-कुचैला, पाजामा गंदा, हाथों पर गर्द, मुँह पर खाक, दरवाजे पर नंगे पाँव खड़े हैं। मौलवी साहब ड्योढ़ी में बैठे दो और लड़कों को पढ़ा रहे हैं। मगर ड्योढ़ी और पाखाना मिला हुआ है।

मियाँ आज़ाद – कहिए जनाब, वे टट्टुओं पर दौड़ने वाले अंगरेजों के बच्चे भी याद हैं? इनको देखिए, मैले-गन्दे, दिन भर पाखाने का पड़ोस। भला ये कैसे मजबूत और तंदुरुस्त हो सकते हैं? हाँ, जेवर से अलबत्ते लसे हुए हैं! सच तो यह है कि चाहे लड़का जितने जेवर पहने हो, उसको वह सच्ची खुशी नहीं हासिल हो सकती, जो उन प्यारे बच्चों को हवा के झोंकों और टापों की खटपट से मिलती थी। लड़का तड़के गजरदम उठा, हम्माम में गया, साफ-सुथरे कपड़े पहने। यह अच्छा, या अच्छा कि लचके, पट्टे और बिन्नट्ट के कपड़ों में जकड़ दिया जाय, जेवर सिर से पाँव तक लाद

दिया जाय और गढ़ैया पर बिठा दिया जाय कि कूड़े के टोकरे गिना करे।

ये बातें हो ही रही थीं कि सात-आठ जवान सामने से गुजरे। अभी उन्नीस ही बरस का सिन है, मगर गालों पर झुर्रियाँ, किसी की कमर झुकी हुई, किसी का चेहरा जर्द। सुर्ख और सफेद रंग धुआँ बन कर उड़ गया। और तुर्रा यह कि अलिफ के नाम वे नहीं जानते। एक नंबर अव्वल के चंडूबाज हैं, दूसरे बला के बातूनी। वह फर्राटे भरें कि भला-चंगा आदमी घनचक्कर हो जाय। एक साहब कॉलेज में तालीम पाते थे, मगर प्रोफेसर से तकरार हो गई, झट मदरसा छोड़ा। दूसरे साहब अपने दाहिने हाथ की दो उँगलियों से बाएँ हाथ पर ताल बजा रहे हैं — धिन ता धिन ता। दो साहब बहादुर नामी बटेर के घट जाने का अफसोस कर रहे हैं। किसी को नाज है कि मैं बाने की कनकइयाँ खूब लड़ाता हूँ, तुक्वल खूब बढ़ाता हूँ।

मियाँ आज़ाद ने कहा — इन लोगों को देखिए, अपनी जिंदगी किस तरह खराब कर रहे हैं। शरीफों के लड़के हैं, मगर बुरी सोहबत है। पढ़ना-लिखना छोड़ बैठे। अब मटर-गश्ती से काम है। किसी को कलम पकड़ने का शऊर नहीं।

इतने में दो साहब और मिले। तोंद निकाले हुए, मोटे थलथल। आज़ाद ने कहा — इन दोनों को पहचान रखिए। इन अक्ल के दुश्मनों ने रुपए को दफन कर रखा है। एक के पास दो लाख से ज्यादा हैं ओर दूसरे के पास इससे भी ज्यादा; मगर जमीन के नीचे। बीवी और लड़कों को कुछ जेवर तो बनवा दिए हैं, बाकी अल्लाह-अल्लाह, खैर-सल्लाह! अगर तिजारत करें, तो अपना भी फायदा हो, और दूसरों का भी। मगर यह सीखा ही नहीं। बंगाल-बंक और दिल्ली-बंक तो पहले सुना करते थे, यह जमीन का बंक आज नया सुना।

दोनों आदमी घर पहुँचे। खाना खाकर लेटे। शाम को फिर सैर करने की सूझी एक बाग में जा पहुँचे। कई आदमी बैठे हुक्के उड़ाते थे और किसी बात पर बहस करते थे। बहस से तकरार शुरू हुई।

मिर्जा सईद ने कहा — भई, कलजुग है, कलजुग। इसमें जो न हो, वह थोड़ा। अब पुराने रस्मों को लोग दकियानूसी बताते हैं, शादी-ब्याह के खर्च को फिजूल कहते हैं। बच्चों को जेवर पहनाना गाली है। अब कोई इन लोगों से इतना तो पूछे कि जो रस्म बाप-दादों के वक़्त से चली आती हे, उसको कोई क्योंकर मिटाए?

यकायक पूरब की तरफ से शोर-गुल की आवाज सुनाई दी। किसी ने कहा, चोर आया, लेना, जाने न पाए। कोई बोला, साँप है। कोई भेड़िया-भेड़िया चिल्ला उठा। किसी को शक हुआ कि आग लगी। सबके सब भड़भड़ा कर खड़े हुए, तो चोर न चकार, भेड़िया न सियार।

एक मियाँ साहब लँगोट कसे लठ हाथ में लिए अकड़ खड़े हैं, और उनसे दस कदम के फासले पर कोई लाला जी बाँस की खपाच लिए डटे खड़े हैं। इर्द-गिर्द तमाशाइयों की भीड़ है। इधर मियाँ साहब पैतरे बदल रहे हैं, उधर लाल उँगलियाँ मटका-मटका कर गुल मचा रहे हैं।

मिर्जा सईद ने पूछा — मियाँ साहब, खैर तो है?

मियाँ — क्या अर्ज करूँ मिर्जा साहब, आपको दिल्लगी सूझती है और यहाँ जान पर बन गई है। यह लाला मेरे पड़ोसी हैं। इनका कायदा है कि ठर्रा पी कर हजारों गालियाँ मुझे दिया करते हैं। आज कोठे पर चढ़ कर खुदा के वास्ते लाखों बातें सुनाईं। अब फरमाइए, आदमी कहाँ तक जब्त करे? लाख समझाया कि भाई, आदमी से ऊँट और इनसान से बेदुम के गधे न बन जाओ, मगर यह बादशाह की नहीं सुनते, मैं किस गिनती में हूँ। ताल ठोक

कर लड़ने को तैयार हो गए। खुदा न करे, किसी भलेमानस को अनपढ़ से साबिका पड़े।

लाला — और सुनिएगा,हम चार-पाँच बरस लखनऊ में रहे, अनपढ़ ही रहे।

मियाँ — बारह बरस दिल्ली में रह कर तुमने क्या सीख लिया, जो अब चार बरस लखनऊ में रहने से फाजिल हो गए।

लाला — यह साठ बरस से हमारे पड़ोसी हैं, खूब जानते हैं कि बरस दिन का त्योहार है; हम शराब जरूर पिएँगे; चुस्की जरूर लगाएँगे, नशे में गालियाँ जरूर सुनाएँगे। अब अगर कोई कहे, शराब कलिया छोड़ दो, तो हम अपनी पुरानी रस्म को क्योंकर छोड़ें?

मिर्जा सईद — अजी लाला साहब, बहुत बहकी-बहकी बातें न कीजिए। हमने माना कि पुरानी रस्म है, मगर ऐसी रस्म पर तीन हरफ! आप देखें तो कि इस वक़्त आपकी क्या हालत है? कीचड़ में लतपत, सिर-पैर की खबर नहीं, भलेमानसों को गालियाँ देते हों और कहते हो कि यह तो हमारी रस्म है।

आज़ाद — मिर्जा सईद, जरा मुझसे तो आँखें मिलाइए। शर्माए तो न होंगे? अभी तो आप कहते थे कि पुरानी रस्म को कोई क्योंकर मिटाए। यह भी तो लाला जी की पुरानी रस्म है; जिस तरह होती

आई है, उसी तरह अब भी होगी। यह धूप-छाँह की रंगत आपने कहाँ पाई? गिरगिट की तरह रंग क्यों बदलने लगे? जनाब, बुरी रस्म का मानना हिमाकत की निशानी है।

मिर्जा सईद बगलें झाँकने लगे। आज़ाद और उनके दोस्त और आगे बढ़े, तो देखते क्या हैं कि एक गँवार औरत रोती चली जाती है, और एक मर्द चुपके-चुपके समझा रहा है — चुपाई मार, चुपाई मार। मियाँ आज़ाद समझे, कोई बदमाश है। ललकारा, कौन है बे तू, इस औरत को कहाँ भगाए लिए जाता है?

उस गँवार ने कहा — साहब, भगाए नहीं लिए जात हौं; यो हमार मिहरिया आय, हमरे इहाँ रसम है कि जब मिहरिया मइका से ससुराल जात हे, तो दुइ-तीन कोस लौं रोवत है।

सईद — वल्लाह, मैं कुछ और ही समझा था। खुदा की पनाह, रस्म की मिट्टी खराब कर दी।

आज़ाद — बजा है, अभी आप उस बाग में क्या कह रहे थे? बात यह है कि पढ़े-लिखे आदमियों को बुरी रस्मों का मानना मुनासिब नहीं। यह क्या जरूरी है कि अक्ल की आँखों को पाकेट में बन्द करके पुरानी रस्मों के ढर्रे पर चलना शुरू करें; और इतनी ठोकरें खायँ कि कदम-कदम पर मुँह के बल गिरें। खुदा ने अक्ल इसलिए नहीं दी कि पुरानी रस्मों में सुधार न करें, बल्कि

इसलिए कि जमाने के मुताबिक अदल-बदल करते रहें। अगर पुरानी बातों की पूरी-पूरी पैरवी की जाती, तो ये जामदानी के कुरते और शरबती के अँगरखे नजर न आते। लोग नंगे फिरते होते। पुलाव और कबाब के बदले हम पाढ़े और हिरन का कच्चा गोश्त खाते होते। खुदा ने आँखें दी हैं; मगर अफसोस कि हमने बन्द कर लीं।

मिर्जा सईद — तो आप नाच-रंग के जलसों के भी दुश्मन होंगे? आप कहेंगे कि यह भी बुरी रस्म है?

आज़ाद — बेशक बुरी रस्म है। मैं उसका दुश्मन तो नहीं हूँ, मगर खुदा ने चाहा, तो बहुत जल्द हो जाऊँगा। यह कितनी बेहूदा बात है कि हम लोग औरतों को रुपए का लालच देकर इस तरह जलील करते हैं।

मिर्जा सईद — तो यह कहिए कि आप कोरे मुल्ला हैं। यह समझ लीजिए कि इन हसीनों का दम गनीमत है। दुनिया की चहल-पहल उनके दम से, महफिल की रौनक उनके कदम से। यहाँ तो जब तक तबले की गमक न हो, चाँद से मुखड़े की झलक न हो, कड़ों की झनकार न हो, छड़ों की छनकार न हो, छमाछम की आवाज न आए, कमरा न सजे, ताल न बजे, धमा-चौकड़ी न मचे, मेहँदी न रचें, रंगरलियाँ न मनाएँ, शादियाने न

बजाएँ, आवाजें न करें, इत्र में न बसें, ताने न सुनें, सिर न धुनें, गलेबाजी न हो, आँखों में लाल डोरे न हों, शराब-कबाब न हो, परियाँ बुलबुल की तरह चहकती न हों, सेवती के फूल और हिना की टट्टियाँ महकती न हों, कहकहे न हों, चहचहे न हों, तो किस गौखे का दम भर जीने को जी चाहे? वल्लाह, महफिल बावले कुत्ते की तरह काट खाय —

महफिल में गुदगुदाती हो, शोखी निगाह की;
शीशों से आ रही हो, सदा वाह-वाह की।

इधर जामेमुल (शराब) हो, उधर सुराही की कुल-कुल हो, इधर गुल हो, उधर बुलबुल हो, महफिल का रंग खूब जमा हो, समाँ बँधा हो, फिर जो आपकी गरदन भी न हिल जाय, तो झुक कर सलाम कर लूँ। अब गौर फरमाइए कि ऐसे तायफे को, जो डिबिया में बन्द कर रखने काबिल है, आप एक कलम मिटा देना चाहते हैं?

आज़ाद — जनाब, आपको अपनी तवायफें मुबारक हों। यहाँ इस फेर में नहीं पड़ते।

ये बातें करते हुए लोग और आगे बढ़े, तो क्या देखते हैं कि मस्त हाथी पर एक महंत जी सवार, गेरुए कपड़े पहने, भभूत रमाए, पालथी मारे, बड़े ठाठ से बैठे हैं। चेले-चापड़ साथ हैं। कोई घोड़े

की पीठ पर सवार, कोई पैदल। कोई पीछे बैठा मुरछल हिलाता है, कोई नरसिंघा बजाता है।

आज़ाद बोले— कोई इन महंत जी से पूछे कि आप खुदा की इबादत करते हैं, या दुनिया के मजे उड़ाते हैं? आपको इस टीम-टाम से क्या मतलब?

मिर्जा सईद — कुछ बाप की कमाई तो है नहीं, अहमकों ने जागीरें दे दीं, महंत बना दिया। अब ये मौजें करते हैं।

आज़ाद — जागीर देने वालों को क्या मालूम था कि उनके बाद महंत लोग यों गुलछर्रे उड़ाएँगे? यह तो हमारा काम है कि इन महंतों की गरदन पकड़ें, और कहें, उतर हाथी से, ले हाथ में कमंडल।

यकायक किसी ने छींक दिया।

सईद बोले — हत् तेरे छींकने वाले नाक काटूँ। यार, जरा ठहर जाओ, छींकते चलना बदशगुनी है।

आज़ाद — तो जनाब, हमारा और आपका साथ हो चुका। यहाँ छींक की परवा नहीं करते। आप पर कोई आफत आए, तो हमारा जिम्मा।

अभी दस कदम भी न गए थे कि बिल्ली रास्ता काट गई। सईद ने आज़ाद का हाथ पकड़ कर अपनी तरफ खींच लिया। भई अजब बेतुके आदमी हो, बिल्ली राह काट गई और तुम सीधे चले जाते हो? जरा ठहरो, पहले कोई और जाय, तब हम भी चलें।

अब सुनिए कि आध घंटे तक मुँह खोले खड़े हैं। या खुदा, कोई इधर से आए।

आज़ाद ने झल्लाकर कहा — भई, हमको आपका साथ अजीरन हो गया। यहाँ इन बातों के कायल नहीं।

खैर वहाँ से खुदा-खुदा करके चले, तो थोड़ी देर के बाद सईद ने फिर आज़ाद को रोका — हाँय-हाँय, खुदा के वास्ते उधर से न जाना। मियाँ अंधे हो, देखते नहीं, गधे खड़े हैं।

आज़ाद ने कहा — गधे तो आप खुद हैं।

डंडा उठाया, तो दोनों गधे भागे। फिर जो आगे बढ़े, तो सईद की बाईं आँख फड़की। गजब ही हो गया। हाथ-पाँव फूल गए, सारी चौकड़ी भूल गए। बोले — यार, कोई तदबीर बताओ, बाईं आँख बेतरह फड़क रही है। मर्द की बाईं और औरत की दाहिनी आँख का फड़कना बुरा शगुन है।

आज़ाद खिलखिलाकर हँस पड़े कि अजीब आदमी हैं आप! छींक हुई और हवास गायब; बिल्ली ने रास्ता काटा, और होश पैतरे; गधे देखे और औसान खता; और जो बाईं आँख फड़की, तो सितम ही हुआ! मियाँ, कहना मानो, इन खुराफात बातों में न जाओ। यह वहम है, जिसकी दवा लुकमान के पास भी नहीं। मेरा और आपका साथ हो चुका। आप अपना रास्ता लीजिए, बंदा रुखसत होता है।

14

मियाँ आज़ाद ठोकरें खाते, डंडा हिलाते, मारे-मारे फिरते थे कि यकायक सड़क पर एक खूबसूरत जवान से मुलाकात हुई। उसने इन्हें नजर भर कर देखा, पर यह पहचान न सके। आगे बढ़ने ही को थे कि जवान ने कहा —

हम भी तसलीम की खू डालेंगे;
बेनियाजी तेरी आदत ही सही।

आज़ाद ने पीछे फिर कर देखा, जवान ने फिर कहा —

गो नहीं पूछते हरगिज वो मिजाज;
हम तो कहते हैं, दुआ करते हैं।

'कहिए जनाब, पहचाना या नहीं? यह उड़नघाइयाँ, गोया कभी की जान-पहचान ही नहीं।'

मियाँ आज़ाद चकराए कि यह कौन साहब हैं! बोले — हजरत, मैं भी इस उठती ही जवानी में आँखें खो बैठा। वल्लाह, किस मरदूद ने आपको पहचाना हो।

जवान — ऐं, कमाल किया! वल्लाह, अब तक न पहचाना! मियाँ, हम तुम्हारे लँगोटिये यार हैं अनवर।

आज़ाद — अख्खाह, अनवर! अरे यार, तुम्हारी तो सूरत ही बदल गई।

यह कह कर दोनों गले मिले और ऐसे खुश हुए कि दोनों की आँखों से आँसू निकल आए।

आज़ाद ने कहा — एक वह जमाना था कि हम-तुम बरसों एक जगह रहे, साथ-साथ मटर-गश्ती की; कभी बाग में सैर कर रहे हैं, कभी चाँदनी रात में विहाग उड़ा रहे हैं, कभी जंगल में मंगल गा रहे हैं, कभी इल्मी बहस कर रहे हैं; कभी बाँक का शौक, कभी लकड़ी की धुन। वे दिन अब कहाँ!

अनवर ने कहा — भाई, चलो, अब साथ-साथ रहें, जिएँ या मरे; मगर चार दिन की जिंदगी में साथ न छोड़ें। चलो; जरा बाजार की सैर कर आएँ। मुझे कुछ सौदा लेना है।

यह कह कर दोनों चौक चले। पहले बजाजे में धँसे। चारों तरफ से आवाजें आने लगीं —आइए, आइए, अजी मियाँ साहब, क्या खरीदारी मंजूर है? खाँ साहब, कपड़ा खरीदिएगा? आइए, वह-वह कपड़े दिखाऊँ कि बाजार भर में किसी के पास न निकलें।

दोनों एक दुकान में जा कर बैठ गए। दुकान में टाट बिछा है, उस पर सफेद चाँदनी, और लाला नैनसुख या डोरिये का अंगरखा डाटे बड़ी शान से बैठे हैं। तोंद वह फरमायशी, जैसे रुपए के दो वाले तरबूज! एक तरफ तनजेब, शरबती, अद्धी के थानों की कतार है, दूसरी तरफ मोमी छींट और फलालैन की बहार है। अलगनी पर रूमाल करीने से लटके हुए लाल-भभूका या सफेद जैसे बगले के पर, या हरे-हरे धानी, जैसे लहबर। दरवाजा लाल रँगा हुआ, पन्नी से मढ़ा हुआ। दीवार पर सैकड़ों चिड़ियाँ टँगी हुई।

अनवर — भई, स्याह मखमल दिखाना।

बजाज — बदलू, बदलू, जरी खाँ साहब को काली मखमल का थान दिखाओ, बढ़िया।

लाला बदलू कई थान तड़ से उठा लाए — सूती, बूटीदार।

अनवर ने कई थान देखे, और तब दाम पूछे।

लाला — गजों के हिसाब से बताऊँ, या थान के दाम।

अनवर — भई, गजों के हिसाब से बताओ। मगर लाला, झूठ कम बोलना।

लाला ने कहकहा उड़ाया — हुजूर, हमारी दुकान में एक बात के सिवा दूसरी नहीं कहते। कौन मेल पसंद है? अनवर ने एक थान पसंद किया, उसकी कीमत पूछी।

लाला — सुनिए ख़ुदावन्द, जी चाहे लीजिए, जी चाहे न लीजिए, मुल दस रुपए गज से कम न होगी।

अनवर — ऐं, दस रुपए गज! यार खुदा से तो डरो। इतना झूठ!

लाला — अच्छा, तो आप भी कुछ फ़रमाओ।

अनवर — हम चार रुपए गज से टका ज्यादा न देंगे।

आज़ाद ने अनवर से कहा — चार रुपए गज में न देगा।

अनवर — आप चुपके बैठे रहें, आपको इन बातों में जरा भी दखल नहीं हैं। शेख क्या जाने साबुन का भाव?

लाला — चार रुपए गज तो बाजार भर में न मिलेगी। अच्छा, आप सात के दाम दे दीजिए। बोलिए, कितनी खरीदारी मंजूर है? दस गज उतारूँ?

अनवर — क्या खूब, दाम चुकाए ही नहीं और गजों की फिक्र पड़ गई। वाजबी बताओ, वाजबी। हमें चकमा न दो, हम एक घाघ हैं।

लाला — अच्छा साहब, पाँच रुपए गज लीजिएगा? या अब भी चकमा है?

अनवर — अब भी महँगी है, तुम्हारी खातिर से सवा चार सही। बस पाँच गज उतार दो।

लाला ने नाक भौं चढ़ा कर पाँच गज मखमल उतार दी, और कहा — आप बड़े कड़े खरीदार हैं। हमें घाटा हुआ। इन दामों शहर भर में न पाइएगा।

आज़ाद — भई, कसम है खुदा की, मेरा ऐसा अनाड़ी तो फँस ही जाय और वह गच्चा खाय कि उम्र भर न भूले।

अनवर — जी हाँ, यहाँ का यही हाल है। एक के तीन माँगते हैं।

यहाँ से दोनों आदमी अनवर के घर चले। चलते-चलते अनवर ने कहा — लो खूब याद आया। इस फाटक में एक बाँके रहते

हैं। जरी मैं उनसे मिल लूँ। मियाँ आज़ाद और अनवर, दोनों फाटक में हो रहे, तो क्या देखते हैं, एक अधेड़ उम्र का कड़ियल आदमी कुर्सी पर बैठा हुआ है। घुटन्ना चूड़ीदार, चुस्त, जरा शिकन नहीं। चुन्नटदार अंगरखा एड़ी तक, छाता गोल कटा हुआ, चोली ऊँची, नुक्केदार माशे भर की कटी हुई टोपी। सिरोही सामने रखी है और जगह-जगह करौली कटार, खाड़ा, तलवारें चुनी हुई हैं। सलाम-कलाम के बाद अनवर ने कहा — जनाब, वह बंदूक आपने पचास रुपए की खरीदी थी; दो दिन का वादा था, जिसके छः महीने हो गए; मगर आप साँस-डकार तक नहीं लेते। बंदूक हजम करने का इरादा हो, तो साफ-साफ कह दीजिए, रोज की ठाँय-ठाँय से क्या फायदा?

बाँके — कैसी बंदूक, किसी बंदूक? अपना काम करो, मेरे मुँह न चढ़ना मियाँ, हम बाँके लोग हैं, सैकड़ों को गच्चे, हजारों को झाँसे दिए, आप बेचारे किस खेत की मूली हैं? यहाँ सौ पुश्त से सिपहगरी होती आई है। हम, और दाम दें?

अनवर — वाह, अच्छा बाँकपन है कि आँख चूकी, और कपड़ा गायब; कम्बल डाला और लूट लिया। क्या बाँकपन इसी का नाम है? ऐसा तो लुक्के-लुच्चे किया करते हैं। आज के सातवें दिन बाएँ हाथ से रुपए गिन दीजिएगा, वरना अच्छा न होगा।

बाँके ने मूँछों पर ताव देकर कहा — मालूम होता है, तुम्हारी मौत हमारे हाथ बदी है। बहुत बढ़-बढ़ कर बातें न बनाओ। बाँकों से टर्राना अच्छा नहीं।

इस तकरार और तू-तू, मैं-मैं के बाद दोनों आदमी घर चले। इधर इन बाँके का भांजा, जो अखाड़े से आया और घर में गया, तो क्या देखता है कि सब औरतें नाक-भौं चढ़ाए, मुँह बनाए, गुस्से में भरी बैठी हैं। ऐ खैर तो है? यह आज सब चुपचाप क्यों बैठे हैं? कोई मिनकता ही नहीं। इतने में उसकी मुमानी कड़क कर बोली — अब चूड़ियाँ पहनो, चूडियाँ! और बहू-बेटियों में दब कर बैठ रहो। वह मुआ करोड़ों बातें सुना गया, पक्के पहर भर तक ऊल-जलूल बका किया और तुम्हारे मामू बैठे सब सुना किए। 'फेरी मुँह पर लोई, तो क्या करेगा कोई!' जब शर्म निगोड़ी भून खाई, तो फिर क्या। यह न हुआ कि मुए कलजिभे की जबान तालू से खींच लें।

भांजे की जवानी का जोम था; शेर की तरह बफरता हुआ बाहर आया और बोला —मामूजान, यह आज आपसे किसकी तकरार हो गई? औरतें तक झल्ला उठीं और आप चुपके बैठे सुना किए? वल्लाह, इज्जत डूब गई। ले, अब जल्दी उसका नाम बताइए, अभी आँतों का ढेर किए देता हूँ।

मामू — अरे, वही अनवर तो है। उसका कर्जदार हूँ। दो बातें सुनाए भी तो क्या? और वह है ही बेचारा क्या कि उससे भिड़ता! वह पिद्दी, मैं बाज, वह दुबला-पतला आदमी, मैं पुराना उस्ताद। बोलने का मौका होता तो इस वक़्त उसकी लाश न फड़कती होती? ले गुस्सा थूक दो; जाओ, खाना खाओ; आज मीठे टुकड़े पके हैं।

भांजा — कसम खुदा की, जब तक उस मरदूद का खून न पी लूँ, तब तक खाना हराम है। मीठे टुकड़ों पर आप ही हत्थे लगाइए। यह कह कर घर से चल खड़े हुए। मामू ने लाख समझाया, मगर एक न मानी।

इधर अनवर जब घर पहुँचे, तो देखते क्या हैं, उनका लड़का तड़प रहा है। घबराए, वह क्या, खैरियत तो है?

लौंडी ने कहा — भैया यहाँ खेल रहे थे कि बिच्छू ने काट लिया। तभी से बच्चा तड़प कर लोट रहा है।

अनवर ने आज़ाद को वहीं छोड़ा और खुद अस्पताल चले कि झटपट डॉक्टर को बुला लाएँ। मगर अभी पचास कदम भी न गए होंगे कि सामने से उस बाँके का भांजा आ निकला। आँखें चार हुई। देखते ही शेर की तरह गरज कर बोला — ले सँभल

जा। अभी सिर खून में लोट रहा होगा। हिला और मैंने हाथ दिया। बाँकों के मुँह चढ़ना खाला जी का घर नहीं।

बेचारे अनवर बहुत परेशान हुए। उधर लड़के की वह हालत, इधर अपनी यह गत। जिस्म में ताकत नहीं, दिल में हिम्मत नहीं। भागें, तो कदम नहीं उठते; ठहरें तो पाँव नहीं जमते। सैकड़ों आदमी इर्द-गिर्द जमा हो गए और बाँके को समझाने लगे — जाने दीजिए, इनके मुकाबिले में खड़े होना आपके लिए शर्म की बात है।

अनवर की आँखें डबडबा आईं। लोगों से बोले — भाई, इस वक़्त मेरा बच्चा घर पर तड़प रहा हे, डॉक्टर को बुलाने जाता था कि राह में इन्होंने घेरा। अब किसी सूरत से मुझे बचाओ।

मगर उस बाँके ने एक न मानी। पैतरा बदल कर सामने आ खड़ा हुआ। इतने में किसी ने अनवर के घर खबर पहुँचाई कि मियाँ से एक बाँके से तलवार चल गई। जितने मुँह उतनी बातें। किसी ने कह दिया कि चरका खाया और गरदन खट से अलग हो गई। यह सुनते ही अनवर की बीबी सिर पीट-पीट कर रोने लगी। लोगो, दौड़ो, हाय, मुझ पर बिजली गिरी, हाय, मैं जीते-जी मर मिटी। फिर बच्चे से चिमट कर विलाप करने लगी — मेरे बच्चे,

अब ते अनाथ हो गया, तेरा बाप दगा दे गया, हाय, मेरा सोहाग लुट गया।

मियाँ आज़ाद यह खबर पाते ही तीर की तरह घर से निकल कर उस मुकाम पर जा पहुँचे। देखा, तो यह जालिम तलवार हाथ में लिए मस्त हाथी की तरह चिंघाड़ रहा है। आज़ाद ने झट से झपट कर अनवर को हटाया और पैतरा बदल कर बाँके के सामने आ खड़े हुए। वह तो जवानी के नशे में मस्त था, पहले, हथकटी का हाथ लगाना चाहा, मगर आज़ाद ने खाली दिया। वह फिर झपटा और चाहा कि चाकी का हाथ जमाए, मगर यह आड़े हो गए।

आज़ाद — बचा, यह उडनघाइयाँ किसी गँवार को बताना। मेरे सामने छक्के छूट जायँ, तो सही। आओ चोट पर। वह बाँका झल्ला कर झपटा और घुटना टेक कर पलट कर हाथ लगाने ही को था कि आज़ाद ने पैतरा बदला और तोड़ किया — मोढ़ा। मोढ़ा तो उसने बचाया, मगर आज़ाद ने साथ ही जनेवे का वह तुला हुआ हाथ जमाया कि उसका भंडारा तक खुल गया। धम से जमीन पर आ गिरा। मियाँ आज़ाद को सबने घेर लिया, कोई पीठ ठोकने लगा, कोई डंड मलने लगा। अनवर लपके हुए घर गए। बीबी की बाँछें खिल गईं, गोया मुर्दा जी उठा।

दूसरे दिन अनवर और आज़ाद कमरे में बैठे चाय पी रहे थे कि डाकिया हरी-हरी वरदी फड़काए, लाल-लाल पगिया जमाए,खासा टैयाँ बना हुआ आया और एक अखबार दे कर लंबा हुआ। अनवर ने झटपट अखबार खोला, ऐनक लगाई और अखबार पढ़ने लगे। पढ़ते-पढ़ते आखिरी सफे पर नजर पड़ी, तो चेहरा खिल गया।

आज़ाद — यह क्यों खुश हो गए भई? क्या खबर है?

अनवर — देखता हूँ कि यह इश्तिहार यहाँ कैसे आ पहुँचा? अखबारों में इन बातों का क्या जिक्र? देखिए —

'जरूरत है एक अरबी प्रोफेसर की नजीरपुर-कॉलेज के लिए। तनख्वाह दो सौ रुपए महीना।'

आज़ाद — अखबारों में सभी बातें रहती हैं, यह कोई तो नई बात नहीं। अखबार लड़कों का उस्ताद, जवानों को सीधी राह बताने वाला, बुड्ढों के तजुर्बे की कसौटी, सौदागरों का दोस्त, कारीगरों का हमदर्द, रिआया का वकील, सब कुछ है। किसी कालम में मुल्की छेड़-छाड़, कहीं नोटिस और इश्तिहार, अंगरेजी अखबारों में तरह-तरह की बातें दर्ज होती हैं और देसी अखबार भी इनकी नकल करते हैं। शतरंज के नक्श कौमी तमस्सुकों का निर्ख, घुड़-दौड़ की चर्चा, सभी कुछ होता है। जब कभी कोई ओहदा खाली हुआ

और अच्छा आदमी न मिला, तो हुक्काम इसका इश्तिहार देते हैं। लोगों ने पढ़ा और दरख्वास्त दाग दी; लगा तो तीर, नहीं तुक्का।

अनवर — अब तो नए-नए इश्तिहार छपने लगेंगे। कोई नया गंज आबाद करे, तो उसको छपवाना पड़ेगा। एक नौजवान साकिन की जरूरत है, नए गंज में दुकान जमाने के लिए; क्योंकि जब तक धुआँधार चिलमें न उड़ें, चरस की लौ आसमान की खबर न लाए, तब तक गंज की रौनक नहीं। अफीमची इश्तिहार देंगे कि एक ऐसे आदमी की जरूरत है, जो अफीम घोलने में ताक हो, दिन-रात पीनक में रहे; मगर अफीम घोलने के वक़्त चौंक उठे। आराम-तलब लोग छपवाएँगे कि एक ऐसे किस्सा कहनेवाले की जरूरत है, जिसकी जबान पर हो, जमीन और आसमान के कुलाबे मिलाए, झूठ के छप्पर उड़ाए, शाम से जो बकना शुरे करे, तो तड़का कर दे। खुशामद पसंद लोग छपवाएँगे कि एक ऐसे मुसाहब की जरूरत है, जो आठों गाँठ कुम्मैत हो, हाँ में हाँ मिलाए, हमको सखावत में हातिम; दिलेरी में रुस्तम, अक्ल में अरस्तू बनाए — मुँह पर कहे कि हुजूर ऐसे और हुजूर के बाप ऐसे, मगर पीठ-पीछे गालियाँ दे कि इस गधे को मैंने खूब ही बनाया। बेफिक्रे छपवाएँगे कि एक बटेर की जरूरत है, जो बढ़-बढ़ कर लात लगाता हो; एक मुर्ग की, जो सवाए ड्योढ़े को मारे; एक मेंढ़े की, जो पहाड़ से टक्कर लेने में बन्द न हो।

इतने में मिर्जा सईद भी आ बैठे। बोले — भई, हमारी भी एक जरूरत छपवा दो। एक ऐसी जोरू चाहिए जो चालाक और चुस्त हो, नख-सिख से दुरुस्त हो, शोख और चंचल हो, कभी-कभी हँसी में टोपी छीनकर चपत भी जमाए, कभी रूठ जाएँ, कभी गुदगुदाए; खर्च करना न जानती हो, वरना हमसे मीजान न पटेगी; लाल मुँह हो; सफेद हाथ-पाँव हों, लेकिन ऊँचे कद की न हो, क्योंकि मैं नाटा आदमी हूँ; खाना पकाने में उस्ताद हो, लेकिन हाजमा खराब हो, हल्की-फुल्की दो चपातियाँ खाय, तो तीन दिन में हजम हो; सादा मिजाज ऐसी हो कि गहने-पाते से मतलब ही न रखे, हँसमुख हो, रोते को हँसाए, मगर यह नहीं कि फटी जूती की तरह बेमौक़ा दाँत निकाल दे, दरख्वास्त खटाखट आएँ, हाँ, यह भर याद रहे कि साहब के मुँह पर दाढ़ी न हो।

आज़ाद — औरतों खैर, मगर यह दाढ़ी की बड़ी कड़ी शर्त है। भला क्यों साहब औरतें भी मुछक्कड़ हुआ करती हैं?

सईद — कौन जाने भई, दुनिया में सभी तरह के आदमी होते हैं। जब बेमूँछ के मर्द होते हैं, तो मूँछवाली औरतों का होना भी मुमकिन है। कहीं ऐसा न हो कि पीछे हमारी मूँछ उसके हाथ में और उसकी दाढ़ी हमारे हाथ में हो।

आज़ाद — अजी, जाइए भी औरत के भी कहीं दाढ़ी होती है?

सईद — हो या न हो, मगर यह पख हम जरूर लगाएँगे।

आपस में यही मजाक हो रहा था कि पड़ोस से रोने-पीटने की आवाज आई। मालूम हुआ कोई बूढ़ा आदमी मर गया। आज़ाद भी वहाँ जा पहुँचे। लोगों से पूछा इन्हें क्या बीमारी थी? एक बूढ़े ने कहा — यह न पूछिए, हुकूम की बीमारी थी।

आज़ाद — यह कौन बीमारी है? यह तो कोई नया मरज मालूम होता है। इसकी अलामतें तो बताइए।

बूढ़ा — क्या बताऊँ, अक्ल की मार इसका खास सबब है। अस्सी बरस के थे, मगर अक्ल के पूरे, तमीज छू नहीं गई! खुदा जाने, धूप में बाल सफेद किए थे या नजला हो गया था। हजरत की पीठ पर एक फोड़ा निकला। दस दिन तक इलाज नदारद। दसवें दिन किसी गँवार ने कह दिया कि गुलेअब्बास के पत्ते और सिरका बाँधो। झट-से राजी हो गए। सिरका बाजार से खरीदा, पत्ते बाग से तोड़ लाए और सिरके में पत्तों को खूब तर करके पीठ पर बाँधा। दूसरे रोज फोड़ा आध अंगुल बढ़ गया। किसी और गौखे ने कह दिया कि भटकटैया बाँधो, यह टोटका है। इसका नतीजा यह हुआ कि दर्द और बढ़ गया। किसी ने बताया कि इमली की पत्ती, धतूरा और गोबर बाँधो। वहाँ क्या था, फौरन मंजूर। अब तड़पने लगे। आग लग गई। मोहल्ले की एक

औरत ने कहा — मैं बताऊँ, मुझसे क्यों न पूछा। सहल तरकीब है, मूली के अचार के तीन कतले लेकर जमीन में गाड़ दो तीन दिन के बाद निकालो और कुएँ में डाल दो। फिर उसी कुएँ का पानी अपने हाथ भर कर पी जाओ। उसी दम चंगे न हो जाओ, तो नाक कटा डालूँ। सोचे, भई, इसने शर्त बड़ी कड़ी की है। कुछ तो है कि नाक बदली। झट मूली के कतले गाड़े और कुएँ में डाल पानी भरने लगे उस पर तुर्रा यह कि मारे दर्द के तड़प रहे थे। रस्सी हाथ से छूट गई धम से गिरे, फोड़े में ठेस लगी, तिलमिलाने लगे यहाँ तक कि जान निकल गई।

आज़ाद — अफसोस, बेचारे की जान मुफ्त में गई। इन अक्ल के दुश्मनों से कोई इतना तो पूछे कि हर ऐरे गैरे की राय पर क्यों इलाज कर बैठते हो? नतीजा यह होता है, या तो मरज बढ़ जाता है, या जान निकल जाती है।

15

मियाँ आज़ाद एक दिन चले जाते थे। क्या देखते हैं, एक पुरानी-धुरानी गड़हिया के किनारे एक दढ़ियल बैठे काई की कैफियत देख रहे हैं। कभी ढेला उठाकर फेंका, छप। बुड्ढे आदमी और

लौंडे बने जाते हैं। दाढ़ी का भी खयाल नहीं। लुत्फ यह कि मुहल्ले भर के लौंडे इर्द-गिर्द खड़े तालियाँ बजा रहे हैं, लेकिन आप गड़हिया की लहरों ही पर लट्टू हैं। कमर झुकाए चारों तरफ ढेले और ठीकरे ढूँढ़ते फिरते हैं। एक दफा कई ढेले उठा कर फेंके।

आज़ाद ने सोचा, कोई पागल है क्या। साफ-सुथरे कपड़े पहने, यह उम्र, यह वजा, और किस मजे से गड़हिया पर बैठे रंगरलियाँ मना रहे हैं। यह खबर नहीं कि गाँव भर के लौंडे पीछे तालियाँ बजा रहे हैं।

एक लौंडे ने चपत जमाने के लिए हाथ उठाया, मगर हाथ खींच लिया। दूसरे ने पेड़ की आड़ से कंकड़ी लगाई। तीसरे ने दाढ़ी पर घास फेंकी। चौथे ने कहा — मियाँ, तुम्हारी दाढ़ी में तिनका; मगर मेरा शेर जरा न मिनका। गड़हिया से उठे, तो दूर की सूझी। झट से एक पेड़ पर चढ़ गए, फुनगी पर जा बैठे और बन्दर की तरह लगे उचकने। उस टहनी पर से उचके, तो दूसरी डाल पर जा बैठे। उस पर लड़कों को भी बुलाते जाते हैं कि आओ, ऊपर आओ। इमली का दरख्त था, इतना ऊँचा कि आसमान से बातें कर रहा था। हजरत मजे से बैठे इमली खाते और चिएँ लड़कों पर फेंकते जाते हैं। लौंडे गुल मचा रहे हैं कि मियाँ, मियाँ, एक चियाँ हमको इधर फेंको, इधर; हाथ ही टूटे, जो

उधर फेंके। क्या मजे से गपर-गपर करके खाते जाते हैं, इधर एक चियाँ भी नहीं फेंकते। ओ कंजूस, ओ मक्खीचूस, ओ बन्दर, अरे मुछंदर, एक इधर भी। थोड़ी देर में खटखट करते पेड़ से उतरे।

इतने में कमसरियट के तीन-चार हाथी चारे और गन्ने से लदे झूमते हुए निकले। आपने लड़कों को सिखाया कि गुल मचा कर कहो — हाथी, हाथी गन्ना दे। लौंड़ो ने जो इतनी शह पाई, तो आसमान सिर पर उठा लिया। सब चीखने लगे — हाथी, हाथी, गन्ना दे।

एकाएक एक रीछवाला आ निकला। आपने झट रीछ की गरदन पकड़ी और पीठ पर हो रहे। टिक-टिक-टिक, क्या टट्टू है! रीछवाला चिल्ल-पों मचाया ही किया, आपने दो-तीन लड़कों को आगे-पीछे अगल-बगल बिठा ही लिया। मजे से तने बैठे हैं, गोया अपने वक़्त के बादशाह हैं। थोड़ी देर के बाद लड़कों को जमीन पर पटका, खुद भी धम से जमीन पर कूद पड़े, और झट लँगोट कस, ताल ठोक, रीछ से कुश्ती लड़ने पर आमादा हो गए।

तब तो रीछवाला चिल्लाया — मियाँ, क्यों जान के दुश्मन हुए हो! चबा ही डालेगा। यह तो हवा के घोड़े पर सवार थे, आव देखा न ताव, चिमट ही तो गए और एक अंटी बताई तो रीछ चारों खाने

चित। लौडों ने वह गुल मचाया कि रीछ पूरब भागा, और रीछवाला पश्चिम।

मुहल्ले भर में कहकहा उड़ने लगा। थोड़ी ही देर के बाद एक भड्डरी आ निकला। धोती बाँधे, पोथी बगल में दबाए, रुद्राक्ष की माला पहने, आवाज लगाता जाता है — साइत बिचारे, सगुन बिचारे।

दढ़ियल के करीब से गुजरा, तो शिकार इनके हाथ आया। बोले — भई, इधर आना।

उसकी बाँछें खिल गईं कि पौ बारह है। अच्छी बोहनी हुई। दढ़ियल ने हाथ दिखाया और पूछा — हमारी कितनी शादियाँ होंगी?

उसने कन्या, मकर, सिंह, वृश्चिक करके बहुत सोच के कहा — पाँच।

आपने उसकी पगड़ी उछाल दी। लड़कों को दिल्लगी सूझी, किसी ने सिर सुहलाया तो किसी ने चपत लगाया। अच्छी तरह बोहनी हुई।

दढ़ियल ने कहा — सच कहना, आज साइत देख कर चले थे या यों ही? अपनी साइत देख लेते हो या औरों ही की राह बताते हो? अच्छा, खैर, बताओ, हमारे यहाँ लड़का कब तक होगा?

भड्डरी ने कहा — बस, बस, आप और किसी से पूछिएगा। भर पाया।

यह कह कर चलने ही को था कि दढ़ियल ने लड़कों को इशारा किया। वे तो इनको अपना गुरू ही समझते थे। एक ने पोथी ली, दूसरे ने माला छिपाई, तीसरे ने पगिया टहला दी। दस-पाँच चिमट गए। बेचारा बड़ी मुश्किल से जान छुड़ा कर भागा और कसम खाई कि अब इस मुहल्ले में कदम न रखूँगा।

इतने में खोमचेवाले ने आवाज दी — गुलाबी रेवड़ियाँ, करारी खुटियाँ, दालमोट सलोने, मटर तिकोने। लौंडे अपने-अपने दिल में खुश हो गए कि दढ़ियल के हुक्म से ख़ोमचा लूट लेंगे ओर खूब मिठाइयाँ चखेंगे। मगर उन्होंने मना कर दिया — खबरदार, हाथ मत बढ़ाना। जब खोमचेवाला पास आया, तब उन्होंने मोल-तोल करके दो रुपए में सारा ख़ोमचा मोल ले लिया और लड़कों को खूब छका कर खिलाया।

एक दस मिनट के बाद आवाज आई — खीरे लो, खीरे। आपने उचक कर टोकरा उलट दिया। खीरे जमीन पर गिर पड़े। जैसे

ही लड़कों ने चाहा, खीरे बटोरें कि उन्होंने डाँट बताई। खीरेवाले के दोनों हाथ पकड़ लिए और लड़कों से कहा — खीरे उठा उठाकर इसी गड़हिया में फेंकते जाओ। पचास-साठ खीरे आनन-फानन गड़हिया में पहुँच गए।

अभी यह तमाशा हो ही रहा था कि एक चिड़ीमार कंपा-जाल लिए हुए आ निकला। हाथ में तीन-चार जानवर, कुछ झोले के अन्दर। सब फड़फड़ा रहे हैं। कहता जाता है — काला भुजंगा मंगल के रोज।

दढ़ियल ने पुकारा — आओ मियाँ, इधर आओ।

एक भुजंगा ले कर अपने ऊपर से उतार कर छोड़ दिया। चिड़ीमार ने कहा — टका हुआ।

दूसरा जानवर एक लड़के पर से उतार कर छोड़ा। इसी तरह दस-पंद्रह चिड़ियाँ छोड़ कर चुपचाप खड़े हो गए। गोया कुछ मतलब ही नहीं।

चिड़ीमार ने कहा — हुजूर, दाम।

आपने फर्माया — तुम्हारा नाम?

तब तो वह चकराया कि अच्छे मिले। बोला — हुजूर, धेली के जानवर थे।

आप बोले — कैसी धेली और कैसा धेला! कुछ घास तो नहीं खा गया? भंग पी गया है या शराब का नशा है?

इधर लड़कों ने जाल कंपा सब टहला दिया। थोड़ी देर रो-पीट कर उसने भी अपनी राह ली।

दढ़ियल ने लड़कों को छोड़ा और वहाँ से किसी तरफ जाना ही चाहते थे कि आज़ाद ने करीब आकर पूछा — हजरत, मैं बड़ी देर से आपका तमाशा देख रहा हूँ, कभी खीरे गड़हिया में फेंके, कभी इमली पर उचक रहे, कभी चिड़ीमार की खबर ली, कभी भड्डरी को आड़े हाथों लिखा। मुझे खौफ है कि आप कहीं पागल न हो जाएँ, जल्दी फस्द खुलवाइए।

दढ़ियल — मुझे तो आप ही पागल मालूम होते हैं। इन बातों के समझने के लिए बड़ी अक्ल चाहिए। सुनिए, आपको समझाऊँ। गड़हिया पर बिस्तर जमा कर ढेले फेंकने और पेड़ पर उचक कर इमली खाने और हाथी से गन्ने माँगने का सबब यह है कि लौंडे भी हमारी देखा-देखी उचक-फाँद में बर्क हो जाएँ, यह नहीं कि मरियल टट्टू की तरह जहाँ बैठे, वहीं जम गए। लड़कों को कम से कम दो घंटे रोज खेलना-कूदना चाहिए, वरना बीमारी सताएगी। रीछ वाले के रीछ पर उचक बैठने, रीछ को भगा दे और चिड़ीमार के जानवरों को मुफ्त बेकौड़ी-बेदाम छुड़ा देने का

सबब यह है कि जब हम जानवरों को तकलीफ में देखते हैं, तो कलेजे पर साँप लोटने लगता है और इन चिड़िमारों का तो मैं जानी दुश्मन हूँ। बस चले, तो कालेपानी भिजवा दूँ। जहाँ देखा, कि दो चार भलेमानुस खड़े हैं, लगे जानवरों को जोर से दबाने, जिसमें वे चीखें, और लोग उनकी हालत पर कुछ दे निकलें, इनकी हड्डियाँ चढ़ जायँ। खीरे इसलिए गड़हिया में फिकवा दिए कि आजकल हवा खराब है, खीरे खाने से भला-चंगा आदमी बीमार हो जाय। मगर इन कुंजड़ों-कबाड़ियों को इन बातों से क्या वास्ता? उन्हें तो अपने टकों से मतलब! मैंने समझा, एक कबाड़िए के नुकसान से पचासों आदमियों की जान बच जाय, तो क्या बुरा? देख लो, खोमचेवाले को हमने अपने पास से दो रुपए खनाखन गिन दिए। अब समझे, इस तमाशे का हाल?

यह कह कर उन्होंने अपनी राह ली और आज़ाद ने भी दिल में उनकी नेकनीयती की तारीफ करते हुए दूसरी तरफ का रास्ता लिया। अभी कुछ ही दूर गए थे कि सामने से एक साहब आते हुए दिखाई दिए। उन्होंने आज़ाद से पूछा — क्यों साहब, आप अफीम तो नहीं खाते?

आज़ाद — अफीम पर खुदा की मार! कसम ले लीजिए, जो आज तक हाथ से भी छुई हो। इसके नाम से नफरत है।

यह कह कर आज़ाद नदी के किनारे जा बैठे। वहाँ से पलट कर जो आए, तो क्या देखते हैं कि वही हजरत जमीन पर पड़े आँखें माँग रहे हैं। चेहरे पर मुर्दनी छाई है, होंठ सूख रहे हैं, आँखों से आँसू बह रहे हैं। न सिर की फिक्र है, न पाँव की। आज़ाद चकराए, क्या माजरा है। पूछा — क्यों भई, खैर तो है? अभी तो भले-चंगे थे, इतनी जल्द कायापलट कैसे हो गई?

अफीमची — भई, मैं तो मर मिटा। कहीं से अफीम ले आओ। पिऊँ, तो आँखें खुलें; जान में जान आए। छुटपन ही से अफीम का आदी हूँ। वक़्त पर न मिले, तो जान निकल जाय।

आज़ाद — अरे यार, अफीम छोड़ो, नहीं इसी तरह एक दिन दम निकल जाएगा।

अफीमची — तो क्या आप अमृत पी कर आए हैं? मरना तो एक दिन सभी को है।

आज़ाद — मियाँ, हो बड़े तीखे; 'रस्सी जल गई, मगर बल न गया।' पड़े सिसक रहे हो, मगर जवाब, तुर्की ब तुर्की जरूर दोगे।

अफीमची — जनाब, अफीम लानी हो तो लाइए, वर्ना यहाँ बक-बक सुनने का दिमाग नहीं।

आज़ाद — अफीम लानेवाले कोई और ही होंगे, हम तो इस फिक्र में बैठे हैं कि आप मरें, तो मातम करें। हाँ, एक बात मानो तो अभी लपक जाऊँ, जरा लकड़ी के सहारे से उस हरे-भरे पेड़ के तले चलो; वहाँ हरी-हरी घास पर लोट मारो; ठंडी-ठंडी हवा खाओ, तब तक मैं आता हूँ।

अफीमची — अरे मियाँ, यहाँ जान भारी है। चलना-फिरना उठना-बैठना कैसा!

आखिर आज़ाद ने उन्हें पीठ पर लादा और ले चले। उनकी यह हालत कि आँखें बन्द, मुँह खुला हुआ; मालूम ही नहीं कि जाते कहाँ हैं। आज़ाद ने उनको नदी में ले जा कर गोता दिया। बस कयामत आ गई। अफीमची आदमी, पानी की सूरत से नफरत, लगे चिल्लाने — बड़ा गच्चा दे गया, मारा, पटरा कर दिया! उम्र भर में आज ही नदी में कदम रखा; खुदा तुमसे समझे; सन से जान निकल गई ठिठुर गया; अरे जालिम, अब तो रहम कर।

आज़ाद ने एक गोता और दिया। फिर ताबड़तोड़ कई गोते दिए। अब उनकी कैफियत कुछ न पूछिए। करोड़ों गालियाँ दी। आज़ाद ने उनको रेती में छोड़ दिया और लंबे हुए। चलते-चलते एक बरगद के पेड़ के नीचे पहुँचे, जिसकी टहनियाँ आसमान से बातें करती थीं और जटाएँ पाताल की खबर लेती थीं। देखा, एक

हजरत नशे में चूर एक दुबली-पतली टट्टुई पर सवार टिक-टिक करते जा रहे हैं।

आज़ाद — इस टट्टुई पर कौन लदा है?

शराबी — अच्छा जी, कौन लदा है! ऐसा न हो कि कहीं मैं उतर कर अंजर-पंजर ढीले कर दूँ। यों नहीं पूछता कि इस हवाई घोड़े पर आसन जमाए, बाग उठो कौन सवार जाता है। आँखों के आगे नाक, सूझे क्या खाक। टट्टू ऐसे ही हुआ करते हैं?

आज़ाद — जनाब, कसूर हुआ, माफ कीजिए। सचमुच यह तो तुर्की नस्ल का पूरा घोड़ा है। खुदा झूठ न बुलाए, जमना पार की बकरी इससे कुछ ही बड़ी होगी।

शराबी — हाँ, अब आप आए राह पर। इस घोड़े की कुछ न पूछिए। माँ के पेट से फुदकता निकला था।

आज़ाद — जी हाँ, वह तो इसकी आँखें ही कहे देती हैं। घोड़ा क्या उड़न-खटोला है।

शराबी — इसकी कीमत भी आपको मालूम है?

आज़ाद — ना साहब! भला मैं क्या जानूँ। आप तो खैर गधे पर सवार हुए हैं, यहाँ तो टाँगों की सवारी के सिवा और कोई सवारी

मयस्सर ही न हुई। मगर उस्ताद कितनी ही तारीफ करो, मेरी निगाह में तो नहीं जँचता।

शराबी — अच्छा, तो इसी बात पर कड़कड़ाए देता हूँ।

यह कह कर एड़ लगाई मगर टट्टू ने जुंबिश तक न की। वह और अचल हो गया। अब चाबुक पर चाबुक मारते हैं, एड़ लगाते हैं और वह टसकने का नाम तक नहीं लेता। आज़ाद ने कहा — बस ज्यादा शेखी में न आइए, ठंडी-ठंडी हवा खाइए।

यह कह कर आज़ाद तो चले, मगर शराबी के पाँव डगमगाने लगे। बाग अब छूटी और अब छूटी। दस कदम चले और बाग रोक ली। पूछा — मियाँ मुसाफिर, मैं नशे में तो नहीं हूँ?

आज़ाद — जी नहीं, नशा कैसा? आप होश की बातें कर रहे हैं?

शराबी इसी तरह बार-बार आज़ाद से पूछता था। आखिर जब आज़ाद ने देखा कि यह अब घुड़िया पर से लुढ़कना ही चाहते हैं, तो झट घुड़िया को एक खेत में हाँक दिया, और गुल मचाया कि ओ किसान, देख यह तेरा खेत चराए लेता है। किसान के मान में भनक पड़ी, तो लठ काँधे पर रख लाखों गालियाँ देता हुआ झपटा। आज चचा बना के छोड़ूँगा; रोज सुअरिया चरा ले जाते थे, आज बहुत दिन के बाद हत्थे चढ़े हो। नजदीक गया, तो देखता है कि टटुई है और एक आदमी उस पर लदा है।

किसान चालाक था। बोला — आप हैं बाबू साहब! चलिए, आपको घर ले चलूँ। वहीं खाना खाइए और आराम से सोइए।

वह कह कर घुड़िया की रास थामे हुए, काँजी हाऊस पहुँचा और टट्टुई को काँजी हाऊस में ढकेल कर चंपत हुआ। यह बेचारे रात भर काँजी हाऊस में रहे, सुबह को किसी तरह घर पहुँचे।

16

मियाँ आज़ाद के पाँव में तो आँधी रोग था। इधर-उधर चक्कर लगाए, रास्ता नापा और पड़ कर सो रहे। एक दिन साँड़नी की खबर लेने के लिए सराय की तरफ गए, तो देखा, बड़ी चहल-पहल है। एक तरफ रोटियाँ पक रही हैं, दूसरी तरफ दाल बघारी जाती है। भठियारिनें मुसाफिरों को घेर-घार कर ला रही हैं, साफ-सुथरी कोठरियाँ दिखला रही हैं। एक कोठरी के पास एक मोटा-ताजा आदमी जैसे ही चारपाई पर बैठा, पट्टी टूट गई। आप गड़ाप से झिलँगे में हो रहे। अब बार-बार उचकते है; मगर उठा नहीं जाता। चिल्ला रहे हैं कि भाई, मुझे कोई उठाओ। आखिर भठियारों ने दाहिना हाथ पकड़ा, बाईं तरफ मियाँ आज़ाद ने हाथ दिया और आपको बड़ी मुश्किल से खींच खाँच के निकाला।

झिलँगे से बाहर आए, तो सूरत बिगड़ी हुई थी। कपड़े कई जगह मसक गए थे। झल्ला कर भठियारी से बोले — वाह, अच्छी चारपाई दी! जो मरे हाथ-पाँव टूट जाते, या सिर फूट जाता, तो कैसी होती?

भठियारी — ऐ वाह मियाँ, 'उलटा चोर कोतवाल को डाँटे!' एक तो छपरखट को चकनाचूर कर डाला, पट्टी के बहत्तर टुकड़े हो गए, देंगे टका और छह रुपए पर पानी फेर दिया, दूसरे हमीं को ललकारते हैं!

आज़ाद — जनाब, इन भठियारिनों के मुँह न लगिए, कहीं कुछ कह बैठें, तो मुफ्त ही झेंप हो। देख भाल कर बैठा कीजिए। कहाँ से आ रहे हैं?

हकीम — यहीं तक आया हूँ।

आज़ाद — आप आए कहाँ से हैं?

हकीम — जी गोपामऊ मकान है।

आज़ाद — यहाँ किस गरज आना हुआ?

हकीम — हकीम हूँ।

आज़ाद — यह कहिए कि आप तबीब है।

हकीम — तबीब आप खुद होंगे, हम हकीम हैं।

आज़ाद — अच्छा साहब, आप हकीम ही सही, क्या यहाँ हिकमत कीजिएगा?

हकीम — और नहीं तो क्या, भाड़ झोकने आया हूँ? या सनीचर पैरों पर सवार था? भला यह तो फर्माइए कि यह कैसी जगह है? लोग किस फैशन के हैं? आब-हवा कैसी है?

आज़ाद — यह न पूछिए जनाब। यहाँ के बाशिंदे पूरे घुटे हुए, आठों गाँठ कुम्मैत हैं। और आब-हवा तो ऐसी है कि बरसों रहिए, पर सिर में दर्द तक न हो। पाव भर की खुराक हो, तो तीन पाव खाइए। डकार तक आए, तो मुझे सजा दीजिए।

यह सुन कर हकीम साहब ने मुँह बनाया और बोले — तब तो बुरे फँसे!

आज़ाद — क्यों, बुरे क्यों फँसे? शौक से हिकमत कीजिए। आब-हवा अच्छी है, बीमारी का नाम नहीं।

हकीम — हजरत, आप निरे बुद्धू हैं। एक तो आपने यह गोला मारा कि आब-हवा अच्छी है। इतना नहीं समझते कि आब-हवा अच्छी है, तो हमसे क्या वास्ता, हमें कौन पूछेगा। बस, हाथ पर हाथ रखे मक्खियाँ मारा करेंगे। हम तो ऐसे शहर जाना चाहते हैं, जहाँ हैजे का घर हो, बुखार पीछा न छोड़ता हो, दस्त और पेचिश की सबको शिकायत हो, चेचक का वह जोर हो कि खुदा

की पनाह। तब अलबत्ता हमारी हंड़ियाँ चढ़े। आपने तो वल्लाह, आते ही गोला मारा। आप फरमाते हैं कि यहाँ पाव भर के बदले तीन पाव गिजा हजम होती है। आमदनी टका नहीं और खायँ चौगुना। तो कहिए, मरे या जिए? बंदा सबेरे ही बोरिया-बँधना उठा कर चंपत होगा। ऐसी जगह मेरी बला रहे, जहाँ सब हट्टे-कट्टे ही नजर आते हैं। भला कोई खास मरज भी हैं यहाँ। या मरज का इस तरज गुजर ही नहीं हुआ?

आज़ाद – हजरत, यहाँ के पानी में यह असर हे कि बरसों का मरीज आए, और एक कतरा पी ले, तो बस, खासा हट्टा-कट्टा हो जाय।

हकीम – पानी क्या अमृत है! तो सही, जो पानी में जहर न मिला दिया हो।

आज़ाद – जनाब, हजारों कुएँ और पचासों बावलियाँ हैं, किस-किस में जहर मिलाते फिरिएगा?

हकीम – खैर भाई, समझा जाएगा; मगर बुरे फँसे! इस वक़्त होश ठिकाने नहीं है! ओ भठियारी, जरी हमको पंसारी की दुकान से तोला भर सिकंजबीन तो ला देना।

भठियारी – ऐ मियाँ, पंसारी यहाँ कहाँ? किसी फकीर की दुआ ऐसी है कि यहाँ हकीम और पंसारी जमने ही नहीं पाता। कई

हकीम आए, मगर कब्र में हैं। कई पंसारियों ने दुकान जमाई मगर चिता में फूँक दिए गए। यहाँ तो बीमारी ने न आने की कसम खाई है।

हकीम — भई, बड़ा निकम्मा शहर है। खुदा के लिए हमें टट्टू किराए पर कर दो, तो रफू-चक्कर हो जायँ। ऐसे शहर की ऐसी-तैसी।

इन्हें पता बता कर आज़ाद सराय के दूसरे हिस्से में जा पहुँचे। क्या देखते हैं, एक बुजुर्ग आदमी बिस्तर जमाए बैठे हैं। आज़ाद बेतकल्लुफ तो थे ही, 'सलामअलेक' कह कर पास जा बैठे। वह भी बड़े तपाक से पेश आए। हाथ मिलाया, गले मिले, मिजाज पूछा।

आज़ाद — आप यहाँ किस गरज से तशरीफ लाए हैं?

उन्होंने जवाब दिया — जनाब, मैं वकील हूँ। यहाँ वकालत करने का इरादा है। कहिए, यहाँ की अदालत का क्या हाल है?

आज़ाद — यह न पूछिए। यहाँ के लोग भीगी बिल्ली हैं; लड़ना-भिड़ना जानते ही नहीं। साल भर में दो-चार मुकदमें शायद होते हों। चोरी-चकारी यहाँ कभी सुनने ही में नहीं आती। जमीन, आराजी, लगान, पट्टीदारी के मुकदमे कभी सुने ही नहीं। कर्ज कोई ले न दे।

वकील साहब का रंग उड़ गया। मगर हकीम जी की तरह झल्ले तो थे नहीं, आहिस्ता से बोले — सुभान अल्लाह, यहाँ के लोग बड़े भले आदमी हैं। खुदा उनको हमेशा नेक रास्ते पर ले जाय। मगर दिल में अफसोस हुआ कि इस टीम-टाम, धूम-धाम से आए, और यहाँ भी वही ढाक के तीन पात। जब मुकदमे ही न होंगे, तो खाऊँगा क्या, दुश्मन का सिर।

इन्हें भी झाँसा दे कर आज़ाद आगे बढ़े, तो देखा, चारपाई बिछाए शहतूत के पेड़ के नीचे एक साहब बैठे हुक्का उड़ा रहे हैं। आज़ाद ने पूछा — आपका नाम?

वह बोले — गुम-नाम हूँ।

आज़ाद — वतन कहाँ है?

वह — फकीर जहाँ पड़ रहे, वहीं उसका घर।

आज़ाद — आपका पेशा क्या है?

वह — खूने-जिगर खाना।

आज़ाद — तो आप शायर हैं, यह कहिए।

आज़ाद चारपाई के एक कोने पर बैठ गए और बेतकल्लुफ हो कर बोले — जनाब, हुक्का तो मेरे हवाले कीजिए और आप अपना कलाम सुनाइए।

शायर साहब ने बहुत कुछ चुना-चुनी के बाद दूसरे का कलाम अपना कह कर सुनाया —

क्या हाल हो गया है दिले-बेकरार का
आज़ाद हो किसी को इलाही, न प्यार का।
मशहूर है जो रोजे-कयामत जहान में;
पहला पहर है मेरी शबे-इंतिजार का।
इमतास देखना मेरी वहशत के बलबले;
आया है धूमधाम से मौसम बहार का।
राह उनकी तकते-तकते जो मुद्दत गुजर गई;
आँखों को हौसला न रहा इंतिजार का।

आज़ाद — सुभान-अल्लाह, आपका कलाम बहुत ही पाकीजा है। कुछ और उस्तादों के कलाम सुनाइए।

शायर — बहुत खूब; सुनिए —

दाग दे जाते हैं जब आते हैं;
यह शिगूफा नया वह लाते हैं।

आज़ाद — सुभान-अल्लाह! दाग के लिए शिगूफा, क्या खूब!

शायर —

यार तक वार कहाँ पाते हैं;
रास्ता नाप के रह जाते हैं।

आज़ाद — वाह, क्या बोलचाल है!

शायर —

> फिर जुनूँ दस्त न दिखलाए हमें;
> आज तलवे मेरे खुजलाते हैं।

आज़ाद — वाह वाह, क्या जबान है!

शायर —

> फूल का जाम पिलाओ साकी;
> काँटे तालू में पड़े जाते हैं।

आज़ाद — फूल के लिए काँटे क्या खूब।

शायर —

> कंघी के नाम से होते हैं खफा;
> बात सुलझी हुई उलझाते हैं।

आज़ाद — बहुत खूब।

शायर — अच्छा जनाब, यह तो फर्माइए, यहाँ के रईसों में कोई शायरी का क़दरदान भी है?

आज़ाद — किब्ला, यह न पूछिए। यहाँ मारवाड़ी अलबत्ता रहते हैं। शायर या मुंशी की सूरत से नफरत है। यहाँ के रईसों से कुछ भी भरोसा न रखिए।

शायर — तब तो यहाँ आना ही बेकार हुआ। आखिर, क्या एक भी रंगीन मिजाज रईस नहीं है?

आज़ाद — अब आप तो मानते ही नहीं। यहाँ कदरदाँ खुदा का नाम है।

17

आज़ाद के दिल में एक दिन समाई कि आज किसी मसजिद में नमाज पढ़े, जुमे का दिन है, जामे-मसजिद में खूब जमाव होगा। फौरन मसजिद में आ पहुँचे। क्या देखते हैं, बड़े-बड़े ज़ाहिद और मौलवी, काजी और मुफ्ती बड़े-बड़े अमामे सिर पर बाँधे नमाज पढ़ने चले आ रहे हैं; अभी नमाज शुरू होने में देर है, इसलिए इधर-उधर की बातें करके वक़्त काट रहे हैं। दो आदमी एक दरख्त के नीचे बैठे जिन्न और चुड़ैल की बातें कर रहे हैं। एक साहब नौजवान हैं, मोटे-ताजे; दूसरे साहब बुड्ढे हैं, दुबले-पतले।

बुड्ढे — तुम तो दिमाग के कीड़े चाट गए। बड़े बक्की हो। लाखों दफे समझाया कि यह सब ढकोसला है, मगर तुम्हें तो कच्चे घड़े की चढ़ी है, तुम कब सुननेवाले हो।

जवान — आप बुड्ढे हो गए, मगर बच्चों की सी बातें करते हैं। अरे साहब, बड़े-बड़े आलिम, बड़े-बड़े माहिर भूतों के कायल हैं। बुढ़ापे में आपकी अक्ल भी सठिया गई?

बुड्ढे — अगर आप भूत-प्रेत दिखा दें, तो टाँग के रास्ते निकल जाऊँ। मेरी इतनी उम्र हुई, कभी किसी भूत की सूरत न देखी। आप अभी कल के लौंडे हैं, आपने कहाँ देख ली?

जवान — रोज ही देखते हैं जनाब! कौन सा ऐसा मुहल्ला है, जहाँ भूत और चुड़ैल न हों? अभी परसों की बात है, मेरे एक दोस्त ने आधी रात के वक़्त दीवार पर एक चुड़ैल देखी। बाल-बाल मोती पिरोए हुए, चोटी कमर तक लटकती हुई, ऐसी हसीन कि परियाँ झख मारें। वह सन्नाटा मारे पड़े रहे, मिनके तक नहीं। मगर आप कहते हैं, झूठ है।

बुड्ढे — जी हाँ झूठ है — सरासर झूठ। हमारा खयाल वह बला है, जो सूरत बना दे, चला-फिरा दे, बातें करते सुना दे। आप क्या जानें, अभी जुमा-जुमा आठ दिन की तो पैदाइश है। और मियाँ, करोड़ बातों की एक बात तो यह है कि मैं बिना देखे न पतियाऊँगा। लोग बात का बतंगड़ और सुई का भाला बना देते हैं। एक सही, तो निन्यानवे झूठ। और आप ऐसे ढुलमुल-यकीन आदमियों का तो ठिकाना ही नहीं। जो सुना, फौरन मान लिया।

रात को दरख्त की फुनगी पर बन्दर देखा और थरथराने लगे कि प्रेत झाँक रहा है। बोले और गला दबोचा। हिले और शामत आई। अँधेरे-धुप में तो यों हो इनसान का जी घबराता है। जो भूत-प्रेत का खयाल जम गया, तो सारी चौकड़ी भूल गए। हाथ-पाँव सब फूल गए। बिल्ली ने म्याऊँ किया और जान निकल गई। चूहे की खड़बड़ सुनी और बिल ढूँढ़ने लगे। अब जो चीज सामने आएगी, प्रेत बन जाएगी। यहाँ सब पापड़ बेल चुके हैं। कई जिन्न हमने उतारे, कई चुड़ैलों से सँभाला। यों गप उड़ाने को कहिए, तो हम भी गप बेपर की उड़ाने लगें। याद रखो, ये ओझे-सयाने सब रँगे सियार हैं। सब रोटी कमा खाने के लटके हैं। बन्दर न नचाए, मुर्ग न लड़ाए, पतंग न उड़ाए, भूत-प्रेत ही झाड़ने लगे।

जवान — खैर, इस तू-तू मैं-मैं से क्या वास्ता? चलिए हमारे साथ। कोई दो-तीन कोस के फासले पर एक गाँव है, वहाँ एक साहब रहते हैं। अगर आपकी खोपड़ी पर उनके अमल से भूत न चढ़ बैठे, तो मूँछ मुँड़वा डालूँ। कहिएगा, शरीफ नहीं चमार है। बस, अब चलिए, आपने तो जहाँ जरा सी चढ़ाई और कहने लगे कि पीर, पयंबर, देवी, देवता, भूत-प्रेत सब ढकोसला है। लेकिन आज ठीक बनाए जाइएगा।

यह कह कर दोनों उसे गाँव की तरफ चले। मियाँ आज़ाद तो दुनिया भर के बेफिक्रे थे ही, शौक चर्राया कि चलो, सैर देख आओ। यह भी पुराने खयालों के जानी दुश्मन थे। कहाँ तो नमाज पढ़ने मसजिद आए थे, कहाँ छू-छक्का देखने का शौक हुआ; मसजिद को दूर ही से सलाम किया और सीधे सराय चले। अरे, कोई इक्का किराए का होगा? अरे मियाँ, कोई भठियारा इक्का भाड़े करेगा?

भठियारा — जी हाँ, कहाँ जाइएगा?

आज़ाद — सकजमलदीपुर।

भठियारा — क्या दीजिएगा?

आज़ाद — पहले घोड़ा-इक्का तो देखें — 'घर घोड़ा नखास मोल!'

भठियारा — वह क्या कमानीदार इक्का खड़ा है और यह सुरंग घोड़ी है, हवा से बातें करती जाती है; बैठे और दन से पहुँचे।

इक्का तैयार हुआ। आज़ाद चले, तो रास्ते में एक साहब से पूछा — क्यों साहब, इस गाँव को सकजमलदीपुर क्यों कहते हैं? कुछ अजीब बेढंग सा नाम है।

उसने कहा — इसका बड़ा किस्सा है। एक साहब शेख जमालुद्दीन थे। उन्होंने गाँव बसाया और इसका नाम रक्खा

शेखजमालुद्दीनपुर। गँवार आदमी क्या जाने, उन्होंने शेख का सक, जमाल का जमल और उद्दीन का दी बना दिया।

इक्केवाले से बातें होने लगीं। इक्केवाला बोला — हुजूर, अब रोजगार कहाँ! सुबह से शाम तक जो मिला, खा-पी बराबर। एक रुपया जानवर खा गया, दस-बारह आने घर के खर्च में आए, आने दो आने सुलफे-तमाखू में उड़ गए। फिर मोची के मोची। महाजन के पचीस रुपए छह महीने से बेबाक न हुए। जो कहीं कच्ची में चार-पाँच कोस ले गए, तो पुट्ठियाँ धँस गईं पैंजनी, हाल, धुरा सब निकल गया। दो-चार रुपए के मत्थे गई। रोजगार तो तुम्हारी सलामती से तब हो, जब यह रेल उड़ जाय। देखिए, आप ही ने सात गंडे सकजमलदीपुर के दिए, मगर तीन चक्कर लगा कर।

कोई पौने दो घंटे में आज़ाद सकजमलदीपुर पहुँचे। पता-वता तो इनको मालूम था ही, सीधे शाह साहब के मकान पर पहुँचे। ठट के ठट आदमी जमा थे। औरत-मर्द टूटे पड़ते थे।

एक आदमी से उन्होंने पूछा — क्या आज यहाँ कोई मेला है?

उसने कहा — मेला-वेला नाहीं, एक मनई के मूड़ पर देवी आई हैं, तौन मेहरारू, मनसेधू सब देखै आवत हैं। इसी झुंड में आज़ाद को वह बूढ़े मियाँ भी मिल गए, जो भूत-चुड़ैल को ढकोसला कहा

करते थे। अकेले एक तरफ ले जा कर कहा — जनाब, मैंने मसजिद में आपकी बातें सुनी थीं। कसम खाता हूँ, जो कभी भूत-प्रेत का कायल हुआ हूँ। अब ऐसी कुछ तदबीर करनी चाहिए कि इन शाह साहब की कलई खुल जाय।

इतने में शाह साहब नीले रंग का तहमद बाँधे, लंबे-लंबे बालों में हिना का तेल डाले, माँग निकाले, खड़ाऊँ पहने तशरीफ लाए। आँखों में तेज भरा हुआ था। जिसकी तरफ नजर भर कर देखा, वही काँप उठा। किसी ने कदम लिए, किसी ने झुक कर सलाम किया। शाह साहब ने गुल मचाना शुरू किया — धूनी मेरी जलती है, जलती है और बलती है, धूनी मेरी जलती है। खड़ी मूँछों वाला है, लंबे गेसू वाला है, मेरा दरजा आला है।

झूम-झूम कर जब उन्होंने यह आवाज लगाई तो सब लोग सन्नाटे में आ गए। एकाएक आपने अकड़ कर कहा — किसी को दावा हो, तो आकर मुझसे कुश्ती लड़े। हाथी को टक्कर दूँ, तो चिंग्घाड़ कर भागे; कौन आता है?

अब सुनिए, पहले से एक आदमी को सिखा-पढ़ा रखा था। वह तो सधा हुआ था ही, झट सामने आकर खड़ा हो गया और बोला — हम लड़ेंगे। बड़ा कड़ियल जवान था; गैंडे की सी गर्दन, शेर का सा सीना; मगर शाह साहब की तो हवा बँधी हुई थी। लोग उस

पहलवान की हालत पर अफसोस करते थे कि बेधा है; शाह साहब चुटकियों में चुर्र-मुर्र कर डालेंगे।

खैर दोनों आमने-सामने आए और शाह साहब ने गरदन पकड़ते ही इतनी जोर से पटका कि वह बेहोश हो गया।

आज़ाद ने बूढ़े मियाँ से कहा — जनाब, यह मिली भगत है। इसी तरह गँवार लोग मूँड़ जाते हैं। मैं ऐसे मक्कारों की कब्र तक से वाकिफ हूँ।

ये बातें हो ही रही थीं कि शाह साहब ने फिर अकड़ते हुए आवाज लगाई — कोई और जोर लगाएगा?

मियाँ आज़ाद ने आव देखा न ताव, झट लँगोट बाँध; चट से कूद पड़े। आओ उस्ताद; एक पकड़ हमसे भी हो जाय। तब तो शाह साहब चकराए कि यह अच्छे बिगड़े दिल मिले। पूछा — आप अंगरेजी पढ़े हैं?

आज़ाद ने कड़क कर कहा — अंगरेजी नहीं, अंगरेजी का बाप पढ़ा हूँ। बस, अब संभलिए, मैं आ गया।

यह कह कर, घुटना टेक कलाजंग के पेच पर मारा, तो शाह साहब चारों खाने चित जमीन पर धम से गिरे। इनका गिरना था कि मियाँ आज़ाद छाती पर चढ़ बैठे। अब बताओ बच्चा, काट लूँ

नाक, कतर लूँ कान, बाँधू दुम में नमदा! बदमाश कहीं का! बूढ़े मियाँ ने झपट कर आज़ाद को गोद में उठा लिया। वाह उस्ताद, क्यों न हो। शाह साहब उसी दिन गाँव छोड़ कर भागे।

शाह साहब को पटकनी दे कर और गाँव के दुलमुल-यकीन गँवारों को समझा-बुझा कर आज़ाद बूढ़े मियाँ के साथ-साथ शहर की तरफ चल खड़े हुए। रास्ते में उन्हीं शाह साहब की बातें होने लगीं।

आज़ाद — क्यों, सच कहिएगा, कैसा अड़ंगा दिया? बहुत बिलबिला रहे थे। यहाँ उस्तादों की आँखें देखी हैं। पोर-पोर में पेंचैती कूट-कूट कर भरी है। एक-एक पेंच के दो-दो सौ तोड़ याद हैं। मैं तो उसे देखते ही भाँप गया कि यह बना हुआ है। लड़ेतिए का तो कैड़ा ही उसका न था। गरदन मोटी नहीं, छाती चौड़ी नहीं, बदन कटा-पिटा नहीं, कान टूटे नहीं। ताड़ गया कि घामड़ है। गरदन पकड़ते ही दबा बैठा।

बूढ़े मियाँ — अब इस गाँव में भूल कर भी न आएगा। एक मर्तबा का जिक्र सुनिए, एक बने हुए सिद्ध पलथी मार कर बैठे और लगे अकड़ने की कोई छिपा कर हाथ में फूल ले, हम चुटकियों में बता देंगे। मेरे बदन में आग लग गई मैंने कहा — अच्छा, मैंने फूल लिया, आप बतलाइए तो सही। पहले तो आँखें

नीली-पीली करके मुझे डराने लगे। मैंने कहा — हजरत; मैं इन गीदड़-भभकियों में नहीं आने का। यह पुतलियों का तमाशा किसी नादान को दिखाओ। बस, बताओ, मेरे हाथ में क्या है? थोड़ी दूर तक सोच-सोच कर बोले — पीला फूल है। मैंने कहा — बिलकुल झूठ। तब तो घबराए और कहने लगे — मुझे धोखा हुआ। पीला नहीं, हरा फूल है। मैंने कहा — वाह भाई लालबुझक्कड़ क्यों न हो! हरा फूल आज तक देखा न सुना, यह नया गुल खिला। मेरा यह कहना था कि उनका गुलाब सा चेहरा कुम्हला गया। कोई उस वक़्त उनकी बेकली देखता। मैं जामे में फूला न समाता था। आखिर इतने शरमिंदा हुए कि वहाँ से पत्ता तोड़ भागे। हम ये सब खेल खेले हुए हैं।

आज़ाद — ऐसे ही एक शाह साहब को मैंने भी ठीक किया था। एक दोस्त के घर गया, तो क्या देखता हूँ कि एक फकीर साहब शान से बैठे हुए हैं और अच्छे-अच्छे, पढ़े-लिखे आदमी उन्हें घेरे खड़े हैं। मैंने पूछा — आपकी तारीफ कीजिए, तो एक साहब ने, जो उस पर ईमान ला चुके थे, दबे दाँतों कहा — शाह साहब गैबदाँ (त्रिकालदर्शी) हैं। आपके कमालों के झंडे गड़े हुए हैं। दस-पाँच ने तो उन्हें आसमान ही पर चढ़ा दिया। मैंने दिल में कहा — बचा, तुम्हारी खबर न ली, तो कुछ न किया। पूछा, क्यों शाह जी, यह तो बताइए, हमारे घर में लड़का कब तक होगा?

शाह जी समझे, यह भी निरे चोंगा ही हैं। चलो, अनाप-सनाप बता कर उल्लू बनाओ और कुछ ले मरो। मेरे बाप, दादे और उनके बाप के परदादे का नाम पूछा। यहाँ याद का यह हाल है कि बाप का नाम तो याद रहता है, दादाजान का नाम किस गधे को याद हो। मगर खैर, जो जबान पर आया, ऊल-जलूल बता दिया। तब फर्माते क्या हैं, बच्चा दो महीने के अन्दर ही अन्दर बेटा ले। मैंने कहा — हैं शाह साहब, जरा संभले हुए। अब तो कहा, अब न कहिएगा। पंद्रह दिन तो बंदे की शादी को हुए और आप फर्माते हैं कि दो महीने के अन्दर ही अन्दर लड़का ले। वल्लाह, दूसरा कहता, खून पी लेता। इस फिकरे पर यार लोग खिलखिला कर हँस पड़े और शाह जी के हवास गायब हो गए। दिल में तो करोड़ों की गालियाँ दी होंगी, मगर मेरे सामने एक न चली। जनाब, उस दयार में लोग उन्हें खुदा समझते थे। शाह जी कभी रुपए बरसाते थे, कभी बेफस्ल के मेवे मँगवाते थे, कभी घड़े को चकनाचूर करके फिर जोड़ देते थे। सैकड़ों ही अलसेंटे याद थी, मेरा जवाब सुना, तो हक्का-बक्का हो गए। ऐसे भागे कि पीछे फिर कर भी न देखा। जहाँ मैं हूँ, भला किसी सिद्ध या शाह जी का रंग जम तो जाय।

यही बातें करते हुए लोग फिर अपने-अपने घर सिधारे।

18

मियाँ आज़ाद एक दिन चले जाते थे, तो देखते क्या हैं, एक चौराहे के नुक्कड़ पर भंगवाले की दुकान है और उस पर उनके एक लँगोटिए यार बैठे डींग की ले रहे हैं। हमने जो खर्च कर डाला, वह किसी को पैदा करना भी नसीब न हुआ होगा, लाखों कमाए, करोड़ों लुटाए, किसी के देने में न लेने में। आज़ाद ने झुक कर कान में कहा — वाह भई उस्ताद, क्यों न हो, अच्छी लंतरानियाँ हैं। बाबा तो आपके उम्र भर बर्फ बेचा किए और दादा जूते की दुकान रखते-रखते बूढ़े हुए। आपने कमाया क्या, लुटाया क्या? याद है, एक दफे साढ़े छह रुपए की मुहर्रिरी पाई, मगर उससे भी निकाले गए। उसने कहा — आप भी निरे गावदी हैं। अरे मियाँ, अब गप उड़ाने से भी गए? भंगवाले की दुकान पर गप न मारूँ, तो और कहाँ जाऊँ? फिर इतना तो समझो कि यहाँ हमको जानता कौन है। मियाँ आज़ाद तो एक सैलानी आदमी थे ही, एक तिपाई पर टिक गए। देखते क्या हैं, एक दरख्त के तले सिरकी का छप्पर पड़ा है, एक तख्त बिछा है, भंगवाला सिल पर रगड़ें लगा रहा है। लगे रगड़ा, मिटे झगड़ा। दो-चार बिगड़े-दिल बैठे गुल मचा रहे हैं — दाता तेरी दुकान पर हुन बरसे, ऐसी चकाचक पिला, जिसमें जूती खड़ी हो। थोड़ा सा धतूरा भी रगड़ दो, जिसमें

खूब रंग जमे। इतने में मियाँ आज़ाद के दोस्त बोल उठे — उस्ताद, आज तो दूधिया डलवाओ। पीते ही ले उड़ें। चुल्लू में उल्लू हो जाएँ। दूकान वाले ने उन्हें मीठी केवड़े से बनी हुई भंग पिलवाई। आप पी चुके, तो अपने दोस्त हरभज को भंग का एक गोला खिलाया और फिर वहाँ से सैर करने चले। इन्हें मुटापे के सबब से लोग भदभद कहा करते थे। चलते-चलते हरभज ने पूछा — क्यों यार, यह कौन मुहल्ला है?

भदभद — चीनी बाजार।

हरभज — वाह, कहीं हो न, यह चिनिया बाजार है।

भदभद — चिनिया बाजार कैसा, चीनी बाजार क्यों नहीं कहते।

हरभज — हम गली-गली, कूचे-कूचे से वाकिफ हैं, आप हमें रास्ता बताते हैं? चिनिया बाजार तो दुनिया कहती है, आप कहने लगे चीनी बाजार है।

भदभद — अच्छा तो खबरदार, मेरे सामने अब चिनिया बाजार न कहिएगा।

हरभज — अच्छा किसी तीसरे आदमी से पूछो।

आज़ाद ने दोनों को समझाया — क्यों लड़े मरते हो? मगर सुनता कौन था। सामने से एक आदमी चला आता था। आज़ाद ने बढ़कर पूछा — भाई, यह कौन मुहल्ला है?

उसने कहा — चिनिया बाजार।

अब हरभज और भदभद ने उसे दिक करना शुरू किया। चीनी बाजार है कि चिनिया बाजार, यही पूछते हुए आध कोस तक उसके साथ गए। उस बेचारे को इन भंगड़ों से पीछा छुड़ाना मुश्किल हो गया। बार-बार कहता था कि भई, दोनों सही हैं। मगर ये एक न सुनते थे। जब सुनते-सुनते उसके कान पक गए, तो वह बेचारा चुपके से एक गली में चला गया।

तीनों आदमी फिर आगे चले। मगर वह मसला हल न हुआ। दोनों एक दूसरे को बुरा-भला कहते थे; पर दो में से एक को भी यह तसकीन न होती थी कि चिनिया बाजार और चीनी बाजार में कौन सा बड़ा फर्क है।

हरभज — जानते भी हो, इसका नाम चिनिया बाजार क्यों पड़ा?

भदभद — जानता क्यों नहीं। पहले यहाँ दिसावर से चीनी आकर बिका करती थी!

हरभज — तुम्हारा सिर? यहाँ चीन के लोग आकर आबाद हो गए थे, जभी से यह नाम पड़ा;

भदभद — गावदी हो!

इस पर दोनों गुथ गए। इसने उसको पटका, उसने इसको पटका। भदभद मोटे थे, खूब पिटे।

आज़ाद ने उन दोनों को यहीं छोड़ा और खुद घूमते-घामते जौहरी बाजार की तरफ जा निकले। देख, एक लड़का झुका हुआ कुछ लिख रहा है। आज़ाद ने लिफाफा दूर से देखते ही खत का मजमून भाँप लिया। पूछा — क्यों भई इस गाँव का क्या नाम है?

लड़का — दिन को रतौंधी तो नहीं होती? यह गाँव है या शहर?

आज़ाद — हाँ, हाँ वही शहर। मैं मुसाफिर हूँ, सराय का पता बता दीजिए।

लड़का — सराय किस लिए जाइएगा? क्या किसी भठियारी से रिश्तेदारी है?

आज़ाद — क्यों साहब, मुसाफिरों से भी दिल्लगी! हम तरजुमा करते हैं! अर्जी का तरजुमा कर दो। एक चवन्नी दूँगा।

आज़ाद — खैर, लाइए, बोहनी कर लूँ। अर्जी पढ़िए।

लड़का — आप ही पढ़ लीजिए।

आज़ाद — (अर्जी पढ़ कर) सुभान-अल्लाह, यह अर्जी है या घर का दुखड़ा। भला तुम्हारे कितने लड़के-लड़कियाँ होंगी?

लड़का — अजी, अभी यहाँ तो शादी ही नहीं हुई।

आज़ाद — तो फिर यह क्या लिख मारा कि सारे कुनबे का भार मेरे सिर है। और नौकरी भी क्या माँगते हो कि जमाने भर का कूड़ा साफ करना पड़े! तड़का हुआ और बंपुलिस झाँकने लगे; कभी भंगियों से तकरार हो रही है; कभी भंगियों से चख चल रही है। अभी तुम्हारी उम्र ही क्या है, पढ़ो-लिखो, हम कर मेहनत करो, नौकरी की तुम्हें क्या फिक्र है?

लड़का — आप अर्जी लिखते हैं कि सलाह बताते हैं? मैं तो आपसे सलाह नहीं पूछता।

आज़ाद — मियाँ, पढ़ने-लिखने का यह मतलब नहीं है कि नौकरी ही करे। और न हीं, तो बंपुलिस का दारोगा ही सही। खासे जौहरी बने हो, ऐसी कौन सी मुसीबत आ पड़ी है कि इस नौकरी पर जान देते हो?

इतने में एक लाला साहब कलमदान लिए, ऐनक लगाए, आकर बैठ गए।

आज़ाद — कहिए, आपको भी कुछ तरजुमा कराना है?

लाला — जी हाँ, इस अर्जी का तरजुमा कर दीजिए। मेरे बुढ़ापे पर तरस खाइए।

आज़ाद — अच्छा, अपनी अर्जी पढ़िए।

लाला — सुनिए —

'गरीबपरवर सलामत,

अपना क्या हाल कहूँ, कोई दो दर्जन तो बाल-बच्चे हैं। आखिर, उन्हें सेर-सेर भर आटा चाहिए या नहीं। जोड़िए कितना हुआ। और जो यह कहिए कि सेर भर कोई लड़का नहीं खा सकता, तो जनाब, मेरे लड़के बच्चे नहीं हैं, कई-कई बच्चों के बाप हैं। इस हिसाब से 80 रु. का तो आटा ही हुआ। 10 रु. की दाल रखिए। बस, मैं और कुछ नहीं चाहता। मगर जो यह कहिए कि इससे कम में गुजर करूँ, तो जनाब, यह मेरे किए न होगा। रोटियों में खुदा का भी साझा नहीं।

मेरे लियाकत का आदमी इस दुनिया में तो आपको मिलेगा नहीं, हाँ शायद उस दुनिया में मिल जाय। बच्चे मैं खिला सकता हूँ, बाजार से सौदे ला सकता हूँ, बनिये के कान कतर लूँ, तो सही। किस्से-कहानियों का तो मैं खजाना हूँ। नित्य नई कहानियाँ कहूँ।

मौका आ पड़े, तो जूते साफ कर सकता हूँ; मेम साहब और बाबा लोगों को गाकर खुश कर सकता हूँ। गरज, हरफन-मौला हूँ। पढ़ा-लिखा हूँ। बदनसीबी से मिडिल पास तो नहीं हूँ; लेकिन अपने दस्तखत कर लेता हूँ। जी चाहे इम्तहान ले लीजिए।

'अब रही खानदान की बात। तो जनाब, कमतरीन के बुजुर्ग हमेशा बड़े-बड़े ओहदों पर रहे। मेरे बड़े भाई की बीवी जिसे फूफी कहते हैं और जिससे मजाक का भी रिश्ता है उसके बाप के ससुर के चचेरे भाई नहर के मोहकमे में 20 रु. महीने पर दारोगा थे। मेरे बाबाजान म्युनिसिपैलिटी में सफाई के जमादार थे और 10 रु. महीना मुशहरा पाते थे। चूँकि सरकार का हुक्म है कि अच्छे खानदान के लोगों की परवरिश की जाय, इसलिए दो-एक बुजुर्गों का जिक्र कर दिया। वरना यहाँ तो सभी ओहदेदार थे। कहाँ तक गिनाऊँ।'

'अब तो अर्जी में और कुछ लिखना नहीं बाकी रहा। अपनी गरीबी का जिक्र कर ही दिया। लियाकत की भी कुछ थोड़ी सी चर्चा कर दी और अपने खानदान का भी कुछ जिक्र कर दिया।'

'अब अर्ज है कि हुजूर, जो हमारे आका हैं, मेरी परवरिश करें। अगर मुझ पर हुजूर की निगाह न हुई, तो मजबूर हो कर मुझे अपने बाल-बच्चों को मिर्च के टापू में भरती करना पड़ेगा।'

मियाँ आज़ाद ने जो यह अर्जी सुनी तो लोटने लगे। इतना हँसे कि पेट में बल पड़-पड़ गए। जब जरा हँसी कम हुई, तो पूछा — लाला साहब, इतना और बता दीजिए कि आप हैं कौन ठाकुर?

लाला — जी, बंदा तो अग्निहोत्री है।

आज़ाद — तो फिर आपके शरीफ-खानदान होने में क्या शक है। मियाँ, आदमी बनो। जा कर बाप-दादों का पेशा करो। भाड़ झोंकने में जो आराम है, वह गुलामी करने में नहीं। मुझसे आपकी अर्जी का तरजुमा न होगा।

19

एक दिन मियाँ आज़ाद साँड़नी पर सवार हो घूमने निकले, तो एक थिएटर में जा पहुँचे। सैलानी आदमी तो थे ही, थिएटर देखने लगे, तो वक़्त का खयाल ही न रहा। थिएटर बन्द हुआ, तो बारह बज गए थे। घर पहुँचना मुश्किल था। सोचे, आज रात को सराय ही में पड़ रहें। सोए, तो घोड़े बेचकर। भठियारी ने आकर जगाया — अजी, उठो, आज तो जैसे घोड़े बेच कर सोए हो! ऐ लो, वह आठ का गजर बजा। अँगड़ाइयों पर अँगड़ाइयाँ ले रहे हैं, मगर उठने का नाम नहीं लेते।

एक चंडूबाज भी बैठे हुए थे। बोले — तो तुमको क्या पड़ी है? सोने नहीं देतीं। क्या जाने, किस मौज में पड़े हैं। लहरी आदमी तो हई हैं। मगर सच कहना, कैसा धावत सैलानी है। दूसरा इतना घूमे, तो हलकान हो जाय। और जो जगाना ही मंजूर है, तो लोटे की टोंटी से जरा सा पानी कान में छोड़ दो। देखो, कैसे कुलबुला कर उठ बैठते हैं।

भठियारी ने चुल्लू से मुँह पर छींटे देने शुरू किए। दस ही पाँच बूँदें गिरी थीं कि आज़ाद हाँय-हाँय करते उठ खड़े हुए और बोले — यह क्या दिल्लगी है! कैसी मीठी नींद सो रहा था, ले के जगा दिया!

भठियारी — इतनी रात तक कहाँ घूमते रहे कि अभी नींद ही नहीं पूरी हुई?

आज़ाद — कहीं नहीं, जरा थिएटर देखने लगा था।

चंडूबाज — सुना, तमाशा बहुत अच्छा होता है। आज हमें भी दिखा देना। भई, तुम्हारी बदौलत थिएटर तो देख लें। कै बजे शुरू होता है?

आज़ाद — यही; कोई नौ बजे।

चंडूबाज — तो फिर मैं चल चुका। नौ बजे शुरू हो, बारह बजे खत्म हो। कहीं एक बजे घर पहुँचें। मुहल्ले भर में आग ढूँढ़ें, हुक्का भरें, तवा जमाएँ, घंटा भर गुड़गुड़ाएँ। पलंग पर जायँ, तो नींद उचाट। करवटों पर करवटें लें, तब कहीं चार बजते-बजते आँख लगे। फिर जो भलेमानुस चार बजे सोए, वह दोहर तक उठने का नाम न लेगा। लीजिए, दिन यों गया। रात यों गई। अब इनसान चंडू कब पिए, दास्तान कब सुने, पीनक के मजे कब उड़ाए? कौन जाय! क्या गुलाबो-शिताबो के तमाशे से अच्छा होता होगा? रीछवाले ही का तमाशा न देखे? मियाँ ऐंठा सिंह के मजे न उड़ाए, बकरी पर तने बैठे हैं, छींक पड़ी और खट से फँदनीदार टोपी अलग। भई, कोई बेधा हो, जो वहाँ जाय। और फिर रुपए किसके घर से आएँ? जब से अफीम सोलह रुपए सेर हो गई, तब से तो गरीबों का और भी दिवाला निकल गया। और चंडू के ठेकों ने तो सत्यानाश ही कर दिया। सैलानी तो शहर का चूहा-चूहा है मगर टिकट का नाम न हो। और भई, साफ तो यों है कि हम लोग मुफ्त के तमाशा देखने वालों में से हैं। मेला-ठेला तो कोई छूटने ही नहीं पाता। सावन भर ऐशबाग के मेले न छोड़े; कभी इमलियों में झूल रहे हैं, कभी बन्दरों की सैर देख रहे हैं। बहुत किया, तो एक गंडे के पौंडे लिए। दो पैसे बढ़ाए और साकिन की दुकान पर दम लगाया। चलिए, पाँच-छह पैसे में मेला

हो गया। सबसे बड़ी मुसीबत तो यह है कि वहाँ नादिरी हुक्म है कि कोई धुआँ न उड़ाए, नहीं तो हम सोचे थे कि चंडू का सामान लेते चलेंगे और मजे से किसी कोने में लेटे हुए उड़ाते जाएँगे। इसमें किसी के बाप का क्या इजारा!

भठियारिन — भई, टिकट माफ हो जाय, तो मैं भी चलूँ।

आज़ाद — उनको क्या पड़ी है भला, जो बंबई से अंगड़-खंगड़ ले कर इनी दूर बेगार भुगतने आएँ! वही बेठिकाने बात कहती हो, जिसके सिर न पैर।

चंडूबाज — अच्छा, तो तुम्हारी खातिर ही सही। तुम भी क्या याद करोगी। एक दिन हम भी चवन्नी गलाएँगे। तमाशा होता कहाँ है?

आज़ाद — यही छतरमंजिल में, दस कदम पर।

चंडूबाज — दस कदम की एक ही कही। तुम्हारी तरह यहाँ किसी के पाँव में सनीचर तो है नहीं। सात बजे से चलना शुरू करें, तो दस बजे पहुँचे। बग्घी किराए पर करें, तो एक रुपया आने का और एक रुपया जाने का और ठुक जाय। 'मुफलिसी में आटा गीला।'

आज़ाद — अजी, मेरी साँड़नी पर बैठ लेना।

भठियारिन — मुझे भी उसी पर बिठा लेना। रात का वक़्त है, कौन देखता है।

शाम हुई, तो मियाँ आज़ाद ने साँड़नी कसी और सराय से चले। भठियारी भी पीछे बैठ गई। मगर चंडूबाज ने साँड़नी की सूरत देखी, तो बैठने की हिम्मत न पड़ी। जब साँड़नी ने तेज चलना शुरू किया, तो भठियारी बोली — इस मुई सवारी पर खुदा की मार! अल्लाह की कसम, मारे हचकोलों के नाक में दम आ गया। आज़ाद को शरारत सूझी, तो एक एड़ लगाई वह और भी तेज हुई। तब तो भठियारी आग भभूका हो गई — यह दिल्लगी रहने दीजिए; मुझे भी कोई और समझे हो? मैं लाखों सुनाऊँगी। ले बस, सीधी तरह चलना हो तो चलो; नहीं मैं चीखती हूँ। पेट का पानी तक हिल गया। ऐसी सवारी को आग लगे। मियाँ आज़ाद ने जरा लगाम को खींचा, तो साँड़नी बलबलाने लगी। बी भठियारी तो समझीं कि अब जान गई। देखो, यह छेड़छाड़ अच्छी नहीं। हमें उतार ही दो। लो, और सुनो, जरा से हचकोले में मुँह के बल आ रहूँ, तो चकनाचूर ही हो जाऊँ। तुम मुस्टंडों को इसका क्या डर! रोको, रोको, रोको। हाय, मेरे अल्लाह, मैं किस बला में फँस गई! मियाँ, अपने खुदा से डरो, बस हमें उतार ही दो। इत्तिफ़ाक़ से साँड़नी एक दरख्त की परछाहीं देख कर ऐसी भड़की कि दस कदम पीछे हट आई। उसका बिचकना था कि बी भठियारी धम

से जमीन पर गिर पड़ी। खुदा की मार! वह तो कहो, पक्की सड़क न थी। नहीं तो हड्डी-पसली चूर-चूर हो जाती।

चंडूबाज — शाबाश है तेरी माँ को, पटकनी भी खाई, मगर वही तेवर। दूसरी हयादार होती, तो लाख बरस तक सवार होने का नाम न लेती। सवारी क्या है, जनाजा है।

भठियारी — चलिए, आपकी जूती की नोक से। हम बेहया ही सही। क्या झाँसे देने आए हैं, जिसमें मैं उतर पड़ूँ और आप मजे से जम जायँ। मुँह धो रखिए, हमने कच्ची गोलियाँ नहीं खेली हैं।

मगर इस झमेले में इतनी देर हो गई कि जब थिएटर पहुँचे, तो तमाशा खत्म हो गया था। तमाशाई लोग बाहर निकल रहे थे।

आज़ाद — लीजिए, सारा मजा किरकिरा हो गया। इसी से मैं तुम लोगों को साथ न ले आता था।

चंडूबाज — औरतों को तो मेले-ठेले में ले ही न जाना चाहिए। हमेशा अलसेट होती है।

भठियारी — जी हाँ, और क्या। मेले-ठेले तो आप जैसे खुर्राटों ही के लिए होते हैं। आज़ाद तमाशाइयों की बातें सुनने लगे -

एक — यार, इनके पास तो सामान खूब लैस है।

दूसरा — वाह, क्या कहना, परदे तो ऐसे कि देखे न सुने। बस, यही यकीन होता है कि बारहदरी का फाटक हे या परीखाना! जंगल का सामान दिखाया, तो वही बेल-बूटे, वही दूब, वही पेड़, वही झाड़ियाँ, बस, बिलकुल सुंदरवन मालूम होता है।

तीसरा — और सब्जपरी की तारीफ ही न करोगे?

चौथा — हजरत, वह कहीं लखनऊ में छह महीने भी तालीम पाए, तो फिर आफत ही ढाए। लाखों लूट ले जाय, लाखों।

दूसरी तरफ गए, तो दो आदमी और ही तरह की बातें कर रहे थे —

एक — अजी, धोखा है, धोखा, और कुछ नहीं।

दूसरा — हाँ, टन-टन की आवाज तो आती है, बाकी खैर-सल्लाह।

अब आज़ाद यहाँ बैठ कर क्या करते। सोचे, आओ, साँड़नी पर बैठें और चल कर सराय में मीठी नींद के मजे लें। मगर बाहर आकर देखते हैं, तो साँड़नी गायब। थिएटर के अहाते में एक दरख्त से बाँध दिया था। मालूम नहीं, तड़प कर भागी या कोई चुरा ले गया। बहुत देर तक इधर-उधर ढूँढ़ा किए, मगर साँड़नी का पता न लगा। उधर और सवारियाँ भी तमाशाइयों को ले-ले

कर चली गईं। तब आज़ाद ने भठियारी से कहा — अब तो पाँव-पाँव चलने की ठहरेगी।

भठियारी — ना साहब, मुझसे पाँव-पाँव न चला जायगा।

चंडूबाज — देखिए, कहीं कोई सवारी मिले, तो ले आइए। यह बेचारी पाँव-पाँव कहाँ तक चलेगी?

आज़ाद — तो तुम्हीं क्यों नहीं लपक जाते?

भठियारी (अलारक्खी) – ऐ हाँ, और क्या? चढ़ने को तो सबसे पहले तुम्हीं दौड़ोगे। तुम्हें बात-चीत करने की भी तमीज नहीं।

आज़ाद — सवारी न मिलेगी, ठंडे-ठंडे घर की राह लो, बात-चीत करते-करते चले चलेंगे।

दूसरे दिन आज़ाद ने साँड़नी के खोने की थाने में रपट कर दी। मगर जिस आदमी को भेजा था, उसने आकर कहा — हुजूर थानेदार ने रपट नहीं लिखी और आपको बुलाया है।

आज़ाद — कौन, थानेदार? हमसे थानेदार से वास्ता? उनसे कहो कि आपको खुद मियाँ आज़ाद ने याद किया है, अभी हाजिर हो।

अलारक्खी — ले, बस बैठे रहो। बहुत उजड्डपना अच्छा नहीं होता। वाह, कहने लगे, हम न जायँगे। बड़े वह बने हैं। आखिर साँड़नी की रपट लिखवाई है कि नहीं? फिर अब दौड़ो-धूपोगे नहीं,

तो बनेगी क्योंकर? और वहाँ तक जाते क्या चूड़ियाँ टूटती हैं, या पाँव की मेहँदी गिर जायगी?

आज़ाद — भई; हमसे थानेदार से एक दिन चख चल गई थी। ऐसा न हो, वह कोतवाली के चबूतरे पर बैठकर जोम में आ जायँ तो फिर मैं ले ही पड़ूँगा। इतना समझ लेना, मैं आधी बात सुनने का रवादार नहीं। साँड़नी मिले या जहन्नुम में जाय, इसकी परवाह नहीं, मगर कोई एँड़ा-बेंड़ा फिकरा सुनाया और मैंने कुर्सी के नीचे पटका। क्यों सुनें, चोर नहीं कि कोतवाल से डरूँ, जुवाड़ी नहीं कि प्यादे की सूरत देखते ही जान निकले, बदमाश नहीं कि मुँह छिपाऊँ, मरियल नहीं कि दो बातें सह जाऊँ। कोई बोला और मैंने तलवार निकाली; फिर वह नहीं या मैं नहीं।

अलारक्खी — अरे, वह बेचारा तो एक हँसमुख आदमी है। लड़ाई क्यों होने लगी।

आज़ाद — खैर, तुम्हारी खुशी है, तो चलता हूँ। मगर चलो तुम भी साथ, रास्ते में दो घड़ी दिल्लगी ही होगी।

आखिर मियाँ आज़ाद और अलारक्खी दोनों थाने चले। एक कांस्टेबल भी साथ था। राह में एक आदमी अकड़ता हुआ जा रहा था। आज़ाद उसका अकड़ना देख कर आग हो गए। करीब जा कर एक धक्का जो दिया, तो उसने पचास लुढ़कनियाँ खाईं।

थोड़ी दूर और चले थे कि एक आदमी चादर बिछाए, उस पर जड़ी-बूटी फैलाए बैठा गप उड़ा रहा था। इस बूटी से अस्सी बरस का बूढ़ा जवान हो जाय, इस जड़ी को पानी में घिस कर एक तोला पिए, तो शेर का पंजा फेर दे। आज़ाद उसकी तरफ झुक पड़े — कहो भाई खिलाड़ी, यह क्या स्वाँग रचा है? आज कितने अक्ल के अंधे, गाँठ के पूरे जाल में फँसे? यह कह कर एक ठोकर जो मारी, तो सारी बूटियाँ, पत्तियाँ, जड़ें एक में मिल गईं। और आगे चले, तो गुल-गपाड़े की आवाज आई। एक हलवाई ग्राहक से तकरार कर रहा था।

हलवाई — खाली भजिया नाहीं बिकत है हमरी दुकान पर, कस-कस देई भला।

ग्राहक — अबे, मैं कहता हूँ, कहीं एक गुद्दा न दूँ!

आज़ाद — गुद्दा तो पीछे दीजिएगा, मैं एक गुद्दा कहीं आपकी गुद्दी पर न जमाऊँ।

ग्राहक — आप कौन हैं बोलनेवाले?

आज़ाद — उस बेचारे हलवाई को तुम क्यों ललकारते हो?

अलारक्खी — ऐ है, मियाँ, तुम कोई खुदाई फ़ौजदार हो? किसी के फटे में तुम कौन हो पाँव डालने वाले?

कांस्टेबल — भइया, हो बड़े लड़ाका, बस काव कहों। यहाँ से चले, तो थाने आ पहुँचे।

कांस्टेबल — हुजूर, ले आया, वह खड़े हैं।

थानेदार — अख्खाह! अलारक्खी भी हैं। मैं तो चाल ही से समझ गया था। कुछ बैठने को दो इन्हें, कोई है? सच कहना, तुम्हारी चाल से कैसा पहचान लिया?

आज़ाद — अपने-अपनों को सभी पहचान लेते हैं।

थानेदार — यह कौन बोला? कौन है भई?

अलारक्खी — ऐ, बस चलो, देख लिया। मुँह देखे की मुहब्बत है। घर की थानेदारी और अब तक मुई साँड़नी न मिली। तुमसे तो बड़ी-बड़ी उम्मीदें थीं।

थानेदार — (आज़ाद से) कहो जी, वह साँड़नी तुम्हारी है न?

आज़ाद — 'तुम' का जवाब यहाँ नहीं देते; 'आप' कहिए; मैं कोई चरकटा हूँ।

भठियारी — हाय मेरे अल्लाह, मैं क्या करूँ? यह तो जहाँ जाते हैं, दंगा मचाते हैं।

थानेदार — क्या कुछ इनसे साँठ-गाँठ है? सच कहना, तुम्हें कसम है अपने शेख सद्दू की।

अलारक्खी — लो, तुम्हें मालूम ही नहीं। अच्छी थानेदारी करते हो। मैं तो इनके घर पड़ गई हूँ न।

थानेदार — तो यह कहिए, लाओ भई, साँड़नी काँजी-हाऊस से निकलवाओ?

साँड़नी आ मौजूद हुई। मियाँ आज़ाद सवार हुए। भठियारी भी पीछे बैठी।

आज़ाद — आज तुम कई आदमियों के सामने हमें अपना मियाँ बना चुकी हो। मुकर न जाना।

अलारक्खी — जरा चोंच सँभाले हुई; कहीं साँड़नी पर से ढकेल न दूँ।

अलारक्खी को यकीन हो गया कि आज़ाद मुझ पर रीझ गए। अब निकाह हुआ ही चाहता है। यों ही बहुत नखरे किया करती थी, अब और भी नखरे बघारने लगी। नौ का अमल हो गया था। चारपाई पर धूप फैली हुई थी, मगर मक्कर किए पड़ी हुई थी। इतने में चंडूबाज आए। आते ही पुकारा — मियाँ आज़ाद, मियाँ आज़ाद! अलारक्खी! यह आज क्या है यहाँ, खुदा ही खैर करे। दस का अमल और अभी तक खटिया ही पर पड़े हैं। कल रात को तमाशा भी तो न था। (दरख्त की तरफ देखकर और साँड़नी बँधी हुई पा कर) जभी खुश खुश सो रहे हैं। अरे

मियाँ, क्या साँप सूँघ गया? यह माजरा क्या है? हाँ, अल्लाह कह कर उठ तो बैठ मेरे शेख।

आज़ाद – (अँगड़ाई ले कर) अरे, क्या सुबह हो गई?

चंडूबाज – सुबह गई खेलने, आँख तो खोलो, अब कोई दम में बारह की तोप दगा चाहती है दन से। देखना, आज दिन भर सुस्ती न रहे तो कहना। वह तो जहाँ आदमी जरा देर करके उठा और हाथ-पाँव टूटने लगे। अब एक काम करो, सिर से नहा डालो।

आज़ाद – क्या बक-बक लगाई है, सोने नहीं देता।

अलारक्खी चुपके-चुपके सब सुन रही है, मगर उठती नहीं। चंडूबाज उसकी चारपाई की पट्टी पर जा बैठे और बोले – ऐ उठ अल्लाह की बंदी, ऐसा सोना भी क्या? यह कह कर आपने उसके बिखरे हुए बाल, जो जमीन पर लटक रहे थे, समेट कर चारपाई पर रखे। उधर मियाँ आज़ाद की आँख खुल गई।

चंडूबाज (गुदगुदा कर) – उठो, मेरी जान की कसम, वह हँसी आई, वह मुसकराई।

आज़ाद – ओ गुस्ताख, अलग हट कर बैठ, हमारे सामने यह बेअदबी!

चंडूबाज — उँह-उँह, बड़े वारिस अली खाँ बन बैठे! भई, आखिर तुमको भी जो जगाया था, अब इनको जगाना शुरू किया, तिनगते क्यों हो भला? मैं तो सीधा-सादा, भोला-भाला आदमी हूँ।

आज़ाद — जी हाँ, हमें तो कंधा पकड़ कर जगाया। यह मालूम हुआ कि चारपाई को जूड़ी चढ़ी या भूचाल आ गया और उन्हें गुदगुदा कर जगाते हो। क्यों बचा?

अलारक्खी जागी तो थी ही, खिलखिला कर हँस पड़ी — ऐ हट मरदुए, यह पलंग पर आकर बैठ जाना क्या; मुझे कोई वह समझ रखा है?

चंडूबाज ने तैश खा कर कहा — वाह-वाह, पलंग की अच्छी कही। 'रहें झोंपड़ों में और ख्वाब देखें महलों को।' कभी बाबाराज ने भी पलंग देखा था।

अलारक्खी — मियाँ, मुझसे यह जली-कटी बातें न कीजिएगा जरी। वाह, हम झोंपड़ों ही में रहती हैं सही; अब तो एक भलेमानस के घर पड़ने वाले हैं। क्यों मियाँ आज़ाद, है न, देखो, मुकर न जाना।

आज़ाद — वाह, मुकरने को एक ही कही, 'नेकी और पूछ-पूछ?'

अलारक्खी — तिस पर भी तुम्हें शरम नहीं आती कि इस उचक्के ने मुझे हाथ लगाया और तुम मुलुर-मुलुर देखा किए। दूसरा होता, तो महनामथ मचा देता।

चंडूबाज — क्यों लड़वाती हो भला मुफ्त में? हमें क्या मालूम था कि यहाँ निकाह की तैयारियाँ हो रही हैं।

मियाँ आज़ाद हाथ-मुँह धोने बाहर गए, तो चंडूबाज और अलारक्खी में यों बातें होने लगीं।

चंडूबाज — यार, फाँसा तो बड़े मुड्ढ को? अब जाने न देना। ऐसा न हो, निकल जाय। भई, कसम खुदा की, औरत क्या, बिस की गाँठ है तू।

अलारक्खी — मगर तुम भी कितने बेशहूर हो, उसके सामने आपने गुदगुदाना शुरू किया। अब वह खटके कि न खटके? तुम्हारी जो बात है, दुनिया से अनोखी। ताड़-सा कद बढ़ाया, मगर तमीज छू नहीं गई।

चंडूबाज — अब तुमसे झगड़े कौन? मैं किसी के दिल की बात थोड़े ही पढ़ा हूँ। मगर भई, पक्की कर लो।

अलारक्खी — हाँ पक्की-पोढ़ी होनी चाहिए। किसी अच्छे वकील से सलाह लो। वह कौन वकील हैं, जो कुम्मैत घोड़े की जोड़ी पर निकलते हैं — अजी वही, जो गबरू से हैं अभी।

चंडूबाज — वकीलों की न पूछो, तेरह सौ साठ हैं। किसी के पास ले चलेंगे।

अलारक्खी — नहीं, वाह, किसी बूढ़े वकील के यहाँ तो मैं न जाऊँगी। ऐसी जगह चलो, जो जवान हो, अच्छी सलाह दे।

चंडूबाज — अच्छा, आज इतवार है। शाम को मियाँ आज़ाद से कहना कि हमें अपनी बहन के यहाँ जाना है। बस, हम फाटक के उस तरफ दबके खड़े रहेंगे, तुम आना। हम-तुम चल कर सब मामला भुगता देंगे।

अलारक्खी — अच्छा अच्छा, तुम्हें खूब सूझी।

इतने में आज़ाद मुँह-हाथ धो कर आए, तो अलारक्खी ने कहा — हमें तो आज बहन के यहाँ न्योता है, कोई कच्ची दो घड़ी में आ जाऊँगी।

आज़ाद — जरा साली की सूरत हमें भी तो दिखा दो। ऐसा भी क्या परदा है, कहो तो हम भी साथ-साथ चले चलें।

अलारक्खी — वाह मियाँ, तुम तो उँगली पकड़ते ही पहुँचा पकड़ने लगे! यह कह कर अलारक्खी कोठरी में गई और सोलह सिंगार करके निकली तो आज़ाद फड़क गए। पटियाँ जमी हुई, गोरी-गोरी नाक में काली-काली लौंग, प्यारे-प्यारे मुखड़े पर हलका सा घूँघट, हाथों में कड़े, पाँव में छड़े, छम-छम करती चली।

चंडूबाज — उनके सामने चमक-चमक के बातें करना यह नहीं कि झेंपने लगो।

अलारक्खी — मुझे और आप सिखाएँ। चमकना भी कुछ सिखाने से आता है। मेरी तो बोटी-बोटी यों ही फड़का करती है। तुम चलो तो, जो मेरी बातों और आँखों पर लट्टू न हो जायँ, तो अलारक्खी नहीं। कुछ ऐसा करूँ कि वह भी निकाह पर रजामंद हो जायँ, तो उनसे और आज़ाद से जरा जूती चले।

वकील साहब अपने बाग में तख्त पर बैठे दोस्तों के साथ बातें कर रहे थे कि खिदमतगार ने आकर कहा — हुजूर, एक औरत आई है। कहती है, कुछ कहना है।

दोस्त — कैसी औरत है भई? जवान है या खप्पट?

खिदमतगार — हुजूर, यह तो देखने से मालूम होगा, मुल है अभी जवान।

वकील — कहो, सुबह आवे।

दोस्त — वाह-वाह, सुबह की एक ही कही। अजी बुलाओ भी। हमारे सर की कसम, बुलाओ। कहो, टोपी तुम्हारे कदमों पर रख दें।

अलारक्खी छड़ों को छम-छम करती, अजब मस्तानी चाल से इठलाती, बोटी-बोटी फड़काती हुई आई। जिसने देखा, फड़क गया। सब रंगीले, बिगड़े दिल, बेफिक्रे जमा थे। एक साहब नवाब थे, दूसरे साहब मुंशी। आपस में मजाक होने लगा -

नवाब — बन्दगी अर्ज है! खुदा की कसम, आप एक ही न्यारिए हैं।

मुंशी — भई, सूरत से तो भलेमानस मालूम होते थे, लेकिन एक ही रसिया निकले।

वकील — भई, अब हम कुछ न कहेंगे। और कहें क्या, छा गई। बी साहिबा, आप किसके पास आई हैं? कहाँ से आना हुआ?

अलारक्खी — अब ऐसी अजीरन हो गई।

वकील — नहीं-नहीं, वाह बैठो, इधर तख्त पर आओ।

अलारक्खी — हाँ, बनाइए, हम तो सीधे-सादे हैं साहब।

नवाब — आप भोली हैं, बजा है!

वकील — औरत हैं या परिस्तान की परी!

नवाब — रीझे-रीझे, लो बी, अब पौ-बारह हैं।

अलारक्खी — हुजूर, हम ये पौ-बारह और तीन काने तो जानते नहीं, हमारा मतलब निकल जाय, तो आप सब साहबों का मुँह मीठा कर देंगे।

दोस्त — आपकी बातें ही क्या कम मीठी हैं!

इतने में चंडूबाज भी आ पहुँचे।

चंडूबाज — हुजूर तो इन्हें जानते न होंगे, ये अलारक्खी हैं। इनका नाम दूर-दूर तक रोशन है।

वकील — इनका क्या इनके सारे खानदान का नाम रोशन है।

चंडूबाज — सराय में आज़ाद नामी जवान आकर ठहरे हैं। वह इनके ऊपर जान देते हैं और यह उन पर मरती हैं। कई आदमियों के सामने वह कबूल चुके हैं कि इनके साथ निकाह करेंगे। मगर आदमी है रंगीले, ऐसा न हो कि इनकार कर जायँ। बस, इनकी यही अर्ज है कि हुजूर कोई ऐसी तदबीर बताएँ कि वह निकल न सकें।

अलारक्खी — मुझ गरीबनी से कोई छप्पन टके तो आपको मिलने नहीं हैं। रहा, इतना सवाब कीजिए, जिसमें यह शिकंजे में जकड़ जायँ।

मुंशी — अगर निकाह ही करने का शौक है तो हम क्या बुरे हैं?

वकील — एक तुम्हीं क्या, यहाँ सब झंडे-तले के शोहदे छटे हुए लुच्चे जमा हैं! जिसको यह पसंद करें, उसी के साथ निकाह हो जाय।

अलारक्खी — हुजूर लोग तो मुझसे दिल्लगी करते हैं।

वकील — अच्छा, कल आओ तो हम तुम्हें वह तरकीब बताएँ कि तुम भी याद करो।

अलारक्खी — मगर बंदी ने कभी सरकार-दरबार की सूरत देखी नहीं। आप वकालत कीजिएगा?

मुंशी — हाँ जी हाँ; इसमें मिन्नत ही क्या है। मगर जानती हो, ये वकील तो रुपए के आशना हैं।

अलारक्खी — वाह, रुपया यहाँ अल्लाह का नाम है। हम हैं, चाहे बेच लो।

वकील — अच्छा, कल आओ, पहले देखो तो वह क्या कहते हैं।

अलारक्खी अब यहाँ से उठना चाहती थी, मगर उठे कैसे। कनखियों से चंडूबाज की तरफ देखा कि अब यहाँ से चलना चाहिए। वह भी उसका मतलब समझ गए, बोले — ऐ हुजूर, जरी घड़ी को तकलीफ दीजिएगा, देखिए तो, कै बजे हैं।

अलारक्खी — मैं अटकल से कहती हूँ, कोई बारह बजे होंगे।

चंडूबाज — मैं भी कहूँ, यह जम्हाइयों पर जम्हाइयाँ क्यों आ रही हैं। नशे का वक़्त टल गया। हलवाइयों की दुकानें भी बढ़ गई होंगी। भलाई से भी गए। हुजूर, अब तो रुखसत कीजिए। अब तो चंडू की लौ लगी है, आज सवेरे-सवेरे आज़ाद की मनहूस सूरत देखी थी, जभी यह हाल हुआ।

अलारक्खी — ले खबरदार, अब की कहा तो कहा, अब आज़ाद का नाम लिया, तो मुझसे बुरा कोई नहीं; जबान खींच लूँगी। नाहक किसी पर छुरा रखना अच्छा नहीं।

नवाब — अरे भई, कोई है, देखो, दूकानें बढ़ न गई हों, तो इनको यहीं चंडू पिलवा दें। जरा दो घड़ी और बी अलारक्खी से सोहबत गरमावें।

खिदमतगार — जाने को कहिए मैं जाऊँ, मुल दुकानें कब की बढ़ गई है; बाजार भर में सन्नाटा पड़ा है; चिड़ियाँ चुनगुन तक सो रही हैं; अब कोई दम में चक्कियाँ चलेंगी।

अलारक्खी — ऐ, क्या आधी रात ढल गई? ले, अब तो बंदी रुखसत होती है।

मुंशी — वाह, इस अँधेरी रात में ठोकरें खाती कहाँ जाओगी!

अलारक्खी — नहीं हुजूर, अब आँखें बन्द हुई जाती हैं। बस, अब रुखसत। हुजूर, भूलिएगा नहीं। इतनी देर मजे से बातें की हैं। याद रखिएगा लौंडी को।

मुंशी — वह हँसते आए, यहाँ से हमें रुला के चले;

न बैठे आप मगर दर्द-दिल उठा के चले।

वकील — दिखा के चाँद सा मुखड़ा छिपाया जुल्फों में;

दुरंगी हमको जमाने की वह दिखा के चले।

नवाब — न था जो कूचे में अपना कयाम मद्दे-नजर;

तो मेरे बाद मेरी खाक भी उड़ा के चले।

खुदा के लिए इतना तो इकरार करती जाओ कि कल जरूर मिलेंगे, हाथ पर हाथ मारो।

अलारक्खी — आप लोगों ने क्या जादू कर दिया; अब रुखसत कीजिए।

वकील — यह भी कोई हँसी है कि रुखसत का ले के नाम;

सौ बार बैठे-बैठे हमें तुम रुला चले।

नवाब- आँखों-आँखों में ले गए वह दिल;
कानों-कानों हमें खबर न हुई।

अलारक्खी यहाँ से चली, तो राह में डींग मारने लगी — क्यों, सबके सब हमारी छवि पर लोट गए न? यहाँ तो फकीर की दुआ है कि जिस महफिल में बैठ जाऊँ, वहीं कटाव होने लगे।

दोनों सराय में पहुँचे, तो देखा, आज़ाद जाग रहे हैं।

अलारक्खी — आज क्या है कि पलक तक न झपकी? यह किसकी याद में नींद उचाट है?

आज़ाद — हाँ, हाँ जलाओ, दो-दो बजे तक हवा खाओ और हमसे आकर बातें बनाओ।

अलारक्खी — ऐ वाह, यह शक, तब तो मीजान पट चुकी। अब इनके मारे कोई भाई-बहन छोड़ दे। अब यह बताओ कि निकाह को कौन दिन ठीक करते हो? हम आज सबसे कह आए कि मियाँ आज़ाद के घर पड़ेंगे।

आज़ाद — क्या सचमुच तुम सबसे कह आईं? कहीं ऐसा करना भी नहीं। मैं दिल्लगी करता था। खुदा की कसम फकत दिल्लगी ही थी। मैं परदेशी आदमी, शादी ब्याह करता फिरूँगा, और भठियारी से? माना कि तुम हो परी, मगर फिर भठियारिन ही

तो! चार दिन के लिए सराय में आकर टिके, तो यहाँ से यह बला ले जायँ!

अलारक्खी — ऐ चोंच सँभाल मरदुए! और सुनिएगा, हम बला हैं, जिस पर सारे शहर की निगाह पड़ती हैं? दूसरा कहता, तो खून खराब कर डालती। मगर करूँ क्या, कौल हार चुकी हूँ। बिरादरी भर में कलंक का टीका लगेगा। बला की अच्छी कही; तुम्हारे मुँह से मेरी एड़ी गोरी है, चाहे मिला हो।

आज़ाद — तो बी साहबा, सुनिए, किसी शादी और किसका ब्याह!

अलारक्खी — इन बातों से न निकलने पाइएगा। कल ही तो मैं नालिश दागती हूँ। इकरार करके मुकर जाना क्या खाला जी का घर है? मियाँ, मैं तो अपनी वाली पर आई, तो बड़ा घर ही दिखाऊँगी। किसी और भरोसे न भूलना मुझसे बुरा कोई नहीं।

आज़ाद — खुदा की पनाह, मैं अब तक समझता था कि मैं ही बड़ा घाघ हूँ, मगर इस औरत ने मेरे भी कान काटे। भुला दी सारी चौकड़ी। खुदा, तड़का जल्दी से हो, तो मैं दूसरी कोठरी लूँ।

अलारक्खी (नाक पर उँगली रख कर) – रो दे, रो दे! इससे छोकरी ही हुए होते तो किसी भले मानस का घर बसता। भला मजाल पड़ी है कि कोई भठियारी टिकाये?

आज़ाद — तो सारे शहर भर में आपका राज है कुछ?

अलारक्खी — हई है, हई है, क्या हँसी-ठट्ठा है? कल-परसों तक आटे-दाल का भाव मालूम हो जाएगा?

आज़ाद — चलिए, आपकी बला से!

चंडूबाज — बला-बला के भरोसे न रहिएगा। दो-चार दिन ताथेइया मचेगी।

आज़ाद — जरी आप चुपके बैठे रहिएगा। यह तो कामिनी हैं, लेकिन तुम्हारी मुफ्त में शामत आ जायगी।

चंडूबाज — मेरे मुँह न लगिएगा, इतना कहे देता हूँ!

आज़ाद ने उठ कर दो-चार चाँटे जड़ दिए। अलारक्खी ने बीच-बचाव कर दिया।— अल्लाह करे, हाथ टूटें, ले के गरीब को पीट डाला।

चंडूबाज — मेरी भी तो दो-एक पड़ गई जा!

अलारक्खी — ऐ चुप भी रह, बोलने को मरता है।

इस तरह लड़-झगड़ कर तीनों सोए।

20

दूसरे दिन सवेरे आज़ाद की आँख खुली तो देखा, एक शाह जी उनके सिरहाने खड़े उनकी तरफ देख रहे हैं। शाह जी के साथ एक लड़का भी है, जो अलारक्खी को दुआएँ दे रहा है। आज़ाद ने समझा, कोई फकीर है, झट उठ कर उनको सलाम किया। फकीर ने मुसकरा कर कहा – हुजूर, मेरा इनाम हुआ। सच कहिएगा, ऐसे बहुरूपिए कम देखे होंगे। आज़ाद ने देखा गच्चा खा गए, अब बिना इनाम दिए गला न छूटेगा। बस, अलारक्खी की भड़कीली दुलाई उठाकर दे दी। बहुरूपिए ने दुलाई ली, झुक कर सलाम किया और लंबा हुआ। लौंडे ने देखा कि मैं ही रहा जाता हूँ। बढ़कर आज़ाद का दामन पकड़ा। हुजूर, हमें कुछ भी नहीं? आज़ाद ने जेब से एक रुपया निकाल कर फेंक दिया। तब अलारक्खी चमक कर आगे बढ़ीं और बोलीं – हमें?

आज़ाद – तुम्हारे लिए जान हाजिर है।

चंडूबाज – यह सब जबानी दाखिल है। बीवी को यह खबर ही नहीं कि दुलाई इनाम में चली गई। उलटे चली हैं माँगने। यह तो न हुआ कि चाँदी के छड़े बनवा देते, या किसी दिन हमीं को

दो-चार रुपए दे डालते। जाओ मियाँ, बस, तुमको भी देख लिया। गौं के यार हो, 'चमड़ी जाय दमड़ी न जाय।'

अलारक्खी — कहीं तेरे सिर गरमी तो नहीं चढ़ गई। जरा चंदिया के पट्ट करतवा डाल। यह चमड़ी और दमड़ी का कौन मौका था। यह बताइए, अब निकाह की कब तैयारियाँ हैं?

आज़ाद — अभी निकाह की उम्मीद आपको है? वल्लाह, कितनी भोली हो!

अलारक्खी — तो क्या आप निकल भी जाएँगे? ऐ, मैं तो चढ़ूँगी अदालत! कह-कहकर मुकर जाना क्या हँसी-ठट्ठा है!

आज़ाद — तो क्या नालिश कीजिएगा?

अलारक्खी — क्यों, क्या कोई शक भी है! हम क्या किसी के दबैल हैं?

चंडूबाज — और गवाह को देख रखिए। दुलाई क्या झप से उठ दी। परायी दुलाई के आप कौन देनेवाले थे? अजी, मैं तो वह-वह सवाल-जवाब करूँगा कि आपके होश उड़ जायँगे।

आज़ाद — अच्छी बात है, यह शौक से नालिश करें और आप गवाही दें। इन्हें तो क्या कहूँ, पर तुम्हें समझूँगा।

चंडूबाज — मुझसे ऐसी बातें न कीजिएगा, नहीं मैं फिर गुद्दा ही दूँगा।

अलारक्खी — चल, हट, बड़ा आया वहाँ से गुद्दा देने वाला। अभी मैं चिमट जाऊँ, तो चीखने लगे, उस पर गुद्दा देंगे।

आज़ाद — तो फिर जाइए वकील के यहाँ, देर हो रही है।

अलारक्खी — तो क्या सचमुच तुम्हें इनकार है? मियाँ, आँखें खुल जाएँगी। जब सरकार का प्यादा आएगा, तो भागने को जगह न मिलेगी।

चंडूबाज — यह हैं शोहदे, यों नहीं मानने के। चलो चलें, दिन चढ़ता आता है। अभी कंघी-चोटी में तुम्हें घंटों लगेंगे और वह सरकारी-दरबारी आदमी ठहरे। मुवक्किल सुबह-शाम घेरे रहते हैं। जब देखो, बग्घियाँ, टमटम, फिटन, जोड़ी, गाड़ी, हाथी, घोड़े, पालकी, इक्के, ताँगे, याबू, फिनस, म्याने दरवाजे पर मौजूद।

आज़ाद — क्या और किसी सवारी का नाम याद नहीं था? आज सरूर खूब गठे हैं।

चंडूबाज — अजी, यहाँ अलारक्खी की बदौलत रोज ही सरूर गठे रहते हैं।

अलारक्खी ने कोठरी में जा कर सिंगार किया और निखर कर चलीं, तो आज़ाद की निगाह पड़ ही गई। चार आँखें हुईं, तो दोनो मुस्करा दिए। चंडूबाज ने यह शेर पढ़ा —

उनको देखो तो यह हँस देते हैं;
आँख छिपती ही नहीं यारी की।

अलारक्खी एक हरी-हरी छतरी लगाए छम-छम करती चली। बिगड़े-दिल आवाजें कसते थे, पर वह किसी तरफ आँख उठा कर न देखती थी। चंडूबाज 'हटो, बचो' करते चले जाते थे। जरी हट जाना सामने से। ऐं, क्या छकड़ा आता है, क्यों हट जायँ? अखखाह, यह कहिए, आपकी सवारी आ रही है। लो साहब, हट गए। एक रसिया ने पीछा किया। ये लोग आगे-आगे चले जा रहे हैं और मियाँ रसिया पीछे-पीछे गजलें पढ़ते चले आ रहे हैं। चंडूबाज ने देखा कि यह अच्छे बिगड़े-दिल मिले। साथ जो हुआ, तो पीछा ही नहीं छोड़ते। आप हैं कौन? या आगे बढ़िए या पीछे चलिए। किसी भलेमानस को सताते क्यों हैं? इस पर अलारक्खी ने चंडूबाज के कान में चुपके से कहा — यह भी तो शकल-सूरत से भलेमानस मालूम होते हैं। हमें इनसे कुछ कहना है।

चंडूबाज — आप तो वकील के पास चलती थीं, कहाँ इस सिड़ी-सौदई से साँठ-गाँठ करने की सूझी? सच है, हसीनों के मिजाज का

ठिकाना ही क्या। बोले — अजी साहब, जरी इधर गली में आइएगा, आपसे कुछ कहना है।

रसिया — वाह, 'नेकी और पूछ-पूछ!'

तीनों गली में गए, तो अलारक्खी ने कहा — कहीं तुम्हारे मकान भी है? यहाँ इस गलियारे में क्या कहूँ, कोई आवे, कोई जाय। खड़े-खड़े बातें हुआ करती हैं?

चंडूबाज ने सोचा कि दूसरा गुल खिला चाहता है। पूछा — मियाँ, तुम्हारा मकान यहाँ से कितनी दूर है। जो काले कोसों हो, तो मैं लपक कर बग्घी किराया कर लूँ। इनसे इतनी दूर न चला जायगा। इनको तो मारे नजाकत के छतरी ही का सँभालना भारी है।

रसिया — नहीं साहब, दूर नहीं है। बस, कोई दस कदम आइए। रसिया ने छतरी ले ली और खिदमतगार की तरह छतरी लगा कर साथ-साथ चलने लगे। चंडूबाज ने देखा, अच्छा गावदी मिला। खुद की छतरी के साये में रईस बने हुए चलने लगे। थोड़ी देर मे रसिया के मकान पर पहुँचे।

रसिया — वह आए घर में हमारे, खुदा की कुदरत है,

कभी हम उनको, कभी अपने घर को देखते हैं।

यहाँ तो सच्चे आशिक हैं। जिसको दिल दिया, उसको दिया। जान जाय; माल जाय; इज्जत जाय; सब मंजूर है।

चंडूबाज – अच्छा, अब इनका मतलब सुनिए। यह बेचारी अभी अठारह-उन्नीस बरस की होंगी? अभी कल तो पैदा हुई हैं। अब सुनिए कि इनके मियाँ इनसे लड़-झगड़ कर हैदराबाद भाग गए। वहाँ किसी को घर में डाल लिया। अब यह अकेली हैं, इनका जी घबराता है, इतने में एक शौकीन रईस सराय में उतरे, बड़े खूबसूरत कल्ले-छल्ले के जवान हैं।

अलारक्खी – मियाँ, आँखें तो ऐसी रसीली कि देखी न सुनी।

चंडूबाज – ऐ, तो मुझी को अब कहने दो। तुम तो बात काटे देती हो। हाँ, तो मैं कहता था कि इनकी-उनकी आँखें चार हुई, तो इधर यह, उधर वह, दोनों घायल हो गए। पहले तो आँखों ही आँखों में बातें हुआ की। फिर खुल के साफ कह दिया कि हम तुमको ब्याहेंगे। फिर न जाने क्या समझकर मुकर गए। अब इनका इरादा है कि उन पर नालिश ठोंक दें।

रसिया – अजी, उनको भाड़ में झोंको। जो ब्याह ही करना है, तो हमसे निकाह पढ़वाओ। उनका पता बताओ।

अलारक्खी – सच कहूँ, तुम मर्दों का हमें एतबार दमड़ी भर भी नहीं रहा। अब जी नहीं चाहता कि किसी से दिल मिलाएँ।

रसिया — तुमने अभी हमें पहिचाना ही नहीं। पाँचों उँगलियाँ बराबर नहीं होतीं। हम शरीफजादे हैं!

अलारक्खी — लोग यही समझते हैं कि अलारक्खी बड़ी खुशनसीब है। मगर मियाँ, मैं किससे कहूँ, दिल का हाल कोई क्या जाने।

चंडूबाज — यही देखिए, अर्जीदावा है।

रसिया — अरे, यह किस पागल ने लिखा है जी? ऐसा भला कहीं हो सकता है कि सरकार आज़ाद से तुम्हारा निकाह करवा ही दे? हाँ, इतना हो सकता है कि हरजा दिलवा दे। पर उसका सबूत भी जरा मुश्किल है।

अलारक्खी — अजी, होगा भी, मसौदा फाड़ डालो। आज़ाद से अब मतलब ही क्या रहा?

रसिया — हम बताएँ, नालिश तो दाग दो। हरजा मिला तो हर्ज ही क्या है। बाकी ब्याह किसी के अख़्तियार मे नहीं। उधर तुमने मुकदमा जीता, इधर हम बरात ले कर आए।

अलारक्खी — तो चलो, तुम भी वकील के यहाँ तक चले चलो न।

रसिया — हाँ, हाँ, चलो।

तीनों आदमी वकील के यहाँ पहुँचे। लेकिन बड़ी देर तक बाहर ही टापा किए। यह रईस आए, वह अमीर आए। कभी कोई महाजन आया। बड़ी देर के बाद इनकी तलबी हुई; मगर वकील साहब जो देखते हैं, तो अलारक्खी का मुँह उतरा हुआ है, न वह चमक-दमक है, न वह मुसकराना और लजाना। पूछा — आखिर, माजरा क्या है? आज इतनी उदास क्यों हो? कहाँ वह छवि थी, कहाँ यह उदासी छाई हुई है? अलारक्खी ने इसका तो जवाब कुछ न दिया, फूट-फूट कर रोने लगी। आँसू का तार बंध गया। वकील सन्नाटे में। आज यह क्या माजरा है, इनकी आँखों में आँसू!

चंडूबाज — हुजूर, यह बड़ी पाकदामन हैं। जितनी ही चंचल हैं, उतनी ही समझदार। मेरा खुदा गवाह है, बुरी राह चलते आज तक नहीं देखा। इनकी पाकदामनी की कसम खानी चाहिए। अब यह फरमाइए, मुकदमा कैसे दायर किया जाय।

रसिया — जी हाँ, कोई अच्छी तदबीर बताइए। जबरदस्ती शादी तो हो नहीं सकती। अगर कुछ हरजाना ही मिल जाय, तो क्या बुरा? भागते भूत की लँगोटी ही सही। कुछ तो ले ही मरेंगी।

चंडूबाज — मरें इनके दुश्मन, आप भी कितने फूहड़ हैं, वाह!

वकील — अच्छा, यह तो बताइए कि वह रईस कहाँ से आएँगे, जो कहें कि हमसे और इनसे ब्याह की ठहरी थी?

रसिया — अब बता ही दूँ। बंदा ही कहेगा कि हमसे महीनों से बातचीत है, आज़ाद बीच में कूद पड़े। वल्लाह, वह-वह जवाब दूँ कि आप भी खुश हो जायँ।

वकील — वाह तो फिर क्या पूछना। हम आपको दो-एक चुटकुले बता देंगे, कि आप फर्राटे भरने लगिएगा। मगर दो-एक गवाह तो ठहरा लीजिए।

चंडूबाज — एक गवाह तो मैं ही बैठा हूँ, फर्राटेबाज।

खैर तीनों आदमी कचहरी पहुँचे। जिस पेड़ के नीचे जा कर बैठे, वहाँ मेला सा लग गया। कचहरी भर के आदमी टूटे पड़ते हैं। धक्कम-धक्का हो रहा है। चंडूबाज वारिसअली खाँ बने बैठे हुक्का गुड़गुड़ा रहे हैं। जाओ भई, अपना काम करो, आखिर यहाँ क्या मेला है, क्या भेड़िया-धसान है।

एक — आप लाए ही ऐसी हैं।

दूसरा — अच्छा, हम खड़े हैं, आपका कुछ इजारा है? वाह अच्छे आए।

तीसरा — भाई, जरी हँस-बोल लें, आखिर मरना तो है ही।

जब एक बजा, तो बी अलारक्खी इठलाती हुई सवाल देने चलीं। चंडूबाज एक हाथ में हुक्का लिए हैं, दूसरे में छतरी। खिदमतगार बने चले जाते हैं। लोग इधर-उधर झुंड के झुंड खड़े हैं; पर कोई बताता नहीं कि अर्जी कहाँ दी जाती है। एक कहता है, दाहिने हाथ जाओ। दूसरा कहता है, नहीं-नहीं, बाएँ-बाएँ। बड़ी मुश्किल से इजलास तक पहुँची।

उधर आज़ाद पड़े-पड़े सोच रहे थे कि इस बेफिक्री का कहीं ठिकाना है? जो कहीं नवाब के आदमी छूटें तो चोर के चोर बनें और उल्लू के उल्लू बनाए जायँ। किसी को मुँह दिखाने लायक न रहें। आबरू पर पानी फिर गया। अभी देखिए, क्या-क्या होता है। कहाँ-कहाँ ठोकरें खाते हैं!

इतने में सराय में लेना-लेना का गुल मचा। यह भी भड़-भड़ाकर कोठरी से बाहर निकले, तो देखते हैं कि साँड़नी ने रस्सी तोड़-ताड़ कर फेंक दी है और सराय भर में उचकती फिरती है। पहले एक मुसाफिर के टट्टू की तरफ झुकी ओर उसको मारे पुस्तों के बौखला दिया। मुसाफिर बेचारा एक लग्गा लिए खटाखट हाथ साफ कर रहा है। फिर जो वहाँ से उछली, तो दो-तीन बैलों का कचूमर ही निकाल डाला। गाड़ीवान हाँय-हाँय कर रहा है; लेकिन इस हाँय-हाँय से भला ऊँट समझा किए हैं। यहाँ से झपटी, तो तीन-चार इक्कों के अंजर-पंजर अलग कर दिए। आज़ाद तो बड़ा

दिखा रहे हैं और आवाजें कर रहे हैं। लोग तालियाँ बजा देते हैं, तो वह और भी बौखला जाती है। बारे बड़ी मुश्किल से नकेल उनके हाथ में आई। उसे बाँध कर कहीं जाने की तैयारी कर रहे थे कि अलारक्खी और चंडूबाज अदालत के एक मजकूरी के साथ आ पहुँचे। आज़ाद ने मुँह फेर लिया और मीठे सुरों में गाने लगे —

ठानी थी दिल में, अब न मिलेंगे किसी से हम;
पर क्या करें कि हो गए लाचार जी से हम।

मजकूरी — हुजूर, सम्मन आया है।

आज़ाद — तुम मेरे पास होते हो गोया;
जब कोई दूसरा नहीं होता।

मजकूरी — सम्मन आया है, गाने को तो दिन भर पड़ा है, लीजिए, दस्तखत तो कर दीजिए।

आज़ाद — धो दिया अश्के-नदामत को गुनाहों ने मेरे;
तर हुआ दामन, तो बारे पाक-दामन हो गया।

मजकूरी — अजी साहब, मेरी भी सुनिएगा?

आज़ाद — क्या हमसे कहते हो?

मजकूरी — और नहीं तो किससे कहते हैं?

आज़ाद — कैसा सम्मन, लाओ, जरा पढ़ें तो। लो, सचमुच ही नालिश जड़ दी।

मजकूरी ने सम्मन पर दस्तखत कराए और अलारक्खी को घेरा। आज तो हाथ गरमाओ, एक चेहराशाही लाओ। अलारक्खी ने कहा — ऐ, तो अभी सूत न कपास, इनाम-विनाम कैसा? मुकदमा जीत जायँ, तो देते अच्छा लगे।

मजकूरी — तुम जीती दाखिल हो बीबी। अच्छा, कल आऊँगा।

मियाँ आज़ाद के पेट में चूहे कूदने लगे कि यह तो बेढब हुई। मैंने जरा दिल-बहलाव के लिए दिल्लगी क्या कर दी कि यह मुसीबत गले आ पड़ी। अब तो खैरियत इसी में है कि यहाँ से मुँह छिपाकर भाग खड़े हों। बी अलारक्खी चिल्ला-चिल्लाकर कहने लगीं — अब तो चाँदी है। जीते, तो घी के चिराग जलाएँगे।

एक ने कहा — यह न कहा, मुँह मीठा करेंगे; गुलगुले खिलाएँगे।

दूसरे ने कहा — न खिलाएगी, तो निकाह के दिन ढोलक कौन बजाएगा?

आज़ाद मौके की ताक में थे ही, अलारक्खी की आँख चूकते ही झट से काठी कसी और भागे। नाके तक तो उनको किसी ने न

टोका, मगर जब नाके से कोई गोली भर के टप्पे पर बाहर निकल गए तो मियाँ चंडूबाज से आँखें चार हुईं। अरे! गजब हो गया, अब धर लिए गए।

चंडूबाज – ऐ बड़े भाई, किधर की तैयारियाँ हैं? यह भाग जाना हँसी-ठट्ठा नहीं है कि काठी कसी और चल खड़े हुए। आँखों में खाक झोंक कर चले आए होंगे। ले बस, उतर पड़ो, आओ, जरी हुक्का तो पी लो।

आज़ाद – इस दम में हम न आएँगे। ये फिकरे किसी गँवार को दीजिए। आप अपना हुक्का रहने दें। बस, अब हम खूब पी चुके। नाकों दम कर दिया बदमाशों ने! चले थे मुकदमा दायर करने! किस मजे से कहते हैं कि हुक्का पिए जाओ। ऐसे ही तो आप बड़े दोस्त हैं!

चंडूबाज – नेकी का जमाना ही नहीं। हमने तो कहा, इतने दिन मुलाकात रही है, आओ भाई, कुछ खातिर कर दें, अब खुदा जाने, कब मिलना हो।

आज़ाद – खुदा न करे, तुम जैसे मनहूसों की सूरत ख्वाब में भी नजर आए।

चंडूबाज ने गुल मचाना शुरू किया – दौड़ो, चोर है, लेना, चोर, चोर! मियाँ आज़ाद ने चंडूबाज पर सड़ाक से कोड़ा फटकारा और

साँड़नी को एक एड़ लगाई। वह हवा हो गई। शहर से बाहर हुए, तो राह में दो मुसाफिरों को यों बातें करते सुना -

पहला — अरे मियाँ, आजकल लखनऊ में एक नया गुल खिला है! किसी न्यारिये ने करोड़ों रुपए के जाली स्टाम्प बनाए और लंदन तक में जा कर कूड़े किए। सुना, काबुल में दो जालिए पकड़े गए, मुश्कें कस ली गईं ओर रेल में बन्द करके यहाँ भेज दिए गए। अल्लाह जानता है, ऐसा जाल किया कि जौ भर भी फर्क मालूम हो, तो मूँछें मुड़वा लो! सुना है, कोई, डेढ़ सौ दो सौ बरस से बेचते थे और कुछ चोरी-छिपे नहीं, खुल्लमखुल्ला।

दूसरा — वाह, दुनिया में भी कैसे-कैसे काइयाँ पड़े हैं। ऐसों के तो हाथ कटवा डाले।

पहला — वाह, वाह, क्या क़दरदानी की है! उन्होंने तो वह काम किया कि हाथ चूम लें, जागीरें दें।

आज़ाद को पहले मुसाफिर की गपोड़ेबाजी पर हँसी आ गई। क्या झप से जालियों को काबुल तक पहुँचा दिया और हिंदुस्तान के स्टाम्प लंदन में बिकवाए। पूछा — क्यों साहब, कितने जाली स्टाम्प बेचे?

मुसाफिरों ने समझा, यह कोई पुलिस अफसर है, टोह लेने चले हैं, ऐसा न हो कि हमको भी गिरफ्तार कर लें। बगलें झाँकने लगे।

आज़ाद — आप अभी कहते न थे कि जालिए गिरफ्तार किए गए हैं?

मुसाफिर — कौन? हम? नहीं तो!

आज़ाद — जी, आप बातें नहीं कर रहे थे कि स्टाम्प किसी ने बनाए और डेढ़ दो सौ बरस से बेचते चले आए?

मुसाफिर — हुजूर, हमको तो कुछ मालूम नहीं।

आज़ाद — अभी बताओ सुअर, नहीं हम तुमको बड़ा घर दिखाएगा और बेड़ी पहनाएगा।

मियाँ आज़ाद तो उनकी चितवनों से ताड़ गए कि दोनों के दोनों चोंगा हैं, मारे डर के स्टाम्प का लफ्ज जबान पर नहीं लाते। जैसे ही उन्होंने डाँट बताई, एक तो बगटुट पच्छिम की तरफ भागा और दूसरा खड़भड़ करता हुआ पूरब की तरफ। मियाँ आज़ाद आगे बढ़े। राह में देखा, कई मुसाफिर एक पेड़ के साये में बैठे बातें कर रहे हैं —

एक — कोई ऐसी तदबीर बताइए कि लू न लगे। आजकल के दिन बड़े बुरे है।

दूसरा — इसकी तरकीब यह है कि प्याज की गट्ठी पास रखे। या दो-चार कच्चे आम तोड़ लो, आमों को पहले भून लो, जब

पिलपिले हों, तो गूदा निकाल कर छिलका फेंक दो और जरा सी शकर, पानी में घोल कर पी जाओ।

पहला — कहीं ऐसा गजब भी न करना! पानी में तो बरफ डालनी ही न चाहिए। पानी का गिलास बरफ में रख दो, जब खूब ठंडा हो जाय, तब पियो। बरफ का पानी नुकसान करता है।

दूसरा — वाह, लाखों आदमी पीते हैं।

पहला — अजी, लाखों आदमी झख मारते हैं। लाखों चोरियाँ भी तो करते हैं, फिर इससे मतलब? हमने लाखों आदमियों को देखा है कि गढ़ों और तालाबों का पानी सफर में पीते हैं। आप पीजिएगा? हजारों आदमी धूप में चल कर खड़े-खड़े तीन-चार लोटे पानी पी जाते हैं। मगर यह कोई अच्छी बात थोड़े ही है।

और आगे बढ़े, तो एक भड्डरी आ निकला। वह आज़ाद को पहचानता था। देखते ही बोला — तुम्हारी नवाब साहब के यहाँ बड़ी तलाश है जी। तुम गायब कहाँ हो गए थे ऊँट ले कर? अब मैं जा कर कहूँगा कि मैंने प्रश्न देखा, तो निकला, आज़ाद पाँच कोस के अन्दर ही अन्दर हैं। जब तुम लुपदेनी पहुँच जाओगे, तो फिर हमारी चढ़ती कला होगी। तुमको भी आधे-आध बाँट देंगे। मगर भंडा न फोड़ना। चढ़ बाजी है।

आज़ाद — वल्लाह, क्या सूझी है। मंजूर है।

भड्डरी ने पोथी सँभाल अपनी राह ली और नवाब के यहाँ धर धमके।

खोजी — अजी, जाओ भी, तुम्हारी एक बात भी ठीक न निकली।

नवाब — बरसों हमारा नमक तुमने खाया है, एक-दो दिन नहीं बरसों। अब इस वक़्त कुछ परशन-वरशन भी देखोगे, या बातें ही बनाओगे? हमको तो मुसलमान भाई तुम्हारी वजह से काफिर कहने लगे और तुम कोई अच्छा सा हुक्म नहीं लगाते।

भड्डरी — वह हुक्म लगाऊँ कि पट ही न पड़े!

खोजी — अजी, डींगिए हो खासे। कहीं किसी रोज मैं करौली न भोंक दूँ। सिवा बे-पर की उड़ाने के, बात सीखी ही नहीं। भले आदमी, साल भर में एक दफे तो सच बोला करो।

झम्मन — वाह, सच बोलते, तो कसाई के कुत्ते की तरह फूल न जाते।

नवाब — यह क्या वाहियात बात?

भड्डरी — हुजूर,हमसे-इनसे हँसी होती है। यह हमें कहते हैं, हम इन्हें। अब आप कोई फूल मन में लें।

नवाब — ये ढकोसले हमको अच्छे नहीं मालूम होते। हमें साफ-साफ बता दो कि मियाँ आज़ाद कब तक आएँगे?

भट्टरी ने उँगलियों पर कुछ गिन-गिनाकर कहा — पानी के पास हैं।

झम्मन — वाह उस्ताद! पानी के पास एक ही कही। लड़की न लड़का, दोनों तरह अपनी ही जीत।

भट्टरी — यहाँ से कोई तीन कोस के अन्दर हैं।

दुन्नी — हुजूर, यह बड़ा फैलिया है। आप पूछते हैं; आज़ाद कब आएँगे। यह कहता है, तीन कोस के अन्दर ही अन्दर हैं। सिवा झूठ, सिवा झूठ।

भट्टरी — अच्छा, जाकर देख लो। जो नाके के पास आज़ाद आते न मिलें, तो नाक कटा डालूँ, पोथी जला दूँ। कोई दिल्लगी है?

नवाब — चाबुक-सवार को बुला कर हुक्म दो कि अभी सरपट जाय और देखे, मियाँ आज़ाद आते हैं या नहीं। आते हों, तो इस भट्टरी का आज घर भर दूँ। बस, आज से इसका कलमा पढ़ने लगूँ।

चाबुक-सवार ने बाँका मुड़ासा बाँधा और सुरंग घोड़ी पर चढ़ चला। मगर पचास ही कदम गया होगा कि घोड़ी भड़की और तेजी में दूसरे नाके की राह ली। चाबुक सवार बहुत अकड़े बैठे हुए थे; मगर रोक न सके, धम से मुँह के बल नीचे आ रहे।

खोजी ने नवाब साहब से कहा — हुजूर, घोड़ी ने नाजिरअली को दे पटका, और क्या जाने किस तरफ निकल गई।

नवाब — चलो, खैर समझा जायगा। तुम टाँघन कसवाओ और दौड़ जाओ।

खोजी — हुजूर, मैं तो बूढ़ा हो गया और रही-सही सकत अफीम ने ले ली। टाँघन है बला का शरीर। कहीं फेंक-फाक दे, हाथ-पाँव टूटें, तो दीन-दुनिया, दोनों से जाऊँ। आज़ाद खुद भी गए और हम सबको भी बला में डाल गए।

इधर चाबुक-सवार ने पटकनी खाई उधर लौंडों ने तालियाँ बजाईं। मगर शह-सवार ने गर्द झाड़ी, एक दूसरा कुम्मैत घोड़ा कसा और कड़कड़ा दिया। हवा से बातें करते जा रहे हैं। बगिया में पहुँचे, तो देखा, साँड़नी की काकरेजी झूल झलक रही है और ऊँटनी गरदन झुकाए चौतरफा मटक रही है। जा कर आज़ाद के गले से लिपट गए।

आज़ाद — कहिए, नवाब के यहाँ तो खैरियत है?

सवार — जी हाँ, खैर-सल्लाह के ढेर हैं। मगर आपकी राह देखते-देखते आँखें पथरा गईं। ओ मियाँ, कुछ और भी सुना? उस बटेर की कब्र बनाई गई है। सामने जो बेल-बूटों से सजा हुआ मकबरा दिखाई देता है, वह उसी का है।

आज़ाद — यह कहिए, यार लोगों ने कब्र भी बनवा दी! वल्लाह, क्या-क्या फिकरेबाज हैं।

सवार — बस, तुम्हारी ही कसर थी। कहो, हमने सुना, खूब गुलछर्रे उड़ाए। चलो, पर अब नवाब ने याद किया है।

आज़ाद — ऐं, उन्हें हमारे आने की कहाँ से खबर हो गई?

सवार — अजी, अब यह सारी दास्तान राह में सुना देंगे।

आज़ाद — अच्छा, तो पहले आप हमारा खत नवाब के पास ले जायँ। फिर हम शान के साथ चलेंगे।

यह कह कर आज़ाद ने खत लिखा —

'आज कलम की बाँछें खिली जाती हैं; क्योंकि मियाँ सफशिकन की सवारी आती है। हुजूर के नाम की कसम, इधर पाताल तक और उधर सातवें आसमान तक हो आया, तब जा के खोज पाया। शाह जी साहब रोज ढाढ़ें मार-मार कर रोते हैं। कल मैंने बड़ी खुशामद की और आपकी याद दिलाई। तो ठंडी आह खींच कर रह गए। बड़ी-बड़ी दलीलें छाँटते थे। पहले फरमाया — दरों बज्म रह नेस्त बेगाना रा, मैंने छूटते ही जवाब दिया — कि परवानगी दाद परवाना रा।

'खिलखिलाकर हँस पड़े, पीठ ठोंकी और फरमाया — शाबाश बेटे, नवाब साहब की सोहबत में तुम बहुत बर्क हो गए। पूरे दो हफ्ते तक मुझसे रोज बहस रही। आखिर मैंने कहा — आप चलिए, नहीं मैं जहर खा कर मर जाऊँगा। मुझे समझाया कि जिंदगी बड़ी न्यामत है। खैर, तुम्हारी खातिर से चलता हूँ। लेकिन एक शर्त यह है कि जब मैं वहाँ पहुँचूँ, तो नवाब के सामने खोजी पर बीस जूते पड़ें। मैंने कौल दिया, तब कहीं आए।'

सवार यह खत लेकर हवा की तरह उड़ता हुआ नवाब साहब के यहाँ पहुँचा।

नवाब — कहो, बेटा कि बेटी? जल्दी बोलो। यहाँ पेट में चूहे कूद रहे हैं!

सवार — हुजूर, गुलाम ने राह में दम लिया हो, तो जरमाना दूँ।

खोजी — कितने बेतुके हो मियाँ! 'कहें खेत की, सुन खलिहान की।' भला अपनी कारगुजारी जताने का यह कौन मौका है? मारे मशीखत के दुबले हुए जाते हैं!

सवार ने आज़ाद का खत दिया। मुंशी जी पढ़ने के लिए बुलाए गए। खोजी घबराए कि आज़ाद ने यह कब की कसर ली। बोले — हुजूर, यह मियाँ आज़ाद की शरारत है। शाह साहब ने यह शर्त कभी न की होगी। बंदे से तो कभी गुस्ताखी नहीं हुई।

नवाब — खैर, आने तो दो। क्यों भाई मीर साहब, रम्माल ने तो बयान किया था कि सफशिकन के दुश्मन जन्नत में दाखिल हुए। यह मियाँ आज़ाद को कहाँ से मिल गए।

मीर साहब — हुजूर, खुदा का भेद कौन जान सकता है?

भड्डरी — मेरा प्रश्न कैसा ठीक निकला जो हैं सो, मानों निशाने पर तीर खट से बैठ गया।

इतने में अन्दर छोटी बेगम को खबर हुई। बोलीं — इनका जैसा पोंगा आदमी खुदाई भर में न होगा। जरी-सा तो बटेर और पाजियों ने उसका मकबरा बनवा दिया। रोज कहाँ तक बकूँ।

लौंडी — बीबी, बुरा मानो या भला, तुम्हें वे राहें ही नहीं मालूम कि मियाँ काबू में आ जायँ।

बेगम — मेरी जूती की नोक को क्या गरज पड़ी है कि उनके बीच में बोले। मैं तो आप ही डरा करती हूँ कि कोई मुझी पर तूफान न बाँध दे।

उधर नवाब ने हुक्म दिया कि सफशिकन की सवारी धूम से निकले। इतना इशारा पाना था कि खोजी और मीरसाहब लगे जुलूस का इंतजाम करने। छोटी बेगम कोठे पर खड़ी-खड़ी ये तैयारियाँ देख रही थीं और दिल में हँस रही थीं। उस वक़्त कोई

खोजी को देखता, दिमाग नहीं मिलते थे। इसको डाँट, उसको डपट, किसी पर धौल जमाई, किसी के चाँटा लगाया; इसको पकड़ लाओ, उसको मारो। कभी मसालची को गालियाँ दीं, कभी पंशाखेवाले पर बिगड़ पड़े। आगे-आगे निशान का हाथी था। हरी-हरी झूल पड़ी हुई। मस्तक पर सेंदूर से गुल-बूटे बने हुए। इसके बाद हिंदोस्तानी बाजा कक्कड़-झय्यम! इसके पीछे फूलों के तख्त-चमेली खिला ही चाहती है, कलियाँ चिटकने ही को हैं। चंडूबाजों के तख्त ने तो कमाल कर दिया। दो-चार पीनक में हैं, दस-पाँच ऊँघे पड़े हुए। कोई चंडूबाजाना ठाट से पौंड़ा छील रहा है। एक गँड़ेरी चूस रहा है। शिकार का वह समा बाँधा कि वाह जी वाह। एक शिकारी बंदूक छतियाए, घुटना टेके, आँख दबाए निशाना लगा रहा है। बस, दाँय की आवाज आना ही चाहती है। हिरन चौकड़ियाँ भरते जाते है। इसके बाद अंगरेजी बाजा। इसके बाद घोड़ों की कतार-कुम्मैत, कुछ सुरंग, नुकरा, सब्जा, अरबी, तुर्की, वैलर छम-छम करते जा रहे हैं। घोड़े दुलहिन बने हुए थे। इसके बाद फिर अरगन बाजा; फिर तामदान, पालकी, नालकी, सुखपाल। इसके बाद परियों के तख्त एक से एक बढ़ कर। सबके पीछे रोशन चौकीवाले थे। रोशनी का इंतजाम भी चौकस था। पंशाखे और लालटेनें झक-झक कर रही थीं। इस ठाट से जुलूस निकला। सारा शहर यह बरात देखने को फटा पड़ता

था। लोग चक्कर में थे कि अच्छी बरात है, दूल्हे का पता ही नहीं। बारात क्या, गोरख-धंधा है।

जब जुलूस बगिया में पहुँचा, तो आज़ाद हाथी पर सवार होकर सफशिकन को काबुक में बिठाए हुए चले।

खोजी — मसल मशहूर है — 'सौ बरस के बाद घूरे के भी दिन बहुरते हैं।' हमारे दिन आज बहुरे कि आप आए और शाह जी को लाए। नवाब के यहाँ सन्नाटा पड़ा हुआ था। सफशिकन के गम में सब पर मुर्दनी छाई हुई थी। बस, लोग यही कहते थे कि आज़ाद साँड़नी ले कर लंबे हुए। एक मैं ही तुम्हारी हिमायत किया करता था।

मीर साहब — जी हाँ, हम भी आप ही की तरफ से लड़ते थे, हम और यह, दोनों।

आज़ाद — भई, कुछ न पूछो। खुदा जाने, किन-किन जंगलों की खाक छानी, तब कहीं यह मिले।

खोजी — यहाँ लोग गप उड़ा रहे थे। किसी ने कहा — भाँड़ों के यहाँ नौकरी कर ली। कोई तूफान बाँधता था कि किसी भठियारी के घर पड़ गए। मगर मैं यही कहे जाता था कि वह शरीफ आदमी हैं। इतनी बेहयाई कभी न करेंगे।

खोजी और मीर साहब, दोनों आज़ाद को मिलाना चाहते थे, मगर वह एक ही उस्ताद। समझ गए कि अब नवाब के यहाँ हमारी भी तूती बोलेगी, तभी ये सब हमारी खुशामद कर रहे हैं। बोले — अजी, रात जाती है या आती है? अब देर क्यों कर रहे हो? पंशाखे चढ़ाओ। घोड़े चलाओ। जब जुलूस तैयार हुआ, तो आज़ाद एक हाथी पर जा डटे। बटेर की काबुक को आगे रख लिया। खोजी और मीर साहब को पीछे बिठाया और जुलूस चला। चौक में तो पहले ही से हुल्लड़ था कि नवाब वाला बटेर बड़ी शान से आ रहा है। लाखों आदमी चौक में तमाशा देखने को डटे हुए थे, छतें फटी पड़ती थीं। बाजे की आवाज जो कानों में पड़ी, तो तमाशाई लोग उमड़ पड़े। निशान का हाथी झंडे का फुरेरा उड़ाता सामने आया। लेकिन ज्यों ही चौक में पहुँचा, वैसे ही दीवानी के दो मजकूरियों ने डाँटकर कहा — हाथी रोक ले। आज़ाद के नाम वारंट आया है।

लोगों के होश उड़ गए। फीलबान ने जो देखा कि सरकारी आदमी लाल-लाल पगिया बाँधे, काली-काली वरदी डाटे, खाकी पतलून पहने, चपरास लटकाए हाथी रोके खड़े हैं, तो सिटपिटा गया और हाथी को जिधर उन्होंने कहा उधर ही फेर दिया। जुलूस में हुल्लड़ मच गया। कोई तख्त लिए भागा जाता है, कोई झंडे लिए दबका फिरता है। घोड़े थान पर पहुँचे। तामदान और

पालकियों को छोड़कर कहार अड्डे पर हो रहे। बाजेवाले गलियों में घुस गए।

आज़ाद और खोजी मजकूरियों के साथ चले, तो शहर के बाहर जा पहुँचे। एका एक हाथी जो गरजा, तो खोजी और मीर साहब पीनक से चौंक पड़े।

खोजी — ऐं, पंशाखे चढ़ाओ, पंशाखे! अबे, यह क्या अंधेर मचा रखा है! जरा यों ही आँख झपक गई, तो सारी करी-कराई मेहनत खाक में मिला दी। अब मैं उतर कर कोड़े फटकारूँगा।, तब मानेंगे। लातों के आदमी कहीं बातों से मानते हैं!

मीर साहब — हैं, हैं! ओ फीलबान! यह हाथी क्या आतशबाजी से भड़कता है? बढ़ा ले चलो। मील-मील, धत-धत। अरे भई खोजी, यह किस मैदान में आ निकले? आखिर यह माजरा क्या है भाई?

खोजी — पंशाखे चढ़ाओ, पंशाखे। और इन बाजेवालों को क्या साँप सूँघ गया है? जरा जोर-जोर छेड़े जाओ। अब तो विहाग का वक़्त है, बिहाग का।

मीर साहब — अजी, आँखें तो खोलिए, रोशनी का चिराग गुल हो गया। मुसीबत में आ फँसे। आप वही बेवक़्त की शहनाई बजा रहे हैं। इस जंगल में आपको बिहाग की धुन समाई है।

खोजी — पंशाखे चढ़ाओ पंशाखे। नहीं, मैं कच्चा पैसा तो दूँगा नहीं। झप से चढ़ाना तो पंशाखे। शाबाश है बेटा!

मीर साहब तो जले-भुने बैठे ही थे; खोजी ने जब कई बार पंशाखों की रट लगाई तो वह झल्ला उठे। खोजी को हाथी पर से नीचे ढकेल ही तो दिया। अरा-रा-रा-धंम। कौन गिरा? जरी टोह तो लेना, कौन गिरा?

आज़ाद — तुम गिरे, तुम। आप ही तो लुढ़के हैं, टोह क्या लें?

खोजी — अरे, मैं! यह तो कहिए, हड्डी-पसली बच गई? यारो, जरी देखना तो, हमारा सिर बचा या नहीं?

मजकूरी — बचा है, बचा। नहीं फूटा। पहिरि लिहिन सुथना, और चले फारसी छाँटे। ई बोझ उठाव।

खोजी — हाँय-हाँय, कोई मजदूर समझा है! शरीफ और पाजी को नहीं पहचानता? ले, अब उतारता है बोझ, या नाले में फेंक दूँ? ओ गीदी! लाना तो मेरी करौली। क्या मैं गधा हूँ?

मीर साहब — गधे नहीं, तो और हो कौन?

मजकूरी — तैं को हँस रे? अरे तैं को हँस? उतर हाथी पर से। उतरत है कि हम आवन फिर, तैं अस न मनि है।

मीर साहब — कहता किससे है? कुछ बेधा तो नहीं है? कुछ नाविर हैं, हम, लो आए।

मजकूरी — अच्छा, तो यह बोझ उठा। थरिया-लोटिया रख मूड़े पर और अगुवा।

मीर साहब ने नीचे उतर कर देखा, तो सरकारी प्यादा वरदी डाटे खड़ा है। लगे थर-थर काँपने। चुपके से बोझ उठाया और मचल-मचल कर चलने लगे। दोनों मजकूरी हाथी पर जा बैठे। खोजी और मीर साहब, दोनों लदे-फँदे गिरते पड़ते जाने लगे।

खोजी — वाह री किस्मत। क्यों जी मीर साहब, हम तो खुदा की याद में थे, तुमको क्या हुआ था?

मीर साहब — जहाँ आप थे, वहीं मैं भी था। यह सारी शरारत आज़ाद की है।

आज़ाद — जरी चोंच सम्हाले हुए, नहीं मैं उतरता हूँ।

चलते-चलते तड़का हो गया। खोजी बोले — लो भाई, हमारा तो भोर ही हो गया। अब जो बोझ उठाकर ले चले, उसकी सत्तर पुश्त पर लानत। यह कह कर बोझ फेंक दिया। जब जरा दिन चढ़ा, तो गोमती के किनारे पहुँचे। एक मजकूरी ने कहा — ओ फीलबान, हाथी रोक दे, नहाए लेई।

फीलबान — अरे तो नहा लेना, कैसे गवँरदल हो?

आज़ाद — कहो खोजी, नहाओगे?

खोजी — यों ही न गला घोंट डालो?

नदी के पार पहुँचे तो चंडूबाज की सूरत नजर पड़ी।

चंडूबाज — बड़े भाई, सलाम। कहो, खैर सल्लाह? आँखें तुमको ढूँढ़ती थीं, देखने को तरस गए। अब कहो, क्या इरादे हैं? अलारक्खी ने यह खत दिया है, पढ़कर चुपके से जवाब लिख दो।

आज़ाद ने खत खोला और पढ़ा —

'क्यों जी, इसी मुँह से कहते थे कि तुमसे ब्याह करूँगा? तुम तो चकमा देकर सिधारे और यहाँ दिल कराहा करता है। नहा धोकर कुरान शरीफ पर हाथ धरो कि ब्याह का वादा नहीं किया था? क्यों नाहक इंसाफ का गला कुंद छुरी से रेतते हो? इस खत का जवाब लिखना, नहीं मैं अपनी जान दे दूँगी।'

आज़ाद ने जवाब लिखा —

'सुनो बीबी, हम कोई उठाईगीरे नहीं हैं। हम ठहरे शरीफ, तुम हो भठियारी। भला, फिर हमसे क्योंकर बने। अब उस खयाल को दिल से निकाल दो। तुम्हारे कारण मजकूरियों की कैद में हूँ। तुम्हें मुँह न लगाता, तो इतना जलील क्यों होता?'

चंडूबाज तो खत ले कर रवाना हुए, उधर का किस्सा सुनिए। नवाब झूम-झूमकर बगीचे में टहल रहे थे, आँखें फाड़-फाड़कर देखते थे कि जुलूस अब आया, और अब आया। एकाएक चोबदार ने आकर कहा – खुदाबन्द, लुट गए! लुट गए! वह देखो साहब तुम्हारे, लुट गए।

नवाब – अरे कुछ मुँह से कहेगा भी, क्या गजब हो गया?

चोबदार – खुदावंद, बरात को उठाईगीरों ने लूट लिया!

नवाब – बरात? बरात किसकी? कहीं शाह जी की सवारी से तो मतलब नहीं है? उफ्, हाथों के तोते उड़ गए।

चोबदार – वह देखो साहब तुम्हारे, बारात चली आ रही थी। तमाशाई इतने जमा थे कि छतें फटी पड़ती थीं। देखो साहब तुम्हारे, जैसे बादशाह की सवारी हो। मुदा जैसे ही चौक में पहुँचे कि देखो साहब तुम्हारे, दो चपरासियों ने हाथी को फेर दिया। बस साहब तुम्हारे, सारी बरात तितर-बितर हो गई। कहाँ तो बाजे बज रहे थे, कहाँ साहब तुम्हारे, सन्नाटा छा गया।

नवाब – भला शाह जी कहाँ है?

चोबदार – हुजूर, शाह जी को लिए फिरते हैं। यहाँ देखो साहब तुम्हारे -

नवाब — कोई है, इधर आना, इसके कल्ले पर खड़े हो, जितनी बार इसके मुँह से 'वह देखो साहब तुम्हारे' निकले, उतने जूते इस पर पड़ें। गधा एक बात कहता है, तो तीन सौ साठ दफे 'ओ देखो साहब तुम्हारे।'

चाबुक — सवार-हुजूर, इस वक़्त गुस्से का मौका नहीं, कोई ऐसी फिक्र कीजिए कि शाह जी तो छूट आएँ।

नवाब — ऐं, क्या वह भी गिरफ्तार हो गए?

सवार — जी, आज़ाद, खोजी, हाथी, सबके सब पकड़ लिए गए?

नवाब — तो यह कहिए, बेड़े का बेड़ा गया है। हमें यह क्या मालूम था भला, नहीं तो एक गारद साथ कर देते। आखिर, कुछ मालूम भी हुआ कि यह धर-पकड़ कैसी थी? सच तो यों है कि इस वक़्त मेरे हाथ-पाँव फूल गए। रुपए हमसे लो, और दौड़-धूप तुम लोग करो।

मुसाहबों की बन आई। अब क्या पूछना है! आपस में हँड़िया पकने लगी। वल्लाह, ऐसा मौका फिर तो हाथ आएगा नहीं। जो कुछ लेना हो, ले लो, और उम्र भर चैन करो। इस वक़्त यह बौखलाया हुआ है। जो कुछ कहोगे, बेधड़क दे निकलेगा। लेकिन, एक काम करो, दस-पाँच आदमी मिल-जुल कर बातें बनाओ। एक आदमी के किए कुछ न होगा। कहीं भड़क गया,

तो गजब ही हो जाएगा। खुदा करे रोज इसी तरह वारंट जारी रहे। मगर इतना याद रखिएगा कि कहीं अन्दर खबर हुई, तो बेगम साहब छछूँदर की तरह नाचेंगी। फिर करते-धरते कुछ न बन पड़ेगा।

मुबारककदम दरवाजे के पास खड़ी सब सुन रही थी। लपक कर गई और छोटी बेगम को बुला लाई। जरी जल्दी-जल्दी कदम उठाइए, ये सब जाने क्या वाही-तबाही बक रहे हैं। मुँह झुलस दे पकड़ के। बेगम साहबा दबे पाँव गईं, तो सुन कर मारे गुस्से के लाल हो गईं और नवाब को अन्दर बुलाया।

मुबारककदम — ये हुजूर के मुसाहब, अल्लाह जानता है, एक ही अड़ीमार हैं, जिनके काटे का मंतर ही नहीं। जो है, वह झूठों का सरदार। मगर हुजूर उनको क्या जाने क्या समझते हैं। पछुआ हवा चलती, तो ठंडा पानी पीते, अब दिन भर शोरे का झला पानी मिलता है पीने को, और खुदा ने न्यामत खाने को दी। फिर उन्हें दूर की न सूझे, तो किसे सूझे।

बेगम — ऐसे ही झूठे खुशामदियों ने तो लखनऊ का सत्यानाश कर दिया।

नवाब — यह आज क्या है, क्या?

बेगम — है क्या? तुम्हारे मुसाहब मुँह पर तो तुम्हारी झूठी तारीफें करते हैं और पीठ पीछे तुम्हें गालियाँ सुनाते हैं। इन सबको दुत्कार क्यों नहीं देते?

इधर तो ये बातें हो रही थीं, उधर मजकूरियों ने आज़ाद को एक बाग में उतारा।

खोजी — मियाँ फीलबान, जरी जीना लगा देना।

फीलबान — अब आपके लिए जीना, बनवाऊँ, ऐसे तो खूबसूरत भी नहीं हैं आप?

मीर साहब — जीना क्या ढूँढ़ते हो, हाथी पर से कूदना कौन सी बड़ी बात है।

यह कह कर मीर साहब बहुत ही अकड़कर दुम की तरफ से कूदे, तो सिर नीचे और पाँव ऊपर। रोक रोक, हत् तेरे फीलबान की! सच है, गाड़ीवान, शुतुरवान, कोचवान जितने वान है, सब शरीर। लाख बचे, मगर औंधे हो गए। हमारा कल्ला ही जानता है। खट से बोला। वह तो कहिए, मैं ही ऐसा बेहया हूँ कि बातें करता हूँ, दूसरा तो पानी न माँगता।

खोजी खिलखिला कर हँस पड़े। अब कहिए, हमने जो जीना माँगा, तो हमें बनाने लगे।

मीर साहब — मियाँ, उतरे हो कि दूँ धक्का।

खोजी बेचारे जान पर खेल कर जैसे ही उतरने को थे कि हाथी उठ खड़ा हुआ। या अली, या अली, बचाइयो, खुदा, मैं बड़ा गुनहगार हूँ।

इतना कह चुके थे कि अररर-धम, जमीन पर आकर ढेर हो गए।

मीर साहब ने कहा — शाबाश मेरे पट्ठे, ले झपाके से उठ तो जा।

खोजी — यहाँ हड्डी-पसली का पता नहीं, आप फरमाते हैं, उठ तो जा! कितने बेदर्द हो!

दो आदमी वहीं बैठे कुछ इधर-उधर की बातें कर रहे थे। खोजी और मीर साहब तो लकड़ियाँ खोजने लगे कि और नहीं तो सुलफा ही उड़े और आज़ाद इन दोनों अजनबियों की बातें सुनने लगे -

एक — भई, आखिर मुँह फुलाए क्यों बैठे हो? क्या मुहर्रम के दिनों में पैदा हुए थे?

दूसरा — हाँ यार, क्यों न कहोगे। यहाँ जान पर बनी है, आप मुहर्रम लिए फिरते हैं। हमने बी अलारक्खी मे कई रुपए महीने भर के वादे पर लिए थे। उसको दो साल होने आए। अब वह

कहती है, यह हमारे रुपए दो, या हमारे मुकदमें में गवाह हो जाओ। नहीं तो हम दाग देंगे और बड़ा घर दिखाएँगे। वहाँ चक्की पीसनी होगी। सोचते हैं, गवाही दें, तो किस बिरते पर। मियाँ आज़ाद की तो सूरत ही नहीं देखी। और न दें, तो वह नालिश जड़े देती हैं। बस, यही ठान ली है कि आज शाम को झप से चल खड़े हों। रेल को खुदा सलामत रखे कि भागूँ तो पता भी न मिले।

दूसरा — अरे मियाँ, वह तरकीब बताऊँ, जिसमें 'साँप मरे न लाठी टूटे।' तुम मियाँ आज़ाद से मिल जाओ; उधर अलारक्खी से भी मिले रहो। गवाही में गोल-मोल बातें कही और मूँछों पर ताव देते हुए अदालत से आओ। बचा, तुम हो किस भरोसे पर। चार-चार गंडे में तुमको गवाह मिलते हैं, जो तड़ से झूठा कुरान या झूठी गंगा उठा लें, हमको कोई दो ही रुपए दे, कुरान उठवा ले। जो चाहे कहवा ले। फिर वाही हो, खासे दस मिलते हैं, दस! तुम्हें झूठ-सच से मतलब? सच वही है, जिसमें कुछ हाथ लगे। भई, यह तो कलयुग है। इसमें सच बोलना हराम है। और जो कुत्ते ने काटा हो, तो सच ही बोलिए।

पहला — हजरत सुनिए, सच फिर सच है, और फिर झूठ। इतना याद रखिएगा।

दूसरा — अबे जा, लाया वहाँ से झूठ फिर झूठ है। अरे नादान, इस जमाने में झूठ ही सच है। एक जरा सा झूठ बोलने में दस चेहरेशाही आए गए होते हैं। जरा जबान हिला दी, और दस रुपए हजम। दस रुपए कुछ थोड़े नहीं होते। हमें किसी से तुम दो गंडे ही दिलवा दो। देखो, हलफ उठा लेते हैं या नहीं।

आज़ाद — क्यों भई, और जो अपनी बात से फिर जाय, तो फिर कैसी हो? औरत की बात का एतबार क्या? बेहतर है कि अलारक्खी से स्टाम्प के कागज पर लिखवा लो।

पहला — वल्लाह, क्या सूझी है।

दूसरा — कैसा स्टाम्प जी? हम क्या जानें क्या चीज है, बातें कर रहे हैं, आप आए वहाँ से स्टाम्प पर लिखवा लो! क्या हम कोई चोर हैं!

दोनों मजकूरियों ने उपले जलाए और खाना पकाने लगे। आज़ाद ने देखा, भागने का अच्छा मौका है। दोनो की आँख बचा कर चल दिए, चट से स्टेशन पर जा कर टिकट ले लिया और एक दर्ज़े में जा बैठे। दो-तीन स्टेशनों के बाद रेल एक बड़े स्टेशन पर ठहरी। मियाँ आज़ाद ने असबाब को बग्घी पर लादा और चल खड़े हुए। खट से सराय में दाखिल। एक कोठरी में जा डटे और बिछौना बिछा, खूब, लहरा-लहरा कर गाने लगे —

वहशत अयाँ है खाक से मुझ ख़ाकसार की,
भड़के हिरन भी सूँघ के मिट्टी मजार की।

एकाएक एक शाह साहब फालसई तहमत बाँधे, शरबती का केसरिया कुरता पहने, माँग निकाले, आँखों में सुरमा लगाए, एक जवान, चंचल हसीन औरत के साथ आकर आज़ाद की चारपाई पर डट गए और बोले — बाबा, हमारा नाम कुदमी शाह है। हसीनों पर जान देना हमारा खास काम है। इस वक़्त आपने जो यह शेर पढ़ा, तो तबीयत फड़क गई। मगर बिना शराब के गाने का लुत्फ कहाँ? शौक हो, तो निकालूँ प्याला और बोतल, खूब रंग जमे और सरूर गठे।

आज़ाद — मैं तो तौबा कर चुका हूँ।

शाह जी — बच्चा, तौबा कैसी? याद रख, तौबा तोड़ने के लिए और कसम खाने के लिए है।

वह कह कर शाह जी ने झोली से सौंफ की विलायती मीठी शराब निकाली और बोले —

सब्ज बोतल में लाल-लाल शराब;
खैर ईमान का खुदा हाफिज।
शाह जी मैकदे में बैठे हैं;
इस मुसलमान का खुदा हाफिज।

यह कह कर उस जवान औरत की तरफ देख कर शराब को प्याले में ढालने का इशारा किया। नाजनीन एक अदा से आकर आज़ाद की चारपाई पर डट गई और शराब का प्याला भरने लगी। भठियारी ने जो यह हाल देखा, तो बिजली की तरह चमकती हुई आई और कड़क कर बोली 'ऐ वाह मियाँ, अठारह-अठारह साँड़ों को लेकर खटिया पर बैठते हो, और जो पाटी खट से टूट जाय, तो किसके माथे? ऐसे मुसाफिर भी नहीं देखे। एक तो खुद ही दुबले पतले हैं, दूसरे दस-दस को ले कर बैठते हैं। ले चारपाई खाली कीजिए, हम ऐसे किराए से बाज आए! आज़ाद की तो भठियारियों के नाम से रूह काँपती थी, चुपके से चारपाई खाली कर दी और जमीन पर दरी बिछवा कर आ बैठे।

नाजनीन ने प्याला आज़ाद की तरफ बढ़ाया। पहले तो बहुत नहीं-नहीं करते रहे, लेकिन जब उसने कसमें खिला दीं, तो मजबूर हो कर प्याला लिया और चढ़ा गए। दौर चलने लगा। वह भर-भर के जाम पिलाती जाती थी और आज़ाद के जिस्म में नई जान आती जाती थी। अब तो वह मजे में आकर खुल खेले, खूब पी। 'मुफ्त की शराब काजी को भी हलाल है।' यहाँ तक कि आँखें झपकने लगीं, जबान लड़खड़ाने लगी। बहकी-बहकी बातें करने लगे और आखिर नशे में चूर हो कर धड़ से गिरे। शाह जी तो इस घात में आए ही थे, झपाक से कपड़े बाँधे, जमा-जथा ली और

चलता धंधा किया। औरत भी उनके साथ-साथ लंबी हुई। मियाँ आज़ाद रात भर बेहोश पड़े रहे। तड़के आँख खुली, तो हाल पतला। न शाह साहब हैं, न वह औरत, न दरी। जमीन पर पड़े लोट रहे हैं। प्यास के मारे गले में काँटे पड़े जाते हैं। उठे, तो लड़खड़ा कर गिर पड़े, फिर उठे, फिर मुँह के बल गिरे। बारे बड़ी मुश्किल से खड़े हुए, पानी ला कर मुँह-हाथ धोये और खूब पेट भर कर पानी पिया, तो दिल को तसकीन हुई। एकाएक चारपाई पर निगाह पड़ी। देखा सिरहाने एक खत रखा हुआ है। खोल कर पढ़ा —

'क्यों बच्चा! और पियो! अब पियोगे, तो जियोगे भी नहीं। कितने बड़े पियक्कड़ हो, बोतल की बोतल मुँह से लगा ली। अब अपनी किस्मत को रोओ। धत तेरे की! क्या मजे से माशूक के पास बैठे हुए गट-गट उड़ा रहे थे। गठरी घूम गई न! भई, हमारी खातिर से एक जाम तो लो। कहो, तो उसी के हाथ भेजूँ। ले, अब हम जताए देते हैं, खबरदार, मुसाफिर, का एतबार न करना, और सफर में तो किसी पर भरोसा रखना ही नहीं। देखो, आखिर हम ले-दे कर चल दिए। उम्र भर सफर किया मगर आदमी न बने।'

यह खत पढ़कर मियाँ आज़ाद पर सैकड़ों घड़े पड़ गए। बहुत कुछ गुल-गपाड़ा मचाया, सराय भर को सिर पर उठाया, भठियारे को दो-चार चपतें लगाई, मगर माल न मिला, न मिला। लोगों ने

सलाह दी कि जाओ, थाने पर रपट लिखाओ। गिरते-पड़ते थाने में पहुँचे, तो क्या देखते हैं, थानेदार साहब बैठे हाँक रहे हैं — मैंने फलाँ गाँव में अट्ठारह डाकुओं से मुकाबिला किया और चौंतीस बरस की चोरी बरामद की। सिपाही हाँ जी में हाँ मिलाते और भर्रे देते जाते थे कि आप ऐसे और आप वैसे, और आप डबल वैसे। इतने में आज़ाद पहुँचे। सलाम-बन्दगी हुई।

थानेदार — कहिए, मिजाज कैसे हैं?

आज़ाद — मिजाज फिर पूछ लेना, अब गठरी दिलवाओ उस्ताद जी!

थानेदार — उस्ताद जी किस भकुए का नाम है, और गठरी कैसी? आप भंग तो नहीं पी गए?

आज़ाद — जरा जबान सँभाल कर बातें कीजिएगा। मैं टेढ़ा आदमी हूँ।

थानेदार — अच्छे-अच्छे टेढ़ों को तो हमने सीधा बनाया, आप हैं किसी खेत की मूली? कोई है? वह हुलिया तो मिलाओ, हम तो इन्हें देखते ही पहचान गए।

ज्ञानसिंह ने हुलिया जो मिलाया, तो बाल का भी फर्क नहीं। पकड़ लिए गए, हवालात में हो गए। मगर एक ही छटे हुए आदमी

थे। कांस्टेबल को वह भर्रे दिए, बातों-बातों में दोस्ती पैदा कर ली कि वह भी उनकी दम भरने लगा। अब उसे फिक्र हुई कि इनको हवालात से टहला दे। आखिर रात को पहरेदार की आँख बचा कर हवालात का दरवाजा खोल दिया। आज़ाद चुपके से खिसक गए। दाएँ-बाएँ देखते दबे-पाँव जाने लगे। जरा आहट हुई, और इनके कान खड़े हुए। बारे खुदा-खुदा करके रास्ता कटा। सराय में पहुँचे और भठियारी को किराया दे कर स्टेशन पर जा पहुँचे।

21

मियाँ आज़ाद रेल पर बैठ कर नाविल पढ़ रहे थे कि एक साहब ने पूछा — जनाब, दो-एक दम लगाइए, तो पेचवान हाजिर है। वल्लाह, वह धुआँधार पिलाऊँ कि दिल फड़क उठे। मगर याद रखिए, दो दम से ज्यादा की सनद नहीं। ऐसा न हो, आप भैंसिया-जोंक हो जायँ।

आज़ाद ने पीछे फिर कर देखा, तो एक बिगड़े-दिल मजे से बैठे हुक्का पी रहे हैं। बोले — यह क्या अंधेर है भाई? आप रेल ही

पर गुड़गुड़ाने लगे; और हुक्का भी नहीं, पेचवान। जो कहीं आग लग जाय, तो?

बिगड़े दिल — और जो रेल ही टकरा जाय, तो? आसमान ही फट पड़े, तो? इस 'तो' का तो जवाब ही नहीं है। ले, पीजिएगा, या बातें बनाइएगा?

आज़ाद — जी, मुझे इसका शौक नहीं है।

यह कह कर फिर नाविल पढ़ने लगे। थोड़ी देर के बाद एक स्टेशन पर रेल ठहरी, तो खरबूजे और आम पटे हुए थे। खैंचियाँ की खैंचियाँ भरी रखी थीं। बोले — क्यों भई, स्टेशन है या आम की दुकान? या खरबूजे की खान? आमपुर है या खरबूजानगर?

एक मुसाफिर बोले — अजी हजरत, नजर न लगाइए। अब की फसल तो खा लेने दीजिए। इसी पर तो जिंदगी का दार-मदार है। खेत में बेल बढ़ी और यहाँ कच्चे घड़े के चढ़ी। आम बाजार में आए और ई जानिब बौराए। आम और खरबूजे पर उधार खाए बैठे हैं। कपड़े बेच खायँ, बरतन नखास मे पटील जाएँ, बदन पर लत्ता न रहे, चूल्हे पर तवा न रहे, उधार लें, सुथना तक गिरवी रखें, बगड़ा करें, झगड़ा करें, मगर खरबूजे पर जरूर चले। तड़का हुआ, चाकू हाथ में लिया और खरबूजे की टोह में मचला। छुरी बाजार है कि महक रहा है, खरीदार हैं कि टूटे

पड़ते हैं। रसीली खटकिन जवानी की उमंग में अच्छे-अच्छों को डाँट बताती है। मियाँ, अलग रहो, खैंची पर न गिरे पड़ो। बस, दूर ही से भाव-ताव करो। लेना एक न देना दो, मुफ्त का झंझट। ई जानिब ने एक तराशा, दूसरा तराशा, तीसरा तराशा, खूब चखे। आँख चूकी, तो दो-चार फाँके मुँह में दबाई और चलते-फिरते नजर आए। आदमी क्या, बन्दर हो गए। उधर खरबूजे गए और आम की फसल आई, मुँह-माँगी मुराद पाई। जिधर देखिए, ढेर के ढेर चुने हैं। यहाँ सनक सवार हो गई। देखा और झप से उठाया; तराशा और खाया। माल-असबाब के कूड़े किए और बेगिनती लिए। खाने बैठे, तो दो दाढ़ी खा गए चार दाढ़ी खा गए।

आज़ाद — यह दाढ़ी खाने के क्या माने?

मुसाफिर — अजी हजरत, आम इतने खाए कि गुठली और छिलके दाढ़ी तक पहुँचे।

मुसाफिर वह डींग हाँक ही रहे थे कि रेल ठहरी और एक चपरासी ने आकर पूछा — फलाँ आदमी कहाँ है?

आज़ाद — इस कमरे में इस नाम का कोई आदमी नहीं है।

मुसाफिर ने चपरासी की सूरत देखी; तो चादर से मुँह लपेट कर खिड़की की दूसरी तरफ झाँकने लगे। चपरासी दूसरे दर्जे में चला गया।

आज़ाद — उस्ताद, तुमने मुँह जो छिपाया, तो मुझे शक होता है कि कुछ दाल में काला जरूर है। भई, और किसी से न कहो, यारों से तो न छिपाओ।

मुसाफिर — मुँह क्यों छिपाऊँ जनाब, क्या किसी का कर्ज खाया है, या माल मारा है, या कहीं खून करके आए हैं?

आज़ाद — आप बहुत तीखे हूजिएगा, तो धरवा ही दूँगा। ले बस, कच्चा चिट्ठा कह सुनाओ, वरना मैं पुकारता हूँ फिर।

मुसाफिर — अरे नहीं-नहीं ऐसा गजब भी न करना। साफ-साफ बता दें? हमने अबकी फसल में खरबूजे और आम खूब छक कर चखे, मगर टका कसम को पास नहीं। पूछो, लाएँ जिसके घर से? यहाँ पहले तो कर्ज लिया, फिर एक दोस्त का मकान अपने नाम से पटील डाला। अब नालिश हुई है, सो हम भागे जाते हैं।

आज़ाद — ऐसे आम खाने पर लानत! कैसे नादान हो?

मुसाफिर — देखिए, नादान-वादान न बनाइएगा। वरना बुरी ठहरेगी!

आज़ाद — अच्छा बुलाऊँ चपरासी को?

मुसाफिर — जनाब, दस गालियाँ दे लीजिए, मगर जान तो छोड़ दीजिए।

इतने में एक मुसाफिर ने कई दर्जे फाँदे, यह उचका, यह आया यह झपटा और धम से मियाँ आज़ाद के पास हो रहा।

मुसाफिर — गरीबपरवर!

आज़ाद — किससे कहते हो? हम गरीबपरवर नहीं अमीरपरवर हैं; गरीबपरवर हमारे दुश्मन हों।

मुसाफिर — अच्छा साहब, आप अमीर के बाप-परवर, दादा-परवर सही। हमारा आपसे एक सवाल है।

आज़ाद — सवाल स्कूल के लड़कों से कीजिए, या वकालत के उम्मीदवारों से।

मुसाफिर — दाता, जरा सुनो तो।

आज़ाद — दाता भंडारी को कहते हैं। दाता कहीं और रहते होंगे।

मुसाफिर — एक रुपया दिलवाओ, तो हजार दुआएँ दूँ।

आज़ाद — दुआ के तो हम कायल ही नहीं।

मुसाफिर — तो फिर गालियाँ सुनाऊँ?

आज़ाद — गालियाँ दो, तो बत्तीसी पेट में हो।

मुसाफिर — अरे गजब, लो स्टेशन करीब आ गया। अब बेइज्जत होंगे।

आज़ाद — यह क्यों!

मुसाफिर — क्यों क्या, टिकट पास नहीं, घर से दो रुपए ले कर चले थे, रास्ते में लँगड़े आम दिखाई दिए। राल टपक पड़ी। आव देखा न ताव, दो रुपए टेंट से निकाले और आम पर छुरी तेज की। अब गिरह में कौड़ी नहीं, 'पास न लत्ता, पान खायँ अलबत्ता।'

आज़ाद — वाह रे पेटू! भला यहाँ तक आए क्योंकर?

मुसाफिर — इनकी न पूछिए। यहाँ सैकड़ों ही अलसेटें याद हैं।

इतने में रेल स्टेशन पर आ पहुँची। टिकट-बाबू की काली-काली टोपी और सफेद चमकती हुई खोपड़ी नजर आई। टिकट! टिकट! टिकट निकालो। मियाँ आज़ाद तो टिकट देकर लंबे हुए; बाबू ने इनसे टिकट माँगा, ते लगे बगलें झाँकने। वेल, तुम्हारा टिकट कहाँ?

मुसाफिर — बाबू जी, हम पर तो अब की साल टिकस-विकस नहीं बँधा।

बाबू — यू फूल! तुम बेटिकट के चलता है उल्लू!

मुसाफिर — क्या आदमी भी उल्लू होते हैं? इधर तो देखने में नहीं आया, शायद आपके बंगाल में होता हो।

टिकट-बाबू ने कानिस्टिबिल को बुला कर इनको हवालात भिजवाया। आम खाने का मजा मिला, मार और गालियाँ खाईं, सो घाते में।

घटाटोप अँधेरा छाया है, काला मतवाला बादल झूम-झूम कर पूरब की तरफ से आया है। वह घनेरी घटा कि हाथ मारा न सूझे। अँधेरे ने कुछ ऐसी हवा बाँधी कि चाँद का चिराग गुल हो गया। यह रात है कि सियहकारों का दिल? हर एक आदमी जरीब टेकता चल रहा है, मगर कलेजा दहल रहा है कि कहीं ठोकर न खायँ, कहीं मुँह के बल जमीन पर न लुढ़क जायँ। मियाँ आज़ाद स्टेशन से चले, तो सराय का पता पूछने लगे। एकाएक किसी आदमी से सिर टकरा गया। वह बोला — अंधा हुआ है क्या? रास्ता बचा के चल, पतंग रखे हुए हैं, कहीं फट न जायँ।

आज़ाद — ऐं, रास्ते में पतंग कैसे? अच्छी बेपर की उड़ाई।

पतंगबाज — भई वल्लाह, क्या-क्या बिगड़े-दिलों से पाला पड़ जाता है! हम तो नरमी से कहते हैं कि मियाँ जरी दबा कर जाओ, और आप तीखे हुए जाते हैं।

आज़ाद — अरे नादान, यहाँ हाथ-मारा सूझता ही नहीं, पतंग किस भकुए को सूझेंगे।

पतंगबाज — क्या रतौंधी आती है?

आज़ाद — क्या पतंग बेचने जा रहे हो?

पतंगबाज — अजी, पतंग बेचें हमारे दुश्मन। हम खुद घर के अमीर हैं। यहाँ से चार कोस पर एक कस्बा है, वहाँ के रईस हमारे लँगोटिए यार हैं! उनसे हमने पतंगों का मैदान बदा था। हम अपने यारों के साथ बारहदरी के कोठे पर थे और वह अपने दीवानखाने की छत पर। कोई सात बजे से इधर भी कनकव्वे छपके, उधर भी बढ़े। खूब लमडोरे लड़े। पाँच रुपए जी पेच बदा था। यार, एक पतंग खूब लड़ा। हमारा माँगदार बढ़ा था और उधर का गोल दुपन्ना। दस-बारह मिनट दाँव घात के बाद पेच पड़ गए। पहले तो हमारे कन्ने नथ गए, हाथें के तोते उड़ गए; समझे, अब कटे और अब कटे; मगर वाह रे उस्ताद, ऐसे कन्ने छुड़ाए कि वाह जी वाह! फिर पेच लड़ गए। पंसेरियों डोर पिला दी, कनकव्वा आसमान से जा लगा। जो कोई दम और ठहराता

तो वहीं जल-भुन कर खाक हो जाता। उतने में हमने गोता देकर एक भबका जो दिया, तो वह काटा। अब कोई कहता है कि हत्थे पर से उखड़ गयाः कोई कहता है, डोर उलझ गई थी। एक कनकव्वे से हमने कोई नौ दस काटे। मगर उनकी तरफ कोई उस्ताद आ गया — उसने खींच के वह हाथ दिखाए कि खुदा की पनाह! हाथ ही टूटें मरदूद के! छक्के छुड़ा दिए। कभी सड़-सड़ करता हुआ नीचे से खींच गया! कभी ऊपर से पतंग पर छाप बैठा। आखिर मैंने हिसाब जो लगाया, तो पचास रुपए के पेटे में आ गया। मगर यहाँ टका पास नहीं। हमने भी एक माल तक लिया है, घर के सोने के कड़े किसी के हाथ पटीलेंगे, कोई दस तोले के होंगे, चुपके से उड़ा दूँगा, किसी को कानों-कान खबर भी न होगी।

आज़ाद — आपके वालिद क्या पेशा करते हैं?

पतंगबाज — जमींदार हैं। मगर मुझे जमींदारी से नफरत है। जमींदार की सूरत से नफरत है, इस पेशे के नाम से नफरत है! शरीफ आदमी और लट्ठ लिए हुए मेड़-मेड़ घूम रहे हैं। हमसे यह न होगा। हम कोई मजदूर तो हैं नहीं। यह गँवारों ही को मुबारक रहे।

आज़ाद — हुजूर ने तालीम कहाँ तक पाई है? आप तो लंदन के अजायबखाने में रखने लायक हैं।

पतंगबाज — यहीं से तहसीली स्कूल में कुछ दिन तक घास छीली है।

आज़ाद — क्या घसियारा बनने का शौक चर्राया था?

पतंगबाज — जनाब, कोई छह-सात बरस पढ़े; मगर गंडेदार पढ़ाई, एक दिन हाजिर तो दस दिन नागा। पहले दर्जे का इम्तिहान दिया, मगर लुढ़क गए। अब्बाजान ने कहा, अब हम तुम्हें नहीं पढ़ाएँगे। खैर, इस झंझट से छुट्टी पाई तो पेशेकार साहब के लड़के से दोस्ती बढ़ाई। तब तक हम निरे जंगली ही थे। हद यह कि हुक्का पीना तक नहीं जानते थे। तो वजह क्या? अच्छी सोहबत में कभी बैठे ही न थे। छोटे मिर्जा बेचारे ने हमें हुक्का पीना सिखाया। फिर तो उनके साथ चंडू के छींटे उड़ने लगे। पहले आप मुझे देखते तो कहते, कब्र में एक पाँव लटकाए बैठा है। बदन में गोश्त का नाम नहीं, हड्डी हड्डी गिन लीजिए। जब से छोटे मिर्जा की सोहबत में ताड़ी पीने लगा, तब से जरा हरा हूँ। पहले हम निरे गावदी ही थे। यह पतंग लड़ाना तो अब आया है। मगर अबकी पचास के पेटे में आ गए। छोटे मिर्जा से हमने तदबीर पूछी, तो वल्लाह, तड़ से बतलाया कि जब बहन या भावज

या बीवी की आँख चूके, तो कोई सोने क अदद साफ उड़ा दो। भई, जिला-स्कूल में पढ़ता, तो ऐसी अच्छी सोहबत न मिलती।

आज़ाद — वल्लाह, आप तो खराद पर चढ़ गए, 'सब गुन, पूरे, तुम्हें कौन कहे लँडूरे।'

पतंगबाज — आप यहाँ कहाँ ठहरेंगे? चलिए, इस वक़्त गरीबखाने ही पर खाना खाइए; सराय में तो तकलीफ होगी। हाँ, जो कोई और बात हो, तो क्या मुजायका, (मुसकराकर) सच कहना उस्ताद, कुछ लसरका है?

आज़ाद — मियाँ, यहाँ दिल ही नहीं है पास, मुहब्बत करेंगे क्या! चलिए, आप ही के यहाँ मेहमान हों — यहाँ तो बेफिक्री के हाथ बिक गए हैं। मगर उस्ताद, इतना याद रहे कि बहुत तकलीफ न कीजिएगा।

पतंगबाज — वल्लाह, यह तो वही मसल हुई कि बस, एक दस सेर का पुलाव तो बनवाइएगा, मगर तकल्लुफ न कीजिएगा। मानता हूँ आपको।

आज़ाद और पतंगबाज इक्के पर बैठे। इक्का हवा से बातें करता चला, तो खट से मकान पर दाखिल। अन्दर से बाहर तक खबर हो गई कि मँझले मियाँ आ गए। मियाँ आज़ाद और वह दोनों

उतरे। इतने में एक लौंडी अन्दर से आकर बोली। चलिए, बड़े साहब ने आपको याद किया है।

पतंगबाज — ऐ है, नाक में दम कर दिया, आते देर नहीं हुई और बुलाने लगे। चलो, आते हैं। आपके लिए हुक्का भर लाओ। हजरत, कहिए तो जरी वालिद से मिल आऊँ? गाना-वाना सुनिए, तो बुलाऊँ किसी को? इधर लौंडी अन्दर पहुँची, तो बड़े मियाँ से बोली — उनके पास तो उनके कोई दोस्त मसनद तकिया लगाए बैठे हैं।

मियाँ। उनके दोस्तों को न कहो। शहर भर के बदमाश, चोर-मक्कार, झूठों के सरदार उनके लंगोटिये यार हैं। भलेमानस से मिलते-जुलते तो उन्हें देखा ही नहीं।

लौंड़ी — नहीं मियाँ, सकल सूरत से तो शरीफ भलेमानुस मालूम होते हैं।

खैर, रात को आज़ाद और मँझले मियाँ ने मीठी नींद के मजे उठाए, सुबह को हवाली-मवाली जमा हुए।

एक — हुजूर, कल तो खूब-खूब पेंच लड़े, और हवा भी अच्छी थी।

पतंगबाज — पेंच क्या लड़े, पचास के माथे गई। खैर, इसका तो यहाँ गम नहीं, मगर किरकिरी बड़ी हुई।

दूसरा — वाह हुजूर, किरकिरी की एक ही कही। कसम खुदा की, वह लम डोरा पेंच निकाला कि देखनेवाले दंग रह गए। जमाना भर यही कहता था कि भई, पेंच क्या काटा, कमाल किया। कुछ इनाम दिलवाइए, खुदाबन्द! आपके कदमों की कसम, आज शहर भर में उस पेंच की धूम है। चालीस-पचास रुपयों की भी कोई हकीकत है!

शाम के वक़्त आज़ाद और मियाँ पतंगबाज बैठे गप-शप कर रहे थे कि एक मौलवी साहब लटपटी दस्तार खोपड़ी पर जमाए, कानी आँख को उसके नीचे छिपाए, दूसरी में बरेली का सुरमा लगाए कमरे में आए। उन्होंने अलेकसलेम के बाद जेब से एक इश्तिहार निकाल कर आज़ाद के हाथ में दिया। आज़ाद ने इश्तिहार पढ़ा, तो फड़क गए। एक मुशायरा होने वाला था। दूर-दूर से शायर बुलाए गए थे। तरह का मिसरा था —

'हमसे उस शोख ने ऐयारी की'।

मौलवी साहब तो उलटे पाँव लंबे हुए, यहाँ मुशायरे की तारीख जो देखते हैं, तो इकतीस फरवरी लिखी हुई है। हैरत हुई कि फरवरी तो अट्ठाइस और कभी उनतीस ही दिन का महीना होता है, यह

इकतीस फरवरी कौन सी तारीख है! बारे मालूम हुआ कि इसी वक़्त मुशायरा था। खैर दोनों आदमी बड़े शौक से पता पूछते हुए गुलाबी बारहदरी में दाखिल हुए। वहाँ बड़ी रौनक थी। नई-नई वजा, नए-नए फैशन के लोग जमा हैं। किसी का दिमाग ही नहीं मिलता; जिसे देखो, तानाशाह बना बैठा है, दुनिया की बादशाहत को जूती की नोक पर मारता है। शायरी के शौकीन उमड़े चले आते हैं। कहीं तिल रखने की जगह नहीं। जब रात भीगी और चाँदनी खूब निखरी, तो मुशायरा शुरू हुआ। शायरों ने चहकना शुरू किया। मजलिस के लोग एक-एक शेर पर इतना चीखे-चिल्लाए कि होंठ और गले सूख कर काँटा हो गए। ओहो हो-हो, आहा हा-हा, वाह-वाहन सुभान अल्लाह के दौंगरे बरस रहे थे। शायर ने पूरा शेर पढ़ा भी नहीं कि यार लोग ले उड़े! वाह हजरत, क्यों न हो! कसम खुदा की! कलम तोड़ दिया! वल्लाह, आज इस लखनऊ में आपका कोई सानी नहीं! एक शायर ने यह गजल पढ़ी —

हमको देखा, तो वह हँस देते हैं;
आँख छिपती ही नहीं यारी की।

महफिल के लोगों ने पूरा शेर तो सुना नहीं, यारी को गाड़ी सुन लिया। गाड़ी की, वाह-वाह, क्या शेर फरमाया, गाड़ी की! अब जिसे देखिए, गुल मचा रहा है — गाड़ी की, गाड़ी की। मगर गुल-गपाड़े

में सुनता कौन है। शायर बेचारा चीखता है कि हजरत, गाड़ी की नहीं, यारी की; पर यार लोग अपना ही राग अलापे जाते हैं। तब तो मियाँ आज़ाद ने झल्ला कर कहा — साहबो, अगाड़ी न पिछाड़ी, चौपहिया न पालकी-गाड़ी, खुदा के वास्ते पहले शेर तो सुन लो, फिर तारीफ के पुल बाँधो। गाड़ी की नहीं, यारी की। आँख छिपती ही नहीं यारी की।

दूसरे शायर ने यह शेर पढ़ा —

उम्मीद रोजे-वस्ल थी किस बदनसीब को;
किस्मत उलट गई मेरे रोजे-सियाह की।

हाजिरीन — निगाह की, सुभान-अल्लाह। निगाह की, हजरत, यह आप ही का हिस्सा है।

शायर — निगाह नहीं, रोजे-सियाह। निगाह से तो यहाँ कुछ माने ही न निकलेंगे।

यह कह कर उन्होंने फिर उसी शेर को पढ़ा और सियाह के लफ्ज पर खूब जोर दिया कि कोई साहब फिर निगाह न कह उठें।

आधी रात तक हू-हक मचता रहा। कान-पड़ी आवाज न सुनाई देती थी। पड़ोसियों की नींद हराम हो गई। एक-एक शेर पढ़ने की चार-चार दफे फरमाइश हो रही है और बीस मरतबा उठा-

बैठी, सलाम पर सलाम और आदाब पर आदाब; अच्छी कवायद हुई। लाला खुशवक़्तराय और मुंशी खुर्सेदराय तीन-तीन सौ शेरों की गजलें कह लाए थे, जिनका एक शेर भी दुरुस्त नहीं। एक बजे से पढ़ने बैठे, तो तीन बजा दिए। लोग कानों में उँगलियाँ दे रहे हैं, मगर वे किसी की नहीं सुनते।

वहाँ से मियाँ आज़ाद और उनके दोस्त घर आए। तड़का हो गया था। आज़ाद तो थोड़ी देर सो कर उठ गए, मगर मियाँ पतंगबाज ने दस बजे तक की खबर ली।

आज़ाद — आज तो बड़े सवेरे उठे। अभी तो दस ही बजे हैं। भई, बड़े सोनेवाले हो!

पतंगबाज — जनाब, तड़का तो मुशायरे ही में हो गया था। जब आदमी सुबह को सोएगा, तो दस बजे से पहले क्या उठेगा। और, सच तो यों है कि अभी और सोने को जी चाहता है। कुछ मुशायरे के झगड़े का भी हाल सुना? आप तो कोई चार बजे सो रहे थे। हमने सारी दास्तान सुनी। बड़ी चख चल गई। मौलवी बदर और मुंशी फिशार में तो लकड़ी चलते-चलते रह गई। जो मियाँ रंगीन न हों, तो दोनों में जूती चल जाय।

आज़ाद — यह क्यों, किस बात पर?

पतंगबाज — कुछ नहीं, यों ही। मैं तो समझा, अब लकड़ी चली।

आज़ाद — तो मुशायरा क्या पाली थी? पूछिए, शायरी को लकड़ी और बाँक से क्या वास्ता? कलम का जोर दिखाना चाहिए कि हाथ का। किसी तरह बदर और फिशार में मिलाप करा दीजिए।

पतंगबाज — ऐ तौबा। मिलाप, मिलाप हो चुका। बदर का यह हाल है कि बात की और गुस्सा आ गया। और मियाँ फिशार उनके भी चचा हैं। बात पीछे करते हैं, चाँटा पहले ही जमाते हैं।

आज़ाद — आखिर बखेड़े का सबब क्या?

पतंगबाज — सिवा हसद के और क्या कहूँ। हुआ यह कि फिशार ने पहले पढ़ा। हस पर मौलवी बदर बिगड़ खड़े हुए कि हमसे पहले इन्हें क्यों पढ़ने दिया गया। इनमें क्या बात है। हम भी तो उस्ताद के लड़के हैं। इस पर फिशार बोले — अभी बच्चे हो, हिज्जे करना तो जानते नहीं। शायरी क्या जानो। कुछ दिन उस्ताद की जूतियाँ सीधी करो, तो आदमी बनो। बदर ने आस्तीनें उलट लीं और चढ़ दौड़े। फिशार के शागिर्दों ने भी डंडा सीधा किया। इस पर लोगों ने दौड़ कर बीच-बचाव कर दिया।

शाम के वक़्त मियाँ आज़ाद ने कहा — भई, अब तो बैठे-बैठे जी घबराता हैं। चलिए, जरा चार-पाँच कोस सैर तो कर आएँ। पतंगबाज ने चार-पाँच कोस का नाम सुना, तो घबराए। यह बेचारे महीन आदमी, आध-कोस भी चलना कठिन था, दस कदम चले

और हाँफने लगे। कहीं गए भी तो टाँघन पर। भला दस मील कौन जाता? बोले — हजरत, मैं इस सैर से बाज आया। आपको तो डाक के हरकारों में नौकरी करनी चाहिए। मुझे क्या कुत्ते ने काटा है कि बेसबब पंचकोसी चक्कर लगाऊँ और आदमी से ऊँट बन जाऊँ? आप जाते हैं, तो जाइए, मगर जल्द आइएगा। सच कहते हैं, लंबा आदमी अक्ल का दुश्मन होता है। यह गप उड़ाने का वक़्त है, या जंगल में घूमने का?

एक मुसाहिब — आप बजा फरमाते हैं, भलेमानसों को कभी जंगल की धुन समाई ही नहीं। और, हुजूर के यहाँ घोड़ा-बग्घी सब सवारियाँ मौजूद हैं। जूतियाँ चटखाते हुए आपके दुश्मन चलें।

आज़ाद — जनाब, यह नजाकत नहीं है, इसको तपेदिक कहते हैं। आप पाँच कोस न चलिए, दो ही कोस चलिए, आध ही कोस चलिए।

पतंगबाज — नहीं जनाब, माफ फरमाइए।

आज़ाद लंबे-लंबे डग बढ़ाते पश्चिम की तरफ रवाना हुए।

मियाँ आज़ाद के पाँव में तो सनीचर था। दो दिन कहीं टिक जायँ तो तलवे खुजलाने लगें। पतंगबाज के यहाँ चार-पाँच दिन जो जम गए, तो तबीयत घबराने लगी लखनऊ की याद आई। सोचे, अब वहाँ सब मामला ठंडा हो गया होगा। बोरिया-बँधना उठाया और शिकरम-गाड़ी की तरफ चले। रेल पर बहुत चढ़ चुके थे, अब की शिकरम पर चढ़ने का शौक हुआ। पूछते-पूछते वहाँ पहुँचे। डेढ़ रुपए किराया तय हुआ, एक रुपया बयाना दिया। मालूम हुआ, सात बजे गाड़ी छूट जायगी, आप साढ़े-छह बजे आ जाइए। आज़ाद ने असबाब तो वहाँ रखा, अभी तीन ही बजे थे, पतंगबाज के यहाँ आकर गप-शप करने लगे। बातों-बातों में पौंने सात बज गए। शिकरम की याद आई, बचा-खुचा असबाब मजदूर के सिर पर लाद कर लदे-फँदे घर से चल खड़े हुए। राह में लंबे-लंबे डग धरते, मजदूरों को ललकारते चले आते हैं कि तेज चलो, कदम जल्द उठाओ। जहाँ सन्नाटा देखा, वहाँ थोड़ी दूर दौड़ने भी लगे कि वक़्त पर पहुँचे; ऐसा न हो कि गाड़ी छूट जाय। वहाँ ठीक सात बजे पहुँचे, तो सन्नाटा पड़ा हुआ। आदमी न आदमजाद। पुकारने लगे, अरे मियाँ चपरासी, मुंशी जी, अजी मुंशी जी! क्या साँप सूँघ गया? बड़ी देर के बाद एक चपरासी निकला। कहिए, क्या डाक कीजिएगा?

आज़ाद — और सुनिए। डाक कीजिएगा की एक ही कही। मियाँ, बयाने का रुपया भी दे चुके।

चपरासी — अच्छा, तो इस घास पर बिस्तर जमाइए, ठंडी-ठंडी हवा खाइए, या जरा बाजार की सैर कर आइए।

आज़ाद — ऐं, सैर कैसी ? डाक छूटेगी आखिर किस वक़्त?

चपरासी — क्या मालूम, देखिए, मुंशी जी से पूछूँ।

आज़ाद ने मुंशी जी के पास जा कर कहा — अरे साहब, सात बजे बुलाया था, जिसके साढ़े सात हो गए? अब और कब तक बैठा रहूँ?

मुंशी जी — जनाब, आज तो आप ही आप हैं, और कोई मुसाफिर ही नहीं। एक आदमी के लिए चालान थोड़े छोड़ेंगे।

आज़ाद — कहीं इस भरोसे न रहिएगा। बयाना दे चुका हूँ।

मुंशी — अच्छा, तो ठहरिए।

आठ बज गए, नौ बज गए, दस बज गए, कोई ग्यारह बजे तीन मुसाफिर आए। तब जाकर शिकरम चली। कोई आध कोस तक तो दोनों घोड़े तेजी के साथ गए, फिर सुरंग बोल गया। यह गिरा, वह गिरा। कोचवान ने कोड़े पर कोड़े जमाना शुरू किया; पर घोड़े ने भी ठान ली कि टलूँगा ही नहीं। कोचमैन, घसियारा,

बारगीर, सब के सब ठोक रहे थे; मगर वह खड़ा हाँफता है। बारे बड़ी मुश्किल से फूँक-फूँक कर कदम रखता हुआ दूसरी चौकी तक आया।

दूसरी चौकी में एक टट्टू दुबला-पतला, दूसरा घोड़ा मरा हुआ सा था; हड्डियाँ-हड्डियाँ गिन लीजिए। यह पहले ही से रंग लाए। कोचमैन ने खूब कोड़े जमाए, तब कहीं चले। मगर दस कदम चले थे कि फिर दम लिया। साईस ने आँखें बन्द करके रस्सी फटकारनी शुरू की। फिर दस-बीस कदम आहिस्ता-आहिस्ता बढ़े; फिर ठहर गए। खुदा-खुदा करके तीसरी चौकी आई।

तीसरी चौकी में एक दुबला-पतला मुश्की रंग का घोड़ा और दूसरा नुकरा था। पहले जरा चीं-चप्पड़, फिर चले। एक-आध कोस गए थे कि कीचड़ मिली, फिर तो कयामत का सामना था। घोड़े थान की तरफ भागते थे, कोचमैन रास थामे टिक-टिक करता जाता था, बारगीर पहियों पर जोर लगाते थे। मुसाफिरों को हुक्म हुआ कि उतर आइए; जरा हवा खाइए। बेचारे उतरे। आध कोस तक पैदल चले। घोड़े कदम-कदम पर मुँह मोड़ देते थे। वह चिल्ल-पों मची हुई थी कि खुदा पनाह। आध कोस के बाद हुक्म हुआ कि अपना-अपना बोझ उठाओ, गाड़ी भारी है। चलिए साहब, सबने गठरियाँ सँभाली! सिर पर असबाब लादे चले आते हैं। तीन घंटे में कहीं चौकी तय हुई, मुसाफिरों का दम टूट गया,

कोचमैन और साईस के हाथ कोड़े मारते-मारते और पहियों पर जोर लगाते-लगाते बेदम हो गए।

चौथी चौकी की जोड़ी देखने में अच्छी थी। लोगों ने समझा था, तेज जायगी, मगर जमाली खरबूजों की तरह देखने ही भर की थी। कोचवान और बारगीरों ने लाख-लाख जोर लगाया, मगर उन्होंने जरा कान तक न हिलाए, कनौती तक न बदली। बुत बने खड़े हैं, मैदान में अड़े हैं। कोई तो घास का मुट्ठा लाता है, कोई दूर से तोबड़ा दिखाता है, कोई पहिये पर जोर लगाता है, कोई ऊपर से कोड़े जमाता है। आखिर घोड़ों के एवज बैल जोते गए।

पाँचवीं चौकी में बाबा आदम के वक़्त का एक घोड़ा आया। घोड़ा क्या, खच्चर था। आँखें माँग रहा था। मक्खियाँ भिन्न-भिन्न करती थीं। रात को भी मक्खियों ने इसका पीछा न छोड़ा।

आज़ाद — अरे भई, अब चलो न! आखिर यहाँ क्या हो रहा है? रास्ता चलने ही से कटता है।

कोचमैन — ऐ लो साहब, घोड़े का तो बंदोबस्त कर लें। एक ही घोड़ा तो इस चौकी पर है।

आज़ाद — अजी, दूसरी तरफ भैंस जोत देना।

एक मुसाफिर — या हम एक सहल तदबीर बताएँ। मुसाफिरों से कहिए, उतर पड़ें, बोझ अपना-अपना सिर पर लादें और जोर लगा कर बग्घी को एक चौकी तक ढकेल ले जायँ।

इतने में एक भठियारा अपने टट्टू को टिक-टिक करता चला आता था। कोचवान ने पूछा — कहो भाई, भाड़ा करते हो? जो चाहे सो माँगो, देंगे। नकद दाम लो और बग्घी पर बैठ जाओ। एक चौकी तक तुम्हारे टट्टू को बग्घी में जोतेंगे।

भठियारा — वाह, अच्छे आए! टटुआ कभी गाड़ी में जोता भी गया है? मुर्गी के बराबर टट्टू, और जोतने चले हैं शिकरम में। यों चाहे पीठ पर सवार हो लो, मुदा डाकगाड़ी में कैसे चल सकता है?

कोचमैन — अरे भई, तुमको भाड़े से मतलब है, या तकरीर करोगे? हम तो अपनी तरकीब से जोत लेंगे।

आज़ाद ने भठियारे से कहा — रुपया टेंट में रखो और कहो, अच्छा जोतो। कुछ थक-थका कर आप ही हार जायँगे। रुपया तुम्हारे बाप का हो जायगा। वह भी राजी हो गया। अब कोचमैन ने टट्टू को जोतना चाहा, मगर उसने सैकड़ों ही बार पुश्त उछाली, दुलत्तियाँ झाड़ी और गाड़ी के पास न फटका। इस पर कोचवान ने टट्टू को एक कोड़ा मारा। तब तो भठियारा आग हो गया। ऐ वाह मियाँ, अच्छे मिले, हमने पहले ही कह दिया था कि

हमारा जानवर बग्घी में न चलेगा। आपने जबरदस्ती की। अब गधे की तरह गद-गद पीटने लगे।

वह तो टट्टू को बगल में दाब लंबा हुआ, यहाँ शिकरम मैदान में पड़ी हुई है। मुसाफिर जम्हाइयाँ ले रहे हैं। साईस चिलम पर चिलम उड़ाते हैं। सब मुसाफिरों ने मिल कर कसम खाई कि अब शिकरम पर न बैठेंगे। खुदा जाने, क्या गुनाह किया था कि यह मुसीबत सही। पैदल आना इससे कहीं अच्छा।

पाँचवीं चौकी के आगे पहुँचे, तो एक मुसाफिर ने, जिसका नाम लाला पलटू था, ठर्रे की बोतल निकाली और लगा कुज्जी पर कुज्जी उड़ाने। मियाँ आज़ाद का दिमाग मारे बदबू के परेशान हो गया। मजहब से तो उन्हें कोई वास्ता न था, क्योंकि खुदा के सिवा और किसी को मानते ही न थे, लेकिन बदबू ने उन्हें बेचैन कर दिया। एक दूसरे मुसाफिर रिसालदार थे। उनकी जान भी आजाब में थी। वह शराब के नाम प लाहौल पढ़ते और उसकी बू से कोसों भागते थे। जब बहुत दिक हो गए, तो मियाँ आज़ाद से बोले — हजरत, यह तो बेढब हुई। अब तो इनसे साफ-साफ कह देना चाहिए कि खुदा के वास्ते इस वक़्त न पीजिए। थोड़ी देर में हमको और आपको गालियाँ न देने लगें, तो कुछ हारता हूँ। जरा आँख दिखा दीजिए जिसमें बहुत बढ़ने न पाएँ।

आज़ाद — खुदा की कसम, दिमाग फटा जाता है। आप डपट कर ललकार दीजिए। न माने तो मैं कान गरमा दूँगा।

रिसालदार — कहीं ऐसा गजब न कीजिएगा! पंजे झाड़ कर लड़ने को तैयार हो जायगा। शराबी के मुँह लगना कोई अच्छी बात थोड़े हैं।

दोनों में यही बातें हो रही थीं कि लाला पलटू ने हाँक लगाई — हरे-हरे बाग में गोला बोला, पग आगे, पग पीछे। यह बेतुकी कह कर हाथ जो छिड़का, तो रिसालदार की दोनों टाँगों पर शराब के छींटे पड़ गए। हाँय-हाँय, बदमाश, अलग हट! उठ जा यहाँ से। नहीं तो दूँगा एक लप्पड़।

पलटू — बरसो राम झड़ाके से; रिसालदार की बुढ़िया मर गई फाके से। हमारा बाप गधा था।

रिसालदार — चुप, खोस दूँ बाँस मुँह में?

पलटू — अजी, तो हँसी-हँसी में रोए क्यों देते हो? वाह, हम तो अपने बाप को बुरा कहते हैं।

आज़ाद — क्या तुम्हारे बाप गधे थे?

पलटू — और कौन थे? आप ही बताइए। उमर भर डोली उठाई, मगर मरते दम तक न उठानी आई।

रिसालदार — क्या कहार था?

पलटू — और नहीं तो क्या चमार था, या बेलदार था? या आपकी तरह रिसालदार था?

आज़ाद — है नशे में तो क्या, बात पक्की कहता है।

पलटू — अजी, इसमें चोरी क्या है? हम कहार, हमारा बाप कहार।

आज़ाद — कहिए! आपकी महरी तो खैरियत से है।

पलटू — चल शिकरम, चल घोड़े, बिगुल बजे भोंपू-भोंपू। सामने काँटा, दुकान में आटा, कबड़िये के यहाँ भाँटा, रिसालदार के लगाऊँ चाँटा।

रिसालदार — ऐसा न हो कि मैं नशा-वशा सब हिरन कर दूँ। जबान को लगाम दे।

पलटू — अच्छा साईस है।

आज़ाद — अबे, साईसी इल्म दरियाव है।

पलटू — तेरा सिर नाव है, तू बनबिलाव है।

रिसालदार — कोचमैन, बग्घी ठहराओ।

पलटू — कोचमैन, बग्घी चलाओ।

मियाँ आज़ाद ने देखा, रिसालदार का चेहरा मारे गुस्से के लाल हो गया, तो उन्होंने बात टाल दी और पूछा — क्यों पलटू महाराज, सच कहना तुमने तो कभी डोली नहीं उठाई? पलटू बोले — नहीं, कभी नहीं। हाँ, बरतन माँजे हैं। मगर होश सँभालते ही मदरसे में पढ़ने लगे और अब तार-घर में नौकर हैं। रिसालदार जी, लो पीते हो? रिसालदार के मुँह के पास कुज्जी ले जा कर कहा — पियो,पियो। इतना कहना था कि रिसालदार जल-भुन के खाक हो गए, तड़ से एक चाँटा रसीद किया, दूसरा और दिया, फिर तीन-चार और लगाए। पलटू मजे से बैठे चपते खाया किए। फिर एक कहकहा लगा कर बोले — अबे जा, बड़ा रिसालदार बना है। नाम बड़ा, दरसन थोड़े। एक जूँ भी न मरी। रिसालदारी क्या खाक करते हो? चलो, अब तो एक कुज्जी पियो। दूँ फिर?

रिसालदार — भई, इसने तो नाक में दम कर दिया। पीटते-पीटते हाथ थक गए।

कोचमैन — रिसालदार साहब, यह क्या गुल मच रहा है?

आज़ाद — बड़ी बात कि तुम जीते तो बचे! हम समझते थे कि साँप सूँघ गया। यहाँ मार धाड़ भी हो गई, तुम्हें खबर ही नहीं।

कोचमैन — मार-धाड़! यह मार-धाड़ कैसी?

रिसालदार — देखो यह सुअर, शराब पी रहा है और सबको गालियाँ देता है! मैंने खूब पीटा, फिर भी नहीं मानता।

पलटू — झूठे हो! किसने पीटा? कब पीटा? यहाँ तो एक जूँ भी न मरी।

कोचमैन — लाला, थोड़ी सी हमको भी पिलाओ।

पलटू और कोचमैन, दोनों कोच-बक्स पर जा बैठे और कुज्जियों का दौर चलने लगा। जब दोनों बदमस्त हुए, तो आपस में धौल धप्पा होने लगा। इसने उसके लप्पड़ लगाया, उसने इसके एक टीप जड़ी। कोचमैन ने पलटू को ढकेल दिया। पलटू ने गिरते ही पाँव पकड़ कर घसीटा, तो कोचमैन भी धम से गिरे। दोनों चिपट गए। एक ने कूले पर लादा, दूसरा बगली डूबा। मुक्का चलने लगा। कोचमैन ने झपट के पलटू को टँगड़ी ली, पलटू ने उसके पट्टे पकड़े। रिसालदार को गुस्सा आया, तो पलटू के बेभाव की चपतें लगाईं। एक, दो, तीन करके कोई पचास तक गिन गए आज़ाद ने देखा कि मैं खाली हूँ। उन्होंने कोचमैन को चपतियाना शुरू किया।

आज़ाद — क्यों बचा, पियोगे शराब? सुअर, गाड़ी चलाता है कि शराब पीता है?

रिसालदार — तोड़ दूँ सिर, पटक दूँ बोतल सिर पर!

पलटू — तो आप क्या अकड़ रहे हैं? आपकी रिसालदारी को तो हमने देख लिया! देखो, कोचमैन के सिर पर आधे बाल रह गए, यहाँ बाल भी न बाँका हुआ।

रिसालदार — बस भई अब हम हार गए।

इस झंझट में तड़का हो गया। मुसाफिर रात भर के जगे हुए थे, झपकियाँ लेने लगे। मालूम नहीं, कितनी चौकियाँ आईं और गईं। जब लखनऊ पहुँचे, तो दोपहर ढल चुकी थी।

23

मियाँ आज़ाद शिकरम पर से उतरे, तो शहर को देख कर बाग-बाग हो गए। लखनऊ में घूमे तो बहुत थे, पर इस हिस्से की तरफ आने का कभी इत्तिफ़ाक़ न हुआ था। सड़कें साफ, कूड़े-करकट से काम नहीं, गंदगी का नाम नहीं, वहाँ एक रंगीन कोठी नजर आई, तो आँखों ने वह तरावट पाई कि वाह जी, वाह! उसकी बनावट और सजावट ऐसी भायी कि सुभान-अल्लाह। बस, दिल में खुब ही तो गई। रविशें दुनिया से निराली, पौदों पर वह जोबन कि आदमी बरसों घूरा करे।

मियाँ आज़ाद ने एक हरे-भरे दरख्त के साये में आसन जमाया। टहनियाँ हवा के झोंकों से झूमती थी, मेवे के बोझ से जमीन को बार-बार चूमती थीं। आज़ाद ठंडे-ठंडे हवा के झोंकों का मजा ले रहे थे कि एक मुसाफिर उधर से गुजरा। आज़ाद ने पूछा — क्यों साहब, इस कोठी में कौन रईस रहता है?

मुसाफिर — रईस नहीं, एक रईसा रहती हैं! बड़ी मालदार हैं। रात को रोज बजरे पर दरिया की सैर को निकलती हैं। उनकी दोनों लड़कियाँ भी साथ होती हैं।

आज़ाद — क्यों साहब लड़कियों की उम्र क्या होगी?

मुसाफिर — अब उमर का हाल मुझे क्या मालूम। मगर सयानी हैं, बड़ी तमीजदार हैं और, बुढ़िया तो आफत की पुड़िया।

आज़ाद — शादी अभी नहीं हुई?

मुसाफिर — अभी शादी नहीं हुई; न कहीं बातचीत है। दोनों बहनों को पढ़ने लिखने और सैर करने के सिवा कोई काम नहीं। सफाई का दोनों को ख्याल है। खुदा करे, उनकी शादी अच्छे घरों में हो।

आज़ाद — आपने तो वह खबर सुनाई कि मुझे उन लड़कियों को सैर करते हुए देखने का शौक हो गया।

मुसाफिर — तो फिर इसी जगह बिस्तर जमा रखिए।

आज़ाद — आप भी आ जायँ, तो मजा आए।

मुसाफिर — आ जाऊँगा।

आज़ाद — ऐसा न हो कि आप न आए और मुझे भेड़िया उठा ले जाय।

मुसाफिर — आप बड़े दिल्लगीबाज मालूम होते हैं। यहाँ अपने वादे के सच्चे हैं। बस, शाम हुई और बंदा यहाँ पहुँचा।

यह कह कर वह हजरत तो चलते हुए और आज़ाद दरख्तों से मेवे तोड़-तोड़ कर खाने लगे। फिर चिड़ियों का गाना सुना। फिर दरिया की लहरें देखीं। कुछ देर तक गाते रहे। यहाँ तक कि शाम हो गई और वह मुसाफिर न आया। आज़ाद दिल में सोचने लगे, शायद हजरत झाँसा दे गए। अब शाम में क्या बाकी है। आना होता, तो आ न जाते। शायद आज बेगम साहबा बजरे पर सैर भी न करेंगी। सैर करने का यही तो वक़्त है। इतने में मियाँ मुसाफिर ने आकर पुकारा।

आज़ाद — खैर, आप आए तो! मैं तो आपके नाम को रो चुका था।

मुसाफिर — खैर, अब हँसिए। देखिए, वह हाथी आ रहा है। दोनों पालकियाँ भी साथ हैं।

मुसाफिर — ईंट की ऐनक लगाओ! इतनी बड़ी पालकी नहीं देख सकते! हाथी भी नहीं दिखाई देता! क्या रतौंधी आती है?

आज़ाद — आहा हा! वह देखिए। ऐं, वह तो दरख्त के साये में रुक रहा।

मुसाफिर — घबराइए नहीं, यहीं आ रही हैं। अब कोई और जिक्र छेड़िए, जिसमें मालूम हो कि दो मुसाफिर थक कर खड़े बातें कर रहे हैं!

आज़ाद — यह आपको खूब सूझी! हाँ साहब, अबकी आम की फसल खूब हुई। जिधर देखो, पटे पड़े हैं; मंडी जाइए, खाँचियों की खाँचियाँ। तरबूज को देख आइए, कोई टके को नहीं पूछता। और आम के सामने तरबूज को कौन हाथ लगाए!

ये बातें हो ही रही थीं कि बजरा तैयार हुआ। दोनों बहनें और बेगम साहब उसमें बैठी। एकाएक पूरब की तरफ से काली मतवाली घटा झूमती हुई उठी और बिजली ने चमकना शुरू किया। मल्लाह ने बजरे को खूँटे से बाँध दिया। दोनों लड़कियाँ हाथी पर बैठी और घर की तरफ चलीं। आज़ाद ने कहा — यह बुरा हुआ! तूफान ने हत्थे ही पर टोंक दिया, नहीं तो इस वक़्त

बजरे की सैर देख कर दिल की कली खिल जाती। आखिर दोनों आदमी घूमते-घामते एक बाग में पहुँचे, तो मियाँ मुसाफिर बोले — हजरत, अब की आम इतनी कसरत से पैदा हुआ कि जहाँ किसी भलेमानस ने राह चलते कोई आम उठा लिया और बस, चिमट पड़ा। अभी परसों ही की तो बात है। यहाँ से कोई चार कोस पर एक मुसाफिर मैदान में चला जाता था। एक काना खुतरा आम टप से जमीन पर टपक पड़ा। मुसाफिर को क्या मालूम की कौन इधर-उधर ताक रहा है, चुपके से आम उठा लिया। उठाना था कि दो गँवारदल लठ कंधे पर रखे, मार सारे का; मार सारे का करते निकल आए। मुसाफिर ने आम झट जमीन पर पटक दिया। लेकिन एक गँवार ने आते ही गालियाँ देनी शुरू कीं तो दूसरे ने घूँसा ताना! मुसाफिर भी क्षत्रिय आदमी था, आग हो गया। मारे गुस्से के उसका बदन थर-थर काँपने लगा। बढ़ के जो एक चाँटा देता है, तो एक गँवार लड़खड़ा के धम से जमीन पर। दूसर ने ने जो यह हाल देखा, तो लठ ताना। राजपूत बगली डूब कर जा पहुँचा, एक आँटी जो देता है, तो चारों खाने चित। हम भी कल एक बाग में फँस गए थे। शामत जो आई, तो एक दरख्त के साये में दोपहरिया मनाने बैठ गए। बैठना था कि एक ने तड़ से गाली दी। अब सुनिए कि गाली तो दी हमको, लेकिन एक पहलवान भी करीब ही बैठा था। सुनते ही चिमट

गया और चिमटते ही कूले पर लादा। गिरे मुँह के बल। पहलवान छाप बैठा, हफ़्ते गाँठ लिए, हलसींगड़ा बाँध कर आसमान दिखा दिया और अपने शागिर्दों से कहा — चढ़ जाओ पेड़ पर, और आम, पत्ते, बौर, टहनी जो पाओ, तोड़-तोड़ कर फेंक दो, पेड़ नीचे डालो। लेकिन लोगों ने समझाया कि उस्ताद, जाने दो, गाली देना तो इनका काम है। यह तो इनके सामने कोई बात ही नहीं, ये इसी लायक हैं कि खूब धुने जायँ।

आज़ाद — क्यों साहब, धुने क्यों जायँ? ऐसा न करें, तो सारा बाग मुसाफिरों ही के लिए हो जाय। लोग पेड़ का पेड़, जड़ और फुनगी तक चट कर जायँ। आप तो समझे कि यह एक आम के लिए कट मरा, मगर इतना नहीं सोचते कि एक ही एक करके हजार होते हैं। इस ताकीद पर तो यह हाल हे कि लोग बाग के बाग लूट खाते हैं; और जो कहीं इत्ती तू-तू मैं-मैं न हो तो न जाने क्या हो जाय।

मियाँ मुसाफिर कल आने का वादा करके चले गए। आज़ाद आगे बढ़े, तो क्या देखते हैं कि एक आदमी अपने लड़के को गोदी में लिए थपकी दे दे कर सुला रहा है। — 'आ जा री निंदिया, तू आ क्यों न जा; मेरे बाले को गोद सुला क्यों न जा।' आज़ाद एक दिल्लगीबाज आदमी, जा कर उससे पूछते क्या हैं — किसका पिल्ला है? वह भी एक ही काइयाँ था, बोला 'दूर रह, क्यों

पिला पड़ता है? आज़ाद यह जवाब सुन कर खुश हो गए। बोले — उस्ताद, हम तो आज तुम्हारे मेहमान होंगे। तुम्हारी हाजिरजवाबी से जी खुश हो गया। अब रात हो गई है, कहाँ जायँ? उस हँसोड़ आदमी ने इतनी बड़ी खातिर की, खाना खिलाया और दोनों ने दरवाजे पर ही लंबी तानी। तड़के मियाँ आज़ाद की नींद खुली। हँसोड़ को जगाने लगे। क्यों हजरत, पड़े सोया ही कीजिएगा या उठिएगा भी; वाह रे माचा-तोड़! बारे बहुत हिलाने-डुलाने पर मियाँ हँसोड़ उठे और फिर लेट गए; मगर पैताने की तरफ सिर करके। इतने में दो-चार दोस्त और आ गए। वाह भई वाह, हम दो कोस से आए और यहाँ अभी खाट ही नहीं छोड़ी? भई, बड़ा सोनेवाला है। हमने मुँह-हाथ धोया, हुक्का पिया, बालों में तेल डाला चपातियाँ खाईं, कपड़े पहने और टहलते हुए यहाँ तक आए; मगर यह अभी तक पड़े ही हुए हैं। आखिर एक आदमी ने उनके कान में पानी डाल दिया। तब तो आप कुलबुलाए। देखो, देखो, हैं-हैं नहीं मानते! वाह, अच्छी दिल्लगी निकाली है।

एक दोस्त — जरा आँखें तो खोलिए।

हँसोड़ — नहीं खोलते। आपका कुछ इजारा है?

दोस्त — देखिए, यह मियाँ आज़ाद तशरीफ लाए हैं, इधर मौलवी साहब खड़े हैं। इनसे तो मिलिए, सो-सो कर नहूसत फैला रखी है।

मौलवी — अजी हजरत!

हँसोड़ — भई, दिक न करो, हमें सोने दो। यहाँ मारे नींद के बुरा हाल है, आपको दिल्लगी सूझती है।

आज़ाद — भाई साहब!

हँसोड़ — और सुनिए। आप भी आए वहाँ से जान खाने। सवेरे-सवेरे आपको बुलाया किस गधे ने था? भलेमानस के मकान पर जाने का यह कौन वक़्त है भला? कुछ आपका कर्ज तो नहीं चाहता? चलिए, बोरिया-बाँधना उठाइए। (आँखें खोल कर) अख्खा, आप, हैं? माफ कीजिएगा। मैंने आपकी आवाज नहीं पहचानी।

मौलवी — कहिए, खाकसार की आवाज तो पहचानी? या कुछ मीन-मेख है?

हँसोड़ — अख्खा, आप हैं। माफ कीजिएगा, मैं अपने आपे में न था।

मौलवी — हजरत, इतना भी नींद के हाथ बिक जाना भला कुछ बात है! आठ बजा चाहते हैं और आप पड़े सो रहे हैं। क्या कल

रतजगा था? खैर, मैं तो रुखसत होता हूँ; आप हकीम साहब के नाम खत लिख भेजिएगा। ऐसा न हो कि देर हो जाय। कहीं फिर न लुढ़क रहिएगा। आपकी नींद से हम हारे।

हँसोड़ – अच्छा मियाँ आज़ाद, और बातें तो पीछे होंगी, पहले यह बतलाइए कि खाना क्या खाइएगा? आज मामा बीमार हो गए हैं और घर में भी तबीयत अच्छी नहीं है। मैंने रोजे की नीयत की है। आप भी रोजा रख लें। फायदे का फायदा और सवाब का सवाब।

आज़ाद – रोजा आपको मुबारक रहे। अल्ला मियाँ हमें यों ही बख्श देंगे। यह दिल्लगी किसी और से कीजिएगा।

हँसोड़ – दिल्लगी के भरोसे न रहिएगा। मैं खरा आदमी हूँ। हाँ, खूब याद आया। मौलवी साहब खत लिखने को कह गए हैं। दो पैसे का खून और हुआ। कल भी रोजा रखना पड़ा।

आज़ाद – दो पैसे क्यों खर्च कीजिएगा? अब तो एक पैसे के पोस्टकार्ड चले हैं।

हँसोड़ – सच? एक डबल में! भई अंगरेज बड़े हिकमती हैं। क्यों साहब, वह पोस्टकार्ड कहाँ बिकते हैं?

आज़ाद – इतना भी नहीं जानते? डाकखाने में आदमी भेजिए।

हँसोड़ — रोशनअली, डाकखाने से जा कर एक आने के पोस्टकार्ड ले आओ।

रोशन — मियाँ, मैं देहाती आदमी हूँ। अंगरेजी नहीं पढ़ा।

हँसोड़ — अरे भई, तुम कहना कि वह लिफाफे दीजिए, जो पैसे-पैसे में बिकते हैं। जा झट से, कुत्ते की चाल जाना और बिल्ली की चाल आना।

रोशन — अजी, मुझसे कहिए, तो मैं गधे की चाल जाऊँ और बिसखोपड़े की चाल जाऊँ। मुल डाकवाले मुझे पागल बनाएँगे। भला आज तक कहीं पैसे में लिफाफा बिका है?

हँसोड़ — अबे, तुझे इस हुज्जत से क्या वास्ता? डाकखाने तक जायगा भी, या यही बैठे-बैठे दलीलें करेगा?

रोशन डाकखाने गया और पोस्टकार्ड ले आया। मियाँ हँसोड़ झपट कर कलम-दवात ले आए और खत लिखने बैठे। मगर पुराने जमाने के आदमी थे, तारीफ के इतने लंबे-लंबे जुमले लिखने शुरू किए कि पोस्टकार्ड भर गया और मतलब खाक न निकला। बोले — अब कहाँ लिखें।

आज़ाद — दो टप्पी बातें लिखिए। आप तो लगे अपनी लियाकत बघारने! दूसरा लीजिए।

हँसोड़ ने दूसरा पोस्टकार्ड लिखना शुरू किया — 'जनाब, अब हम थोड़े में बहुत सा हाल लिखेंगे। देखिए, बुरा न मानिएगा। अब वह जमाना नहीं रहा कि वह बीघे भर के आदाब लिखे जायँ। वह लंबी चौड़ी दुआएँ दी जायँ। वह घर का कच्चा, चिट्ठा कह सुनाना अब रिवाज के खिलाफ है। अब तो हमने कसम खाई है कि जब कलम उठाएँगे, दस सतरों से ज्यादा न लिखेंगे इसमें चाहे इधर की दुनिया उधर हो जाय। अब आप भी इस फैशन को छोड़ दीजिए।' अरे, यह खत भी गया। अब तो तिल रखने की भी जगह नहीं। लीजिए, बात करते-करते दो पैसे का खून हो गया। इसको दो पैसे का टिकट लाते, तो खर्रे का खर्रा लिख डालते।

आज़ाद — अरे देखूँ तो; आपने क्या लिखा है। वाह-वाह इस पँवाड़े का कुछ ठिकाना है। अरे साहब, मतलब से मतलब रखिए। बहुत बेहूदा न बकिए। खैर, अब तीसरा कार्ड लीजिए। मगर कलम को रोके हुए। ऐसा न हो कि आप फिर बाही-तबाही लिखने लगें।

हँसोड़ — अच्छा साहब, यों ही सही। बस, खास-खास बातें ही लिखूँगा।

यह कह कर उन्होंने यह खत लिखा — 'जनाब फजीलतमआब मौलाना साहब, आप यह पैसलूचा लिफाफा देख कर घबरायँगे कि

यह क्या बला है। डाकखानेवालों ने यह नई फुलझड़ी छोड़ी है। आप देखते हैं, इसमें कितनी जगह है। अगर मुख्तसर न लिखूँ तो क्या करूँ। लिखनी तो बहुत सी बातें हैं, पर इस लिफाफे को देख कर सब आरजूएँ दिल में रही जाती हैं। देखिए, अभी लिखा कुछ भी नहीं, मगर कागज को देखता हूँ, तो एक तरफ सब का सब लिप गया। दूसरी तरफ लिखूँ, तो पकड़ा जाऊँ।' लो साहब, यह पोस्टकार्ड भी खत्म हुआ! मियाँ आज़ाद, ये तीनों पैसे आपके नाम लिखे गए। आप चाहे दें टका नहीं, लेकिन सलाह आप ही ने दी थी।

आज़ाद — मैंने यह कब कहा था कि आप खत में अपनी जिंदगी की दास्तान लिख भेजें? यह खत है या राँड़ का चर्खा? इतने बड़े हुए, खत लिखने की लियाकत नहीं। समझा दिया, सिखला दिया कि बस, मतलब से मतलब रखो। मगर तुम कब मानने लगे। खुदा की कसम, तुम्हारी सूरत से नफरत हो गई। बस, बेतुकेपन की हद हो गई।

हँसोड़ — वाह री किस्मत! तीन पैसे गिरह से आए और उल्लू के उल्लू बने। भला आप ही लिखिए, तो जानें। देखें तो सही, आप इस जरा से कागज पर कुल मतलब क्योंकर लिखते हैं। इसके लिए तो बड़ा भारी उस्ताद चाहिए, जो पिस्ते पर हाथी की तस्वीर बना दे।

आज़ाद — आप अपना मतलब मुझसे कहिए, तो अभी लिख दूँ।

हँसोड़ — अच्छा सुनिए — मौलवी जामिनअली आपकी खिदमत में पहुँचे होंगे। उनको वह तीन रुपएवाली जगह दिला दीजिएगा। आपका उम्र भर एहसान होगा। बस, इसी को खूब बढ़ा दीजिए।

आज़ाद — फिर वही झक! बढ़ा क्यों दूँ? यह न कहा कि बस, यही मेरा मतलब है; इसको बढ़ा दीजिए। लाओ पोस्टकार्ड, देखो, यों लिखते हैं —

'हजरत सलामत, मौलवी जामिनअली पहुँचे होंगे। वह तीस रुपएवाला ओहदा उनको दिलवा दीजिए, तो एहसान होगा। उम्मीद है कि आप खैरियत से होंगे।'

लो, देखो, इतनी सी बात को इतना बढ़ाया कि तीन-तीन खत लिखे और फाड़े।

हँसोड़ — खूब, यह तो अच्छा दुम-कटा खत है। अच्छा, अब पता भी तो लिखिए।

आज़ाद ने सीधा-सादा पता लिख कर हँसोड़ को दिखलाया, तो आप पूछने लगे — क्यों साहब, यह तो शायद वहाँ तक पहुँचे ही नहीं। कहीं इतना जरा सा पता लिखा जाता हैं? इसमें मेरा नाम कहाँ है, तारीख कहाँ है?

आज़ाद — आपका नाम बेवकूफों की फिहरिस्त में है और तारीख डाकखाने में।

हँसोड़ — अच्छा लाइए, दो-चार सतरें मैं भी बढ़ा दूँ।

हजरत ने जो लिखना शुरू किया, तो पते की तरफ भी लिख डाला। — थोड़े लिखने को बहुत समझिएगा। आपका पुराना गुलाम हूँ। अब कुछ करते धरते नहीं बन पड़ती।

आज़ाद — हैं-हैं। गारत किया न इसको भी?

हँसोड़ — क्यों, जगह बाकी है, पूरा पैसा तो वसूल करने दो।

आज़ाद — जी, पैसा नहीं, एक आना वसूल हो गया! एक ही तरफ मतलब लिखा जाता है, दूसरी तरफ सिर्फ पता। आपसे तो हमने पहले ही कह दिया था।

यह बातें हो ही रही थी कि कई लड़के स्कूल से निकले उनमें एक बड़ा शरीर था। किसी पर धप जमाई, किसी के चपत लगाई, किसी के कान गरमा दिए। अपने से ढयोढ़े-दूने तक को चपतियाता था। आज़ाद ने कहा — देखो, यह लौंडा कितना बदमाश है! अपने दूने तक की खबर लेता है।

हँसोड़ — भई, खुदा के लिए इसके मुँह न लगना। इसके काटे का मंतर ही नहीं। यह स्कूल भर में मशहूर है। हजरत दो दफे

चारी की इल्लत में धरे गए। इनके मारे मुहल्ले भर का नाकों दम है। एक किस्सा सुनिए। एक दफे हजरत को शरारत का शौक चर्राया, फिर सोचने की जरूरत न थी। फौरन सूझती है। शरारत तो इसकी खमीर में दाखिल है। एक पाँव का जूता निकाल कर हजरत ने एक आलमारी पर रख दिया। जूते के नीचे एक किताब रख दी। थोड़ी देर बाद एक लड़के से बोले – यार, जरा वह किताब, उतारो, तो कुछ देख-दाख लूँ; नहीं तो मास्टर साहब बेतरह ठोकेंगे। सीधा-सादा लड़का चुपके से वह किताब उठाने लगा। जैसे किताब उठाई, वैसे ही जूती मुँह पर आई। सब लड़के खिलखिला कर हँस पड़े। मास्टर साहब अंगरेज थे। बहुत ही झल्ला कर पूछा – यह किसकी जूती का पाँव है? अब आप बैठे चुपचाप पढ़ रहे हैं। गोया इनसे कुछ वास्ता ही न था। मगर इनका तो दर्जा भर दुश्मन था। किसी लड़के ने इशारे से जड़ दी। मास्टर ने आपको बुलाया और पूछा – वेल, दूसरा पाँव कहाँ तुम्हारा? दूसरा पाँव किडर?

लड़का – पाँव दोनों ये हैं।

मास्टर – वेल, जूती, जूती?

लड़का – जूती को खावे तूती।

मास्टर – बेंच पर खड़ा हो।

लड़का — यह सजा मंजूर नहीं; कोई और सजा दीजिए।

मास्टर — अच्छा, कल के सबक को सौ बार लिख लाना।

लड़का — वाह-वाह, और सबक याद कब करूँगा।

मास्टर — अच्छा, आठ आना जुर्माना।

दूसरे दिन आप आठ आने लाए, तो मोटे पैसे खट-खट करके मेज पर डाल दिए। मास्टर ने पूछा — अठन्नी क्यों नहीं लाया? बोले — यह शर्त नहीं थी।

इसी तरह एक बार एक भलेमानस के यहाँ कह आए कि तुम्हारे लड़के को स्कूल में हैजा हुआ है। उनके घर में रोना-पीटना मच गया। लड़के का बाप, चचा, भाई, मामू, सब दौड़ते हुए स्कूल पहुँचे। औरतों ने आठ-आठ आँसू रोना शुरू किया। वे लोग जो स्कूल गए, तो क्या देखते है; लड़का मजे से गेंद खेलता है। अजी, और क्या कहें, इसने अपने बाप को एक बार नमक के धोखे में फिटकरी खिला दी, और उस पर तुर्रा यह कि कहा, क्यों अब्बाजान, कैसा गहरा चकमा दिया?

शाम के वक़्त बूढ़े मियाँ आज़ाद के पास आकर बोले — चलिए, उधर बजरा तैयार है! आज़ाद तो उनकी ताक में बैठे ही थे, हँसोड़ को लेकर उनके साथ चल खड़े हुए। नदी के किनारे पहुँचे, तो

देखा, बजरे लहरों पर फर्राटे से दौड़ रहे हैं। एक दरख्त के साये में छिपकर यह बहार देखने लगे। उधर उन दोनों हसीनों ने बजरे पर से किनारे की तरफ देखा, तो आज़ाद नजर पड़े। शरम से दोनों ने मुँह फेर लिए। लेकिन कनखियों से ताक रही थीं। यहाँ तक कि बजरा निगाहों से ओझल हो गया।

थोड़ी देर के बाद आज़ाद उन्हीं बूढ़े मियाँ के साथ उस कोठी की तरफ चले, जिसमें दोनों लड़कियाँ रहती थीं। कदम-कदम पर शेर पढ़ते थे, ठंडी साँसे भरते थे और सिर धुनते थे। हालत ऐसी खराब थी कि कदम-कदम पर उनके गिर पड़ने का खौफ था। हँसोड़ ने जो यह कैफियत देखी, तो झपट कर मियाँ आज़ाद का हाथ पकड़ लिया और समझाने लगे। इस रोने-धोने से क्या फायदा? आखिर यह तो सोचो कि कहाँ जा रहे हो? वहाँ तुम्हें कोई पहचानता भी है? मुफ्त में शरमिंदा होने की क्या जरूरत?

आज़ाद – भई, अब तो यह सिर है और वह दर। बस, आज़ाद है और उन बुतों का कूचा।

हँसोड़ – यह महज नादानी है; यही हिमाकत की निशानी है। मेरी बात मानो, बूढ़े मियाँ को फँसाओ, कुछ चटाओ, फिर उनकी सलाह के मुताबिक काम करो, बेसमझे-बूझे जाना और अपना सा मुँह लेकर वापस आना हिमाकत है।

ये बातें करते हुए दोनों आदमी कोठी के करीब पहुँचे। देखा, बूढ़े मियाँ इनके इंतजार में खड़े हैं। आज़ाद ने कहा — हजरत, अब तो आप ही रास्ता दिखाएँ, तो मंजिल पर पहुँच सकते हैं; वर्ना अपना तो हाल खराब है।

बूढ़े मियाँ — भई, हम तुम्हारे सच्चे मददगार और पक्के तरफदार हैं। अपनी तरफ से तुम्हारे लिए कोई बात उठा न रखेंगे। लेकिन यहाँ का बाबा आलम ही निराला है। यहाँ परिंदों के पर जलते हैं। हवा का भी गुजर होना मुश्किल है। मगर दोनों मेरी गोद की खिलाई हुई हैं, मौके पर आपका जिक्र जरूर करूँगा। मुश्किल यही है कि एक ऊँचे घर से पैगाम आया है, उनकी माँ को शौक चर्राया है कि वहीं ब्याही हो।

आज़ाद — यह तो आपने बुरी खबर सुनाई! कसम खुदा की, मेरी जान पर बन जायगी।

बूढ़े मियाँ — सब्र कीजिए, सब्र। दिल को ढारस दीजिए। अब इस वक़्त जाइए, सुबह आइएगा।

आज़ाद रुखसत होने ही वाले थे, तो क्या देखते हैं, दोनों बहनें झरोखों से झाँक रही हैं। आज़ाद ने यह शेर पढ़ा —

हम यही पूछते फिरते हैं जमाने भर से;
जिनकी तकदीर बिगड़ जाती है, क्या करते हैं?

झरोखे में से आवाज आई —

जीना भी आ गया मुझे, मरना भी आ गया;
पहचानने लगा हूँ तुम्हारी नजर को मैं।

इतना सुनना था कि मियाँ आज़ाद की आँखें मारे खुशी के डबडबा आईं। झरोखे की तरफ फिर जो ताका, तो वहाँ कोई न था। चकराए कि किसने यह शेर पढ़ा। छलावा था टोना था, जादू था, आखिर था क्या? इतने में बूढ़े मियाँ ने इशारे से कहा कि बस, अब जाओ और तड़के आओ।

दोनों दोस्त घर की तरफ चले, तो मियाँ हँसोड़ ने कहा — हजरत, खुदा के वास्ते मेरे घर पर कूद-फाँद न कीजिएगा, बहुत शेर न पढ़िएगा, कहीं मेरी बीवी को खबर हो गई, तो जीना मुश्किल हो जाएगा।

आज़ाद — क्या बीवी से आप इतना डरते हैं! आखिर खौफ काहे का?

हँसोड़ — आपको इस झगड़े से क्या मतलब? वहाँ जरा भले आदमी की तरह बैठिएगा, यह नहीं कि गुल मचाने लगे। जो सुनेगा, वह समझेगा कि कहाँ के शोहदे जमा हो गए हैं।

आज़ाद — समझ गया, आप बीवी के गुलाम है। मगर हमें इससे क्या वास्ता। आम खाने से मतलब कि पेड़ गिनने से?

दोनों आदमी घर पहुँचे, तो लौंडी ने अन्दर से आकर कहा — बेगम साहबा आपको कोई बीस बेर पूछ चुकी हैं। चलिए, बुलाती है। मियाँ हँसोड़ ने ड्योढ़ी पर कदम रखा ही था कि उनकी बीबी ने आड़े हाथों ही लिया। यह दिन-दिन भर आप कहाँ गायब रहने लगे? अब तो आप बड़े सैलानी हो गए। सुबह के निकले-निकले शाम को खबर ली। चलो, मेरे सामने से जाओ। आज खाना-वाना खैर-सल्लाह हैं। हलवाई की दुकान पर दादा जी का फातिहा पढ़ो, तंदूरी रोटियाँ उड़ाओ। यहाँ किसी को कुत्ते ने नहीं काटा कि वक़्त-बे-वक़्त चूल्हे का मुँह काला किया जाए। भले आदमी दो-एक घड़ी के लिए कहीं गए तो गए; यह नहीं कि दिन-दिन भर पता ही नहीं। अच्छे हथकंडे सीखे हैं।

हँसोड़ ने चुपके से कहा — जरा आहिस्ता-आहिस्ता बातें करो। बाहर एक भलामानस टिका हुआ है। इतनी भी क्या बेहयाई?

इस पर वह चमक कर बोली — बस, बस जबान न खुलवाओ बहुत। तुम्हें जो दोस्त मिलता है, वही ग....सवार, जिसके घर न द्वार, जाने कहाँ से उल्फती इनको मिल जाते हैं, कभी किसी शरीफ आदमी से दोस्ती करते नहीं देखा। चलिए, अब दूर हूजिए, नहीं हम बुरी तरह पेश आएँगे। मुझसे बुरा कोई नहीं।

मियाँ हँसोड़ बेचारे की जान अजाब में कि घर में बीवी कोसने सुना रही है, बाहर मियाँ आज़ाद आड़े हाथों लेंगे कि आपकी बीवी ने आपको तो खैर जो कुछ कहा, यह कहा ही मुझे क्यों ले डाला? मैंने उनका क्या बिगाड़ा था? अपना सा मुँह ले कर बाहर चले आए और आज़ाद से कहा — यार आज रोजे की नीयत कर लो। बीवी-जान फौजदारी पर आमादा है। बात हुई और तिनक गईं। महीनों ही रूठी रहती हैं। मगर क्या करूँ, अमीर की लड़की हैं, नहीं तो मैं एक झल्ला हूँ। मुझे यह मिजाज कहाँ पसंद। इसलिए भई, आज फाका है।

आज़ाद — फाका करें आपके दुश्मन। चलिए, किसी नानबाई हलवाई की दुकान पर। मजे से खाना खायँ!

हँसोड़ — अरे यार, इतने ही होते तो बीवी की क्यों सुनते! टका पास नहीं, हलवाई क्या हमारा मामू है?

आज़ाद — इसकी फिक्र न कीजिए। आप हमारे साथ चलिए और मजे से मिठाई चखिए। वह तदबीर सूझी है कि कभी पट ही न पड़े।

दोनों आदमी बाजार पहुँचे। आज़ाद ने रास्ते में हँसोड़ को समझा-बुझा दिया। हँसोड़ तो हलवाई की दुकान पर गए और आज़ाद जरा पीछे रह गए। हँसोड़ ने जाते ही जाते हलवाई से कहा —

मियाँ आठ आने के पैसे दो और आठ आने की पंचमेल मिठाई। हलवाई ने ताजी-ताजी मिठाई तौल दी और आठ आने पैसे भी गिन दिए। हँसोड़ ने पैसे तो गाँठ में बाँधे और मिठाई उसी की दुकान पर चखने लगे। इतने में मियाँ आज़ाद भी पहुँचे और बोले — भई लाला, जरा हमें बेसन के लड्डू तो एक रुपए का तौल देना। उसने एक रुपए के बेसन के लड्डू चंगेर उनके हाथ में दी। इतने में मियाँ हँसोड़ ने लकड़ी उठाई और अपनी राह चले। हलवाई ने ललकारा — मियाँ, चले कहाँ? पहले रुपया तो देते जाओ।

हँसोड़ — रुपया! अच्छा मजाक है! अबे, क्या तूने रुपया नहीं पाया। यहाँ पहले रुपया देते हैं, पीछे सौदा लेते हैं। अच्छे मिले! क्या दो-दो दफे रुपया लोगे? कहीं मैं थाने में रपट न लिखवा दूँ! मुझे भी कोई गँवार समझे हो! अभी चेहरेशाही दे चुका हूँ। अब क्या किसी का घर लेगा?

अब हलवाई और हँसोड़ में तकरार होने लगी। बहुत से आदमी जमा हो गए। कोई कहता है, लाला घास तो नहीं खा गए हो; कोई कहता है, मियाँ एक रुपए के लिए नियत डाँवाडोल न करो; ईमान सलामत रहेगा, तो बहुत रुपए मिलेंगे।

आज़ाद — लाला, कहीं इसी तरह मेरा भी रुपया न भूल जाना।

हलवाई — क्या आपका रुपया? आपने रुपया किसको दिया?

अब जो सुनता है, वही हलवाई को उल्लू बनाता है। लोगों ने बहुत कुछ लानत-मलानत की कि शरीफ आदमी को बेइज्जत करते हो। इतने में उस हलवाई का बुड्ढा बाप आया, तो देखता क्या है कि दुकान पर भीड़ लगी हुई है। पूछा, क्या माजरा है? क्या दुकान लुट गई? एक बिगड़े-दिल ने कहा — अजी, लुट तो नहीं गई मगर अब तुम्हारी दुकान की साख जाती रही! अभी एक भलेमानस ने खन से रुपया फेंका। अब कहता है कि हमने रुपया पाया ही नहीं। उसको छोड़ा, तो दूसरे शरीफ का दामन पकड़ लिया कि तुमने रुपया नहीं दिया; हालाँकि वह बेचारे सैकड़ों कसमें खाते हैं कि मैं दे चुका हूँ। हलवाई बड़ा तीखा बुड्ढा था, सुनते ही आग हो गया। झल्ला कर अपने लड़के की खोपड़ी पर तान के एक चपत लगाई और बोला — कहता हूँ कि भंग न खाया कर, मानता ही नहीं। जा कर बैठ दुकान पर।

मियाँ आज़ाद और हँसोड़ ने मजे से डेढ़ रुपए की मिठाई बाँध ली, और आठ आने के पैसे घाते में। जब घर पहुँचे, तो खूब मिठाई चखी। बची बचाई अन्दर भेज दी। हँसोड़ ने कहा — यार इसी तरह कहीं से रुपया दिलवाओ, तो जानें। आज़ाद ने कहा — यह कितनी बड़ी बात है? अभी चलो। मगर किसी से माँग-मूँग कर कुछ अशर्फियाँ बाँध लो। मियाँ हँसोड़ ने अपने एक

दोस्त से शाम को लौटा देने के वादे पर कुछ अशर्फियाँ लीं! दोनों ने रोशनअली को साथ लिया और बाजार चले। पहले एक महाजन को अशर्फियाँ दिखाईं और परखवाईं। बेचते हैं, खरी-खोटी देख लीजिए। महाजन ने उनको खूब कसौटी पर कसा और कहा — उन्नीस के हिसाब से लेंगे। इसके बाद आज़ाद ने तो अशर्फियाँ ले कर घर की राह ली और मियाँ हँसोड़ एक कोठी में पहुँचे। वहाँ कहा कि हमको दो सौ अशर्फियाँ खरीदनी हैं। महाजन ने देखा, आदमी शरीफ है, फौरन दो सौ अशर्फियाँ उनके सामने ढेर कर दीं। बीस रुपए की दर बताई। हँसोड़ ने महाजन के मुनीम से एक पर्चे पर हिसाब लिखवाया और अशर्फियाँ बाँध कर कोठी के बाहर पहुँचे। गुल मचा — हाँय-हाँय, लेना-लेना, कहाँ-कहाँ! मियाँ हँसोड़ पैंतरा बदल सामने खड़े हो गए। बस, दूर ही से बातचीत हो। सामने आए और मैंने तुला हाथ दिया।

महाजन — ऐ साहब, रुपए तो दीजिए?

हँसोड़ — कैसे रुपए? हम नहीं बेचते।

महाजन — क्या कहा, नहीं बेचते? क्या अशर्फियाँ आपकी हैं?

हँसोड़ — जी, और नहीं तो क्या आपके बाप की हैं? हम नहीं बेचते, आपका इजारा है कुछ? आप हैं कौन जबर्दस्ती करनेवाले?

इतने में आज़ाद भी वहाँ आ पहुँचे। देखा, तो महाजन और उनके मुनीम जी गुल मचा रहे हैं — तुम अशर्फियाँ लाए कब थे? और हँसोड़ कह रहे हैं, हम नहीं बेचते। सैकड़ों आदमी जमा थे। पुलिस का एक जमादार भी आ मौजूद हुआ।

जमादार — यह क्या झगड़ा है लाला चुन्नामल? वह नहीं बेचते, तो जबर्दस्ती क्यों करते हो? अपने माल पर सबको अख्तियार है।

महाजन — अच्छी पंचायत करते हो जमादार! यहाँ चार हजार रुपए पर पानी फिरा जाता है, आप कहते हैं, जाने भी दो। ये अशर्फियाँ तो हमारी हैं। यह मियाँ खरीदने आए थे, हमने गिन दीं। बस, बाँध बूँध कर चल खड़े हुए।

एक आदमी — वाह, भला कोई बात भी है! यह अकेले, आप दस। जो ऐसा होता, तो यह कोठी के बाहर भी आने पाते? आप सब मिल कर इनका अचार न निकाल लेते? इतने बड़े महाजन, और दो सौ अशर्फियों के लिए ईमान छोड़े देते हो!

जमादार — बुरी बात!

हँसोड़ — देखिए, आप बाजार भर में दरियाफ्त कर लें कि हमने कितनी दूकानों में अशर्फियाँ दिखलाई और परखवाई हैं? बाजार भर गवाह है, कुछ एक-दो आदमी वहाँ थोड़े थे? इसको भी जाने दीजिए। यह पर्चा पढ़िए। अगर यह बेचते होते, तो बीस की दर

से हिसाब लगाते, या साढ़े उन्नीस से? मुफ्त में एक शरीफ के पीछे पड़े हैं, लेना एक ना देना दो।

आखिर यह तय हुआ कि बाजार में चल कर तहकीकात की जाय। मियाँ हँसोड़ साहूकार, उनके मुनीम, जमादार और तमाशाई, सब मिलकर बाजार चले। वहाँ तहकीकात की, तो दलालों और दुकानदारों ने गवाही दी कि बेशक इनके पास अशर्फियाँ थीं और इन्होंने परखवाई भी थीं। अभी-अभी यहाँ से गए थे।

जमादार — लाला साहब, अब खैर इसी में है कि चुपके रहिए; नहीं तो बेढब ठहरेगी। आपकी साख जायगी और मुनीम की शामत आ जायगी।

महाजन — क्या अंधेर है! चार हजार रुपयों पर पानी पड़ गया, इतने रुपए कभी उम्र भर में नहीं जमा किए थे, और जो है, हमीं को उल्लू बनाता है। खैर साहब, लीजिए, हाथ धोये!

तीनों आदमी घर पहुँचे, तो बाँछें खिली जाती थीं। जाते ही दो सौ अशर्फियाँ खन-खन करके डाल दीं।

आज़ाद — देखा, यों लाते हैं। अब ये अशर्फियाँ हमारी भाभीजान के पास रखो।

हँसोड़ — भाई, तुम एक ही उस्ताद हो। आज से मैं तुम्हारा शागिर्द हो गया।

आज़ाद — ले, भाभी से तो खुश-खबरी कह दो। बहुत मुँह फुलाए बैठी थीं।

मियाँ हँसोड़ ने घर में जा कर कहा — कहाँ हो! क्या सो रहीं?

बीवी — क्या कमाई करके लाए हो, डपट रहे हो?

हँसोड़ — (अशर्फियाँ खनका कर) लो, इधर आओ, बहुत मिजाज न करो। ये लो, दस हजार रुपए की अशर्फियाँ।

बीवी — ये बुत्ते किसी और को दीजिएगा! ये तो वही हैं, जो अभी मिर्जा के यहाँ से मँगवाई थीं।

हँसोड़ — वह यह हैं, इधर।

बीवी — देखूँ, (खिलखिला कर) किसी के यहाँ फाँदे थे क्या? आखिर लाए किसके घर से? बस, चुपके से हमारे संदूकचे में रख दो।

हँसोड़ — क्यों न हो, मार खायँ गाजी मियाँ, माल खायँ मुजाविर।

बीवी — सच बताओ, कहाँ मिल गई? तुम्हें हमारी कसम!

हँसोड़ — यह उन्हीं की करामात है, जिन्हें तुम शोहदा और लुच्चा बनाती थीं।

बीवी — मियाँ, हमारा कुसूर माफ करो। आदमी की तबीयत हमेशा एक सी थोड़े ही रहती हैं। मैं तो तुम्हारी लौंडी हूँ।

आज़ाद — (बाहर से) हम भी सुन रहे हैं भाभी साहब! अभी तो आपने हमारे भाई बेचारे को डपट लिया था, घर से बाहर कर दिया था; हमको जो गालियाँ दीं, सो घाते में। अब जो अशर्फियाँ देखीं, तो प्यारी बीवी बन गईं। अब इनके कान न गरमाइएगा; यह बेचारे बेबाप के हैं।

बीवी ने अन्दर से कहा — आप हमारे मेहमान हैं। आपको क्या कहूँ, आपकी हँसी सिर आँखों पर।

24

बड़ी बेगम साहबा पुराने जमाने की रईसज़ादी थीं, टोने टोटके में उन्हें पूरा विश्वास था। बिल्ली अगर घर में किसी दिन आ जाय, तो आफत हो जाय। उल्लू बोला और उनकी जान निकली। जूते पर जूता देखा और आग हो गईं। किसी ने सीटी बजाई और

उन्होंने कोसना शुरू किया। कोई पाँव पर पाँव रख कर सोया और आपने ललकारा। कुत्ता गली में रोया और उनका दम निकल गया। रास्ते में काना मिला ओर उन्होंने पालकी फेर दी। तेली की सूरत देखी और खून सूख गया। किसी ने जमीन पर लकीर बनाई और उसकी शामत आई। रास्ते में कोई टोक दे, तो उसके सिर हो जाती थीं। सावन के महीने में चारपाई बनवाने की कसम खाई थी। जब देखा कि लड़कियाँ सयानी हो गईं तो शादी की फिक्र हुई। ऊँचे-ऊँचे घरों से पैगाम आने लगे। बड़ी लड़की हुस्नआरा की शादी एक रईस के लड़के से तय हो गई। हुस्नआरा पढ़ी-लिखी औरत थी। उसे यह कब मंजूर हो सकता था कि बिना देखे-भाले शादी हो जाय। जिसकी सूरत ख्वाब में भी नहीं देखी, जिसकी लियाकत और आदत की जरा भी खबर नहीं, उसके साथ हमेशा के लिए बाँध दी जाऊँगी। सहेलियाँ तो उसे मुबारकबाद देती थीं और उसकी जान पर बनी हुई थी। या खुदा, किससे अपने दिल का दर्द कहूँ? बोलूँ; तो अड़ोस-पड़ोस की औरतें ताने दें कि यह लड़की तो सवार को खड़े-खड़े घोड़े पर से उतार ले। दिल ही दिल में बेचारी कुढ़ने लगी। अपनी छोटी बहन सिपहआरा से अपना दुःख कहती थी और दोनों बहनें गले मिल कर रोती थीं।

एक दिन दोनों बहनें बैठी हुई अखबार पढ़ रही थीं। उसमें एक शरीफ लड़के की दास्तान छपी हुई थी। पढ़ने लगीं —

'यह हजरत दो बार कैद भी रह चुके हैं, और अफसोस तो यह है कि एक रईस के साहबजादे हैं। परसों रात को आपने यह शरारत की कि एक रईस के यहाँ कूदे और कोठरी का ताला तोड़ कर अन्दर घुसने लगे। महाजन की लड़की ने जो आहट पाई तो कुलबुला कर उठ खड़ी हुई और अपनी माँ को जगाया। जरी जागे तो, बिल्ली ने तेल का घड़ा गिरा दिया; बिल-बिल! उसकी माँ गड़बड़ा कर जो उठी तो आप कोठरी के बाहर एक चारपाई के नीचे दबक रहे। उसने अपने लड़के को जगाया। वह जवान ताल ठोक कर चारपाई पर से कूदा, चोर का कलेजा कितना? आप चारपाई के नीचे से घबरा कर निकले। महाजन का लड़का भी उनकी तरफ झपट पड़ा और उन्हें उठा कर दे मारा। तब उस बदमाश ने कमर से छुरी निकाली और उस महाजन के पेट में भोंक दी। आनन-फानन जान निकल गई। पड़ोसी और चौकीदार दौड़ पड़े और उस शरीफजादे को गिरफ्तार कर लिया। अब वह हवालात में है। अफसोस की बात तो यह है कि उसकी शादी नवाब फरेदूँजंग की लड़की से करार पाई थी जिसका नाम हुस्नआरा है।'

यह लेख पढ़ कर हुस्नआरा आठ-आठ आँसू रोने लगी। उसकी छोटी बहन उसके गले से चिमट गई और उसको बहुत कुछ समझा-बुझा कर अपनी बूढ़ी माँ के पास गई। अखबार दिखा कर बोली — देखिए, क्या गजब हो गया था, आपने बेदेखे-भाले शादी मंजूर कर ली थी। बूढ़ी बेगम ने यह हाल सुना, तो सिर पीट कर बोलीं — बेटी, आज तड़के जब मैं पलंग से उठी, तो पट से किसी ने छींका और मेरी बाईं आँख भी फड़कने लगी। उसी दम पाँव-तले मिट्टी निकल गई। मैं तो समझती ही थी कि आज कुछ असगुन होगा। चलो, अल्लाह ने बड़ी खैर की। हुस्नआरा को मेरी तरफ से छाती से लगाओ और कह दो कि जिसे तुम पसंद करोगी, उसी के साथ निकाह कर दूँगी।

सिपहआरा अपनी बहन के पास आई, तो बाँछें, खिली हुई थीं। आते ही बोली — लो बहन, अब तो मुँह-माँगी मुराद पाई? अब उदास क्यों बैठी हो? खुदा-कसम, वह खुश-खबरी सुनाऊँ कि जी खुश हो जाय।

हुस्नआरा — ऐ है, तो कुछ कहोगी भी। यहाँ क्या जाने, इस वक़्त किस गम में बैठे हैं, यह खुशी का कौन मौका है?

सिपहआरा — ऐ वाह, हम यों बता चुके। बिना मिठाई लिए न बतावेंगे। अम्माँजान ने कह दिया कि आप जिसके साथ जी चाहे,

शादी कर लें। वह अब दखल न देंगी। हाँ, शरीफ़ज़ादा और कल्ले-ठल्ले का जवान हो।

हुस्नआरा — खूबसूरती औरतों में देखी जाती है, मरदों को इससे क्या काम? हाँ, काला-कलूटा न हो, बस।

सिपहआरा — यह आप क्या कहनी हैं। 'आदमी-आदमी अंतर, कोई हीरा कोई कंकर।' क्या चाँद में गरहन लगाओगी?

हुस्नआरा — ऐ, तो सूत न कपास, कोरी से लठम-लठा!

इतने में बूढ़े मियाँ पीरबख्श ने आवाज दी — बेटी, कहाँ हो, मैं भी आऊँ?

सिपहआरा — आओ, आओ, तुम्हारी ही तो कसर थी। आज सबेरे-सबेरे कहाँ थे? कल तो बजरा ऐसा डाँवाडोल होता था, जैसे तिनका बहा चला जाता है। कलेजा धक-धक करता था।

पीरबख्श — तुमसे कुछ कहना है बेटी! देखो, तुम हमारी पोतियों से भी छोटी हो। तुम दोनों को मैंने गोदियों खिलाया है, और तुम्हारी माँ हमारे सामने ब्याह आई हैं। तुम दोनों को मैं अपने बेटे से ज्यादा चाहता हूँ मैं जो कहूँ, उसे कान लगा कर सुनना। तुम अब सयानी हुई। अब मुझे तुम्हारी शादी की फिक्र है। पहले तुमसे सलाह ले लूँ, तो बेगम साहब से अर्ज करूँ। यों तो

कोई लड़की आज तक बिन ब्याही नहीं रही; लेकिन वर उन्हीं लड़कियों को अच्छा मिलता है, जो खुश-नसीब हैं। तुम्हारी माँ हैं तो पुरानी लकीर की फकीर, मगर यह मेरा जिम्मा कि जिसे तुम पसंद करो, उसे वह भी मंजूर कर लेंगी। आजकल यहाँ एक शरीफ नौजवान आकर ठहरे हैं। सूरत शाहजादों की सी आदत फरिश्तों की सी, चलन भलेमानसों का सा, बदन छरहरा, दाढ़ी-मूँछ का नाम नहीं। अभी उठती जवानी है। शेर कहने में, बोलचाल में, इल्म व कमाल में अपना सानी नहीं रखते। तसवीर ऐसी खींचें कि बोल उठे। बाँक-पटे में अच्छे-अच्छे बाँकों के दाँत खट्टे कर दिए। उनकी नस-नस में खूबियाँ कूट-कूट कर भरी हैं। अगर हुस्नआरा के साथ उनका निकाह हो जाय, तो खूब हो। पहले तुम देख लो। अगर पसंद आए, तो तुम्हारी माँ से जिक्र करूँ। हाँ, यह वही जवान हैं, जो बजरे के साथ तुमको देखते हुए बाग में जा रहे थे। याद आया?

हुस्नआरा — वहाँ तो बहुत से आदमी थी, क्या जाने, किसको कहते हो। बेदेखे-भाले कोई क्या कहे।

सिपहआरा — मतलब यह कि दिखा दो। भला देखें तो, हैं कैसे!

पीरबख्श — ऐसे जवान तो हमने आज तक कभी देखे न थे। वह नूर है कि निगाह नहीं ठहरती। कसम खुदा की, जो बात करे, रीझ जाय।

हुस्नआरा — हम बतावें, जब हम बजरे पर हवा खाने चलें तो उन्हें भी वहाँ लाओ? हम उनको देख लें, तब तुम अम्माँ से कहो।

यहाँ ये बातें हो रही थीं, उधर मियाँ आज़ाद अपने हँसोड़ दोस्त के साथ इसी कोठी की तरफ टहलते चले आ रहे थे। रास्ते में आठ-दस गधे मिले। गधे वाला उन सबों पर कोड़े फटकार रहा था। आज़ाद ने कहा — क्यों भई, आखिर इन गधों ने तुम्हारा क्या बिगाड़ा है, जो पीटते जाते हो? कुछ खुदा का भी खौफ है, या नहीं? गधेवाले ने इसका तो कुछ जवाब न दिया, गद से एक और जमाई। तब तो मियाँ आज़ाद आग हो गए। बढ़ कर गधेवाले के कई चाँटे लगाए, अबे आखिर इनमें जान है या नहीं? अगर न चलते, तो हम कहते — खैर यों ही सही; खासे जा रहे हैं खटाखट, और आप पीट रहे हैं।

हँसोड़ — आप कौन होते हैं बोलनेवाले? उसके गधे हैं, जो चाहता है, करता है।

आज़ाद — भई, हमसे तो यह नहीं देखा जाता कि किसी बेजबान पर कोई आदमी जुल्म करे और हम बैठे देखा करें।

कोई दस ही कदम आगे बढ़े होंगे कि देखा, एक चिड़ीमार कंपे में लासा लगाए, टट्टी पर पत्ते जमाए चिड़ियों को पकड़ता फिरता हे। मियाँ आज़ाद आग भभूका हो गए। इतने में एक तोता जाल में आ फँसा। तब तो मियाँ आज़ाद बौखला गए। गुल मचा कर कहा -ओ चिड़ीमार, छोड़ दे इस तोते को, अभी-अभी छोड़। छोड़ता है या आऊँ? चिड़ीमार हक्का-बक्का हो गया। बोला — साहब, यह तो हमारा पेशा है। आखिर इसको छोड़ दें, तो करें फिर क्या? आज़ाद बोले — भीख माँग, मजदूरी कर, मगर यह पेशा छोड़ दे। यह कह कर आपने झोला, कंपा, जाल, सब छीन-छान लिया। झोले को जो खोला तो, सब जानवर फुर से उड़ गए। इतना ही नहीं, कंपे को काट-कूट कर फेंका, जाल को नोच-नाच कर बराबर किया। तब जेब से निकाल कर दस रुपए चिड़ीमार को दिए और बड़ी देर तक समझाया।

हँसोड़ — यार, तुम बड़े बेढब आदमी हो। मुझे तो ऐसा मालूम होता है कि तुम सनक गए हो।

आज़ाद — भई, तुम समझते ही नहीं कि मेरा असल मतलब क्या है?

हँसोड़ — आप अपना मतलब रहने दीजिए। मेरा-आपका साथ न होगा। कहीं आप किसी बिगड़े-दिल से भिड़ पड़े, तो आपके साथ मेरी भी शामत आ जायगी।

आज़ाद — अच्छा, गुस्से को थूक दीजिए। चलिए हमारे साथ।

हँसोड़ — अब तो रास्ते में न लड़ पड़िएगा?

आज़ाद — कह तो दिया कि नहीं।

दोनों आदमी आगे चले, तो क्या देखते हैं, राह में एक गाड़ीवान बैल की दुम ऐंठ रहा है। आज़ाद ने ललकारा। अबे ओ गाड़ीवान, खबरदार, जो आज से बैल को दुम ऐंठी।

हँसोड़ — फिर वही बात! इतनी जल्दी भूल गए?

आज़ाद चुप हो गए। दोनों आदमी चुपचाप चलने लगे। थोड़ी देर में कोठी के करीब जा पहुँचे। एकाएक बूढ़े मियाँ पीरबख्श आते दिखाई दिए। अलेक-सलेम के बाद बातें होने लगीं।

आज़ाद — कहिए, उधर भी गए थे?

पीरबख्श — हाँ साहब, गया क्यों न था। सबेरे-सबेरे जा पहुँचा और आपकी इतनी तारीफ की कि पुल बाँध दिए। और फिर आप जानिए, गोकि बंदा आलिम नहीं, फाजिल नहीं, मुंशी नहीं, लेकिन बड़े-बड़े आलिमों की आँखें तो देखी हैं, ऐसी लच्छेदार बातें

की कि आपका रंग जम गया। अब आपको देखने को बेकरार हैं। हाँ, एक बुरी पख यह हैं कि आपका इम्तिहान लेंगी। ऐसा न हो कि वह कुछ पूछ बैठें और आप बगलें झाँकने लगें।

हँसोड़ — भई, इम्तिहान का तो नाम बुरा। शायद रह गए, तो फिर?

आज़ाद — फिर आपका सिर! रह जाने की एक ही कही। इम्तिहान के नाम से आप जैसे गौखों की जान निकलती है या मेरी?

पीरबख्श — तो मैं जा कर कह दूँ कि वह आए हैं।

यह कह कर पीरबख्श घर में गए और कहा — वह आए हैं, कहो, तो बुला लाऊँ।

सिपहआरा ने कहा — अजनबी का खट से घर में चला आना बुरा। पहले उनसे कहिए, चल कर बाग की सैर करें।

पीरबख्श बाहर गए और मियाँ आज़ाद को ले कर बाग में टहलने लगे। दोनों बहनें झरोखों से देखने लगीं। सिपहआरा बोली — बहन, सचमुच यह तो तुम्हारे लायक हैं। अल्लाह ने यह जोड़ी अपने हाथों से बनाई है।

हुस्नआरा — ऐ वाह, कैसी नादान हो! भला शादी-ब्याह भी यों हुआकरते हैं?

सिपहआरा — मैं एक न मानूँगी।

हुस्नआरा — मुझसे क्यों झगड़ती हो, अम्माँजान से कहो।

सिपहआरा — अच्छा, तो मैं अम्माँजान के यहाँ जाती हूँ, मगर देखिए, मुकर न जाइएगा।

यह कहकर सिपहआरा बड़ी बेगम के पास पहुँची और आज़ाद का जिक्र छेड़ कर बोली। अम्माँजान, मैंने तो आज तक ऐसा खूबसूरत आदमी देखा ही नहीं। शरीफ, हँसमुख और पढ़े-लिखे। आप भी एक दफे देख लें।

बड़ी बेगम ने सिपहआरा को छाती से लगाया और हँस कर कहा — तू मुझसे उड़ती है? यह क्यों नहीं कहती कि सिखाई पढ़ाई आई हूँ।

सिपहआरा — नहीं अम्माँजान, आप उन्हें जरूर बुलाएँ।

बेगम — हुस्नआरा से भी पूछा? वह क्या कहती हैं?

सिपहआरा — वह तो कहती हैं, अम्माँजान जिससे चाहे, उससे करें। मगर दिल उनका आया हुआ है।

बेगम — अच्छा, बुलवा लो।

सिपहआरा वहाँ से लौटी, तो मारे खुशी के उछली पड़ती थी। फौरन पीरबख्श को बुला कर कहा — आप मियाँ आज़ाद को अन्दर लाइए। अम्माँ-जान उन्हें देखना चाहती हैं।

जरा देर में पीरबख्श मियाँ आज़ाद को लिए हुए बेगम के पास पहुँचे। आज़ाद — आदाब बजा लाता हूँ।

बेगम — जीते रहो बेटा! आओ, इधर आकर बैठो। मिजाज तो अच्छे हैं? सिपहआरा तुम्हारी बड़ी तारीफ करती थी, और बेशक तुम हो इस लायक। तुमको देख कर तबीयत बहुत खुश हुई।

आज़ाद — आपकी ज़ियारत का बहुत दिनों से शौक था। सच है, बड़े-बूढ़ों की क्या बात है!

बेगम — क्यों बेटा, हाथी को ख्वाब में देखे, तो कैसा?

आज़ाद — बहुत बुरा। मगर हाँ, अगर हाथी किसी पर अपनी सूँड़ फेर रहा हो, तो समझना चाहिए कि आई हुई बला टल गई।

बेगम — शाबाश, तुम बड़े लायक हो।

बेगम साहब ने मियाँ आज़ाद को बड़ी देर तक बिठाया और साथ ही खाना खिलाया। आज़ाद हाँ में हाँ मिलाते जाते थे और दिल ही दिल में खिलखिलाते थे। जब शाम हुई, तो आज़ाद रुखसत हुए।

आसमान पर बादल छाए हुए थे, तेज हवा चल रही थी, मगर दोनों बहनों को बजरे पर सैर करने की धुन समाई। दरिया के किनारे आ पहुँचीं। पीरबख्श ने बजरा खोला और दोनों बहनों को बिठा कर सैर कराने लगे। बजरा बहाव पर फर्राटे से बहा जाता था। ठंडी-ठंडी हवाएँ, काली-काली घटाएँ, सिपहआरा की प्यारी-प्यारी बातें, बूँदों का गिरना, लहरों का थिरकना अजब बहार दिखाता था। इतने में हवा ने वह जोर बाँधा कि मेढ़ा उछलने लगा। अब बजरे कि यह हालत है कि डाँवाडोल हो रहा है। यह डूबा, वह डूबा। पीरबख्श था तो खुर्राट, लेकिन उसके भी हाथ-पाँव फूल गए, सर-दरिया की कहानियाँ सब भूल गए। दोनों बहनें काँपने लगीं। एक-दूसरे को हसरत की निगाह से देखने लगीं। दोनो की दोनों रो रही थीं। मियाँ आज़ाद अभी तक दरिया के किनारे टहल रहे थे। बजरे को पानी में चक्कर खाते देखा, तो होश उड़ गए। इतने में एक दफे बिजली चमकी। सिपहआरा डर कर दौड़ी, मगर मारे घबराहट के नदी में गिर पड़ी। डूबते ही पहले गोता खाया और लगी हाथ-पाँव फटफटाने। जरा देर के बाद फिर उभरी और फिर गोता खाया। आज़ाद ने यह कैफियत देखी, तो झटपट कपड़े उतार कर धम से कूद ही तो पड़े। पहली डुबकी मारी, तो सिपहआरा के बाल हाथ में आए उन्होंने झप से जुल्फ को पकड़कर खींचा, तो वह उभरी। यह वही सिपहआरा है,

जो किसी अनजान आदमी को देख कर मुँह छिपा लेती और फुर्ती से भाग जाती थी। मियाँ आज़ाद उसे साथ लिए, मल्लाही चीरते और खड़ी लगाते बजरे की तरफ चले। लेकिन बजरा हवा से बातें करता चला जाता था। पानी बल्लियों उछलता था। आज़ाद ने जोर से पुकारा — ओ मियाँ पीरबख्श, बजरा रोको, खुदा के वास्ते रोको। पीरबख्श के होश-हवास उड़े हुए थे। बजरा खुदा की राह पर जिधर चाहता था, जाता था। मियाँ आज़ाद बहुत अच्छे तैराक थे; लेकिन बरसों से आदत छुटी हुई थी। दम फूल गया। इत्तिफ़ाक़ से एक भँवर में पड़ गए। बहुत जोर मारा, मगर एक न चल सकी। उस पर एक मुसीबत यह और हुई कि सिपहआरा छूट गई। आज़ाद की आँखों से आँसू निकल पड़े। फिर बड़ी फुर्ती से झपटे, लाश को उभारा और लादकर चले। मगर अब देखते हैं, तो बजरे का कहीं पता ही नहीं। दिल में सोचे, बजरा डूब गया और हुस्नआरा लहरों का लुकमा बन गई। अब मैं सिपहआरा को लादे-लादे कहाँ तक जाऊँ, लेकिन दिल में ठान ली कि चाहे बचूँ, चाहे डूबूँ, सिपहआरा को न छोड़ूँगा। फिर चिल्लाए — यारो, कोई मदद को आओ। एक बुड्ढा आदमी किनारे पर खड़ा यह नजारा देख रहा था। आज़ाद को इस हालत में देखकर आवाज दी। शाबाश बेटा, शाबाश! में अभी आता हूँ। यह कह कर उसने कपड़े उतारे और लँगोट बाँध कर धम से कूद ही

तो पड़ा। उसकी आवाज का सुनना था कि मियाँ आज़ाद को ढारस हुआ, वह तेजी के साथ चलने लगे। बुड्ढे आदमी ने दो ही हाथ खड़ी के लगाए थे कि साँस फूल गई और पानी ने इस जोर से थपेड़ा दिया कि पचास गज के फासले पर हो रहा। अब न आज़ाद को वह सूझता है और न उसको आज़ाद नजर आते हैं। मल्लाह ने बजरे पर से बुड्ढे को देख लिया। समझा कि मियाँ आज़ाद हैं। पुकारा — अरे भई आज़ाद, जोर करके इधर आओ। बुड्ढे ने बहुत हाथ-पैर मारे, मगर न जा सका। तब पीरबख्श ने डाँड़ सँभाले और बुड्ढे की तरफ चले मगर अफसोस, दो-चार ही हाथ रह गया था कि एक मगर ने भाड़ सा मुँह खोल कर बुड्ढे को निगल लिया। मल्लाह ने सिर पीटकर रोना शुरू किया — हाय आज़ाद, तुम भी जुदा हुए, बेचारी सिपहआरा का साथ दिया, वह आवाज मियाँ आज़ाद के कानों में भी पड़ी। समझे, वही बुड्ढा जो टीले पर से कूदा था, चिल्ला रहा है। इतने में बजरा नजर आया तो बाग-बाग हो गए। अब यह बिलकुल बेदम हो चुके थे; लेकिन बजरे को देखते ही हिम्मत बँध गई। जोर से खड़ी लगानी शुरू की। बजरे के करीब आए, तो पीरबख्श ने पहचाना। मारे खुशी के तालियाँ बजाने लगे। आज़ाद ने सिपहआरा को बजरे में लिटा दिया और दोनों ने मिल कर उसके पेट से पानी निकाला। फिर लिटा कर अपने बैग में से कोई दवा

निकाली और उसे पिला दी। अब हुस्नआरा की फिक्र हुई। वह बेचारी बेहोश पड़ी हुई थी। आज़ाद ने उसके मुँह पर पानी के छींटे दिए, तो जरा होश आया। मगर आँखें बन्द। होश आते ही पूछा — प्यारी सिपहआरा कहाँ है? आज़ाद जीते बचे? पीरबख्श ने पुकार कर कहा — आज़ाद तुम्हारे सिरहाने बैठे हैं और सिपहआरा तुम्हारे पास लेटी हैं। इतना सुनना था कि हुस्नआरा ने आँख खोली और आज़ाद को देख कर बोली — आज़ाद, मेरी जान अगर तुम पर से फिदा हो जाय, तो इस वक़्त मुझे उससे ज्यादा खुशी हो, जितनी सिपहआरा के बच जाने से हुई। मैं सच्चे दिल से कहती हूँ, मुझे तुमसे सच्ची मुहब्बत है।

इतने में दवा का असर जो पहुँचा, तो सिपहआरा भी आहिस्ता से उठ बैठी। दोनों बहनें गले मिल कर रोने लगीं। हुस्नआरा बार-बार आज़ाद की बलाएँ लेती थी। मैं तुम पर वारी हो जाऊँ, तुमने आज वह किया, जो दूसरा कभी न करता। हवा बँध गई थी, बजरा आहिस्ता-आहिस्ता किनारे पर आ लगा। आज़ाद ने घास पर लेट कर कहा। उफ, मर मिटे?

हुस्नआरा — बेशक सिपहआरा की जान बचाई, मेरी जान बचाई, इस बेचारे बुड्ढे की जान बचाई। इससे बढ़ कर अब और क्या होगा!

पीरबख्श — मियाँ आज़ाद, खुदा तुमको ऐसा बुड्ढा करे कि तुम्हारे परपोते मुझसे बड़े हो-होकर तुम्हारे सामने खेलें। मैंने कुछ और ही समझा था। एक आदमी तैरता हुआ जाता था। मैंने समझा, तुम हो।

आज़ाद — हाँ, हाँ, मैं तो उसे भूल ही गया था। फिर वह कहाँ गया?

पीरबख्श — क्या कहूँ, उसको तो एक मगर निगल गया।

आज़ाद — अफसोस! कितना दिलेर आदमी था। मुझे मुसीबत में देख कर धम से कूद पड़ा।

सिपहआरा — मुझ नसीबों-जली के कारण उस बेचारे की जान मुफ्त में गई। मेरी आँखों में अँधेरा सा छाया हुआ है। इस दरिया का सत्यानाश हो जाय! जिस वक़्त मैं अपना गिरना और गोते लगाना याद करती हूँ, तो रोएँ खड़े हो जाते हैं। पहले तो मैंने खूब हाथ-पाँव मारे, मगर जब नीचे बैठ गई तो मुँह में पानी जाने लगा। मैंने दोनों हाथों से मुँह बन्द कर लिया। फिर मुझसे कुछ याद नहीं।

हुस्नआरा — बड़े गाढ़े वक़्त काम आए।

पीरबख्श — अब आप जरा सो रहिएगा, तो थकावट कम हो जाएगी।

तीनों आदमी थक कर चूर हो गए थे। वहीं हरी-हरी घास पर लेटे, तो तीनों की आँख लग गई। चार घंटे तक सोते रहे। जब नींद खुली, तो घर चलने की ठहरी। पीरबख्श ने कहा — इस वक़्त तो बजरे पर सवार होना हिमाकत है। सड़क-सड़क चलें।

आज़ाद — अजी, तो क्या हर दम तूफान आया करता है!

दोनों बहनों ने कहा — हम तो इस वक़्त बजरे पर न चढ़ेंगे, चाहे इधर की दुनिया उधर हो जाय।

आज़ाद ने कहा — जो इस वक़्त झिझक गईं, तो उम्र भर खौफ लगता रहेगा।

हुस्नआरा — चलिए, रहने दीजिए, अब तो मारे थकावट के आपके बदन में इतनी ताकत भी नहीं रही होगी कि किसी की लाश को दो कदम भी ले चलिए। ना साहब, बंदी नहीं जाने की। बजरे की सूरत देखने से बदन काँपता है। हम तुम्हें भी न जाने देंगे।

सिपहआरा — आप बजरे पर बैठे, और हम इधर दरिया में फाँद पड़े!

आखिर यह तय हुआ कि पीरबख्श बजरा लाएँ और तीनों आदमी ऊपर-ऊपर घर की तरफ चलें।

आज़ाद ने मौका पाया, तो बोले — अब तो हमसे कभी परदा न होगा? हम आपको अपना दिल दे चुके। हुस्नआरा ने कुछ जवाब न दिया, शरमा कर सिर झुका लिया।

रात बहुत ज्यादा बीत गई थी। आज़ाद पीरबख्श के साथ सोए। सुबह को उठे, तो क्या देखते हैं, हुस्नआरा के साथ उनकी दो फुफेरी बहनें छमाछम करती चली आती हैं। एक का नाम जहानआरा था, दूसरी का गेतीआरा। दोनों बहनों ने आज़ाद को झरोखे से देखा। तब जहानआरा हुस्नआरा से बोली — बहन, तुम्हारी पसंद को मैं कायल हो गई। ऐसा बाँका जवान हमारी नजर से नहीं गुजरा।

सिपहआरा — हम कहते न थे कि मियाँ आज़ाद सा तरहदार जवान कम होगा। फिर, मेरी तो उन्होंने जान ही बचाई है। जब तक जिऊँगी, तब तक उनका दम भरूँगी।

इतने में पीरबख्श भी आ पहुँचे। जहानआरा ने उनसे कहा — क्यों जी, इन सन से सफेद बालों में खिजाब क्यों नहीं लगाते? अब तो आप कोई दो सौ से ऊपर होंगे। क्या मरना बिलकुल भूल बैठे? तुम्हें तो मौत ने भी साँड़ की तरह छोड़ दिया।

पीरबख्श — बेटी, बहुत कट गई, थोड़ी बाकी है! यह भी कट जायगी। खिजाब लगा कर रूसियाह कौन हो!

सिपहआरा — आज़ाद से तो अब कोई परदा है नहीं। उन्हें भी न बुला लें?

गेतीआरा — कभी की जान-पहचान होती, तो मुजायका न था।

आज़ाद ने सामने से आकर कहा — फकीरों से भी जान-पहचान की जरूरत? फकीरों से कैसा परदा?

गेतीआरा — यह फकीर आप कब से हुए?

आज़ाद — जब से हसीनों की सोहबत हुई।

गेतीआरा — आप शायर भी तो हैं! अगर तबीयत हाजिर हो, तो इस मिसरे पर एक गजल कहिए —

मरजे-इश्क लादवा देखा।

आज़ाद — तबीयत की तो न पूछिए, हर वक़्त हाजिर रहती है; रहा दिमाग, वह अपने में नहीं। फिर भी आपका हुक्म कैसे टालूँ। सुनिए —

शेख, काबे में तूने क्या देखा;
हम बुतों से मिले; खुदा देखा।
सोज-नाला ने कुछ असर न किया;

हमने यह साज भी बजा देखा।
आह ने मेरी कुछ न काम किया;
हमने यह तीर भी लगा देखा।
हर मरज की दवा मुकर्रर है;
मरजे इश्क लादवा देखा।
शक्ले नाखुन है गरचे अबरुए-यार;
पर न इसको गिरहकुशा देखा।
हमने देखा न आशिके आज़ाद;
और जो देखा तो मुब्तिला देखा!

गेतीआरा — माशा-अल्लाह, कैसी हाजिर तबीयत।

आज़ाद — इन्साफ के तो यह माने हैं कि मैंने आपको खुश किया, अब आप मुझको खुश करें।

गेतीआरा — आप कुछ फर्माएँ, मैं कोशिश करूँगी।

आज़ाद — यह तो मेरी सूरत ही से जाहिर है कि अपना दिल हुस्नआरा को दे चुका हूँ।

गेतीआरा — क्यों हुस्नआरा, मान क्यों नहीं जातीं? यह बेचारे तुम्हें अपना दिल दे चुके।

हुस्नआरा — वाह, क्या सिफारिश है! क्यों मान लें, शादी भी कोई दिल्लगी है? मैं बेसमझे-बूझे हाँ न करूँगी। सुनिए साहब, मैं आप

की अदा, आपकी वफा, आपकी चाल-ढाल, आपकी लियाकत और शराफत पर दिल ओर जान से आशिक हूँ; मगर यह याद रखिए, मैं ऐसा काम नहीं करना चाहती, जिससे पढ़ी लिखी औरत बदनाम हों। हमें ऐसा चाल-चलन रखना चाहिए, जो औरों के लिए नमूना हो। इस शहर की सब औरतें मुझे देखती रहती हैं कि यह किस तरफ को जाती है। आपको कोई यहाँ जानता नहीं। आप पहले यहाँ शरीफों में इज्जत पैदा कीजिए, आपके यहाँ पंद्रहवें दिन मुशायरा हो और लोग आपको जानें। कोई कोठी किराए पर लीजिए और उसे खूब सजाइए, ताकि लोग समझें कि सलीके का आदमी है और रोटियों को मुहताज नहीं। शरीफजादों के सिवा ऐरों-गैरों से सोहबत न रखिए और हर रोज जुमा की नमाज पढ़ने के लिए मसजिद जाया कीजिए! लेकिन दिखावा भी जरूरी है। एक सवारी भी रखिए और सुबह-शाम हवा खाने जाइए, अगर इन बातों को आप मानें, तो मुझे शादी करने में कुछ उज्र नहीं। यों तो मैं आपके एहसान से दबी हुई हूँ, लेकिन आप समझदार आदमी हैं, इसलिए मैंने साफ-साफ समझा दिया।

आज़ाद — ऐसे समझदार होने से बाज आए! हम गँवार ही सही। आपने जो कुछ कहा, सब हमें मंजूर है; लेकिन आप भी मुझे कभी-कभी यहाँ तक आने की इजाजत दीजिए और आपकी ये बहनें मुझसे मिला करें।

गेतीआरा — जरी फिर तो कहिएगा! आपको अपनी हुस्नआरा से काम है, या उनकी बहनों से? हुस्नआरा ने आपसे जो कुछ कहा, उसको गौर कीजिए। अभी जल्दी न कीजिए। आप शराब तो नहीं पीते?

आज़ाद — शराब की सूरत और नाम से नफरत है।

हुस्नआरा — फिर आपके पास बजरे पर कहाँ से आई, जो आपने सिपहआरा को पिलाई।

आज़ाद — वाह, वह तो दवा थी।

जहानआरा — ऐ बाजी, भैया कब से सो रहा है। जरा जगा दो। दो घड़ी खेलने को जी चाहता है।

गेतीआरा — ना, कही ऐसा गजब भी न करना। बच्चे जब सोते हों, तो उनको जगाना न चाहिए। उनको जगाना उनकी बाढ़ को रोकना है।

हुस्नआरा — इस वक़्त हवा बड़े जोर से चल रही है और तुमने भैया को बारीक शरबती पहना दी है। ऐ दिलबहार, फलालेन का कुर्त्ता नीचे पहना दो। यह रुपया कौन भैया के हाथ में दे गया? और जो खेलते-खेलते मुँह में ले जाय तो?

दिलबहार — ऐ हुजूर, छीन तो लूँ, जब वह दे भी। वह तो रोने लगता है।

हुस्नआरा — देखो, हम किस तरकीब से ले लेते हैं, भला रोवे तो, (चुमकार कर) भैया, (तालियाँ बजा कर) भैया, ला, तुझे चीज मँगा दूँ।

यह कह कर हुस्नआरा ने लड़के को गुदगुदाया। लड़का हँस पड़ा और रुपया हाथ से अलग।

दिलबहार — मौसी को कैसे चुपचुपाते रुपया दे दिया और हमने हाथ ही लगाया था कि गुल मचाने लगा।

गेतीआरा — उम्र भर तुमने लड़के पाले, मगर पालना न आया। बच्चों को पालना कुछ हँसी-खेल थोड़े ही है।

दिलबहार — अभी मेरा सिन ही क्या है कि ये बातें जानूँ।

गेतीआरा — देखो, रात को दरख्त के तले बच्चे को न सुलाया करो। बच्चा बीमार हो जाता है।

दिलबहार — हाँ, सुना है, लड़के भूत-प्रेत के झपेट में आ जाते हैं।

हुस्नआरा — झपेट और भूत-प्रेत सब ढकोसला है। रात को दरख्त के नीचे सोना इसलिए बुरा है कि रात को दरख्त से जहरीली हवा निकलती है।

इधर तो ये बातें हो रही थीं, औरतों की तालीम का जिक्र छिड़ा हुआ था, हुस्नआरा औरतों की तालीम पर जोर दे रही थी, उधर मियाँ पीरबख्श को बाल बनवाने का शौक जो चर्राया, तो हज्जाम को बुलवाया। हज्जाम बाल बनाते-बनाते कहने लगा — हुजूर, एक दिन मैं सराय में गया था, तो वहाँ यह भी टिके हुए थे — यही जो जवान से हैं, गोरे-गोरे, बजरे पर सैर करने गए थे — हाँ, याद आ गया, मियाँ आज़ाद, वह भी वहाँ मिले। वह साहब तुम्हारे, उस सराय की भठियारी से शादी करने को थे, मुल फिर निकल गए। उसने इन पर नालिश जड़ दी, तो वहाँ से भागे। उस भठियारी को ऊँट पर सवार करके रात को लिए फिरते थे। पीरबख्श ने यह किस्सा सुना, तो सन्नाटे में आ गए। बोले — खबरदार, और किसी से न कहना।

25

मियाँ आज़ाद हुस्नआरा के यहाँ से चले, तो घूमते-घामते हँसोड़ के मकान पर पहुँचे और पुकारा। लौंडी बोली कि वह तो कहाँ गए हैं, आप बैठिए।

आज़ाद — भाभी साहब से हमारी बन्दगी कह दो ओर कहो, मिजाज पूछते हैं।

लौंडी — बेगम साहबा सलाम करती हैं और फर्माती हैं कि कहाँ रहे?

आज़ाद — इधर-उधर मारा-मारा फिरता था।

लौंडी — वह कहती हैं, हमसे बहुत न उड़िए। यहाँ कच्ची गोलियाँ नहीं खेलीं। कहिए, आपकी हुस्नआरा तो अच्छी है। यह बजरे पर हवा खाना और यहाँ आकर बुत्ते बताना।

आज़ाद — आपसे यह कौन कच्चा चिट्ठा कह गया?

लौंडी — कहती हैं कि मुझसे भी परदा है? इतना तो बता दीजिए कि बरात किस दिन चढ़ेगी? हमने सुना है, हुस्नआरा आप पर बेतरह रीझ गईं। और, क्यों न रीझें, आप भी तो माशाअल्लाह गबरू जवान हैं।

आज़ाद — फिर भाई किसके हैं, जैसे वह खूबसूरत, वैसे हम।

लौंडी — फर्माती हैं कि धाँधली रहने दीजिए।

आज़ाद — भाभी साहब, यह घूँघट कैसा? हमसे कैसा परदा?

इतने में किसी ने पीछे से मियाँ आज़ाद की आँखें बन्द कर लीं।

आज़ाद चिल्ला उठे — भाई साहब।

हँसोड़ — वहाँ तो आपने खूब रंग जमाया।

आज़ाद — अजी, आपकी दुआ है, मैं भला क्या रंग जमाता। मगर दोनों बहनें एक से एक बढ़ कर हैं। हुस्नआरा की दो बहनें और आई थीं। वल्लाह, खूब-मजे रहे।

हँसोड़ — खुशनसीब हो भाई, जहाँ जाते हो, वहीं पौ-बारह होते हैं। वल्लाह, मान गया।

आज़ाद — मगर भाई, एक गलती हो गई। उन्होंने किसी तरह भाँप लिया कि मैं शराब भी पीता हूँ।

हँसोड़ — बड़े अहमक हो भई, कोई ऐसी हरकत करता है। तुम्हारी सूरत से नफरत हो गई।

आज़ाद — अजी, मुझे तो अपनी सूरत से आप नफरत हो गई। मगर अब कुछ तदबीर तो बताओ ?

हँसोड़ — उसी बुड्ढे को साँटो, तो काम चले।

इस वक़्त दोनों आदमी खाना खा कर लेटे। जब शाम हुई, तो दोनों हुस्नआरा की तरफ चले। भरी बरसात के दिन, कोई गोली के टप्पे पर गए होंगे कि पश्चिम की तरफ से मतवाली काली घटा झूमती हुई आई और दम के दम में चारों तरफ अँधेरा छा

गया। दुकानदार दूकानें झटपट बन्द करने लगे। खोमचे वालों ने ख़ोमचा सँभाला, और लंबे हुए। कोई टट्टू को सोंटे पर सोंटा लगता है; किसी का बैल दुम दबाए भागा जाता है। कहार पालकी उठाए,कदम जमाए उड़े जाते हैं, दहने जंगी, बाएँ चरखा-हूँ-हूँ-हूँ। पैदल चलनेवाले तेज कदम उठाते हैं, पाँयचे चढ़ाते हैं। किसी ने जूतियाँ बगल में दबाईं और सरपट भागा। किसी ने कमर कसी और घोड़े को एड़ दी। अँधेरा इस गजब का है कि राह सूझती ही नहीं, एक पर एक भद-भद करके गिरता है और मियाँ आज़ाद कहकहे लगाते हैं। क्यों हजरत, पूछना न पाछना और धमाक से लुढ़क जाना!

आज़ाद — बस, और थोड़ी दूर रह गया है।

हँसोड़ — आपको थोड़ी दूर होगा,यहाँ तो कदम भर चलना मुश्किल हो रहा है। जरी देख-भाल कर कदम उठाइएगा। उफ्, हवा ने क्या जोर बाँधा, मैं तो वल्लाह, काँपने लगा। अगर सलाह हो, घर पलट चलें। वह लीजिए, बूँदें भी पड़ने लगीं। किसी भले मानुस के पास जाने का भला यह कौन मौका है।

आज़ाद — अजी, ये बातें उससे कीजिए, जो अपने होश में हो। यहाँ तो दीवानापन सवार है।

इतने में बड़ी बेगम का महल नजर पड़ा। आज़ाद ने मारे खुशी के टोपी उछाल दी। तब तो हँसोड़ ने बिगड़ कर उसे एक अँधे कुएँ में फेंक दिया और कहा — बस, तुममें यही तो ऐब है कि अपने आपे में नहीं रहते। 'ओछे के घर तीतर, बाहर रखूँ कि भीतर।'

आज़ाद — या तंग न कर नासेह नादाँ, मुझे इतना,

या ला के दिखा दे दहन ऐसा, कमर ऐसी।

तुम रूखे-फीके आदमी, चेहरे पर भूसा उड़ रहा है। तुम ये मुहब्बत की बातें क्या जानो?

जब महल के करीब पहुँचे, तो चौकीदार ने ललकारा — कौन? मियाँ हँसोड़ तो झिझके, मगर, आज़ाद ने बढ़ कर कहा — हम हैं, हम।

चौकीदार — अजी, हम का नाम तो फर्माइए, या ठंडी-ठंडी हवा खाइए।

आज़ाद — हम? हमारा नाम मियाँ आज़ाद है। तुम दिलबहार को इत्तिला कर दो।

खैर, किसी तरह आज़ाद अन्दर पहुँचे। हुस्नआरा उस वक़्त सो रही थीं और सिपहआरा बैठी एक शायर का दीवान पढ़ रही थी।

आज़ाद की खबर सुनते ही बोली — कहाँ हैं कहाँ, बुला लाओ। मियाँ आज़ाद मकान में दाखिल हुए।

सिपहआरा — वह आए घर में हमारे खुदा की कुदरत है;

कभी हम उनको, कभी अपने घर को देखते हैं।

आज़ाद — यह रूखी खातिरदारी कब तक होगी? हमें दूल्हा भाई कब से कहिएगा?

सिपहआरा — खुदा वह दिन दिखाए तो।

आज़ाद — आपकी बाजी कहाँ है?

सिपहआरा — आज कुछ तबीयत नासाज है। दिलबहार, जगा दो। कहो मियाँ आज़ाद आए हैं।

हुस्नआरा अँगड़ाई लेती अठखेलियाँ करती चलीं और आज़ाद के करीब आकर बैठ गईं।

आज़ाद — इस वक़्त हमारे दिल की कली खिल गई।

सिपहआरा — क्यों नहीं, फिर मुँह-माँगी मुराद भी तो मिल गई।

आज़ाद — आखिर अब हम कब तक तरसा करें? आज मैं बेकबुलवाए उठूँ, तो आज़ाद नहीं।

हुस्नआरा — हमारा तो इस वक़्त बुरा हाल है। नींद उमड़ी चली आती है। अब हमें सोने जाने दीजिए।

आज़ाद — (दुपट्टा पाँव से दबाकर) हाँ, जाइए, आराम कीजिए।

हुस्नआरा — शरारत से आप बाज नहीं आते। दामन तो दबाए हैं और कहते हैं, जाइए-जाइए, क्योंकर जायँ?

आज़ाद — दुपट्टे को फेंक जाइए।

हुस्नआरा — बजा है, यह किसी और को सिखाइए, (बैठकर) अब साफ कह दूँ।

आज़ाद — जरूर; मगर आपके तेवर इस वक़्त बेढब हैं, खुदा ही खैर करे! जो कुछ कहना हो कह डालिए। खुदा करे, मेरे मतलब की बात मुँह से निकले!

हुस्नआरा — आप लायक हैं, मगर एक परदेसी आदमी, ठौर न ठिकाना, घर न बार। किसी से आपका जिक्र करूँ, तो क्या कहूँ? किसके लड़के हैं? किसके पोते हैं? किस खानदान के हैं? शहर भर में यही खबर मशहूर हो जायगी कि हुस्नआरा ने एक परदेसी के साथ शादी कर ली। मुझे तो इसकी परवा नहीं; लेकिन डर यह है कि कहीं इस निकाह से लोग पढ़ी-लिखी औरतों को नीची नजर से न देखने लगें। बात वह करनी चाहिए कि धब्बा न

लगे। मैं पहले भी कह चुकी हूँ और अब फिर कहती हूँ कि शहर में नाम पैदा कीजिए, इज्जत कमाइए, चार भले आदमियों में आपकी कदर हो।

आज़ाद — कहिए, आग में फाँद पड़ूँ?

हुस्नआरा — माशा-अल्लाह, कही भी तो निराली? अगर आप आग में फाँद पड़े, तो लोग आपको सिड़ी समझेंगे।

सिपहआरा — कोई किताब लिखिए।

हुस्नआरा — नहीं; कोई बहादुरी की बात हो कि जो सुने, वाह-वाह करने लगे, और फिर अच्छी-अच्छी रईसजादियाँ चाहे कि उनके साथ मियाँ आज़ाद का ब्याह हो जाय। इस वक़्त मौका भी अच्छा है। रूम और रूस में लड़ाई छिड़नेवाली है। रूम की मदद करना आपका फर्ज है। आप रूम की तरफ से लड़िए और जवाँमर्दी के जौहर दिखाइए, तमगे लटकाए हुए आइए, तो फिर हिंदोस्तान भर में आप ही की चर्चा हो।

आज़ाद — मंजूर, दिलोजान से मंजूर। जाऊँ और बीच खेत जाऊँ। मरे, तो सीधे जन्नत में जायँगे। बचे, तो तुमको पाएँगे।

सिपहआरा — मेरे तो लड़ाई के नाम से होश उड़े जाते हैं। (हुस्नआरा से चिमट कर) बाजी, तुम कैसी बेदर्द हो, कहाँ काले

कोसों भेजती हो! तुम्हें खुदा की कसम, इस खयाल से बाज आओ। आज़ाद जाएँगे, तो फिर उनकी सूरत देखने को तरस जाओगी। दिन-रात आँसू बहाओगी। क्यों मुफ्त में किसी की जान की दुश्मन हुई हो?

किनारे दरिया पहुँच के पानी
पिया नहीं एक बूँद तिस पर,
चढ़ी है मौजों की हमसे त्यौरी
हुबाब आँखें बदल रहे हैं।

यह कहते-कहते सिपहआरा की आँखों से गोल-गोल आँसू की बूँदे गिरने लगीं।

हुस्नआरा — हैं-हैं, बहन, यह मुफ्त का रोना धोना अच्छा स्वाँग है, वह मुबारक दिन मेरी आँखों के सामने फिर रहा है, जब आज़ाद तमगे लटकाए हुए हमारे दरवाजे पर खड़े होंगे।

मियाँ आज़ाद पर इस वक़्त वह जोबन था कि ओहोहो, जवानी फटी पड़ती थी। आँखें सुर्ख, जैसे कबूतर का खून; मुखड़ा गोरा, जैसे गुलाब का फूल; कपड़े वह बाँके पहने थे कि सिर से पाँव तक एक-एक अंग निखर गया था; टोपी वह बाँकी की बाँकपन भी लोट जाय; कमर से दोहरी तलवारें लटकी हुई। हुस्नआरा को

उनका चाँद सा मुखड़ा ऐसा भाया कि जी चाहा, इसी वक़्त निकाह कर लूँ; मगर दिल पर जब्त किया।

आज़ाद — आज हम घर से मौत की तलाशी में ही निकले थे —

जब से सुना कि मरने का है नाम जिंदगी;
सिर से कफन को बाँधे कातिल को ढूँढ़ते हैं।

सिपहआरा — प्यारे आज़ाद, खुदा के वास्ते इस खयाल से बाज आओ।

आज़ाद — या हाथ तोड़ जायँगे, या खोलेंगे नकाब। हुस्नआरा सी बीबी पाना दिल्लगी नहीं। अब हम फिर शादी का हर्फ भी जबान पर लाएँ, तो जवाँ-मर्द नहीं। अब हमारी इनकी शादी उसी रोज होगी, जब हम मैदान में सुर्खरू हो कर लौटेंगे। हम सिर कटवाएँ, जख्म पर जख्म खाएँगे मगर मैदान से कदम न हटाएँगे।

सिपहआरा — जो आपने दालान तक भी कदम रखा तो हम रो-रोक कर जान दे देंगे।

आज़ाद — तुम घबराओ नहीं जीते बचे, तो फिर आएँगे। हमारे दिल से हुस्नआरा की और तुम्हारी मुहब्बत जाती रहे, यह मुश्किल है। तुम मेरी खातिर से रोना-धोना छोड़ दो। आखिर क्या लड़ाई में सब के सब मर ही जाते हैं?

सिपहआरा — इतनी दूर जा कर ऐसी ही तकदीर हो, तो आदमी लौटे। अब मेरी जिंदगी मुहाल है। मुझे दफना के जाना। अल्लाह जाने, किन-किन जंगलों में रहोगे, कैसे-कैसे पहाड़ों पर चढ़ना होगा, कहाँ-कहाँ लड़ना-भिड़ना होगा। एक जरा सी गोली तो हाथी का काम तमाम कर देती है, इनसान की कौन कहे। तुम वहाँ गोलियाँ खाओगे और हम दिन-रात बैठे-बैठे कुढ़ा करेंगे। एक-एक दिन एक-एक बरस हो जाएगा! और फिर क्या जाने, आओ न आओ, लड़ाई-चढ़ाई पर जाना कुछ हँसी थोड़े ही है। यह तो तुम्हीं मरदों का काम है। हम तो यही से नाम सुन-सुन कर काँपते हैं।

हुस्नआरा — मेरी प्यारी बहन, जरा सब्र से काम लो।

सिपहआरा — न मानूँगी, न मानूँगी।

हुस्नआरा — सुन तो लो।

सिपहआरा — जी, बस, सुन चुकी। खून कीजिए, और कहिए, सुन तो लो।

हुस्नआरा — यह क्या बुरी-बुरी बातें मुँह से निकालती हो। हमें बुरा मालूम होता है। मैं उनको जबरदस्ती थोड़े ही भेजती हूँ। वह तो आप जाते हैं।

सिपहआरा — समुंदर समुंदर जाना पड़ेगा। कोई तूफान आ गया, तो जहाज ही डूब जायगा।

आज़ाद — अब रात ज्यादा आई, आप लोग आराम करें, हम कल रात को यहाँ से कूच करेंगे।

सिपहआरा — इस तरह जाना था, तो हमारे पास दिल दुखाने आए क्यों थे? (हाथ पकड़ कर) देखूँ, क्योंकर जाते हैं,

आज़ाद — दिलोजिगर खून हो चुके हैं।

हवास तक अपने जा चुके हैं।
वही मुहब्बत का हौसला है,
हजार सदमे उठा चुके हैं।

हुस्नआरा — हाय, किस गजब में जान पड़ी। हाथ पाँव टूटे जाते हैं, आँखें जल रही हैं। आज़ाद, अगर मुझे दुनिया में किसी की चाह है, तो तुम्हारी। लेकिन दिल से लगी है कि तुम रूसियों को नीचा दिखाओ। मरना-जीना मुकद्दर के हाथ है। कौन रहा है, और कौन रहेगा।

ताज में जिनके टँकते थे गौहर;
ठोकरें खाते हैं वह सर-ता-सर।
है न शीरीं न कोहकन का पता;
न किसी जा है नल-दमन का पता

यही दुनियाँ का कारखाना है;
यह उलट फेर का जमाना है।

आज़ाद – हम तो जाते हैं, तुम सिपहआरा को समझाती रहना। नहीं तो राह में मेरे कदम न उठेंगे। कल रात को मिल कर कूच करूँगा।

हुस्नआरा – बहन, इनको जाने दो, कल आएँगे।

सिपहआरा – जाइए, मैं आपको रोकनेवाली कौन?

आज़ाद यहाँ से चले कि सामने से मियाँ चंडूबाज आते हुए मिल गए। गले से लिपट कर बोले – वल्लाह, आँखें आपको ढूँढ़ती थीं। सूरत देखने को तरस गए। वह जो चलते वक़्त आपने तान कर चाबुक जमाया था, उसका निशान अब तक बना है। बारे मिले खूब। बी अलारक्खी तो मर गईं, बेचारी मरते वक़्त खुदा की कसम, अल्लाह-अल्लाह कहा की और दम तोड़ने के पहले तीन दफा आज़ाद-आज़ाद कह कर चल बसीं।

आज़ाद ने चंडूबाज की सूरत देखी, तो हाथ-पाँव फूल गए। रूम का जाना और तमगे लटकाना भूल गए। सोचे, अब इज्जत खाक में मिली। लेकिन जब चंडूबाज ने बयान किया कि अलारक्खी चल बसीं और मरते वक़्त तक मेरे ही नाम की रट लगाती रहीं, तो बड़ा अफसोस हुआ। आँखों से आँसू बहने लगे।

बोले — भाई, तुमने बुरी खबर सुनाई। हाय, मरते वक़्त दो बातें भी न करने पाए।

चंडूबाज — क्या अर्ज करूँ, कसम खुदा की, इस प्यार और इस हसरत से तुम्हें याद किया कि क्या कहूँ। मेरी तो रोते-रोते हिचकी बँध गई। जरा सा भी खटका होता तो कहतीं — आज़ाद आए। आप अपना एक रूमाल वहाँ भूल आए हैं, उसको हर रोज देख लिया करती थीं, मरते वक़्त कहा कि हमारी कब्र पर यह रूमाल रख देना।

आज़ाद — (रो कर) उफ, कलेजा मुँह को आता है। मुझे क्या मालूम था कि उस गरीब को मुझसे इतनी मुहब्बत थी।

चंडूबाज — एक गुलदस्ता अपने हाथ से बना कर दे गई हैं कि अगर मियाँ आज़ाद आ जायँ, तो उनको दे देना और कहना, अब हश्र में आपकी सूरत देखेंगे।

आज़ाद — भई, इसी वक़्त दो। खुदा के वास्ते अभी लाओ। मैं तो मरा बेमौत, लाओ, गुलदस्ता जरा चूम लूँ। आँखों से लगाऊँ, गले से लगाऊँ।

चंडूबाज — (आँसू बहा कर) चलिए, मैं सराय में उतरा हुआ हूँ। गुलदस्ता साथ है। उसको जान से भी ज्यादा प्यार करता हूँ।

दोनों आदमी मिल कर चले, राह में अलारक्खी के रूप-रंग और भोली-भाली बातों का जिक्र रहा। चलते-चलते दोनों सराय में दाखिल हुए। मियाँ आज़ाद जैसे ही चंडूबाज की कोठरी में घुसे, तो क्या देखते हैं कि बी अलारक्खी बगले के पर जैसा सफेद कपड़ा पहने खड़ी हैं। देखते ही मियाँ आज़ाद का रंग फक हो गया। चुप, अब हिलते हैं न बोलते हैं।

अलारक्खी – (तालियाँ बजा कर) आदाब अर्ज करती हूँ। जरी इधर नजर कीजिए। यह कोसों की राह तय करके हम आप ही की ज़ियारत के लिए आए हैं और आपको हमसे ऐसी नफरत कि आँख तक नहीं मिलाते! वाह री किस्मत! अब जरा सिर तो हिलाइए, गरदन तो उठाइए, वह चाँद सा मुखड़ा तो दिखाइए! कहिए, आपकी हुस्नआरा तो अच्छी हैं? जरा हमको तो उनका जोबन दिखाओ। हमने सुना, कभी-कभी बजरों पर दरिया की सैर की जाती हैं, कभी हमजोलियों को ले कर जश्न मनाती हैं। क्यों हजरत, हम बक रहे हैं? हमारा ही लहू पिए, जो इधर न देखे।

आज़ाद – खुदा की कसम, सिर्फ तुम्हीं को देखने आया हूँ।

चंडूबाज – भई, आज़ाद की रोते-रोते हिचकी बँध गई थी। कसम खुदा की, मैंने जो यह फिकरा चुस्त किया कि अलारक्खी ने मरते

वक़्त आज़ाद-आज़ाद कह के दम तोड़ा, तो यह बेहोश हो कर गिर पड़े।

अलारक्खी — खैर, इतनी तो ढारस हुई कि मरने के बाद भी हमको कोई पूछेगा। लेकिन —

आए तुरबत पे बहुत रोए, किया याद मुझे;
खाक उड़ाने लगे, जब कर चुके बरबाद मुझे।

आज़ाद — अलारक्खी, अब हमारी इज्जत तुम्हारे हाथ है। अगर तुम्हें हमसे मुहब्बत है, तो हमें दिक न करो। नहीं हम संखिया खा कर जान दे देंगे। अगर हमें जिलाना चाहती हो, तो हमें आज़ाद कर दो।

अलारक्खी — सुनो आज़ाद, हम भी शरीफ़ज़ादी हैं, मगर अल्लाह को यही मंजूर था कि हम भठियारी बन कर रहें। याद है, हमारे बूढ़े मियाँ ने तुम्हें खत दे कर हमारे मकान पर भेजा था और तुम कई दिन तक हमारे घर का चक्कर लगाते रहे थे? हम दिन-रात कुढ़ा करते थे। आखिर वह तो कब्र में पाँव लटकाए बैठे ही थे, चल बसे। उस दिन हमने मसजिद में घी के चिराग जलाए। मुकद्दर खींच कर यहाँ लाया। लेकिन अल्लाह जानता है, जो मेरी आँख किसी से लड़ी हो। तुमसे ब्याह करने का बहुत शौक था, लेकिन तुम राजी न हुए। अब हमने सुना है कि

हुस्नआरा के साथ तुम्हारा निकाह होने वाला है। अल्लाह मुबारक करे। अब हमने आपको इजाजत दे दी, खुशी से ब्याह कीजिए; लेकिन हमें भूल न जाना। लौंडी बन कर रहूँगी, मगर तुमको न छोड़ूँगी।

आज़ाद — उफ, तुम वह हो, जिसका उस बूढ़े से ब्याह हुआ था? यह भेद तो अब खुला। मगर हाय, अफसोस, तुमने यह क्या किया। तुम्हारी माँ ने बड़ी बेवकूफी की, जो तुम जैसी कामिनी का एक बुड्ढे के साथ ब्याह कर दिया।

अलारक्खी — अपनी तकदीर!

कुछ देर तक आज़ाद बैठे अलारक्खी को तसल्ली देते रहे। फिर गला छुड़ा कर, चकमा देकर निकल खड़े हुए। कुछ ही दूर आगे बढ़े थे कि तबले की थपक कानों में आई। घर का रास्ता छोड़ महफिल में जा पहुँचे। देखा, वहाँ खूब धमा चौकड़ी मच रही है। एक ने गजल गाई, दूसरे ने ठुमरी, तीसरे ने टप्पा। आज़ाद एक ही रसिया, वहीं जम गए। अब इस सनक की देखिए कि गैर की महफिल और आप इंतजाम करते हैं, किसी हुक्के की चिलम भरवाते हैं, किसी गुड़गुड़ी को ताजा करवाते हैं; कभी ठुमरी की फर्माइश की, कभी गजल की। दस-पंद्रह गँवारों ने जो गाने की आवाज सुनी, तो धँस पड़े। मियाँ आज़ाद ने उन्हें धक्के दे कर

बाहर किया। मालिक मकान ने जो देखा कि एक शरीफ नौजवान आदमी इंतजाम कर रहे हैं, तो इनको पास बुलाया, तपाक से बिठाया, खाना खिलाया। यही बहार देखते-देखते आज़ाद ने रात काट दी। वहाँ से उठे, तो तड़का हो गया था।

मियाँ आज़ाद को आज ही रूम के सफर की तैयारी करनी थी। इसी फिक्र में बदहवास जा रहे थे। क्या देखते हैं, एक बाग में झूले पड़े हैं; कई लड़कियाँ हाथ-पाँव में मेहँदी रचाए, गले में हार डाले पेंग लगा रही हैं और सब की सब सुरीली आवाज से लहरा-लहरा कर यों गा रही हैं —

नदिया-किनारे बेला किसने बोया, नदिया-किनारे;
बेला भी बोया, चमेली भी बोई
बिच-बिच बोया रे गुला, नदिया-किनारे।

आज़ाद को यह गीत ऐसा भाया कि थोड़ी देर ठहर गए। फिर खुद झूले पर जा बैठे और पेंग लगाने लगे। कभी-कभी गाने भी लगते, इस पर लड़कियाँ खिलखिला कर हँस पड़ती थीं। एकाएक क्या देखते हैं कि एक काला-कलूटा मरियल सा आदमी खड़ा लड़कियों को घूर रहा है। आज़ाद ने कई बार यह कैफियत देखी, तो उनसे रहा न गया, एक चपत जमा ही तो दी। टीप खाते ही वह झल्ला उठा और गालियाँ दे कर कहने लगा — न हुई विलायती इस वक़्त पास, नहीं तो भुट्टा सा सिर उड़ा देता। और

जो कहीं जवान होता, तो खोद कर गाड़ देता। और, जो कहीं भूखा होता, तो कच्चा ही खा जाता। और जो कहीं नशे की चाट होती, तो घोल के पी जाता।

आज़ाद पहचान गए, यह मियाँ खोजी थे। कौन खोजी? नवाब के मुसाहब। कौन नवाब? वही बटेरबाज, जिनके सफशिकन को ढूँढ़ने आज़ाद निकले थे। बोले — अरे; भाई खोजी हैं? बहुत दिनों के बाद मुलाकात हुई। मिजाज तो अच्छा है?

खोजी — जी हाँ, मिजाज तो अच्छा है; लेकिन खोपड़ी भन्ना रही है। भला हमने तुम्हारा क्या बिगाड़ा था। वह तो कहिए मैं तुम्हें पहचान गया; नहीं तो इस वक़्त जान से मार डालता।

आज़ाद — इसमें क्या शक, आप हैं ही ऐसे दिलेर! आप इधर कैसे आ निकले?

खोजी — आप ही की तलाश में तो आया था।

आज़ाद — नवाब तो अच्छे हैं?

खोजी — अजी वह गए चूल्हे में। यहाँ सर भन्ना रहा है। ले अब चलो, तुम्हारे साथ चलें। कुछ तो खिलवाओ यार। मारे भूख के बेदम हुए जाते हैं।

आज़ाद — हाँ, हाँ चलिए खूब शौक से।

दोनों मिल कर चले, तो आज़ाद ने खोजी को शराब की दुकान पर ले जा कर इतनी शराब पिलाई कि वह टें हो गए, उन्हें वही छोड़ मियाँ हँसोड़ के घर जा पहुँचे।

मियाँ हँसोड़ बहुत नाराज हुए कि मुझे तो ले जा कर हुस्नआरा के मकान के सामने खड़ा कर दिया और आप अन्दर हो रहे। आधी रात तक तुम्हारी राह देखता रहा। यह आखिर आप रात को थे कहाँ?

आज़ाद अभी कुछ जवाब देनेवाले ही थे कि एक तरफ से मियाँ पीरबख्श को आते देखा और दूसरी तरफ से चंडूबाज को। आप दूर ही से बोले — अजीब तरह के आदमी हो मियाँ! वहाँ से कह कर चले कि अभी आता हूँ, पल भर की भी देर न होगी, और तब के गए-गए अब तक सूरत नहीं दिखाई, अलारक्खी बेचारी ढाढ़ें मार-मार कर रो रही हैं। चलिए उनके आँसू तो पोंछिए।

मियाँ पीरबख्श ने बातें सुनीं, तो उनके कान खड़े हुए। हज्जाम के मुँह से तो यह सुन ही चुके थे कि मियाँ आज़ाद किसी सराय में एक भठियारिन पर लट्टू हो गए थे, पर अब तक हुस्नआरा से उन्होंने यह बात छिपा रखी थी। इस वक़्त जो फिर वही जिक्र सुना, तो दिल में सोचने लगे कि यहाँ तो लड़कियों को रात-रात भर नींद नहीं आती; हुस्नआरा तो किसी कदर जब्त भी करती हैं,

मगर सिपहआरा बेचारी फूट-फूट कर रोती है; या यहाँ बैठे हुए बी अलारक्खी के दुखड़े सुनिएगा? अगर कहीं दोनों बहनें सुन ले, तो कैसी हो? बस, अब भलमंसी इसी में है कि मेरे साथ चले चलिए; नहीं तो हुस्नआरा से हाथ धोइएगा और फिर अपनी फूट किस्मत को रोइएगा।

चंडूबाज — मियाँ, होश की दवा करो? भला मजाल है कि यह अलारक्खी को छोड़ कर यहाँ से जायँ। क्या खूब, हम तो सैकड़ों कुएँ झाँकते यहाँ आए, आप बीच में बोलनेवाले कौन?

आज़ाद — अजी, इन्हें बकने भी दो, हम तुम्हारे साथ अलारक्खी के पास चलेंगे। उस मुहब्बत की पुतली को दगा न देंगे। तुम घबराते क्यों हो? खाना तैयार है; आज मीठा पुलाव पकवाया है; तुम जरा बाजार से लपक कर चार आने की बालाई ले लो। मजे से खाना खायँ। क्यों उस्ताद, है न मामले की बात, लाना हाथ।

चंडूबाज बालाई का नाम सुनते ही खिल उठे। झप से पैसे लिए और लुढ़कते हुए चले बालाई लाने। मियाँ आज़ाद उन्हें बुत्ता दे कर पीरबख्श से बोले — चलिए हजरत, हम और आप चलें। रास्ते में बातें होती जायँगी।

दोनों आदमी वहाँ से चले। आज़ाद तो डबल चाल चलने लगे, पर मियाँ पीरबख्श पीछे रह गए। तब बोले — अजी, जरा कदम रोके

हुए चलिए। किसी जमाने में हम भी जवान थे। अब यह फर्माइए कि यह अलारक्खी कौन है? जो कहीं हुस्नआरा सुन पाएँ, तो आपकी सूरत न देखें; बड़ी बेगम को तुमको अपने महल के एक मील इधर-उधर फटकने न दें। आप अपने पाँव में आप कुल्हाड़ी मार रहे हैं। अब शादी-वादी होना खैर-सल्लाह है। सोच लीजिए कि अगर वहाँ इनकी बात चली, तो क्या जवाब दीजिएगा।

आज़ाद — जनाब, यहाँ सोचने का मरज नहीं। उस वक़्त जो जबान पर आएगा, कह जाऊँगा। ऐसी वकालत करूँ कि आप भी दंग हो जायँ — जबान से फुलझड़ी छूटने लगे।

इतने में कोठी सामने नजर आई और जरा देर में दोनों आदमी महल में दाखिल हुए। सिपहआरा तो आज़ाद से मिलने दौड़ी, मगर हुस्नआरा अपनी जगह से न उठी। वह इस बात पर रूठी हुई थी कि इतना दिन चढ़ आया और मियाँ आज़ाद ने सूरत न दिखाई।

हुस्नआरा — बहन, इनसे पूछो कि आप क्या करने आए हैं?

आज़ाद — आप खुद पूछिए। क्या मुँह नहीं है या मुँह में जबान नहीं है!

सिपहआरा — यह अब तक आप कहाँ गायब रहे?

हुस्नआरा — अजी, हमें इनकी क्या परवा। कोई आए या न आए, हम किसी के हाथ बिके थोड़े ही हैं।

सिपहआरा — बाजी की आँखें रोते-रोते लाल हो गईं।

हुस्नआरा — पूछो, आखिर आप चाहते क्या हैं?

आज़ाद — पूछे कौन, आखिर आप खुद क्यों नहीं पूछतीं —

कहूँ क्या मैं तुझसे कि क्या चाहता हूँ,
जफा हो चुकी, अब वफा चाहता हूँ।
बहुत आशना हैं जमाने में, लेकिन -
कोई दोस्त दर्द-आशना चाहता हूँ।

हुस्नआरा — इनसे कह दो, यहाँ किसी की वाही-तबाही बकवाद सुनने का शौक नहीं है। मालूम है, आप बड़े शायर की दुम हैं?

सिपहआरा — बहन, तुम लाख बनो, दिल की लगी कहीं छिपाने से छिपती है।

हुस्नआरा — चलो, बस, चुप भी रहो। बहुत कलेजा न पकाओ। हमारे दिल पर जो गुजर रही है, हमीं जानते हैं। चलो, हम और तुम कमरा खाली कर दें, जिसका जी चाहे बैठे, जिसका जी चाहे जाय। हयादार के लिए एक चुल्लू काफी है।

यह कह कर हुस्नआरा उठी और सिपहआरा भी खड़ी हुई। मियाँ आज़ाद ने सिपहआरा का पहुँचा पकड़ लिया। अब दिल्लगी देखिए कि मियाँ आज़ाद तो उसे अपनी तरफ खींचते हैं और हुस्नआरा अपनी तरफ घसीटती हुई कह रही हैं — हमारी बहन का हाथ कोई पकड़े, तो हाथ ही टूटें। जब हमने टका सा जवाब दे दिया, तो फिर यहाँ आनेवाला कोई कौन! वाह, ऐसे हयादार भी नहीं देखे!

आज़ाद — साहब, आप इतना खफा क्यों होती हैं? खुदा के वास्ते जरा बैठ जाइए। माना कि हम ख़तावार हैं, मगर हमसे जवाब तो सुनिए। खुदा गवाह है, हम बेकसूर हैं।

हुस्नआरा — बस बस, जबान न खुलवाइए। बस अब रुखसत। आप अब छह महीने के बाद सूरत दिखाइएगा, हम भी कलेजे पर पत्थर रख लेंगे।

यह कह कर हुस्नआरा तो वहाँ से चली गई और मियाँ आज़ाद अकेले बैठे-बैठे सोचने लगे कि इसे कैसे मनाऊँ। आखिर उन्हें एक चाल सूझी। अरगनी पर से चादर उतार ली और मुँह ढाँप कर लेट रहे। चेहरा बीमारों का सा बना लिया और कराहने लगे। इत्तिफ़ाक़ से मियाँ पीरबख्श उस कमरे में आ निकले। आज़ाद की सूरत जो देखी, तो होश उड़ गए। जा कर हुस्नआरा

से बोले — जल्द पलंग बिछवाओ, मियाँ आज़ाद को बुखार हो आया है।

हुस्नआरा — हैं हैं, यह क्या कहते हो। पाँव-तले से मिट्टी निकल गई।

सिपहआरा — कलेजा धड़-धड़ करने लगा! ऐसी सुनानी अल्लाह सातवें दुश्मन को भी न सुनाए।

हुस्नआरा — हाय मेरे अल्लाह, मैं क्या करूँ। मैंने अपने पैरों में आप कुल्हाड़ी मारी।

जरा देर में पलंग बिछ गया! हुस्नआरा, उसकी बहन, पीरबख्श और दिल बहार चारपाई के पास खड़े हो कर आँसू बहाने लगे।

दिलबहार — मियाँ, किसी हकीम जी को बुलाओ।

सिपहआरा — चेहरा कैसा जर्द हो गया!

पीरबख्श — मैं अभी जा कर हकीम साहब को लाता हूँ।

हुस्नआरा — हकीम जी का यहाँ क्या काम है? और, यों आप चाहे जिसको बुलाएँ।

मियाँ पीरबख्श तो बाहर गए और हुस्नआरा पलंग पर जा बैठी, मियाँ आज़ाद का सिर अपने जानू पर रखा। सिपहआरा फूलों का पंखा झलने लगी।

हुस्नआरा — मेरी जबान कट पड़े। मेरी ही जली-कटी बातों ने यह बुखार पैदा किया।

यह कह कर उसने आहिस्ता-आहिस्ता आज़ाद की पेशानी को सहलाना शुरू किया। आज़ाद ने आँखें खोल दीं और बोले —

मेरे जनाजे को उनके कूचे में
नाहक अहबाब ले के आए;
निगाहे-हसरत से देखते हैं
वह रुख से परदा हटा-हटा कर।
शहर है नजदीक, शब है आखिर,
सरा से चलते हैं हम मुसाफिर;
जिन्हें है मिलना, वे सब हैं हाजिर,
जरस से कह दो, कोई सदा कर।

हुस्नआरा — क्यों हजरत, यह मक्कारी! खुदा की पनाह, मेरी तो बुरी गत हो गई।

आज़ाद — जरा उसी तरह इन नाजुक हाथों से फिर माथा सहलाओ।

हुस्नआरा — मेरी बला जाती है, वह वक़्त ही और था।

आज़ाद — मैंने कहा जो उनसे कि शब को यहीं रहो;
आँखें झुकाए बोले कि किस एतबार पर?

हुस्नआरा — आपने आखिर यह स्वाँग क्यों रचा? छिपाइए नहीं, साफ-साफ बताइए।

आज़ाद — अब कहती हो कि तुम मेरी महफिल में आए क्यों;

आता था कौन, कोई किसी को बुलाए क्यों?

कहता हूँ साफ-साफ कि मरता हूँ आप पर;

जाहिर जो बात हो, उसे कोई छिपाए क्यों?

यहाँ मारे बुखार के दम निकल रहा है, आप मक्र समझती हैं।

यहाँ दोनों में यही नोकझोंक हो रही थी, इतने में मियाँ खोजी पता पूछते हुए आ पहुँचे।

खोजी — मियाँ होत, जरा आज़ाद को तो बुलाओ।

दरवान — किससे कहते हो? आए कहाँ से? हो कौन?

खोजी — ऐं, यह तो कुछ बातूनी सा मालूम होता है। अबे, इत्तला कर दे कि ख्वाजा साहब आए हैं।

दरवान — ख्वाजा साहब! हमें तो जुलाहे से मालूम होते हो। भलेमानसों की सूरत ऐसी ही हुआ करती हैं?

आज़ाद ने यह बातें सुनीं, तो बाहर निकल आए और खोजी को बुला लिया।

खोजी — भाई, जरा आईना तो मँगवा देना।

आज़ाद — यह आईना क्या होगा? बन्दगी न सलाम, बात न चीत, आते ही आते आईना याद आया। बन्दर के हाथ में आईना भला कौन देने लगा!

खोजी — अजी मँगवाते हो या दिल्लगी करते हो। दरबान से हमसे झौड़ हो गई। मरदूद कहता है, तुम्हारी सूरत भलेमानसों की सी नहीं। अब कोई उससे पूछे, फिर क्या चमार की सी है, या पाजी की सी।

आज़ाद — भई, अगर सच पूछते हो, तो तुम्हारी सूरत से एक तरह का पाजीपन बरसता है। खुदा चाहे पाजी बनाए, मगर पाजी की सूरत न बनाए। पर अब उसका इलाज ही क्या?

खोजी — वाह, इसका कुछ इलाज ही नहीं? डाक्टरों ने मुरदे तक के जिला लेने का तो बंदोबस्त कर लिया है; आप फरमाते हैं, इलाज ही नहीं। अब पाजी न बनेंगे, पाजी बन के जिए तो क्या।

आज़ाद — कल हम रूम जानेवाले हैं, चलते हो साथ?

खोजी — न चले, उस पर भी लानत, न ले चले, उस पर भी लानत!

आज़ाद — मगर वहाँ चंडू न मिलेगा, इतना याद रखिए।

खोजी — अजी अफीम मिलेगी कि वह भी न मिलेगी? बस, तो फिर हम अपना चंडू बना लेंगे। हमें जरूर ले चलिए।

आज़ाद अन्दर जा कर बोले — हुस्नआरा, अब रुखसत का वक़्त करीब आता जाता है; हँसी-खुशी रुखसत करो; खुदा ने चाहा तो फिर मिलेंगे।

हुस्नआरा की आँखों से टप-टप आँसू गिरने लगे। बोली — हाय, अन्दरवाला नहीं मानता। उसको भी तो समझाते जाओ। यह किसका होकर रहेगा?

आज़ाद — तुम्हारी यह हालत देख कर मेरे कदम रुके जाते हैं। अब हमें जाने दो। जिंदगी शर्त है, हम फिर मिलेंगे और जश्न करेंगे। यह कह कर आज़ाद बाहर चले आए और खोजी के साथ चले। खोजी ने समझा था, रूम कहीं लखनऊ के आस-पास होगा। अब जो सुना कि सात समुंदर पार जाना पड़ेगा, तो हक्का-बक्का हो गए। हाथ-पाँव काँपने लगे। भई, हम समझते थे, दिल्लगी करते हो। यह क्या मालूम था कि सचमुच तंग-तोबड़ा चढ़ा कर भागा ही चाहते हो। मियाँ तुम लाख आलिम-फाजिल सही, फिर भी लड़के ही हो। यह खयाल दिल से निकाल डालो। एक जरा सी चने के बराबर गोली पड़ेगी, तो टाँय से रह जाओगे। आपको कभी मोरचे पर जाने का शायद इत्तिफ़ाक़ नहीं

हुआ। खुदा भलेमानस को न ले जाय। गजब का सामना होता है। वह गोली पड़ी, वह मर गया। दाँय-दाँय की आवाज से कान के परदे फट जाते हैं। तोप का गोला आया और अठारह आदमियों को गिरा दिया। गोल फटा और बहत्तर टुकड़े हुए, और एक-एक टुकड़े ने दस-दस आदमियों का उड़ा दिया। जो कहीं तलवार चलने लगी, तो मौत सामने नजर आती है, बेमौत जान जाती है। खटाखट तलवार चल रही है और हजारों आदमी गिरते जाते हैं। सो भई, वहाँ जाना कुछ खाला जी का घर थोड़े ही है। खुदा के लिए उधर रुख न करना। और बंदा तो अपने हिसाब, जानेवाले को कुछ कहता है। हम एक तरकीब बताएँ, वह काम क्यों न कीजिए कि हुस्नआरा आपको खुद रोकें और लाखों कसमें दें। आप अन्दर जा कर बैठिए और हमको चिक के पास बिठाइए। फिर देखिए, मैं कैसी तकरीर करता हूँ कि दोनों बहने काँप उठे, उनको यकीन हो जाय कि मियाँ आज़ाद गए और अंटागफील हुए। मैं साफ-साफ कह दूँगा कि भई आज़ाद जरा अपनी तसवीर तो खिंचवा लो। आखिर अब तो जाते ही हो। वल्लाह, जो कहीं यह तकरीर सुन पाएँ, तो हश्र तक तुम्हें न जाने दें और झप से शादी हो जाय।

आज़ाद — बस, अब और कुछ न फरमाइएगा। मरना-जीना किसी के अख्तियार की बात तो हे नहीं; लाखों आदमी कोरे आते हैं और

हजारों राह चलते लोट जाते हैं। हुस्नआरा हमसे कहे कि टर्की जाओ और हम बातें बनाएँ, उसको धोखा दें! जिससे मुहब्बत की उससे फरेब! यह मुझसे हरगिज न होगा। चाहे इधर की दुनिया उधर हो जाय। आप मियाँ हँसोड़ के यहाँ जाइए और उनसे कहिए कि हम अभी आते हैं। हम पहुँचे और खाना खा कर लंबे हुए। खोजी तो गिरते-पड़ते चले, मगर दो कदम जा कर फिर पलटे। भई, एक बात तो सुनो। क्या-क्या पकवा रखूँ? आज़ाद बहुत ही झल्लाए। अजब नासमझ आदमी हो! यह भी कोई पूछने की बात है भला! उनके यहाँ जो कुछ मुमकिन होगा, तैयार करेंगे। यह कहकर आज़ाद तो अपने दो-चार दोस्तों से मिलने चले, उधर मियाँ खोजी हँसोड़ के घर पहुँचे। जा कर गुल मचाना शुरू किया कि जल्द खाना तैयार करो, मियाँ आज़ाद अभी-अभी जानेवाले हैं। उन्होंने कहा कि पाँच सेर मीठे टुकड़े, सात सेर पुलाव, दस सेर फीरनी, दस ही सेर खीर, कोई चौदह सेर जरदा, कोई पाँच सेर मुरब्बा और मीठे अचार की अचारियाँ जल्द तैयार हों। मियाँ हँसोड़ की बीवी खाना पकाने में बर्क थीं। हाथों हाथ सब सामान तैयार कर दिया। मियाँ आज़ाद शाम को पहुँचे।

हँसोड़ — कहिए, आज तो सफर का इरादा है। खाना तैयार है; कहिए, तो निकलवाया जाय। बर्फ भी मँगवा रखी है।

आज़ाद — खाना तो हम इस वक़्त न खाएँगे, जरा भी भूख नहीं है।

हँसोड़ — खैर, आप न खाइएगा, न सही। आपके और दोस्त कहाँ हैं? उनके साथ दो निवाले तुम भी खा लेना।

आज़ाद — दोस्त कैसे! मैंने तो किसी दोस्त के लिए खाना पकाने को नहीं कहा था!

हँसोड़ — और सुनिएगा! क्या आपने अपने ही लिए दस सेर खीर, अठारह सेर मीठे टुकड़े और खुदा जाने क्या-क्या अल्लम-गल्लम पकवाया है।

आज़ाद — आपसे यह कहा किस नामाकूल ने?

हँसोड़ — खोजी ने, और किसने? बैठे तो हैं, पूछिए न।

आज़ाद — खोजी तुम मरभुखे ही रहे। यह इतनी चीजें क्या सिर पर लाद कर ले जाओगे? लाहौल बिला कुबत।

खोजी — लाहौल काहे की? आप न खाइए, मैं तो डट कर चख चुका। रास्ते के लिए भी बाँध रखा है।

आज़ाद — अच्छा, तो अब बोरिया-बाँधना उठाइए, लादिए-फाँदिए।

खोजी — जनाब, इस वक़्त तो यह हाल है, जैसे चूहे को कोई पारा पिला दे। अब बंदा लोट मारेगा। और यह तो बताओ, सवारी क्या है?

आज़ाद — इक्का।

खोजी — गजब खुदा का! तब तो मैं जा चुका। इक्के पर तो यहाँ कभी सवार ही नहीं हुए। और फिर खाना खा कर तो मर ही जाऊँगा।

खैर, मियाँ आज़ाद ने झटपट खाना खाया और असबाब कस कर तैयार हो गए। खोजी पड़े खर्राटे ले रहे थे; रोते-गाते उठे। बाहर जा कर देखते हैं, तो एक समंद थोड़ी पूरी, दूसरा मरियल टट्टू। आज़ाद घोड़ी पर सवार हुए और मियाँ हँसोड़ की बीवी से बोले — भाभी, भूल न जाइएगा। भाई साहब तो भुलक्कड़ आदमी हैं, आप याद रखिएगा। आपके हाथ का खाना उम्र भर न भूलूँगा। उन्होंने रुखसत करते हुए कहा — जिस तरह पीठ दिखाते हो, खुदा करे, उसी तरह मुँह भी दिखाओ। इमाम जामिन को सौंपा।

अब सुनिए कि मियाँ खोजी ने अपने मरियल टट्टू को जो देखा, तो घबराए। घोड़े पर कभी जिंदगी भर सवार न हुए थे। लाख चाहते हैं कि सवार हो जायँ, मगर हिम्मत नहीं पड़ती। यार लोग लराते हैं — देखो, देखो, वह पुस्त उछाली, वह दुलत्ती झाड़ी, वह

मुँह खोल कर लपका; मगर टट्टू खड़ा है, कान तक नहीं हिलाता। एक दफे आँख बन्द करके हजरत ने चाहा कि लद लें, मगर यारों ने तालियाँ जो बजाईं, तो टट्टू भागा और मियाँ खोजी भद से जमीन पर। देखा, कहते न थे कि हम इस टट्टू पर न सवार होंगे। मगर आज़ाद ने घड़ी दिल्लगी देखने के लिए हमको उल्लू बनाया। वह तो कहो, हड्डी-पसली बच गई, नहीं तो चुरमुर हो ही जाती। खैर, दो आदमियों ने उनको उठाया और लाद कर घोड़ी की पीठ पर रख दिया। उन्होंने लगाम हाथ में ली ही थी कि एक बिगड़े-दिल ने चाबुक जमा दिया। टट्टू, दुम दबा कर भागा और मियाँ खोजी लुढ़क गए। बारे आज़ाद ने आकर उनको उठाया।

खोजी – अब क्या रूम तक बराबर इस टट्टू ही पर जाना होगा?

आज़ाद – और नहीं क्या आपके वास्ते उड़नखटोला आएगा?

खोजी – भला इस टट्टू, पर कौन जाएगा?

आज़ाद – टट्टू, आप तो इसे टाँघन कहते थे?

खोजी – भई, हमें आज़ाद कर दो। हम बाज आए इस सफर से?

आज़ाद – अरे बेवकूफ, रेल तक इसी पर चलना होगा। वहाँ से बंबई तक रेल पर जाएँगे।

मियाँ आज़ाद और खोजी आगे बढ़े। थोड़ी देर में खोजी का टट्टू भी गरमाया और आज़ाद की घोड़ी के पीछे कदम बढ़ाकर चलने लगा। चलते-चलते टट्टू ने शरारत की। बूट के हरे-भरे खेत देखे, तो उधर लपका। किसान ने जो देखा, तो लट्ठ ले कर दौड़ा और लगा बुरा-भला कहने। उसकी जोरू भी चमक कर लपकी और कोसने लगी कि पलवइया मर जाय, कीड़े पड़ें, अभी-अभी पेट फटै, दाढ़ीजार की लहास निकले। और किसान भी गालियाँ देने लगा — अरे यो टट्टू कौन सार केर आय? ससुर हमरे खेत में पैठाय दिहिस। मियाँ खोजी गालियाँ खा कर बिगड़ गए। उनमें एक सिफत यह थी कि बे-सोचे-समझे लड़ पड़ते थे; चाहे अपने से दुगुना-चौगुना हो, वह चिमट ही जाते थे। गुस्से की यह ख़ासियत है कि जब आता है, कमजोर पर। मगर मियाँ खोजी का गुस्सा भी निराला था, वह जब आता था, शहजोर पर। किसान ने उनके टट्टू को कई लट्ठ जमाए, तो मियाँ खोजी तड़ से उतर कर किसान से गुँथ गए। वह गँवार आदमी, बदन का करारा और यह दुबले-पतले, महीन आदमी, हवा के झोंके में उड़ जायँ। उसने इनकी गरदन दबोची और गद से जमीन पर फेंका। फिर उठे, तो उसकी जोरू इनसे चिमट गई और लगी हाथापाई होने। उसने घूँसा जमाया और इनके पट्टे पकड़ कर फेंका, तो चारों खाने चित। दो थप्पड़ भी रसीद किए — एक इधर, एक उधर।

किसान खड़ा हँस रहा है कि मेहरारू से जीत नाहीं पावत, यह मुसंडन से का लड़ि हैं भला! किसान की जोरू तो ठोंक-ठाँक कर चल दी, और आपने पुकारना शुरू किया — कसम अब्बाजान की, जो कहीं छुरा पास होता, तो इन दोनों की लाश इस वक़्त फड़कती होती। वह तो कहिए, खुदा को अच्छा करना मंजूर था कि मेरे पास छुरा न था, नहीं तो इतनी करौलियाँ भोंकता कि उमर भर याद करते। खड़ा तो रह ओ गीदी! इस पर गाँववालों ने खूब कहकहा उड़ाया। एक ने पूछा — क्यों मियाँ साहब, छुरी होती, तो क्या भोंक कर मर जाते? इस पर मियाँ खोजी और भी आग हो गए।

मियाँ आज़ाद कोई दो गोली के टप्पे पर निकल गए थे। जब खोजी को पीछे न देखा, तो चकराए कि माजरा क्या है? घोड़ी फेरी और आकर खोजी से बोले — यहाँ खेत में कब तक पड़े रहोगे? उठो, गर्द झाड़ो।

खोजी — करौली न हुई पास, नहीं तो इस वक़्त दो लाशें यहाँ फड़कती हुई देखते।

आज़ाद — अजी, वह तो जब देखते तब देखते, इस वक़्त तो तुम्हारी लोथ देख रहे हैं।

उन्होंने फिर खोजी को उठाया और टट्टू पर सवार कराया। थोड़ी देर में फिर दोनों आदमियों में एक खेत का फासला हो गया। खोजी से एक पठान ने पूछा कि शेख जी, आप कहाँ रहते हैं? हजरत ने झट से एक कोड़ा जमाया और कहा — अबे, हम शेख नहीं, ख्वाजा हैं। वह आदमी गुस्से से आग हो गया और टाँग पकड़ कर घसीटा, तो खोजी खट से जमीन पर। अब चारों खाने चित पड़े हैं, उठने का नाम नहीं लेते। आज़ाद ने जो पीछे फिर कर देखा, तो टट्टू आ रहा है, मगर खोजी नदारद। पलटे, देखें, अब क्या हुआ। इनके पास पहुँचे, तो देखा, फिर उसी तरह जमीन पर पड़े करौली की हाँक लगा रहे हैं।

आज़ाद — तुम्हें शर्म नहीं आती! कमजोरी मार खाने की निशानी। दम नहीं है, तो कटे क्यों मरते हो? मुफ्त में जूतियाँ खाना कौन जवाँमरदी है?

खोजी — वल्लाह, जो करौली कहीं पास हो, तो चलनी ही कर डालूँ। वह तो कहिए, खैरियत हुई कि करौली न थी, नहीं तो इस वक़्त कब्र खोदनी पड़ती।

आज़ाद — अब उठोगे भी, या परसों तक यों ही पड़े रहोगे। तुमने तो अच्छा नाक में दम कर दिया।

खोजी — अजी, अब न उठेंगे, जब तक करौली न ला दोगे, बस अब बिना करौली के न बनेगी।

आज़ाद — बस, अब बेहूदा न बको; नहीं तो मैं अबकी एक लात जमाऊँगा।

खैर, दोनों आदमी यहाँ से चले तो खोजी बोले — यहाँ जोड़-जोड़ में दर्द हो रहा है। उस किसान की मुसढ़ी औरत ने तो कचूमर ही निकाल डाला। मगर कसम है खुदा की, जो कहीं करौली पास होती, तो गजब ही हो जाता। एक को तो जीता छोड़ता ही नहीं।

आज़ाद — खुदा गंजे को पंजे नहीं देता। करौली की आपको हमेशा तलाश रही, मगर जब आए, पिट ही के आए, जूतियाँ ही खाईं। खैर, यह दुखड़ा कोई कहाँ तक रोए, अब यह बताओ कि हम क्या करें? जी मतला रहा है, बन्द-बन्द टूट रहा है, आँखें भी जलती हैं।

खोजी — लैनडोरी आ गई। अब हजरत भी आते होंगे।

आज़ाद — यह लैनडोरी कैसी? हजरत कौन? मैं कुछ नहीं समझा। जरा बताओ तो?

खोजी — अभी लड़के न हो, बुखार की आमद है। आँखों की जलन, जी का मतलाना, बदन का टूटना, सब उसी की अलामतें

हैं। इस वक़्त घोड़े पर सवार हो कर चलना बुरा है। अब आप घोड़े से उतर पड़िए और चल कर कहीं लेट रहिए, कहना मानिए।

आज़ाद – यहाँ कोई अपना घर है, जो उतर पड़ूँ? किसी से पूछो तो कि गाँव कितने दूर है। खुदा करे, पास ही हो, नहीं तो मैं यहीं गिर पड़ूँगा और कब्र भी यहीं बनेगी।

खोजी – अजी, जरा दिल को सँभालो। कोई इतना घबराता है? कब्र कैसी? जरा दिल को ढारस दीजिए।

आज़ाद – वल्लाह, फुँका जाता हूँ, बदन से आग निकल रही है।

खोजी – वह गाँव सामने ही है, जरा घोड़ी को तेज कर दो।

आज़ाद ने घोड़ी को जरा तेज किया, तो वह उड़ गई। खोजी ने भी कोड़े पर कोड़ा जमाना शुरू किया। मगर लद्दू, टट्टू पर बिगड़ रहे हैं कि न हुई करौली इस वक़्त, नहीं तो इतनी भोंकता कि बिलबिलाने लगता। खैर, किसी तरह उठे, टट्टू को पकड़ा और लद कर चले। दो-चार दिल्लगीबाज आदमियों ने तालियाँ बजाईं और कहना शुरू किया – लदा है, लदा है, लेना, जाने न पाए। खोजी बिगड़ खड़े हुए। हटो सामने से, नहीं तो हंटर जमाता हूँ। मुझे भी कोई ऐसा-वैसा समझे हो! मैं सिपाही आदमी हूँ। नवाबी मैं दो-दो तलवारें कमर से लगी रहती थीं। अब लाख कमजोर

हो गया हूँ, लेकिन अब भी तुम जैसे पचास पर भारी हूँ। लोगों ने खूब हँसी उड़ाई। जी हाँ, आप ऐसे ही जवाँमर्द हैं। ऐसे सूरमा होते कहाँ हैं।

खोजी – उतरूँ घोड़े से, आऊँ?

यारों ने कहा – नहीं साहब, ऐसा गजब भी न कीजिएगा! आप ठहरे पहलवान और सिपाही आदमी, कहीं मार डालिए आकर तो कोई क्या करेगा।

इस तरह गिरते-पड़ते एक सराय में पहुँचे और अन्दर जा कर कोठरियाँ देखने लगे। सराय भर में चक्कर लगाए, लेकिन कोई कोठरी पसंद न आई। भठियारियाँ पुकार रहीं हैं कि मियाँ मुसाफिर इधर आओ, इधर देखो, खासी साफ-सुथरी कोठरी है। टट्टू बाँधने की जगह अलग। इतना कहना था कि मियाँ खोजी आग हो गए। क्या कहा, टट्टू है, यह पीगू का टाँघन है। एक भठियारी ने चमक कर कहा – टाँघन है या गधा? तब तो खोजी झल्लाए और छुरी और करौली की तलाश करने लगे। इस पर सराय भर की भठियारियों ने उन्हें बनाना शुरू किया। आखिर आप इतने दिक हुए कि सराय के बाहर निकल आए और बोले – भई, चलो, आगे के गाँव में रहेंगे। यहाँ सब के सब शरीर हैं। मगर आज़ाद में इतना दम कहाँ कि आगे जा सकें। सराय में

गए और एक कोठरी में उतर पड़े। खोजी ने भी वहीं बिस्तर जमाया। साईस तो कोई साथ था नहीं, खोजी को अपने ही हाथ से दोनों जानवरों के खरेरा करना पड़ा। भठियारी ने समझा, यह साईस है।

भठियारी — ओ साईस भैया, जरा घोड़ी को उधर बाँधो।

खोजी — किसे कहती है री, साईस कौन है?

भठियारी — ऐ तो बिगड़ते क्यों हो मियाँ, साईस नहीं चरकटे सही।

आज़ाद — चुप रहो, यह हमारे दोस्त हैं।

भठियारी — दोस्त हैं, सूरत तो भलेमानसों की सी नहीं है।

खोजी — भई आज़ाद जरा आईना तो निकाल देना। कई आदमी कह चुके। आज मैं अपना चेहरा जरूर देखूँगा। आखिर सबब क्या कि जिसे देखो, यही कहता है।

आज़ाद — चलो, वाहियात न बको, मेरा तो बुरा हाल है।

भठियारी ने चारपाई बिछा दी और आज़ाद लेटे।

खोजी ने कहा — अब तबीयत कैसी है?

आज़ाद — बुरी गत है; जी चाहता है, इस वक़्त जहर खा लूँ।

खोजी — जरूर, और उसमें थोड़ी संखिया भी मिला लेना।

आज़ाद — मर कमबख़्त, दिल्लगी का यह मौका है?

खोजी — अब बूढ़ा हुआ, मरूँ किस पर। मरने के दिन तो आ गए। अब तुम जरा सोने का खयाल करो। दो-चार घड़ी नींद आ जाय, तो जी हलका हो जाय।

इतने में भठियारी ने आकर पूछा — मियाँ कैसे हो?

आज़ाद — क्या बताऊँ, मर रहा हूँ।

भठियारी — किस पर?

आज़ाद — तुम पर?

भठियारी — खुदा की सँवार।

आज़ाद — किस पर?

भठियारी ने खोजी की तरफ इशारा करके कहा — इन पर

खोजी — अफसोस, न हुई करौली!

आज़ाद — होती, तो क्या करते?

खोजी — भोंक लेते अपने पेट में।

आज़ाद — भई, अब कुछ इलाज करो, नहीं तो मुफ्त में दम निकल जाएगा।

भठियारी — एक हकीम यहाँ रहते हैं। मैं बुलाए लाती हूँ।

यह कह कर बी भठियारी जा कर हकीम जी को बुला लाई। मियाँ आज़ाद देखते हैं, तो अजब ढंग से आदमी-धोती बाँधे, गाढ़े की मिरजई पहने, चेहरे से देहातीपन बरस रहा है, आदमियत छू ही नहीं गई।

आज़ाद — हकीम साहब, आदाब।

हकीम — नाहीं दबाव नाहीं। बुखार में दाबे नुकसान होत है।

आज़ाद — आपका नाम?

हकीम — हमारा नाम दाँगलू।

आज़ाद — दाँगलू या जाँगलू?

हकीम — नुस्खा लिखूँ?

आज़ाद — जी नहीं, माफ कीजिए। बस, यहाँ से तशरीफ ले जाइए।

हकीम — बुखार में अक-बक करत हैं, चाँद के पट्टे करतवा डालो।

खोजी — कुछ बेधा तो नहीं हुआ! न हुई करौली, नहीं तो तोंद पर रख देता।

हकीम — भाई, हमसे इनका इलाज न हो सकिहै। अब एक होय, तो इलाज करें। यो पागल को है हो? हमका इलई का पलवा बकत है ससुर।

आखिर खोजी ने झल्ला कर उनको उठा दिया और यह नुस्खा लिखा — आलूबुखारा दो दाना, तमरहिंदी छह माशा, अर्क गावजबाँ दो तोला।

आज़ाद — यह नुस्खा तो आप कल पिलाएँगे, यहाँ तो रात-भर में काम ही तमाम हो जाएगा।

खोजी — इस वक़्त बंदा कुछ नहीं देने का। हाँ, आलू का पानी पीजिए, पाँच दाने भिगाए देता हूँ। खाना इस वक़्त कुछ न खाना।

आज़ाद — वाह, खाना न मिला, तो मैं आप ही को चट कर जाऊँगा। इस भरोसे न रहिएगा।

खोजी — वल्लाह, एक दाना भी आपके पेट में गया और आप बरस भर तक यों ही पड़े रहे। आलू का पानी भी घूँट-घूँट करके पीना। यह नहीं कि प्याला मुँह से लगाया और गट-गट पी गए।

यह कह कर खोजी ने चंदन घिस कर आज़ाद की छाती पर रखा। पालक के पत्ते चारपाई पर बिछा दिए। खीरा काट कर माथे पर रखा और जरा सा नमक बारीक पीस कर पाँव में मला। तलवे सहलाए।

आज़ाद – यहाँ तो कोई हकीम भी नहीं।

खोजी – अजी, हम खुद इलाज करेंगे। हकीम न सही, हकीमों की आँखें तो देखी हैं।

आज़ाद – इलाज तक मुजायका नहीं, मगर मार न डालना भाई! हाँ, जरा इतना एहसान करना।

आज़ाद की बेचैनी कुछ कम हुई तो आँख लग गई। एकाएक पड़ोस की कोठरी से शोर गुल की आवाज आई। आज़ाद चौंक पड़े और पूछा – यह कैसा शोर है? भठियारी, तुम जरा जा कर उनको ललकारो।

खोजी – कहो कि एक शरीफ आदमी बुखार में पड़ा हुआ है। खुदा के वास्ते जरा खामोश हो जाओ।

भठियारी – मियाँ, मैं ठहरी औरतजात और वे मरदुए। और फिर अपने आपे में नहीं। जो मुझी पर पिल पड़े, तो क्या करूँगी? हाँ, भठियारे को भेजे देती हूँ।

भठियारे ने जा कर जो उन शराबियों को डाँटा, तो सब के सब उस पर टूट पड़े और चपतें मार-मार कर भगा दिया। इस पर भठियार तैश में आकर उठी और उँगलियाँ मटका कर इतनी गालियाँ सुनाईं कि शराबियों का नशा हिरन हो गया। वे इतना डरे कि कोठरी का दरवाजा बन्द कर लिया।

लेकिन थोड़ी देर में फिर शोर हुआ और आज़ाद की नींद उचट गई। खोजी को जो शामत आई, तो शराबियों की कोठरी के दरवाजे को इस जोर से घुमाया कि चूल निकल आई? सब शराबी झल्लाकर बाहर निकल आए और खोजी पर बेभाव की पड़ने लगी। उन्होंने इधर-उधर छुरी और करौली की बहुत कुछ तलाश की, मगर खूब पिटे। इसके बाद वे सब सो गए, रात भर कोई न मिनका। सुबह को उस कोठरी से रोने की आवाज आई। खोजी ने जा कर देखा, तो एक आदमी मरा पड़ा है और बाकी सब खड़े रो रहे हैं। पूछा, तो एक शराबी ने कहा – भाई, हम सब रोज शराब पिया करते हैं। कल की शराब बहुत तेज थी। हमने बहुत मना किया; पर बोतल की बोल खाली कर दी। रात को हम लोग सोए, तो इतना अलबत्ता कहा कि कलेजा फूँका जा रहा है। अब जो देखते हैं, तो मरा हुआ है। आप तो जान से गया और हमको भी कत्ल कर गया।

खोजी – गजब हो गया! अब तुम धरे जाओगे और सजा पाओगे!

शराबी — हम कहेंगे कि साँप ने काटा था।

खोजी — कहीं ऐसी भूल भी न करना।

शराबी — अच्छा, भाग जायँगे।

खोजी — तब तो जरूर ही पकड़े जाओगे। लोग ताड़ जायँगे कि कुछ दाल में काला है।

शराबी — अच्छा, हम कहेंगे कि छुरी मार कर मर गया और गले में छुरी भी भोंक देंगे।

खोजी — यह बात हिमाकत है, मैं जैसे कहूँ, वैसे करो। तुम सब के सब रोओ और सिर पीटो। एक कहे कि मेरा सगा भाई था। दूसरा कहे कि मेरा बहनोई था; तीसरा उसे मामूँ बताए। जो कोई पूछे कि क्या हुआ था, तो गुर्दे का दर्द बताना। खूब चिल्ला-चिल्ला कर रोना। जो यों आँसू न आवें तो मिरचे लगा लो। आँखों में धूल झोंक लो। ऐसा न हो कि गड़बड़ा जाओ और जेलखाने जाओ।

इधर तो शराबियों ने रोना-पीटना शुरू किया, उधर किसी ने जा कर थाने में जड़ दी कि सराय में कई आदमियों ने मिल कर एक महाजन को मार डाला। थानेदार और दस चौकीदार रप-रप

करते आ पहुँचे। अरे ओ भठियारी, बता, वह महाजन कहाँ टिका हुआ था?

भठियारिन — कौन महाजन? किसी का नाम तो लीजिए।

थानेदार — तेरा बाप, और कौन!

भठियारिन — मेरा बाप? उसकी तलाश है, तो कब्रिस्तान जाइए।

थानेदार — खून कहाँ हुआ?

भठियारिन — खून! अरे तौबा कर बंदे! खून हुआ होगा थाने पर।

थानेदार — अरे इस सराय में कोई मरा है रात को?

भठियारिन — हाँ तो यों कहिए। वह देखिए, बेचारे खड़े रो रहे हैं। उनके भाई थे। कल दर्द हुआ। रात को मर गए।

थानेदार — लाश कहाँ है?

शराबी — हुजूर, यह रखी है। हाय, हम तो मर मिटे। घर में जा कर क्या मुँह दिखाएँगे, किस मुँह से अब घर जायँगे। किसी डाक्टर को बुलवाइए, जरा नब्ज तो देख लें।

थानेदार — अजी, अब नब्ज में क्या रखा है। बेचारा बुरी मौत मरा। अब इसके दफन-कफन की फिक्र करो।

थानेदार चला गया, तो मियाँ खोजी खूब खिल-खिला कर हँसे कि वल्लाह, क्या बात बनाई है। शराबियों ने उनकी खूब आवभगत की कि वाह उस्ताद, क्या झाँसा दिया। आपकी बदौलत जान बची; नहीं तो न जाने किस मुसीबत में फँस जाते।

थोड़ी ही देर बाद किसी कोठरी से फिर शोर-गुल सुनाई दिया।

आज़ाद — अब यह कैसा गुल है भाई? क्या यह भी कोई शराबी है।

भठियारिन — नहीं, एक रईस की लड़की है। उस पर एक परेत आया है। जरा सी लड़की, लेकिन इतनी दिलेर हो गई है कि किसी के सँभाले नहीं सँभलती।

आज़ाद — यह सब ढकोसला है!

भठियारिन — ऐ वाह, ढकोसला है। इस लड़की का भाई आगरे में था और वहाँ से पाँच सौ रुपए अपने बाप की थैली से चुरा लाया। यहाँ जो आया, तो लड़की ने कहा कि तू चोर है, चोरी करके आया है।

आज़ाद — अजी, उस लड़के ने अपनी बहन से कह दिया होगा; नहीं तो भला उसे क्या खबर होती?

भठियारी — भला गजलें उसे कहाँ से याद हैं?

आज़ाद — इसमें अचरज की कौन सी बात है? तुम्हें भी दो-चार गजलें याद ही होंगी!

भठियारी — मैं यह न मानूँगी। अपनी आँखों देख आई हूँ।

आज़ाद तो खिचड़ी पकवा कर खाने लगे और मियाँ खोजी घास लाने चले। जब घसियारिन ने बारह आने माँगे, तो आपने करौली दिखाई। इस पर घसियारिन ने गट्ठा इन पर फेंक दिया। बेचारे गट्ठे के बोझ से जमीन पर आ रहे। निकलना मुश्किल हो गया। लगे चीखने — न हुई करौली, नहीं तो बता देता। अच्छे अच्छे डाकू मेरा लोहा मानते हैं। एक नहीं, पचासों को मैंने चपरगट्टू किया है। यह घसियारिन मुझसे लड़े। अब उठाती है गट्ठा या आकर करौली भोंक दूँ?

लोगों ने गट्ठा उठाया, तो मियाँ खोजी बाहर निकले। दाढ़ी-मूँछ पर मिट्टी जम गई थी, लत-पत हो गए थे। उधर आज़ाद खिचड़ी खा कर लेटे ही थे कि कै हुई और फिर बुखार हो आया। तड़पने लगे। तब तो खोजी भी घबराए। सोचे, अब बिना हकीम के काम न चलेगा? भठियारी से पूछ कर हकीम के यहाँ पहुँचे।

हकीम साहब पालकी पर सवार हो कर आ पहुँचे।

आज़ाद — आदाब बजा लाता हूँ।

खोजी — बेहद कमजोरी है। बात करने की ताकत नहीं।

हकीम — यह आपके कौन हैं?

खोजी — जी हुजूर, यह गुलाम का लड़का है।

हकीम — आप मुझे मसखरे मालूम होते हैं।

खोजी — जी हाँ, मसखरा न होता, तो लड़के का बाप ही क्यों होता!

आज़ाद — जनाब, वह बेहया-बेशर्म आदमी है। न इसको जूतियाँ खाने का डर, न चपातियाए जाने का खौफ। इसकी बातों का तो खयाल ही न कीजिए।

खोजी — हकीम साहब, मुझे तो कुछ दिनों से बवासीर की शिकायत हो गई है।

हकीम — अजी, मैं खुद इस शिकायत में गिरफ्तार हूँ। मेरे पास इसका आजमाया हुआ नुस्खा मौजूद है।

खोजी — तो आपने अपने बवासीर का इलाज क्यों न किया?

आज़ाद — खोजी, तुम्हारी शामत आई है। आज पिटोगे।

खैर, हकीम साहब ने नुस्खा लिखा और रुखसत हुए। अब सुनिए कि नुस्खे में लिखा था — रोगन-गुल। आपने पढ़ा रोगनगिल,

यानी मिट्टी का तेल। आप नुस्खा बँधवा कर लाए और मिट्टी के तेल में पका कर आज़ाद को पिलाया, तो मिट्टी के तेल की बदबू आई। आज़ाद ने कहा — यह बदबू कैसी है? इस पर मियाँ खोजी ने उन्हें खूब ही ललकारा। वाह, बड़े नाजुक-मिजाज हैं, अब कोई इत्र पिलाए आपको, या केसर का खेत चराए, तब आप खुश हों। आज़ाद चुप हो रहे, लेकिन थोड़ी ही देर बाद इतने जोर का बुखार चढ़ा कि खोजी दौड़े हुए हकीम साहब के पास गए और बोले — जनाब मरीज बेचैन है। और क्यों न हो, आपने भी तो मिट्टी का तेल नुस्खे में लिख दिया।

हकीम — मिट्टी का तेल कैसा? मैं कुछ समझा नहीं।

खोजी — जी हाँ, आप काहे को समझने लगे। आप ही तो रोगन-गिल लिख आए थे।

हकीम — अरे भले आदमी, क्या गजब किया! कैसे जाँगलुओं से पाला पड़ा है! हमने लिखा रोगन-गुल और आप मिट्टी का तेल दे आए! वल्लाह, इस वक़्त अगर आप मेरे मकान पर न आए होते, खड़े-खड़े निकलवा देता।

खोजी — आपके हवास तो खुद ही ठिकाने नहीं। आपके मकान पर न आया होता, तो आप निकलवा कहाँ से देते? जनाब, पहले फस्द खुलवाइए।

यह कह कर मियाँ खोजी लौट आए। आज़ाद ने कहा — भाई, हकीम को तो देख चुके, अब कोई डॉक्टर लाओ।

खोजी — डॉक्टरों की दवा गरम होती है। बुखार का इलाज इन लोगों को मालूम ही नहीं।

आज़ाद — आप है अहमक! जा कर चुपके से किसी डॉक्टर को बुला लाइए।

खोजी पता पूछते हुए अस्पताल चले और डॉक्टर को बुला लाए?

डॉक्टर — जबान दिखाओ, जबान!

आज़ाद — बहुत खूब!

डॉक्टर — आँखें दिखाओ?

आज़ाद — आँखें दिखाऊँ, तो घबरा कर भागो।

डॉक्टर — क्या बक-बक करता है, आँख दिखा।

खैर डॉक्टर साहब ने नुस्खा लिखा और फीस लेकर चंपत हुए। आज़ाद ने चार घंटे उनकी दवा की, मगर प्यास और बेचैनी बढ़ती गई। सेरों बर्फ पी गए, मगर तसकीन न हुई। उल्टे पेचिश ने नाक में दम कर दिया। सुबह होते मियाँ खोजी एक वैद्यराज को बुला लाए। उन्होंने एक गोली दी और शहद के साथ चटा दी। थोड़ी देर में आज़ाद के हाथ-पाँव अकड़ने लगे।

खोजी बहुत घबराए और दौड़े वैद्य को बुलाने। राह में एक होम्योपैथिक डॉक्टर मिल गए। यह उन्हें घेर-घार कर लाए। उन्होंने एक छोटी सी शीशी से दवा की दो बूँदे पानी में डाल दीं। उसके पीते ही आज़ाद की तबीयत और भी बेचैन हो गई।

मियाँ आज़ाद ने दो-तीन दिन में इतने हकीम, डॉक्टर और वैद्य बदले कि अपनी ही मिट्टी पलीद कर ली। इस कदर ताकत भी न रही कि खटिया से उठ सकें। खोजी ने अब उन्हें डाँटना शुरू किया — और सोइए ओस में! जरा सी लुंगी बाँध ली और तर बिछौने पर सो रहे। फिर आप बीमार न हों, तो क्या हम हों। रोज कहता था कि ओस में सोना बुरा है; मगर आप सुनते किसकी हैं। आप अपने को तो जाली मूस समझते हैं और बाकी सबको गधा। दुनिया में बस, एक आप ही तो सुकरात हैं।

भठियारी — ऐ, तुम भी अजीब आदमी हो! भला कोई बीमार को ऐसे डाँटता है? जब अच्छे हो जायँ, तो खूब कोस लेना। और जो ओस की कहते हो, तो मियाँ, यह तो आदत पर है। हम तो दस बरस से ओस ही में सोते हैं। आज तक जुकाम भी जो हुआ हो, तो कसम ले लो।

आज़ाद — कोसने दो। अब यहाँ घड़ी दो घड़ी के और मेहमान हैं। अब मरे। न जाने किस बुरी साइत घर से चले थे।

हुस्नआरा के पास खत भेज दो कि हमको आकर देख जायँ। आज इस वक़्त सराय में लेटे हुए बातें कर रहे हैं, कल परसों तक कब्र में होंगे —

आगोश-लहद में जब कि सोना होगा;
जुज खाक, न तकिया, न बिछौना होगा।
तनहाई में आह कौन होवेगा अनीस;
हम होवेंगे और कब्र का कोना होगा।

खोजी — मैं डरता हूँ कि कहीं तुम्हें सरसाम न हो जाय।

भठियारी — चुप भी रहो, आखिर कुछ अक्ल भी है?

आज़ाद — मेरे दिन ही बुरे आए हैं। इनका कोई कसूर नहीं।

भठियारी — आपने भी तो हकीम की दवा की। हकीम लटकाए रहते हैं।

आज़ाद — खुदा हकीमों से बचाए। मूँग की खिचड़ी दे-दे कर मरीज को अधमरा कर डालते हैं। उस पर प्याले भर-भर दवा। अगर दो महीने में भी खटिया छोड़ी, तो समझिए कि बड़ा खुशनसीब था।

खोजी — जी हाँ, जब डॉक्टर न थे, तब तो सब मर ही जाते थे।

आज़ाद — खैर, चुप रहो, सिर मत खाओ। अब हमें सोने दो।

मियाँ आज़ाद की आँख लग गई। खोजी भी ऊँघने लगे। एक आदमी ने आकर उनको जगाया और कहा — मेरे साथ आइए, आपसे कुछ कहना है। खोजी ने देखा, तो इनकी खासी जोड़ थी। उनसे अंगुल दो अंगुल दबते ही थे।

खोजी — तो आप पिले क्यों पड़ते हैं? दूर ही से कहिए, जो कुछ कहना हो।

मुसाफिर — मियाँ आज़ाद कहाँ हैं?

खोजी — आप अपना मतलब कहिए। यहाँ तो आज़ाद-वाजाद कोई नहीं है। आप अपना खास मतलब कहिए।

मुसाफिर — अजी, आज़ाद हमारे बहनोई है। हमारी बहन ने भेजा है कि देखो कहाँ हैं।

खोजी — उनकी शादी तो हुई नहीं, बहनोई क्योंकर बन गए?

मुसाफिर — कितने अक्ल के दुश्मन हो! भला कोई बेवजह किसी को अपना बहनोई बनावेगा?

खोजी — भला आज़ाद की बीवी कहा हैं? हमको तो दिखा दीजिए।

मुसाफिर — अजी, इसी सराय के उस कोने में। चलो, दिखा दें। तुमसे क्या चोरी है।

मियाँ खोजी कोठरी के अन्दर गए। बालों में तेल डाला। सफेद कपड़े पहने। लाल फुँदनेदार टोपी दी। मियाँ आज़ाद का एक खाकी कोट डाटा और जब खूब बन-ठन चुके, तो आईना ले कर सूरत देखने लगे। बस, गजब ही तो हो गया। दाढ़ी के बाल ऊँचे-नीचे पाए, मूँछें गिरी पड़ीं। आपने कैंची ले कर बाल बराबर करना शुरू किया। कैंची तेज थी, एक तरफ की मूँछ बिलकुल उड़ गई। अब क्या करते, अपने पाँव में कुल्हाड़ी मारी। मजबूर होकर बाहर आए, तो मुसाफिर उन्हें देख कर हँस पड़ा। मगर आदमी था चालाक, जब्त किए रहा और खोजी को साथ ले चला। जा कर क्या देखते हैं कि एक औरत, इत्र में बसी हुई, रंगीन कपड़े पहने चारपाई पर सो रही है। जुल्फें काली नागिन की तरह लहराती हुई गरदन के इर्द-गिर्द पड़ी हुई हैं। खोजी लगे आँखें सेंकने। इतने में उस औरत ने आँखें खोल दीं और खोजी को देख कर ललकारा — तुम कौन हो? यहाँ क्या काम?

खोजी — आपके भाई पकड़ लाए।

औरत — अच्छा, पंखा झलो, मगर आँखें बन्द करके। खबरदार मुझे न देखना।

खोजी — पंखा झलने लगे और उस औरत ने झूठ-मूठ आँखें बन्द कर लीं। जरा देर में आँख जो खोली, तो देखा कि खोजी आँखें

फाड़-फाड़ कर देख रहे हैं। उसका आँखें खोलना था कि मियाँ खोजी ने आँखें खूब जोर से बन्द कर लीं।

औरत — क्यों जी, घूरते क्यों हो! बताओ, क्या सजा दूँ?

खोजी — इत्तिफ़ाक़ से आँख खुल गई।

औरत — अच्छा बताओ, मियाँ आज़ाद कहाँ हैं?

उधर मियाँ आज़ाद की आँख जो खुली, तो खोजी नदारद! जब घंटों हो गए और खोजी न आए, तो उनका माथा ठनका कि कमजोर आदमी हैं ही, किसी से टकराए होंगे, उसने गरदन नापी होगी। भठियारे को भेजा कि जा कर जरा देखो तो। उसने हँस कर कहा — जरी से तो आदमी है, भेड़िया उठा ले गया होगा। दूसरा बोला — आज हवा सन्नाटे की चलती है, कहीं उड़ गए होंगे। आखिर भठियारी ने कहा कि उन्हें तो एक आदमी बुला कर ले गया है। खोजी खूब बन-ठन कर गए हैं।

आज़ाद के पेट में चूहे दौड़ने लगे कि खोजी को कौन पकड़ ले गया। गिड़गिड़ा कर भठियारी से कहा — चाहे जो हो, खोजी को लाओ। किसी से पूछो-पाछो। आखिर गए कहाँ?

इधर मियाँ खोजी उस औरत के साथ बैठे दस्तरख़्वान पर हत्थे लगा रहे थे खाते जाते थे और तारीफें करते जाते थे। एक

लुकमा खाया और कई मिनट तक तारीफ की। यह तो तारीफ ही करते रहे, उधर मियाँ मुसाफिर ने दस्तरख़्वान साफ कर दिया। खोजी दिल में पछताए कि हमसे क्या हिमाकत हुई। पहले खूब पेट-भर खा लेते, फिर चाहे दिन भर बैठे तारीफ करते। उस औरत ने पूछा कि कुछ और लाऊँ? शरमाइएगा नहीं। यह आपका घर है। खोजी कुछ माँगनेवाले ही थे कि मियाँ मुसाफिर ने कहा — नहीं, जी, अब क्या हैजा कराओगी? यह कह कर उसने दस्तरख़्वान हटा दिया और खोजी मुँह ताकते रह गए। खाना खाने के बाद पान की बारी आई। दो ही गिलौरियाँ थीं। मुसाफिर ने एक तो उस औरत को दी और दूसरी अपने मुँह में रख ली। खोजी फिर मुँह देख कर रह गए। इसके बाद मुसाफिर ने उनसे कहा — मियाँ होत, अरे भाई, तुमसे कहते हैं।

खोजी — किससे कहते हो जी? क्या कहते हो?

मुसाफिर — यही कहते हैं कि जरा पलंग से उतर कर बैठो। क्या मजे से बराबर जा कर डट गए! उतरे कि मैं पहुँचूँ? और देखिएगा, आप पलंग पर चढ़ कर बैठे हैं। अपनी हैसियत को नहीं देखता।

खोजी — चुप गीदी, न हुई करौली, नहीं तो भोंक देता।

औरत — करौली पीछे ढूँढ़िएगा, पहले जरा यहाँ से खिसक कर नीचे बैठिए।

खोजी — बहुत अच्छा, अब बैठूँ तो तोप पर उड़ा देना।

मुसाफिर — ले चलो, उठो। यह लो, झाड़ू। अभी झाड़ू दे डालो।

खोजी — झाड़ू तुम दो। हमको भी कोई भड़भूजा समझा है? हम खानदानी आदमी हैं। रईसों से इस तरह बातें कहता है गीदी!

मुसाफिर — हमें तो नानबाई सा मालूम होता है। चलिए, उठिए, झाड़ू दीजिए। बड़े रईसजादे बन कर बैठे हैं। रईसों की ऐसी ही सूरत हुआ करती है?

खोजी ने दिल में सोचा कि जिससे मिलता हूँ, वह यही कहता है कि भले-मानस की ऐसी सूरत नहीं होती। और, इस वक़्त तो एक तरफ की मूँछ ही उड़ गई हैं, भलामानस कौन कहेगा। कुछ नहीं, अब हम पहले मुँह बनवाएँगे! बोले — अच्छा, रुखसत।

मुसाफिर — वाह, क्या दिल्लगी है। बैठिए, चिलम भर के जाइएगा।

मियाँ खोजी ऐसे झल्लाए कि चिमट ही तो गए। दोनों में चपतबाजी होने लगी। दोनों का कद कोई छह छह बालिश्त का, दोनों मरियल, दोनों चंडूबाज। यह आहिस्ता से उनको चपत

लगाते हैं। वह धीरे से इन पर धप जमाते हैं। उन्होंने इनके कान पकड़े इन्होंने उनकी नाक पकड़ी। उन्होंने इनको काट खाया, इन्होंने उनको नोच लिया। और मजा यह कि दोनों रो रहे हैं। मियाँ खोजी करौली की धुन बाँधे हुए हैं। आखिर दोनों हाँफ गए। न यह जीते, न वह। खोजी लड़खड़ा कर गिरे, को चारों खाने चित। उस हसीना ने दो-तीन धौल ऊपर से जमा दिए। इनका तो यह हाल हुआ, उधर मियाँ मुसाफिर ने चक्कर खाया और धम से जमीन पर। आखिर हसीना ने दोनों को उठाया और कहा — बस, लड़ाई हो चुकी। अब क्या कट ही मरोगे? चलो, बैठो।

खोजी — न हुई करौली, नहीं तो भोंक देता। हत तेरे की!

मुसाफिर — वह तो मैं हाँफ गया, नहीं तो दिखा देता आपको मजा। कुछ ऐसा-वैसा समझ लिया है। सैकड़ों पेच याद हैं।

हसीना — खबरदार, जो अब किसी की जबान खुली! चलो, अब चलें मियाँ आज़ाद के पास। उनकी भी तो खबर लें, जिस काम के लिए यहाँ तक आए हैं।

शाम हो गई थी। हसीना दोनों आदमियों के साथ आज़ाद की कोठरी में पहुँची, तो क्या देखती है कि आज़ाद सोए हैं और भठियारी बैठी पंखा झल रही है। उसने चट आज़ाद का कंधा पकड़ कर हिलाया। आज़ाद की आँखें खुल गईं। आँख का

खुलना था कि देखा, अलारक्खी सिरहाने खड़ी हैं और मियाँ चंडूबाज सामने खड़े पाँव दबा रहे हैं। आज़ाद की जान सी निकल गई। कलेजा धड़-धड़ करने लगा, होश पैतरे हो गए। या खुदा, यहाँ यह कैसे पहुँची? किसने पता बताया? जरा बीमारी हलकी हुई, तो इस बला ने आ दबोचा —

एक आफत से तो मर-मर के हुआ था जीना;
पड़ गई और यह कैसी, मेरे अल्लाह, नई।

खोजी — हजरत, उठिए, देखिए, सिरहाने कौन खड़ा है। वल्लाह, फड़क जाओ तो सही।

आज़ाद — (अलारक्खी) बैठिए-बैठिए, खूब मिलीं?

खोजी — अजी, अभी हमसे और आपके साले से बड़ी ठाँय-ठाँय हो गई। वह तो कहिए, करौली न थी, नहीं सालारजंग के पलस्तर बिगाड़ दिए होते।

आज़ाद ने खोजी, चंडूबाज और भठियारी को कमरे के बाहर जाने को कहा जब दोनों अकेले रह गए, तो आज़ाद ने अलारक्खी से कहा — कहिए, आप कैसे तशरीफ लाई हैं? हम तो वह आज़ाद ही नहीं रहे। वह दिल ही नहीं, वह उमंग ही नहीं। अब तो रूम ही जाने की धुन है।

अलारक्खी — प्यारे आज़ाद, तुम तो चले रूम को, हमें किसके सुपुर्द किए जाते हो? न हो, जमीन ही को सौंप दो। अब हम किसके हो कर रहें?

आज़ाद — अब हमारी इज्जत और आबरू आप ही के हाथ है। अगर रूम से जीते वापस आए, तो तुमको न भूलेंगे। अल्लाह पर भरोसा रखो, वही बेड़ा पार करेगा। मेरी तबीयत दो तीन दिन से अच्छी नहीं है। कल तो नहीं, परसों जरूर रवाना हूँगा।

खोजी — (भीतर आकर) बी अलारक्खी अभी पूछ रही थीं कि मुझको किसके सुपुर्द किए जाते हो; आपने इसका कुछ जवाब न दिया। जो कोई और न मिले, तो हमीं यह मुसीबत सहें। हमारे ही सुपुर्द कर दीजिए। आप जाइए, हम और यह यहाँ रहेंगे।

आज़ाद — तुम यहाँ क्यों चले आए? निकलो यहाँ से।

अलारक्खी बड़ी देर तक आज़ाद को समझाती रही — हमारा कुछ खयाल न करो, हमारा अल्लाह मालिक है। तुम हुस्नआरा से कौल हारे हो, तो रूम जाओ और जरूर जाओ, खुदा ने चाहा तो सुर्खरू हो कर आओगे। मैं भी जा कर हुस्नआरा ही के पास रहूँगी। उन्हें तसल्ली देती रहूँगी। जरा जो किसी पर खुलने पावे कि मुझसे-तुमसे क्या ताल्लुक है। इतना खयाल रहे कि जहाँ-जहाँ डाक जाती हो, वहाँ-वहाँ से खत बराबर भेजने जाना। ऐसा

न हो कि भूल जाओ। नहीं तो वह कुढ़-कुढ़ कर मर ही जायँगी। और, मेरा तो जो हाल हैं, उसको खुदा ही जानता है। अपना दुःख किससे कहूँ?

आज़ाद — अलारक्खी, खुदा की कसम, हम तुमको अपना इतना सच्चा दोस्त नहीं जानते थे। तुमको मेरा इतना खयाल और मेरी इतनी मुहब्बत है; यह तो आज मालूम हुआ।

इस तरह दो-तीन घंटे तक दोनों ने बातें की। जब अलारक्खी रवाना हुई, तो दोनों गले मिल कर खूब रोए।

26

आज़ाद ने सोचा कि रेल पर चलने से हिंदोस्तान की हालत देखने में न आएगी। इसलिए वह लखनऊ के स्टेशन पर सवार न होकर घोड़े पर चले थे। एक शहर से दूसरे शहर जाना, जंगल और देहात की सैर करना, नए-नए आदमियों से मिलना उन्हें पसंद था। रेल पर ये मौके कहाँ मिलते। अलारक्खी के चले जाने के एक दिन बाद वह भी चले। घूमते-घामते एक कस्बे में जा पहुँचे। बीमारी से तो उठे ही थे, थक कर एक मकान के सामने बिस्तर बिछाया और डट गए। मियाँ खोजी ने आग सुलगाई और

चिलम भरने लगे। इतने में उस मकान के अन्दर से एक बूढ़े निकले और पूछा — आप कहाँ जा रहे हैं?

आज़ाद — इरादा तो बड़ी दूर का करके चला हूँ, रूम का सफर है, देखूँ पहुँचता हूँ या नहीं।

बूढ़े मियाँ — खुदा आपको सुर्खरू करे। हिम्मत करनेवाले की मदद खुदा करता है! आइए, आराम से घर में बैठिए। यह भी आप ही का घर है!

आज़ाद उस मकान में गए, तो क्या देखते हैं कि एक जवान औरत चिक उठाए मुसकरा रही है। आज़ाद ज्यों ही फर्श पर बैठे वह हसीना बाहर निकल आई और बोली — मेरे प्यारे आज़ाद, आज बरसों के बाद तुम्हें देखा। सच कहना, कितनी जल्दी पहचान गई। आज मुँह-माँगी मुराद पाई।

मियाँ आज़ाद चकराए कि यह हसीना कौन है, जो इतनी मुहब्बत से पेश आती है। अब साफ-साफ कैसे कहें कि हमने तुम्हें नहीं पहचाना। उस हसीना ने यह बात ताड़ ली और मुसकरा कर कहा —

हम ऐसे हो गए अल्लाह-अकबर, ऐ तेरी कुदरत।
हमारा नाम सुन कर हाथ वह कानों पे धरते हैं।

आप और इतनी जल्द हमें भूल जायँ! हम वह हैं जो लड़कपन में तुम्हारे साथ खेला किए हैं। तुम्हारा मकान हमारे मकान के पास था। मैं तुम्हारे बाग में रोज फूल चुनने जाया करती थी। अब समझे कि अब भी नहीं समझे?

आज़ाद — आहाहा, अब समझा, ओफ् ओह! बरसों बाद तुम्हें देखा। मैं भी सोचता था कि या खुदा यह कौन है कि ऐसी बेझिझक हो कर मिली। मगर पहचानते, तो क्यों कर पहचानते? तब में और अब में जमीन-आसमान का फर्क है। सच कहता हूँ जीनत, तुम कुछ और ही हो गई हो।

जीनत — आज किसी भले का मुँह देख कर उठी थी। जब से तुम गए, जिंदगी का मजा जाता रहा —

> यह हसरत रह गई किस-किस मजे से जिंदगी कटती;
> अगर होता चमन अपना, गुल अपना, बागवाँ अपना।

आज़ाद — यहाँ भी बड़ी-बड़ी मुसीबतें झेलीं, लेकिन तुम्हें देखते ही सारी कुलफतें दूर हो गई —

> तब लुत्फे-जिंदगी है, जब अब्र हो, चमन हो;
> पेशे-नजर हो साकी, पहलू में गुलबदन हो।

यहाँ अख्तर नहीं नजर आती!

जीनत — है तो, मगर उसकी शादी हो गई। तुम्हें देखने के लिए बहुत तड़पती थी। उस बेचारी को चचाजान ने जान-बुझ कर खारी कुएँ में ढकेल दिया। एक लुच्चे के पाले पड़ी है, दिन-रात रोया करती है। अब्बाजान जब से सिधारे, इनके पाले पड़े हैं। जब देखो, सोटा लिए कल्ले पर खड़े रहते हैं। ऐसे शोहदे के साथ ब्याह दिया, जिसका ठौर न ठिकाना। मैं यह नहीं कहती कि कोई रुपएवाला या बहादुरशाह के खानदान का होता। गरीब आदमी की लड़की कुछ गरीबों ही के यहाँ खूब रहती हे। सबसे बड़ी बात यह है कि समझदार हो, चाल-चलन अच्छा हो; यह नहीं कि पढ़े न लिखे, नाम मुहम्मद फाजिल; अलिफ के नाम वे नहीं जानते, मगर दावा यह है कि हम भी हैं पाँचवें सवारों में। हमारे नजदीक जिसकी आदत बुरी हो उससे बढ़ कर पाजी कोई नहीं। मगर अब तो जो होना था; सो हुआ; तुम खूब जानते हो आज़ाद कि साली को अपने बहनोई का कितना प्यार होता है; मगर कसम लो, जो उसका नाम लेने को भी जी चाहता हो। बीवी का जेवर सब बेच कर चट कर गया — कुछ दाँव पर रख आया, कुछ के औने-पौने किए। मकान-वकान सब इसी जुए के फेर में घूम गया। अब टके-टके को मुहताज है। डर मालूम होता है कि किसी दिन यहाँ आकर कपड़े-लत्ते न उठा ले जाय। चचा को उसका सब हाल मालूम था, मगर लड़की को भाड़ में झोंक ही

दिया। आती होगी, देखना, कैसी घुल के काँटा हो गई हैं। हड्डी हड्डी गिन लो। ऐ अख्तरी, जरी यहाँ आओ। मियाँ आज़ाद आए हैं।

जरा देर में अख्तर आई। आज़ाद ने उसको और उसने आज़ाद को देखा, तो दोनों बेअख्तियार खिल-खिला कर हँस पड़े मगर जरा ही देर में अख्तर की आँखें भर आईं और गोल-गोल आँसू टप-टप गिरने लगे। आज़ाद ने कहा — बहन, हम तुम्हारा सब हाल सुन चुके; पर क्या करें, कुछ बस नहीं। अल्लाह पर भरोसा रखे, वही सबका मालिक है। किसी हालत में आदमी को घबराना न चाहिए। सब्र करने वालों का दर्जा बड़ा होता है।

इस पर अख्तर ने और भी आठ-आठ आँसू रोना शुरू किया।

जीनत बोली — बहन, आज़ाद बहुत दिनों के बाद आए हैं। यह रोने का मौका नहीं।

आज़ाद — अख्तर, वह दिन याद हैं, जब तुमको हम चिढ़ाया करते थे और तुम अंगूर की टट्टी में रूठ कर छिप रहती थीं; हम ढूँढ़ कर तुम्हें मना लाते थे और फिर चिढ़ाते थे? हमको जो तुम्हारी दोनों की मुहब्बत है, इसका हाल हमारा खुदा ही जानता है। काश, खुदा यह दिन न दिखाता कि मैं तुमको इस मुसीबत में देखता। तुम्हारी वह सूरत ही बदल गई।

अख्तर — भाई, इस वक़्त तुमको क्या देखा, जैसे जान में जान आ गई। अब पहले यह बताओ कि तुम यहाँ से जाओगे तो नहीं? इधर तुम गए, और उधर हमारा जनाजा निकला। बरसों बाद तुम्हें देखा है, अब न छोड़ूँगी।

इसी तरह बातें करते-करते रात हो गई। आज़ाद ने दोनों बहनों के साथ खाना खाया। तब जीनत बोली — आज पुरानी सोहबतों की बहार आँखों में फिर गई। आइए, खाना खा कर चमन में चलें। बाग तो वीरान है; मगर चलिए, जरा दिल बहलाएँ। कसम लीजिए, जो महीनों चमन का नाम भी लेती हों —

नजर आता है गुल आजर्दा, दुश्मन बागबाँ मुझको;
बनाना था न ऐसे बोस्ताँ में आशियाँ मुझको।

खाना खा कर तीनों बाग की सैर करने चले।

आज़ाद — ओहोहो, यह पुराना दरख्त है। इसी के साये में हम रात-रात बैठे रहते थे। आहाहा, यह वह रविश है, जिस पर हमारा पाँव फिसला था और हम गिरे, तो अख्तर खूब खिल-खिला कर हँसी। तुम्हारे यहाँ एक बूढ़ी औरत थी, जैनब की माँ।

अख्तर — थी क्यों, क्या अब नहीं है? ऐ वह हमसे तुमसे हट्टी-कट्टी है; खासी कठौता सी बनी हुई है।

आज़ाद — क्या वह बूढ़ी अभी तक जिंदा है? क्या आकबत के बोरिये बटोरेगी?

चलते-चलते बाग में एक जगह दीवार पर लिखा देखा कि मियाँ आज़ाद ने आज इस बाग की सैर की।

इतने में जीनत के बूढ़े चचा आ पहुँचे और बोले — भई, हमने आज जो तुम्हें देखा, तो खयाल न आया कि कहाँ देखा है। खूब आए। यह तो बतलाओ, इतने दिन रहे कहाँ? जीनत तुम्हें रोज याद किया करती थी, उठते-बैठते तुम्हारा ही नाम जबान पर रहता था? अब आप यहीं रहिए। जीनत को जो तुमसे मुहब्बत है, वह उसका और तुम्हारा, दोनों का दिल जानता होगा। मेरी दिली आरज़ू है कि तुम दोनों का निकाह हो जाय। इसी बाग में रहिए और अपना घर सँभालिए। मैं तो अब गोशे बैठ कर खुदा की बन्दगी करना चाहता हूँ।

मियाँ आज़ाद ये बातें सुन कर पानी-पानी हो गए! 'हाँ' कहें, तो नहीं बनती, 'नहीं' कहें, तो शामत आए। सन्नाटे में थे कि कहें क्या। आखिर बहुत देर के बाद बोले — आपने जो कुछ फरमाया, वह आपकी मेहरबानी है। मैं तो अपने को इस लायक नहीं समझता। जिसका ठौर न ठिकाना, वह जीनत के काबिल कब हो सकता है?

मियाँ आज़ाद तो यहाँ चैन कर रहे थे; उधर मियाँ खोजी का हाल सुनिए। मियाँ आज़ाद की राह देखते-देखते पीनक जो आ गई, तो टट्टू एक किसान के खेत में जा पहुँचा। किसान ने ललकारा — अरे, किसका टट्टू है? आप जरा भी न बोले। उसने खूब गालियाँ दीं। आप बैठे सुना किए। जब उसने टट्टू को पकड़ा और काँजीहौस ले चला, तब आप उससे लिपट गए। उसने झल्ला कर एक धक्का जो दिया, तो आपने बीस लुढ़कनियाँ खाईं। वह टट्टू को ले चला। जब खोजी ने देखा कि वह हारी-जीती एक नहीं मानता, तो आप धम से टट्टू की पीठ पर हो रहे अब आगे-आगे किसान, पीछे-पीछे टट्टू और टट्टू की पीठ पर खोजी। राह चलते लोग देखते थे। खोजी बार-बार करौली की हाँक लगाते थे। इस तरह काँजीहौस पहुँचे। अब काँजीहौस का चपरासी और मुंशी बार-बार कहते हैं कि हजरत टट्टू पर से उतरिए, इसे हम भीतर बन्द करें; मगर आप उतरने का नाम नहीं लेते; ऊपर बैठे-बैठे करौली और तमंचे का रोना रो रहे हैं। आखिर मजबूर हो कर मुंशी ने खोजी को छोड़ दिया। आप टट्टू लिए हुए मूँछों पर ताव देते घर की तरफ चले, गोया और किला जीत कर आए हैं।

उधर आज़ाद से अख्तर ने कहा — क्यों भाई, वे पहेलियाँ भी याद हैं, जो तुम पहले बुझवाया करते थे? बहुत दिन हुए, कोई चीसताँ सुनने में नहीं आई।

आज़ाद — अच्छा; बूझिए —

आँ चीस्त दहन हजार दारद;
(वह क्या है जिसके सौ मुँह होते हैं)
दर हर दहने दो मार दारद;
(हर मुँह में दो साँप होते हैं)
शाहेस्त नशिस्ता वर सरे-तख्त।
(एक बादशाह तख्त पर बैठा हुआ है)
आँ रा हमा दर शुमान दारद।
(उसी को सब गिनते हैं)

अख्तर — हजार मुँह। यह तो बड़ी टेढ़ी खीर है?

जीनत — गिनती कैसी?

आज़ाद — कुछ न बताएँगे। जो खुदा की बन्दगी करते हैं, वह आप ही समझ जाएँगे।

अख्तर — अहाहा, मैं समझ गई। अल्लाह की कसम, समझ गई। तसबीह है; क्यों कैसी बूझी?

आज़ाद — हाँ। अच्छा, यह तो कोई बूझे —

राजा के घर आई रानी,
औघट-घाट वह पीवे पानी
मारे लाज के डूबी जाय,

नाहक चोट परोसी खाय।

जीनत — भई, हमारी समझ में तो नहीं आता। बता दो, बस, बूझ चुकी।

अख्तर — वाह, देखो, बूझते हैं। घड़ियाल है।

आज़ाद — वल्लाह, खूब बूझी। अब की बूझिए —

एक नार जब सभा में आवे,
सारी सभा चकित रह जावे।
चातुर चातुर वाके यार,
मूरख देखे मुँह पसार।

जीनत — जो इसको कोई बूझ दे, तो मिठाई खिलाऊँ।

आज़ाद — यह इस वक़्त यहाँ है। बस, इतना इशारा बहुत है।

अख्तर — हम हार गए, आप बता दें।

आज़ाद — बता ही दूँ यह पहेली है।

जीनत — अरे, कितनी मोटी बात पूछी और हम न बता सके!

अख्तर — अच्छा, बस एक और कह दीजिए। लेकिन अब की कोई कहानी कहिए। अच्छी कहानी हो, लड़कों के बहलाने की न हो।

आज़ाद ने अपनी और हुस्नआरा की मुहब्बत की दास्तान बयान करनी शुरू की। बजरे पर सैर करना, सिपहआरा का दरिया में डुबना और आज़ाद का उसको निकालना, हुस्नआरा का आज़ाद से रूम जाने के लिए कहना और आज़ाद का कमर बाँध कर तैयार हो जाना, ये सारी बातें बयान कीं।

अख्तर — बेशक सच्ची मुहब्बत थी।

आज़ाद — मगर मियाँ आशिक वहाँ से चले, तो राह में नीयत डाँवाडोल हो गई। किसी और के साथ शादी कर ली।

अख्तर — तौबा! तौबा! बड़ा बुरा किया! बस, जबानी दाखिला था!

जीनत — सच्ची मुहब्बत होती, तो हूर पर भी आँख न उठाता। रूम जाता और फिर जाता! मगर वह कोई मक्कार आदमी था।

आज़ाद — वह आशिक में हूँ और माशूक हुस्नआरा है। मैंने अपनी ही दास्तान सुनाई और अपनी ही हालत बताई। अब जो हुक्म दो, वह मंजूर, जो सलाह बताओ वह कबूल। रूम जाने का वादा कर आया हूँ, मगर यहाँ तुमको देखा, तो अब कदम नहीं उठता। कसम ले लो, जो तुम्हारी मर्जी के खिलाफ करूँ।

इतना सुनना था कि अख्तर की आँखें डबडबा आईं और जीनत का मुँह उदास हो गया। सिर झुका कर रोने लगी।

अख्तर — तो फिर आए यहाँ क्या करने?

जीनत — तुम तो हमारे दुश्मन निकले। सारी उमंगों पर पानी फेर दिया —

> शिकवा नहीं है आप जो अब पूछते नहीं;
> वह शक्ल मिट गई, वह शबाहत नहीं रही।

अख्तर — बाजी, अब इनको यही सलाह दो कि रूम जायँ। मगर जब वापस आएँ, तो हमसे भी मिलें, भूल न जायँ।

इतने में बाहर से आवाज आई कि न हुई करौली, वर्ना खून की नदी बहती होती, कई आदमियों का खून हो गया होता। वह तो कहिए, खैर गुजरी। आज़ाद ने पुकारा — क्यों भाई खोजी, आ गए?

खोजी — वाह-वाह! क्या साथ दिया! हमको छोड़ कर भागे, तो खबर भी न ली। यहाँ किसान से डंडा चल गया, काँजीहौस में चौकीदार से लाठी-पोंगा हो गया; मगर आपको क्या।

आज़ाद — अजी चलो, किसी तरह आ तो गए।

खोजी — अजी, यही बूढ़े मियाँ राह में मिले, वह यहाँ तक ले आए। नहीं तो सचमुच घास खाने की नौबत आती।

मियाँ आज़ाद दूसरे दिन दोनों बहनों से रुख़सत हुए। रोते-रोते जीनत की हिचकियाँ बँध गईं। आज़ाद भी नर्म-दिल आदमी थे। फूट-फूट कर रोने लगे। कहा — मैं अपनी तसवीर दिए जाता हूँ, इसे अपने पास रखना। मैं खत बराबर भेजता रहूँगा। वापस आऊँगा, तो पहले तुमसे मिलूँगा। फिर किसी से। यह कह कर दोनों बहनों को पाँच-पाँच अशर्फियाँ दीं। फिर जीनत के चचा के पास जा कर बोले — आप बुजुर्ग हैं, लेकिन इतना हम जरूर कहेंगे कि आपने अख्तरी को जीते जी मार डाला। दीन का रखा न दुनिया का। आदमी अपनी लड़की का ब्याह करता है, तो देख लेता है कि दामाद कैसा है; यह नहीं कि शोहदे और बदमाश के साथ ब्याह कर दिया। अब आपको लाजिम है कि उसे किसी दिन बुलाइए, और समझाइए, शायद सीधे रास्ते पर आ जाय।

बूढ़े मियाँ — क्या कहें भाई, हमारी किस्मत ही फूट गई। क्या हमको अख्तरी का प्यार नहीं है? मगर करें क्या? उस बदनसीब को समझाए कौन? किसी की सुने भी।

आज़ाद — खैर, अब जीनत की शादी जरा समझ-बूझ कर कीजिएगा। अगर जीनत किसी अच्छे घर ब्याही जाय और उसी का शौहर चलन का अच्छा हो, तो अख्तर के भी आँसू पुँछें कि मेरी बहन तो खुश है, यही सही। चार दिन जो कहीं बहन के यहाँ जा कर रहेगी, तो जी खुश होगा, बड़ी ढारस होगी। अब बंदा

तो रुख़सत होता है, मगर आपको अपने ईमान और मेरी जान की कसम है, जीनत की शादी देख-भाल कर कीजिएगा।

यह कह कर आज़ाद घर से बाहर निकले, तो दोनों बहनों ने चिल्ला-चिल्ला कर रोना शुरू किया।

आज़ाद — प्यारी अख्तर और प्यारी जीनत, खुदा गवाह है, इस वक़्त अगर मुझे मौत आ जाय, तो समझूँ, जी उठा। मुझे खूब मालूम है, मेरी जुदाई तुम्हें अखरेगी; लेकिन क्या करूँ, किसी ऐसे-वैसी जगह जाना होता, तो खैर, कोई मुजायका न था, मगर एक ऐसी मुहिम पर जाना है, जिससे इनकार करना किसी मुसलमान को गवारा नहीं हो सकता। अब मुझे हँसी-खशी रुख़सत करो।

जीनत ने कलेजा थाम कर कहा — जाइए। इसके आगे मुँह से एक बात भी न निकली।

अख्तर — जिस तरह पीठ दिखाई, उसी तरह मुँह भी दिखाओ।

27

मियाँ आज़ाद और खोजी चलते-चलते एक नए कस्बे में जा पहुँचे और उसकी सैर करने लगे। रास्ते में एक अनोखी सज-धज के

जवान दिखाई पड़े। सिर से पैर तक पीले कपड़े पहने हुए, ढीले पाँयचे का पाजामा, केसरिये केचुल लोट का अंगरखा, केसरिया रँगी दुपल्ली टोपी, कंधों पर केसरिया रूमाल; जिसमें लचका टँका हुआ। सिन कोई चालीस साल का।

आज़ाद — क्यों भई खोजी, भला भाँपो तो, यह किस देश के हैं।

खोजी — शायद काबुल के हों।

आज़ाद — काबुलियों का यह पहनावा कहाँ होता है।

खोजी — वाह, खूब समझे! क्या काबुल में गधे नहीं होते?

आज़ाद — जरा हजरत की चाल तो देखिएगा, कैसे कूँदे झाड़ते हुए चले जाते हैं। कभी जरी के जूते पर निगाह है, कभी रूमाल फड़काते हैं, कभी अंगरखा चमकाते हैं, कभी लचके की झलक दिखाते हैं। इस दाढ़ी-मूँछ का भी खयाल नहीं। यह दाढ़ी और यह लचके की गोट, सुभान-अल्ला!

खोजी — आपको जरा छेड़िए तो; दिल्लगी ही सही।

आज़ाद — जनाब, आदाब अर्ज है। वल्लाह, आपके लिबास पर तो वह जोबन है कि आँख नहीं ठहरती, निगाह के पाँव फिसले जाते हैं।

जर्दपोश — (शरमा कर) जी, इसका एक खास सबब है।

आज़ाद — वह क्या? क्या किसी सरकार से वर्दी मिली है? या, सच कहना उस्ताद, किसी नाई से तो नहीं छीन लाए?

जर्दपोश — (अपने नौकर से) रमजानी, जरा बता तो देना, हमें अपने मुँह से कहते हुए शरम आती है।

रमजानी — हुजूर, मियाँ का निकाह होने वाला है। इसी पहनावे की रस्म है हुजूर!

आज़ाद — रस्म की एक ही कही। यह अच्छी रस्म है — दाढ़ी-मूँछवाले आदमी, और लचका, बन्नत पट्ठा लगा कर कपड़े पहनें! अरे भई, ये कपड़े दुलहिन के लिए हैं, या आप-जैसे मुच्छक्कड़-फक्कड़बेग के लिए? खुदा के लिए इन कपड़ों को उतारो, मरदों की पोशाक पहनो!

इधर आज़ाद तो यह फटकार सुना कर अलग हुए, उधर खिदमतगार ने मियाँ जर्दपोश को समझाना शुरू किया — मियाँ, सच तो कहते थे! जिस गली-कूचे में आप निकल जाते हैं, लोग तालियाँ बजाते और हँसी उड़ाते हैं।

जर्दपोश — हँसने दो जी; हँसते ही घर बसते हैं।

खिदमतगार — मियाँ, मैं जाहिल आदमी हूँ, मुल बुरी बात बुरी ही है। हम गरीब आदमी हैं, फिर भी ऐसे कपड़े नहीं पहनते।

मियाँ आज़ाद उधर आगे बढ़े तो क्या देखते हैं, एक दुकड़ी सामने से आ रही है। उस पर तीन नौजवान रईस बड़े ठाट से बैठे हैं। तीनों ऐनकबाज हैं। आज़ाद बोले — यह नया फैशन देखने में आया। जिसे देखो, ऐनकबाज। अच्छी-खासी आँखें रखते हुए भी अंधे बनने का शौक!

मियाँ आज़ाद को यह कस्बा ऐसा पसंद आया कि उन्होंने दो-चार दिन यहीं रहने की ठानी। एक दिन घूमते-घामते एक नवाब के दरबार में जा पहुँचे। सजी-सजाई कोठी, बड़े-बड़े कमरे। एक कमरे में गलीचे बिछे हुए, दूसरे में चौकियाँ, मेज, मसहरियाँ करीने से रखी हुई। खोजी यह ठाट-बाट देख कर अपने नवाब को भूल गए। जा कर दोनों आदमी दरबार में बैठे। खोजी तो नवाबों की सोहबत उठाए थे, जाते ही जाते कोठी की इतनी तारीफ की कि पुल बाँध दिए — हुजूर, खुदा जानता है,क्या सजी-सजाई कोठी है। कसम है हुसैन की, जो आज तक ऐसी इमारत नजर से गुजरी हो। हमने तो अच्छे-अच्छे रईसों की मुसाहबत की है, मगर कहीं यह ठाट नहीं देखा। हुजूर बादशाहों की तरह रहते हैं। हुजूर की बदौलत हजारों गरीबों-शरीफों का भला होता है। खुदा ऐसे रईस को सलामत रखे।

मुसाहब — अजी, अभी आपने देखा क्या है? मुसाहब लोग तो अब आ चले हैं। शाम तक सब आ जायँगे। एक मेले का मेला रोज लगता है।

नवाब — क्यों साहब, यह फ्रीमेशन भी जादूगर है शायद? आखिर जादू नहीं, तो है क्या?

मुसाहब — हुजूर बजा फरमाए हैं। कुछ दिन हुए, मेरी एक फ्रीमेशन ने मुलाकात हुई। मैं, आप जानिए, एक ही काइयाँ। उनसे खूब दोस्ती पैदा की। एक दिन मैंने उनसे पूछा, तो बोले — यह वह मजहब है, जिससे बढ़ कर दुनिया में कोई मजहब ही नहीं। क्यों नहीं हो जाते फ्रीमेशन हुआ। वहाँ हुजूर, करोड़ों लाशे थीं। सब की सब मुझसे गले मिलीं और हँसीं। मैं बहुत ही डरा। मगर उन लोगों ने दिलासा दिया — इनसे डरते क्यों हो? हाँ, खबरदार, किसी से कहना नहीं; नहीं तो ये लाशें कच्चा ही खा जायँगी। इतने में खुदावंद, आग बरसने लगी और मैं जल-भुन कर खाक हो गया। इसके बाद एक आदमी ने कुछ पढ़ कर फूँका, तो फिर हट्टा-कट्टा मौजूद! हुजूर, सच तो यों है कि दूसरा होता, तो रो देता, लेकिन मैं जरा भी न घबराया। थोड़ी देर के बाद एक देव जैसे आदमी ने मुझे एक हौज में ढकेल दिया। मैं दो दिन और दो रात वहीं पड़ा रहा। जब निकाला गया, तो फिर टैयाँ सा मौजूद। सबकी सलाह हुई कि इसको यहाँ से निकाल

दो। हुजूर, खुदा-खुदा करके बचे, नहीं तो जान ही पर बन आई थी?

गप्पी — हुजूर, सुना है; कामरूप में औरतें मर्दों पर माश पढ़ कर फूँकती और बकरा, बैल, गधा वगैरह बना डालती हैं। दिन भर बकरे बने, में-में किया किए, सानी खाया किए, रात को फिर मर्द के मर्द। दुनिया में एक से एक जादूगर पड़े हैं।

खुशामदी — हुजूर, यह मूठ क्या चीज है? कल रात को हुजूर तो यहाँ आराम फरमाते थे, मैं दो बजे के वक़्त कुरान पढ़ कर टहलने लगा, तो हुजूर के सिरहाने के ऊपर रोशनी सी हुई। मेरे तो होश उड़ गए।

मुसाहब — होश उड़ने की बात ही है।

खुशामदी — हुजूर मैं रात भर जागता रहा और हुजूर के पलंग से इर्द-गिर्द पहरा दिया किया।

नवाब — तुम्हें कुरान की कसम।

खुशामदी — हुजूर की बदौलत मेरे बाल-बच्चे पलते हैं; भला आपसे और झूठ बोलूँ? नमक की कसम, बदन का रोआँ-रोआँ खड़ा हो गया। अगर मेरा बाप भी होता; तो मैं पहरा न देता; मगर हुजूर का नमक जोश करता था।

जमामार — हुजूर, यहाँ एक जोड़ी बिकाऊ है। हुजूर खरीदें, तो दिखाऊँ। क्या जोड़ी है कि ओहोहो! डेढ़ हजार से कम में न देगा।

मुसाहब — ऐ, तो आपने खरीद क्यों न ली! इतनी तारीफ करते हो और फिर हाथ से जाने दी! हुजूर, इन्हें हुक्म हो कि बस, खरीद ही लाएँ। बादशाही में इनके यहाँ भी कई घोड़े थे; सवार भी खूब होते है; और चाबुक-सवारी में तो अपना सानी नहीं रखते।

नवाब — मुनीम से कहो, इन्हें दो हजार रुपए दें, और दो साईस इनके साथ जायँ।

जमामार मुनीम के घर पहुँचे और बोले — लाला जवाहिरमल, सरकार ने दो हजार रुपए दिलवाए हैं, जल्द आइए।

जवाहिरमल — तो जल्दी काहे की है? ये रुपए होंगे क्या?

जमामार — एक जोड़ी ली जायगी। उस्ताद, देखो, हमको बदनाम न करना। चार सौ की जोड़ी है। बाकी रहे सोलह सौ। उसमें से आठ सौ यार लोग खाएँगे बाकी आठ सौ में छह सौ हमारे, दो सौ तुम्हारे। है पक्की बात न?

जवाहिरमल — तुम लो छह सौ, और हम लें दो सौ। मियाँ भाई हो न! अरे यार, तीन सौ हमको दे, पाँच सौ तू उड़ा। यह मामले की बात है?

जमामार — अजी, मियाँ भाई की न कहिए। मियाँ भाई तो नवाब भी हैं, मगर अल्लाह मियाँ की गाय। तुम तो लाखों खा जाओ, मगर गाढ़े की लँगोटी लगाए रहो। खाने को हम भी खाएँगे, मगर शरबती के अँगरखे डाटे हुए नवाब बने हुए, कोरमा और पुलाव के बगैर खाना न खाएँगे। तुम उबाली खिचड़ी ही खाओगे। खैर, नहीं मानते, तो जैसी तुम्हारी मरजी।

मियाँ जमामार जोड़ी ले कर पहुँचे, हो दरबार में उसकी तारीफें होने लगीं। कोई उसके थूथन की तारीफ करता है, कोई माथे की, कोई छाती की। खुशामदी बोले — वल्लाह, कनौटियाँ तो देखिए, प्यार कर लेने को जी चाहता है।

गप्पी — हुजूर, ऐसे जानवर किस्मत से मिलते हैं। कसम खुदा की, ऐसी जोड़ी सारे शहर में न निकलेगी।

मतलबी — हुजूर, दो-दो हजार की एक-एक घोड़ी है। क्या खूबसूरत हाथ-पाँव हैं। और मजा यह कि कोई ऐब नहीं।

नवाब — कल शाम को फिटन में जोतना। देखें कैसी जाती है।

गप्पी — हुजूर, आँधी की तरह जाय, क्या दिल्लगी है कुछ।

रात को मियाँ आज़ाद सराय में पड़ रहे। दूसरे दिन शाम को फिर नवाब साहब के यहाँ पहुँचे। दरबार जमा हुआ था, मुसाहब लोग गप्पें उड़ा रहे थे। इतने में मसजिद से अजान की आवाज सुनाई दी। मुसाहबों ने कहा — हुजूर, रोजा खोलने का वक़्त आ गया।

नवाब — कसम कुरान की, हमें आज तक मालूम ही न हुआ कि रोजा रखने से फायदा क्या होता है? मुफ्त में भूखों मरना कौन सा सवाब है? हम तो हाफिज के चेले हैं, वह भी रोजा-नमाज कुछ न मानते थे।

आज़ाद — हुजूर ने खूब कहा —

दोश अज मसजिद सुए मैखाना आदम पीरे मा;
चीस्त याराने तरीकत बाद अजीं तदबीरे मा।

(कल मेरे पीर मसजिद से शराबखाने की तरफ आए। दोस्तो, बतलाओ, अब मैं क्या करूँ?)

खुशामदी — वाह-वाह, क्या शेर है। सादी का क्या कहना।

गप्पी — सुना, गाते भी खूब थे। बिहाग की धुन पर सिर धुनते हैं।

आज़ाद दिल में खूब हँसे। यह मसखरे इतना भी नहीं जानते कि यह सादी का शेर है या हाफिज का! और मजा यह कि उनको बिहाग भी पसंद था! कैसे-कैसे गौखे जमा हैं।

मुसाहब — हुजूर, बजा फरमाते हैं। भूखों मरने से भला खुदा क्या खुश होगा?

नवाब — भई, यहाँ तो जब से पैदा हुए, कसम ले लो, जो एक दिन भी फाका किया हो। फिर भूख में नमाज की किसे सूझती है?

खुशामदी — हुजूर, आप ही के नमक की कसम, दिन-रात खाने ही की फिक्र रहती है! चार बजे और लौंडी की जान खाने लगे — लहसुन ला, प्याज ला, कबाब पके, तौबा!

हिंदू मुसाहब — हुजूर, हमारे यहाँ भी व्रत रखते हैं लोग, मगर हमने तो हर व्रत के दिन गोस्त चखा।

खुशामदी — शाबाश लाला, शाबाश! वल्लाह, तुम्हारा मजहब पक्का है।

नवाब — पढ़े-लिखे आदमी हैं, कुछ जाहिल-गँवार थोड़े ही हैं।

खोजी — वाह-वाह, हुजूर ने वह बात पैदा की कि तौबा ही भली।

खुशामदी — वाह भई, क्या तारीफ की है। कहने लगे, तौबा ही भली। किस जंगल से पकड़ के आए हो भई? तुमने तो वह बात

कही कि तौबा ही भली। खुदा के लिए जरी समझ-बूझ कर बोला करो।

गप्पी — ऐ हजरत, बोलें क्या, बोलने के दिन अब गए। बरसात हो चुकी न?

खोजी — मियाँ, एक-एक आओ, या कहो, चौमुखी लड़ें। हम इससे भी नहीं डरते। यहाँ उम्र भर नवाबों ही की सोहबत में रहे। तुम लोग अभी कुछ दिन सीखो। आप, और हम पर मुँह आएँ। एक बार हमारे नवाब साहब के यहाँ एक हजरत आए, बड़े बुलक्कड़। आते ही मुझ पर फिकरे कसने लगे। बस, मैं ने जो आड़े हाथों लिया, तो झेंप कर एकदम भागे। मेरे मुकाबले में कोई ठहरे तो भला! ले बस आइए, दो-दो चोंचें हों। पाली से नाकदम न भागो, तो मूँछें मुड़वा डालूँ।

मुसाहब — आइए, फिर आप भी क्या याद करेंगे। बंदे की जबान भी वह है कि कतरनी को मात करे। जबान आगे जाती है, बात पीछे रह जाती है।

खोजी — जबान क्या चर्खा है राँड़ का! खुदा झूठ न बुलाए तो रोटी को हुजूर लोती कहते होंगे।

मुसाहब — जब खुदा झूठ न बुलाए, तब तो। आप और झूठ न बोलें! जब से होश सँभाला, कभी सच बोले ही नहीं। एक दफे

धोखे से सच्ची बात निकल आई थी, जिसका आज तक अफसोस है।

खोजी — और वह उस वक़्त जब आपसे किसी ने आपके बाप का नाम पूछा था और आपने जल्दी में साफ-साफ बता दिया था।

इस पर सब के सब हँस पड़े और खोजी मूँछों पर ताव देने लगे। अभी ये बातें हो ही रही थीं कि एक टुकड़ी आई, और उस पर से एक हसीना उतर पड़ी। वह पतली कमर को लचकाती हुई आई, नवाब का मसनद घसीटा और बड़े ठाट से बैठ गई।

नवाब — मिजाज शरीफ?

आबादी — आपकी बला से!

मुसाहब — हुजूर, खुदा की कसम, इस वक़्त आप ही का जिक्र था।

आबादी — चल झूठे! अली की सँवार तुम पर और तेरे नवाब पर।

मुसाहब — खुदा की कसम।

आबादी — अब हम एक चपत जमाएँगे। देखो नवाब, अपने इन गुर्गों को मना करो, मेरे मुँह न लगा करें।

इतने में एक महरी पाँच-छह बरस के एक लड़के को गोद में लाई।

आबादी — हमारी बहन को लड़का है। लड़का क्या, पहाड़ी मैना है। भैया, नवाब को गालियाँ तो देना। क्यों नवाब, इनको मिठाई दोगे न?

नवाब — हाँ, अभी-अभी।

लड़का — पहले मिठाई लाओ, फिर हम दाली दे देंगे।

अब चारों तरफ से मुसाहिब बुलाते हैं — आओ, हमारे पास आओ। लड़के ने नवाब को इतनी गालियाँ दीं कि तौबा ही भली। नवाब साहब खूब हँसे और सारी महफिल लड़के की तारीफ करने लगी। खुदावंद, अब इसको मिठाई मँगवा दीजिए।

नवाब — अच्छा भई, इनको पाँच रुपए की मिठाई ला दो।

आबादी — ऐ हटो भी! आप अपने रुपए रहने दें। क्या कोई फकीर है?

नवाब — अच्छा, एक अशर्फी ला कर दो।

आबादी — भैया, नवाब को सलाम कर लो।

नवाब — अच्छा, यह तो हुआ, अब कोई चीज सुनाओ। पीलू की कोई चीज हो, तुम्हें कसम है।

आबादी — ऐ हटो भी, आज रोजे से हूँ। आपको गाने की सूझती है।

फर्श पर कई नींबू पड़े हुए थे। बी साहबा ने एक नीबू दाहने हाथ में लिया और दूसरा नींबू उसी हाथ से उछाला और रोका। कई मिनट तक इसी तरह उछाला और रोका कीं। लोग शोर मचा रहे हैं — क्या तुले हुए हाथ हैं, सुभान-अल्लाह! वह बोली कि भला नवाब, तुम तो उछालो। जब जानें कि नीबू गिरने न पाए। नवाब ने एक नीबू हाथ में लिया और दूसरा उछाला, तो तड़ से नाक पर गिरा। फिर उछाला, तो खोपड़ी पर तड़ से।

आबादी — बस, जाओ भी। इतना भी शऊर नहीं है।

नवाब — यह उँगली में कपड़ा कैसा बँधा है?

आबादी — बूझो, देखें, कितनी अक्ल है।

नवाब — यह क्या मुश्किल है, छालियाँ कतरती होगी।

आबादी — हाँ वह खून का तार बँधा कि तौबा। मैंने पानी डाला और कपड़ा बाँध दिया।

मुसाहब — हुजूर, आज इस शहर में इनकी जोड़ नहीं है।

नवाब — भला कभी नवाब खफकानहुसैन के यहाँ भी जाती हो? सच-सच कहना।

आबादी — अली की सँवार उस पर! हज कर आया है। उस मनहूस से कोई इतना तो पूछे कि आप कहाँ के ऐसे बड़े मौलवी बन बैठे?

नवाब — जी, बजा है, जो आपको न बुलाए, वह मनहूस हुआ!

आबादी — बुलाएगा कौन? जिसको गरज होगी, आप दौड़ा आवेगा।

आज़ाद और खोजी यहाँ से चले, तो आज़ाद ने कहा — आप कुछ समझे? यह जोड़ी वही थी, जो रोशनअली खरीद लाए थे।

खोजी — यह कौन बड़ी बात है, इसी में तो रईसों का रुपया खर्च होता है। इनकी सोहबत में जब बैठिए खूब गप्पे उड़ाइए और झूठ इस कदर बोलिए कि जमीन-आसमान के कुलावे मिलाइए। रंग जम जाय, तो दोनों हाथों से लूटिए और सोने की ईंटें बनवा कर संदूक में रख छोड़िए। लेकिन ऐसे माल को रहते न देखा; मालूम नहीं होता, किधर आया और किधर गया।

आज़ाद — यह नवाब बिलकुल चोंगा है।

खोजी — और नहीं तो क्या, निरा चोंच।

आज़ाद — खुदा करे, ये रईसजादे पढ़-लिख कर भले आदमी हो जायँ।

खोजी — अरे, खुदा न करे भाई, ये जाहिल ही रहें तो अच्छा। जो कही पढ़ लिख जायँ, तो फिर इतने भलेमानसों की परवरिश कौन करें?

तीसरे दिन दोनों फिर नवाब की कोठी पर पहुँचे।

खोजी — खुदा ऐसे रईस को सलामत रखे। आज यहाँ सन्नाटा सा नजर आता है; कुछ चहल-पहल नहीं है।

मुसाहब — चहल-पहल क्या खाक हो! आज मुसीबत का पहाड़ टूट पड़ा।

आज़ाद — खुदा खैर करे, कुछ तो फरमाइए।

नवाब — क्या अर्ज करूँ, जब बुरे दिन आते हैं, तो चारों ही तरफ से बुरी ही बुरी बातें सुनने में आती हैं। घर में वजा-हमल (प्रसव) हो गया।

आज़ाद — यह तो कुछ बुरी बात नहीं। वजा-हमल के माने लड़का पैदा होना। यह तो खुशी का मौका है।

मुसाहब — हमारे हुजूर का मंशा इस्कात-हमल (गर्भपात) से था।

खुशामदी — अजी, इसे वजा-हमल भी कहते हैं — लुगत देखिए।

नवाब — अजी, इतना ही होता, तो दिल को किसी तरह समझा लेते। यहाँ तो एक और मुसीबत ने आ घेरा।

मुसाहब — (ठंडी साँस ले कर) खुदा दुश्मन को भी यह दिन न दिखाए।

खुशामदी — हजरत, क्या अर्ज करूँ, हुजूर का एक मेढ़ा मर गया, कैसा तैयार था कि क्या कहूँ, गैंडा बना हुआ।

गप्पी — अजी, यों नहीं कहते कि गैंडे को टकरा देता, तो टें करके भागता। एक दफे मैं अपने साथ बाग ले गया। इत्तिफ़ाक़ से एक राजा साहब पाठे पर सवार बड़े ठाट से आ रहे थे। बंदा मेढ़े को ऐन सड़क पर लिए हुए डटा खड़ा है। सिपाही ने ललकारा कि हटा बकरी को सड़क से। इतना कहना था कि मैं आग ही तो हो गया। पूछा — क्या कहा भाई? फिर तो कहना। सिपाही आँखें नीली-पीली करके बोला — हटा बकरी को सामने से, सवारी आती है। तब तो जनाब, मेरे खून में जोश आ गया। मैंने मेढ़े को ललकारा, तो उसने झपट कर हाथी के मस्तक पर एक टक्कर लगाई। वह आवाज आई। जैसे कोई दरख्त जमीन पर आ रहा हो। बन्दर डाल-डाल चीखने लगे, बन्दरियाँ बच्चों को छाती से लगाए दबक रहीं, तो वजह क्या, उनको मेढ़े पर भेड़िये का धोखा हुआ।

खोजी — मेढ़े को भेड़िया समझा! मगर वल्लाह, आपको तो बेदुम का लंगूर समझा होगा।

गप्पी — बस हजरत, एक टक्कर लगा कर पीछे हटा और बदन को तोल कर छलाँग जो मारता है, तो हाथी के मस्तक पर! वहाँ से फिर उचका, तो पीलवान के माथे पर एक टक्कर लगाई, मगर आहिस्ता से। जरा इस तमीज को देखिएगा, समझा कि इसमें हाथी का सा जोर कहाँ। मगर राजा का अदब किया। अब मै लाख-लाख जोर करता हूँ, पर वह किसकी सुनता है? गुस्सा आया, सो आया, जैसे सिर पर भूत सवार हो गया। छुड़ा कर फिर लपका और एक, दो, तीन, चार-बस, खुदा जाने, इतनी टक्करें लगाई कि हाथी हवा हो गया और चिंघाड़ कर भागा। आदमी पर आदमी गिरते हैं। आप जानिए, पाठे का बिगड़ना कुछ हँसी ठट्ठा तो है नहीं। जनाब, वही मेढ़ा आज चल बसा।

आज़ाद — निहायत अफसोस हुआ।

खोजी — सिन शरीफ क्या था?

नवाब — सिन क्या था, अभी बच्चा था।

मुसाहब — हुजूर, वह आपका दुश्मन था, दोस्त न था।

नवाब — अरे भई, किसका दोस्त, कैसा दुश्मन। उस बेचारे को क्या कसूर? वह तो अच्छा गया; मगर हम सबको जीते-जी मार डाला।

आज़ाद — हजरत, यह दुनिया सराय-फानी है। यहाँ से जो गया, अच्छा गया। मगर नौजवान के मरने का रंज होता है।

मुसाहब — और फिर जवान कैसा कि होनहार। हाथ मल कर रह गए यार, बस और क्या करें।

आज़ाद — मरज क्या था?

मुसाहब — क्या मरज बताएँ। बस, किस्मत ही फूट गई।

खुशामदी — मगर क्या मौत पाई है, रमजान के महीने में, उसकी रूह जन्नत में होगी। तूबा के तले तो घास है, वह चर रहा होगा।

इतने में एक महरी गुलबदन का लहँगा, जिसमें आठ-आठ अंगुल गोट लगी थी, फड़काती और गुलाबी दुपट्टे को चमकाती आई और नवाब के कान में झुक कर बोली — बेगम साहिबा हुजूर को बुलाती हैं।

नवाब — यह नादिरी हुक्म? अच्छा साहब, चलिए। यहाँ तो बेगम और महरी, दोनों से डरते हैं।

नवाब साहब अन्दर गए, तो बेगम ने खूब ही आड़े हाथों लिया — ऐ, मैं कहती हूँ, यह कैसा रोना-धोना है? कहाँ की ऐसी मुसीबत पड़ गई कि आँखें खून की बोटी बन गईं? मेढ़े निगोड़े मरा ही करते

हैं। ऐसी अक्ल पर पत्थर पड़े कि मुए जानवर की जान को रो रहे हैं। तुम्हारी अक्ल को दिन दिन दीमक चाटे जाती है क्या? और इन मुफ्तखोरों ने तो आपको और भी चंग पर चढ़ाया है। अल्लाह की कसम, अगर आपने रंज-वंज किया, तो हम जमीन-आसमान एक कर देंगे। आखिर वह मेढ़ा कोई आपका... बस, अब क्या कहूँ। भीगी बिल्ली बने गटर-गटर सुन रहे हो।

नवाब — तुम्हारे सिर की कसम, अब हम उसका जिक्र भी न करेंगे। मगर जब आपकी बिल्ली मर गई थी, तो आपने दिन-भर खाना नहीं खाया था? अब हमारी दफे आप गुर्राती हैं?

मुसाहब — (परदे के पास से) वाह हुजूर, बिल्ली के लिए गुर्राना भी क्या खूब। वल्लाह, जिले से तो कोई फिकरा आपका खाली नहीं होता।

बेगम — देखो, इन मुए मुसंडों को मना कर दो कि ड्योढ़ी पर न आने पायँ।

दरबान ने जो इतनी शह पाई, तो एक डाँट बताई। बस जी, सुनो, चलते-फिरते नजर आओ। अब ड्योढ़ी पर आने का नाम लिया, तो तुम जानोगे। बेगम साहबा हम पर खफा होती हैं। तुम्हारी गिरह से क्या जाएगा, हम सिपाही आदमी तो नौकरी से हाथ धो बैठेंगे।

मुसाहब सिपाही से तो कुछ न बोले, मगर बड़बड़ाते हुए चले। लोगों ने पूछा — क्यों भई, इस वक़्त नाक-भौं क्यों चढ़ाए हो? बोले — अजी, क्या कहें, हमारे नवाब तो बस, बछिया के बाबा ही रहे! बीवी ने डपट लिया। जन-मुरीद है जी! आबरू का भी कुछ खयाल नहीं। औरतजात, फिर जोरू और उल्टे डाँट बताए और दाढ़ी-मूँछोंवाले हो कर चुपचाप सुना करें। वल्लाह, जो कहीं मेरी बीवी कहती, तो गला ही घोंट देता। यहाँ नाक पर मक्खी तक बैठने नहीं देते।

आज़ाद — भई, गुस्से को थूक दो। गुस्सा हराम होता है। उनकी बीवी हैं, चाहे घुड़कियाँ सुनें, चाहे झिड़कियाँ सहें, आप बीच में बोलनेवाले कौन? और फिर जिसका खाते हो, उसी को कोसते हो! इस पर दावा यह है कि नमकहलाल और कट मारनेवाले लोग हैं।

इतने में नवाब साहब बाहर निकले। अमीरों के दरबार में आप जानिए, एक का एक दुश्मन होता है। सैकड़ों चुगलखोर रहते हैं। हरदम यही फिक्र रहती है कि दूसरे की चुगली खायँ और सबको दरबार से निकलवा कर हमीं-हम नजर आएँ। दो मुसाहबी ने सलाह की कि आज नवाब निकलें, तो इसकी चुगली खायँ और इसको खड़े-खड़े निकलवा दें। नवाब को जो आते देखा, तो चिल्ला कर कहने लगे — सुना भई, बस, अब जो कोई कलमा

कहा, तो हमसे न बनेगी। जिसका खाए, उसी की गाए। यह नहीं कि जिसका खाएँ उसी को गालियाँ सुनाएँ। नवाब साहब को चाहे आप पीठ पीछे जन-मुरीद बताएँ, या भीगी बिल्ली कहें, मगर खबरदार जो आज से बेगम साहबा की शान में कोई गुस्ताखी की, खून ही पी लूँगा।

नवाब — (त्योरियाँ बदल कर) क्या?

हाफिज जी — कुछ नहीं, हुजूर, खैरियत है।

नवाब — नहीं, कुछ तो है जरूर।

रोशनअली — तो छिपाते क्यों हो, सरकार से साफ-साफ क्यों नहीं कह देते? हुजूर, बात यह है कि मियाँ साहब जब देखो तब हुजूर की हजो किया करते हैं। लाख-लाख समझाया, यह बुरी बात है, मियाँ कह कर, भाई कह कर, बेटा कह कर, बाबा कह कर, हाथ जोड़ कर, हर तरह समझाया, मगर यह तो लातों के आदमी हैं, बातों से कब मानते हैं। हम भी चुपके हो रहते थे कि भई, चुगली कौन खाए; मगर आप जनानी ड्योढ़ी से... हुजूर, बस, क्या कहूँ, अब और न कहलाइए।

नवाब — इनको हमने मौकूफ कर दिया।

मियाँ मुसाहब तो खिसके। इतने में मटरगश्त आ पहुँचे और नवाब को सलाम करके बोले — खुदावंद, आज खूब सैर सपाटा किया। इतना घूमा कि टाँगों के टट्टू की गामचियाँ दर्द करने लगीं। कोई इलाज बताइए।

हाफिज जी — घास खाइए या, किसी सालोती के पास जाइए।

नवाब — खूब! टट्टू के लिए घास और सालोती की अच्छी कही। अब कोई ताजा-ताजा खबर बताइए, बासी न हो, गरमागरम।

मटरगश्त — वह खबर सुनाऊँ कि महफिल भर को लोटपोट कर दूँ हुजूर, किसी मुल्क से चंद परीजाद औरतें आई हैं। तमाशाइयों की भीड़ लगी हुई है। सुना, थिएटर में नाचती हैं और एक-एक कदम और एक-एक ठोकर में आशिकों के दिल को पामाल करती हैं। उन्हीं में से एक परीजाद जो दन से निकल गई, तो बस, मेरी जान सन से निकल गई। दरिया किनारे खीमे पड़े हैं। वहीं इंदर का अखाड़ा सजा हुआ है। आज शाम को नौ बजे तमाशा होगा।

नवाब — भई, तुमने खूब मजे की खबर सुनाई। ईजानिब जरूर जायँगे।

इतने में खुदायारखाँ, जिन्हें जरा पहले नवाब ने मौकूफ कर दिया था, आ बैठे और बोले — हुजूर, इधर खुदावंद ने मौकूफी का

हुक्म सुनाया उधर घर पहुँचा, तो जोरू ने तलाक दे दी। कहती है, 'रोटी न कपरा, सेंत-मेत का भतरा।'

आज़ाद — हुजूर, इन गरीब पर रहम कीजिए। नौकरी की नौकरी गई और बीवी की बीवी।

नवाब — हाफिजजी, इधर आओ, कुल हाल ठीक-ठीक बताओ।

हाफिज — हुजूर, इन्होंने कहा कि नवाब तो निरे बछिया के ताऊ ही हैं, जनमुरीद! और बेगम साहबा को इस नाबकार ने वह-वह बातें कहीं कि बस, कुछ न पूछिए! अजीब शैतान आदमी है। आप को यकीन न आए, तो उन्हीं से पूछ लीजिए।

नवाब — क्यों मियाँ आज़ाद, सच कहो, तुमने क्या सुना?

आज़ाद — हुजूर, अब जाने दीजिए, कुसूर हुआ। मैंने समझा दिया है।

हाफिज — यह बेचारे तो अभी-अभी समझा रहे थे कि ओ गीदी, तू अपने मालिक को ऐसी-ऐसी खोटी-खरी कहता है!

नवाब — (दरबान से) देखो जी हुसैन अली, आज से अगर खुदायारखाँ को आने दिया, तो तुम जानोगे। खड़े-खड़े निकाल दो। इसे फाटक में कदम रखने का हुक्म नहीं।

खुदायार — हुजूर, गुलाम से भी तो सुनिए। आज मियाँ रोशनअली ने मुझे ताड़ी पिला दी और यही मनसूबा था कि यह नशे में चूर हो, तो इसे किसी लिम में निकलवा दे। सो हुजूर, इनकी मुराद बर आई। मगर हुजूर, मैं इस दर को छोड़ कर और जाऊँ कहाँ? खुदा आपके बाल-बच्चों को सलामत रखें, यहाँ तो रोआँ-रोआँ हुजूर के लिए दुआ करता है। हुजूर तो पोतड़ों के रईस हैं, मगर चुगलखोरों ने कान भर दिए —

खुदा के गजब से जरा दिल में काँप;
चुगलखोर के मुँह को डसते हैं साँप।

नवाब — अच्छा, यह बात है। खबरदार, आज से ऐसी बेअदबी न करना। जाओ, हमने तुमको बहाल किया।

मुसाहबों ने गुल मचाया। वाह हुजूर, कितना रहम है। ऐसे रईस पैदा काहे को होते हैं। मगर खुदायार खाँ को तो उनकी जोरू ने बचा लिया। न वह तलाक देती, न यह बहाल होते। वल्लाह, जोरू भी किस्मत से मिलती है।

दूसरे दिन नौ बजे रात को नवाब साहब और उनके मुसाहब थिएटर देखने चले।

नवाब — भई, आबादीजान को भी साथ ले चलेंगे।

मुसाहब — जरूर, जरूर उनके बगैर मजा किरकिरा हो जायगा। इतने में फिटन आ पहुँची और आबादीजान छम-छम करती हुई आकर मसनद पर बैठ गईं।

नवाब — वल्लाह, अभी आप ही का जिक्र था।

आबादी — तुमसे लाख दफे कह दिया कि हमसे झूठ न बोला करो। हमें कोई देहाती समझा है!

नवाब — खुदा की कसम, चलो, तुमको तमाशा दिखा लाएँ। मगर मरदाने कपड़े पहन कर चलिए, वर्ना हमारी बेइज्जती होगी।

आबादी ने तिनक कर कहा — जो हमारे चलने में बेआबरूई है, तो सलाम।

यह कह कर वह जाने को उठ खड़ी हुई। नवाब ने दुपट्टा दबा कर कहा, 'हमारा ही खून पिए, जो एक कदम भी आगे बढ़ाए, हमीं को रोए, जो रूठ कर जाय! हाफिज जी, जरा मरदाने कपड़े तो लाइए।

गरज आबादीजान ने अमामा सिर पर बाँधा; चुस्त अंगरखा और कसा हुआ घुटन्ना, टाटबाफी बूट, फुँदना झलकता हुआ, उनके गोरे बदन पर खिल उठा। नवाब साहब उनके साथ फिटन पर सवार हुए और मुसाहबों में कोई बग्घी पर, कोई टम-टम पर, कोई पालकी-गाड़ी पर लदे हुए तमाशा-घर में दाखिल हुए। मगर आबादीजान जल्दी में पाजेब उतारना भूल गई थी। वहाँ पहुँच कर नवाब ने अव्वल दर्जे के दो टिकट लिए और सरकस में दाखिल हुए! लेकिन पाजेब की छम-छम ने वह शोर मचाया कि सभी तमाशाइयों की निगाहें इन दोनों आदमियों की तरफ उठ गईं। जो है, इसी तरफ देखता है; ताड़नेवाले ताड़ गए, भाँपनेवाले भाँप गए। नवाब साहब अकड़ते हुए एक कुर्सी पर जा डटे और आबादीजान भी उसकी बगल में बैठ गईं। बहुत बड़ा शामियाना टँगा हुआ था। बिजली की बत्तियों से चकाचौंध का आलम था। बीचोंबीच एक बड़ा मैदान, इर्द-गिर्द कोई दो हजार कुर्सियाँ। खीमा भर जग-मग कर रहा था। थोड़ी देर में दस-बारह जवान घोड़े कड़कड़ाते हुए मैदान में आए और चक्कर काटने लगे, इसके बाद एक जवान नाजनीन, आफत की परकाला, घोड़े पर सवार, इस शान से आई कि महफिल भर पर आफत ढाई। सारी महफिल मस्त हो गई। वह घोड़े से फुर्ती के साथ उचकी और फिर पीठ पर आ पहुँची। चारों तरफ से वाह-वाह का शोर मच गया। फिर

उसने घोड़े को मैदान में चक्कर देना शुरू किया। घोड़ा सरपट जा रहा था, इतना तेज की निगाह न ठहरती थी। यकायक वह लेडी तड़ से जमीन पर कूद पड़ी। घोड़ा ज्यों का त्यों दौड़ता रहा। एकदम में वह झपट कर फिर पीठ पर सवार हो गई उस पर इतनी तालियाँ बजीं कि खीमा भर गूँज उठा। इसके बाद शेरों की लड़ाई, बन्दरों की दौड़ और खुदा जाने, कितने और तमाशे हुए। ग्यारह बजते तमाशा खत्म हुआ। नवाब साहब घर पहुँचे, तो ठंडी साँसें भरते थे और मियाँ आज़ाद दोनों हाथों से सिर धुनते थे। दोनों मिस वरजिना (तमाशा करनेवाली औरत) की निगाहों के शिकार हो गए।

हाफिज जी बोले — हुजूर, अभी मुश्किल से तेरह-चौदह बरस का सिन होगा, और किस फुर्ती से उचक कर घोड़े की पीठ पर हो रहती थी कि वाह जी वाह। मियाँ रोशनअली बड़े शहसवार बनते थे। कसम खुदा की जो उनके बाप भी कब्र से उठ आएँ, तो यह करतब देख कर होश उड़ जायँ।

नवाब — क्या चाँद सा मुखड़ा है।

आबादीजान — यह कहाँ का दुखड़ा है? हम जाते हैं।

मुसाहब — नहीं हुजूर, ऐसा न फर्माइए, कुछ देर तो बैठिए।

लेकिन आबादीजान रूठ कर चली ही गईं अब नवाब का यह हाल है कि मुँह फुलाए, गम की सूरत बनाए बैठे सर्द आहें खींच रहे हैं। मुसाहब सब बैठे समझा रहे हैं; मगर आपको किसी तरह सब्र ही नहीं आता। अब जिंदगी बवाल है, जान जंजाल है। यह भी फख्र है कि हमारा दिल किसी परीजाद पर आया है, शहर भर में धूम हो जाय कि नवाब साहब को इश्क चर्राया है —

ताकि मशहूर हों हजारों में;
हम भी हैं पाँचवें सवारों में।

मुसाहबों ने सोचा, हमारे शह देने से यह हाथ से जाते रहेंगे, इसलिए वह चाल चलिए कि 'साँप मरे न लाठी टूटे'। लगे सब उस औरत की हजो करने। एक ने कहा — भाई, जादू का खेल था। दूसरे बोले — जी हाँ, मैंने दिन के वक़्त देखा था, न वह रंग, न वह रोगन, न वह चमक-दमक, न वह जोबन; रात की परी रखे की टट्टी है। आखिर मिस वरजिना नवाब की नजरों से गिर गई। बोले — जाने भी दो, उसका जिक्र ही क्या। तब मुसाहबों की जान में जान आई। नवाब साहब के यहाँ से रुख़सत हुए, तो आपस में बातें होने लगीं -

हाफिज जी — हमारे नवाब भी कितने भोले-भाले रईस हैं!

रोशनअली — अजी, निरे बछिया के ताऊ हैं। खुदायारखाँ ने ठीक ही तो कहा था।

खुदायारखाँ — और नहीं तो क्या झूठ बोले थे? हमें लगी-लिपटी नहीं आती। चाहे जान जाती रहे, मगर खुशामद न करेंगे।

हाफिज जी — भई, यह आज़ाद ने बड़ा अड़ंगा मारा है। इसको न पछाड़ा, तो हम सब नजरो से गिर जायँगे।

रोशनअली — अजी, मैं तरकीब बताऊँ, जो पट पड़े, तो नाम न रखूँ। नवाब डरपोक तो हैं ही, कोई इतना जा कर कह दे कि मियाँ आज़ाद इश्तिहारी मुजरिम हैं। बस, फिर देखिए, क्या ताथैया मचती है। आप मारे खौफ के घर में घुस रहे और जनाने में तो कुहराम ही मच जाय। आज़ाद और उनके साथी अफीमची, दोनों खड़े-खड़े निकाल दिए जायँ।

खुशामदी — वाह उस्ताद, क्या तड़ से सोच लेते हो! वल्लाह, एक ही न्यारिये हो।

रोशनअली — फिर इन झाँसों के बगैर काम भी तो नहीं चलता।

हाफिज जी — हाँ, खूब याद आया। परसों तेगबहादुर दक्खिन से आए हैं। बेचारे बड़ी तकलीफ में हैं। हमारे सच्चे दोस्तों में हैं। उनके लिए एक रोटी का सहारा हो जाय, तो अच्छा। आपमें से

कोई छेड़ दे तो जरा, बस, फिर मैं ले उड़ूँगा। मगर तारीफ के पुल बाँध दीजिए। नवाब को झाँसे में लाना कोई बड़ी बात तो है नहीं। थाली के बैंगन हैं।

हाफिज जी — एक काम कीजिए, कल जब सब जमा हो जायँ, तो हम पहले छेड़े कि इस दरबार में हर फन का आदमी मौजूद है और रियासत कहते इसी को हैं कि गुनियों की परवरिश की जाय, शरीफों की क़दरदानी हुजूर ही का हिस्सा है। इस पर कोई बोल उठे कि और तो सब मौजूद हैं, बस, यहाँ एक बिनवटिये की कसर है। फिर कोई कहे कि आजकल दक्खिन से एक साहब आए हैं, जो बिनवट के फन में अपना सानी नहीं रखते। दो चार आदमी हाँ में हाँ मिला दें कि उन्हें वह-वह पेंच याद हैं कि तलवार छीन लें; जरा से आदमी, मगर सामने आए और बिजली की तरह तड़प गए। हम कहेंगे — वल्लाह, आप लोग भी कितने अहमक हैं कि उसे आदमी को हुजूर के सामने अब तक पेश नहीं किया और जो कोई रईस उन्हें नौकर रख ले, तो फिर कैसी हो? बस, देख लेना, नवाब खुद ही कहेंगे कि अभी-अभी लाओ। मगर तेगबहादुर से कह देना कि खूब बाँके बन कर आएँ, मगर बातचीत नरमी से करें, जिसमें हम लोग कहेंगे कि देखिए, खुदावंद, कितनी शराफत है। जिन लोगों को कुछ आता-जाता नहीं, वे ही जमीन पर कदम नहीं रखते।

मुसाहब — मगर क्यों मियाँ, यह तेगबहादुर हिंदू हैं या मुसलमान? तेग बहादुर तो हिंदुओं का नाम भी हुआ करता है। किसी हिंदू के घर मुहर्रम के दिनों में लड़का पैदा हुआ और इमामबख्श नाम रख दिया। हिंदू भी कितने बेतुके होते हैं कि तौबा ही भली। पूछिए कि तुम तो ताजिए को सिजदा करते हो, दरगाहों में शरबत पिलाते हो, इमामबाड़े बनवाते हो, तो फिर मुसलमान ही क्यों नहीं हो जाते।

हाफिज जी — मगर तुम लोगों में भी तो ऐसे गौखे हैं जो चेचक में मालिन को बुलाते हैं, चौराहे पर गधे को चने खिलाते हैं, जनमपत्री बनवाते हैं। क्या यह हिन्दूपन नहीं है? इसकी न कहिए।

उधर मियाँ आज़ाद भी मिस वरजिना पर लट्टू हो गए। रात तो किसी तरह करवटें बदल-बदल कर काटी, सुबह होते ही मिस वरजिना के पास जा पहुँचे। उसने जो मियाँ आज़ाद की सूरत से उनकी हालत ताड़ ली, तो इस तरह चमक-चमक कर चलने लगी कि उनकी जान पर आफत ढाई। आज़ाद उसके सामने जा कर खड़े हो गए; मगर मुँह से एक लफ्ज भी न निकला।

वरजिना — मालूम होता है, या तो तुम पागल हो, या अभी पागलखाने से रस्सियाँ तुड़ा कर आए हो।

आज़ाद — हाँ, पागल न होता, तो तुम्हारी अदा का दीवाना क्यों होता?

वरजिना — बेहतर है कि अभी से होश में आ जाओ, मेरे कितने ही दीवाने पागलखाने की सैर कर रहे हैं। रूस के तीन जनरल मुझ पर रीझे, यूनान में एक रईस लट्टू हो गए, इंगलिस्तान के कितने ही बाँके आहें भरते रहे, जर्मनी के बड़े-बड़े अमीर साये की तरह मेरे साथ घूमा किए, रूम के कई पाशा जहर खाने पर तैयार हो गए। मगर दुनिया में दगाबाजी का बाजार गरम है, किसी से दिल न मिलाया, किसी को मुँह न लगाया। हमारे चाहनेवाले को लाजिम है कि पहले आईने में अपना मुँह तो देखे।

आज़ाद — अब मुझे दीवाना कहिए या पागल, मैं तो मर मिटा —

फिरी चश्मे-बुते-बेपीर देखो;
हमारी गर्दिशे-तकदीर देखो।
उन्हें है तौक मन्नत का गराँ बार;
हमारे पाँव की जंजीर देखो।

वरजिना — मुझे तुम्हारी जवानी पर रहम आता है। क्यों जान देने पर तुले हुए हो?

आज़ाद — जी कर ही क्या करूँगा? ऐसी जिंदगी से तो मौत ही अच्छी।

वरजिना — आ गए तुम भी झाँसे में! अरे मियाँ, मैं औरत नहीं हूँ, जो तुम सो मैं। मगर कसम खाओ कि किसी से यह बात न कहोगे। कई साल से मैंने यही भेष बना रखा है। अमीरों को लूटने के लिए इससे बढ़ कर और कोई तदबीर नहीं। एक-एक चितवन के हजारों पौंड लाता हूँ, फिर भी किसी को मुँह नहीं लगाता। आज तुम्हारी बेकरारी देख कर तुमको साफ-साफ बता दिया।

आज़ाद — अच्छा मर्दाने कपड़े पहन कर मेरे सामने आओ, तो मुझे यकीन आए।

मिस वरजिना जरा देर में कोट और पतलून पहन कर आज़ाद के सामने आई और बोली — अब तो तुम्हें यकीन आया, मेरा नाम टामस हुड है। अगर तुमको वे चिट्ठियाँ दिखाऊँ, जो ढेर की ढेर मेरे पास पड़ी हैं, तो हँसते-हँसते तुम्हारे पेट में बल पड़ जाय। देखिए, एक साहब लिखते हैं —

> जनाजा मेरा गली में उनकी जो पहुँचे ठहरा के इतना कहना;
>
> उठानेवाले हुए हैं मांदे सो थक के काँधा बदल रहे हैं

दूसरे साहब लिखते हैं —

> हम भी कुश्ता तेरी नैरंगी के हैं याद रहे;

ओ जमाने की तरह रंग बदलनेवाले।

एक बार इटली गया, वहाँ अक्सर अमीरों और रईसों ने मेरी दावतें कीं और अपनी लड़कियों से मेरी मुलाकात कराई। मैं कई दिन तक उन परियों के साथ हवा खाता रहा। और एक दिल्लगी सुनिए। एक अमीरजादी ने मेरे हाथों को चूम कर कहा कि हमारे मियाँ तुमसे शादी करना चाहते हैं। वह कहते हैं कि अगर तुमसे उनकी शादी न हुई, तो वह जहर खा लेंगे। यह अमीरजादी मुझे अपने घर ले गई। उसका शौहर मुझे देखते ही फूल उठा और ऐसी-ऐसी बातें कीं कि मैं मुश्किल से अपनी हँसी को जब्त कर सका।

आज़ाद बहुत देर तक टामस हुड से उसकी जिंदगी के किस्से सुनते रहे। दिल में बहुत शरमिंदा थे कि यहाँ कितने अहमक बने। यह बातें दिल में सोचते हुए सराय में पहुँचे, तो फाटक ही के पास से आवाज आई, लाना तो मेरी करौली, न हुआ तमंचा, नहीं तो दिखा देता तमाशा। आज़ाद ने ललकारा कि क्या है भाई, क्या है, हम आ पहुँचे। देखा, तो खोजी एक कुत्ते को दुत्कार रहे हैं।

आज तो निराला समाँ है। गरीब, अमीर, सब रंगरलियाँ मना रहे हैं। छोटे-बड़े खुशी के शादियाने बजा रहे हैं। कहीं बुलबुल के चहचहे, कहीं कुमरी के कहकहे। ये ईद की तैयारियाँ हैं। नवाब साहब की मसजिद का हाल न पूछिए। रोजे तो आप पहले ही चट कर गए थे, लेकिन ईद के दिन धूमधाम से मजलिस सजी। नूर के तड़के से मुसाहबों ने आना शुरू किया और मुबारक-मुबारक की आवाज ऐसी बुलंद की कि फरिश्तों ने आसमान को थाम लिया, नहीं तो जमीन और आसमान के कुलाबे मिल जाते।

मुसाहब — खुदा ईद मुबारक करे। मेरे नवाब जुग-जुग जिए।

हाफिज जी — बरस दिन का दिन मुबारक करे।

रोशनअली — खुदा हुजूर की ईद मुबारक करे।

नवाब — आपको भी मुबारक हो। मगर सुना कि आज तो ईद में फर्क है। भई, आधा तीतर और आधा बटेर नहीं अच्छा।

मुसाहब — हुजूर, फिरंगीमहल के उलमा ने तो आज ही ईद का फतवा लगाया है।

नवाब — भला चाँद कल किसी ने देखा भी?

मुसाहब — हुजूर, पक्के पुल पर चार भिश्तियों ने देखा, राजा के बाजार में हाफिज जी ने देखा और मेरे घर में भी देखा।

नवाब — आपकी बेगम साहब का सिन क्या है? हैं कोई चौदह-पंद्रह बरस की?

मुसाहब ने शरमा कर गरदन झुका ली।

नवाब — आप अपनी बेगम साहबा की उम्र तो छिपाते हैं, फिर उनकी शहादत ही क्या? बाकी रहे हाफिज जी, उनकी आँखें पढ़ते-पढ़ते जाती रहीं; उनको दिन को ऊँट तो सूझता ही नहीं, भला सरेशाम, दोनों वक़्त मिलते, नाखून के बराबर चाँद क्या सूझेगा।

आज़ाद — हजरत, मैंने और मियाँ खोजी ने कल शाम को अपनी आँखों देखा।

नवाब — तो तीन गवाहियाँ मोतबर हुईं। हमारी ईद तो हर तरह आज है।

इतने में फिटन पर से आबादीजान मुसकराती हुई आई।

नवाब — आइए-आइए, आपकी ईद किस दिन है?

आबादीजान — क्या कोई भारी जोड़ा बनवा रखा है? फटे से मुँह शर्म नहीं आती?

नवाब — ईद कुरबाँ है यही दिन तो है कुरबानी का;

आज तलवार के मानिंद गले मिल कातिल।

हमको क्या, यहाँ तो तीसों रोजे चट किए बैठे हैं। दोवक्ता पुलाव उड़ता था। यह फिक्र तो उसको होगी जो दीन का टोकरा सिर पर लादे-लादे फिरते हैं।

आबादी — इन्हीं लच्छनों तो दोजख में जाओगे।

नवाब — खैर, एक तसकीन तो हुई! आपसे तो वहाँ जरूर गले मिलेंगे।

मुसाहब — सुभान-अल्लाह! क्या खूब सूझी, वल्लाह, खूब सूझी! क्या गरमा-गरम लतीफा कहा है।

इतने में चंपा लौंडी अन्दर से घबराई हुई आई। लुट गए, लुट गए! ऐ हुजूर चोरी हो गई। सब मूस ले गया।

नवाब — क्या, क्या, चोरी हो गई! कब?

चंपा — रात को, और कब? इस वक़्त जो बेगम साहबा कोठरी में जाती हैं, तो रोशनी देखते ही आँखों तले अँधेरा छा गया। जा कर देखती हैं, तो एक बिलूका। कपड़े-लत्ते सब तितर-बितर पड़े हैं।

मुसाहब — ऐ खुदावंद, कल तो एक बजे तक यहाँ दरबार गरम रहा। मालूम होता है, कोई पहले ही से घुसा बैठा था।

नवाब — जरी हमारी तलवार तो लाना भई! एहतियात शर्त है। शायद छिपा बैठा हो।

तलवार ले कर घर में गए, तो देखते हैं कि बेगम साहबा एक नाजुक पलंगड़ी पर सिर पकड़े बैठी हैं, और लौंडियाँ समझा रही हैं कि नवाब की सलामती रहे, एक से एक बढ़िया जोड़ा बन जायगा। आप घबराती काहे को हैं? नवाब ने जा कर कोठरी को देखा और तलवार हाथ में लिए पैतरे बदलते हुए घर-भर कर मुआयना किया। फिर बेगम से बोले — हमारा लहू पिए, जो रोए। आखिर यह रोना काहे का; माल गया, गया!

लौंडी — हाँ, सच तो फरमाते हैं। जान की सलामती रहे, माल भी कोई चीज है?

बेगम — आज ईद के दिन खुशियाँ मनाते, डोमनियाँ आतीं, मुबारकबादियाँ गातीं, दिन भर धमा-चौकड़ी मचती, रात को रतजगा करते, सो आज यह नया गुल खिला। मगर गहने की संदूकची छोड़ गया, इतना एहसान किया। अभी तक कलेजा धक-धक कर रहा है।

नवाब — हमारे सिर की कसम, लो उठो, मुँह धो डालो। ईद मनाओ, हमारा ही जनाजा देखे जो चोरी का गम करे। दो हजार कोई बड़ी चीज है!

आखिर बहुत कहने-सुनने पर बेगम साहबा उठीं। लौंडी ने मुँह धुलाया। नवाब साहब ने कहा — तुम्हें वल्लाह, हँस तो दो, वह होंठ पर हँसी आई! देखो मुसकराती हो। वह नाक पर आई।

बेगम साहबा खिलखिला कर हँस पड़ी और घर-भर में कहकहे पड़ने लगे। यों बेगम साहबा को हँसा कर नवाब साहब बाहर निकले, तो मुसाहब, हवाली-मवाली, खिदमतगार गुल मचाने लगे — हुजूर, कुछ तो बतलाइए, यह मामला क्या है? आखिर किधर से चोर आया? कोई कहता है — हुजूर, बेघर के भेदी के चोरी नहीं होती; हमको उस हब्शिन पर शक है। हब्शिन अन्दर से गालियाँ दे रही है — अल्लाह करे झूठे पर बिजली गिरे, आसमान फट पड़े। किसी ने कहा — खुदावंद, चौकीदार की शरारत है। चौकीदार है कि लाखों कसमें खाता है। घर-भर में हरबोंग मचा हुआ है। इतने में एक मसखरे ने बढ़ कर कहा — हुजूर, कसम है कुरान की, हमें मालूम है। भला बे भला, हम पहचान गए, हमसे उड़ कर कोई जायगा कहाँ?

मुसाहब — मालूम है, तो फिर बताते क्यों नहीं?

मसखरा — अजी, बताने से फायदा क्या? मगर मालूम मुझको बेशक है। इसमें सुबहा नहीं। गलत हो, तो हाथ-हाथ बदते हैं।

नवाब — अरे, जिस पर तुझे शक है, उसका नाम बता क्यों नहीं देता।

मुसाहब — बताओ, तुम्हें खुदा की कसम। किस पर तुमको शक है? आखिर किसको ताका है? भई, हमको बचा देना उस्ताद।

मसखरा — (नवाब साहब के कान में) हुजूर, यह किसी चोर का काम है।

मुसाहब — क्या कहा हुजूर, किसका नाम लिया?

नवाब — (हँस कर) आप चुपके से फरमाते हैं, यह किसी चोर का काम है।

लोगों ने हँसते-हँसते पेट में बल पड़ गए। जिसे देखो, लोट रहा है। इतने में रेल के एक चपरासी ने आकर तार का लिफाफा दिया। लिफाफा देखते ही नवाब साहब का चेहरा फक हो गया, हाथ-पाँव फूल गए। बोले — भई, किसी अंगरेजीदाँ को बुलाओ और तार पढ़वाओ। खुदा जाने, कहाँ से गोला आया है।

मुसाहब — क्यों मियाँ जवान, यह तार बड़े साहब के दफ्तर से आया है न?

चपरासी — नाहीं, रेलघर से आया है।

मुसाहब — वाह रे अंगरेजो, अल्लाह जानता हैं, अपने फन के उस्ताद हैं। और सुनिए, जल्दी के लिए अब तार की खबर भी रेल पर आने लगी। वाह रे उस्ताद, अकल काम नहीं करती।

हाफिज जी — खुदा जाने, यह तार बोलता क्योंकर है? आखिर तार के तो जान नहीं होती!

खिदमतगार एक अंगरेजीदाँ को ले आया। तार पढ़ा गया, तो मालूम हुआ कि किसी ने मिरजापुर से पूछा है कि ईद आज हैं, या कल होगी?

मुसाहब — यह तो फरमाइए, भेजा किसने?

बाबू — निसारहुसैन ने।

नवाब — समझ गया। मिरजापुर में हमारे एक दोस्त हैं निसारहुसैन। उन्हीं ने तार भेजा होगा। इसका जवाब किसी से लिखवाइए जिसमें आज ही पहुँच जाय। एक रुपया, दो रुपया, जो खर्च हो, दरोगा से दिलवा दो। और मियाँ नुदरत को तारघर भेजो और कहो कि अगर बाबू कुछ माँगे तो दे देना। मगर इतना कह देना कि खबर जरूर पहुँचे। ऐसा न हो कि कहीं राह में रुक रहे, तो गजब ही हो जाय।

मियाँ नुदरत लखनऊ के आदमी, नखास के बाहर उम्र भर कदम ही नहीं रखा। वह क्या जानें कि तारघर किस बला का नाम है। राह में एक-एक से पूछते जाते हैं — क्यों भई, तारघर कहाँ हैं? आखिरकार एक चपरासी ने कहा — कलकी बरक के सामने है। मियाँ नुदरत घबरा रहे थे, बुरे फँसे यार, तारघर में न जाने क्या वारदात हो। हम अंगरेजी कानून-वानून नहीं जानते। देखें, आज क्या मुसीबत पड़ती है? खैर, खुदा मालिक है। चलते-चलते कोई दो घंटे में ऐशबाग पहुँचे। यहाँ से पता पूछते-पूछते चले हुसैनगंज। वहाँ एक बाबू सड़क पर खड़े थे। उनसे पूछा — क्यों बाबूजी, तारघर कहाँ है? उन्होंने कहा, सामने चले जाओ। फिर पलटे। बाबू जी एक रुपया लाया हूँ और लिखवाना यह है कि आज ईद सुन्नियों की है, कल शियों की होगी। भला वहाँ बैठा रहूँ? जब खबर पहुँच जाय, तब आऊँ? बाबू ने कहा — ऐसा कुछ जरूरी नहीं। खैर, तारघर पहुँचे, तो कलेजा धक-धक कर रहा है कि देखिए जान क्योंकर बचती है। थोड़ी देर फाटक पर खड़े रहे और वहाँ से मारे डर के बैरंग वापस। राह में दोनों रुपए उन्होंने भुनाए और बीबी के लिए पंचमेल मिठाई चँगेल में ले चले। रास्ते में यही सोचते रहे कि नवाब से यों चकमा चलेंगे, यों झाँसा देंगे। चैन करो। उस्ताद, अब तुम्हारे पौ-बारह हैं। हलवाई की दुकान और दादा जी का फातिहा, घर में जो खुश-

खुश घुसे, तो बीवी देखते ही खिल गईं। झपट कर चँगेल उनके हाथ से छीनी। देखा, तो मुँह में पानी भर आया। बरफी पर चाँदी का वरक लगा हुआ, इमर्तियाँ ताजी, लड्डू गरमागरम। पेड़े वह, जो मथुरा के पेड़ों के दाँत खट्टे कर दें। दो-तीन लड्डू और एक बरफी तो देखते ही देखते चट कर गईं। पेड़ा उठाने ही को थीं कि मियाँ नुदरत ने झल्ला कर पहुँचा पकड़ लिया और बोले — अरे, बस भी तो करोगी? एक लड्डू खाया, मैं कुछ न बोला; दूसरा निकाला, मैं चुपचाप देखा किया। तीसरे लड्डू पर हाथ बढ़ाया, बरफी खाई और अब चली पेड़े पर हाथ डालने! अब खाने-पीने की चीज में टोके कौन, इतनी बड़ी लूमड़ हो गईं, मगर बिल्लड़ ही बनी रहीं। मरभुक्खों की तरह मिठाई पर गिर पड़ने के क्या माने? दो प्यालियाँ लाओ, अफीम घोलो, पियो। जब खूब नशे गठें, तो मिठाइयाँ चखो। खुदा की कसम, यह अफीम भी नेमत की माँ का कलेजा है।

बीवी — (तिनक कर) बस, नेमत की माँ का कलेजा तुम्हीं खाओ। खाओ, चाहे भाड़ में जाओ। वाह, आज इतने बड़े त्योहार के दिन मिठाई क्या लाए कि दिमाग ही नहीं मिलता। मोती की सी आब उतार ली। एक पेड़े के खातिर पहुँचा धर के मरोड़ डाला।

इतने में बाहर से आवाज आई — मियाँ नुदरत हैं?

बीवी — सुनते हो, या कानों में ठेठियाँ हैं? एक आदमी गला फाड़-फाड़ कर चिल्ला रहा है; दरवाजे को चूल से निकाले डालता है। बोलते क्यों नहीं? कहीं चोरी करके तो नहीं आए हो?

नुदरत — जरी आहिस्ते-आहिस्ते बातें करो।

बीवी — ऐ है, सच कहिएगा। हम तो खूब गुल मचाएँगे। मामा, हम परदे में हुए जाते हैं। जा कर उनसे कह दो — घर में घुसे बैठे हैं।

नुदरत — नहीं, नहीं, यह दिल्लगी अच्छी नहीं। कह दो, नवाब साहब के यहाँ गए हैं।

मामा — (बाहर जा कर) मियाँ, क्या गुल मचा रहे हो? मैं तो समझी, कहीं से दौड़ आई है। वह तो सवेरे नवाब साहब के यहाँ गए थे, अभी आए नहीं जो मिलें, तो भेज दीजिएगा।

पुकारनेवाला — यह कैसी बात? नवाब साहब के यहाँ से तो हम भी अभी-अभी आ रहे हैं। वहाँ ढुँढ़स मची हुई है कि चल कहाँ दिए। अच्छा भाभी साहब से कहो, आज ईद के दिन दरवाजे पर आए हैं, कुछ सेवइयाँ-वेवइयाँ तो खिलाएँ। हम तो बेतकल्लुफ आदमी हैं। तकाजा करके दावत लेते हैं।

मामा ने अन्दर से ले जा कर बाहर बरामदे में एक मोढ़ा डाल दिया। उधर मियाँ-बीवी में तकरार होने लगी।

मियाँ — अजी, टाल भी दो। ऐसे-ऐसे मुफ्तखोरे बहुत आया करते हैं। मामा, तुम भी पागल ही रहीं। मोढ़ा डालने की भला क्या जरूरत थी?

बीवी — ऐ वाह! हम तो जरूर खातिर करेंगे। यह अच्छा कि नवाब के यहाँ जा कर हमको गँवारिन बनाए? इसमें तुम्हारी नाक न कटेगी!

बीवी ने एक तश्तरी में पाँच-छह डलियाँ मिठाई की करीने से लगाकर उस पर रेशमी हरा रूमाल ढक दिया और मामा से कहा — जाओ, दे आओ। मियाँ नुदरत की रूह पर सदमा हुआ कि चार-पाँच डली तो बीबी बातें करते-करते चख गईं और पाँच-छह अब निकल गईं। गजब ही हो गया। मामा मिठाई ले कर चली, तो ड्योढ़ी में दो लड्डू चुपके से निकाल कर एक ताक में रख दिए। इत्तिफ़ाक़ से एक छोकरा देख रहा था। जैसे मामा बाहर गई, वैसे ही दोनों लड्डू मजे से खा गया। चलिए, चोर के घर में मोर पैठा। मुसाहब ने रूमाल हटाया, तो कहा — वाह, भाभी साहब तो भाई साहब से भी बढ़ कर निकलीं। यह हाथी के मुँह में जीरा। खैर, पानी तो लाओ। हजरत ने मिठाई खाई और पानी

पिया, तो पान की फर्माइश की। बीवी ने अपने हाथ से दो गिलौरियाँ बनाईं। मुसाहब ने चखी, तो हुक्का माँगा। नुदरत ने कहा — देखा न, हाथ देते ही पहुँचा पकड़ लिया। मिठाई लाओ, पान खिलाओ, पानी पिलाओ, हुक्का भर लाओ; गोया बाबा के घर में बैठे हैं। इन मूजियों की तो कब्र तक से मैं वाकिफ हूँ। और इस पर क्या मौकूफ है। नवाब के यहाँ जितने हैं, सब गुरगे, मुफ्तखोरे, पराया माल ताकनेवाले। मामा, जा कर कह दो, हुक्का यहाँ कोई नहीं पीता। लेकिन बीवी ने हुक्का भरवा कर भेज ही दिया। जब पी चुके, तो बाहर से आवाज दी कि मामा, चारपाई यहाँ मौजूद हैं। जरा दरी या गलीचा दे जाइएगा। अब ठीक दोपहर में कौन इतनी दूर जाय। जरा कमर सीधी कर लें। तब तो मियाँ नुदरत खूब ही झल्लाए। आखिर शैतान का मंसूबा क्या है? देख रहा है कि मालिक घर में नहीं है; फिर यह दरवाजे पर चारपाई पर सोना क्या माने? और मुझसे-इससे कहाँ का ऐसा याराना है कि आते ही भाभी साहब से फरमाइशें होने लगीं।

इधर मामा ड्योढ़ी में गई कि लड्डू चुपके-चुपके खाएँ। ताक में ढूँढ़ मारा, पर लड्डुओं का कहीं पता नहीं। छोकरे ने पूछा — मामा, वहाँ क्या ढूँढ़ रही हो? वह तो चूहा खा गया। सच कहना, कैसी हुई? चूहे ने तुम्हारे अच्छे कान कतरे?

मुसाहब — मामा जी, जरी दरी दे जाइए।

मामा — यहाँ दरी-वरी नहीं है।

मुसाहब — हम जानते हैं, बड़े भाई कहीं इस वक़्त ईद मिलने गए हैं। बस, समझ जाइए।

नुदरत ने कहा — खुश हुई? कुछ समझीं भी? अब यह इस फिक्र में हैं कि तुमको हमको लड़वा दें। और मिठाई भेजो! गिलौरियाँ चखाओ!

जब मियाँ मुसाहब चंपत हुए, तो मियाँ नुदरत भी चँगेल की तरफ बढ़े और अफीम की पीनक में खूब छक कर मिठाई चखी। फिर चले नवाब के घर। कदम-कदम पर फिकरे सोचते जाते हैं। बारे दाखिल हुए, तो लोगों ने आसमान सिर पर उठाया।

नवाब — शुक्र है, जिंदा तो बचे! यह आप अब तक रहे कहाँ आखिर?

मुसाहब — हुजूर, तारघर तो यह सामने है।

हाफिज — हाँ, और नहीं तो क्या? बात करते तो आदमी पहुँचता है।

रोशनअली — कौन, मुझसे कहिए, तो इतनी देर में अठारह फेरे करूँ।

नुदरत — हाँ भाई, घर बैठे जो चाहे कह लो, कोई जाय, तो आटे-दाल का भाव मालूम हो। चलते-चलते आँधी-रोग आ जाता है। बकरी मर गई और खानेवाले को मजा ही न आया। आप लोग थान के टर्रे हैं। कहने लगे, दो कदम पर है। यहाँ से गए सआदतगंज, वहाँ से धनिया महरी के पुल, वहाँ से ऐशबाग, वहाँ से गनेशगंज, वहाँ से अमीनाबाद होते हुए तारघर पहुँचे। दम टूट गया, शल हो गए, मर मिटे, न खाना, न दाना। आप लोग बैठे-बैठे यहाँ जो चाहे फरमायें, कहने और करने में फर्क है।

नवाब — तो इस ठाँय-ठाँय से वास्ता, यह कहिए, खबर पहुँची कि नहीं?

नुदरत — खुदावंद, भला मैं इसका क्या जवाब दूँ? खबर दे आया। बाबू ने मेरे सामने खट-खट किया, साहब ने रुपए लिए, चपरासियों को इनाम दिया। चार रुपए अपनी जेब से देने पड़े। वह तो कहिए, वहाँ मेरे एक जान-पहचान के निकल आए, नहीं बैरंग वापस आना पड़ता।

नवाब — खैर, तसकीन हुई। अब फरमाइए, इतनी देर कहाँ हुई?

नुदरत — खुदावंद, जल्दी के मारे बग्घी किराए करके गया था; लौटती बार उसने वह पलटा खाया कि मैं तो समझा, बस, कुचल ही गया। मगर खुदा कारसाज है, गिरा तो, लेकिन बच गया।

कोई दो घंटे तक कोचवान बम ही दुरुस्त किया। इससे देर हुई। हुजूर, अब घर जाता हूँ।

नवाब — अरे भई, खाना तो खाते जाओ। अच्छा, चार रुपए वे हुए और बग्घी के किराए के भी कोई तीन रुपए हुए होंगे? सात रुपए दारोगा से ले लो।

नुदरत — नहीं खुदावंद झूठ नहीं बोलूँगा। चाहे फाका करूँ, मगर कहूँगा सच ही। यही तो गुलाम में जौहार है। दो रुपए और पाँच पैसे दिए। देखिए, खुदा को मुँह दिखाना है।

नवाब — दारोगा, इनको दस रुपए दे दो। सब बोलने का कुछ इनाम भी तो दूँ।

30

दूसरे दिन सुबह को नवाब साहब जनानखाने से निकले, तो मुसाहबों ने झुक-झुक कर सलाम किया। खिदमतगार ने चाय की साफ-सुथरी प्यालियाँ और चमचे ला कर रखे। नवाब ने एक-एक प्याली अपने हाथ से मुसाहबों को दी और सबने गरम-गरम

दूधिया चाय उड़ानी शुरू की। एक-एक घूँट पीते जाते हैं और गप भी उड़ाते जाते हैं।

मुसाहब — हुजूर, कश्मीरी खूब चाय तैयार करते हैं।

हाफिज — हमारी सरकार में जो चाय तैयार होती है, सारी खुदाई में तो बनती न होगी। जरा रंग तो देखिए। हिंदू भी देखे, तो मुँह में पानी भर आए।

रोशनअली — कुरबान जाऊँ हुजूर, ऐसी चाय तो बादशाह के यहाँ भी नहीं बनती थी। खुदा जाने, मियाँ रहीम कहाँ से नुस्खा पा गए। मगर जरा तल्खी बाकी रह जाती है।

रहीम — सुभान अल्लाह! आप तो बादशाहों के यहाँ चाय पी चुके हैं और इतना भी नहीं जानते कि चाय में तल्खी न हो, तो वह चाय ही नहीं।

खिदमतगार — खुदावंद, शिवदीन हलवाई हाजिर है।

नवाब — दारोगा जी, इस हलवाई का हिसाब कर दो, और समझा दो कि अगर खराब या सड़ी हुई बासी मिठाई भेजी, तो इस सरकार से निकाल दिया जायगा। परसों बरफी खराब भेजी थी। घर में शिकायत करती थीं।

दारोगा — सुनते हो शिवदीन? देखो, सरकार क्या फरमाते हैं? खबरदार जो सड़ी-गली मिठाई भेजी। अब तुमने नमकहरामी पर कमर बांधी है! खड़े-खड़े निकाल दिए जाओगे।

हलवाई — नहीं खुदावंद, अव्वल माल दूँ, अव्वल। चाशनी जरा बहुत आ गई, तो दाना कम पड़ा। कड़ी हो गई। चाशनी की गोली देर में देखी, नहीं तो इस दुकान की बरफी तो शहर भर में मशहूर हैं। वह लज्जती होती है कि ओठ बँधने लगते हैं।

दारोगा — चलो, तुम्हारा हिसाब कर दें। ले बतलाओ, कितने दिन से खर्च नहीं पाया, और तुम्हारा क्या आता है?

हलवाई — अगले महीने में 25 रु. और कुछ आने की आई थी। और अबकी 10 तारीख अंगरेजी तक कोई सत्तर या अस्सी की।

दारोगा — अजी, तुम तो गद्देबाजियाँ करते हो! सत्तर या अस्सी, सौ या पाँच सौ; उस महीने में उतनी और इस महीने में इतनी। यह बखेड़ा तुमसे पूछता कौन है? हमें तो बस, गठरी बता दो, कितना हुआ?

हलवाई — अच्छा, हिसाब तो कर लूँ, (थोड़ी देर के बाद) बस, 142 रुपए और दस आने दीजिए। चाहे हिसाब कर लीजिए, बोलता जाऊँ।

दारोगा — अजी, तुम कोई नए तो हो नहीं। बताओ इसमें यारों का कितना है? सच बोलना लाला! (पीठ ठोंक कर) आओ, वारे-न्यारे हों। क्यों, है न?

हलवाई — बस, सौ हमको दे दो, बयालीस तुम ले लो। सीध-सीधा मैं तो यह जानता हूँ।

दारोगा — अच्छा, मंजूर। मगर बयालीस के बावन करो। एक सौ तुम्हारे, बावन हमारे। सच कहना, दोनों महीनों में चालीस की मिठाई आई होगी या कम?

हलवाई — अजी हुजूर; अब इस भेद से आपको क्या वास्ता? आपको आम खाने से गरज है, या पेड़ गिनने से। सच-सच यह कि सब मिला कर अड़तीस रुपए की आई होगी। मुल वजन में मार देता हूँ। सेर भर लड्डू माँग भेजे, हमने पाव सेर कम कर दिए।

दारोगा — ओह, इसकी न कहिए, यहाँ अंधेर-नगरी चौपट-राज है। यह दिमाग किसे कि तौलने बैठे। मियाँ लखलुट, बीवी उनसे बढ़ कर। दस के पचास लो, और सेर के तीन पाव भेजो। मजे हैं। अच्छा, ये सौ रुपए गिन लो और एक सौ बावन की रसीद हमें दो।

हलवाई — यह मोल-तोल है। सौ और पाँच हम लें और बाकी हजूर को मुबारक रहें।

अब सुनिए, मियाँ खोजी ने ये सारी बातें सुन लीं। जब शिवदीन चला गया, तो बढ़ कर बोले — अजी, हजरत, आदाबरज है। कहिए, इसमें कुछ यारों का भी हिस्सा है? या बावन के बावन खुद ही हजम कर जाओगे और डकार तक न लोगे? अब हमारा और आपका साझा न होगा, तो बुरी ठहरेगी।

दारोगा — क्या? किससे कहते हैं आप! यह साझा कैसा! भंग तो नहीं पी गए हो कहीं? यह क्या वाही-तबाही बक रहे हो? यहाँ बेहूदा बकने वालों की जबान खींच ली जाती है। तुम टुकड़गदों को इन बातों से क्या वास्ता?

खोजी — (कमर कस कर) ओ गीदी, कसम खुदा की, इतनी करौलियाँ भोंकूँगा कि याद करो। मुझे भी कोई ऐसा-वैसा समझे हो? मैं आदमी को दम के दम में सीधा बना देता हूँ। किसी और भरोसे न भूलिएगा। क्या खूब अड़तीस के डेढ़ सौ दिलवाए, पचास खुद उड़ाए और ऊपर से गुर्राता है मर्दक। अभी तो नवाब साहब से सारा कच्चा चिट्ठा जड़ता हूँ। खड़े-खड़े न निकाल दिए जाओ, तो सही। हम भी तमाम उम्र रईसों की ही सोहबत में रहे हैं, घास नहीं छीला किए हैं। बाएँ हाथ से बीस रुपए इधर रख

दीजिए। बस, इसी में खैर है; वर्ना उलटी आँते गले पड़ेंगी। अब सोचते क्या हो? जरा चीं-चपड़ करोगे, तो कलई खोल दूँगा। बोलो, अब क्या राय है? बीस रुपए से गम खाओगे, या जिल्लत उठाओगे? अभी तो कोई कानोंकान नहीं सुनेगा, पीछे अलबत्ता बड़ी टेढ़ी खीर है।

दारोगा — वाह री फूटी किस्मत! आज सुबह-सुबह बोहनी अच्छी हुई थी, अच्छे का मुँह देख कर उठे थे; मगर हजरत ने अपनी मनहूस सूरत दिखाई। अब बावन में से आपको बीस रुपए, रकम की रकम निकाल दें, तो हमारे पास क्या खाक रहे? और हाँ, खूब याद आया, बावन किस मरदूद को मिले। सैंतालिस ही तो हमारे हत्थे चढ़े। दस तुम भी लो भई। (गर्दन में हाथ डाल कर) मान जाओ उस्ताद। हमें जरूरत थी इससे कहा, वरना क्या बात थी। और फिर हम-तुम जिंदा हैं तो सैकड़ों लुटेंगे मियाँ, ये हाथ दोनों लूटने ही के लिए हैं, या कुछ और?

खोजी — दस में तो हमारा पेट न भरेगा। अच्छा भई, पंद्रह दो।

आखिर दारोगा ने मजबूर हो कर पंद्रह रुपए मियाँ खोजी को नजर किए और दोनों आदमी जाकर महफिल में शरीक हुए। थोड़े ही देर बैठे होंगे कि चोबदार ने आकर कहा — हुजूर, वह

बजाज आया है, जो विलायती कपड़ा बेचता है। कल भी हाजिर हुआ था; मगर उस वक़्त मौका न था, मैंने अर्ज न किया।

नवाब — दारोगा से कहो, मुझे क्या घड़ी-घड़ी आ के परचा जड़ते हो। (दारोगा से) जाओ भई, उसको भी लगे हाथों भुगता ही दो। झंझट क्यों बाकी रह जाय। कुछ और कपड़ा आया है विलायत से? आया हो, तो दिखाओ; मगर बाबा मोल की सनद नहीं।

बजाज — अब कोई दूज तक सब कपड़ा आ जायगा। और, हुजूर ऐसी बातें कहते हैं! भला, इस ड्योढ़ी पर हमने कभी मोल-तोल की बात की है आज तक? और यों तो आप अमीर हैं, जो चाहे कहें, मालिक हैं हमारे।

दारोगा और बजाज चले। जब दारोगा साहब की खपरैल में दोनों जा कर बैठे, तो मियाँ खोजी भी रेंगते हुए चले और दन से मौजूद! दारोगा ने जो इनको देखा, तो काटो तो बदन में लहू नहीं; मुर्दनी सी चेहरे पर छा गई! चुप! हवाइयाँ उड़ी हुई। समझे कि यह खोजी एक ही काइयाँ है। इससे खुदा पनाह में रखे। सुबह को तो मरदूद ने हत्थे ही पर टोक दिया, और पंद्रह पटीले। अब जो देखा कि बजाज आया, तो फिर मौजूद। आज रात को इसकी टाँग न तोड़ी हो, तो सही। मगर फिर सोचे कि गुड़ से जो मरे, तो जहर क्यों दें। आओ इस वक़्त चुनीं-चुनाँ करें, फिर समझा

जायगा। बोले — आओ भाईजान, इधर मोढ़े पर बैठो। अच्छी तरह भई? हुक्का लाओ, आपके लिए।

बजाज सदर-बाजार का रहने वाला एक ही उस्ताद था। ताड़ गया कि इसके बैठने से मेरा और दारोगा का मतलब खब्त हो जायगा? किसी तदबीर से इसको यहाँ से निकालना चाहिए। पहले तो कुछ देर दारोगा से इशारों में बातें हुआ कीं। फिर थोड़ी देर के बाद बजाज ने कहा — मियाँ साहब, आपको यहाँ कुछ काम हैं?

खोजी — तुम अपनी कहो लालाजी, हमसे क्या वास्ता?

बजाज — तुम यहाँ से उठ जाओ। उठते हो कि मैं दूँ एक लात ऊपर से।

खोजी — ओ गीदी, जबान सँभाल; नहीं तो इतनी भोंकूँगा कि खून-खराब हो जायगा।

बजाज — उठूँ फिर मैं?

खोजी — उठ के तमाशा भी देख ले!

बजाज — बेधा है क्या?

खोजी — वल्लाह, जो बे-ते किया, तो इतनी करौलियाँ...

खोजी कुछ और कहने ही को थे कि बजाज ने बैठे-बैठे मुँह दबा दिया और एक चपत जमाई। चलिए, दोनों गुँथ गए। अब दारोगा जी को देखिए। बीच बचाव किस मजे से करते हैं कि खोजी के दोनों हाथ पकड़ लिए और कमर दबाए हुए हैं और बजाज ऊपर से इनको ठोक रहा है। दारोगा साहब गला फाड़-फाड़ कर गुल मचाए जाते हैं कि मियाँ, क्यों लड़े मरते हो? भई, धौल-धप्पे की सनद नहीं। खोजी अपने दिल में झल्ला रहे हैं कि अच्छे मीर फैसली बने। इतने में किसी ने नवाब साहब से जा कर कह दिया कि मियाँ खोजी, दारोगा और बजाज तीनों गूँथे पड़े हैं। उसी वक़्त बजाज भी दौड़ा हुआ आया और फरियाद की कि हुजूर, हम आपके यहाँ तो सस्ता माल देते हैं, मगर यह खोजी हिसाब-किताब के वक़्त सर पर सवार हो गए। लाख-लाख कहा कि भई, हम अपने माल का भाव तुम्हारे सामने न बताएँगे; मुल इन्होंने हारी मानी न जीती, और उल्टे पंजे झाड़ के चित-पट की ठहराई। कमजोर, मार खाने की निशानी। मैंने वह गुद्दा दिया कि छठी का दूध याद करते होंगे। दारोगा भी रोते-पीटते आए कि दोहाई है, चारपाई की पट्टी तोड़ डाली, खासदान तोड़ डाला और सैकड़ों गालियाँ दीं।

मियाँ खोजी ऐसे धपियाए गए और इतनी बेभाव की पड़ी कि बस, कुछ पूछिए नहीं। नवाब ने पूछा — आखिर झगड़ा क्या था?

दारोगा — हुजूर यह खोजी बड़े ही तीखे आदमी हैं। बात-बात पर करौली भोंकते हैं, और गीदी तो तकिया-कलाम है। इस वक़्त लाला बलदेव ही से भिड़ पड़े। वह तो कहिए, मैंने बीच-बचाव कर दिया। वर्ना एक-आध का सिर ही फूट जाता।

बजाज — बड़े झल्ले आदमी हैं। दारोगा जी बेचारे न आ जाते तो कपड़े-वपड़े फाड़ डालते।

खोजी — तो अब रोते काहे को हो? अब यह दुखड़ा ले के क्या बैठे हो।

नवाब — लप्पा-डग्गी तो नहीं हुई।

खोजी — नहीं हुजूर, शरीफों में कहीं हाथा-पाई होती है भला? हमने इनको ललकारा, इन्होंने हमको डाँटा, मगर कुंदे तौल-मौल कर दोनों रह गए। भले-मानस पर हाथ उठाना कोई दिल्लगी है!

खैर, मियाँ खोजी तो महफिल में जा कर बैठे और उधर लाला बलदेव और दारोगा साहब हिसाब करने गए।

दारोगा — हाँ भाई, बताओ।

लाला — अजी बताएँ क्या, जो चाहे दिलवा दो।

दारोगा — पहले यह बताओ, तुम्हारा आता क्या है? सौ, दो सौ, दस, बीस, पचास जो हो, कह दो।

लाला — दारोगा जी, आजकल कपड़ा बड़ा महँगा है।

दारोगा — लाला, तुम गिरे गावदी ही रहे। हमको महँगे-सस्ते क्या वास्ता? हमको तो अपने हक से मतलब। तुम तो इस तरह कहते हो, जैसे हमारी गिरह से जाता है।

लाला — फिर तो 753 निकालिए।

दारोगा — बस, अरे मियाँ, अबकी इतने दिनों में सात-साढ़े सात सौ ही की नौबत आई?

लाला — जी हाँ, आप से कुछ परदा थोड़े ही है। दो सौ और पचपन रुपए का कपड़ा आया है; अन्दर-बाहर, सब मिला कर। मगर परसों नवाब साहब कहने लगे। कि अबकी तो तुम्हारा कोई पाँच-छह सौ का माल आया होगा। मैंने कहा कि ऐसे मौके पर चूकना गधापन है। वह तो पाँच-छह सौ बताते थे, मेरे मुँह से निकल गया कि हिसाब किए से मालूम होगा। मुल कोई सात-आठ सौ का आया होगा। तो अब 753 ही रखिए। इसमें हमारा और आपका समझौता हो जायगा।

दारोगा — अजी, समझौता कैसा, हम-तुम कुछ दो तो है नहीं; और हमारे-तुम्हारे तो बाप-दादा के वक़्त से दोस्ताना है। बोलो, कितने पर फैसला होता है?

लाला — बस, दो सौ छब्बीस तो हमको एक दीजिए और तीन सौ और दीजिए। इसके बाद बढ़े सो आपका।

दारोगा — (हँस कर) अच्छा भई, मंजूर। हाथ पर हाथ मारो। मगर 753 रु. 6 आ. की रसीद लिखो, जिनमें मालूम हो कि आने-पाई से हिसाब लैस है।

लाला — बड़े काइयाँ हो दारोगा जी! अजी, 227 रु. 6 आ. कुल आपका?

खोजी — बल्कि आपके बाप का।

यह आवाज सुन कर दोनों चौंके। इधर-उधर देखते हैं, कोई नजर ही नहीं आता। दारोगा के हवास गायब। बजाज के बदन में खून का नाम नहीं। इतने में फिर आवाज आई — कहो, कुछ यारों का भी हिस्सा है? तब दोनों के रहे-सहे होश और भी उड़ गए।

अब सुनिए — मियाँ खोजी खपरैल के पिछवाड़े एक मोखे की राह से सब सुन रहे थे। जब कुल कारवाई खत्म हो गई, तो आवाज लगाई। खैर, दारोगा और लाला बलदेव ने उनको ढूँढ़ निकाला और लल्लो-पत्तो करने लगे।

बजाज — हमारा कसूर फिर माफ कीजिए।

दारोगा — अजी, ये ऐसे आदमी नहीं हैं। ये बेचारे किसी से लड़ने-भिड़नेवाले नहीं। बाकी लड़ाई-झगड़ा तो हुआ ही करता है। दिल में कुदरत आई और साफ हो गए।

खोजी — ये बातें तो उम्र भर हुआ करेंगी। मतलब की बात फरमाइए। लाओ कुछ इधर भी।

दारोगा — जो कहो।

खोजी — सौ दिलवाइए पूरे। एक सौ लिए बगैर न टलूँगा। आज तुम दोनों ने मिल कर हमारी खूब मरम्मत की है।

दारोगा — यह तीस रुपए तो एक लीजिए और यह दस का नोट। बस। और जो अलसेट कीजिए, तो इससे भी हाथ धोइए।

खोजी — खैर लाइए, चालीस ही क्या कम हैं।

दारोगा — हम समझते थे कि बस, हमीं-हम हैं; मगर आप हमारे भी गुरु पैदा हुए।

मियाँ खोजी और दारोगा साहब हाथ में हाथ दिए जा कर महफिल में बैठे, गोया दोनों में दाँत-काटी रोटी थी। मगर दारोगा का बस चलता, तो खोजी को काले पानी ही भेज देते, या जिंदा चुनवा देते। महफिल में लतीफे उड़ रहे थे।

नुदरत — हुजूर, आज एक आदमी ने हमसे पूछा कि अगर दरिया में नहाए, तो मुँह किस तरफ रखें। हमने कहा कि भाई, अगर अक्लमंद हो, तो अपने कपड़ों की तरफ रुख रखे, वर्ना चोर उठा ले जायगा और आप गोते ही खाते रह जायँगे।

हाफिज — पुराना लतीफा है।

आज़ाद — एक हकीम ने कहा कि जब तक मैं बिन ब्याहा था, तो बीवीवाले गूँगे हो गए थे और अब जो शादी कर ली, तो एक-एक मुँह में सौ-सौ जबानें हैं।

इतने में गंधी ने आकर सलाम किया।

नवाब — दारोगा जी, इनको भी भुगता दो।

दारोगा और गंधी खपरैल में पहुँचे, तो दारोगा ने पूछा — कितना इत्र आया?

गंधी — देखिए, आपके यहाँ तो लिखा होगा।

दारोगा — हाँ, लिखा तो है। मगर खुदा जाने वह कागज कहाँ पड़ा है। तुम अपनी याद से जो जी में आए, बता दो।

गंधी — 35 रु. तो कल के हुए, और 80 रु. उधर के। बेगम साहब ने अब की इत्र की भरमार ही कर दी। कराबे के कराबे खाली कर दिए।

दारोगा — अच्छा भई, फिर इसमें किसी के बाप का क्या इजारा। शौकीन हैं, रईसज़ादी हैं, अमीर हैं। इत्र उन्हीं के लिए है, या हमारे आपके लिए? अच्छा, तो कुल 115 रु. हुए न! तुम भी क्या याद करोगे। लो, सौ ये हैं और तीन नोट पाँच-पाँच के।

गंधी — अच्छा लीजिए, यह इत्र की शीशी आपके लिए लाया हूँ।

दारोगा — किस चीज का है?

गंधी — सूँघिए, तो मालूम हो। खुदा जानता है, 10 रु. तोले में झड़ाझड़ उड़ा जा रहा है।

मियाँ गंधी उधर रवाना हुए, इधर दारोगा जी खुश-खुश चले, तो आवाज आई कि उस्ताद, इस शीशी में यारों का भी हिस्सा है। पीछे फिर के देखते हैं, तो मियाँ खोजी घूमते हुए चले आते हैं।

दारोगा — यार, तुमने तो बेतरह पीछा किया।

खोजी — अब की तो तुमको कुछ न मिला। मगर इस इत्र में से आधी शीशी लेंगे।

दारोगा — अच्छा भई, ले लेना। तुमसे तो कोर ही दबी है। दोनों आदमी जा कर महफिल में फिर शरीक हो गए।

31

एक दिन पिछले पहर से खटमलों ने मियाँ खोजी के नाक में दम कर दिया। दिन भर का खून जोंक की तरह पी गए। हजरत बहुत ही झल्लाए। चीख उठे, लाना करौली, अभी सबका खून चूस लूँ। यह हाँक हो औरों ने सुनी, तो नींद हराम हो गई। चोर का शक हुआ। लेना-देना, जाने न पाए। सराय भर में हुल्लड़ मच गया। कोई आँखें मलता हुआ अँधेरे में टटोलता है, कोई आँखें फाड़-फाड़ कर अपनी गठरी को देखता है, कोई मारे डर के आँखें बन्द किए पड़ा है। मियाँ खोजी ने जो चोर-चोर की आवाज सुनी, तो खुद भी गुल मचाना शुरू किया — लाना मेरी करौली। ठहर! मैं भी आ पहुँचा। पीनक में सूझ गई कि चोर आगे भागा जाता है, दौड़ते-दौड़ते ठोकर खाते हैं तो अररर धों! गिरे भी तो कहाँ, जहाँ कुम्हार के हंडे रखे थे। गिरना था कि कई हंडे चकनाचूर हो गए। कुम्हार ने ललकारा कि चोर-चोर। यह उठने ही को थे कि उसने आकर दबोच लिया और पुकारने लगा — दौड़ो-दौड़ो, चोर पकड़ लिया। मुसाफिर और भठियारे सब के सब दौड़ पड़े। कोई डंडा लिए है, कोई लट्ठ बाँधे। किसी को क्या मालूम कि यह चोर है, या मियाँ खोजी। खूब बेभाव की पड़ी। यार लोगों ने ताक-ताक कर जन्नाटे के हाथ लगाए। खोजी की सिट्टी-पिट्टी भूल

गई, न करौली याद रही, न तमंचा। जब खूब पिट पिटा चुके, तो एक मुसाफिर ने कहा — भई, यह तो खोजी मालूम होते हैं। जब चिराग जलाया गया, तो आप दबके हुए नजर आए। मियाँ आज़ाद से किसी ने जा कर कह दिया कि तुम्हारे साथ खोजी चोरी की इल्लत में फँसे हैं, किसी मुसाफिर की टोपी चुराई थी। दूसरे ने कहा — नहीं-नहीं, यह नहीं हुआ। हुआ यह कि एक कुम्हार की हाँडियाँ चुराने गए थे। मुल जाग हो गई।

मियाँ आज़ाद को यह बात कुछ जँची हीं। सोचे, खोजी बेचारे चोरी-चकारी क्या जानें। फिर चोरी भी करते तो हाँडियों की? दिल में ठान ली कि चलें और खोजी को बचा लाएँ। चारपाई से उतरे ही थे कि देखा, खोजी साहब झूमते चले आते हैं और बड़बड़ाते जाते हैं — हत तेरी गीदी की, बड़ा आज़ाद बना है। चारपाई पर पड़ा जर्र-खर्र किया और हमारी खबर ही नहीं।

आज़ाद — खैर, हमको तो पीछे गालियाँ देना, पहले यह बताओ कि हाथ-पाँव तो नहीं टूटे?

खोजी — हाथ-पाँव! अजी, आप उस वक़्त होते तो देखते कि बंदे ने क्या-क्या जौहर दिखाए। पचास आदमी घेरे हुए थे, पूरे पचास, एक कम न एक ज्यादा, और मैं फुलझड़ी बना हुआ था। बस, यह कैफियत थी कि किसी को अंटी दी धम से जमीन पर, किसी

को कूले पर लाद कर मारा। दो-चार मेरे रोब में आकर थरथरा के गिर ही तो पड़े। दस-पाँच की हड्डी-पसली चकना-चूर कर दी। जो सामने आया, उसे नीचा दिखाया।

आज़ाद — सच?

खोजी — खुदाई भर में कोई ऐसा जीवटदार आदमी दिखा तो दीजिए।

आज़ाद — भई, खुदाई भर का हाल तो खुदा ही को खूब मालूम है। मगर इतनी गवाही हो हम भी देंगे कि आप-सा बेहया दुनिया भर में न होगा।

दोनों आदमी इस वक़्त सो रहे, दूसरे दिन सवेरे नवाब साहब के यहाँ पहुँचे।

आज़ाद — जनाब, रुख़सत होने आया हूँ। जिंदगी है, तो फिर मिलूँगा।

नवाब — क्या कूच की तैयारी कर दी? भई, वापस आना, तो मुलाकात जरूर करना।

आज़ाद और खोजी रुख़सत हुए, तो खोजी पहुँचे जनानी ड्योढ़ी पर और दरबान से बोले — यार, जरा बुआ जाफरान को नहीं बुला

देते। दरबान ने आवाज दी — बुआ जाफरान, तुम्हारे मियाँ आए हैं।

बुआ जाफरान के मियाँ खोजी से बिलकुल मिलते-जुलते थे, जरा फर्क नहीं। वही सवा बालिश्त का कद, वही दुबले-पतले हाथ-पाँव। जाफरान उनसे रोज कहा करती थी — तुम अफीम खाना छोड़ दो। वह कब छोड़नेवाले थे भला। इसी सबब से दोनों में दम भर नहीं बनती थी। जाफरान ने जो बाहर आकर देखा, तो हजरत पीनक ले रहे हैं। जल-भुनकर खाक ही तो हो गई। जाते ही मियाँ खोजी के पट्टे पकड़ कर एक, दो, तीन, चार, पाँच चाँटे लगा ही तो दिए। खोजी का नशा हिरन हो गया। चौंक कर बोले — लाना तो करौली, खोपड़ी पिलपिली हो गई। हाथ छुड़ाकर भागना चाहा; मगर वह देवनी नवाब कामाल खा-खा कर हथनी बनी फिरती थी। इनको चुरमुर कर डाला। इधर गुल-गपाड़े की आवाज हुई, तो बेगम साहबा, मामा, लौंडियाँ, सब परदे के पास दौड़ीं।

बेगम — जाफरान, आखिर यह है क्या? रुई की तरह इस बेचारे को धुन के धर दिया।

मामा — हुजूर, जाफरान का कसूर नहीं, यह उस मरदुए का कसूर है जो जोरू के हाथ बिक गया है। (खोजी के कान पकड़ कर) जोरू के हाथ से जूतियाँ खाते हो, ओर जरा चूँ नहीं करते?

खोजी — हाय अफसोस! अजी, यह जोरू किस मरदूद की है। खुदा-खुदा करो! भला मैं इस हुड़दंगी, काली-कलूटी डाइन के साथ ब्याह करता! मार-मार के भुरकस निकाल लिया।

बुआ जाफरान ने जो ये बातें सुनीं, तो वह आवाज ही नही है। गौर करके देखती हैं, तो यह कोई और ही है। दाँतों के तले उँगली दबाकर खामोश हो रहीं।

लौंडी — ऐ वाह बुआ जाफरान! इतनी भी नहीं पहचानतीं। यह बेचारे तो नवाब साहब के यहाँ बने रहते थे। आखिर तुमको सूझी क्या।

बेगम साहब ने भी जाफरान को खूब आड़े हाथों लिया। इतने में किसी ने नवाब साहब से सारा किस्सा कह दिया! महफिल भर में कहकहा पड़ गया।

नवाब — जाफरान की सजा यही है कि खोजी को दे दी जायँ।

खोजी — बस, गुलाम के हाल पर रहम कीजिए। गजब खुदा का! मियाँ के धोखे-धोखे में तो इसने हमारे हाथ-पाँव ढीले कर दिए

और जो कहीं सचमुच मियाँ ही होते, तो चटनी ही कर डालती। क्या कहें, कुछ बस नहीं चलता, नहीं नवाबी होती, तो इतनी करौलियाँ भोंकी होती कि उम्र भर याद करती। यहाँ कोई ऐसे-वैसे नहीं। घास नहीं खोदा किए हैं।

बड़ी देर तक अन्दर-बाहर कहकहे पड़े, तब दोनों आदमी फिर से रुख़सत हो कर चले। रास्ते में मियाँ आज़ाद मारे हँसी के लोट-लोट गए।

खोजी — जनाब, आप हँसते क्या हैं? मैंने भी ऐसी-ऐसी चुटकियाँ ली हे कि जाफरान भी याद ही करती होगी।

आज़ाद — मियाँ, डूब मरो जाकर। एक औरत से हाथापाई में जीत न पाए!

खोजी — जी, वह औरत सौ मर्द के बराबर है। चिमट पड़े, तो आपके भी हवास उड़ जायँ।

दोनों आदमी सराय पहुँच कर चलने की तैयारी करने लगे। खाना खा कर बोरिया-बकचा सँभाल स्टेशन को चले।

खोजी — हजरत, चलने को तो हम चलते हैं, मगर इतनी शर्तें आपको कबूल करनी होंगी -

(1) करौली हमको जरूर ले दीजिए।

(2) बरस भर के लिए अफीम ले लीजिए। मैं अपने लादे-लादे फिरूँगा। वर्ना जँभाइयों पर जँभाइयाँ आएगी और बेमौत मर जाऊँगा। आप तो औरतों की तरह नशे के आदी नहीं मगर मैं बगैर अफीम पिए एक कदम न चलूँगा। परदेस में अफीम मिले, या न मिले, कहाँ ढूँढ़ता फिरूँगा?

(3) इतना बता दीजिए कि वहाँ बुआ जाफरान की सी डंडपेल देवनियाँ तो नजर न आएँगी? वल्लाह, क्या कस-कस के लातें लगाई हैं, और क्या तान-तान के मुक्केबाजी की है कि पलेथन ही निकाल डाला।

(4) सराय में हम अब तमाम उम्र न उतरेंगे, और जो जहाज पर कुम्हार हुए तो हम डूब ही मरेंगे। हम ठहरे आदमी भारी-भरकम, कहीं पाँव फिसल गया और एक-आध हँडा टूट गया, तो कुम्हार से ठाँय-ठाँय हो जाएगी।

(5) जिस रईश की सोहबत में बजाज आते होंगे, वहाँ हम न जायँगे।

(6) जहाँ आप चलते हैं, वहाँ काँजीहौस तो नहीं है कि गधे के धोखे में कोई हमको कान पकड़ के काँजीहौस पहुँचा दे।

(7) टट्टू पर हम सवार न होंगे, चाहे इधर की दुनिया उधर हो जाय।

(8) मीठे पुलाव रोज पकें।

(9) हमको मियाँ खोजी न कहना। जनाब ख्वाजा साहब कहा कीजिए। यह खोजी के क्या माने?

(10) मोरचे पर हम न जायँगे। लूट-मार में जो कुछ हाथ आए, वह हमारे पास रखा जाय।

(11) गोली खाने के तीन घंटे पहले और मरने के दो घड़ी पहले हमें बतला देना।

(12) अगर हम मर जायँ, तो पता लगा कर हमारे वालिद के पास ही हमारी लाश दफन करना। अगर पता न लगे, तो किसी कबरिस्तान में जा कर सबसे अच्छी कबर के पास हमको दफन करना। और लिख देना कि यह इनके वालिद की कबर है।

(13) पीनक के वक़्त हमको हरगिज न छेड़ना।

आज़ाद — तुम्हारी सब शर्तें मंजूर। अब तो चलिएगा।

खोजी — एक बात और बाकी रह गई।

आज़ाद — लगे हाथों वह भी कह डालिए।

खोजी — मैं अपनी दादीजन से तो पूछ लूँ।

आज़ाद — क्या वह अभी जिंदा हैं? खुदा झूठ न बुलाए, तो आप कोई पचास के पेटे में होंगे? और वह इस हिसाब से कम से कम क्या डेढ़ सौ बरस की भी न होंगी?

खोजी — अजी, मैं दिल्लगी करता था। उनकी तो हड्डियों तक का पता न होगा।

स्टेशन पर पहुँचे। गुल-गपाड़ा मचा हुआ था। दोनों आदमी भीड़ काट कर अन्दर दाखिल हुए, तो देखा, एक आदमी गेरुए कपड़े पहने खड़ा है। फकीरों की सी दाढ़ी, बाल कमर तक, मूँछें मुड़ी हुई, कोई पचास के पेटे में। मगर चेहरा सुर्ख, जैसे लाल अंगारा; आँखें आगभभूका।

आज़ाद — (एक सिपाही से) क्यों भई, क्या यह कोई फकीर हैं?

सिपाही — फकीर नहीं, चंडाल है। कोई चार महीने हुए, यहाँ आया और एक आदमी को सब्जबाग दिखा कर अपना चेला बनाया। रफ्ता-रफ्ता और लोग भी शागिर्द हुए। फिर तो हजरत पुजने लगे। अब कोई तो कहता है कि बाबा जी ने दस सेर मिठाई दरिया में डाल दी और दूसरे दिन जा कर कहा — गंगा जी, मारी अमानत हमको वापस कर दो। दरिया लहरें मारता हुआ बाबा जी के पास आया और दस सेर गरमागरम मिठाई किसी ने आप ही आप उनके दामन में बाँध दी। कोई कसमें खा-खा कर

कहता है कि कई मुर्दे इन्होंने जिंदा कर दिए। एक साहब ने यहाँ तक बढ़ाया कि एक दिन मूसलाधार मेंह बरस रहा था और इन पर बूँद ने असर न किया। कोई फरिश्ता इन पर छतरी लगाए रहा।

आज़ाद — चिकने घड़े बन गए।

सिपाही — कुछ पूछिए नहीं। उन लोगों ने कहना शुरू कर दिया था कि यह कैदखाने से निकल जायँगे; मगर तीन दिन से हवालात में हैं, और अब सिट्टी-पिट्टी भूली हुई है। मैं जो उधर से आऊँ-जाऊँ, तो रोज देखूँ कि भीड़ लगी हुई हैं; मगर औरतें ज्यादा और मर्द कम। जो आता है, वह सिजदा करता है आपकी देखा-देखी मैं गया,मेरी देखा-देखी आप गए। बाबा जी के यहाँ रोज दरबार लगने लगा।

एक दिन का जिक्र है कि बाबा जी ने अपनी कोठरी में टाट के नीचे दस-पाँच रुपए रख दिए और चुपके से बाहर निकल आए। जब दरबार जम गया, तो एक आदमी ने कहा — बाबा जी, हमको कुछ दिखाइए। बिना कुछ देखे हम एक न मानेंगे। बाबा जी ने आँखें नीली-पीली कीं और शेर की तरह गरजे — लोगों के होश उड़ गए। दो-चार डरपोक आदमियों ने तो मारे डर के आँखें

बन्द कर लीं। एक आदमी ने कहा — बाबा, अनजान है। इस पर रहम कीजिए। दूसरा बोला — नादान है, जाने दीजिए।

फकीर — नहीं, इससे पूछो, क्या देखेगा?'

आदमी — बाबा, मैं तो रुपए का भूखा हूँ।'

फकीर — बच्चा, फकीरों को दौलत से क्या काम? मगर तेरी खातिर करना भी जरूरी है। चल, चल, चल। बरसो, बरस, बरसो। खन, खन, खन। अच्छा बच्चा, कुटी में देख; टाट का कोना उठा। खुदा ने तेरे लिए कुछ भेजा ही होगा। मगर दाहना सुर चलता हो, तभी जाना; नहीं तो धोखा खायगा। वहाँ कोई डरावनी सूरत दिखाई दे, तो डर मत जाना; नहीं तो मर जायगा।

बाबा जी ने कुटी के एक कोने में परदा डाल दिया था और उस परदे में एक आदमी का मुँह काला करके बिठा दिया था। अब तो आदमी डरा कि न जाने कैसी भयानक सूरत नजर आएगी। कहीं डर जाऊँ, तो जान ही जाती रहे। बाबा जी एक-एक से कहते हैं, मगर किसी की हिम्मत नहीं पड़ती। तब एक नौजवान ने उठ कर कहा — लीजिए, मैं जाता हूँ।

फकीर — बच्चा, जाता तो है, मगर जरा सँभल कर जाना।

नौजवान बेधड़क कोठरी में घुस गया। टाट के नीचे से रुपए निकाल कर जेब में रख लिए और चलने ही को था कि परदे में से वह काला आदमी निकल पड़ा और जवान की तरफ मुँह खोल कर झपटा। जवान ने आव देखा न ताव, लकड़ी उसकी हलक में डाल दी और इतनी चोटें लगाईं कि बौखला दिया। जब वह रुपए लिए अकड़ता हुआ बाहर निकला, तो हवाली मवाली सब दंग कि यह तो खुश-खुश आते हैं और हम समझते थे कि अब इनकी लाश देखेंगे।

नौजवान — (फकीर से) कहिए हजरत, और कोई करामात दिखाइएगा?

फकीर — बच्चा, तुम्हारी जवानी पर हमें तरस आ गया।

नौजवान — पहले जा कर अन्दर देखिए तो आपके देव साहब की क्या हालत है? जरा मरहम-पट्टी कीजिए।

अगर वहाँ समझदार लोग होते, तो समझ जाते कि बाबा जी पूरे ठग हैं, मगर वहाँ तो सभी जाहिल थे। वे समझे, बेशक बाबा जी ने नौजवान पर रहम किया। खैर बाबा जी ने खूब हाथ-पाँव फैलाए। एक दिन किसी महाजन के यहाँ गए। वहाँ मुहल्ले भर के मर्द और औरतें जमा हो गईं। रात को जब सब लोग चले गए, तो इन्होंने महाजन के लड़के से कहा — हम तुमसे बहुत

खुश हैं। जो चाहे माँग ले। लड़का इनके कदमों पर गिर पड़ा। आपने फरमाया कि एक कोरी हाँडी लाओ, चूल्हा गरम करो; मगर लकड़ी न हो, कंडे हों। कुम्हार ने सब सामान चुटकियों में लैस कर दिया। तब आपने लोहे का एक पत्तर मँगवाया। उसे हाँडी में पानी भर कर डाल दिया। पानी को ले कर कुछ पढ़ा। थोड़ी देर के बाद एक पुड़िया दी और कहा — वह सफेद दवा उसमें डाल दे। थोड़ी देर के बाद जब महाजन का लड़का अन्दर गया, तो बाबा जी ने लोहे का पत्तर निकाल दिया और अपने पास से सोने का पत्तर हाँड़ी में डाल दिया, और चल दिए। महाजन का लड़का बाहर आया, तो बाबा जी का पता नहीं। हाँड़ी को जो देखो, तो लोहे का पत्तर गायब, सोने का थक्का मौजूद। मुहल्ले भर में शोर मच गया। लोग बाबा जी को ढूँढ़ने लगे। आखिर यहाँ तक नौबत पहुँची कि एक मालदार की बीवी ने चकमे में आकर अपना पाँच-छः हजार का जेवर उतार दिया। बाबा जी जेवर ले कर उड़ गए। साल भर तक कहीं पता न चला। परसों पकड़े गए हैं।'

थोड़ी देर के बाद गाड़ी आई। दोनों आदमी जा बैठे।

सुबह को गाड़ी एक बड़े स्टेशन पर रुकी। नए मुसाफिर आ-आकर बैठने लगे। मियाँ खोजी अपने कमरे के दरवाजे पर खड़े घुड़कियाँ जमा रहे थे — आगे जाओ, यहाँ जगह नहीं है; क्या मेरे सिर पर बैठोगे? इतने में एक नौजवान दूल्हा बराती कपड़े पहने आकर गाड़ी में बैठ गया। बरात के और आदमी असबाब लदवाने में मसरूफ थे। दुलहिन और उसकी लौंडी जनाने कमरे में बैठाई गई थीं। गाड़ी चलनेवाली ही थी कि एक बदमाश ने गाड़ी में घुस कर दूल्हे की गरदन पर तलवार का ऐसा हाथ लगाया कि सिर कट कर धड़ से अलग हो गया। उस बेगुनाह की लाश फड़कने लगी। स्टेशन पर कुहराम मच गया। सैकड़ों आदमी दौड़ पड़े और कातिल को गिरफ्तार कर लिया। यहाँ तो यह आफत थी, उधर दुलहिन और महरी में और ही बातें हो रही थीं।

दुलहिन — दिलबहार, देखो तो, यह गुल कैसा है? जरी झाँक कर देखना तो!

दिलबहार — हैं-हैं! किसी ने आदमी को मार डाला है। चबूतरा सारा लहू-लुहान है।

दुलहिन — अरे गजब। क्या जाने, कौन था बेचारा।

दिलबहार — अरे! बात क्या है! लाश के सिरहाने खड़े तुम्हारे देवर रो रहे हैं।

एक दफे लाश की तरफ से आवाज आई — हाय, भाई, तू किधर गया! दुलहिन का कलेजा धक-धक करने लगा। भाई-भाई करके कौन रोता है। अरे गजब! वह घबरा कर रेल से उतरी और छाती पीटती हुई चली। लाश के पास पहुँच कर बोली — हाय, लुट गई! अरे लोगो, यह हुआ क्या?

दिलबहार — हैं-हैं दुलहिन, तुम्हारा नसीब फूट गया।

इतने में स्टेशन की दो-चार औरतें-तार-बाबू की बीबी, गार्ड की लड़की ड्राइवर की भतीजी वगैरह ने आकर समझाना शुरू किया। स्टेशन मातमसरा बन गया। लोग लाश के इर्द-गिर्द खड़े अफसोस कर रहे थे। बड़े-बड़े संगदिल आठ-आठ आँसू रो रहे थे। सीना फटा जाता था। एकाएक दुलहिन ने एक ठंडी साँस ली, जोर से हाय करके चिल्लाई और अपने शौहर की लाश पर धम से गिर पड़ी। चंद मिनट में उसकी लाश भी तड़प कर सर्द हो गई। लोग दोनों लाशों को देखते थे, और हैरत से दाँतों उँगली दबातें थे। तकदीर के क्या खेल हैं, दुलहिन के हाथ-पाँव में मेहँदी लगी हुई, सिर से पाँव तक जेवरों से लदी हुई; मगर दम

के दम में कफन की नौबत आ गई। अभी स्टेशन से एक पालकी पर चढ़ कर आई थी, अब ताबूत में जायगी। अभी कपड़ों से इत्र की महक आ रही थी कि काफूर की तदबीरें होने लगीं। सुबह को दरवाजे पर रोशनचौकी और शहनाई बज रही थी, अब मातम की सदा है। थोड़ी ही देर हुई कि शहर के लोग छतों और दूकानों से बरात देख रहे थे, अब जनाजा देखेंगे। दिलबहार दोनों लाशों के पास बैठी थी; मगर आँसुओं का तार बँध हुआ था। वह दुलहिन के साथ खेली थी। दुनिया उसकी नजरों में अँधेरी हो गई थी। दूल्हा के खिदमतगार कातिल को जोर-जोर से जूते और थप्पड़ लगा रहे थे और मरनेवाले को याद करके ढाड़ें मार-मार के रोते थे। खैर, स्टेशन मास्टर ने लाशों को उठवाने का इंतजाम किया। गाड़ी तो चली गई। मगर बहुत से मुसाफिर रेल पर से उतर आए। बला से टिकट के दाम गए। उस कातिल को देख कर सबकी आँखों से खून टपकता था। यही जी चाहता था कि इसको इसी दम पीस डालें। इतने में लाल कुर्ती का एक गोरा, जो बड़ी देर से चिल्ला-चिल्ला कर रो रहा था, गुस्से को रोक न सका, जोश में आ के झपटा और कातिल की गरदन पकड़ कर उसे खूब पीटा।

आज़ाद और मियाँ खोजी भी रेल से उतर पड़े थे। दोनों लाशों के साथ उनके घर गए। राह में हजारों आदमियों की भीड़ साथ हो

गई। जिन लोगों ने उन दोनों की सूरत ख्वाब में भी न देखी थी, जानते भी न थे कि कौन हैं और कहाँ रहते हैं, वे भी जार-जार रोते थे। औरतें बाजारों, झरोखों और छतों पर से छाती पीटती थीं कि खुदा ऐसी घड़ी सातवें दुश्मन को भी न दिखाए। दुकानदारों ने जनाजे को देखा और दुकान बढ़ा के साथ हुए। रईसजादे सवारियों पर से उतर-उतर पड़े और जनाजे के साथ चले। जब दोनों लाशें घर पर पहुँचीं, तो सारा शहर उस जगह मौजूद था। दुलहिन का बाप हाय-हाय कर रहा था और दूल्हे का बाप सब्र की सिल छाती पर रखे उसे समझाता था — भाई सुनो, हमारी और तुम्हारी उम्र एक है, हमारे मरने के दिन नजदीक हैं। और दो-चार बरस बेहयाई से जिए तो जिए, वर्ना अब चल चलाव है। किसी को हम क्या रोएँ। जिस तरह तुम आज अपनी प्यारी बेटी को रो रहे हो, इसी तरह हजारों आदमियों को अपनी औलाद का गम करते देख चुके हो। इसका अफसोस ही क्या? वह खुदा की अमानत थी, खुदा के सिपुर्द कर दी गई।

उधर कातिल पर मुकदमा पेश हुआ और फाँसी का हुक्म हो गया। सुबह के वक़्त कातिल को फाँसी के पास लाए। फाँसी देखते ही बदन के रोएँ खड़े हो गए। बड़ी हसरत के साथ बोला — सब भाइयों को सलाम। यह कह कर फाँसी की तरफ नजर की और ये शेर पढ़े —

कोई दम कीजिए किसी तौर से आराम कहीं;
चैन देती ही नहीं गरदिशे अय्याम कहीं।
सैद लागर हूँ, मेरी जल्द खबर ले सैयाद;
दम निकल जाय तड़प कर न तहे दाम कहीं।

खोजी — क्यों मियाँ, शेर तो उसने कुछ बेतुके से पढ़े। भला इस वक़्त शेर का क्या जिक्र था।

आज़ाद — चुप भी रहो। उस बेचारे की जान पर बन आई है, और तुमको मजाक सूझता है —

उन्हें कुछ रहम भी आता है या रब, वक्ते खूँ-रेजी;
छुरी जब हल्के-आजिज पर रवाँ जल्लाद करते हैं।

कातिल फाँसी पर चढ़ा दिया गया और लाश फड़कने लगी। इतने में लोगों ने देखा कि एक आदमी घोड़ा कड़कड़ाता सामने से आ रहा है। वह सीधा जेलखाने में दाखिल हुआ और चिल्ला कर बोला — खुदा के वास्ते एक मिनट की मुहलत दो। मगर वहाँ तो लाश फड़क रही थी। यह देखते ही सवार धम से घोड़े से गिर पड़ा और रो कर बोला — यह तीसरा था। जेल के दारोगा ने पूछा — तुम कौन हो? उसने फिर आहिस्ता से कहा — यह तीसरा था। अब एक-एक आदमी उससे पूछता है कि मियाँ,

तुम कौन हो और रोक लो, रोक लो की आवाज क्यों दी थी? वह सबको यही जवाब देता है — यह तीसरा था।

आज़ाद — आपकी हालत पर अफसोस आता है।

सवार — भई, यह तीसरा था।

इनसान का भी अजब हाल है। अभी दो ही दिन हुए कि शहर भर इस कातिल के खून का प्यासा था। सब दुआ कर रहे थे कि इसके बदन को चील-कौए खायँ। वे भी इस बूढ़े की हालत देख कर रोने लगे। कातिल को बेरहमी याद न रही। सब लोग उस बूढ़े सवार से हमदर्दी करने लगे! आखिर, जब बूढ़े के होश-हवास दुरुस्त हुए, तो यों अपना किस्सा कहने लगा —

मैं कौम का पठान हूँ। तीन ऊपर सत्तर बरस का सिन हुआ। खुदा ने तीन बेटे दिए। तीनों जवान हुए और तीनों ने फाँसी पाई। एक ने एक काफिले पर छापा मारा। उस तरफ लोग बहुत थे। काफिलेवालों ने उसे पकड़ लिया और अपने-आप एक फाँसी बना कर लटका दिया। जिस वक़्त उसकी लाश को फाँसी पर से उतारा मैं भी वहाँ जा पहुँचा। लड़के की लाश देख कर गश की नौबत आई मगर चुप। अगर जरा उन लोगों को मालूम हो जाय कि यह उसका बाप है; तो मुझे भी जीता न छोड़ें। एकाएक किसी ने उनसे कह दिया कि यह उसका बाप है। यह

सुनते ही दस-पंद्रह आदमी चिपट गए और आग जला कर मुझसे कहा कि अपने लड़के की लाश को इसमें जला। भाई, जान बड़ी प्यारी होती है। इन्हीं हाथों से, जिनसे लड़के को पाला था, उसे आग में जला दिया।

अब दूसरे लड़के का हाल सुनिए — वह रावलपिंडी में राह-राह चला जाता था कि एक आदमी ने, जो घोड़े पर सवार था, उसको चाबुक से हटाया! उसने झल्लाकर तलवार म्यान से खींची और उसके दो टुकड़े कर डाले। हाकिम ने फाँसी का हुक्म दिया। और आज का हाल तो आप लोगों ने खुद ही देखा। इस लड़की के बाप ने करार किया था कि मेरे बेटे के साथ निकाह पढ़वावेगा। लड़के ने जब देखा कि यह दूसरे की बीवी बनी, तो आपे से बाहर हो गया!'

मियाँ आज़ाद और खोजी बड़ी हसरत के साथ वहाँ से चले।

खोजी — चलिए, अब किसी दुकान पर अफीम खरीद लें।

आज़ाद — अजी, भाड़ में गई आपकी अफीम। आपको अफीम की पड़ी है, यहाँ मारे गम के खाना-पीना भूल गए।

खोजी — भई, रंज घड़ी दो घड़ी का है। यह मरना-जीना तो लगा ही रहता है।

दोनों आदमी बातें करते हुए जा रहे थे, तो क्या देखते हैं कि एक दुकान पर अफीम झड़ाझड़ बिक रही है। खोजी की बाँछें खिल गईं, मुरादें मिल गईं। जाते ही एक चवन्नी दुकान पर फेंकी। अफीम ली, लेते ही घोली और घोलते ही गट-गट पी गए।

खोजी — अब आँखें खुलीं।

आज़ाद — यों नहीं कहते कि अब आँखें बन्द हुई!

खोजी — क्यों उस्ताद, जो हम हाकिम हो जायँ, तो बड़ा मजा आए। मेरा कोई अफीमची भाई किसी को कत्ल भी कर आए, तो बेदाग छोड़ दूँ।

आज़ाद — तो फिर निकाले भी जल्द जाइए।

दोनों आदमी यही बातें करते हुए एक सराय में जा पहुँचे। देखा, एक बूढ़ा हिंदू जमीन पर बैठा चिलम पी रहा है।

आज़ाद — राम-राम भई, राम-राम!

बूढ़ा — सलाम साहब, सलाम। सुथना पहने हो और राम-राम कहते हो?

आज़ाद — अरे भाई, राम और खुदा एक ही तो हैं। समझ का फेर है। कहाँ जाओगे।

बूढ़ा — गाँव यहाँ से पाँच चौकी है। पहर रात का घर से चलने, नहावा, पूजन कीन, चबेना बाँधा और ठंडे-ठंडे चले आयन। आज कचहरी मौं एक तारीख हती। साँझ ले फिर चले जाब। जमींदारी माँ अब कचहरी धावे के सेवाय और का रहिगा?

आज़ाद — तो जमींदार हो? कितने गाँव हैं तुम्हारे?

बूढ़ा — ऐ हुजूर, अब यो समझो, कोई दुइ हजार खरच-बरच करके बच रहत हैं।

आज़ाद ने दिल में सोचा कि दो हजार साल की आमदनी और बदन पर ढंग के कपड़े तक नहीं! गाढ़े की मिरजई पहने हुए है; इसकी कंजूसी का भी ठिकाना है? यह सोचते हुए दूसरी तरफ चले, तो देखा, एक कालीन बड़े तकल्लुफ से बिछा और और एक साहब बड़े ठाट से बैठे हुए हैं। जामदानी का कुरता, अद्धी का अंगरखा, तीन रुपए की सफेद टोपी, दो-ढाई सौ की जेब घड़ी, उसकी सोने की जंजीर गले में पड़ी हुई। करीब ही चार-पाँच भले आदमी और बैठे हुए हैं और दोसेरा तंबाकू उड़ा रहे हैं। आज़ाद ने पूछा, तो मालूम हुआ आप भी एक जमींदार हैं। पाँच-छह कोस पर एक कसबे में मकान है। कुछ 'सीर' भी होती है। जमींदारी से सौ रुपए माहवार की बचत होती है।

आज़ाद — यहाँ किस गरज से आना हुआ।

रईस — कुछ रुपए कर्ज लेना था, मगर महाजन दो रुपए सैकड़ा सूद माँगता है।

मियाँ आज़ाद ने जमींदार साहब के मुंशी को इशारे से बुलाया, अलग ले जा कर यों बातें करने लगे -

आज़ाद — हजरत, हमारे जरिए से रुपया लीजिए। दस हजार, बीस हजार, जितना कहिए; मगर जागीर कुर्क करा लेंगे और चार रुपए सैकड़ा सूद लेंगे।

मुंशी — वाह! नेकी और पूछ-पूछ! अगर आप चौदह हजार भी दिलवा दें, तो बड़ा एहसान हो। और, सूद चाहे पाँच रुपए सैकड़ा लीजिए तो कोई परवा नहीं। सूद देने में तो हम आँधी हैं।

आज़ाद — बस, मिल चुका। यह सूद की क्या बात-चीत है भला? हम कहीं सूद लिया करते हैं? मुनाफा नहीं कहते?

मुंशी — अच्छा हुजूर, मुनाफा सही।

आज़ाद — अच्छा, यह बताओ कि जब सौ रुपए महीना बच रहता है, तो फिर चौदह हजार कर्ज क्यों लेते हैं?

मुंशी — जनाब, आपसे तो कोई परदा नहीं। सौ पाते हैं, और पाँच सौ उड़ाते हैं। अच्छा खाना खाते हैं, बारीक और कीमती कपड़े पहनते हैं, यह सब आए कहाँ से। बंक से लिया, महाजनों से

लिया; सब चौदह हजार के पेटे में आ गए। अब कोई टका नहीं देता।

आज़ाद दिल में उस बूढ़े ठाकुर का इन रईस साहब से मुकाबला करने लगे। यह भी जमींदार, यह भी जमींदार; उनकी आमदनी डेढ़ सौ से ज्यादा, इनकी मुश्किल से सौढ़े की धोती और गाढ़े की मिरजई पर खुश हैं। और यह शरबती और जामदानी फड़काते हैं। वह ढाई तल्ले का चमरौधा जूता पहनते हैं, यहाँ पाँच रुपया की सलीमशाही जूतियाँ। वह पालक और चने की रोटियाँ खाते हैं और यह दो वक़्त शीरमाल और मुर्गपुलाव पर हाथ लगाते हैं, वह टके गज की चाल चलते हैं। यहाँ हवा के घोड़ों पर सवार। दोनों पर फटकार! वह कंजूस और यह फजूलखर्च। वह रुपए को दफन किए हुए, यह रुपए लुटाते फिरते हैं। वह खा नहीं सकते, तो यह बचा नहीं सकते।

शाम को दोनों आदमी रेल पर सवार हो कर पूना जा पहुँचे।

33

रेल से उतर कर दोनों, आदमियों ने एक सराय में डेरा जमाया और शहर की सैर को निकले। यों तो यहाँ की सभी चीजें भली

मालूम होती थीं, लेकिन सबसे ज्यादा जो बात उन्हें पसंद आई, वह यह थी कि औरतें बिला चादर और घूँघट के सड़कों पर चलती-फिरती थीं। शरीफजादियाँ बेहिजाब नकाब उठाए; मगर आँखों में हया और शर्म छिपी हुई।

खोजी — क्यों मियाँ, यह तो कुछ अजब रस्म है? ये औरतें मुँह खोले फिरती हैं। शर्म और हया सब भून खाई। वल्लाह, क्या आजादी है!

आज़ाद — आप खासे अहमक हैं। अरब में, अजम में अफगानिस्तान में, मिसर में, तुर्किस्तान में, कहीं भी परदा है? परदा तो आँख का होता है। कहीं चादर हया सिखाती है? जहाँ घूँघट काढ़ा, और नजर पड़ने लगी।

खोजी — अजी, मैं दुनिया की बात नहीं चलाता। हमारे यहाँ तो कहारियाँ और मालिनें तक परदा करती हैं, न कि शरीफजादियाँ ही! एक कदम तो बेपरदे के जाती नहीं।

आज़ाद — अरे मियाँ, नकाब को शर्म से क्या सरोकार? आँख की हया से बढ़ कर कोई परदा ही नहीं; हमारे मुलक में तो परदे का नाम नहीं; मगर हिंदुस्तान का तो बाबा आदम ही निराला है।

खोजी — आपका मुल्क कौन? जरा आपके मुल्क का नाम तो सुनूँ।

आज़ाद — कशमीर। वही कशमीर जिसे शायरों ने दुनिया का फिरदौस माना है। वहाँ हिंदू-मुसलमान औरतें बुरका ओढ़ कर निकलती हैं; मगर यह नहीं कि औरतें घर के बाहर कदम ही न रखें। यह रोग तो हिंदुस्तान ही में फैला है! हम तो जब तुर्की से आयँगे, तो यहीं बिस्तर जमाएँगे और हुस्नआरा को साथ ले कर आजादी के साथ हवा खाएँगे।

खोजी — यार बात तो अच्छी है, मगर मेरी बीवी तो इस लायक ही नहीं कि हवा खिलाने ले जाऊँ। कौन अपने ऊपर तालियाँ बजवाए? फिर अब तो बूढ़ी हुई और रंग भी ऐसा साफ नहीं।

आज़ाद — तो इसमें शरम की कौन सी बात है? आप उनके काले मुँह से झेंपते क्यों है।

खोजी — जब हब्श जाऊँगा, तो वहाँ हवा खिलाऊँगा। आप नई रोशनी के लोग हैं। आपकी हुस्नआरा आपसे भी बढ़ी हुई, जो देखे फड़क जाय कि क्या चाँद-सूरज की जोड़ी है। ऐसी शक्ल-सूरत हो, तो हवा खिलाने में कोई मुजायका नहीं। हम अब क्या जोश दिखाएँ; न वह उमंग है, न वह तरंग।

आज़ाद — हम कहते हैं, बुआ जाफरान को ब्याह लो और एक टट्टू ले दो। बस, इसी तरह वह भी बाजारों में हवा खायँ।

खोजी — (कान पकड़ कर) या खुदा बचाइयो। पीच पी, हजार निआमत खाई। मारे चपतों के खोपड़ी गंजी कर दी थी। क्या वह भूल गया?

आज़ाद — यहाँ से बंबई भी तो करीब है।

खोजी — अरे गजब! क्या जहाज पर बैठना होगा? तो भई, मेरे लिए अफीम ले दो।

पूने से बंबई तक दिन में कई गाड़ियाँ जाती थीं। दोनों आदमियों ने सराय में पहुँच कर खाना खाया और बंबई रवाना हुए। शाम हो गई थी। एक होटल में जा कर ठहरे। आज़ाद तो दिन भर के थके हुए थे, लेटते ही खर्राटे लेने लगे। खोजी अफीमची आदमी, नींद कहाँ? इसी फिक्र में बैठे हुए थे कि नींद को क्योंकर बुलाऊँ। इतने में क्या देखते हैं कि एक लंबी-तड़ंगी, पंचहत्थी औरत चमकती-दमकती चली आती है। पूरे सात फुट का कद, न जौ-भर कम, न जौ-भर ज्यादा। धानी चादर ओढ़े, इठला-इठला कर चलती हुई मियाँ खोजी के पास आकर खड़ी हो गई। खोजी ने उसकी तरफ नजर डाली, तो उसने एक तीखी चितवन से उनको देखा और आगे चली। आपको शरारत जो सूझी तो सीटी बजाने लगे। सीटी को आवाज सुनते ही वह इनकी तरफ झुक पड़ी और छमाछम करती हुई कमरे में चली आई। अब मियाँ

खोजी के हवास पैतरे हुए कि अगर आज़ाद की आँख खुल गई, तो ले ही डालेंगे; और जो कहीं रीझ गए, तो हमारी खैरियत नहीं। हम बस, नींबू और नोन चाट कर रह जायँगे। इशारे से कहा — जरी आहिस्ता बोलो।

औरत — अरे वाह मियाँ! अच्छे मिले।

खोजी — मियाँ आज़ाद सोए हुए हैं।

औरत — इनका बड़ा लिहाज करते हो; क्या बाप है तुम्हारे?

खोजी — खुदा के वास्ते चुप भी रहो।

औरत — चलो, हम-तुम दूसरी कोठरी में चल कर बैठें।

दोनों पास की एक कोठरी मे जा बैठे। औरत ने अपना नाम केसर बतलाया और बोली — अल्लाह जानता है, तुम पर मेरी जान जाती है। खुदा की कसम, क्या हाथ-पाँव पाए हैं कि जी चाहता है, चूम लूँ। मगर दाढ़ी मुड़वा डालो।

खोजी — (अकड़ कर) अभी क्या, जवानी में देखना हमको!

क्या खूब अभी जवानी शायद आनेवाली है। कुछ ऊपर पचास का सिन हुआ, और आप अभी लड़के ही बने हुए हैं। उस औरत ने आपको उँगलियों पर नचाना शुरू किया, लेकिन आप समझे कि सचमुच रीझ ही गई और भी बफलने लगे।

औरत — डील-डौल कितना प्यारा है कि जी खुश हो गया। मगर दाढ़ी मुड़वा डालो।

खोजी — अगर मैं कसरत करूँ, तो अच्छे-अच्छे पहलवानों को लड़ा दूँ।

औरत — जरा कान तो फटफटा लो, शाबाश!

खोजी — एक बात कहूँ, बुरा तो न मानोगी?

औरत — बुरा मानूँगी, तो जरा खोपड़ी सहला दूँगी।

खोजी — जाँबख्शी करो, तो कहूँ।

औरत — (चपत लगा कर) क्या कहता है, कह।

खोजी — भई, यह धौल-धप्पा शरीफों में जायज़ नहीं।

औरत — तुम मुए को कौन निगोड़ी शरीफ समझती है।

एक चपत और पड़ी। खोजी ने त्योरियाँ बदल कर कहा — भई, आदत मुझे पसंद नहीं। मुझे भी गुस्सा आ जायगा।

औरत — आँखें क्या नीली-पीली करता है? फोड़ दूँ दोनों आँखें?

खोजी — अब हमारा मतलब तो इस झंझट में खब्त हुआ जाता है। अब तो बताओ, कुछ माँगें, तो दोगी?

औरत — हाँ, क्यों नहीं, एक लप्पड़ इधर और दूसरा उधर। क्या माँगते हो?

खोजी — कहना यह है कि — मगर कहते हुए दिल काँपता है।

औरत — अब मैं तुमको ठीक न बनाऊँ कहीं?

खोजी — तुम्हारे साथ ब्याह करने को जी चाहता है।

औरत — ऐ, अभी तुम बच्चे हो। दूध के दाँत तक तो टूटे नहीं। ब्याह क्या करोगे भला?

खोजी — वाह-वाह! मेरे दो बच्चे खेलते हैं। अभी तक इनके नजदीक लौंडे ही हैं हम।

औरत — अच्छा, कुछ कमाई-वमाई तो निकाल, और दाढ़ी मुड़वा।

खोजी — (दस रुपए दे कर) लो, यह हाजिर है।

औरत — देखूँ। ऊँह, हाथी के मुँह में जीरा!

खोजी — लो, यह पाँच और लो। अजी, मैं तुमको बेगम बना कर रखूँगा।

औरत — अच्छा, एक शर्त से शादी करूँगी। तड़के तक के मुझे सात बार सलाम करना और मैं सात चपतें लगाऊँगी।

खोजी — अजी, बल्कि और दस।

औरत — अच्छा, इसी बात पर कुछ और निकालो।

खोजी — लो, यह पाँच और लो। तुम्हारे दम के लिए सब कुछ हाजिर है।

औरत ने झट से मियाँ खोजी को गोद में उठा लिया और बगल में दबा कर ले चली, तो खोजी बहुत चकराए। लाख हाथ-पाँव मारे, मगर उसने जो दबाया, तो इस तरह ले चली, जैसे कोई चिड़ीमार जानवरों को फड़फड़ाते हुए ले चले।

अब सारा जमाना देख रहा है कि खोजी फड़कते हुए जाते हैं और वह औरत छम-छम करती चली जाती है।

खोजी — अब छोड़ती है, या नहीं?

औरत — अब उम्र-भर तो छोड़ने का नाम न लूँगी। हम भलेमानसों की बहू-बेटियाँ छोड़ देना क्या जानें। बस, एक के सिर हो रहीं। भागे कहाँ जाते हो मियाँ।

खोजी — मैं कुछ कैदी हूँ?

औरत — (चपत लगा कर) और नहीं, कौन है तू? अब मैं कहीं जाने भी दूँगी?

खोजी पीछे हटने लगे, तो उसने पट्टे पकड़ कर खूब बेभाव की लगाई। अब यह झल्लाए और गुल मचाया कि कोई है? लाना करौली? बहुत से तमाशाई खड़े हँस रहे थे।

एक – क्या है मियाँ? यह धर पकड़ कैसी?

औरत – आप कोई काजी हैं? यह हमारे मियाँ हैं, हम चाहे चपतियाएँ चाहे पीटें! किसी को क्या?

दूसरा – मेहरारू गर्दन दाबे उठाए लिए जात है, वह करौली निकारत है।

खोजी – बुरे फँसे! यारो, जरा मियाँ आज़ाद को सरा से बुलाना।

औरत ने फिर खोजी को गोद में उठाया और मशक की तरह पीठ पर रख कर 'मसक दरियाव, ठंडा पानी' कहती हुई ले चलीं।

एक आदमी – कैसे मर्द हो जी! औरत से जीत नहीं पाते? बस, इज्जत डुबो दी बिलकुल।

खोजी – अजी, इस औरत पर शैतान की फटकार। यह तो मरदों के कान काटती है।

इतने में मियाँ आज़ाद की नींद खुली, तो खोजी गायब। बाहर निकले, तो देखा खोजी को एक औरत दबाए खड़ी है। ललकार कर कहा – तू कौन है! उन्हें छोड़ती क्यों नहीं?

औरत ने खोजी को छोड़ दिया और सलाम करके बोली — हुजूर, मेरा इनाम हुआ। मैं बहुरूपिया हूँ।

दूसरे दिन खोजी मियाँ आज़ाद के साथ शहर की सैर करने चले, तो शहर भर के लौंडे-लपाड़िये साथ, पीछे-पीछे तालियाँ बजाते जाते हैं। एक बोला — कहो चड्डा, बीबी ने चाँद गंजी कर दी न? हत तेरे की! दूसरा बोला — कहो उस्ताद, खोपड़ी का क्या रंग है?

बेचारे खोजी को रास्ता चलना मुश्किल हो गया। दो-चार आदमियों ने बहुरूपिए की तारीफ की, तो खोजी जल-भुन कर खाक हो गए अब किसी से न बोलते हैं, न चालते। दुम दबाए, डग बढ़ाए, गर्दन झुकाए पत्तातोड़ भाग रहे हैं। वारे खुदा-खुदा करके दोपहर को फिर सराय में आए। नीम की ठंडी-ठंडी छाँह में लेट गए, तो एक भठियारी ने मुसकरा के कहा — गाज पड़े ऐसी औरत पर, जो मियाँ को गोद में उठाए और बाजार भर में नचाए। गरज सराय को भठियारियों ने खोजी को ऐसा उँगलियों पर नचाया कि खुदा की पनाह! ऐसे झेंपे कि करौली तक भूल गए।

इतने में क्या देखते हैं कि एक लंबू डील-डौल का खूबसूरत जवान तमंचा कम से लगाए, ऊँची पगड़ी सिर पर जमाए, बाँकी-तिरछी छवि दिखाता हुआ अकड़ता चला आता है। भठियारियाँ

छिप-छिप के झाँकने लगीं। समझीं कि मुसाफिर है, बोलीं — मियाँ, इधर आओ, यहाँ बिस्तर जमाओ। मियाँ मुसाफिर, देखो, कैसा साफ-सुथरा मकान है! पकरिया की ठंडी-ठंडी छाँह है, जरा तो तकलीफ होगी नहीं। सिपाही बोला — हमें बाजार से कुछ सौदा खरीदना है। कोई हमारे साथ चले, तो सौदा खरीद कर हम आ जायँ। एक भठियारी बोली — चलिए, हम चलते हैं। दूसरी बोली — लौंडी हाजिर है। सिपाही ने कहा — मैं किसी पराई औरत को नहीं ले जाना चाहता। कोई पढ़ा-लिखा मर्द चले, तो पाँच रुपए दें। मियाँ खोजी के कान में जो भनक पड़ी, तो कुलबुला कर उठ बैठे और कहा — मैं चलता हूँ, मगर पाँचों नकद गिनवा दीजिए। मैं अलसेट से डरता हूँ। सिपाही ने झट से पाँचों गिन दिए। रुपए तो खोजी ने टेंट में रखे और सिपाही के साथ चले। रास्ते में जो इन्हें देखता है, कहकहा लगाता है — बचा की खोपड़ी जानती होगी, छठी का दूध याद आ गया होगा! जब चारों ओर से बौछारें पड़ने लगीं तो खोजी बहुत ही झल्लाए और गुल मचा कर एक-एक को डाँटने लगे। चलते-चलते एक अफीम की दुकान पर पहुँचे।

सिपाही — कहो भई जवान, है शौक! पिलवाऊँ?

खोजी — अजी, मैं तो इस पर आशिक हूँ।

सिपाही ने मियाँ खोजी को खूब अफीम पिलाई। जब खूब सरूर गँठे तो सिपाही ने उनको साथ लिया और चला। बातें होने लगी। खोजी बोले — भई, अफीम पिलाई है, तो मिठाई भी खिलवाओ। एहसान करे, तो पूरा।

सिपाही — अजी, अभी लो। ये चार गंडे की पंचमेल मिठाई हलवाई की दुकान से लाओ।

हलवाई की दुकान से खोजी ने लड़-लड़ के खूब मिठाई ली और झूमते हुए चले। भूख के मारे रास्ते ही में डलियाँ निकाल कर चखनी शुरू कर दीं। सिपाही कनखियों से देखता जाता था; मगर आँख चुरा लेता था। आखिर दोनों आदमी एक बजाज की दुकान पर पहुँचे। सिपाही ने खोजी की तरफ इशारा करके कहा — इनके अँगरखे के बराबर जामदानी निकाल दीजिए।

बजाज — हुजूर, अपने अँगरखे के लिए लें, तो कुछ हमें भी मिल रहे। इनका तो अंगरखा और पाजामा सब गज भर में तैयार हैं।

खोजी — निकालो, जामदानी निकालो। बहुत बातें न बनाओ। अभी एक धक्का दूँ, तो पचास लुढ़कनियाँ खाओ।

बजाज — लीजिए, क्या जामदानी है। बहुत बढ़िया! मोल-तोल दस रुपए गज। मगर सात रुपए गज से कौड़ी कम न होगी।

सिपाही — भई, हम तो पाँच रुपए के दाम देंगे।

बजाज — अब तकरार कौन करे। आप छह के दाम दे दें।

सिपाही — अच्छा, दो गज उतार दो।

सिपाही ने बजाज से सब मिला कर कोई पचीस रुपए का कपड़ा लिया और गट्ठा बाँध कर उठ खड़ा हुआ।

बजाज — रुपए?

सिपाही — अभी घर से आकर देंगे? जरा कपड़े पसंद तो करा लाएँ। यह हमारा साला बैठा है, हम अभी आए।

वह तो ले-दे कर चल दिया। खोजी अकेले रह गए। जब बहुत देर हो गई, तो बजाज ने गर्दन नापी — कहाँ चले आप! कहाँ, चले कहाँ?

खोजी — हम क्या किसी के गुलाम हैं?

बजाज — गुलाम नहीं हो तो और हो कौन? तुम्हारे बहनोई तुमको बिठा कर कपड़ा ले गए हैं।

खोजी पीनक से चौंके थे। सिपाही और बजाज में जब बातें हो रही थीं तब वह पीनक में थे। झल्ला कर बोले — अबे किसका बहनोई? और कौन साला? कुछ वाही हुआ है?

इतने में एक आदमी ने आकर खोजी से कहा — तुम्हारे बहनोई तुम्हें यह खत दे गए हैं। खोजी ने खोल कर पढ़ा तो लिखा था —

'हत् तेरे की, क्यों? खा गया न झाँसा? देख, अबकी फिर फाँसा। तब की बीवी बन के चपतियाया, अब की बहनोई बन के झाँसा दिया। और अफीम खाओगे?'

खोजी 'अरे!' करके रह गए। वाह रे बहुरूपिए, अच्छा घनचक्कर बनाया। खैर, और तो जो हुआ, वह हुआ, अब यहाँ से छुटकारा कैसे हो। बजाज इस दम टटरूँ-टूँ, और करौली पास नहीं। मगर एक दफे रोब जमाने की ठानी। दुकान के नीचे उतर कर बोले — इस फेर में भी न रहना! मैंने बड़े-बड़ों की गर्दनें ढीली कर दी है।

बजाज — यह रोब किसी और पर जमाइएगा। जब तक आप के बहनोई न आएँगे, दुकान से हिलने न दूँगा।

बारे थोड़ी ही देर में एक आदमी ने आकर बजाज को पचीस रुपए दिए और कहा — अब इनको छोड़ दीजिए।

34

इधर तो ये बातें हो रही थीं, उधर आज़ाद से एक आदमी ने आकर कहा — जनाब, आज मेला देखने न चलिएगा? वह-वह सूरतें देखने में आती हैं कि देखता ही रह जाय।

नाज से पायँचे उठाए हुए, शर्म से जिस्म को चुराए हुए!
नशए-बादए शबाब से चूर, चाल मस्ताना, हुस्न पर मगरूर।
सैकड़ों बल कमर को देती हुई, जाने ताऊस कब्क लेती हुई।

चलिए और मियाँ खोजी को साथ लीजिए। आज़ाद रंगीले थे ही, चट तैयार हो गए। सज-धज कर अकड़ते हुए चले। कोई पचास कदम चले होंगे कि एक झरोखे से आवाज आई —

खुदा जाने यह आराइश करेगी कत्ल किस-किसको;
तलब होता है शानः आईने को याद करते हैं।

मियाँ आज़ाद ने जो ऊपर नजर की, तो झरोखे का दरवाजा खोजी की आँख की तरह बन्द हो गया। आज़ाद हैरान कि खुदा, यह माजरा क्या है? यह जादू था, छलावा था, आखिर था क्या? आज़ाद के साथी ने यह रंग देखा, तो आहिस्ते से कहा — हजरत, इस फेर में न पड़िएगा।

इतने में देखा कि वह नाजनीन फिर नकाब उठाए झरोखे पर आ खड़ी हुई और अपनी महरी से बोली — फीनस तैयार कराओ, हम मेले जायँगे।

आज़ाद कुछ कहनेवाले ही थे कि ऊपर से एक कागज नीचे आया। आज़ाद ने दौड़ कर उठाया, तो मोटे कलम से लिखा था —

'दिल्लगी करती हैं परियाँ मेरे दीवाने से'।

आज़ाद पढ़ते ही उछल पड़े। यह शेर पढ़ा —

'हम ऐसे हो गए अल्लाहो-अकबर! ऐ तेरी कुदरत;
हमारे नाम से अब हाथ वह कानों पै धतरे हैं।'

इतने में एक महरी अन्दर से आई और मुसकरा कर मियाँ आज़ाद को इशारे से बुलाया। आज़ाद खुश-खुश महताबी पर पहुँचे, तो दिल बाग बाग हो गया। देखा, एक हसीना बड़े ठाट-बाट से एक कुर्सी पर बैठी है। मियाँ आज़ाद को कुर्सी पर बैठने का इशारा किया और बोली — मालूम होता है, आप चोट खाए हैं; किसी के जुल्फ में दिल फँसा है —

खुलते हैं कुछ इश्तियाक के तौर;
रुख मेरी तरफ, नजर कहीं और।

आज़ाद ने देखा तो इस नाजनीन की शक्ल व सूरत हुस्नआरा से मिलती थी। वही सूरत, वही गुलाब सा चेहरा! वही नशीली आँखें! बाल बराबर भी फर्क नहीं। बोले — बरसों इस कूचे की सैर की; मगर अब दिल फँसा चुके।

हसीना — तो बिसमिल्लाह, जाइए।

आज़ाद — जैसी हुजूर की मरजी।

हसीना — वाह री बददिमागी! कहिए, तो आपका कच्चा चिट्ठा कह चलूँ? मियाँ आज़ाद आप ही का नाम है न? हुस्नआरा से आप ही की शादी होनेवाली है न?

आज़ाद — ये बातें आपको कैसे मालूम हुई?

हसीना — क्यों, क्या पते की कहीं! अब बता ही दूँ? हुस्नआरा मेरी छोटी चचाजाद बहन है। कभी-कभी खत आ जाता है। उसने आपकी तसवीर भेजी और लिखा है कि उन्हें बंबई में रोक लेना। अब आप हमारे यहाँ ठहरें। मैं आपको आजमाती थी कि देखूँ, कितने पानी में हैं। अब मुझे यकीन आ गया कि हुस्नआरा से आपको सच्ची मुहब्बत है।

आज़ाद — तो फिर मैं यहीं उठ आऊँ?

हसीना — जरूर।

आज़ाद — शायद आपके घर में किसी को नागवार गुजरे?

हसीना — वाह, आप खूब जानते हैं कि कोई शरीफ़ज़ादी किसी अजनबी आदमी को इस रह बेधड़क अपने यहाँ न बुलाएगी। क्या मैं नहीं जानती कि तुम्हारे भाई साहब किसी गैर आदमी को बैठे देखेंगे, तो उनकी आँखों से खून टपकने लगेगा? मगर वह तो खुद इस वक़्त तुम्हारी तलाश में निकले हैं। बहुत देर से गए हुए हैं, आते ही होंगे। अब आप मेरे आदमी को भेज दीजिए। आपका असबाब ले आए।

आज़ाद ने खोजी के नाम रुक्का लिखा —

'ख्वाजा साहब,

असबाब ले कर इस आदमी के साथ चले आइए। यहाँ इत्तिफ़ाक़ से हुस्नआरा की बहन मिल गईं। यार, हम-तुम दोनों हैं किस्मत के धनी। यहाँ अफीम की दुकान भी करीब ही है।

तुम्हारा

आज़ाद।'

खोजी ने दिल में ठान ली कि अब जो आएगा, उसको खूब गौर से देखूँगा। अब की चकमा चल जाय, तो टाँग की राह निकल जाऊँ। दो दफे क्या जानें, क्या बात हो गई कि वह चकमा दे गया। उड़ती चिड़िया पकड़नेवाले हैं। हम भी अगर यहाँ रहते होते, तो उस मरदूद बहुरूपिए को चचा ही बना कर छोड़ते।

इतने में सामने एकाएक एक घसियारा घास का गट्ठा सिर पर लादे, पसीने में तर आ खड़ा हुआ और खोजी से बोला — हुजूर, घास तो नहीं चाहिए?

खोजी — (खूब गौर से देख कर) चल, अपना काम कर। हमें घास-वास कुछ नहीं चाहिए। घास कोई ओर खाते होंगे।

घसियारा — ले लीजिए हुजूर, हरी दूब है।

खोजी — चल बे चल, हम पहचान गए। हमसे बहुत चकमेबाजी न करना बचा। अब की पलेथन ही निकाल डालूँगा। तेरे बहुरूपिए की दुम में रस्सा।

इत्तिफ़ाक़ से घसियारा बहरा था। वह समझा, बुलाते हैं। इनकी तरफ आने लगा। तब तो मियाँ खोजी गुस्सा जब्त न कर सके और चिल्ला उठे — ओ गीदी, बस, आगे न बढ़ना; नहीं तो सिर धड़ से जुदा होगा। यह कह कर लपके और गट्ठा उनके ऊपर गिर पड़ा। तब आप गट्ठे के नीचे से गुर्राने लगे — अबे ओ

गीदी, इतनी करौलियाँ भोंकूँगा कि छठी का दूध याद आ जाएगा। बदमाश ने नाकों दम कर दिया। बारे बड़ी मुश्किल से आप गद्दे के नीचे से निकले और मुँह फुलाए बैठे थे कि आज़ाद का आदमी आकर बोला — चलिए, आपको मियाँ आज़ाद ने बुलाया है।

खोजी — किससे कहता है? कमबख्त अबकी संदेसिया बन कर आया। तब की घसियारा बना था। पहले औरत का भेस बदला! फिर सिपाही बना। चल, भाग।

आदमी — रुक्का तो पढ़ लीजिए।

खोजी — मैं जलती-बलती लड़की से दाग दूँगा, समझे? मुझे कोई लौंडा मुकर्रर किया है? तेरे जैसे बहुरूपिए यहाँ जेब में पड़े रहते हैं।

आदमी ने जा कर आज़ाद से सारा हाल कहा — हुजूर, वह तो कुछ झल्लाए से मालूम होते हैं। मैं लाख-लाख कहा किया, उन्होंने एक तो सुनी नहीं। बस, दूर ही दूर से गुर्राते रहे।

आज़ाद — खत का जवाब लाए?

आदमी — गरीबपरवर, कहता जाता हूँ कि करीब फटकने तो दिया नहीं जवाब किससे लाता?

ये बातें हो ही रही थीं कि उस हसीना के शौहर आ पहुँचे और कहने लगे — शहर भर घूम आया, सैकड़ों चक्कर लगाए, मगर मियाँ आज़ाद का कहीं पता न चला। सराय में गया, तो वहाँ खबर मिली कि आए हैं। एक साहब बैठे हुए थे, उनसे पूछा तो बड़ी दिल्लगी हुई। ज्यों ही मैं करीब गया, तो वह कुलबुला कर उठ खड़े हुए — कौन? आप कौन? मैंने कहा — यहाँ मियाँ आज़ाद नामी कोई साहब तशरीफ लाए हैं? बोले — फिर आपसे वास्ता? मैंने कहा — साहब, आप तो काटे खाते हैं! तो मुझे गौर से देख कर बोले — इस बहुरूपिए ने तो मेरी नाक में दम कर दिया। आज भलेमानस की सूरत बना कर आए हैं।

बेगम — जरी ऊपर आओ देखो, हमने मियाँ आज़ाद को घर बैठे बुलवा लिया। न कहोगे।

आज़ाद — आदाब बजा लाता हूँ।

मिर्जा — हजरत, आपको देखने के लिए आँखें तरसती थीं।

आज़ाद — मेरी वजह से आपको बड़ी तकलीफ हुई।

मिर्जा — जनाब, इसका जिक्र न कीजिए। आपसे मिलने की मुद्दत से तमन्ना थी।

उधर मियाँ खोजी अपने दिल में सोचे कि बहुरूपिए को कोई ऐसा चकमा देना चाहिए कि वह भी उम्र भर याद करे। कई घंटे तक इसी फिक्र में गोते खाते रहे। इतने में मिर्जा साहब का आदमी फिर आया। खोजी ने उससे खत ले कर पढ़ा, तो लिखा था — आप इस आदमी के साथ चले आइए, वर्ना बहुरूपिया आपको फिर धोखा देगा। भाई, कहा मानो, जल्द आओ। खोजी ने आज़ाद की लिखावट पहचानी, तो असबाब वगैरह, समेट कर खिदमतगार के सिपुर्द किया और कहा — तू जा, हम थोड़ी देर में आते हैं। खिदमतगार तो असबाब ले कर उधर चला, इधर आप बहुरूपिया के मकान का पता पूछते हुए जा पहुँचे। इत्तिफ़ाक़ से बहुरूपिया घर में न था, और उसकी बीवी अपने मैके भेजने के लिए कपड़ों को एक पार्सल बना रही थी। तीस रुपए की एक गड्डी भी उसमें रख दी थी। पार्सल तैयार हो चुका, तो लौंडी से बोली — देख, कोई पढ़ा-लिखा आदमी इधर से निकले, तो इस पार्सल पर पता लिखवा लेना। लौंडी राह देख रही थी कि मियाँ खोजी जा निकले।

खोजी — क्यों नेकबख्त, जरा पानी पिला दोगी?

लौंडी यह सुनते ही फूल गई। खोजी की बड़ी खातिरदारी की, पान खिलाया, हुक्का पिलाया और अन्दर से पार्सल ला कर बोली — मियाँ, इस पर पता तो लिख दो।

खोजी — अच्छा, लिख दूँगा। कहाँ जायगा। किसके नाम है? कौन भेजता है?

लौंडी — मैं बीबी से सब हाल पूछ आऊँ, बतलाऊँ।

खोजी — अच्छी बात है, जल्द आना।

लौंडी दौड़ कर पूछ आई और पता-ठिकाना बताने लगी।

खोजी चकमा देने तो गए ही थे, झट पार्सल पर अपना लखनऊ का पता लिख दिया और अपनी राह ली। लौंडी ने फौरन डाकखाने में पार्सल दिया और रजिस्ट्री कराके चलती हुई। थोड़ी देर के बाद बहुरूपिया जो घर में घुसा, तो बीवी ने कहा — तुम भी बड़े भुलक्कड़ हो। पार्सल पर पता तो लिखा ही न था। हमने लिखवा कर भेज दिया।

बहुरूपिया — देखूँ, रसीद कहाँ है? (रसीद पढ़ कर) ओफ! मार डाला। बस, गजब ही हो गया।

बीवी — खैर तो है?

बहुरूपिया — तुमसे क्या बताऊँ? यह वही मर्द है, जिससे मैंने कई रुपए ऐंठे थे। बड़ा चकमा दिया।

36

मियाँ आज़ाद मिर्जा साहब के साथ जहाज की फिक्र में गए। इधर खोजी ने अफीम की चुस्की लगाई और पलंग पर दराज हुए। जैनब लौंडी जो बाहर आई, तो हजरत को पीनक में देख कर खूब खिलखिलाई और बेगम से जाकर बोली — बीबी, जरी परदे के पास आइए, तो लोट-लोट जाइए। मुआ खोजी अफीम खाए औंधे मुँह पड़ा हुआ है। जरी आइए तो सही। बेगम ने परदे के पास से झाँका; तो उनको एक दिल्लगी सूझी। झप से एक बत्ती बनाई और जैनब से कहा कि ले, चुपके से इनकी नाक में बत्ती कर। जैनब एक ही शरीर; बिस की गाँठ। वह जा कर बत्ती में तीता मिर्च लगा लाई और खोजी की खटिया के नीचे घुस कर मियाँ खोजी की नाक में आधी बत्ती दाखिल ही तो कर दी। उफ! इस वक़्त मारे हँसी के लिखा नहीं जाता। खोजी जो कुलबुला कर उठे, तो आःछी, छीं-छीं, ओ गेद-आःछीः। ओ गीदी कहने को थे कि छींक ने जबान बन्द कर दी। इत्तिफ़ाक़ से पड़ोस में एक पुराने फैशन के भले आदमी नौकरी की तलाश में एक हाकिम के पास जानेवाले थे। वह जैसे ही सामने आए, वैसे ही खोजी ने छींका। बेचारे अन्दर चले गए। पान खाया, जरा देर इधर-उधर टहले। फिर ड्योढ़ी तक पहुँचे कि छींक पड़ी। फिर

अन्दर गए। चिकनी डली खाई। रवाना होने ही को थे कि इधर आःछीं की आवाज आई और उधर बीवी ने लौंडी दौड़ायी कि चलिए, अन्दर बुलाती हैं। अन्दर जाके उन्होंने जूते बदले, पानी पिया और रुख़सत हुए। बाहर आकर इक्के पर बैठने ही को थे कि खोजी ने नाक की दुनाली बंदूक से एक और फैर दाग दी। तब तो बहुत ही झल्लाए। हत तेरी नाक काटूँ और पाऊँ तो कान भी साफ कतर लूँ। मर्दक ने मिर्चों की नास ली है क्या? नाक, क्या नाक छींकनी की झाड़ी है। मनहूस ने घर से निकलना मुश्किल कर दिया। बीवी अन्दर से बोली कि नाक ही कटे मुए की। जरी जैनब को बुला कर पूछो तो कि यह किस नकटे को बसाया है? अल्लाह करे, गधे की सवारी नसीब हो।

मियाँ-बीवी पानी पी-पी कर बेचारे को कोस रहे थे। उधर खोजी का छींकते-छींकते हुलिया बिगड़ रहा था। बेगम साहबा घर के अन्दर हँसी के मारे लोटी पड़ती थीं। मगर वाह री जैनब! वह दम साधे अब तक चारपाई के नीचे दबकी पड़ी थी। मगर मारे हँसी के बुरा हाल था। जब छींकों का जोर जरा कम हुआ, तो उन्होंने गुल मचाया, ओ गीदी, भला बे बहुरूपिए, निकाली न कसर तूने! अच्छा बचा, चचा ही बना कर छोड़ूँ तो सही। चारपाई से उठे, मुँह-हाथ धोया। ठंडे-ठंडे पानी से खूब तरेड़े दिए; खोपड़ी पर खूब पानी डाला, तब जरा तसकीन हुई। बैठ कर बहुरूपिए को

कोसने लगे — खुदा करे, साँप काटे मरदूद को। न जाने मेरे साथ क्या जिद पड़ गई है। कल तेरे छप्पर पर चिनगारी न रख दी, तो कहना।

यों कोसते हुए उन्होंने सब दरवाजे बन्द कर लिए कि बहुरूपिया फिर न आ जाय। अब तो जैनब चकराई। कलेजा धक-धक करने लगा और करीब था कि चीख कर निकल भागे, मगर जब मियाँ खोजी चारपाई पर दराज हो गए और नाक पर हाथ रख लिया, तो जैनब की जान में जान आई। चुपके से खिसकती हुई निकली और अन्दर भागी।

बेगम — जाओ, फिर नाक में बत्ती करो।

जैनब — ना बीबी, अब मैं नहीं जाने की। सिड़ी-सौदाई आदमी के मुँह कौन लगे।

जैनब का देवर दस बरस का छोकड़ा बड़ा ही शरीर था। नस-नस में शरारत भरी हुई थी। कमरे में जाके झाँका, तो देखा, हजरत पीनक ले रहे हैं। कुत्ता घर में बँधा था। झट उसको जंजीर से खोल जंजीर में रस्सी बाँधी और बाहर ले जा कर चारपाई के पाए में कुत्ते को बाँध दिया। खोजी की टाँग में भी वही रस्सी बाँध दी और चंपत हो गया। कुत्ते ने जो भूँकना शुरू किया, तो खोजी चौक कर उठे। देखते हैं तो टाँग में रस्सी और

रस्सी में कुत्ता। अब इधर खोजी चिल्लाते हैं, उधर कुत्ता चिल्ल-पों मचाता है। जैनब दौड़ी हुई घर में से आई। खैर तो है! क्या हुआ? अरे, तुम्हारी टाँग में कुत्ता कौन बाँध गया?

खोजी — यह उसी बहुरूपिए मर्दक का काम है, किसी और को क्या पड़ी थी?

जैनब — मगर, मुआ आया किधर से? किवाड़े तो सब बन्द पड़े हुए हैं।

खोजी — यही तो मुझे भी हैरत है। मगर अब की मैंने भी नाक पर इस जोर से हाथ रखा कि बहुरूपिया भी मेरा लोहा मान गया होगा। मगर यह तो सोचो कि आया किस तरफ से?

जैनब — मियाँ, कहते डर मालूम होता है। इस जगह एक शैतान रहता है।

खोजी — शैतान! अजी नहीं, यह उस बहुरूपिए ही का काम है।

जैनब — अब तुम यों थोड़े ही मानोगे। एक दिन शैतान चारपाई उलट देगा, तो मालूम होगा।

खोजी — यह बात थी, तो अब तक हमसे क्यों न कहा भला! जान लोगी किसी की?

जैनब — मैं भी कहूँ कि बन्द दरवाजे से कुत्ता आया कैसे? मेरा माथा ठनका था, मुदा बोली नहीं।

खोजी — अब आज़ाद आए, तो उनको आड़े हाथों लूँ। वह भूत चुड़ैल एक के भी कायल नहीं। सोएँ तो मालूम हो।

खोजी तो इसी फिक्र में बैठे-बैठे पीनक लेने लगे। आज़ाद और मिर्जा साहब आए, तो उन्हें ऊँघते देख कर दोनों हँस पड़े।

आज़ाद — (खोजी के कान में) क्या पहुँच गए?

खोजी ने हाँक लगाई — 'बहुरूपिया, बहुरूपिया', और इस जोर से आज़ाद का हाथ पकड़ लिया कि अपने हिसाब चोर को गिरफ्तार किया था। आँखें तो हजरत की बन्द है, मगर 'बहुरूपिया बहुरूपिया' गुल मचाते जाते हैं। मियाँ आज़ाद ने इस जोर से झटका दिया कि हाथ छूट गया और खोजी फट से मुँह के बल जमीन पर आ रहे। आज़ाद ने गुल मचाया कि भागा, भागा, वह बहुरूपिया भागा जाता हे। खोजी भी 'लेना-लेना' कहते हुए लपके। दस ही पाँच कदम चल कर आप हाँफ गए और बोले — 'निकल गया, निकल गया।' मैंने तो गर्दन नापी थी, मगर नाली बीच में आ गई इससे बच गया, वर्ना पकड़ ही लेता।

आज़ाद — अजी, मैं तो देख ही रहा था कि आप बहुरूपिए के कल्ले तक पहुँच गए थे।

इतने में एक काजी साहब मियाँ आज़ाद से मिलने आए। आज़ाद ने नाम पूछा, तो बोले — अब्दुल कुद्दूस।

खोजी — क्या! उस्तु खुद्दूस! यह नई गढ़त का नाम है।

आज़ाद — निहायत गुस्ताख आदमी हो तुम। बस, चोंच सँभालो।

खोजी की आँखें बन्द थीं। जब आज़ाद ने डाँट बताई तो आपने आँखें खोल दीं। काजी साहब पर नजर पड़ी। देखते ही आग हो गए और बकने लगे — और देखिएगा जरी, मरदूद आज मौलाना बन कर आया है। भई, गिरगिट के से रंग बदलता है। उस दिन घसियारा बना था; आज मौलवी बन बैठा।

काजी साहब बहुत झेंपे। मगर आज़ाद ने कहा कि जनाब, यह दीवाना है। यों ही ऊलजलूल बका करता है।

जब काजी साहब चले गए, तब आज़ाद ने खोजी को खूब ललकारा — नामाकूल! बिना देखे-भाले, बेसमझे-बूझे, जो चाहता है, बक देता है। कुछ पढ़े-लिखे होते, तो आदमियों की कदर करते। लिखे न पढ़े, नाम मुहम्मद फाजिल।

खोजी — जी हाँ, बस, अब आप ही बड़े लुकमान बने हैं। हमको यह समझाते हैं कि कोई गधा है। और यहाँ अरबी चाटे बैठे हैं।

अफआल, फालुआ मा फालअत। और सुनिए — गल्लम्, गल्लमा, गल्लूम।

मिर्जा — यह कौन सीगा है भाई?

खोजी — जी, यह सीगा अल्लम-गल्लम है। यहाँ दीवान के दीवान जबान पर हैं। मगर मुफ्त की शेखी जताने से क्या फायदा!

मिर्जा साहब के घर के सामने एक तालाब था। खोजी अभी अपने कमाल की डींग मार ही रहे थे कि शोर मचा — एक लड़का डूब गया। दौड़ो, दौड़ो। पैराक अपने करतब दिखाने लगे। कोई पुल पर से कूदा धम। कोई चबूतरे से आया तड़। कोई मल्लाही चीरता है, कोई खड़ी लगा रहा है। नौसिखिये अपने किनारे ही पर हाथ पाँव मारते हैं, और डरपोक आदमी तो दूर से ही सैर देख रहे हैं। भई, पानी और आग से जोर नहीं चलता, इनसे दूर ही रहना चाहिए।

आज़ाद ने जो शोर सुना तो दौड़े हुए पुल पर आए और धम से कूद पड़े। गोता लगाते ही उस लड़के का हाथ मिल गया। निकाल कर किनारे लाए, तो देखा, जान बाकी है। लोगों ने मिल कर उसको उलटा लटकाया। जब पानी निकल गया, तो लड़के को होश आया।

अब सुनिए कि वह लड़का बंबई के एक पारसी रईस रुस्तम जी का एकलौता लड़का था। अभी आज़ाद लड़के को होश में लाने की फिक्र ही कर रहे थे कि किसी ने जाकर रुस्तम जी को यह खबर सुनाई। बेचारे दौड़े आए और आज़ाद को गले से लगा लिया।

रुस्तम — आपने अपने लड़के को डूबने से बचाया। बंदा आपका बहुत शुक्रगुजार है।

आज़ाद — अगर आपस में इतनी हमदर्दी भी न हो, तो आदमी ही क्या?

खोजी — सच है, सच है। हम ऐसे शेरों के तुम ऐसे शेर ही होते हैं। मैं भी अगर यहाँ होता, तो जरूर कूद पड़ता। मगर यार, अब दुआ माँगनी पड़ी कि यह मोटी तोंदवाला भी किसी दिन गोता खाए, तो फिर यारों के गहरे हैं।

आज़ाद — (पारसी से) मैं बड़े मौके से पहुँच गया!

रुस्तम — अपने को बड़ी खुशी का बातचीत।

खोजी — कुछ उल्लू का पट्ठा मालूम होता है।

रुस्तम — काल आप आवे, तो हमारा लेडी लोग आपको गाना सुनावें।

खोजी — अजी, क्या बेवक़्त की शहनाई बजाते हो? अजी, कुछ अफीम घोलो, चुस्की लगाओ, मिठाई मँगवाओ। रईस की दुम बने हैं।

आज़ाद — कल मैं जरूर आऊँगा।

रईस — आप तो अपना का बाप है।

खोजी — बल्कि दादा। खूब पहचाना, वाह पट्ठे!

रुस्तम जी आज़ाद से यह वादा ले कर चले गए, तो खोजी और आज़ाद भी घर आए। शाम को रुस्तम जी ने पाँच हजार रुपयों की एक थैली आज़ाद के पास भेजी और खत में लिखा कि आप इसे जरूर कबूल करें। मगर आज़ाद ने शुक्रिये के साथ लौटा दिया।

37

जरा ख्वाजा साहब की किता देखिएगा। वल्लाह, इस वक़्त फोटो उतारने के काबिल है। न हुआ फोटो। सुबह का वक़्त है। आप खारुए की एक लुंगी बाँधे पीपल के दरख्त के साये में खटिया बिछाए ऊँघ रहे हैं, मगर गुड़गुड़ी भी एक हाथ में थामे

हैं। चाहे पिए न, मगर चिलम पर कोयले दहकते रहें? इत्तिफ़ाक़ से एक चील ने दरख्त पर से बीट कर दी। तब आप चौंके और चौंकते ही आ ही गए। बहुत उछले-कूदे और इतना गुल मचाया कि मुहल्ला भर सिर पर उठा लिया। हत तेरे गीदी की, हमें भी कोई वह समझ लिया है। आज चील बन कर आया है। करौली तो वहाँ तक पहुँचेगी नहीं; तोड़ेदार बंदूक होती, तो वह ताक के निशाना लगाता कि याद ही करता।

आज़ाद — यह किस पर गर्म हो रहे हो ख्वाजा साहब?

खोजी — और ऊपर से पूछते हो, किस पर गर्म हो रहे हो? गर्म किस पर होंगे! वही बहुरूपिया है, जो मौलवी बन कर आया था।

मिर्जा — तो फिर अब उसे कुछ सजा दीजिए।

खोजी — सजा क्या खाक दूँ! मैं जमीन पर, वह आसमान पर। कहता तो हूँ कि तोड़ेदार बंदूक मँगवा दीजिए, तो फिर देखिए, कैसा निशाना लगाता हूँ। मगर आपको क्या पड़ी है। जाएगा तो गरीब ख्वाजा के माथे ही।

मिर्जा — हम बताएँ, एक जीना मँगवा दें और आप पेड़ पर चढ़ जायँ; भाग कर जायगा कहाँ?

खोजी — (उछल कर) लाना हाथ।

मिर्जा साहब ने आदमी से कहा कि बड़ा जना अन्दर से ले आओ; मगर जल्द लाना। ऐसा न हो कि बैठ रहो।

खोजी — हाँ मियाँ, इसी साल आना। मेरे यार, देखो, ऐसा न हो कि गीदी भाग निकले।

आदमी जब अन्दर सीढ़ी लेने गया, बेगम ने पूछा — सीढ़ी क्या होगी?

आदमी — हुजूर, वही जो सिड़ी हैं खफकान, उन पर कहीं चील ने बीट कर दी; तो अब सीढ़ी लगा कर पेड़ पर चढ़ेंगे।

हँसोड़ औरत, खूब ही खिलखिलाई और फौरन, छत पर जा पहुँची। आबी दुपट्टा खिसका जाता है, जूड़ा खुला पड़ता है और जैनब को ललकार रही हैं कि उससे कहो, जल्द सीढ़ी ले जाय। मियाँ खोजी ने सीढ़ी देखी, तो कमर कसी और काँपते हुए जीने पर चढ़ने लगे। जब आखिरी जीने पर पहुँच कर दरख्त की टहनी पर बैठे, तो चील की तरफ मुँह करके बोले — गाँस लिया, गाँस लिया; फाँस लिया, फाँस लिया, हत तेरे गीदी की, अब जाता कहाँ है? ले, अब मैं भी कल्ले पर आ पहुँचा। बचा, आज ही तो फँसे हो। रोज झाँसे देकर उड़नछू हो जाया करते थे। अब सोचो तो, जाओगे किधर से? ले, आइए बस; अब चोट के सामने। मैंने भी करौली तेज कर रखी है।

इतने में पीछे फिर कर जो देखते हैं, तो जीना गायब। लगे सिर पीटने। इधर चील भी फुर से उड़ गई। इधर के रहे न उधर के। बेगम साहबा ने जो यह कैफियत देखी, तो तालियाँ बजा कर हँसने लगीं।

खोजी — यह मिर्जा साहब कहाँ गए। जारी चार आँखें तो कीजिए हमसे। आखिर हमको आसमान पर चढ़ा कर गायब कहाँ हो गए? अरे यारो, कोई साँस डकार ही नहीं लेता। अरे मियाँ आज़ाद! मिर्जा साहब! कोई है, या सब मर गए? आखिर हम कब तक यहाँ टँगे रहें?

बेगम — अल्लाह करे, पीनक आए।

खोजी — यह कौन बोला? (बेगम को देख कर) वाह हुजूर, आपको तो ऐसी दुआ न देनी चाहिए।

मियाँ आज़ाद सोचे कि खोजी अफीमी आदमी, ऐसा न हो, ऐसा न हो, पाँव डगमगा जायँ, तो मुफ्त का खून हमारी गर्दन पर हो। आदमी से कहा — जीना लगा दो। बेगम ने जो सुना, तो हजारों कसमें दीं — खबरदार, सीढ़ी न लगाना। बारे सीढ़ी लगा दी गई और खोजी नीचे उतरे। अब सबसे नाराज हैं। सबको आँखें दिखा रहे हैं — आप लोगों ने क्या मुझे मसखरा समझ लिया है। आप लोगों जैसे मेरे लड़के होंगे।

इतने में एक आदमी ने आकर मिर्जा साहब को सलाम किया।

मिर्जा — बन्दगी। कहाँ रहे सलारी, आज तो बहुत दिन के बाद दिखाई दिए।

सलारी — कुछ न पूछिए खुदावंद, बड़ी मुसीबत में फँसा हूँ।

मिर्जा — क्या है क्या? कुछ बताओ?

सलारी — क्या बताऊँ, कहते शर्म आती है। परसों मेरा दामाद मेरी लड़की को लिए गाँव जा रहा था। जब थाने के करीब पहुँचा, तो थानेदार साहब घोड़े पर सवार हो कर कहीं जा रहे थे। इनको देखते ही बाग रोक ली और मेरे दामाद से पूछा — तुम कौन हो? उसने अपना नाम बताया। अब थानेदार साहब इस फिक्र मे हुए कि मेरी लड़की को बहला कर रख लें और दामाद को धता बता दें। बोले — बदमाश, यह तेरी बीवी नहीं हो सकती। सच बता, यह कौन है? और तू इसे कहाँ से भगा लाया है?

दामाद — यह मेरी जोरू है।

थानेदार — सूअर, हम तेरा चालान कर देंगे। तेरी ऐसी किस्मत कहाँ कि यह हसीना तुझको मिले! अगर तू हमारी नौकरी कर ले

तो अच्छा; नहीं तो हम चालान करते हैं। (औरत से) तुम कौन हो, बोलो?

दामाद — दरोगा जी, आप मुझसे बातें कीजिए।

मेरी लड़की मारे शर्म के गड़ी जाती थी। गर्दन झुका कर थर-थर काँपती थी अपने दिल में सोचती थी कि अगर जमीन में गढ़ा हो जाता, तो मैं धँस जाती। सिपाही अलग ललकार रहा है और थानेदार अलग कल्ले पर सवार।

दामाद — मेरे साथ किसी सिपाही को भेज दीजिए। मालूम हो जाय कि यह मेरी ब्याहता बीवी है या नहीं।

थानेदार — चुप बदमाश, मैं बदमाशों की आँख पहचान जाता हूँ। तुम कहाँ के ऐसे खुशनसीब हो कि ऐसी परी तुम्हारे हाथ आई। यह सब बनावट की बातें हैं।

सिपाही — हाँ, दारोगा जी, यही बात है।

आखिर थानेदार साहब मेरी लड़की को एक दरख्त की आड़ में ले गए ओर सिपाही ने मेरे दामाद को दूसरी तरफ ले जाके खड़ा किया। थानेदार बोला — बीवी, जरा गर्दन तो उठाओ। भला तुम इस परकटे के काबिल हो! खुदा ने चेहरा तो नूर सा दिया है, लेकिन शौहर लंगूर सा।

लड़की — मुझे वह लंगूर ही पसंद है।

इधर तो थानेदार साहब यह इजहार ले रहे थे, उधर सिपाही मेरे दामाद को और ही पट्टी पढ़ा रहे थे। भाई, सुनो, सूबेदार साहब के सामने तो मैं उनकी सी कह रहा था। न कहूँ, तो जाऊँ कहाँ? मगर इनकी नीयत बहुत खराब है। छटा हुआ गुरगा है।

दामाद — और कुछ नहीं, बस, मैं समझ गया कि फाँसी जरूर पाऊँगा। अब तो मुझे चाहे जाने दे या न जाने दे मैं इसे बेमारे न रहूँगा। अब बेइज्जती में बाकी क्या रह गया।

थानेदार — सिपाही, सिपाही, यह कहती हैं कि यह आदमी इन्हें भगा लाया है।

लड़की — जिसने यह कहा हो, उस पर आसमान फट पड़े।

दामाद — अब आपकी मरजी क्या है? जो हो, साफ-साफ कहिए।

खैर, थानेदार साहब एक कुर्सी पर डट गए और मेरी लड़की से कहा कि तुम इस सामनेवाली कुर्सी पर बैठो। अब खयाल कीजिए कि गृहस्थ औरत बिना घूँघट निकाले कुएँ तक पानी भरने भी नहीं जाती, वह इतने आदमियों के सामने कुर्सी पर कैसे बैठती। सिपाही झुक-झुक कर देख रहे थे और वह बेचारी गर्दन

झुकाए बुत की तरह खड़ी थी। तब थानेदार ने धमक कर कहा — तुम दस बरस के लिए भेजे जाओगे। पूरे दस बरस के लिए!

दामाद — जब कोई जुर्म साबित हो जाय।

थानेदार — हाँ, आप कानून भी जानते हैं? तो हम अब जाब्ते की कार्रवाई करें।

दामाद — यह कुल कार्रवाई जाब्ते ही की तो है। खैर, इस वक़्त तो आपके बस में हूँ, जो चाहे कीजिए। मगर मेरा खुदा सब देख रहा है।

थानेदार — तुम हमारा कहा क्यों नहीं मान लेते? हम बस, इतना चाहते हैं कि तुम नौकरी कर लो और अपनी जोरू को ले कर यहीं रहा करो।

दामाद — आपसे मैं अब भी मिन्नत से कहता हूँ कि इस बात को दिल से निकाल डालिए। नहीं तो बात बढ़ जायगी।

इतने में किसी ने पीछे से आकर मेरे दामाद की मुश्कें कस लीं और ले चले; और एक सिपाही मेरी लड़की को थानेदार साहब के घर की तरफ ले चला। अब रात का वक़्त है। एक कमरे में थानेदार लड़की के पैरों पर गिर पड़ा। उसने एक ठोकर दी और झपट कर इस तेजी से भागी कि थानेदार के होश उड़ गए। अब

गौर कीजिए कि कमसिन औरत, परदेस का वास्ता, अँधेरी रात, रास्ता गुम, मियाँ नदारद। सोची, या खुदा कहाँ जाऊँ और क्या करूँ? कभी मियाँ की मुसीबत पर रोती, कभी अपनी हालत पर। इस तरह गिरती पड़ती चली जाती थी कि एक तिलंगे से भेंट हो गई। बोला — कौन जाता है? कौन जाता है छिपा हुआ? लड़की थर-थर काँपने लगी। डरते-डरते बोली — गरीब औरत हूँ। रास्ता भूल कर इधर निकल आई। आखिर बड़ी मुश्किल से कानों का करन-फूल दे कर अपना गला छुड़ाया। आगे बढ़ी, तो उसका शौहर मिल गया। सिपाहियों ने उसे एक मकान में बन्द कर दिया था, मगर वह दीवार फाँद कर निकल भागा आ रहा था। दोनों ने खुदा का शुक्र किया और एक सराय में रात काटी। सुबह को मेरे दामाद ने थानेदार को घोड़े पर से खींच कर इतनी लकड़ियाँ मारीं कि बेदम हो गया। गाँववाले तो थानेदार के दुश्मन थे ही, एक ने भी न बचाया; बल्कि जब देखा कि अधमरा हो गया, तो दो-चार ने लातें भी जमाई। अब मेरा दामाद मेरे घर में छिपा बैठा है। बतलाइए, क्या करूँ?

खोजी — मुझे तो मालूम होता है कि यह भी उसी बहुरूपिए की शरारत थी।

सलारी — कौन बहुरूपिया?

मिर्जा — तुम्हारी समझ में न आएगा। यह किस्सा-तलब बात है।

सलारी — तो फिर मुझसे क्या हुक्म होता है? हम तो गरीब टके के आदमी हैं। मगर आबरूदार हैं।

आज़ाद — बस, जा कर चैन करो। जब शोर-गुल मचे, तो आना। सलाह की जायगी।

सलारी ने सलाम किया और चला गया।

38

खोजी ने एक दिन कहा — अरे यारो, क्या अंधेर है। तुम रूम चलते-चलते बुड्ढे हो जाओगे। स्पीचें सुनीं, दावतें चखीं, अब बकचा सँभालो और चलो। अब चाहे इधर की दुनिया उधर हो जाय, हम एक न मानेंगे। चलिए, उठिए। कूच बोलिए।

आज़ाद — मिर्जा साहब, इतने दिनों में खोजी ने एक यही तो बात पक्की कही। अब जहाज का जल्द इंतजाम कीजिए।

खोजी — पहले यह बताइए कि कितने दिनों का सफर है?

आज़ाद — इससे क्या वास्ता? हम कभी जहाज पर सवार हुए हों तो बताएँ।

खोजी — जहाज! हाय गजब! क्या तरी-तरी जाना होगा? मेरी तो रूह काँपने लगी। भैया, मैं नहीं जाने का।

आज़ाद — अजी, चलो भी, वहाँ तुरकी औरत के साथ तुम्हारा ब्याह कर देंगे।

खोजी — खुश्की-खुश्की चलो तो भई, मैं चलूँगा। समुद्र में जाते पाँव डगमगाता है।

मिर्जा — जनाब, आपको शर्म नहीं आती? इतनी दूर तक साथ आए, अब साथ छोड़ देते हो? डूब मरने की बात है।

खोजी — क्या खूब! यों भी डूबूँ और वों भी डूबूँ। खुश्की ही खुश्की क्यों नहीं चलते?

मिर्जा — आप भी वल्लाह, निरे चोंच ही रहे। खुश्की की राह से कितने दिनों में पहुँचोगे भला? खुश्की की एक ही कही।

खोजी — अब आपसे हुज्जत कौन करे। जहाज का कौन एतबार। जरा किसी सूराख की राह से पानी आया, और बस, पहुँचे जहन्नुम सीधे।

आज़ाद — तो न चलोगे? साफ-साफ बता दो। अभी सवेरा है।

खोजी — चलें तो बीच खेत, मगर पानी का नाम सुना और कलेजा दहल उठा। भला क्यों साहब, यह तो बताइए कि समुद्र का पाट गंगा के पाट से कोई दूना होगा या कुछ कम-बेश?

मिर्जा — जी, बस और क्या। चलिए, आपको समुंदर दिखलावें न, थोड़े ही फासले पर है।

खोजी — क्यों नहीं। हमको ले चलिए और झप से चपरगट्टू करके जहाज पर बिठा दीजिए। एक शर्त से चलते हैं। बेगम साहबा जमानत करें। हमारे सिर की कसम खायँ कि जबरदस्ती न करेंगे।

आज़ाद — इसमें क्या दिक्कत है। चलिए, हम बेगम साहबा से कहलाए देते हैं। आप और आपके बाप, दोनों के सिर की कसम खा लें तो सही।

मिर्जा — हाँ-हाँ, वह जमानत कर देंगी। आइए, उठिए।

मियाँ आज़ाद और मिर्जा, दोनों मिल कर गए और बेगम से कहा — इस सिड़ी से इतना कह देना कि तू जहाज देखने जा। ये लोग जबरदस्ती सवार न करेंगे। बेगम साहबा ने जो सारी दास्तान सुनी, तो तिनक कर बोलीं कि हम न कहेंगे। आप लोगों ने जरा सी बात न मानी और सीढ़ी हटा ली। अच्छा, खैर, परदे के पास बुला लो।

खोजी ने परदे के पास आकर सलाम किया; मगर जवाब कौन दे। बेगम साहबा तो मारे हँसी के लोटी जाती हैं। मियाँ आज़ाद के खयाल से अपनी चुलबुलाहट पर लजाती भी हैं और खिलखिलाती भी। शर्म और हँसी, दोनों ने मिल कर रुखसारों को और भी सुर्ख कर दिया। इतने में खोजी ने फिर हाँक लगाई कि हुजूर ने गुलाम को क्यों याद फरमाया है?

मिर्जा — कहती हैं कि हम जमानत किए लेते हैं।

खोजी — आप रहने दीजिए, उन्हीं को कहने दीजिए।

बेगम — ख्वाजा साहब, बन्दगी। आप क्या पूछते हैं।

खोजी — ये लोग मुझे जहाज-दिखाने लिए जाते हैं। जाऊँ या न जाऊँ? जो हुक्म हो, वह करूँ।

बेगम — कभी भूले से न जाना। नहीं फिर के न आओगे।

खोजी — आप इनकी जमानत करती हैं।

बेगम — मैं किसी को जामिन-वामिन नहीं होती। 'जर दीजिए जामिन न हूजिए'। ये डुबो ही देंगे। मुई करौली रखी ही रहेगी।

खोजी — चलिए, बस, हद हो गई। अब हम नहीं जाने के।

आज़ाद — भई, तुम जरा साथ चल कर सैर तो देख आओ।

खोजी — वाह! अच्छी सैर है। किसी की जान जाय, आपने नजदीक सैर है। उस जानेवाले पर तीन हरफ।

खैर, समझा-बुझा कर दोनों आदमी खोजी को ले चले। जब समुद्र के किनारे पहुँचे तो खोजी उसे देखते ही कई कदम पीछे हटे और चीख पड़े। फिर दस पाँच कदम पीछे खिसके और रोने लगे। या खुदा बचाइए! लहरें देखते ही किसी ने कलेजे को मसोस लिया।

मिर्जा — क्या लुत्फ है! खुदा की कसम, जी चाहता है, फाँद ही पड़ूँ।

खोजी — कहीं भूल से फाँदने वाँदने का इरादा न करना। हयाबार के लिए एक चुल्लू काफी है।

आज़ाद — अजब मसखरा है भई एक आँख से रोता है, एक आँख से हँसता है।

इतने में दो-चार मल्लाह सामने आए। खोजी ने जो उन्हें गौर से देखा, तो मिर्जा साहब से बोले — ये कौन है भई? इनकी तो कुछ वजा ही निराली है। भला, ये हमारी बोली समझ लेंगे?

मिर्जा — हाँ, हाँ, खूब। उर्दू खूब समझते हैं।

खोजी — (एक मल्लाह से) क्यों भई माँझी, जहाज पर कोई जगह ऐसी भी है, जहाँ समुंदर नजर न आए और हम आराम से बैठे रहें? सच बताना उस्ताद! अजी, हम पानी से बहुत डरते हैं भई!

माँझी — हम आपको ऐसी जगह बैठा देंगे, जहाँ पानी क्या, आसमान तो सूझ ही न पड़े।

खोजी — अरे, तेरे कुरबान। एक बात और बता दो। गन्ने मिलते जायँगे राह में या उनका अकाल है?

माँझी — गन्ने वहाँ कहाँ? क्या कुछ मंडी है? अपने साथ चाहे जितने ले चलिए।

खोजी — हाथ, गँड़ेरियाँ ताजी-ताजी खाने में न आएँगी। भला हलवाई की दुकान तो होगी? आखिर ये इतने शौकीन अफीमची जो जाते हैं, तो खाते क्या हैं?

माँझी — अजी, जो चाहो, साथ रख लो।

खोजी — और जो मुँह-हाथ धोने को पानी की जरूरत हो तो कहाँ से आवे?

आज़ाद — पागल है पूरा! इतना नहीं समझता कि समुंदर में जाता है और पूछता है कि पानी कहाँ से आएगा।

खोजी — तो आप क्यों उलझ पड़े? आपसे पूछता कौन है? क्यों यार माँझी, भला हम गन्ने यहाँ से बाँध ले चले और जहाज पर चूसें, मगर छिलके फेंकेंगे कहाँ। आखिर हम दिन भर में चार-छह पौंड़े खाया ही चाहे।

आज़ाद — यह बड़ी टेढ़ी खीर है, गन्नों के छिलके खाने पड़ेंगे।

खोजी — आपसे कौन बोलता है? क्यों भई, जो करौली बाँधे तो हर्ज तो नहीं है कुछ?

माँझी — लैसन ले लीजिएगा, और क्या हर्ज है?

खोजी — देखिए, एक बात तो मालूम हुई न! अच्छा यह बताओ कि बहुरूपिए तो जहाज पर नहीं चढ़ने पाते?

माँझी — चाहे जो सवार हो। दाम दे, सवार हो ले।

खोजी — यह तो तुमने बेढब सुनाई। जहाज पर कुम्हार तो नहीं होते?

माँझी — आज तलक कोई कुम्हार नहीं गया।

खोजी — ऐ, मैं तेरी जबान के कुरबान। बड़ी ढारस हुई। खैर कुम्हार से तो बचे। बाकी रहा बहुरूपिया। उस गीदी को समझ लूँगा। इतनी करौलियाँ भोंकूँ कि याद ही करे। हाँ, बस एक और

बात भी बता देना। यह कैद तो नहीं है कि आदमी सुबह-शाम जरूर ही नहाए?

माँझी — मालूम देता है, अफीम बहुत खाते हो?

खोजी — हाँ खूब पहचान गए। यह क्योंकर बूझ गए भाई? शौक हो, तो निकालूँ?

माँझी — राम-राम! हम अफीम छूते तक नहीं।

खोजी — ओ गीदी! टके का आदमी और झख मारता है। निकालूँ करौली?

मिर्जा — हाँ, हाँ, ख्वाजा साहब! देखिए, जरी करौली म्यान ही में रहे।

खोजी — खैर, आप लोगों की खातिर है। वर्ना उधेड़ कर धर देता पाजी को। आप लोग बीच में न पड़ें, तो भुरकुस ही निकाल दिया होता।

इतने में घोड़े पर सवार एक अंगरेज आकर आज़ाद से बोला — इस दरख्त का क्या नाम है?

आज़ाद — इसका नाम तो मुझे मालूम नहीं। हम लोग जरा इन बातों की तरफ कम ध्यान देते हैं।

अंगरेज — हम अपने मुल्क की सब घास फूस पहचानता है।

खोजी — विलायत का घसियारा मालूम होता है।

अंगरेज — चिड़िया का इल्म जानता है आप?

आज़ाद — जी नहीं यह इल्म यहाँ नहीं सिखाया जाता।

अंगरेज — चिड़िया का इल्म हम खूब जानता है।

खोजी — चिड़ीमार है लंदन का। बस, कलई खुल गई।

अंगरेज घोड़ा बढ़ा कर निकल गया।

इधर आज़ाद और मिर्जा साहब के पेट में हँसते-हँसते बल पड़ गए।

39

शाम के वक़्त मिर्जा साहब की बेगम ने परदे के पास आकर कहा — आज इस वक़्त कुछ चहल-पहल नहीं है; क्या खोजी इस दुनिया से सिधार गए?

मिर्जा — देखो खोजी, बेगम साहबा क्या कह रही हैं।

खोजी — कोई अफीम तो पिलवाता नहीं, चहल-पहल कहाँ से हो? लतीफे सुनाऊँ, तो अफीम पिलवाइएगा?

बेगम — हाँ, हाँ, कहो तो। मरो भी, तो पोस्ते ही के खेत में दफनाए जाओ। काफूर की जगह अफीम हो, तो सही।

खोजी — एक खुशनसीब थे। उनके कलम से ऐसे हरूफ निकलते थे, जैसे साँचे के ढले हुए। मगर इन हजरत में एक सख्त ऐब यह था कि गलत न लिखते थे।

आज़ाद — कुछ जाँगलू हो क्या?

खोजी — खुदा इन लोगों से बचाए। भई, मेरे तो नाकों दम हो गया। बात पूरी सुनी नहीं और ऐतराज करने को मौजूद। बात काटने पर उधार खाए हुए हो। मेरा मतलब यह था कि वह गलत न लिखते थे; मगर ऐब यह था कि अपनी तरफ से कुछ मिला देते थे। एक दफे एक आदमी को कुरान लिखाने की जरूरत हुई। सोचे कि इनसे बढ़ कर कोई खुशनसीब नहीं, अगर दस-पाँच रुपए ज्यादा भी खर्च हों, तो बला से, लिखवाएँगे इन्हीं से।

बेगम — ऐ वाह री अकल! कोई आप ही के से जाँगलू होंगे। गली-गली तो छापेखाने हैं। कोई छपा हुआ कुरान क्यों न मोल ले लिया?

खोजी — हुजूर, वह सीधे-सादे मुसलमान थे। मंतिक (न्याय) नहीं पढ़े थे। खैर, साहब खुशनवीस के पास पहुँचे और कहा —

हजरत, जो उजरत माँगिए, दूँगा; मगर अर्ज यह है, कहिए, कहूँ, कहिए, न कहूँ। खुशनवीस ने कहा — जरूर कहिए। खुदा की कसम, ऐसा लिखें कि जो देखे, फड़क जाय। वह बोले — हजरत, यह तो सही है, लेकिन अपनी तरफ से कुछ न बढ़ा दीजिएगा। खुशनवीस ने कहा — क्या मजाल; आप इतमीनान रखिए, ऐसा न होने पावेगा। खैर, वह हजरत तो घर गए, इधर मियाँ खुशनवीस लिखने बैठे। जब खत्म कर चुके, तो किताब ले कर चले। लीजिए हुजूर कुरान मौजूद है। उन्होंने पूछा — एक बात साफ फरमा दीजिए। कहीं अपनी तरफ से तो कुछ नहीं मिला दिया? खुशनवीस ने कहा -जनाब, बदलते या बढ़ाते हुए हाथ काँपते थे। मगर इसमें जगह-जगह शैतान का नाम था। मैंने सोचा, खुदा के कलाम में शैतान का क्या जिक्र? इसलिए कहीं आपके बाप का नाम लिख दिया, कहीं अपने बाप का।

बेगम — बस, यही लतीफा है? यह तो सुन चुकी हूँ।

खोजी — इस धाँधली की सनद नहीं। जब अफीम पिलाने का वक़्त आया तो धाँधली करने लगीं!

मिर्जा साहब बोले — अजी, यह पिलवावें या न पिलवावें, मैं पिलवाए देता हूँ। यह कह कर उन्होंने एक थाली में थोड़ा सा कत्था घोल कर खोजी को पिला दिया। खोजी को दिन को तो

ऊँट सूझता न था; रात को कत्थे और अफीम के रंग में क्या तमीज करते। पूरा प्याला चढ़ा लिया और अफीम पीने के खयाल से पीनक लेने लगे। मगर जब रात ज्यादा गई तो आपको अँगड़ाइयाँ आने लगी; जम्हाइयों की डाक बैठ गई, आँखों से पानी जारी हो गया। डिबिया जेब से निकाली कि शायद कुछ खुरचन-उरचन पड़ी-पड़ाई हो, तो इस दम जी जायँ। मगर देखा, तो सफाचट! बस, सन से जान निकल गई। आधी रात का वक़्त, अब अफीम आए तो कहाँ से? सोचे, भई, चाहे इधर की दुनिया उधर हो जाय, अफीम कहीं न कहीं से ढूँढ़ ही लावेंगे। दन से चल ही तो खड़े हुए। गली में सिपाही से मुठभेड़ हुई।

सिपाही — कौन?

खोजी — हम हैं ख्वाजा साहब।

सिपाही — किस दफ्तर में काम करते हो?

खोजी — पुलिस के दफ्तर में। मानिकजी-भाईजी की जगह पर आज से काम करते हैं। यार, इस वक़्त कहीं से जरा सी अफीम लाओ, तो बड़ा एहसान हो। आखिर उस्ताद, पाला हमीं से पड़ेगा। तुम्हारे ही दफ्तर में हैं।

सिपाही — हाँ, हाँ, लीजिए, इसी दम। मैं तो खुद अफीम खाता हूँ। अफीम तो लो यह है, मगर इस वक़्त घोलिएगा काहे में?

खोजी — वाह! सिपाहियों कि बातें? घर की हुकूमत है! सरकारी सिपाही सभी मानते हैं।

सिपाही — अच्छा, चलो, पिला दें।

खोजी — वाह सूबेदार साहब! बड़े बुरे वक़्त काम आए। हम, आप जानिए, अफीमची आदमी, शाम को अफीम खाना भूल गए, आधी रात को याद आया। डिबिया खोली, तो सन्नाटा। ले, कहीं से पानी और प्याली दिलवाओ, तो जी उठें।

खैर, सिपाही ने खोजी को खूब अफीम पिलवाई। यहाँ तक कि घर को लौटे, तो रास्ता भूल गए। एक भलेमानस के दरवाजे पर पहुँचे, तो पीनक में सूझी कि यही मिर्जा साहब का मकान है। लगे जंजीर खड़खड़ाने — खोलो, खोलो। भई, अब तो खड़ा नहीं रहा जाता। दरवाजा खोल देना।

ख्वाजा साहब तो बाहर खड़े गला फाड़-फाड़ कर चिल्लाते हैं, और अन्दर उस मकान में मियाँ का दम निकला जाता है। कोई एक ऊपर दस बरस का सिन, खेल-कूद के दिन, खोजी के भी चचा, दुबले-पतले हाथ-पाँव, कद तीन कम सवा दो इंच का। सिवा हड्डी मुसंडी, बड़े डील-डौल की औरत, उठती, जवानी मगर एक आँख की कानी। एक घूँसा तान के लगावे, तो शीदी लंधौर का भुरकस

निकल जाय। कोई दो-तीन कम बीस बरस की उम्र। दोनों मीठी नींद सो रहे थे कि खोजी ने धमधमाना शुरू किया।

मियाँ — या खुदा बचाइयो। इस अँधेरी रात में कौन आया? मारे डर के रूह काँपती है; मगर जो बीवी को जगाऊँ और मर्दाने कपड़े पहना कर ले जाऊँ, तो यह हजरत भी काँपने लगें।

खोजी — खोलो, मीठी नींद सोने वालो, खोलो। यहाँ जाते देर नहीं हुई, और किवाड़े झप से बन्द कर लिए? खटिया-वटिया सब गायब कर दी?

मियाँ — बेगम, बेगम, क्या सो गईं?

वहाँ सुनता कौन है, जवानी की नींद है कि दिल्लगी। कोई चारपाई भी उलट दे, तो कानों-कान खबर न हो। सिर पर चक्की चले। तो भी आँख न खुले। मियाँ आँखों को मारे डर के एक हाथ से बन्द किए बीवी के सिरहाने खड़े हैं; मगर थर-थर काँप रहे हैं। आखिर एक बार किचकिचा के खूब जोर से कंधा हिलाया और बोले — ओ बेगम, सुनती हो कि नहीं? जगी हैं, मगर दम साधे पड़ी हैं।

बेगम — (हाथ झटक कर) ऐ हटो, ले के कंधा उखाड़ डाला। अल्लाह करे, ये हाथ टूटे। हमारी मीठी मीठी नींद खराब कर दी। खुदा जानता है, मैं तो समझी, हालाडोला आ गया। खुदा-

खुदा करके जरा आँख लगी, तो यह आफत आई। अब की जगाया, तो तुम जानोगे। फिर अपने दाँव को तो बैठ कर रोते हैं। बेहया, चल दूर हो।

मियाँ — अरे, क्या फिर सो गई? जैसे नींद के हाथों बिक गई हो। बेगम, सुनती हो कि नहीं?

बेगम — क्या है क्या? कुछ मुँह से बोलोगे भी? बेगम-बेगम की अच्छी रट लगाई है। डर लगता हो तो मुँह ढाँप कर सो रहो। एक तो आप न सोए, दूसरे हमारी नींद भी हराम करें।

खोजी — अरे, भई खोलो! मर गया पुकारते-पुकारते।

मियाँ — बेगम खुदा करे, बहरी हो जायँ। देखो तो यहाँ किवाड़ कौन तोड़े डालता है? बंदा तो इस अंधियारी में हुमसने वाला नहीं। जरी तुम्हीं दरवाजे तक जा कर देख लो।

बेगम — जी! मेरी पैजार उठती है। तुम्हारी तो वही मसल हुई कि 'रोटी खाय दस-बारह, दूध पिए मटका सारा, काम करने को नन्हा बेचारा।' पहले तो मैं औरत जात डर गई तो फिर कैसी हो? चोर-चाकर से बीवी को भिड़वाते हैं। मर्द बने हैं, जोरुआ से कहते हैं कि बाहर जा कर चोर से लड़ो।

खोजी — अजी, बेगम साहब, खुदा की कसम, अफीम लाने गया था। जरी दरवाजा खुलवा दीजिए। यह मिर्जा साहब, और मौलाना आज़ाद तो मेरी जान के दुश्मन हैं।

बेगम ने जो अफीम का नाम सुना, तो आग-भभूका हो गईं। उठ कर मियाँ के एक लात लगाई और ऊपर से कोसने लगीं। इस अफीम को आग लगे, पीनेवाले का सत्यानाश हो जाय। एक तो मेरे माँ बाप ने इस निखट्टू के खूँटे में बाँधा, दूसरे इसके माँ-बाप ने अफीम इसी घुट्टी में डाल दी। क्यों जी, तुमने तो कसम खाई थी कि आज से अफीम न पिऊँगा? न तुम्हारी कसम का एतबार, न जबान का। कसम भी क्या मूली-गाजर हैं कि कर-कर करके चबा गए!

मियाँ — (गर्द झाड़-पोंछ कर) क्यों जी, और जो मैं भी एक लात कस के जमाने के लायक होता तो फिर कैसी ठहरती?

बीवी — मैं तो पहले बातों से समझाती हूँ और कोई न समझे तो फिर लातों से खबर लेती हूँ। मैं तो इस फिक्र में हूँ कि तुमको खिला-पिला कर हट्टा-कट्टा बना दूँ, पड़ोसी ताने न दें। और तुम पियो अफीम तो जी जले या न जले?

मियाँ साहब दिल ही दिल में अपने माँ-बाप को गालियाँ दे रहे थे। यहाँ धान पान आदमी, बीबी ला के बिठा दी देवनी। वे तो

ब्याह करके छुट्टी पा गए, लातें हमें खानी पड़ती हैं। में तो समझा कि अपना काम ही तमाम हो गया; मगर बेहया ज्यों का त्यों मौजूद। बोले — तुम्हारी जान की कसम, कौन मरदूद चंडू के करीब भी गया हो। आज या कभी अफीम की सूरत भी देखी हो। और यों खामख्वाह बदगुमानी का कौन सा इलाज है। जरी चल के देखो तो! आखिर है कौन? आव देखा न ताव, कस कर एक लात जमा दी, बस। और जो कहीं कमर टूट जाती?

खोजी पीनक में जंजीर पकड़े थे। इधर मियाँ-बीवी चले, तो इस तरह कि बीवी आगे-आगे चिमटा हाथ में लिए हुए और मियाँ पीछे-पीछे मारे डर के आँखें बन्द किए हुए। दरवाजा खुला, तो खोजी धम से गिरे सिर के बल और मियाँ मारे खौफ के खोजी पर अर-र-र करके आ रहे। बीवी ने ऊपर से दोनों को दबोचा। खोजी का नशा हिरन हो गया। निकल कर भागे तो नाक की सीध पर चलते हुए मिर्जा साहब के मकान पर दाखिल। वहाँ देखा, खिदमतगार पड़ा खर्राटे ले रहा है। चुपके से अपनी खटिया पर दराज हुए; मगर मारे हँसी के बुरा हाल था। सोचे, हम तो थे ही, यह मियाँ हमारे भी चचा निकले।

40

सुबह का वक़्त था। मियाँ आज़ाद पलंग से उठे तो देखा, बेगम साहबा मुँह खोले बेतकल्लुफी से खड़ी उनकी ओर कनखियों से ताक रही हैं। मिर्जा साहब को आते देखा, तो बदन को चुरा लिया, और छलाँग मारी, तो जैनब की ओट में थीं।

मिर्जा — कहिए, आज क्या इरादे हैं?

आज़ाद — इस वक़्त हमको किसी ऐसे आदमी के पास ले चलिए, जो तुरकी के मामलों से खूब वाकिफ हो। हमें वहाँ का कुछ हाल मालूम ही नहीं। कुछ सुन तो लें। वहाँ के रंग-ढंग तो मालूम हों।

मिर्जा — बहुत खूब; चलिए, मेरे एक दोस्त हेडमास्टर हैं। बहुत ही जहीन और यारबाश आदमी हैं।

आज़ाद तैयार हुए तो बेगम ने कहा — ऐ, तो कुछ खाते तो जाओ। ऐसी अभी क्या जल्दी है?

आज़ाद — जी नहीं। देर होगी।

बेगम — अच्छा, चाय तो पी लीजिए।

थोड़ी देर में दोनों आदमियों ने चाय पी, पान खाए और चले। हेडमास्टर का मकान थोड़ी ही दूर था, खट से दाखिल। सलाम-वलाम के बाद आज़ाद ने रूम और रूस की लड़ाई का ताजा हाल पूछा।

हेडमास्टर — तुरकी की हालत बहुत नाजुक हो गई है।

खोजी — यह बताइए कि वहाँ तोप दग रही है या नहीं? दनादन की आवाज कान में आती है या नहीं?

हेडमास्टर — दनादन की आवाज तो यहाँ तक आ चुकी; मगर लड़ाई छिड़ गई है और खूब जोरों से हो रही है।

खोजी — उफ्, मेरे अल्लाह! यहाँ तो जान ही निकल गई।

आज़ाद — मियाँ, हिम्मत न हारो। खुदा ने चाहा, तो फतह है।

खोजी — अजी, हिम्मत गई भाड़ में, यहाँ तो काफिया तंग हुआ जाता है।

आज़ाद — लड़ाई रूस से हो रही है, या आपस में?

हेडमास्टर- आपस ही में समझिए। अक्सर सूबे बिगड़ गए और लड़ाई हो रही है।

आज़ाद — यह तो बुरी हुई।

खोजी — बुरी हुई, तो फिर जाते क्यों हो? क्या तबाही आई है?

हेडमास्टर — सर्बिया की फौज सरहद को पार कर गई। तुरकों से एक लड़ाई भी हुई। सुना है कि सर्बिया हार गया। मगर उसका कहना है कि यह सब गलत है। हम डटे हुए हैं, और तुरकों की बोस्निया की सरहद पर जक दी।

खोजी — अब मेरे गए बगैर बेड़ा न पार होगा। कसम खुदा की, इतनी करौलियाँ भोंकी हों कि परे के परे साफ हो जायँ। दिल्लगी है कुछ।

हेडमास्टर — दूसरी खबर यह है कि सर्बिया और तुरकों में सख्त लड़ाई हुई, मगर न कोई हारा, न जीता। सर्बियावाले कहते हैं कि हमने तुरकों को भगा दिया।

खोजी — भई आज़ाद, सुनते हो? वापस चलो। अजी, शर्त तो यही है न कि तमगे लटका कर आओ? आप वापस चलिए मैं एक तमगा बनवा दूँगा।

कुछ देर तक मियाँ आज़ाद और हेडमास्टर साहब में यही बातें होती रहीं। दस बजते-बजते यहाँ से रुख़सत हो कर घर आए। जब खाना खा कर बैठे तो बेगम साहबा ने आज़ाद से कहा — हजरत, जरा इस मिसरे पर कोई मिसरा लगाइए —

इसलिए तसवीर जानाँ हमने खिंचवाई नहीं।

आज़ाद — हाँ-हाँ सुनिए —

गैर देखे उनके सूरत इसकी ताब आई नहीं;
इसलिए तसवीर जानाँ हमने खिंचवाई नहीं।
उसकी फुरकत जेहन में अपने कभी आई नहीं;
इसलिए तसवीर जानाँ हमने खिंचवाई नहीं।

बेगम — कहिए, आपकी खातिर से तारीफ कर दें। मगर मिसरे जरा फीके हैं।

आज़ाद — अच्छा, ले आप ही कोई चटपटा मिसरा कहिए।

बेगम — ऐ, हम औरतजात, भला शेर-शायरी क्या जानें। और जो आपकी यही मरजी है, तो लीजिए —

लौहे-दिल ढूँढ़ा किए पर हाथ ही आई नहीं,
इसलिए तसवीर जानाँ हमने खिंचवाई नहीं।

खोजी — वाह, बेगम साहब! आपने तो सुलेमान सावजी के भी कान काटे। पर अब जरा मेरी उपज भी सुनिएगा —

पीनके-अफयूँ से टुक फुरसत कभी पाई नहीं,
इसलिए तसवीर जानाँ हमने खिंचवाई नहीं।

इस मिसरे का सुनना था कि मिर्जा साहब, उनकी हँसोड़ बीवी और मियाँ आज़ाद — हँसते-हँसते लोट गए। अभी यही चर्चा हो रही थी कि इतने में एक आदमी ने बाहर से आवाज दी। मिर्जा

ने जैनब से कहा कि जाओ, देखो तो कौन है? मियाँ खलीफा हों तो कहना, इस वक़्त हम बाल न बनवाएँगे। तीसरे पहर को आ जाइए। जैनब आटा गूँध रही थी। 'अच्छा' कह कर चुप हो रही। आदमी ने फिर बाहर से आवाज दी। तब तो जैनब को मजबूर हो कर उठना ही पड़ा। नाक भौं चढ़ाती, नौकर को जली-कटी सुनाती चली। जो है, मेरी ही जान का गाहक है। जिसे देखो, मेरा ही दुश्मन। वाह, एक काम छोड़ दूसरे पर लपको। अबकी चाँद हो, तो मैं तनख़्वाह ले के अपने घर बैठ रहूँ। क्यों, निगोड़ी नौकरी का भी कुछ अकाल है? जैनब का कायदा था कि काम सब करती थी, मगर बड़बड़ा कर। बात-बात पर तिनक जाना तो गोया उसकी घूँटी में पड़ा था। मगर अपने काम में चुस्त थी। इसलिए उसकी खातिर होती थी। मुँह फुला कर बाहर गई। पहले तो जाते ही खिदमतगार को खूब आड़े हाथों लिया — क्या घर भर में मैं ही अकेली हूँ? जो पुकारता है, मुझी को पुकारता है। मुए उल्लू के मुँह में नाम पड़ गया है।

खिदमतगार ने कहा — मुझसे क्यों बिगड़ी हो? यह मियाँ आए है; हुजूर से जाकर इनका पैगाम कह दो। मगर जरा समझ-बूझ कर कहना। सब बातें सुन लो अच्छी तरह।

जैनब — (उस आदमी से) कौन हो जी? क्या कहते हो? तुम्हें भी इसी वक़्त आना था?

आदमी — मल्लाह हूँ, और हूँ कौन? जा कर अपने मियाँ से कह दो, आज जहाज रवाना होगा। अभी दस घंटे की देर है। तैयार हो जाइए।

जैनब ने अन्दर जा कर यह खबर दी। बेगम साहबा ने जहाज का नाम सुना, तो धक से रह गईं। चेहरे का रंग फीका पड़ गया। कलेजा धड़-धड़ करने लगा। अगर जब्त न करतीं, तो आँसू जारी हो जाते।

मिर्जा — लीजिए हजरत, अब कूच की तैयारी कीजिए।

आज़ाद — तैयार बैठा हूँ। यहाँ कोई बड़ा लंबा चौड़ा सामान तो करना नहीं। एक बैग, एक दरी, एक लोटा, एक लकड़ी। चलिए, अल्लाह-अल्लाह, खैर-सल्लाह। वक़्त पर दन से खड़ा हूँगा।

खोजी — यहाँ भी वही हाल है। एक डिबिया, एक प्याली, चंडू पीने की एक निगाली; एक कतार, एक दोना मिठाई का, एक चाकू, एक करौली; बस, अल्लाह-अल्लाह, खैर-सल्लाह। बंदा भी कील-काँटे से दुरुस्त है।

यह सुन कर मियाँ आज़ाद और मिर्जा साहब दोनों हँस पड़े। मगर बेगम साहबा के होठों पर हँसी न आई। मिर्जा साहब, तो उसी वक़्त मल्लाह से बातें करने के लिए बाहर चले गए और यहाँ मियाँ आज़ाद और बेगम साहबा, दोनों अकेले रह गए। कुछ

देर तक बेगम ने मारे रंज के सिर तक न उठाया। फिर बहुत सँभल कर बोलीं — मेरा तो दिल बैठा जाता है।

आज़ाद — आप घबराइए नहीं, मैं जल्दी वापस आऊँगा।

बेगम — हाय, अगर इतनी ही उम्मीद होती, तो रोना काहे का था?

आज़ाद — सब्र को हाथ से न जाने दीजिए। खुदा बड़ा कारसाज है।

बेगम — आँखों में अँधेरा सा छा गया। क्या आज ही जाओगे? आज ही? तुम्हारे जाने के बाद मेरी न जाने क्या हालत होगी?

आज़ाद — खुदा ने चाहा, तो हँसी-खुशी फिर मिलेंगे।

इतने में मिर्जा साहब ने आकर कहा कि सुबह को तड़के जहाज रवाना होगा।

बेगम — यों जाने को सभी जाते हैं, लाखों मर्द-औरत हर साल हज कर आते है; मगर लड़ाई में शरीक होना! बस, यही खयाल तो मारे डालता है।

आज़ाद — ये लाखों आदमी जो लड़ने जाते हैं, क्या सब के सब मर ही जाते हैं? फिर कजा का वक़्त कौन टाल सकता है? जैसे यहाँ, वैसे वहाँ।

मिर्जा — भई, मेरा तो दिल गवाही देता है कि आप सुर्खरू हो कर आएँगे। और यों तो जिंदगी और मौत खुदा के हाथ है।

बेगम — ये सब बातें तो मैं भी जानती हूँ! मगर समझाऊँ किसे?

मिर्जा — जब जानती हो, तब रोना-धोना बेकार है। हाथ-मुँह धो डालो। जैनब, पानी लाओ। यही तो तुममें ऐब है कि सुबह का काम शाम को और शाम का काम सुबह को करती हो। लाओ पानी झटपट।

जैनब — या अल्लाह! अब आलू छीलूँ या पानी लाऊँ!

आखिर जैनब दिल ही दिल में बुरा-भला कहती पानी लाई। बेगम ने मुँह धोया और बोलीं — अब मैं कोई ऐसी बात न कहूँगी, जिससे मियाँ आज़ाद को रंज हो।

खोजी — अजी मियाँ आज़ाद! चलने का वक़्त करीब आया। कुछ मेरी भी फिक्र है? वह करौली लेते ही लेते रह गए? अफीम का क्या बंदोबस्त किया? यार, कहीं ऐसा न हो कि अफीम राह में न मिले और हम जीते जी मर मिटें। जरी जैनब को बाजार तक भेज कर कोई साठ-सत्तर कतारे तो नर्म नर्म मँगवा दीजिए। नहीं तो मैं जीता न फिरूँगा।

जैनब — हाँ, जैनब ही तो घर भर में फालतू हैं। लपक कर बाजार से ले क्यों नहीं आते? क्या चूड़ियाँ टूट जायँगी? और मैं औरतजात अफीम लेने कहाँ जाऊँगी भला?

बेगम — रास्ते में इस पगले के सबब से खूब चहल-पहल रहेगी।

आज़ाद — हाँ, इसीलिए तो लिए जाता हूँ। मगर देखिए, क्या-क्या बेहूदगियाँ करते हैं?

खोजी — अजी, आपसे सौ कदम आगे रहूँ, तो सही।

मिर्जा — इसमें क्या शक है? लेकिन उस तरफ कोई बहुरूपिया हुआ, तो कैसी ठहरेगी।

खोजी — सच कहता हूँ, इतनी करौलियाँ भोकूँ कि याद करे। मैं दगानेवाली पलटन में रिसालदार था। अवध में खुदा जाने कितनी गढ़ियाँ जीत लीं।

बेगम — ऐ रिसालदार साहब, आपकी करौली क्या हुई? मोरचा खा गई हो तो साफ कर लीजिए। ऐसा न हो, मोरचे पर म्यान ही में रहे।

जैनब — रिसालदार साहब, हमारे लिए वहाँ से क्या लाइएगा?

खोजी — अजी, जीते आवें, तो यही बड़ी बात है। यहाँ तो बदन काँप रहा है।

इन्हीं बातों में चलने का वक़्त आ गया। आज़ाद ने अपना और खोजी का सामान बाँधा। बग्घी तैयार हुई। जब मियाँ आज़ाद ने चलने के लिए लकड़ी उठाई, तो बेगम बेचारी बेअख्तियार रो दीं। काँपते हुए हाथों से इमामजामिन की अशरफी बाँधी और कहा — जिस तरह पीठ दिखाते हो, उसी तरह मुँह भी दिखाना।

मियाँ आज़ाद, मिर्जा और खोजी जा कर बग्घी पर बैठे। जब गाड़ी चली, तो खोजी बोले — हमसे कोई नहाने को कहेगा, तो हम करौली ही भोंक देंगे।

मिर्जा — तो जब कोई कहे न?

खोजी — हाँ, बस, इतना याद रखिएगा जरा। और, हम यह भी बताए देते हैं कि गन्ना चूस-चूस कर समुंदर के बाप में फेंकेंगे, और जो कोई बोलेगा, तो दबोच बैठेंगे। हाँ, ऐसे-वैसे नहीं हैं यहाँ!

सामने समुद्र नजर आने लगा।

हुस्नआरा मीठी नींद सो रही थी। ख्वाब में क्या देखती है कि एक बूढ़े मियाँ सब्ज कपड़े पहने उसके करीब आकर खड़े हुए और एक किताब दे कर फरमाया कि इसे लो और इसमें फाल देखो। हुस्नआरा ने किताब ली और फाल देखा, तो यह शेर था —

हमें क्या खौफ है, तूफान आवे या बला टूटे।

आँख खुल गई तो न बूढ़े मियाँ थे, न किताब। हुस्नआरा फाल-वाल की कायल न थी; मगर फिर भी दिल को कुछ तसकीन हुई। सुबह को वह अपनी बहन सिपहआरा से इस ख्वाब का जिक्र कर रही थी कि लौंडी ने आज़ाद का खत ला कर उसे दिया।

हुस्नआरा — हम पढ़ेंगे।

सिपहआरा — वाह, हम पढ़ेंगे।

हुस्नआरा — (प्यार से झिड़क कर) बस, यही बात तो हमें भाती नहीं।

सिपहआरा — न भावे, धमकाती क्या हो?

हुस्नआरा — मेरी प्यारी बहन, देखो, बड़ी बहन का इतना कहना मान जाओ। लाओ खत खुदा के लिए।

सिपहआरा — हम तो न देंगे।

हुस्नआरा — तुम तो खाहमख्वाह जिद करती हो, बच्चों की तरह मचली जाती हो।

सिपहआरा — रहने दीजिए, वाह-वाह! हम आज़ाद का खत न पढ़ें?

यह कहकर सिपहआरा ने आज़ाद का खत पढ़ सुनाया —

अब तो जाते हैं हिन्द से आज़ाद
फिर मिलेंगे अगर खुदा लाया।

आज जहाज पर सवार होता हूँ। दो घंटे और हिंदुस्तान में हूँ। उसके बाद सफर, सफर, सफर। मैं खुश हूँ। मगर इस खयाल से जी बेचैन है कि तुम बेकरार होगी। अगर यह मालूम हो जाता कि तुम भी खुश हो, तो जी जाता। अब तो यही धुन है कि कब रूम पहुँचूँ। बस, रुख़सत।

– तुम्हारा आज़ाद।

हाँ, प्यारी सिपहआरा को खूब समझाना। उनका दिल बहुत नर्म है। इस वक़्त खोजी पानी की सूरत देख कर मचल रहे हैं।

हुस्नआरा — यह मुआ खोजी अभी जीता ही है?

सिपहआरा — उसे तो पानी का नाम सुन कर जूड़ी चढ़ आती थी।

हुस्नआरा — आखिर बेचारे जहाज पर सवार हो गए! अब देखें, रूम से कब खत आता है?

सिपहआरा — अब तो फाल पर ईमान लाई? देखा, मैं क्या कहती थी? अब मिठाई खिलवाइए। जरा, कोई यहाँ आना। पाँच रुपए की पंचमेल मिठाई लाओ।

हुस्नआरा — यह क्या खब्त है?

सिपहआरा — आपकी बला से। एक डली तुम भी खा लेना।

हुस्नआरा — खूब! पाँच रुपए की मिठाई, और उसमें हमको एक डली मिले? आते ही आते आधी न चख जाऊँ, तो कहना।

सिपहआरा — वाह, दे चुकी मैं! ऐसी कच्ची नहीं हूँ।

हुस्नआरा — भला, किताब से आगे का हाल क्या मालूम होगा? मुझे बड़ी हँसी आती है, जब कोई फाल देखता है। आँखें बन्द किए हुए थोड़ी देर बड़बड़ाए, और किताब खोली। फिर अपने-अपने तौर पर मतलब निकालने लगे। यह सब ढकोसला है। हमको बड़े उस्ताद ने सबक पढ़ाया है।

थोड़ी देर में सिपाही ने बाहर से आवाज दी कि मामा, मिठाई ले जाओ।

सिपहआरा दौड़ी — मुझे देना। हुस्नआरा अलग फुर्ती से झपटी कि हमें, हमें। अब मामा बेचारी किसको दे, एक चँगेल, दो गाहक। उसने हुस्नआरा को चँगेली दे दी।

हुस्नआरा — अब बतलाइए, खाने में लग्गा लगाऊँ? बरफी पर चाँदी के चमकते हुए वर्क कितनी बहार देते हैं।

सिपहआरा — मामा, तुम दीवानी हो गई हो कुछ? रुपए हमने दिए थे या इन्होंने? पराया माल क्या झप से उठा दिया! वाह-वाह! हाँ-हाँ कहती जाती हूँ, सुनती ही नहीं।

मामा — वह आपकी बड़ी...

सिपहआरा — चलो, बस रहने भी दो। ऊपर से बातें बनाती हो।

सिपहआरा ने मिठाई बाँटी, तो मामा हुस्नआरा की बूढ़ी दादी को भी उसमें से दस-पाँच डलियाँ दे आई।

बूढ़ी — यह मिठाई कैसी!

मामा — हुजूर, हुस्नआरा ने फाल देखी थी।

बूढ़ी — फाल कैसी?

मामा — चिट्ठी आई थी कहीं से।

बूढ़ी — चिट्ठी कैसी?

मामा — बीबी, वहीं जो हैं, देखिए, क्या नाम है उनका जदाई।

बूढ़ी — जदाई कैसी! ला, मेरी छड़ी तो दे।

बूढ़ी बेगम कमर झुकाए, लठिया टेकते हुए चलीं। आकर देखा, दोनों बहन मिठाई चख रही हैं।

बूढ़ी — यह मिठाई कैसी आई है?

सिपहआरा — अम्माँजान, हुस्नआरा हमसे शर्त हारी है। कहती थीं, हमारे दीवान-हाफिज में चार सौ सफे हैं; मैंने कहा, नही चार सौ चालीस हैं।

बूढ़ी — यह बात थी! मामा सठिया गई है क्या? जाने क्या-क्या बकती थी।

शाम के वक़्त दोनों बहनें सहेलियों के साथ हाथ में हाथ दिए छत पर अठखेलियाँ कर रही थीं। एक ने दूसरे के चुटकी ली, किसी ने किसी को गुदगुदाया, जरा खयाल नहीं कि तिमंजिले पर खड़ी हैं, जरा पाँव डगमगाया तो गजब ही हो जाय। हवा सन-सन चल रही थी। एकाएक एक पतंग आकर गिरी सिपहआरा ने लपक कर लूट लिया। आहाहा, इस पर तो किसी ने कुछ लिखा है — माहीजाल वाला पतंग, सब की सब दौड़ पड़ीं। हुस्नआरा ने ये शेर पढ़ कर सुनाए -

बहुत तेज है आजकल तीरे मिजगाँ;
कोई दिल निशाना हुआ चाहता है।
मेरे कत्ल करने को आता है कातिल;
तमाम आज किस्सा हुआ चाहता है।

हुस्नआरा का माथा ठनका कि कुछ दाल में काल है। ताड़ गई कि कोई नए आशिक पैदा हुए, मुझ पर या सिपहआरा पर शैदा हुए। मालूम नहीं, कौन है? कहीं मुझे बाहर देख तो नहीं लिया? दिमाग फिर गया है मुए का। जब सब सहेलियाँ अपने-अपने घर चली गईं तो हुस्नआरा ने बहन से कहा — तुम कुछ समझीं? यह पतंग पर क्या लिखा था? तुम तो खेल रही थीं; मैं उस वक़्त से इसी फिक्र में हूँ कि माजरा क्या है?

सिपहआरा — कुछ-कुछ तो मैं भी समझती हूँ; मगर अब किसी से कहो-सुनो नहीं।

हुस्नआरा — लच्छन बुरे हैं। इस पतंग को फाड़-फूड़ कर फेंक दो। कोई देखने न पाए।

इतने में खिदमतगार ने मामा को आवाज दी और मामा बाहर से एक लिफाफा ले आई। हुस्नआरा ने जो लिफाफा लिया, तो मारे खुशबू के दिमाग तर हो गया। फिर माथा ठनका। खुशबू कैसी! मामा से बोली — किसने दिया है?

मामा — एक आदमी खिदमतगार को दे गया है। नाम नहीं बताया। दिया और लंबा हुआ।

सिपहआरा — खोलो तो, देखो है क्या?

लिफाफा खोला, तो एक खत निकला। लिखा था —

'एक गरीब मुसाफिर हूँ, कुछ दिनों के लिए आपके पड़ोस में आकर ठहरा हूँ। इसलिए कोई गैर न समझिएगा। सुना है कि आप दोनों बहनें शतरंज खेलने में बर्क हैं। यह नक्शा भेजता हूँ। मेरी खातिर से इसे हल कर दो, तो बड़ा एहसान हो। मैंने तो बहुत दिमाग लड़ाया, पर नक्शा समझ में न आया।

–मिर्जा हुमायूँफर।'

इस खत के नीचे शतरंज का एक नक्शा दिया हुआ था।

सिपहआरा — बाजी, सच कहना, यह तो कोई बड़े उस्ताद मालूम होते हैं। मगर तुम जरा गौर करो, तो चुटकियाँ में हल कर लो। तुम तो बड़े-बड़े नक्शे हल कर लेती हो। भला इसकी क्या हकीकत है?

हुस्नआरा — बहन, यह नक्शा इतना आसान नहीं है। इसको देखो तो अच्छी तरह। मगर यह सोचो कि भेजा किसने है!

सिपहआरा – हुमायूँफर तो किसी शाहज़ादे ही का नाम होगा। मामा को बुलाओ और कहो, सिपाही से पूछे, कौन लाया था? क्या कहता था? आदमी का पता मिल जाय, तो भेजनेवाले का पता मिला दाखिल है।

मामा ने बाहर जा कर इशारे से सिपाही को बुलाया।

सिपाही – कहो, क्या कहती हो?

मामा – जरी, इधर तो आ।

सिपाही – वहाँ कोने में क्या करूँ आनके। कोई वहाँ हौले-हौले बातें करते देखेगा, तो क्या कहेगा। यहाँ से निकलवा दोगी क्या?

मामा – ऐ चल छोकरे! कल का लौंडा, कैसी बातें करता है? छोटी बेगम पूछती हैं कि जो आदमी लिफाफा लाया था, वह किधर गया? कुछ मालूम है?

सिपाही – वह तो बस लाया, और दे के चंपत हुआ; मगर मुझे मालूम है, वह, सामनेवाले बाग में एक शाहज़ादे आनके टिके हैं, उन्हीं का चोबदार था।

हुस्नआरा ने यह सुना, तो बोली – शाहज़ादे तो हैं, मगर बदतमीज।

सिपहआरा – यह क्यों?

हुस्नआरा — अव्वल तो किसी कुँआरी शरीफ़ज़ादी के नाम खत भेजना बुरा, दूसरे पतंग गिराया। खत भेजा, वह भी इत्र में बसा हुआ।

सिपहआरा — वा जी, यह तो बदगुमानी है कि खत को इत्र से बसाया। शाहज़ादे हैं, हाथ की खुशबू खत में भी आ गई। मगर खत अदब से लिखा है।

हुस्नआरा- उनको खत भेजने की जुर्रत क्योंकर हुई। अब खत आए, तो न लेना, खबरदार। वह शाहज़ादे, हमारा उनका मुकाबला क्या? और फिर बदनामी का डर।

सिपहआरा — अच्छा, नक्शा तो सोचिए। इसमें तो कोई बुराई नहीं!

हुस्नआरा ने बीस मिनट तक गौर किया और तब हँस कर बोली — लो, हल कर दिया। न कहोगी। अल्लाह जानता है, बड़ी टेढ़ी खीर है। लाओ, फिर अब जवाब तो लिख भेजें। मगर डर मालूम होता है कि कहीं उँगली देते ही पहुँचा न पकड़ लें। जाने भी दो। मुफ्त की बदनामी उठाना भला कौन सी दानाई है?

सिपहआरा — नहीं-नहीं बहन, जरूर लिख भेजो। फिर चाहे कुछ न लिखना।

हुस्नआरा — अच्छा, लाओ लिखें, जो होना होगा, सो होगा!

सिपहआरा — हम बताएँ। खत-वत तो लिखो नहीं, बस, इस नक्शे को हल करके डाक में भेज दो।

42

शहर से कोई दो कोस के फासले पर एक बाग है, जिसमें एक आलीशान इमारत बनी हुई है। इसी में शाहज़ादा हुमायूँफर आकर ठहरे हैं। एक दिन शाम के वक़्त शाहज़ादा साहब बाग में सैर कर रहे थे और दिल ही दिल में सोचते जाते थे कि शाम भी हो गई मगर खत का जवाब न आया। कहीं हमारा खत भेजना उन्हें बुरा तो न मालूम हुआ। अफसोस, मैंने जल्दी की। जल्दी का काम शैतान का। अपने खत और उसकी इबारत को सोचने लगे कि कोई बात अदब के खिलाफ जबान से निकल गई हो तो गजब ही हो जाय। इतने में क्या देखते हैं कि एक आदमी साँड़नी पर सवार दूर से चला आ रहा है। समझे, शायद मेरे खत का जवाब लाता होगा। खिदमतगारों से कहा कि देखो, यह कौन आदमी है? खत लाया है या खाली हाथ आया है? आदमी लोग दौड़े ही थे कि साँड़नी सवार हवा हो गया।

थोड़ी देर में एक चपरासी नजर आया। समझे, बस, यह कासिद है। चपरासी ने दरबान को खत दिया और शाहज़ादा साहब की बाँछे खिल गईं। दिल ने गवाही दी कि सारी मुरादें मिल गईं। खत खोला, तो एक लेक्चर का नोटिस था। मायूस हो कर खत को रख दिया और सोचा कि अब खत का जवाब आना मुश्किल है। गम गलत करने को एक गजल गाने लगे। इतने ही में डाक का हरकारा लाल पगिया जमाए, धानी दगला फड़काए, लहबर तोते की सुरत बनाए आ पहुँचा और खत दे कर रवाना हुआ। शाहज़ादे ने खत खोला और इबारत पढ़ी तो फड़क गए। हाय, क्या प्यारी जबान है, क्या बोल-चाल है। जबान और बयान में भी निगाह की तरह जादू कूट-कूट कर भरा है। उस नाजुक हाथ के सदके, जिसने से सतरें लिखी हैं। लिखते वक़्त कलाई लचकी जाती होगी। एक-एक लफ्ज से शोखी टपकती है, एक-एक हरफ से रंगीनी झलकती है। और नक्शा तो ऐसा हल किया कि कलम तोड़ दिए। आखिर में लिखा था —

इश्क का हाल बेसवा जानें,
हम बहू-बेटियाँ ये क्या जानें?

खुद ही शेर पढ़ते थे और खुद ही जवाब देते थे।

एकाएक उनके एक दोस्त आए और बोले — कहिए, कुछ जवाब आया? या धता बता दिया?

शाहज़ादा — वाह, धता तुम जैसों को बताती होंगी। लो, यह जवाब है।

दोस्त — (लिफाफा पढ़ कर) वाह, बड़े अदब से खत लिखा है।

शाहज़ादा — जनाब, कुछ बाजारी औरतें थोड़े हैं। एक-एक लफ्ज में शराफत बरसती है।

दोस्त — फिर पूछते क्या हो! गहरे हैं। हमें न भूलिएगा।

अब शाहज़ादे को फिक्र हुई कि किसी तरह मुलाकात की ठहरे। बने या बिगड़े। जब आमने-सामने बात हो, तब दिल को चैन आए। सोचते-सोचते आपको एक हिकमत सूझ ही गई। मूँछों का सफाया कर दिया, नकली बाल लगा लिए, जनाने कपड़े पहने और पालकी पर सवार हो कर हुस्नआरा के दरवाजे पर जा पहुँचे। अपनी महरी को साथ ले लिया था। महरी ने पुकारा — अरे, कोई हैं? जरी अन्दर खबर कर दो कि मिर्जा हुमायूँफर की बहन मिलने आई हैं।

बड़ी बेगम ने जो सुना, तो आकर हुस्नआरा से बोलीं — जरा करीने से बैठाना। तमीज से बातें करना। कोई भारी सा जोड़ा पहन लो, समझीं!

हुस्नआरा — अम्माँजान, कपड़े तो बदल लिए हैं?

बड़ी बेगम — देखूँ। यह क्या सफेद दुपट्टा है।

हुस्नआरा — नहीं, अम्माँजान, गुलाबी है। वही जामदानी का दुपट्टा जिसमे कामदानी की आड़ी बेल है।

बड़ी बेगम — बेटा, कोई और भारी जोड़ा निकालो।

हुस्नआरा — हमें तो यही पसंद है।

इतने में आशिक बेगम पालकी से उतरीं और जा कर बोलीं — आदाब बजा लाती हूँ।

हुस्नआरा — तस्लीम! आइए।

आशिक — आओ बहन, गले तो मिलें।

दोनों बहनें बेझिझक आशिक बेगम से गले मिलीं।

सिपहआरा —

आमद हमारे घर में किसी महलका की है;
यह शाने किर्दगार यह कुदरत खुदा की है।

हुस्नआरा —

यह कौन आया है रख कर फूल; मुए अंबर अफशाँ में;
सबा इतराई फिरती है जो इन रोजों गुलिस्ताँ में।

आशिक —

'सफदर' जबाँ से राजे मुहब्बत अयाँ न हो;

दिल आशनाए-दर्द हो, लब पर फुगाँ न हो।

सिपहआरा — आपने आज गरीबों पर करम किया। हमारे बड़े नसीब।

आशिक — बहन, हमारी तो कई दिन से ख्वाहिश थी कि आपसे मिलें, मगर फिर हम सोचे कि शायद आपको नागवार हो। हम तो गरीब हैं। अमीरों से मिलते हुए जरा वह मालूम होता है।

हुस्नआरा — बजा है। आप तो खुदा के फज्ल से शाहज़ादी हैं, हम तो आपकी रिआया हैं।

आशिक — आप दोनों बहनें एक दिन कोठे पर टहल रही थीं, तो हुमायूँफर ने मुझे बुला कर दिखाया था।

हुस्नआरा ने गिलौरी बना कर दी और आशिक बेगम ने उन्हीं के हाथों से खाई। कत्था केवड़े में बसा हुआ, चाँदी-सोने का वर्क लगा हुआ, चिकनी डली और इलायची। गरज कि बड़े तकल्लुफवाली गिलौरियाँ थी। थोड़ी देर के बाद तरह-तरह के खाने दस्तरख़्वान पर चुने गए और तीनों ने मिल कर खाना खाया। खाना खा कर आशिक बेगम ने बेतकल्लुफी से हुस्नआरा की रानों पर सिर रख दिया और लेट रहीं। सिपहआरा ने उठ

कर कश्मीर का एक दुशाला ओढ़ा दिया और करीब आकर बैठ गई।

आशिक — बहन, अल्लाह, जानता है, तुम दोनों बहनें चाँद को भी शरमाती हो।

हुस्नआरा — और आप?

अपने जोबन से नहीं यार खबरदार हनोज;
नाजी-अंदाज से वाकिफ नहीं जिनहार हनोज।

तीनों में बहुत देर तक बातें होती रहीं। दस बजे के करीब आशिक बेगम उठ बैठीं और फरमाया कि बहन, अब हम रुख़सत होंगे। जिंदगी है तो फिर मिलेंगे।

सिपहआरा —

बेचैन कर रहा है क्या-क्या दिलोजिगर को;
हरदम किसी का कहना, जाते हैं हम तो घर को।

इस तरह मुहब्बत की बातें करके आशिक बेगम रुख़सत हुई और जाते वक़्त कह गईं कि एक दिन आपको हमारे यहाँ आना पड़ेगा। पालकी पर सवार हो कर आशिक बेगम ने मामाओं, खिदमतगारों और दरबानों को दो-दो अशर्फियाँ इनाम की दीं और चुपके से मामा को एक तसवीर दे कर कहा कि यह दे देना।

कहारों ने तो पालकी उठाई और मामा ने अन्दर जा कर तसवीर दी। हुस्नआरा ने देखा, तो धक से रह गईं। तसवीर के नीचे लिखा था —

'प्यारी,

मैं आशिक बेगम नहीं हूँ, हुमायूँफर हूँ। अब अगर तुमने बेवफाई की तो जहर खा कर जान दे दूँगा।'

हुस्नआरा — बहन, गजब हो गया!

सिपहआरा — क्या, हुआ क्या? बोलो तो!

हुस्नआरा — लो, यह तसवीर देखो।

सिपहआरा — (तसवीर देख कर) अरे, गजब हो गया! इसने तो बड़ा जुल दिया।

हुस्नआरा — (हीरे की कील नाक से निकाल कर) बहन, मैं तो यह खा कर सो रहती हूँ।

सिपहआरा — (कील छीन कर) उफ जालिम ने बड़ा धोखा दिया।

हुस्नआरा — हम गले मिल चुकीं। जालिम जानू पर सिर रख कर सोया।

सिपहआरा — मगर बाजी, इतना तो सोचो कि बहन कह-कह कर बात करते थे। बहन बना गए हैं।

हुस्नआरा — यह सब बातें हैं। किसकी बहन और कैसा भाई! –

वह यों मुझे देख कर गया है;
खाल उसकी जो खींचिए, सजा है!

सिपहआरा — वाह! किसी की मजाल पड़ी है जो हमसे शरारत करे?

हुस्नआरा — खबरदार, अब उससे कुछ वास्ता न रखना। आदमियों को ताकीद कर दे कि किसी का खत बेसमझे-बूझे न लें, वर्ना निकल दिए जायँगे?

सिपहआरा — जरी सोच लो। लोग अपने दिल में क्या कहेंगे कि अभी तो इतने जोश से मिलीं और अभी यह नादिरी हुक्म।

हुस्नआरा — हाँ, सच तो है। अभी तक हमीं तुम जानते हैं।

सिपहआरा — कहीं ऐसा न हो कि वह किसी से जिक्र कर दें।

हुस्नआरा — इससे इत्मीनान रखो। वह शोहदे तो हैं नहीं।

सिपहआरा — वाह, शोहदे नहीं, तो और हैं कौन! शोहदों के सिर पे क्या सींग होते हैं?

हुस्नआरा — अब आज से छत पर न चढ़ना।

सिपहआरा — वाह बहन, बीच खेत चढ़े। किसी ने देख ही लिया तो क्या! अपना दिल साफ रहना चाहिए।

हुस्नआरा — मुझे तो ऐस मालूम होता है कि शाहज़ादे साहब तुम्हारी फिक्र में हैं।

सिपहआरा — चलिए, बस, अब छेड़खानी रहने दीजिए।

हुस्नआरा — अरे वाह! दिल में तो खुशी हुई होगी। चाहे जबान से न कहो।

सिपहआरा — आखिर बुरा क्या है? शाहज़ादे हैं कि नहीं। और सूरत तो तुम देख ही चुकी हो। लो आज के दूसरे ही महीने दरवाजे पर शहनाई बजती होगी।

सिपहआरा — हम उठ कर चले जायँगे, हाँ! यह हँसी हमको गवारा नहीं।

हुस्नआरा — खुदा की कसम, मैं दिल्लगी से नहीं कहती। आखिर उस बेचारे में क्या बुराई है! हसीन, मालदार, शौकीन, नेकबख्त।

सिपहआरा — बस, और दस-पाँच बातें कहिए न।

सिपहआरा के दिल पर इन बातों का बहुत बड़ा असर हुआ। आदमी की तबीयत भी क्या जल्द पलटा खाती है। अभी तो

हुमायूँफर को बुरा-भला कह रही थीं और अब दिल ही दिल में खिली जाती हैं कि हाँ, है तो सच। आखिर उनमें ऐब ही क्या हैं?

दोनों बहनों में तो ये बातें हो रही थीं और वह महरी, जो आशिक बेगम के साथ आई थी, दरवाजे पर चुपकी खड़ी सुन रही थी। जब हुस्नआरा चुप हुई, तो उसने अन्दर पहुँच कर सलाम किया।

हुस्नआरा — कौन हो?

महरी — हुजूर, मैं हूँ अच्छन।

हुस्नआरा — कहाँ से आई हो?

महरी — आप मुझे इतनी जल्द भूल गईं! बेगम साहबा ने भेजा है।

हुस्नआरा — बेगम साहबा कौन?

महरी — वही आशिक बेगम जो आपसे मिल गई हैं।

हुस्नआरा — कहो, क्या पैगाम भेजा है।

महरी — (मुसकरा कर) हुजूर को जरा वहाँ तक तकलीफ दी है।

महरी का मुसकराना दोनों बहनों को बहुत बुरा लगा। मगर करतीं क्या। महरी उन्हें चुप देख कर फिर बोली — बेगम

साहबा ने फरमाया है कि अगर कुछ हर्ज न हो, तो इस वक़्त हमारे यहाँ आइए।

सिपहआरा — कह देना हमें फुरसत नहीं।

महरी — उन्होंने कहा कि अगर आपको फुरसत न हो, तो मैं खुद ही आ जाऊँ।

सिपहआरा — जी, कुछ जरूरत नहीं है। बस, अब दूर ही से सलाम है। और अब आज से तुम न आना यहाँ। सुना कि नहीं?

महरी — बहुत अच्छा। लौंडी हुक्म बजा लावेगी। बेगम साहबा की जैसी नौकरी, वैसी ही हुजूर की।

सिपहआरा — चलो, बस। बहुत बातें न बनाओ। कह देना, खैर इसी में हैं कि अब कोई खत वत न आए। शाहज़ादे हैं, इससे छोड़ दिया, कोई दूसरा होता तो खून हो जाता। इतने बड़े शाहज़ादे और गरीब शरीफजादियों पर नजर डालते हैं। बस चले, तो वह सजा दूँ कि उम्र भर याद करें। वाह! अच्छा जाल फैलाया है।

हुस्नआरा — बस, अब खामोश भी रहो। कोई सुन लेगा। अब कुछ कहो न सुनो। (महरी से) चलो, सामने से हटो।

महरी — हुजूर, जानबख्शी हो तो अर्ज करूँ।

हुस्नआरा — अब तुम जाओ, हमने कई दफे कह दिया। नहीं पछताओगी।

महरी रवाना हुई। कसम खाई कि अब नहीं आने की। सिपहआरा का चेहरा मारे गुस्से के लाल-भभूका हो गया। हुस्नआरा समझाती थीं कि बहन, अब और बातों का खयाल करो। लेकिन सिपहआरा ठंडी न होती थीं। बहुत देर के बाद बोली — बस, मालूम हुआ कि कोई शोहदा है; अगर सच्ची मुहब्बत है, तो हया और शर्म के साथ जाहिर करना चाहिए या इस बेतुकेपन से?

43

शाहज़ादा हुमायूँफर महरी को भेज कर टहलने लगे, मगर सोचते जाते थे कि कहीं दोनों बहनें खफा न हो गई हों, तो फिर बेढब ठहरे। बात की बात जाय, और शायद जान के भी लाले पड़ जायँ। देखें, महरी क्या खबर लाती है। खुदा करे, दोनों महरी को साथ ले कर छत पर चली आवें। इतने में महरी आई और मुँह फुला कर खड़ी हो गई।

शाहज़ादा — कहो, साफ-साफ।

महरी — हुजूर, क्या अर्ज करूँ!

शाहज़ादा — वह तो हम तुम्हारी चाल ही से समझ गए थे कि बेढब हुई। कह चलो, बस।

महरी — अब लौंडी वहाँ नहीं जाने की।

शाहज़ादा — पहले मतलब की बात तो बताओ कि हुआ क्या?

महरी — मैंने जा कर परदे के पास से सुना कि आप ही की बातें चुपके-चुपके कर रही हैं। मैं जो गई, तो बड़ी बहन ने रुखाई के साथ बातें कीं, और छोटी बहन तो बस, बरस ही पड़ीं। मैं खड़ी काँप रही थी कि किस मुसीबत में पड़ी। बहुत तेज हो के बोलीं — अब न आना, नहीं तो तुम जानोगी। और उनसे भी कान खोल के कह देना कि बहुत चल न निकलें। बहुत ही बिगड़ीं। मैं चोर की तरह चुपके-चुपके सुनती रही।

हुमायूँ — अफसोस! तो बहुत ही बिगड़ीं?

महरी — क्या कहूँ हुजूर, अपने आपे ही में नहीं थीं।

हुमायूँ — हमने बड़ी गलती की। पहले तो हमें जाना न था, और गए तो पहचनवाना न था।

महरी — अब जाने वाने का इरादा न कीजिएगा?

दूसरे दिन हुमायूँफर छत पर निकले, तो क्या देखते हैं कि हुस्नआरा बेगम अपने कोठे पर चढ़ी हैं और मुँह पर नकाब डाले खड़ी हैं। इतने में सिपहआरा भी ऊपर आईं और शाहज़ादे को देखते ही उचक कर आड़ में हो रहीं। दम के दम में हुस्नआरा भी आँखों से ओझल हो गईं। बेचारे नजर भर कर देखने भी न पाए थे कि दोनों नजर से गायब हो गईं। सोचे, ऐसी ही हया फट पड़ी थी, तो कोठे पर क्यों आईं!

अब उधर की कैफियत सुनिए। हुस्नआरा को मालूम ही न था कि हजरत इस वक़्त कोठे पर टहल रहे हैं। जब सिपहआरा ने कोठे पर आकर शाहज़ादे को देख लिया तो चुपके से कहा — बहन, यहीं बैठ जाओ, वह ताक-झाँक से बाज न आवेंगे हुस्नआरा ने छलाँग भरी, तो खट से नीचे। सिपहआरा भी उचक कर जीने पर जा पहुँची!

हुस्नआरा — पटकी पड़े। ऐ वाह, अच्छा घर परख लिया है।

सिपहआरा — मेरा बस चले, तो उसका घर उजड़वा दूँ।

हुस्नआरा — यह क्या सितम करती हो? घर आबाद करते हैं या उजड़वाते हैं?

सिपहआरा — बाजी, अल्लाह खैर करे। यह मुआ जब देखो, कोठे पर खड़ा रहता है।

हुस्नआरा — तो तुम काहे को अपनी जबान खराब करती हो? आदमी ही तो वह भी है!

सिपहआरा — बाजी, तुम चाहे मानो, चाहे न मानो; यह मुआ बहुरूपिया है कोई।

इतने में एक लौंडी ने आकर कहा — लीजिए, बड़ी बेगम साहब ने यह मिठाई दी है। वह जो उस दिन आई नहीं थीं, उन्होंने मिठाइयों के दो ख्वान भेजे हैं।

लौंडी की लड़की का नाम प्यारी था। उसने मिठाई जो देखी, तो तुतला कर बोली -जला सी हमें दीजिए।

सिपहआरा — अरे वाह, इनको दीजिए। बड़ी वह बन के आई हैं! अच्छा, इतना बता दे कि कै ब्याह करेगी?

प्यारी — पहले मिठाई दीजिए, तो बताऊँ।

सिपहआरा — तो मिल चुकी। गढ़ैया में मुँह धो आ।

प्यारी — मैं एक खसम करूँगी, औल फिल छोड़के दूसला। और फिल तीसला। फिल चौथा। उन सबको लातें माल माल के निकाल दूँगी। ले, अब दीजिए।

सिपहआरा — जा अब न दूँगी।

हुस्नआरा — दे दो, दे दो, रो रही है।

सिपहआरा — अच्छा ले, मगर पानी न पीने दूँगी।

प्यारी — हाँ, न पीऊँगी। लाओ तो जला।

इस पर कहकहा पड़ा। जरा सी लड़की और कैसी बातें बनाती है! इतने में बड़ी बेगम आकर बोली — अरे, तुम्हारी वही गोइयाँ जो उस दिन आई थीं, उन्हीं के यहाँ से मिठाई के दो ख्वान आए हैं। एक औरत साथ थी। कह गई है कि दोनों बहनों को कल बुलाया है। सो कल किसी वक़्त चली जाना, घड़ी दो घड़ी दिल बहला के चली आना। नहीं तो मुफ्त की शिकायत होगी।

हुस्नआरा — कल की कल के हाथ है अम्माँजान!

बेगम साहबा तो चली गईं। इधर हुस्नआरा का रंग उड़ गया। बोलीं — बहन, यह टेढ़ी खीर है।

सिपहआरा — एक काम कीजिए। अब बे खुशामद से काम न चलेगा। उनके नाम एक खत लिखिए और साफ-साफ मतलब समझा दीजिए। मुए को अच्छे-अच्छे लटके याद हैं। जब इधर दाल न गली, तो अम्माँजान से लासा लगाया और वह भी कितनी भोली हैं!

एकाएक दरवाजे पर एक नया गुल खिला। दस बारह आदमियों ने मिल कर गाना शुरू किया —

मान करे नंदलाल सों,
सोहागिन जचा मान करे नंदलाल सों।
दूध-पूत और अन्न-धन-लच्छमी
गोद खिलाए नंदलाल सों। मान करे नंदलाल सों ...

दस-पाँच आदमी गाने गाते हैं। दो-चार ताल देते जाते हैं। दो-एक मजीरा बजाते हैं। एक हजरत ढोलकी थप-थपाते हैं।

घर भर में खलबली मच गई कि यह माजरा क्या है? लड़का किसके हुआ है? बड़ी बेगम बेवा, दोनों बहनें कुँआरी। यह क्या अंधेर है भई!

मामा — अरे, तुम कौन लोग हो?

कई आदमी — ऐ हुजूर, खुदा सलामत रखे। भाँड़ हैं।

एक साहब हिनहिना कर बोले — मेरे बछेड़े की कुछ न पूछो। यह माँ के पेट ही से हिनहिनाता निकला था।

दूसरे साहब ने उचक कर फरमाया — हैं-हैं-हैं, दो बागे हैं, और उधर तालियाँ बज रही है। 'मान करे नंदलाल...'

बड़ी बेगम — अरे लोगों, यह है क्या? यह दिन-दहाड़े क्या अंधेर हैं? इन निगोड़े भाँड़ों से पूछो — आए किसके यहाँ हैं?

दरबान — चुप रहो जी, आखिर कहाँ आए हो?

एक भाँड़ — वाह शेरा, क्यों न हो। क्या दुम हिला के भूँके हो।

दरबान — आखिर तुम लोगों से किसने क्या कहा? कुछ घास तो नहीं खा गए हो?

मामा — यह क्या गजब करते हो!

भाँड़ — गजब पड़े बुरे की जान पर, और आँख लड़े हमसे।

सिपाही — मियाँ, कसम खा कर कहते हे कि यहाँ लड़का-वड़का नहीं हुआ। तुम मानते ही नहीं हो।

भाँड़ — वाह जवान! क्यों न हो, खड़ी मूँछें और चढ़ी दाढ़ी।

सिपाही — (आहिस्ता) भला लड़का होगा किसके? दो लड़कियाँ, वे कुँआरी हैंगी; एक बड़ी बेगम, वह बूढ़ी खप्पट। और तो कोई औरत ही नहीं; तुम यह बक क्या रहे हो!

भाँड़ — यह अच्छी दिल्लगी है भई, फिर उस मर्दक ने कहा ही क्यों था?

सिपाही — यह काँटे किसके बोए हुए हैं?

भाँड़ — अरे साहब, कुछ न पूछिए। बड़ा चकमा हो गया।

दरबान — ले, अब मजीरा वजीरा हटाओ; नहीं तो यहाँ ठीक किए जाओगे।

भाँड़ — वल्लाह, हो बड़े नमकहलाल।

उधर दोनों बहनों में यों बातें होने लगीं।

सिपहआरा — यह उसी की शरारत है।

हुस्नआरा — किनकी? नहीं; तौबा।

सिपहआरा — आप चाहे न मानें, हम तो यही कहेंगे।

हुस्नआरा — बहन, वह शाहज़ादा हैं, उनसे यह हरकत नहीं हो सकती।

सिपहआरा — अच्छा, फिर ये भाँड़ क्यों आए? अगर किसी ने बहका कर भेजा नहीं, तो आए कैसे?

हुस्नआरा — हाँ, कहती तो सच हो; मगर अल्लाह जानता है, उससे ऐसी हरकत नहीं हो सकती।

सिपहआरा — आप मेरे कहने से उन्हें एक खत लिख भेजिए कि फिर ऐसी हरकत की, तो हम जहर ही खा लेंगे।

हुस्नआरा खत लिखने पर राजी हो गईं और यों खत लिखा —

'हया से मुँह न मोड़ेंगे, सताए जिसका जी चाहे;
वफादारी में हमको आजमाए जिसका जी चाहे।
कभी मानिंदे गौहर आबरू 'सफदर' न जाएगी;

वजाहिर खाक में हमको मिलाए जिसका जी चाहे।

अरे जालिम, कुछ खुदा का डर भी है? क्यों जी, शरीफों की ये ही हरकतें होती है? शर्म नहीं आती! बहन बना कर अब ये शरारतें करते हो! ये ही मरदों के काम हैं! अगर अब किसी की भेजा तो हम हीरे की कनी खा लेंगी। खून तुम्हारी गर्दन पर होगा। आखिर तुम अपने दिल में हमको समझते क्या हो? अगर भूत सिर पर सवार है, तो कहीं और मुँह काला कीजिए। हम घर-गिरस्त शरीफजादियाँ, इन बातों से क्या वास्ता? दिल लेना जाने न दिल देना।

'काँटों में न हो अगर उलझना,

थोड़ा लिखा बहुत समझना!'

हुमायूँफर के पास जब यह खत पहुँचा तो बहुत शरमाए। समझ गए कि यहाँ हमारी दाल न गलेगी। दिल में इरादा कर लिया कि अब भूल कर भी ऐसी चालें न चलेंगे।

44

हुस्नआरा और सिपहआरा, दोनों रात को सो रही थीं कि दरबान ने आवाज दी — मामा जी, दरवाजा खोलो।

मामा — दिलबहार देखो कौन पुकारता है?

दिलबहार — ऐ वाह, फिर खोल क्यों नहीं देतीं?

मामा — मेरी उठती है जूती; दिन भर की थकी-माँदी हूँ।

दिलबहार — और यहाँ कौन चंदन-चौकी पर बैठा है?

दरबान — अजी, लड़ लेना पीछे, पहले किवाड़े खोल जाओ।

मामा — इतनी रात गए क्यों आफत मचा रखी हैं?

दरबान — अजी, खोलो तो, सवारियाँ आई हैं।

हुस्नआरा — कहाँ से? अरे दिलबहार! मामा! क्या सब की सब मर गईं? अब हम जायँ दरवाजा खोलने?

हुस्नआरा की आवाज सुन कर सब की सब एक दम उठ खड़ी हुई। मामा ने परदा करा कर सवारियाँ उतरवाई।

सिहपआरा — अख्हा रूहअफजा बहन हैं, और बहारबेगम। आइए, बन्दगी।

ये दोनों हुस्नआरा की चचेरी बहनें थीं। दोनों की शादी हो चुकी थी। ससुराल से दोनों बहनों से मुलाकात करने आई थीं। चारों बहनें गले मिलीं। खैर आफ़ियत के बाद हुस्नआरा ने कहा — दो बरस के बाद आप लोगों से मुलाकात हुई।

बहारबेगम — हाँ, और क्या!

सब की सब बातें करते-करते सो गईं। सुबह को हुस्नआरा ने बड़ी बेगम से दोनों बहनों के आने की खबर सुनाई।

बड़ी बेगम — जरी मेरी बाईं आँख फड़कती थी। मैं भी कहूँ कि अल्लाह, क्या खुशखबरी सुनूँगी। कहाँ, हैं कहाँ, जरा बुलाओ तो।

हुस्नआरा — अभी सो रही हैं।

बड़ी बेगम — ऐ, तो जगा दे बेटा! अच्छी तो हैं?

हुस्नआरा ने आकर देखा, तो दोनों गाफिल सो रही हैं। रूहअफजा की लटोंवाली नागिन की तरह बल खा कर तकिए पर से पलंग के नीचे लहरा रही हैं। बहार-बेगम का दुपट्टा कहीं है, दुलाई कहीं। हाथ सीने पर रखे हुए खर्राटे ले रही हैं।

हुस्नआरा — अजी, सोती ही रहिएगा! अम्माँजान बुलाती हैं।

रूहअफजा — बहन, अब तक आँखों में नींद भरी है। नमाज पढ़ लूँ, तो चलूँ।

हुस्नआरा — (बहारबेगम का हाथ हिला कर) ऐ बहन, अब उठो।

बहारबेगम — अल्लाह, इतना दिन चढ़ आया! सारे घर में धूप फैल गई।

हुस्नआरा – उठिए, अम्माँजान बुला रही है।

बहारबेगम – रूहअफजा को तो जगाओ।

सिपहआरा – वह क्या बैठी हैं सामने।

दोनों ने उठ कर नमाज पढ़ी और बड़ी बेगम के पास चलीं। रूहअफजा जाते ही बड़ी बेगम से चिमट गईं। बहार भी उनसे गले मिलीं और अदब के साथ फर्श पर बैठीं।

बड़ी बेगम – क्यों रूहअफजा, अब तो उस बीमारी ने पीछा छोड़ा? क्या कहते हैं, तौबा, मुझे तो उसका नाम भी नहीं आता।

सिपहआरा – (मुसकरा कर) डेंगू बुखार। आप तो रोज-रोज भूल जाती हैं।

बड़ी बेगम – हाँ, वहीं डंकू।

सिपहआरा – डंकू नहीं डेंगू।

रूहअफजा – अब एक महीने से पीछा छुटा है कहीं। मेरी तो जान पर बन आई थी।

बड़ी बेगम – चेहरा कैसा जर्द पड़ गया है!

बहारबेगम – अब तो आप इन्हें अच्छी देखती हैं! यह तो घुल कर काँटा हो गई थीं।

बड़ी बेगम — हकीम मुहम्मदहुसैन ने इलाज किया था न वहाँ?

रूहअफजा — जी नहीं, एक डॉक्टर था।

बड़ी बेगम — ऐ है, भूले से इलाज न करना डागडर-वागडर का।

रूहअफजा — मैं तो उसकी बोली ही न समझूँ। कहे, जबान दिखाओ। जब मुँह दिखावें तब तो जबान दिखावें? मैंने कहा — यह तो हश्र तक नहीं होने का। फिर नब्ज देखी, तो हाथ परदे से निकाल लिया और कहा, चूड़ियाँ उतार डालो। मैंने सोने की चूड़ियाँ तो उतार डालीं, मगर शीशे की एक चूड़ी पहने रही। तब कहने लगा, हमसे बातें करो। तब तो मैंने दूल्हा भाई को बुलाया और कहा — वाह साहब, आप तो अच्छे डाक्टर को लाए! मुँह क्या, हम तो एड़ी भी न दिखावें और कहता है, हमसे बातें करो। यहाँ निगोड़ी गिटपिट किसे आती है! बस, दर-गुजरी ऐसे इलाज से। आप इन्हें धता बताइए। इतने में उसने घड़ी जेब से निकाली और कहने लगा — गिनती गिनो। सुनिए, जैसे लड़कियों के मदरसे में इम्तहान ले रहे हो। आखिर मैंने एक-दो-पाँच-बीस ग्यारह-अनाप-शनाप बका। बड़ी कड़वी दवाइयाँ दीं। बारे बच गई।

बड़ी बेगम — बहार। यह तुम महीनों खत क्यों नहीं भेजती हो?

बहारबेगम — अम्माँजान, खतों का तो मैं तार बाँध दूँ, मगर जब कोई लिखने वाला भी हो।

रूहअफजा — यह तो गिरस्ती के धंधे में ऐसी पड़ गई कि पढ़ा-लिखा सब चौपट कर दिया।

हुस्नआरा — और दूल्हा भाई ने तो खत लिखने की कसम खाई है।

रूहअफजा — दिन भर बैठे शेर कहा करते हैं।

बड़ी बेगम — हाँ, न मुझे मौत आती है, न उन्हें।

हुस्नआरा — कल परसों तक दूल्हा भाई यहाँ आवेंगे, तो मैं उनको खूब झाड़ूँगी।

बड़ी बेगम — बहार, सच्ची बात तो यह है कि तुम भी जरा तेज-मिजाज हो।

सिपहआरा — जो एक गर्म और एक नर्म हो, तो बात बने। और जो दोनों तेज हुए, तो कैसे बने?

बहारबेगम — अब तुम अपनी सास से न लड़ना। तुम नर्म ही रहना। मेरे तो नाक में दम आ गया।

बड़ी बेगम — अबकी मिर्जा यहाँ आएँ, तो समझाऊँ।

बहारबेगम — अम्माँजान, मुझसे उनसे हश्र तक न बनेगी। जो कोई लौंडी-बाँदी भी मुझसे अच्छी तरह बातें करे, तो जल मरती हैं। और मैं जान-बूझ कर और जलाती हूँ।

हुस्नआरा — बहन, मिल-जुल कर रहना चाहिए।

बहारबेगम — जब तुम ससुराल जाओगी, ऐसी ही सास पाओगी और फिर मिल-जुल कर रहोगी, तो सात बार सलाम करूँगी।

रूहअफजा — झगड़ा सारा यह है कि दूल्हा भाई इनकी खातिर बहुत करते हैं। बस, इनकी सास जली मरती हैं कि यह जोरू की खातिर क्यों करता है?

बहारबेगम — अल्लाह जानता है, हजारों दफे तरह दे जाती हूँ; मगर जब नहीं रहा जाता, तो मैं भी बकने लगती हूँ। मुझे तो उनहोंने बेहया कर दिया। अब वह एक कहती हैं, तो मैं दस सुनाती हूँ।

बड़ी बेगम — (पीठ ठोक कर) शाबाश!

हुस्नआरा — मेरी तरफ से पीठ ठोक दीजिएगा।

बहारबेगम — बहन, अभी किसी से पाला नहीं पड़ा। हमको तो ऐसा दिक कर रखा है कि अल्लाह करे, अब वह मर जायँ, या हम।

चारों बहनें यहाँ से उठ कर अपने कमरे में गईं और बनाव-सिंगार करने लगीं। हुस्नआरा, सिपहआरा और रूहअफजा तो बन-ठन कर मौजूद हो गईं; मगर बहारबेगम अभी बाल ही सँवार रही थीं।

रूहअफजा — इन्हें जब देखो, बाल ही सँवारा करती हैं।

बहारबेगम — तुम आए दिन यही ताना दिया करती हो।

रूहअफजा — ऐसी तो सूरत भी नहीं अल्लाह ने बनाई है।

बहारबेगम ने कोई दो घंटे में कंघी — चोटी से फरागत पाई। फिर चारों निकल कर बातें करने लगीं। सिपहआरा डली कतरती थीं, हुस्नआरा गिलौरियाँ बनाती थीं, रूहअफजा एक तसवीर की तरफ गौर से देखती थीं; मगर बहार-बेगम की निगाह आईने ही पर थी।

सिपहआरा — अरे, अब तो आईना देख चुकीं? या घंटों सूरत ही देखा कीजिएगा?

बहारबेगम — तुम कहती जाओ, हम जवाब ही न देंगे।

रूहअफजा — अल्लाह जानता है, इन्हें यह मरज है।

सिपहआरा — हाँ, मालूम तो होता है।

बहारबेगम — तुम सब बहनें एक हो गईं। अपनी ही जबान थकाओगी।

हुस्नआरा — रूहअफजा, तुम उठ कर आईने पर कपड़ा गिरा दो।

रूहअफजा — चिढ़ जायँगी।

हुस्नआरा — हाँ बहन, बताओ तो, यह बात क्या है? सास से बनती क्यों नहीं तुमसे?

बहारबेगम — ऐसी सास को तो बस, चुपके से जहर दे दे। कुछ कम सत्तर की होने आईं, अभी खासी कठौता सी बनी हैं। मेरा हाथ पकड़ लें, तो छुड़ाना मुश्किल हो जाय। मुई देवनी है।

हुस्नआरा — क्या यह भी कोई ऐब है?

बहारबेगम — एक दिन का जिक्र सुनो, किसी के यहाँ से महरी आई। कुछ मेवे लाई थी। वह उस वक़्त झूठ-मूठ कुरान-शरीफ पढ़ रही थीं। महरी ने आ के मुझको सलाम किया और मेवे की तश्तरी सामने रख दी। बस, दिन भर मुँह फुलाए रहीं।

हुस्नआरा — मगर बातें तो बड़ी मीठी-मीठी करती हैं।

बहारबेगम — एक दिन किसी ने उनको दो चकोतरे दिए। उन्होंने एक चकोतरा मुझको भेजा और एक मेरी ननद को। वह

उनसे भी बढ़ कर बिस की गाँठ। जा कर माँ से जड़ दिया कि भाई ने हमको आधा सड़ा हुआ चकोतरा दिया और भाभी को बड़ा सा! बस, इस पर सुबह से शाम तक चरखा कातती रहीं।

हुस्नआरा — मैं एक बात पूछूँ? सच-सच कहना। दूल्हा भाई तो प्यार करे हैं?

बहारबेगम — यही तो खैर है।

हुस्नआरा — दिल से?

बहारबेगम — दिल और जान से

हुस्नआरा — भला, माँ से बनती है।

बहारबेगम — वह खुद जानते हैं कि बुढ़िया चिड़चिड़ी औरत है।

हुस्नआरा — बहन, वह तो बड़ी हैं ही, मगर तुम भी तेजी के मारे उनको और जलाती हो। जो मिल के चलो, वह तुम्हारा पानी भरने लगें।

बहारबेगम — अच्छा तुम्हीं बताओ, कैसे मिल के चलूँ?

हुस्नआरा — अब की जब जाओ, तो अदब के साथ झुक कर सलाम करो।

बहारबेगम — किसको?

हुस्नआरा — अपनी सास को, और किसको।

बहारबेगम — वाह! मर जाऊँ, मगर सलाम न करूँ मुरदार को।

हुस्नआरा — बस, यही तो बुरी बात है।

बहारबेगम — रहने दीजिए, बस। वह तो हमको देख कर जल मरें, और हम उनको झुक के सलाम करें। एक दिन मामा से बोलीं कि हमारा पानदान उसको क्यों दे आई? मेरे मुँह से बस, इतनी-सी बात निकल गई कि मेरी सास काहे को हैं, यह तो मेरी सौत हैं। बस इस पर इतना बिगड़ीं कि तौबा ही भली?

हुस्नआरा — बहन, तुमने भी तो गजब किया। तुम्हारे नजदीक यह इतनी सी ही बात थी? सास को सौत बनाया, और उसको इतनी सी ही बात कहती हो! अगर तुम्हारी बहू आए और तुम्हें सौत बनाए, तब देखूँगी, उछलती-कूदती हो कि नहीं।

सिपहआरा — उफ्! बड़ी बुरी बात कही।

रूहअफजा — तो अब बन चुकी बस।

बहारबेगम — तुम सबको उसने कुछ रिश्वत जरूर दी है। जब कहती हो, उसी की सी।

सिपहआरा — हमारी बहन, और ऐसी मुँहफट! सास को सौत बनाए!

हुस्नआरा — और फिर शरमाए न शरमाने दे।

बहारबेगम — अच्छा बताइए, तो पहले झुक के सलाम करूँ खूब जमीन पर सो कर। फिर?

हुस्नआरा — मेरे तो बहन, रोंगटे खड़े हो गए कि तुमसे यह कहा क्योंकर गया!

बहारबेगम — बताओ-बताओ। हमारी कसम, बताओ।

हुस्नआरा — तुम हँसोगी, और हमें होगा रंज।

बहारबेगम — नहीं, हँसेगे नहीं। बोलो।

हुस्नआरा — जा कर सलाम करो।

बहारबेगम — जो वह जवाब न दें, तो अपना-सा मुँह ले कर रह जाऊँ?

सिपहआरा — वाह! ऐसा हो नहीं सकता।

हुस्नआरा- न जवाब दें, तो कदमों पर गिर पड़ो।

बहारबेगम — मेरी पैजार गिरती है कदमों पर। वह जैसा मेरे साथ करती हैं, वैसा उनकी आँखों, घुटनों के आगे आए।

हुस्नआरा — खर्च तो उजला है, या कंजूस है?

बहारबेगम — तीन सौ वसीके के हैं, ढाई सौ गाँव से आते हैं। नकद कोई डेढ़ लाख से ज्यादा ही ज्यादा होगा। मकान, बाग दुकानें अलग हैं। वकालत में कोई छह सात सौ का महीना मिलता है।

हुस्नआरा — तुमको क्या देते हैं?

बहारबेगम — बुढ़िया से चुरा कर मेरे ऊपर के खर्च के लिए सौ रुपए मुकर्रर हैं।

सिपहआरा — रूहअफजा बहन, तुम्हारे मियाँ क्या तनख्वाह पाते हैं?

रूहअफजा — चार सौ हुए हैं। चार-पाँच सौ जमीन से मिल जाते हैं।

हुस्नआरा — तुम्हारी सास तो अच्छी हैं।

रूहअफजा — हाँ, बेचारी बड़ी सीधी हैं। हाँ, उनकी लड़की ने अलबत्ता मेरी नाक में दम कर दिया है। जब आती है, रोज माँ को भरा करती हैं।

सिपहआरा — बहारबेगम जो वहाँ होतीं, तो उनसे भी न बनती।

बहारबेगम — अच्छा, चुप ही रहिएगा, नहीं तो काट खाऊँगी। बड़ी वह बन के आई हैं।

इतने में काली-काली घटा छा गई। ठंडी-ठंडी हवा चलने लगी। बहार ने कहा — जी चाहता है, छत पर से दरिया की सैर करें। सबने कहा — हाँ-हाँ, चलिए। मगर हुस्नआरा को याद आ गई कि हुमायूँफर जरूर खबर पाएँगे और कोठे पर आ के सताएँगे। लेकिन मजबूर थी। चारों चौकड़ियाँ भरती हुई छत पर जा पहुँचीं। हवा इस जोर से चलती थी कि दुपट्टा खिसका जाता था। गोरा-गोरा बदन साफ नजर आता था। किसी ने जा कर हुमायूँफर से कह दिया कि इस वक़्त तो सामने वाला कोठा इंदर का अखाड़ा हो रहा है। उनको ताब कहाँ? चट से कोठे पर आ पहुँचे। सिपहआरा ऊपर के कमरे में सो रहीं। रूहअफजा वहीं बैठ गईं। हुस्नआरा ने एक छलाँग भरी, तो रावटी में। मगर बहारबेगम ने बेढब आँखें लड़ाईं। हुमायूँफर ने बहुत झुक कर सलाम किया।

बहारबेगम — आँखें ही फूटें, जो इधर देखे।

हुमायूँ — (हाथ के इशारे से) अपना गला आप काट डालूँगा।

बहारबेगम — शौक से।

नन्हीं-नन्हीं बूँदें पड़ने लगीं और चारों परियाँ नीचे चल दीं। मिर्जा हुमायूँफर मुँह ताकते रह गए।

हुस्नआरा — (बहार से) आप तो खूब डट के खड़ी हो गईं।

बहारबेगम — क्यों, क्या कोई घोल कर पी जायगा! मैं इन्हें जानती हूँ, हुमायूँफर तो हैं।

सिपहआरा — तुम क्योंकर जानती हो बहन!

बहारबेगम — ऐ वाह, और सुनिएगा लड़कपन में हम खेला किए हैं। इनके साथ। खूप चपतें जमाया किए हैं इनको! इनकी माँ और दादी में खूब झोटम-झोटा हुआ करता था।

इतने में मामा ने आकर कहा — बड़ी बेगम साहबा ने ये मेवे भेजे हैं।

सिपहआरा — देखूँ। ये चिलगोजे लेती जाओ।

प्यारी — हमको दीजिए।

सिपहआरा — इनको दीजिए। 'पीर न शहीद, नकटों को छापा।' सबके बदले इनको दीजिए।

हुस्नआरा — अच्छा, पहले सलाम कर।

चारों बहनों ने मजे से मेवे चखे। एक दूसरी के हाथ से छीन-छीन कर खाती थीं। जवानी की उमंग का क्या कहना!

उधर मिर्जा हुमायूँफर अपनी छत पर खड़े यह शेर पढ़ रहे थे —

न मुड़ कर भी बेदर्द कातिल ने देखा,

तड़पते रहे नीम जाँ कैसे-कैसे।

जब बड़ी देर तक छत पर किसी को न देखा तो, यह शेर जबान पर लाए —

कल बदामोंज (रकीब) ने क्या तुमको सिखाया है हाय!
आज वह आँख, वह चमक, वह इशारा ही नहीं।

45

एक दिन हुस्नआरा को सूझी कि आओ, अब की अपनी बहनों को जमा करके एक लेक्चर दूँ। बहारबेगम बोलीं — क्या? क्या दोगी?

हुस्नआरा — लेक्चर-लेक्चर। लेक्चर नहीं सुना कभी?

बहारबेगम — लेक्चर क्या बला है?

हुस्नआरा — वही, जो दूल्हा भाई जलसों में आए दिन पढ़ा करते हैं।

बहारबेगम — तो हम क्या तुम्हारे दूल्हा भाई के साथ-साथ घूमा करते हैं? जाने कहाँ-कहाँ जाते हैं, क्या पढ़-पढ़ के सुनाते हैं। इतना हमको मालूम है कि शेर बहुत कहते हैं। एक दिन हमसे

कहने लगे — चलो, तुमको सैर करा लाएँ। फिटन पर बैठ लो। रात का वक़्त है, तुम दुशाले से खूब मुँह और जिस्म चुरा लेना। मैंने कानों पर हाथ धरे कि न साहब, बंदी ऐसी सैर से दरगुजरी। वहाँ जाने कौन-कौन हो, हम नहीं जाने के।

सिपहआरा — अब की आवें तो उनके साथ हम जरूर जाएँ!

बहारबेगम — चलो, बैठो, लड़कियाँ बहनोइयों के साथ यों नहीं जाया करतीं।

रूहअफजा — मगर सुनेगा कौन? दस-पाँच लड़कियाँ और भी तो हों कि हमीं-तुम टुटरूँ टूँ?

सिपहआरा — देखिए, मैं बुलवाती हूँ। अभी मामा को भेजे देती हूँ।

हुस्नआरा — मगर नजीर को न बुलवाओ। उनके साथ जानीबेगम भी आएँगी यह बात बात में शाखें निकालती हैं। उन्हें खब्त है कि हमसे बढ़ कर कोई हसीन ही नहीं। 'शक्ल चुड़ैलों की, नाज परियों का'; दिन-रात बनाव-सँवार ही में लगी रहती हैं।

सिपहआरा — फिर अच्छा तो हैं। बहारबेगम से भिड़ा देना।

थोड़ी देर में डोलियों पर डोलियाँ और बग्घियों पर बग्घियाँ आने लगीं। दरबान बार-बार आवाज देता था कि सवारियाँ आई हैं।

लौंडियाँ जा-जा कर मेहमानों को सवारियों पर से उतरवाती थीं और वे चमक-चमक कर अन्दर आती थीं। आखिर में जानीबेगम और नजीरबेगम भी आईं। जानीबेगम की बोटी-बोटी फड़कती थी; आँखें नाचती रहती थीं। नजीर बेगम भोली-भाली शरमीली लड़की थी। शरम से आँखें झुकी पड़ती थीं। जब सब आ चुकीं, तो हुस्नआरा ने अपना लेक्चर सुनाना शुरू किया —

'मेरी प्यारी बहनो, सास-बहुओं के झगड़े, ननद-भावजों के बखेड़े, बात-बात पर तकरार, मियाँ-बीवी की जूती-पैजार से खुदा की पनाह। इन बुरी बातों से खुदा बचाए। भलेमानसों की बहू-बेटियों में ऐसी बात न आने पाए। इस फूट की हमारे ही देश में इतनी गर्मबाजारी है कि सास की जबान पर कोसना जारी है, बहू मसरूफ गिरिया व जारी है और मियाँ की अक्ल मारी है। ननद भावज से मुँह फुलाए हुए, भावज ननद से त्योरियाँ चढ़ाए हुए। बहू हिचकियाँ ले-ले कर रोती है, सास जहर खा कर सोती है। और, जो सास गुस्सेवर हुई और बहू जबान की तेज, तो मार-पीट की नौबत पहुँचती है। मियाँ अगर बीवी की सी कहें तो अम्माँ की घुड़कियाँ सहें; अम्मा की सी कहें, तो बीवी की बातें सुनें। माँ उधर, बीवी इधर कान भरती है, वह इनके और यह उनके नाम से कानों पर हाथ धरती हैं।

'मगर ताली एक हाथ से नहीं बजती। सास भली हो, तो बहू को मना ले; और बहू आदमी हो, तो सास को आदमी बना ले। एक शरीफ़ज़ादी ने अपनी मामा से कहा कि हमारी सास तो हमारी सौत हैं। खुदा जाने, उनकी जबान से यह बात कैसे निकली! इस पर भी उन्हें दावा है कि हम शरीफ़ज़ादी हैं। अगर वह हमारी राय पर चलें, तो उनकी सास उन्हें अपने सिर पर बिठाएँ। वह सीधी जा कर सास के कदमों पर गिर पड़ें और आज से उनकी किसी बात का जवाब न दें। क्या उनकी सास का सिर फिर गया है, या उन्हें बावले कुत्ते ने काटा है? बहू अगर सास की खिदमत करे, तो दुनिया भर की सासों में कोई ऐसी न मिले, जो छेड़ कर बहू से लड़े।

'अब सोचो तो जरा दिल में, इस तकरार और जूती-पैजार का अंजाम क्या है? घर में फूट, एक दूसरे की सूरत से बेजार, लौंडियों-बाँदियों में जलील, सारी दुनिया में बदनाम, घर तबाह। एक चुप हजार बला को टालती है, फसाद को जहन्नुम में डालती है। हाँ, जो यह खयाल हो कि सास एक कहें, तो दस सुनाएँ, वह दो बातें कहें, तो बीस मरतबे उनको उल्लू बनाएँ, तो बस, मेल हो चुका। सास न हुई, भुनी मूंग हुई। आखिर उसका भी कोई दरजा है या नहीं? या बस, बहू ससुराल में जाते ही मालकिन बन बैठे, सास को ताक पर रख दे और मियाँ पर हुकूमत चलाने लगे? अब मैं आप

लोगों से इतना चाहती हूँ कि सच-सच अपनी-अपनी सासों का हाल बयान कीजिए।'

एक — अल्लाह करे, हमारी सास को आज रात ही को हैजा हो।

दूसरी — अल्लाह करे, हमारी सास को हैजा हो गया हो।

तीसरी — अल्लाह करे, हमारी सास ऐसी जगह मरे; जहाँ एक बूँद पानी न मिले।

बहारबेगम — या खुदा, मेरी सास के पाँव में बावला कुत्ता काटे और वह भूँक-भूँक कर मरे।

चौथी — हम तो अपनी सास को पहले ही चट कर गए। जहन्नुम चली गईं।

पाँचवीं — सास तो सास, हमारी ननद के नाम में दम कर दिया।

जानीबेगम — मेरी सास तो मेरे आगे चूँ नहीं कर सकतीं। बोलीं, और मैंने गला घोंटा।

इस लेक्चर का और किसी पर तो ज्यादा नहीं, मगर नजीरबेगम पर बहुत असर हुआ। हुस्नआरा से बोलीं — बहन, हम कल से आया करेंगे, हमें कुछ पढ़ाओगी?

हुस्नआरा — हाँ, हाँ, जरूर आओ।

जानीबेगम — ऐ वाह, यह क्या पढ़ाएँगे भला! हमारे पास आओ, तो हम रोज पढ़ा दिया करें।

नजीर बेगम — आपके तो पड़ोस ही में रहते हैं हम, मगर बहन, तुम तो हुड़दंगा सिखाती हो। दिन भर कोठे पर घोड़े की तरह दौड़ा करती हो, कभी नीचे कभी ऊपर।

जानीबेगम — (नजीरबेगम का हाथ पकड़ कर) मरोड़ डालूँ हाथ!

नजीर — देखा, देखा; बस, कभी हाथ मरोड़ा, कभी ढकेल दिया।

जानीबेगम — (नजीर का गाल काट कर) अब खुश हुई।

सिपहआरा — ऐ वाह, ले के गाल काट लिया।

जानीबेगम — फिर औरत हैं, या मर्द हैं कोई!

नजीरबेगम — अब आप अपनी मुहब्बत रहने दें।

जब सब मेहमान विदा हुए, तो चारों बहनें मिलकर गईं और बड़ी बेगम के साथ एक ही दस्तरख़्वान पर खाना खाया। खाते वक़्त यों गुफ्तगू हुई —

बहारबेगम — हुस्नआरा की शादी कहीं तजवीजी?

बड़ी बेगम — हाँ, फिक्र में तो हूँ।

बहारबेगम — फिक्र नहीं अम्माँजान, अब दिन-दिन चढ़ता है।

बड़ी बेगम — अपने जान तो जल्दी ही कर रही हूँ।

बहारबेगम — जल्दी क्या दो-चार बरस में?

रूहअफजा — बहन, अल्लाह-अल्लाह करो।

बहारबेगम — बेचारी सिपहआरा भी ताक रही है कि हम इनका भी जिक्र करें।

सिपहआरा — देखिए, यह छेड़खानी अच्छी नहीं, हाँ!

बड़ी बेगम — (मुस्करा कर) तुम जानो, यह जानें।

बहारबेगम — अभी कल शाम ही को तो तुमने कहा था कि अम्माँजान से हमारे ब्याह की सिफारिश करो। आज मुकरती हो? भला खाओ तो कसम कि तुमने नहीं कहा?

सिपहआरा — वाह, जरा-जरा सी बात पर कोई कसम खाया करता है।

रूहअफजा — पानी मरता है कुछ?

सिपहआरा — जी हाँ, आप भी बोलीं?

रूहअफजा — अच्छा, कसम खा जाओ न!

सिपहआरा — काहे को खायँ?

बड़ी बेगम — ऐ, तो चिढ़ती क्यों हो बेटी!

सिपहआरा — अम्माँजान, झूठ-मूठ लगाती हैं। चिढ़ें नहीं?

रूहअफजा — क्या! झूठ-मूठ?

सिपहआरा — और नहीं तो क्या?

रूहअफजा — अच्छा, हमारे सिर की कसम खाओ।

सिपहआरा — अल्लाह करे, मैं मर जाऊँ।

रूहअफजा — चलो बस, रो दीं। अब कुछ न कहो।

बहारबेगम — अम्माँजान, एक रईस हैं। उनका लड़का कोई उन्नीस-बीस बरस का होगा! खुदा जानता है, बड़ा हसीन है। आजकल सिकंदरनामा पढ़ता है।

बड़ी बेगम — खाने पीने से खुश हैं?

रूहअफजा — खुश? आठ तो घोड़े हैं उनके यहाँ।

बहारबेगम — अम्माँजान, वह लड़का हुस्नआरा के ही लायक है। दो लड़के हैं। दोनों लायक, होशियार, नेकचलन। हमारे यहाँ दूसरे-तीसरे आया करते हैं।

रूहअफजा — जरूर मंजूर कीजिए।

बड़ी बेगम — अच्छा,अच्छा, सोच लूँ।

हुस्नआरा ने यह बातचीत सुनी तो होश उड़ गए। खुदा ही खैर करे। ये दोनों बहनें अम्माँजान को पक्का कर रही हैं। कहीं मंजूर कर लें, तो गजब ही हो जाय। बेचारे आज़ाद वहाँ मुसीबतें झेल रहे हैं, और यहाँ जश्न हो। इस फिक्र में उससे अच्छी तरह खाना भी न खाया गया। अपने कमरे में आकर लेट रही और मुँह ढाँप कर खूब रोई। खाना खाने के बाद वे तीनों भी आईं और हुस्नआरा को लेटे देख कर झल्लाईं।

बहारबेगम – मकर करती होंगी। सोएँगी क्या अभी।

सिपहआरा – नहीं बहन, यह तकिए पर सिर रखते ही सो जाती हैं।

बहारबेगम – जी हाँ, सुन चुकी हूँ। एक तुमको तकिए पर सिर रखते ही नींद आ जाती हैं, दूसरे इनको।

रूहअफजा – (गुदगुदा कर) उठो बहन, हमारा ही खून पिए, जो न उठे। मेरी बहन न, उठ बैठो। शाबाश?

सिपहआरा – सोने दीजिए। आँखें मारे नींद के मतवाली हो रही है।

बहारबेगम – रसीली मतवालियों ने जादू डाला। हमारे यहाँ पड़ोस में रोज तालीम होती है। मगर हमारे मियाँ को इसकी

बड़ी चिढ़ है कि औरतें नाच देखें या गाना सुनें। मर्दों की भी क्या हालत है! घर की जोरू से बातें न करें, बाहर शेर। अल्लाह जानता है, हम तो उन सब मुई बेसयाओं की एड़ी-चोटी पर कुरबान कर दें। एक ने मिस्सी की धड़ी जमाई थी, जैसे बत्तख ने कीचड़ खाई हो।

रूहअफजा – (हुस्नआरा को चूम कर) उठो बहन!

हुस्नआरा – (आँखें खोल कर) सिर में दर्द है।

बहारबेगम – संदली-रंगों से माना दिल मिला;

दर्द सर की किसके माथे जायगी।

हुस्नआरा – यहाँ इन झगड़ों में नहीं पड़ते।

बहारबेगम – दुरुस्त।

रूहअफजा – जरूर किसी से आँख लड़ाई हैं, इसी से नींद आई है। अच्छा अब सच-सच कह दो, किससे दिल मिला है? –

दिल दीजिए तो यार तरहदार देख कर।

सिपहआरा – और क्या!

'माशूक कीजिए तो परीजाद कीजिए'

हुस्नआरा – किसी से मिलने का अब हौसला नहीं है जाँ;

बहुत उठाए मजे उनसे आशना हो कर।

रूहअफजा — बस, बहुत बातें न बनाइए। हम सब सुन चुकी है। भला किसी पर दिल नहीं आया, तो आँखों से आँसू क्यों कर निकले? जरी, आईने में सूरत देखिए।

सिपहआरा — ऐ बहन, यह धान-पान आदमी, जरी सिर में दर्द हुआ, और लेट रहीं।

बहारबेगम — लड़की बातें बनाती हैं। हमको चुटकियों पर उड़ाती हैं।

हुस्नआरा — अब आप जो चाहे कहे। यहाँ न कोई आशिक है, न कोई माशूक।

रूहअफजा — उड़ो न। कह चलूँ सब?

हुस्नआरा — हाँ, हाँ, कहिए। सौ काम छोड़ के। आपको खुदा की कसम।

रूहअफजा — अच्छा, इस वक़्त दिल क्यों भर आया?

हुस्नआरा -

> दिल ही तो है न संग व खिश्त, दर्द से भर न आए क्यों,
> रोएँगे हम हजार बार, कोई हमें रुलाए क्यों?

बहारबेगम — (तालियाँ बजा कर) खुल गई न बात?

रूहअफजा — जादू वह, जो सिर पर चढ़ के बोले।

हुस्नआरा — मुँह मे जबान है, जो चाहो, बको।

बहारबेगम — अच्छा, बड़ी सच्ची हो, तो एक बात करो। हम एक हाथ में कोई चीज लें और दूसरा हाथ खाली रखें। फिर मुट्ठी बाँध के आएँ, और तुम एक हाथ पर हाथ मारो। जो खाली हाथ पर पड़े, तो तुम झूठी। दूसरे हाथ पर पड़े, तो हम झूठे।

हुस्नआरा — ऐ वाह, छोकरियों का खेल।

रूहअफजा — अक्खाह, और आप है क्या?

सिपहआरा — अच्छा, आप आइए। मगर हम दोनों हाथ देख लेंगे।

बहारबेगम — हाँ-हाँ, देख लेना।

बहारबेगम ने दूसरे कमरे में जा कर एक छोटी-सी शीशे की गोली दाहिने हाथ में रखी और बायाँ हाथ खाली। दोनों मुट्ठियाँ खूब जोर से बन्द कर लीं और आकर बोलीं -अच्छा, मारो हाथ पर हाथ।

हुस्नआरा — ये वाहियात बातें हैं।

रूहअफजा — तो काँपी क्यों जाती हो?

सिपहआरा — बाजी, बोलो, किस हाथ में है?

हुस्नआरा — उधर वाले में।

सिपहआरा — नहीं बाजी, धोखा खाती हो। हम तो बाएँ हाथ पर मारते हैं।

बहारबेगम — (बायाँ हाथ खोल कर) सलाम।

सिपहआरा — अरे, वह हाथ तो दिखाओ।

बहारबेगम — देखो। है शीशे की गोली कि नहीं?

हुस्नआरा — देखा! कहा था कि उस हाथ में है। कहा न माना।

रूहअफजा — कहिए, अब तो सच है?

हुस्नआरा — ये सब ढकोसले हैं।

बहारबेगम — अच्छा बहन, अब इतना बता दो कि मियाँ आज़ाद कौन हैं?

हुस्नआरा — क्या जानें, क्या वाही-तबाही बकती हो।

बहारबेगम — अब छिपाने से क्या होता है भला! सुन तो चुके ही है हम।

हुस्नआरा — बताएँ क्या, जब कुछ बात भी हो।

सिपहआरा — इन दोनों बहनों ने ख्वाब देखा था कल मालूम होता है।

हुस्नआरा — हाँ, सच कहा। ख्वाब देखा होगा।

रूहअफजा — ख्वाब तो नहीं देखा; मगर सुना है कि सूरत-शक्ल में करोड़ों में एक हैं।

बहारबेगम — हुस्नआरा ने तो अपना जोड़ छाँट लिया, अब सिपहआरा का निकाह हुमायूँफर के साथ हो जाय, तो हम समझें कि यह बड़ी खुशनसीब हैं।

सिपहआरा — मेरे तो तलवों को भी न पहुँचें।

हुस्नआरा — तूती का कौए से जोड़ लगाती हो?

बहारबेगम — वाह, चेहरे से नूर बरसता है। जी चाहता है कि घंटों देखा करें। अम्माँ से आज ही तो कहूँगी मैं।

हुस्नआरा — कह दीजिएगा, धमकाती क्या हो!

सिपहआरा — आपके कहने से होता क्या है? यहाँ कोई पसंद भी करे!

रूहअफजा — इनकार करोगी, तो पछताओगी।

सवेरे हुस्नआरा तो कुछ पढ़ने लगी और बहारबेगम ने सिंगारदान मँगा कर निखरना शुरू किया।

हुस्नआरा — बस, सुबह तो सिंगार, शाम तो सिंगार। कंघी-चोटी, तेल-फुलेल। इसके सिवा तुम्हें और किसी चीज से वास्ता नहीं। रूहअफजा सच कहती हैं कि तुम्हें इसका रोग है।

बहारबेगम — चलो, फिर तुम्हें क्या? तुम्हारी बातों में खयाल बँट गया, माँग टेढ़ी हो गई।

हुस्नआरा — है-है! गजब हो गया। यहाँ तो दूल्हा भाई भी नहीं हैं! आखिर यह निखार दिखाओगी किसे?

बहारबेगम — हम उठ कर चले जायँगे। तुम छेड़ती जाती हो और यह मुआ छपका सीधा नहीं रहता।

हुस्नआरा — अब तक माँग का खयाल था, अब छपके का खयाल है।

बहारबेगम — अच्छा, एक दिन हम तुम्हारा सिंगार कर दें, खुदा की कसम वह जोबन आ जाय कि जिसका हक है।

हुस्नआरा — फिर अब साफ-साफ कहलाती हो। तुम लाख बनो-ठनो, हमारा जोबन खुदावंद होता है। हमें बनाव-चुनाव की क्या जरूरत भला!

बहारबेगम — अपने मुँह मिया मिट्ठू बन लो।

हुस्नआरा — अच्छा, सिपहआरा से पूछो। जो यह कहे वह ठीक।

सिपहआरा — जिस तरह बहार बहन निखरती हैं, उस तरह अगर तुम भी निखरो, तो चाँद का टुकड़ा बन जाओ। तुम्हारे चेहरे पर सुर्खी और सफेदी के सिवा नमक भी बहुत है। मगर वह गोरी-चिट्टी हैं बस, नमक नहीं।

रूहअफजा — सच्ची बात तो यह है कि हुस्नआरा हम सबसे बढ़-चढ़ कर हैं।

इतने में एक फिटन खड़खड़ाती हुई आई, मुश्की जोड़ी जुती हुई। नवाब खुरशेदअली उतर कर बड़ी बेगम के पास पहुँचे और सलाम किया।

बड़ी बेगम — आओ बेटा, बाईं आँख जब फड़कती है, तब कोई न कोई आता जरूर है। उस दिन आँख फड़की, तो लड़कियाँ आईं। यह रूहअफजा की क्या हालत हो गई है?

नवाब साहब — अब तो बहुत अच्छी हैं! मगर परहेज नहीं करतीं। तीता मिर्च न हो, तो खाना न खायँ। फिर भला अच्छी क्योंकर हों?

यहाँ से बातें करके नवाब साहब उस कमरे में पहुँचे, जिसमें चारों बहने बैठी थीं। नवाब साहब का लिबास देखिए, जुर्राब खाकी रंग का, घुटन्ना चुस्त, कुर्ता सफेद फलालैन का। उस पर स्याह बनात का दगला और हरी गिरंट की गोट। बाँकी नुक्केदार टोपी। पाँव में स्याह वारनिश का बूट, एक सफेद दुलाई ओढ़े हुए। हुस्नआरा और सिपहआरा ने नीची गरदन करके बन्दगी की। रूहअफजा ने कहा — आप बेइत्तला किए हमारे कमरे में क्यों चले आए साहब?

नवाब साहब — हुक्म हो, तो लौट जाऊँ।

बहारबेगम — शौक से। बिन बुलाए कोई नहीं आता। लो सिपहआरा, अब इनके साथ बग्घी पर हवा खाने जाओ।

सिपहआरा — वाह, क्या झूठ-मूठ लगाती हो। भला मैंने कब कहा था।

रूहअफजा — हम गवाह हैं।

नवाब साहब — अच्छा, फिर उसमें ऐब ही क्या है?

इतने में रूहअफजा एक शीशे की तश्तरी में चिकनी डलियाँ रख कर लाई। नवाब साहब ने दो उठा कर खा लीं और 'आख थू, आख थू!' करते-करते बोले — पानी मँगाओ खुदा के वास्ते।

वह चिकनी डली असल में मिट्टी की थी। चारों बहनों ने कहकहा लगाया और हजरत बहुत झेंपे। जब मुँह धो चुके, तो सिपहआरा ने एक गिलोरी दी।

नवाब साहब – (गिलौरी खोल कर) अब बे देखे भाले खानेवाले की ऐसी-तैसी। कहीं इसमें मिरचें न झोंक दी हों। इस वक़्त तो भूख लगी हुई है। आँतें कुलहु-अल्लाह पढ़ रही हैं।

हुस्नआरा – बासी खीर खाइए, तो लाऊँ?

नवाब साहब – नेकी और पूछ-पूछ ?

हुस्नआरा जा कर एक कुफुली उठा लाई। नवाब साहब ने बड़ी खुशी से ली, मगर खोलते हैं तो मेंढकी उचक कर निकल पड़ी!

नवाब साहब – खूब! यह रूहअफजा से भी बढ़ कर निकलीं। 'बड़ी बी तो बड़ी बी, छोटी बी सुभान अल्लाह।'

रात को नवाब साहब आराम करने गए, तो बहारबेगम ने पूछा – कहो, तुम्हारी अम्माँजान तो जीती हैं? या ढुलक गईं?

नवाब साहब – क्या बेतुकी उड़ाती हो, ख़्वाहमख़्वाह दिल दुखाती हो। ऐसी बातें करती हो कि सारा शौक ठंडा पड़ जाता है।

बहारबेगम – हाँ, उनकी तो मुहब्बत फट पड़ी है तुमको। बत्तीस धार का दूध पिलाया है कि नहीं!

नवाब साहब — इसी से आने को जी नहीं चाहता था।

बहारबेगम — तो क्यों आए? क्या चकला निगोड़ा उजड़ गया है? या बाजार में किसी ने आग लगा दी?

नवाब साहब — अच्छा, इस वक़्त तो खुदा के लिए ये बातें न करो? कोई छह दिन के बाद मुलाकात हुई है।

बहारबेगम — क्या कहीं आज और ठिकाना न लगा?

नवाब साहब — तुम तो जैसे लड़ने पर तैयार हो कर आई हो।

बहारबेगम — क्यों? आप प्राटन साहब न बनोगे? कोट पतलून पहन के न जाओगे? मुझसे उड़ते हो!

नवाब साहब रंगीन-मिजाज आदमी थे। बहारबेगम को उनके सैर-सपाटे बुरे मालूम होते थे। इसी सबब से कभी-कभी मियाँ-बीवी में चख चल जाती थी। मगर अबकी मरतबा बहारबेगम ने एक ऐसी बात सुनी थी कि आँखों से खून बरसने लगा था। एक दिन नवाब साहब कोट-पतलून डाट कर एक बँगले पर जा पहुँचे और दरवाजा खटखटाया। अन्दर से आदमी ने आकर पूछा — आप कहाँ से आते हैं? आपने कहा — हमारा नाम प्राटन साहब है। मेम साहब को बुलाओ। अब सुनिए, एक कुँजड़िन जो पड़ोस में रहती थी, वहाँ तरकारी बेचने गई हुई थी। वह इन हजरत को

पहचान गई और घर में आकर बहार-बेगम से कच्चा चिट्ठा कह सुनाया। बेगम सुनते ही आग-भभूका हो गईं और सोचीं कि आज आने तो दो, कैसा आड़े-हाथों लेती हूँ कि छठी का दूध या आ जाय। मगर उसी दिन यहाँ चली आईं और बात ज्यों कि त्यों रह गई। भरी तो बैठी ही थीं, इस वक़्त मौका मिला, तो उबल पड़ीं। नवाब ने जो पते-पते की सुनी, तो सन्नाटे में आ गए।

बहारबेगम — कहिए प्राटन साहब, मिजाज तो अच्छे हैं?

नवाब साहब — तुम क्या कहती हो? मेरी समझ ही में नहीं आता कुछ।

बहारबेगम — हाँ, हाँ, आप क्या समझेंगे। हम हिंदोस्तानी और आप खासी विलायत के प्राटन साहब! हमारी बोली आप क्या समझेंगे?

नवाब साहब — कहीं भंग तो नहीं पी गई हो?

बहारबेगम — अब भी नहीं शरमाते?

नवाब साहब — खुदा गवाह है, जो कुछ समझ में भी आया हो।

बहारबेगम — जलाए जाओ और फिर कहो कि धुआँ न निकले। मैं क्या जानती थी कि तुम प्राटन साहब बन जाओगे।

इधर तो मियाँ-बीबी में नोक-झोंक हो रही थी, उधर उनकी सालियाँ दरवाजे के पास खड़ी चुपके-चुपके झाँकती और सारी दास्तान सुन रही थीं। मारे हँसी के रहा न जाता था। आखिर जब एक मरतबा बहार ने जोर से नवाब का हाथ झटक कर कहा — आप तो प्राटन साहब हैं, मैं आपको अपने घर में न घुसने दूँगी — तो सिपहआरा खिलखिला कर हँस पड़ी। बहार ने हँसी की आवाज सुनी, तो धक से रह गई। नवाब भी हक्का-बक्का हो गए।

नवाब साहब — तुम्हारी बहनें बड़ी शोख हैं।

रूहअफजा — बहन, सलाम!

सिपहआरा — दूल्हा भाई, बन्दगीअर्ज।

हुस्नआरा — मैं भी प्राटन साहब को आदाबअर्ज करती हूँ।

नवाब साहब — समझा दो, यह बुरी बात है।

सिपहआरा — बिगड़ते क्यों हो प्राटन साहब!

बहारबेगम — (कमरे से निकल कर) ऐ, तो अब भागी कहाँ जाती हो?

रूहअफजा — बहन, अब जाइए। प्राटन साहब से बातें कीजिए।

बहारबेगम — आओ-आओ, तुम्हें खुदा की कसम।

सिपहआरा — कोई भाई-बन्द अपना हो, तो आएँ। भला प्राटन साहब को क्या मुँह दिखाएँ?

नवाब साहब — इस प्राटन के नाम ने तो हमें खूब झंडे पर चढ़ाया। कैसे रुसवा हुए!

बहारबेगम — अपनी करतूतों से।

सिपहआरा — अब तो कलई खुल गई?

तीनों बहनों ने नवाब साहब को खूब आड़े हाथों लिया। बेचारे बहुत झेंपे जब वे चली गईं, तो बहारबेगम ने भी प्राटन साहब का कसूर माफ कर दिया —

दिलों में कहने-सुनने से अदावत आ ही जाती है;
जब आँखें चार होती हैं, मुहब्बत आ ही जाती है।

47

आज हम उन नवाब साहब के दरबार की तरफ चलते हैं, जहाँ खोजी और आज़ाद ने महीनों मुसाहबत की थी और आज़ाद बटेर की तलाश में महीनों सैर-सपाटे करते रहे थे। शाम का वक़्त था। नवाब साहब एक मसनद पर शान से बैठे हुए थे। इर्द-गिर्द

मुसाहब लोग बैठे हुक्के गुड़गुड़ाते थे। बी अलारक्खी भी जा कर मसनद का कोना दबा कर बैठीं।

नवाब साहब — यो आइए, बी साहब!

अलारक्खी — (खिसक कर) बहुत खूब!

मुसाहब — (दूसरे मुसाहब के कान में) क्या जमाना है, वाह! हम शरीफ और शरीफ के लड़के और यह इज्जत कि जूतियों पर बैठे हैं। कोई टके को नहीं पूछता।

नुदरत — यार, क्या कहें, अब्बाजान चकलेदार थे, जिसका चाहा, भुट्टा-सा सिर उठा दिया। डंका सामने बजता था। इन्हीं आँखों के सामने दोनों तरफ आदमी झुक-झुक कर सलाम करते थे, और इन्हीं आँखों यह भी देख रहे हैं कि बेसवा आकर मसनद पर बैठ गई और हम नीचे बैठे हैं। वाह री किस्मत! फूट गई।

नवाब साहब — आपका नाम क्या है बी साहब?

अलारक्खी — हुजूर, मुझे अलारक्खी कहते हैं।

नवाब साहब — क्या प्यारा नाम है!

नुदरत — हुजूर, चाहे आप बुरा माने या भला, हम तो बीच खेत कहेंगे कि आपके यहाँ शरीफों की कदर नहीं। गजब खुदा का, यह टके की बाजारी औरत मसनद पर आ के बैठ जाय और हम

शरीफ लोग ठोकरें खाएँ! आसमान नहीं फट पड़ता। कैसे-कैसे गौखे रईस जमा हैं दुनिया में।

इतना कहना था कि हाफिज जी बिगड़ खड़े हुए और लपक के नुदरत के मुँह पर एक लप्पड़ जमाया। वह आदमी थे करारे, लप्पड़ खाते ही आग हो गए। झपट के हाफिज जी को दे पटका। इस पर कुल मुसाहब और हवाली-मवाली उठ खड़े हुए।

एक – छोड़ दे बे!

दूसरा – इतनी लातें लगाऊँगा कि भुरकस निकल जायगा।

तीसरा – मर्दक, जिसका नमक खाता है, उसी को गालियाँ सुनाता है?

नवाब साहब – निकाल दो इसे बाहर।

हाफिज – देखिए तो नमकहराम की बातें!

नवाब साहब – आज से दरबार में न आने पाए।

तीन-चार आदमियों ने मिल कर हाफिज जी को छुड़ाया दरबार में हुल्लड़ मचा हुआ था। अलारक्खी खड़े-खड़े थरथराती थीं और नवाब साहब उनको दिलासा देते जाते थे।

एक मुसाहब – (अलारक्खी से) ऐ हुजूर, आप न घबराएँ।

दूसरा मुसाहब — वल्लाह बी साहबा, जो आप पर जरा भी आँच आने पाए।

नवाब — तुम तो मेरी पनाह में हो जी!

अलारक्खी — जी हाँ, मगर खौफ मालूम होता है।

नवाब — अभी उस मूजी को यहाँ से निकलवाए देता हूँ।

हाफिज — हुजूर, वह बाहर खड़े सबको गालियाँ दे रहे हैं।

सबने मिल कर मियाँ नुदरत को बाहर तो निकाल दिया; पर वह टर्रा आदमी था, बाहर जा कर एँड़ी-बेंड़ी सुनाने लगा — ऐसे रईस पर आसमान फट पड़े, जो इन टके-टके की औरतों को शरीफों से अच्छा समझे। किसी जमाने मे हम भी हाथी-नशीन थे। चौदह-चौदह हाथी हमारे दरवाजे पर झूमते थे। आज इस नवबढ़ रईस ने हमको फर्श पर बिठाया और मालजादी को मसनद पर जगह दी। खुदा इस मर्दक से समझे!

नवाब साहब — यह कौन गुल मचा रहा है।

एक मुसाहब — वही है हुजूर।

दूसरा मुसाहब — नहीं हुजूर, वह कहाँ! वह भागा पत्तातोड़। यह कोई फकीर है। भूखों मरता है।

नवाब — कुछ दिलवा दो भई!

एक मुसाहब ने दारोगा जी को बुलाया और उनसे दस रुपए ले कर बाहर चला। जब उसके लौट आने पर भी बाहर का शोर न बन्द हुआ, तो नवाब ने खिदमतगार को भेजा कि देख, अब कौन चिल्ला रहा है? खिदमतगार ने बाहर जा कर जो देखा, तो मियाँ नुदरत खड़े गालियाँ सुना रहे हैं। जब वह नवाब साहब के पास जाने लगा, तो दारोगा जी ने उसे रोक कर समझाया — अगर तुमने ठीक-ठीक बता दिया, तो हम तुमको मार ही डालें। खबरदार, यह न कहना कि मियाँ नुदरत गालियाँ दे रहे हैं। बल्कि यों बयान करना कि वह फकीर तो दस रुपए ले कर चल दिया, मगर और कई फकीर, जो उस वक़्त वहाँ मौजूद थे, आपको दुआएँ दे रहे हैं। उनका सवाल है कि हुजूर के दरबार से कुछ उन्हें भी मिले।

नवाब साहब ने यह सुना, तो उन्हें यकीन आ गया। बेचारे भोले-भाले आदमी थे, हुक्म दिया कि इसी वक़्त सब फकीरों को इनाम मिले, कोई दरबार से नामुराद न लौटे; वर्ना मैं जहर खा कर मर जाऊँगा।

हाफिज — दारोगा जी, इन फकीरों को चालीस रुपए दे दीजिए।

नवाब — क्या चालीस! भला सौ रुपए तो तकसीम करो!

मुसाहब — ऐ, खुदा सलामत रखे।

हाफिज — वाह-वाह, क्यों न हो मेरे नवाब।

दारोगा ने सौ रुपए लिए और बाहर निकले। कई मुसाहब भी उनके साथ-साथ बाहर आ पहुँचे।

एक — ऐसे गौखे रईस कहाँ मिलेंगे?

दूसरा — क्या पागल है, वल्लाह!

हाफिज — बेवकूफ, काठ का उल्लू।

दारोगा — कह देंगे कि दे आए।

हाफिज — लेकिन जो फिर गुल मचाए?

दारोगा — अजी, उसको निकाल बाहर कर दो। दो धक्के।

सबने मियाँ नुदरत को घेर लिया और कोसों तक रगेदते हुए ले गए। वह गालियाँ देते हुए चले। अलारक्खी को भी खूब कोसा।

नवाब ने लाखों कसमें दीं कि अलारक्खी खाना खाएँ और कुछ दिन उसी बगीचे में आराम से रहें; मगर अलारक्खी ने एक न मानी। मियाँ नुदरत का उसे बार-बार ताने देना, उसे टके की औरत और बेसवा कहना उसके दिल में काँटे की तरह खटक रहा था। उसकी आँखों में आँसू भर आए।

नवाब — सच कहिए बी साहब, आखिर आप क्यों इस कदर रंजीदा हैं। अगर मुझसे कोई खता हुई हो, तो माफ करो।

अलारक्खी — जाने हमें इस वक़्त क्या याद आया। आपसे क्या बताएँ। दिल ही तो है।

नवाब — मुझसे तो कोई कसूर नहीं हुआ?

अलारक्खी — हुजूर, ये सब किस्मत के खेल हैं। हमारी से बेहया जिंदगी किसी की न हो? माँ बाप ने अंधे कुएँ में ढकेल दिया; आप तो चैन उड़ाया किए, हमें भाड़ में झोंक गए। हमारे बूढ़े मियाँ शादी करते ही दूसरे शहर में जा बसे। हम उनके नाम को रो बैठे। जब वह अंटागफील हो गए, तो हमारी माँ ने बड़ा जश्न किया और एक दूसरे लड़के से शादी ठहराई। मगर अम्माँ से किसी ने कह दिया — खबरदार, लड़की को अब न ब्याहना, भलेमानसों में बेवा का निकाह नहीं होता। बस, अम्माँ चट से बदल गईं। आखिर मैं एक रात को घर से निकल भागी। लेकिन उस दिन से आज तक जैसी पाक पैदा हुई थी, वैसी ही हूँ। आज उस आदमी ने जो मुझे टके की औरत और बेसवा बनाया, तो मेरा दिल भर आया। कसम ले लीजिए, जो मियाँ आज़ाद के सिवा किसी से कभी आँखें लड़ी हो।

नवाब — कौन, कौन? किसका नाम तुमने लिया?

हाफिज — अच्छा पता लगा। वह तो नवाब साहब के दोस्त हैं।

नवाब — हमको उनकी खबर मिले, तो फौरन बुलवा लें।

अलारक्खी — वह तो कहीं बाहर गए हैं। कुछ दिनों हमारी सराय में ठहरे थे। अच्छे खूबसूरत जवान हैं। उनको एक भोले-भाले नवाब मिल गए थे। नवाब ने एक बटेर पाला था। मियाँ आज़ाद ने उसे काबुक से निकाल कर छिपा लिया। नवाब के मुसाहबों ने बटेर की खूब तारीफें कीं। किसी ने कहा, कुरान पढ़ता था; किसी ने कहा, रोजे रखता था। सबने मिल कर नवाब को उल्लू बना लिया। मियाँ आज़ाद को ऊँटनी दी गई कि जा कर बटेर ढूँढ़ लाओ। आज़ाद ऊँटनी ले कर हमारे यहाँ बहुत दिन तक रहे।

नवाब साहब मारे शर्म के गले जाते थे। उम्र भर में आज ही तो उन्हें खयाल आया कि ऐसे मुसाहबों से नफरत करना लाजिम है। मुसाहबों ने लाख-लाख चाहा कि रंग जमाएँ, मगर नवाब ओर भी बददिमाग हो गए।

नवाब — वह भोला-भाला नवाब मैं ही हूँ। आपने इस वक़्त मेरी आँखें खोल दीं।

मुसाहब — गरीबपरवर, खुदा जानता है, हम लोग कट मरनेवाले हैं।

नवाब — बस, हम समझ गए।

हाफिज — हुजूर, तोप-दम कर दीजिए, जो जरा खता हो। हम लोग जान देनेवाले आदमी हैं।

नवाब — बस, चिढ़ाओ नहीं। अब कलई खुल गई।

मुसाहब — खुदा जानता है।

नवाब — अब कसमें खाने की कुछ जरूरत नहीं। जो हुआ सो हुआ, आगे समझा जायगा।

अलारक्खी — जो मुझको मालूम होता, तो यह जिक्र ही कभी न करती।

नवाब — खुदा की कसम, तुमने मुझ पर और मेरे बाप पर, दोनों पर इस वक़्त एहसान किया। तुम जिक्र न करतीं, तो मैं हमेशा अंधा बना रहता, तुमने तो इस वक़्त मुझे जिला लिया।

मुसाहब — जिसने जो कह दिया, वही हुजूर ने मान लिया। बस, यही तो खराबी है। जरा हमारी खिदमतों को देखें, तो हमको मोतियों में तौलें — कसम खुदा की — मोतियों में तोलें।

नवाब — मेरा बस चले, तो तुम सबको कालेपानी भेज दूँ। और ऊपर से बातें बनाते हो? बटेर भी रोजा रखते हैं?

हाफिज — खुदावंद, खुदा की खुदाई में क्या कुछ बईद है।

नवाब — चलो बस, मैं खुदाई दखल न दो। मालूम हुआ, बड़े दीनदार हो। मेरा बस चले, तो तुमको ऐसी जगह कत्ल करूँ, जहाँ पानी तक न मिले।

हाफिज — अगर कोई कसूर साबित हो, तो कत्ल कर डालिए।

मुसाहब — खुदावंद, वह आज़ाद एक ही गुर्गा है, बड़ा दगाबाज।

अलारक्खी — बस, बस, उनको कुछ न कहिएगा। उनका सा आदमी कोई हो तो ले!

नवाब — क्या शक है। खैर, अब भी सवेरा है, सस्ते छूटे।

अलारक्खी — छूटे तो सस्ते। ऐ हाँ, यह कहाँ की नमकहलाली है कि बटेर को रोजादार ओर नमाजी बना दिया? जो सुनेगा, क्या कहेगा?

नवाब — नमकहलाल के बच्चे बने हैं!

मुसाहब — खुदावंद! जो चाहे, कह लीजिए, हम लोग हुज्जत और तकरार थोड़े ही कर सकते हैं।

नवाब — अजी, तुम तो जहर दे दो, संखिया खिला दो! खूब देख चुका।

अलारक्खी — ऐसे बेईमानों से खुदा बचाए।

मुसाहब — हाँ, मसनद पर बैठ कर जो चाहो कह लो। बाजार में झोटम-झोट करती फिरती हो, और यहाँ आ के बातें बनाती हों।

नवाब — बस, जबान बन्द करो। मेरा दिल खट्टा हो गया।

मुसाहब — जो हम ख़तावार हों, तो हमारा खुदा हमसे समझे। जरा भी किसी बात में नमकहरामी की हो, तो हम पर आसमान फट पड़े। हुजूर चाहे न मानें, मगर दुनिया कहती है कि जैसे मुसाहब हुजूर को मिले हैं, वैसे बड़े खुशकिस्मतों को मिलते हैं।

नवाब — यों कहो कि जिसकी किस्मत फूट जाती है, उसको तुम जैसे गुर्गे मिलते हैं। बस, आप लोग बोरिया-बँधना उठाइए और चलते-फिरते नजर आइए।

मुसाहब — हुजूर, मरते दम तक साथ न छोड़ेंगे, न छोड़ेंगे।

हाफिज -यह दामन छोड़ कर कहाँ जाएँ?

मिर्जा — कहीं ठिकाना भी है?

हाफिज — ठिकाना तो सब कुछ हो जाय, मगर छोड़ कर जाने को भी जब जी चाहे। जिसका इतने दिन तक नमक खाया, उससे भला अलग होना कैसे गवारा हो? मार डालिए, मगर हम तो इस ड्योढ़ी से नहीं जाने के। यह दर और यह सर। मरें भी, तो हुजूर ही की चौखट पर, और जनाजा भी निकले, तो इसी दरवाजे से !

नवाब — बातें न बनाओ। जहाँ सींग समाए, चले जाओ।

हाफिज — हुजूर को खुदा सलामत रखे। जहाँ हुजूर का पसीना गिरे, वहाँ हमारा खून जरूर गिरेगा।

मगर नवाब साहब इन चकमों में न आए। खिदमतगारों को हुक्म दिया कि इन सबों को पकड़ कर बाहर निकाल दो। अगर न जाएँ, तो ठोकर मार कर निकाल दो।

अब बी अलारक्खी का भी हाल सुनिए। उनको मियाँ नुदरत की बातों का ऐसा कलक हुआ, दिल पर ऐसी चोट लगी कि अपने कुल जेवर और असबाब बेच कर बस्ती के बाहर एक टीले पर फकीरों की तरह रहने लगीं। कसम खा ली कि अब तक आज़ाद रूम से न लौटेंगे, इसी तरह रहूँगी।

48

जिस जहाज पर मियाँ आज़ाद और खोजी सवार थे, उसी पर एक नौजवान अंगरेज अफसर और उसकी मेम भी थी। अंगरेज का नाम चार्ल्स अपिल्टन था और मेम का वेनेशिया। आज़ाद को उदास देख कर वेनेशिया ने अपने शौहर से पूछा — इस

जेंटिलमैन से क्योंकर पूछें कि यह बार-बार लंबी साँसें क्यों ले रहा है?

साहब — तुम ऐसे-वैसे आदमियों को जेंटिलमैन क्यों कहती हो? यह तो निगर (काला आदमी) है।

मेम — निगर तो हम हब्शी को कहते हैं। यह तो गोरा-चिट्ठा, खूबसूरत आदमी है।

साहब — तो क्या खूबसूरत होने से ही कोई जेंटिलमैन हो जाता है? इंग्लैंड के सब सिपाही गोरे होते हैं, तो क्या इससे ये सब के सब जेंटिलमैन हो गए?

मेम — तुम तो अपनी दलील से आप कायल हो गए। जब गोरे चमड़े से कोई जेंटिलमैन नहीं होता, तो फिर तुम सब क्यों जेंटिलमैन कहलाओ? और इन लोगों को निगर क्यों कहो? वाह, अच्छा इंसाफ है!

इतने में जहाज के एक कोने से आवाज आई कि ओ गीदी न हुई करौली, नहीं तो लाश फड़कती होती।

मियाँ आज़ाद डरे कि ऐसा न हो, मियाँ खोजी किसी अंगरेज से लड़ पड़ें, अफीम की लहर में किसी से बेवजह झगड़ पड़ें। करीब जाकर पूछा — यह क्यों बिगड़े जी? किस पर गुल मचाया?

खोजी — अजी, जाओ भी, यहाँ शिकार हाथ से जाता रहा। वल्लाह, गिरफ्तार ही कर लिया था। गीदी को पाता, तो इतनी करौलियाँ लगाता कि छठी का दूध याद आ जाता। मगर मेरा पाँव फिसल गया और वह निकल गया!

आज़ाद — तुम्हें एक आँच की हमेशा कसर रह जाती है। यह था कौन?

खोजी — था कौन, वही बहुरूपिया! और किसको पड़ी थी भला!

आज़ाद — बहुरूपिया!

खोजी — जी हाँ, बहुरूपिया! बड़ा ताज्जुब हुआ आपको?

आज़ाद — भई हाँ, ताज्जुब कहीं लेने जाना है। क्या बहुरूपिया भी जहाज पर सवार हो लिया है? बड़ा लागू है भई?

खोजी — सवार नहीं हुआ, तो आया कहाँ से?

आज़ाद — क्या सोते हो खोजी, या पीनक में हो?

खोजी — खोजी की ऐसी-तैसी। फिर तुमने खोजी कहा हमको!

आज़ाद — माफ करना भई, कसूर हुआ।

खोजी — वाह, अच्छा कसूर हुआ! किसी के जूते लगाइए और कहिए, कसूर हुआ। जब देखो, खोजी-खोजी।

आज़ाद — अच्छा जनाब ख्वाजा साहब, अब तो राजी हुए! यह बहुरूपिया कहाँ से आ गया?

खोजी — अरे साहब, अब तो ख्वाब में भी आने लगा। अभी मैं सोता था, आप आ पहुँचे। मेरे हाथ में उस वक़्त अफीम की डिबिया थी। फेंक के डिबिया और ले के कतारा जो पीछे झपटा, तो दो कोस निकल गया। मगर शामत यह आई कि एक जगह जरा सा पानी पड़ा था! मेरी तो जान ही निकल गई। फिसला, तो आरा रा रा धों!

आज़ाद — क्या गिर पड़े? जाओ भी!

खोजी — बस, कुछ न पूछिए। मेरा गिरना ऐसा मालूम हुआ, जैसे हाथी पहाड़ से गिरा। धड़ाम-धड़ाम!

आज़ाद — इसमें क्या शक है! आपके हाथ-पाँव ही ऐसे हैं। वह तो कहिए, बड़ी खैरियत गुजरी!

खोजी — और क्या! मगर जाता कहाँ है गीदी। रगेद के मारूँ। यहाँ पलटन में सूबेदारी कर चुके हैं।

मेम और साहब, दोनों मियाँ आज़ाद और खोजी की बातें सुन रहे थे। साहब तो उर्दू खूब समझते थे, मगर मेम साहब कोरी थीं। साहब ने तर्जुमा करके बताया, तो वेनेशिया भी मारे हँसी के लोट

गई! यह इंच भर का आदमी, एक-एक माशे के हाथ पाँव और आपके गिरने से इतनी बड़ी आवाज हुई कि जैसे हाथी गिरे!

साहब — सिड़ी है कोई। जाने क्या वाही-तबाही बकता है।

मेम — तुम चुप रहो। हम जेंटिलमैन से पूछते हैं, यह कौन पागल है।

साहब — अच्छा, मगर हिंदोस्तानी बदतमीज होते हैं। तुम इससे बातें न करो।

मेम — अच्छा, तुम्हीं पूछो।

इस पर साहब ने उँगली के इशारे से आज़ाद को बुलाया। आज़ाद भला कब सुननेवाले थे। बोले ही नहीं। साहब पलटनी आदमी, चेहरा मारे गुस्से के लाल हो गया। खयाल हुआ कि वेनेशिया तालियाँ बजाएगी कि एक निगर तक मुखातिब न हुआ, बात का जवाब तक न दिया। वेनेशिया ने जब यह हालत देखी तो इठलाती और मुस्कराती हुई मियाँ आज़ाद की तरफ गई। आज़ाद लेडियों से बोलने-चालने के आदी तो थे ही, एक खूबसूरत लेडी को आते देखा, तो टोपी उतार कर सलाम किया और पूछा — आप कहाँ तशरीफ ले जायँगी?

मेम — घर जा रही हूँ। यह ठिगना आदमी कौन है? खूब बातें करता है। हँसते-हँसते पेट में बल पड़-पड़ गए।

आज़ाद — जी हाँ, बड़ा मसखरा है।

मेम — चार्ली, यह तो कहते हैं कि वह कौन मसखरा है।

साहब — इसकी बातें बड़े मजे की होती हैं।

साहब का गुस्सा ठंडा हो गया। आज़ाद का डील-डौल देख कर डर गए। इधर-उधर की बातें होने लगीं। इतने में जहाज पर एक दिल्लगीबाज को सूझी कि आओ, खोजी को बनाएँ। दो-चार और शोहदे उससे मिल गए। जब देखा कि मियाँ खोजी पीनक में सो गए, तो एक आदमी ने दो लाल मिरचें उनकी नाक में डाल दीं। खोजी ने जो आँख खोली, तो मारे छींकों के बौखला गए। बावले कुत्ते की तरह इधर-उधर दौड़ने लगे। मेम और साहब तालियाँ बजा-बजा कर हँसने लगे।

आज़ाद — जनाब ख्वाजा साहब!

खोजी — बस, अलग रहिएगा, आक् छीं!

आज़ाद — आखिर यह हुआ क्या? कुछ बताओ तो!

खोजी — चलिए, आपको क्या; चाहे जो कुछ हुआ! आ...छीं!

आज़ाद — यार, यह उसी बहुरूपिए की शरारत है।

खोजी — देखिए, तो कितनी करौलियाँ भोंकी हों कि आ...छीं। यार ही तो करे-छीं।

आज़ाद — मगर तुम तो गिर-गिर पड़ते हो मियाँ! एक दफे जी कड़ा करके पकड़ क्यों नहीं लेते?

खोजी — नाक में मिरचें डाल दीं। गीदी ने।

आज़ाद — अबकी आप ताक में बैठे रहिए। बस, आते ही पकड़ लीजिए। मगर है बड़ा शरीर, सचमुच नाक में दम कर दिया।

खोजी — कुछ ठिकाना है! नाक में मिरचें झोंकने की कौन सी दिल्लगी है?

आज़ाद — और क्या साहब, यह बेजा बात है।

खोजी — बेजा-वेजा के भरोसे न रहिएगा, मैं किसी दिन हाथ-पाँव ढीले कर दूँगा। कहाँ के बड़े कड़ेखाँ हैं आप! मैंने भी सूबेदारी की है।

आज़ाद — तो आप मेरे हाथ-पाँव क्यों ढीले करते हैं? मैंने तो आपका कुछ बिगाड़ा नहीं।

खोजी — (आँखें खोल कर) अरे! यह आप थे! भई, माफ करना। बस, देखते जाओ, अब गिरफ्तार ही किया चाहता हूँ गीदी को।

आज़ाद — लेकिन, जरा होशियार रहिएगा? बहुरूपिया गया जहन्नुम में, ऐसा न हो, कोई हजरत रुपए-पैसे गायब कर दें, बेवकूफ कहीं का! अबे गधे, यहाँ बहुरूपिया कहाँ?

खोजी — बस, चोंच सँभालिए, बंदा चलता है। दोस्ती हो चुकी। कुछ आपके गुलाम नहीं हैं। और सुनिए, हम गधे हैं। क्या जाने कितने गधे हमने बना डाले।

आज़ाद — खैर, यही सही। लेकिन जाइएगा कहाँ? यहाँ भी कुछ खुश्की है?

खोजी — अरे ओ जहाज के कप्तान! जहाज रोक ले — अभी रोक ले।

साहब — वह यों न सुनेगा। दो-चार हाथ करौली के लगाइए, तो फिर सुने।

इतने में हाजरी खाने का वक़्त आया। आज़ाद ने बेतकल्लुफी के साथ उन दोनों के साथ खाना खाया। फिर तीनों टहलने लगे। आज़ाद को वेनेशिया की एक-एक छवि भाती थी और वह हसीना कभी शोखी इठलाती थी, कभी नाज के साथ मुसकराती थी। इतने में खोजी ने यह शेर पढ़ा —

गर तुम नहीं तो और बुते महजबीं सही,
हमको तो दिल्लगी से गरज है, कहीं सही।

आज़ाद ने जो यह शेर सुना, तो खोजी के पास आकर बोले — यह क्या गजब करते हो जी? इसका शौहर शेर खूब समझ लेता है।

खोजी — वह गीदी इन इशारों को क्या जाने।

आज़ाद — तुम बड़े शरीर हो।

खोजी — क्यों उस्ताद, हमीं से यह उडनघाइयाँ बताते हो, क्यों? सच कहना, हुस्नआरा के लगभग है कि नहीं। बंबईवाली बेगम भी ऐसी ही शोख थी।

वेनेशिया ने खोजी को मुसकराते देखा, तो उँगली के इशारे से बुलाया। खोजी तो रेशाखतमी हो गए। बहुत ऐंठते और अकड़ते हुए चले। गोया लंघोर पहलवान के भी चचा हैं। वाह, क्यों न हो। इस वक़्त जरा पाँव फिसले, तो दिल्लगी हो। मेमसाहब के पास पहुँचे।

आज़ाद — टोपी उतार कर सलाम करो खोजी।

खोजी का लफ्ज सुनना था कि ख्वाजा साहब का गुस्सा एक सौ बीस दरजे पर जा पहुँचा। बस, पलट पड़े और पलटते ही उलटे पाँव भागने लगे।

आज़ाद — ओ गीदी, जो पलट गया, तो इतनी करौलियाँ भोंकी होगी कि छठी का दूध याद आ गया होगा।

मेम — क्यों खोजी, क्या मुझसे खफा हो गए?

आज़ाद — क्यों भई, क्या शैतान ने फिर उँगली दिखा दी? मियाँ खोजी?

खोजी — खोजी पर खुदा की मार! खोजी पर शैतान की फटकार! एक दफा खोजी कहा, मैं खून पी कर रह गया, अब फिर दोहराया। खुदा जाने, कब का दिया इस गाढ़े वक़्त काम आया। नहीं तो मारे करौलियों के भुट्टा सा सिर उड़ा देता। लाख गया-गुजरा हूँ, तो क्या हुआ, उम्र भर रिसालदारी की है, घास नहीं खोदी।

मेम — अच्छा, यह खोजी के नाम पर बिगड़े! हम समझे, हमसे रूठ गए।

खोजी — नहीं मेम साहब, कैसी बात आप फरमाती हैं!

आज़ाद — जरा इनसे इनकी बीवी जान का हाल पूछिए। उसका नाम बुआ जाफरान है। देवनी है देवनी।

खोजी ने बुआ जाफरान का नाम सुना, तो रंग फक हो गया और सहम कर आँखें बन्द कर लीं। आज़ाद ने जब वेनेशिया से सारा किस्सा कहा, तो मारे हँसी के लोट-लोट गई।

49

एक आलीशान महल की छत पर हुस्नआरा और उनकी तीनों बहनें मीठी नींद सो रही हैं। बहारबेगम की जुल्फ से अंबर की लपटें आती थीं; रूहअफजा के घुँघरवाले बाल नौजवानों के मिजाज की तरह बल खाते थे; सिपहआरा की मेहँदी अजब लुत्फ दिखाती थी और हुस्नआरा बेगम के गोरे-गोरे मुखड़े के गिर्द काली-काली जुल्फों को देख कर धोखा होता था कि चाँद ग्रहण से निकला है।

इधर तो ये चारों परियाँ बेखबर आराम में हैं, उधर शाहज़ादा हुमायूँफर अपने दोस्त मीर साहब से इधर-उधर की बातें कर रहे हैं।

मीर – कुछ अड़ोसी-पड़ोसियों का तो हाल कहिए। दोनों हसीनें नजर आती हैं या नहीं?

शाहज़ादा — अरे मियाँ, अब तो चौकड़ी है, एक से एक बढ़-चढ़ कर। सब मस्त है। मगर बला की हयादार।

मीर — यह कहिए, गहरे हो उस्ताद।

शाहज़ादा — अजी, अभी ख्वाब देख रहा थ एक महरी हुस्नआरा का खत लाई है। खत पढ़ रहा था कि आप बला की तरह आ पहुँचे। जी चाहता है गोली मार दूँ।

मीर — क्यों साहब, आपने तो कान पकड़े थे।

शाहज़ादा — दिल पर काबू भी तो हो?

मीर — कलंक का टीका लगाओगे? खुदा के लिए फिर तौबा करो। आखिर चारों छोकड़ियों में से आप रीझे किस पर? या चारों पर दिल आया है?

शाहज़ादा — चार निकाह तो जायज़ हैं।

मीर — तो यह कहिए चारों पर दाँत हैं।

शाहज़ादा — नहीं मियाँ, हँसता हूँ। दो ही तो कुँआरी हैं।

ये बातें हो ही रही थीं कि एकाएक मुहल्ले में चोर-चोर का गुल मचा। कोई चिराग जलाता है कोई बीवी के जेवर टटोलता है। चारों तरफ खलबली मच गई। पूछने से मालूम हुआ कि बड़ी बेगम साहबा के घर में चोर घुसा था। शाहज़ादे ने जो यह बात

सुनी, तो मीर साहब से बोले — भई मौका तो अच्छा है। चलो, इस वक़्त जरा हो आएँ। इसी बहाने एहसान जताएँ।

मीर — सोच लो, ऐसा न हो, पीछे मेरे माथे जाय। तुम तो शाहज़ादे बन कर छूट जाओगे, उल्लू मैं बनूँगा। आखिर वहाँ चल कर क्या कहोगे?

शाहज़ादा — अजी, कहेंगे क्या! बस अफसोस करेंगे। शायद इसी फेर में एक झलक मिल जाय। और नहीं, तो आवाज ही सुन लेंगे।

दोनों आदमी बेगम साहबा के मकान पर पहुँचे, तो क्या देखते हैं कि चालीस पचास आदमी एक चोर को घेरे खड़े हैं और चारों तरफ से उस पर बेभाव की पड़ रही हैं। एक ने तड़ से चपत जमाई, दूसरे ने खोपड़ी पर धौल लगाई। चोर पर इतनी पड़ी कि बिलबिला गया। झल्ला-झल्ला कर रह जाता था। दो-तीन भले आदमी लोगों को समझा रहे थे, बस करो, अब तो खोपड़ी पिलपिली कर दी। क्या जमाते ही जाओगे?

एक — भाई, खूब हाथ गरमाए।

दूसरा — हम तो पोले हाथ से लगाते थे। जिसमें चोट कम आए, मगर आवाज खूब हो।

चोर — छूटूँगा तो एक एक से समझूँगा। क्या करूँ, बेबस हूँ; वर्ना सबको पीस कर धर देता।

बहारबेगम के मियाँ भी खड़े थे। बोले — एक ही शैतान है।

शाहज़ादा — आखिर, यह आया किधर से?

नवाब साहब — मैं घूम कर कोई दस बजे के लगभग आया। खाना खा कर लेटा ही था कि नींद आ गई। यह गुल मचा, तो तलवार ले कर दौड़ पड़ा। अब सुनिए, मैं तो ऊपर से आ रहा हूँ, और चोर नीचे से ऊपर जाता है। रास्ते में मुठभेड़ हुई। इसने छुरी निकाली, मगर मैंने भी तलवार का वह हाथ चलाया कि जरा हाथ ओछा न पड़े, तो भंडारा खुल जाय। फिर तो ऐसा सहमा कि होश उड़ गए। भागते राह न मिली। अब छत पर पहुँचा और चाहता था कि झपट कर नीचे कूद पड़े; मगर मेरी छोटी साली ने इस फुरती से रस्सी का फंदा बना कर फेंका कि उलझ कर गिरा। उठ कर भागने को ही था कि मैं गले पर पहुँचा गया और जाते ही छाप बैठा। औरतों ने दोहाई देना शुरू की; लेकिन मैंने न छोड़ा। आपने इस वक़्त कहाँ तकलीफ फरमाई?

शाहज़ादा — मैंने कहा, चल कर देखूँ क्या बात हुई। बारे शुक्र है कि खैरियत हुई। मगर आपकी साली बड़ी दिलेर हैं। दूसरी औरत हो, तो डर जाय।

यहाँ तो यह बातें हो रही थीं, उधर अन्दर चारों बहनों में भी यही जिक्र था। चारों हँस-हँस कर यही बातें कर रही थीं -

सिपहआरा — है-है बाजी, मैंने जब उसे काले-काले संडे को देखा, तो सन से जान निकल गई।

रूहअफजा — मुआ तंबाकू का पिंडा।

हुस्नआरा — वह तो खैर गुजरी कि संदूक हाथ से गिर पड़ा, नहीं तो सब मूस ले जाता।

सिपहआरा — बहारबेगम की चिड़चिड़ी सास लाखों ही सुनाती कि मेरी बहू के गहने सब बेच खाए ।

बहारबेगम — चोर-चोर की भनक कान में पड़ी, तो मैं कुलबुला कर चौंक पड़ी। भागी, तो जूड़ा भी खुल गया। अल्लाह जानता है, बड़ी मेहनत से बाँधा था। चलो खैर!

रूहअफजा — बस, हमारी बाजी को चोटी कंघी की फिक्र रहती है।

हुस्नआरा — जितना इनको इस बात का खयाल है, उतना हमारे खानदान भर में किसी को नहीं है। जभी तो दूल्हा भाई इतने दीवाने रहते है।

बहारबेगम — चलो, बैठी रहो; छोटे मुँह बड़ी बात!

हुस्नआरा — दूल्हा भाई को इनके साथ इश्क है।

बहारबेगम — क्या टर-टर लगाई है नाहक!

अब दिल्लगी सुनिए कि मिर्जा हुमायूँफर बाहर बैठे चुपके-चुपके सारी बातें सुन रहे थे। नवाब बेचारे कट-कट गए, मगर चुप। अन्दर जा कर समझाएँ, तो अदब के खिलाफ चुपके बैठे रहें, तो भी रहा नहीं जाता। जान अजाब में थी। खैर, हुक्का पी कर शाहज़ादा रुख़सत हुए। उनके चले जाने के बाद नवाब साहब अन्दर आए और बोले — तुम लोगों की भी अजब आदत है। जब देखोगी कि कोई गैर आदमी आ के बैठा है, बस, तभी गुल मचाओगी। इस वक़्त एक भलेमानस बैठे थे और यहाँ चुहल हो रही थी।

बहारबेगम — वह भलामानस निगोड़ा कौन था, जो इतने वक़्त पंचायत करने आ बैठा?

रूहअफजा — तो अब कोई उनके मारे अपने घर में बात न करे? घोट कर मार न डालिए।

हुस्नआरा — हम भी तो सुनें, वह भलेमानस कौन थे?

नवाब — अजी, यही, जो सामने रहते हैं; शाहज़ादे।

हुस्नआरा — तो आपने आकर हमसे कह क्यों न दिया? फिर हम काहे को बोलते? बहारबेगम — अपनी खता न कहेंगे, दूसरों को ललकारेंगे।

नवाब — उस वक़्त वहाँ से आने का मौका न था। मुझसे पूछा कि चोर को किसने पकड़ा। मैंने कहा, मेरी छोटी साली ने तो बहुत ही हँसे।

नवाब साहब बाहर चले गए, तो फिर बातें होने लगीं।

सिपहआरा — जरा उसकी ढिठाई तो देखो कि चोर का नाम सुनते ही आ डटा। भला क्या वजह थी इसकी? ऐसा कहाँ का बड़ा रुस्तम था?

हुस्नआरा — तीन बजे के वक़्त आप जो आए, तो क्यों आए!

रूहअफजा — मैं बताऊँ! उसको यह खबर न होगी कि दूल्हा भाई घर पर हैं। यह न होते, तो घर में घुस पड़ता।

सिपहआरा — काम तो शोहदों के जैसे हैं।

अब एक और दिल्लगी सुनिए। चोर आया, गुल गपाड़ा हुआ, पकड़ा गया जमाने भर में हुल्लड़ मचा, महल्ला भर जाग उठा; चोर थाने पर पहुँचा; मगर बड़ी बेगम साहबा अभी तक खर्राटे ही

ले रही हैं। जब जागीं, तो मामा से बोलीं — कुछ गुल सा मचा था अभी?

मामा — हाँ, कुछ आवाज तो आई थी!

बेगम — हरी, किसी से पूछो तो।

मामा — ऐ बीबी, पूछना इसमें क्या है? भेड़िया-बेड़िया आया होगा।

बेगम — मैंने आज हाथी को ख्वाब में देखा है, अल्लाह बचाए।

इतने में चोर के आने की खबर मिली। तब तो बेगम साहबा के होश उड़ गए। मामा को भेजा कि जा पूछ, कुछ ले तो नहीं गया।

हुस्नआरा — अम्माँजान बहुत जल्द जागीं! क्या तू भी घोड़े बेच कर सोई थी! अल्लाह री नींद!

मामा- जरी आँख लग गई थी। मगर कुछ गुल की आवाज जरूर आई थी।

हुस्नआरा — महल्ला भर जाग उठा, तुम्हारे नजदीक कुछ ही कुछ गुल था। ठीक! जाके अम्माँ से कह दे कि चोर आया था, मगर जाग हो गई।

सिपहआरा – ऐ, काहे के वास्ते बहकती हो। मामा, तू जा के सो रह; शोर-गुल कहीं कुछ न था, कोई सोते में बर्रा उठा होगा।

हुस्नआरा – नहीं मामा, यह दिल्लगी करती हैं। चोर आया था।

मामा – ऐ, गया चूल्हे में निगोड़ा चोर! इधर आने का रुख करे, तो आँखें ही फूट जायँ। क्या हँसी ठट्ठा है।

सिपहआरा – देखो तो सही भला!

मामा – अभी बेगम साहबा सुन लें, तो दुनिया सिर पर उठा लें।

मामा ने जा कर बेगम से कहा – हुजूर, कुछ है न वै, बेकार को जगाया। न भेड़िया, न चोर, कोई सोते-सोते बर्रा उठा था।

बेगम – जरा बाहर जा कर तो पूछ कि यह गुल कैसा था?

महरी – बीबी, मैं अभी बाहर से आई हूँ, कोठे पर कलमुँहा आया था। मोठरी का कुलुफ तोड़ कर जब संदूक उठाया, तो जाग हो गई। इतने में नवाब साहब कोठे पर से नंगी तलवार लिए दौड़ आए।

बेगम – नवाब साहब के दुश्मनों को तो कहीं चोट-ओट नहीं आई?

महरी – ना बीबी, एक फाँस तक तो चुभी नहीं।

बेगम — चोर कुछ ले तो नहीं गया।

महरी — एक झंझी तक नहीं।

बेगम — चोर अब कहाँ है?

महरी — खादिमहुसैन थाने पर ले गया।

मामा — अब चक्की पीसनी पड़ेगी।

बेगम — तू तो कहती थी कि कोई सोते-सोते बर्रा उठा था। झूठी जमाने भर की। चल, जा, हट!

अब थाने का हाल सुनिए। थानेदार नदारद; जमादार शराब पिए मस्त; कांस्टेबिल अपनी-अपनी डयुटी पर। एक कांस्टेबिल पहरे पर पड़ा सो रहा था। खादिमहुसैन ने बहुत गुल मचाया। तब जाके हजरत की नींद खुली। बिगड़े कि मुझे जगाया क्यों? चोर को छोड़ दो।

खादिमहुसैन — वाह, छोड़ देने की एक ही कही। मैं भी थाने में मुहर्रिर रह चुका हूँ।

कांस्टेबिल — न छोड़ोगे तुम?

खादिमहुसैन — होश की दवा करो मियाँ! इसके साथ तुमको भी फँसाऊँ तो सही।

कांस्टेबिल — (चोर से) तुझे इन्होंने अपने यहाँ कै घंटे रखा था?

चोर — पकड़ के बस यहाँ ले आए?

कांस्टेबिल — दुत गौखे! अबे, तू कहना कि मैं राह-राह चला जाता था, इनसे मुझसे लागडाट थी। इन्होंने घात पा कर मुझे पकड़ लिया, खूब पीटा और चार घंटे तक अस्तबल की कोठरी में बद रखा।

चोर — लागडाट क्या बताऊँ!

कांस्टेबिल — कह देना कि मेरी जोरू पर यह बुरी निगाह डालते थे। बस, लागडाट हो गई।

चोर — मगर मेरी जोरू तो चार बरस हुए, एक के साथ निकल गई।

कांस्टेबिल — बस, तो बात बन गई! कह देना, इन्हीं की साजिश से निकली थी। तो इन पर दो जुर्म कायम होंगे। यह एक कि तुमको झूठ-मूठ फाँस लिया, दूसरे जबरदस्ती कैद रखा।

खादिमहुसैन — तुम्हारी बातों पर कुछ हँसी आती है, कुछ गुस्सा।

कांस्टेबिल — जब बड़ा घर देखोगे, सब हँसी का हाल खुल जायगा।

खादिमहुसैन — हमारे घर में चोरी हो और हमीं फँसे?

खैर कांस्टेबिल साहब रोजनामचा लिखने बैठे। खादिमहुसैन ने सारी दास्तान बयान की। जब उसने यह कहा कि नवाब साहब तलवार से ले कर दौड़े, तो कांस्टेबिल ने कलम रोक दिया और कहा — जरा ठहरो, तलवार का लाइसेंस उनके पास है?

खादिमहुसैन — उनके साथ तो बीस सिपाही तलवार बाँधे निकलते हैं। तुम एक लाइसेंस लिए फिरते हो!

आखिर रिपोर्ट खत्म हुई और खादिम अपने घर आया।

50

एक दिन मियाँ आज़ाद मिस्टर और मिसेज अपिल्टन के साथ खाना खा रहे थे कि एक हँसोड़ आ बैठे और लतीफे कहने लगे। बोले — अजी, एक दिन बड़ी दिल्लगी हुई। हम एक दोस्त के यहाँ ठहरे हुए थे। रात को उनके खिदमतगार की बीबी दस अंडे चट कर गई। जब दोस्त ने पूछा, तो खिदमतगार ने बिगड़ी बात बना कर कहा कि बिल्ली खा गई। मगर मैंने देख लिया

था। जब बिल्ली आई तो वह औरत उसे मारने दौड़ी। मैंने कहा — बिल्ली को मार न डालना, नहीं तो फिर अंडे हजम न होंगे।

आज़ाद — बात तो यही है। खाय कोई, बिल्ली का नाम बद।

अपिल्टन — आप शादी क्यों नहीं करते?

हँसोड़ — शादी करना तो आसान है, मगर बीवी को सँभालना मुश्किल। हाँ, एक शर्त पर हम शादी करेंगे। बीवी दस बच्चों की माँ हो।

मेम — बच्चों की कैद क्यों की?

हँसोड़ — आप नहीं समझीं। अगर जवान, आई, तो उसके नखरे उठाते-उठाते नाक में दम आ जायगा; अधेड़ बीवी हुई तो नखरे न करेगी और बच्चे बड़े काम आएँगे।

आज़ाद — वह क्या?

हँसोड़ — कहत के दिनों में बेच लेंगे।

इतने में क्या देखते हैं कि मियाँ खोजी लुढ़कते हुए चले आते हैं। एक सूखा कतारा हाथ में हैं।

आज़ाद — आइए। बस, आप ही की कसर थी।

खोजी — मुझे बैठे-बैठे खयाल आया कि किसी से पूछूँ तो कि यह समुंदर है क्या चीज और किसकी दुआ से बना है?

हँसोड़ — मैं बताऊँ! अगले जमाने में एक मुल्क था घामड़-नगर।

खोजी — जरी ठहर जाइएगा। वहाँ अफीम भी बिकती थी?

हँसोड़ — उस मुल्क के बाशिंदे बड़े दिलेर होते थे, मगर कद के छोटे। बिलकुल टेनी मुर्गे के बराबर।

खोजी — (मूँछों पर ताव दे कर) हाँ-हाँ, छोटे कद के आदमी तो दिलेर होते ही हैं।

हँसोड़ — और कोई बगैर करौली बाँधे घर से न निकलता था।

खोजी — (अकड़ कर) क्यों मियाँ आज़ाद, अब न कहोगे?

हँसोड़ — मगर उन लोगों में एक ऐब था, सब के सब अफीम पीते थे।

खोजी — (त्योरियाँ चढ़ा कर) ओ गीदी!

आज़ाद — हैं-हैं। शरीफ आदमियों से यह बदजबानी।

खोजी — हम तो सिर से पाँव तक फुँक गए, आप शरीफ लिए फिरते हैं।

हँसोड़ — वहाँ की औरतें बड़ी गरांडील होती थीं। जहाँ मियाँ जरा बिगड़े, और बीवी ने बगल में दबा कर बाजार में घसीटा।

खोजी — अहाहा, सुनते हो यार! वह बहुरूपिया वहीं का था। अब तो उस गीदी का मकान भी मिल गया। चचा बन कर छोड़ूँ, तो सही।

हँसोड़ — वे सब रिसालदारी करते थे।

खोजी — और वहाँ क्या-क्या होता था? उस मुल्क के आदमियों की तसवीरें भी आपके पास हैं?

हँसोड़ — थीं तो, मगर अब नहीं रहीं। बस, बिलकुल तुम्हारे ही से हाथ पाँव थे। करारे जवान। पौंडे बहुत खाते थे।

खोजी — ओहोहो! वे सब हमारे ही बाप-दादा थे। देखो भाई आज़ाद, अब यह बात अच्छी नहीं। वहाँ से तो लंबे-चौड़े वादे कर के लाए थे कि करौली जरूर ले देंगे, और यहाँ साफ मुकर गए। अब हमें करौली मँगा दो, तो खैरियत है, नहीं तो हम बिगड़ जायँगे। वल्लाह, कौन गीदी दम भर ठहरे यहाँ।

आज़ाद — और यहाँ से आप जायँगे कहाँ? जहन्नुम में?

वेनेशिया — कुछ रुपए भी हैं? जहाज का किराया कहाँ से दोगे?

आज़ाद — मैं इनका खजांची हूँ। यह घर जायँ, किराया मैं दे दूँगा।

हँसोड़ — इस खजांची की लफ्ज पर हमें एक लतीफा याद आया। शादी के पहले नौजवान लेडियाँ अपने आशिक को अपना खजाना कहती हैं। शादी होने के बाद उसे खजांची कहने लगती हैं। खजांची के खजांची और मियाँ के मियाँ।

वेनेशिया — अच्छा हुआ, तुम्हारी बीवी चल बसी; नहीं तो तुम्हारी किफायत उनकी जान ही ले लेती।

हँसोड़ — अजीब औरत थी, शादी के बाद ऐसी रोनी सूरत बनाए रहती थी कि मालूम होता था, आज बाप के मरने की खबर आई है। दो बरस के बाद हमसे छह महीने के लिए जुदाई हुई। अब जो देखता हूँ, तो और ही बात है। बात-बात पर मुसकराना और हँसना। बात हुई और खिल गई। मैंने पूछा, क्या तुम वही हो जो नाक-भौं चढ़ाए रहती थीं? मुसकरा कर कहा — हाँ, हूँ, तो वही। मैंने कहा — खैर, काया-पलट तो हुई। हँस के बोली — वाह इसमें ताज्जुब काहे का। एक दिन मुझे खयाल आ गया, बस, तब से अब हर वक़्त हँसती हूँ। तब तो मैंने अपना मुँह पीट लिया। रोनी सूरत बना कर बोला — हम तो खुश हुए थे कि अब हमसे तुमसे खूब बनेगी, मगर मालूम हो गया कि तुम्हारी हँसी और

रोने, दोनों का एतबार नहीं। अगर तुम्हें इसी तरह बैठे-बैठे किसी दिन खयाल आ गया कि रोना अच्छा, तो फिर रोना ही शुरू कर दोगी।

आज़ाद — मुझे भी एक बात याद आ गई। हमारे मुहल्ले में एक ख्वाजा साहब रहते थे। उनके एक लड़की थी, इतनी हसीन कि चाँद भी शरमा जाय। बात करते वक़्त बस यही मालूम होता था कि मुँह से फूल झड़ते हैं। उसकी शादी एक गँवार जाहिल से हुई, जो इतना बदसूरत था कि उससे बात करने का भी जी न चाहता था। आखिर लड़की इसी गम में कुढ़-कुढ़ कर मर गई।

51

कई दिन तक तो जहाज खैरियत से चला गया, लेकिन पेरिस के करीब पहुँचकर जहाज के कप्तान ने सबको इत्तिला दी कि एक घंटे में बड़ी सख्त आँधी आनेवाली है। यह खबर सुनते ही सबके होश-हवास गायब हो गए। अक्ल ने हवा बतलाई, आँखों में अँधेरी छाई, मौत का नक्शा आँखों के सामने फिरने लगा। तुर्रा यह कि आसमान फकीरों के दिल की तरह साफ था, चाँदनी खूब निखरी हुई, किसी को सान-गुमान भी नहीं हो सकता था कि

तूफान आएगा; मगर बेरोमीटर से तूफान की आमद साफ जाहिर थी। लोगों के बदन के रोंगटे खड़े हो गए, जान के लाले पड़ गए; या खुदा, जाएँ तो कहाँ जाएँ, और इस तूफान से नजात क्योंकर पाएँ? कप्तान के भी हाथ-पाँव फूल गए और उसके नायब भी सिट्टी-पिट्टी भूल गए। सीढ़ियों से तख्ते पर आते थे और घबरा कर फिर ऊपर चढ़ जाते थे। कप्तान लाख-लाख समझाता था, मगर किसी को उसकी बात पर यकीन न आता था —

किसी तरह से समझता नहीं दिले नाशाद;
वही है रोना, वही चीखना, वही फरियाद।

इतने में हवा ने वह जोर बाँधा कि लोग त्राहि-त्राहि करने लगे। कप्तान ने एक पाल तो रहने दिया, और जहाज को खुदा की राह पर छोड़ दिया। लहरों की यह कैफियत की आसमान से बातें करती थीं। जहाज झोंके खा कर गेंद की तरह इधर से उधर उछलता था। सब के सब जिंदगी से हाथ धो बैठे, अपनी जानों को रो बैठे। बच्चे सहम कर अपनी माँओं से चिपटे जाते थे। कोई औरत मुँह ढँक कर रोती थी कि उम्र भर की कमाई इस समुद्र में गँवाई। कोई अपने प्यारे बच्चे को छाती से लगा कर कहती — बेटा, अब हम रुख़सत होते हैं। पर वह नादान मुसकराता था और इस भोलपन से माँ के दिल पर बिजलियाँ गिराता था। किसी को मारे खौफ के चुप लग गई थी, किसी के

हाथ-पाँवों में कँपकँपी थी। कोई समुद्र में कूद पड़ने का इरादा करके रह जाता था, कोई बैठा देवतों को मनाता था। क्या बूढ़े, क्या जवान, सबकी अक्ल गुम थी। वेनेशिया के चेहरे का रंग काफूर हो गया। हँसोड़ के दिल से हँसी का खयाल कोसों दूर हो गया। मियाँ आज़ाद का चेहरा जर्द, अपिल्टन के हाथ-पाँव सर्द। मियाँ आज़ाद सोचने लगे, या खुदा, यह किस मुसीबत से दो-चार किया, माशूक के एवज मौत को गले का हार किया! जी लगाने की खूब सजा पाई, इश्क की धुन में जान भी गँवाई। हमारी हड्डियाँ तक गल जाएँगी; पर हुस्नआरा हमारी खबर भी न पाएँगी। सिपहआरा बार-बार फाल देखेंगी कि आज़ाद कब मैदान से सुर्खरू हो कर आएँगे और हम कब मसजिद में घी के चिराग जलाएँगे मगर आज़ाद की किश्ती गोते खाती है और जरा देर में तह की खबर लाती है।

जहाज में तो यह कुहराम मचा था, मगर खोजी लंबी ताने सो ही रहे थे। इस नींद पर खुदा की मार, इस पीनक पर शैतान की फटकार! आज़ाद ने जगाया कि ख्वाजा साहब, उठिए, तूफान आया है। हजरत ने लेटे ही लेटे भुनभुना कर फरमाया कि चुप गीदी, हमने ख्वाब में बहुरूपिया पकड़ पाया है। तब तो आज़ाद झल्लाए और कस कर एक लात लगाई। खोजी कुलबुला कर उठ बैठे और समुद्र की भयानक सूरत देखी, तो काँप उठे।

कप्तान खूब समझता था कि हालत हर घड़ी नाजुक होती जाती है; लेकिन पुराना आदमी था, कलेजा मजबूत किए हुए था। इससे लोगों को तसल्ली होती थी कि शायद जान बच निकले। सामने पेरिम का जज़ीरा नजर आता था मगर वहाँ तक पहुँचना मुहाल था। सब के सब दुआ कर रहे थे कि जहाज किसी तरह इस टापू तक पहुँच जाय। मरने की तैयारियाँ हो रही थीं। इतने में आज़ाद ने क्या देखा कि अपिल्टन वेनेशिया का हाथ पकड़ कर तख्ते पर खड़े रो रहे हैं। आज़ाद को देखते ही वेनेशिया ने कहा — मिस्टर आज़ाद, रुख़सत! हमेशा के लिए रुख़सत!

आज़ाद — रुख़सत!

हँसोड़ — है-है! लो, अब भँवर में जहाज आ गया।

यह सुन कर औरतों ने वह फरियाद मचाई कि लोगों के कलेजे दहल गए।

अपिल्टन — बस, इतनी ही दुनिया थी!

आज़ाद — हाँ, इतनी ही दुनिया थी!

खोजी — भई आज़ाद, खुदा गवाह है, मैं इस वक़्त अफीम के नशे में नहीं। अफसोस, तुम्हारी जान जाती है, हुस्नआरा समझेंगी कि आज़ाद ने धोखा दिया। हाय, आज़ाद तेरी जवानी मुफ्त गई।

एकाएक जहाज तीन बार घूमा और हवा के झोंके से कई गज के फासले पर जा पहुँचा। अब लाइफ-बोट के सिवा और कोई तदबीर न थी। जहाज डूबने ही को था, दस फुट से ज्यादा पानी उसमें समा गया था। लाइफ-बोट समुद्र में उतारे गए और आज़ाद लड़कों और औरतों को उठा-उठा कर लाइफ-बोट में बैठाने लगे। उनकी अपनी जान खतरे में थी, मगर इसकी उन्हें परवा न थी! जब वह वेनेशिया के पास पहुँचे, तो उसने इनसे हाथ मिलाया और अपिल्टन और वह, दोनों लाइफ-बोट में कूद पड़े। आज़ाद की दिलेरी पर लोग हैरत से दाँतों तले उँगली दबातें थे। लोगों को यकीन हो गया था कि यह कोई फरिश्ता है, जो बेगुनाहों की जान बचाने के लिए आया है।

टापू के वाशिंदे किनारे पर खड़े रोशनी कर रहे थे कि शोले उठें और जहाज के लोग समझ जाएँ कि जमीन करीब है। सैकड़ों आदमी गुल मचाते थे, तालियाँ बजाते थे। कुछ लोग रो रहे थे। मगर कुछ ऐसे भी थे, जो दिल में खिले जाते थे कि अब पौ बारह हैं।

एक — बस, अब जहाज डूबा। तड़के ही से लैस होकर आ डटूँगा।

दूसरा — हमें एक बार जवाहिरात का एक संदूक मिल गया था।

तीसरा — अजी हमने इसी तरह बहुत-कुछ पैदा किया।

चौथा — अजी, क्या बकते हो? कुछ तो खुदा से डरो। वे सब तो मुसीबत मे हैं, और तुम लोगों को लूट की धुन सवार है। शर्म हो, तो चुल्लू-भर पानी में डूब मरो।

मियाँ खोजी बार-बार हिम्मत बाँध कर लाइफ-बोट की तरफ जाते और डर कर लौट आते थे। आखिर आज़ाद ने उन्हें भी घसीट कर लाइफ-बोट में पहुँचाया। वहाँ जाते ही उन्होंने गुल मचाया कि अफीम की डिबिया तो वहीं रह गई! मियाँ जरी कोई लपक के हमारी डिबिया ले आए। आज़ाद ने कहा — मियाँ तुम भी कितने पागल हो? यहाँ जानों के लाले पड़े हैं, तुम्हें अपनी डिबिया ही की फिक्र है।

लाइफ-बोट कुल तीन थे, उनमें मुश्किल से पचास-साठ आदमी बैठ सकते थे। लेकिन हर शख़्स चाहता था कि मैं भी लाइफ-बोट में पहुँच जाऊँ। कप्तान ने यह हालत देखी, तो जंजीरें खोल दीं। किश्तियाँ बह निकलीं। अब बाकी आदमियों की जो हालत हुई, वह बयान में नहीं आ सकती। अगर कोई फोटोग्राफर इन बदनसीबों की तसवीर उतारता, तो बड़े से बड़े संगदिल भी उसे देख कर सिर धुनते। मौत चिमटी जाती है, और मौत के पंजों में

फँसी हुई जान फड़फड़ा रही है। मगर जान बड़ी प्यारी चीज है। लोग खूब जाते थे कि जहाज के डूबने में देर नहीं,

लाइफ-बोट भी दूर निकल गए। मगर फिर भी यह उम्मीद है, शायद किसी तरह बच जायँ। दो बदनसीब बहनें यों बातें कर रही थीं -

बड़ी बहन — कूद पड़ो पानी में। शायद बच जायँ।

छोटी बहन — लहरें कहीं न कहीं पहुँचा ही देंगी।

बड़ी — अम्माँ सुनेंगी तो क्या करेंगी?

छोटी — मैं तो कूदती हूँ।

बड़ी — क्यों जान देती है?

एक औरत ने अपने प्यारे बच्चे को समुद्र में फेंक दिया और कहा — यह लड़का तेरे सिपुर्द करती हूँ।

यह कह कर खुद भी गिर पड़ी।

अब सुनिए; जिस लाइफ-बोट पर वेनेशिया, और अपिल्टन थे, वह हवा के झोंके से पेरिम से दूर हट गया। वेनेशिया ने कहा — अब कोई उम्मीद नहीं।

अपिल्टन — खुदा पर भरोसा रखो।

वेनेशिया — या खुदा, हमें बचा ले। हम बेगुनाह हैं।

अपिल्टन — सब्र, सब्र!

वेनेशिया — लो, आज़ाद की किश्ती भी इधर ही आने लगी। अब कोई न बचेगा।

दोनों किश्तियाँ थोड़े ही फासले पर जा रही थीं, इतने में एक लहर ने अपिल्टन की किश्ती को ऐसा झोंका दिया कि वह नीचे ऊपर होने लगी और तीन आदमी समुद्र में गिर पड़े। अपिल्टन भी उनमें से एक थे। उनके गिरते ही वेनेशिया ने एक चीख मारी और बेहोश हो गई। आज़ाद ने यह हाल देखा, तो फौरन बोट पर से कूद पड़े और जान हथेली पर लिए हुए, लहरों को चीरते, अपिल्टन की मदद को चले। इधर अपिल्टन का कुत्ता भी पानी मे कूदा और उनके सिर के बाल दाँतों से पकड़े ऊपर लाया। मियाँ आज़ाद भी तैरते हुए जा पहुँचे और अपिल्टन को पकड़ लिया। उसी वक़्त किश्ती भी आ पहुँची और लोगों ने मदद दे कर अपिल्टन को खींच लिया। मगर किश्ती इतनी तेजी से निकल गई कि आज़ाद उस पर न आ सके। अब उनके लिए मौत का सामना था। मगर वह कलेजा मजबूत किए टापू की तरफ तैरते चले जाते थे। टापूवालों ने उन्हें आते देखा, तो और भी हौसला बढ़ाया, और हिम्मत दिलाई। सब के सब दुआ कर

रहे थे कि या खुदा इस जवान को बचा। ज्यों ही आज़ाद टापू के करीब पहुँचे, रस्सियाँ फेकी गईं और आज़ाद ऊपर आए। सब ने उनकी पीठ ठोंकी। वेनेशिया ने मियाँ आज़ाद से कहा — तुम न होते तो, मैं कहीं की न रहती। तुम्हारा एहसान कभी न भूलूँगी।

अपिल्टन — भाई, देखना, भूल न जाना। टर्की से खत लिखते रहना।

आज़ाद — जरूर, जरूर!

वेनेशिया — आज़ाद, जैसे बहन को अपने भाई की मुहब्बत होती है, वैसे ही मुझको तुम्हारी मुहब्बत है।

आज़ाद — मैं जहाँ रहूँगा, आप लोगों से जरूर मिलूँगा।

खोजी — यार, हमारी अफीम की डिबिया जहाज ही में रह गई। देखें, किस खुशनसीब के हाथ लगती है।

सब लोग यह जुमला सुन कर खिलखिला कर हँस पड़े।

माल्टा में आर्मीनिया, अरब, यूनान, स्पेन, फ्रांस सभी देशों के लोग हैं। मगर दो दिन से इस जज़ीरे में एक बड़े गरांडील जवान को गुजर हुआ है। कद कोई आध गज का हाथ-पाँव दो-दो माशे के; हवा जरा तेज चले, तो उड़ जायँ। मगर बात-बात पर तीखे हुए जाते हैं। किसी ने जरा तिरछी नजर से देखा, और आपने करौली सीधी की। न दीन की फिक्र थी, न दुनिया की, बस, अफीम हो, और चाहे कुछ हो या न हो।

आज़ाद ने कहा — भई, तुम्हारा यह फिकरा उम्र भर न भूलेगा कि देखें हमारी अफीम की डिबिया किस खुशनसीब के हाथ लगती है।

खोजी — फिर, उसमें हँसी की क्या बात है? हमारी तो जान पर बन आई और आपको दिल्लगी सूझती है। जहाज में डूबने का किस मर्दक को रंज हो। मगर अफीम के डूबने का अलबत्ता रंज है। दो दिन से जम्हाइयों पर जम्हाइयाँ आती हैं। पैसे लाओ, तो देखूँ, शायद कहीं मिल जाय।

मियाँ आज़ाद ने दो पैसे दिए और आप एक दुकान पर पहुँच कर बोले — अफीम लाना जी?

दुकानदार ने हाथ से कहा कि हमने समझा नहीं।

खोजी — अजब जाँगलू है! अबे, हम अफीम माँगते हैं।

दुकानदार हँसने लगा।

खोजी — क्या फटी जूती की तरह दाँत निकालता है! लाता है अफीम कि निकालूँ करौली!

इतने में मियाँ आज़ाद पहुँचे और पूछा — यहाँ क्या खरीदारी होती है?

खोजी — अजी, यहाँ तो सभी जाँगलू ही जाँगलू रहते हैं। घंटे भर से अफीम माँग रहा हूँ, सुनता ही नहीं।

आज़ाद — फिर कहने से तो आप बुरा मानते हैं। भला यह बारूद बेचता है या अफीम? बिलकुल गौखे ही रहे!

खोजी — अगर अफीम का यही हाल रहा, तो तुर्की तक पहुँचना मुहाल है।

आज़ाद — भई, हमारा कहा मानो। हमें टर्की जाने दो और तुम घर जाओ।

खोजी — वाहवा, अब मैं साथ छोड़ने वाला नहीं। और मैं चला जाऊँगा, तो तुम लड़ोगे किसके बिरते पर?

आज़ाद — बेशक, आप ही के बिरते पर तो मैं लड़ने जाता हूँ न?

खोजी — कौन? कसम खा के कहता हूँ, जब सुनिएगा; यही सुनिएगा कि ख्वाजा साहब ने तोप में कील लगा दी।

आज़ाद — जी, इसमें क्या शक है।

खोजी — शक-वक के भरोसे न रहिएगा! अकेली लकड़ी चूल्हे में भी नहीं जलती। जिस वक़्त ख्वाजा साहब अरबी घोड़े पर सवार होंगे और अकड़ कर बैठेंगे, उस वक़्त अच्छे-अच्छे जंडैल-कंडैल झुक-झुक कर सलाम करेंगे।

इतने में एक हब्शी सामने से आ निकला। करारा जवान, मछलियाँ भरी हुई, सीना चौड़ा। खोजी ने जो देखा कि एक आदमी अकड़ता हुआ सामने से आ रहा है, तो आप भी ऐंठने लगे। हब्शी ने करीब आकर कंधे से जरा धक्का दिया, तो मियाँ खोजी ने बीस लुढ़कनियाँ खाईं। मगर बेहया तो थे ही, झाड़-पोंछ कर उठ खड़े हुए, और हब्शी को ललकार कर कहा — अबे ओ गीदी, न हुई करौली इस वक़्त। जरा मेरा पैर फिसल गया, नहीं तो वह पटकनी देता कि अंजर-पंजर ढीले हो जाते!

आज़ाद — तुम क्या, तुम्हारा गाँव भर तो इसका मुकाबला कर ले!

खोजी — अच्छा, लड़ा कर देख लो न! छाती पर न चढ़ बैठूँ, तो ख्वाजा नाम नहीं। कहो, ललकारूँ जा कर।

आज़ाद — बस, जाने दीजिए। क्यों हाथ-पाँव के दुश्मन हुए हो!

दूसरे दिन जहाज वहाँ से रवाना हुआ। आज़ाद को बार-बार हुस्नआरा की याद आती थी। सोचते थे, कहीं लड़ाई में मारा गया, तो उससे मुलाकात भी न होगी। खोजी से बोले — क्यों जी, हम अगर मर गए, तो तुम हुस्नआरा को हमारे मरने की खबर दोगे, या नहीं?

खोजी — मरना क्या हँसी-ठट्ठा है? मरते हैं हम जैसे दुबले-पतले बूढ़े अफीमची कि तुम ऐसे हट्टे-कट्टे जवान?

आज़ाद — शायद हमीं तुमसे पहले मर जायँ?

खोजी — हम तुमको अपने पहले मरने ही न देंगे। उधर तुम बीमार हुए, और हमने इधर जहर खाया।

आज़ाद — अच्छा, जो हम डूब गए?

खोजी — सुनो मियाँ, डूबनेवाले दूसरे ही होते हैं। वह समुंदर में डूबने नहीं आया करते, उनके लिए एक चुल्लू काफी होता है।

आज़ाद — जरा देर के लिए मान लो कि हम मर गए तो इत्तिला दोगे न?

खोजी — पहले तो हम तुमसे पहले ही डूब जायँगे, और अगर बदनसीबी से बच गए, तो जा कर कहेंगे — आज़ाद ने शादी कर ली, और गुलछर्रे उड़ा रहे हैं।

आज़ाद — तब तो आप दोस्ती का हक खूब अदा करेंगे!

खोजी — इसमें हिकमत है।

आज़ाद — क्या है, हम भी सुनें?

खोजी — इतना भी नहीं समझते! अरे मियाँ, तुम्हारे मरने की खबर पा कर हुस्नआरा की जान पर बन आएगी, वह सिर पटक-पटक कर दम तोड़ देगी; और जो यह सुनेगी कि आज़ाद ने दूसरी शादी कर ली, तो उसे तुम्हारे नाम से नफरत हो जायगी, और रंज तो पास फटकने भी न पाएगा। क्यों, है न अच्छी तरकीब?

आज़ाद — हाँ, है तो अच्छी!

खोजी — देखा, बूढ़े आदमी डिबिया में बन्द कर रखने के काबिल होते हैं। तुम लाख पढ़ जाओ, फिर लौंडे ही हो हमारे सामने। मगर तुम्हारी आजकल यह क्या हालत है? कोई किताब पढ़ कर दिल क्यों नहीं बहलाते?

आज़ाद — जी उचाट हो रहा है। किसी काम में जी नहीं लगता।

खोजी — तो खूब सैर करो। यार, पहले तो हमें उम्मीद ही नहीं कि हिंदोस्तान पहुँचे, लेकिन जिंदा बचे, और हिंदोस्तान की सूरत

देखी, तो जमीन पर कदम न रखेंगे। लोगों से कहेंगे, तुम लोग क्या जानो, माल्टा कहाँ है? खूब गप्पे उड़ाएँगे।

यों बातें करते हुए दोनों आदमी एक कोठे में गए। वहाँ कहवे की दुकान थी। आज़ाद ने एक आदमी के हाथ अफीम मँगाई। खोजी ने अफीम देखी तो खिल गए। वहीं घोली और चुस्की लगाई। वाह आज़ाद, क्यों न हो, यह एहसान उम्र-भर न भूलूँगा। इस वक़्त हम भी अपने वक़्त के बादशाह हैं —

फिक्र दुनिया की नहीं रहती मैख्वारों में;
गम गलत हो गया जब बैठ गए यारों में।

उस दुकान में बहुत से अखबार मेज पर पड़े थे। आज़ाद एक किताब देखने लगे। मालिक-दुकान ने देखा, तो पूछा — कहाँ का सफर है?

आज़ाद — टर्की जाने का इरादा है।

मालिक — वहाँ हमारी भी एक कोठी है। आप वहीं ठहरिएगा।

आज़ाद — आप एक खत लिख दें, तो अच्छा हो।

मालिक — खुशी से। मगर आजकल तो वहाँ जंग छिड़ी है!

आज़ाद — अच्छा, छिड़ गई?

मालिक — हाँ, छिड़ गई। लड़ाई सख्त होगी। लोहे से लोहा लड़ेगा।

जब आज़ाद यहाँ से चलने लगे, तो मालिक ने अपने लड़के के नाम खत लिख कर आज़ाद को दिया। दोनों आदमी वहाँ से आकर जहाज पर बैठे।

53

रात के ग्यारह बजे थे, चारों बहनें चाँदनी का लुत्फ उठा रही थीं। एका-एक मामा ने कहा — ऐ हुजूर, जरी चुप तो रहिए। यह गुल कैसा हो रहा है? आग लगी है कहीं।

हुस्नआरा — अरे, वह शोले निकल रहे हैं। यह तो बिलकुल करीब है।

नवाब साहब — कहाँ हो सब की सब! जरूरी सामान बाँध कर अलग करो। पड़ोस में शाहज़ादे के यहाँ आ लग गई। जेवर और जवाहिरात अलग कर लो। असबाब और कपड़े को जहन्नुम में डालो।

बहारबेगम — हाय, अब क्या होगा!

हुस्नआरा — हाय-हाय, शोले आसमान की खबर लाने लगे!

नीचे उतर कर सबों ने बड़ी फुरती से सब चीजें बाहर निकाली और फिर कोठे पर गईं, तो क्या देखती हैं कि हुमायूँफर की कोठी में आग लगी है और हर तरफ से शोले उठ रहे हैं। ये सब इतनी दूर पर खड़ी थीं, मगर ऐसा मालूम होता था कि चारों तरफ भट्ठी ही भट्ठी है। धन्नियाँ जो चटकीं, तो बस, यही मालूम हुआ कि बादल गरज रहा है।

बहारबेगम — हाय, लाखों पर पानी पड़ गया!

सिपहआरा — बहन, इधर तो आओ। देखो, हजारों आदमी जमा हैं। जरा देखो, वह कौन है? है-है! वह कौन हैं?

बहारबेगम — कहाँ कौन है?

सिपहआरा — यह महताबी पर कौन है?

हुस्नआरा — अरे, यह तो हुमायूँफर हैं। गजब हो गया। अब यह क्योंकर बचेंगे?

सिपहआरा फूट-फूट कर रोने लगी। फिर बोली — बाजी, अब होगा क्या? चारों तरफ आग है। बचेगा क्योंकर बेचारा!

बहारबेगम — इसकी जवानी पर तरस आता है।

हुस्नआरा मुँह टाँप कर खूब रोईं। सिपहआरा का यह हाल था कि आँसुओं का तार न टूटता था। हुमायूँफर महताबी पर इस ताक में सोए थे कि शायद इन हसीनों में से किसी का जलवा नजर आए। लेकिन ठंडी हवा चली, तो आँख लग गई। जब आग लगी और चारों तरफ गुल मचा, तो जागे; लेकिन कब? जब महताबी के नीचे के हिस्से में चारों तरफ आग लग चुकी थी। खिदमतगारों के हाथ-पाँव फूल गए। यही सोचते थे, किसी तरह से इस बेचारे की जान बचाएँ। असबाब बटोरने की फिक्र किसे! कोई शाहज़ादे की जवानी को याद करके रोता था, कोई सिर धुन कर कहता था — गरीब बूढ़ी माँ के दिल पर क्या गुजरेगी? शहर से गोल के गोल आदमी आकर जमा हो गए। सिपाही और चौकीदार, शहर के रईस और अफसर उमड़े चले आते थे। दरिया से हजारों घड़े पानी लाया जाता था। मिश्ती और मजदूर आग बुझाने में मसरूफ थे। मगर हवा इस तेजी पर थी कि पानी तेल का काम देता था। शाहज़ादे इस नाउम्मेदी की हालत में सोच रहे थे कि जिन लोगों के दीदार के लिए मैंने अपनी जान गँवाई उन्हें मालूम हो जाय, तो मैं समझूँ कि जी उठा। इतने में इधर नजर पड़ी, तो देखा कि सब की सब औरतें कोठे पर खड़ी हाय-हाय कर रही हैं। सोचे, खैर शुक्र है! जिसके लिए जान दी, उसको अपना मातम करते तो देख लिया। एकाएक उन्हें अपना छोटा

भाई याद आया। उसकी तरफ मुखातिब हो कर कहा — भाई, घर-बार तुम्हारे सुपुर्द है। माँ को तसल्ली देना कि हुमायूँफर न रहा, तो मैं तो हूँ। यह फिकरा सुन कर सब लोग रोने लगे। इतने में आग के शोले और करीब आए और हवा ने और जोर बाँधा, तो शाहज़ादा ने सिपहआरा की तरफ नजर करके तीन बार सलाम किया। चारों बहनें दीवारों से सिर टकराने लगीं कि हाय, यह क्या सितम हुआ! शाहज़ादे ने यह कैफियत देखी, तो इशारे से मना किया। लेकिन दोनों बहनों की आँखों में इतने आँसू भरे हुए थे कि उन्हें कुछ दिखाई न दिया।

सिपहआरा खिड़की के पास जा कर फिर सिर पीटने लगी। हुमायूँफर उसे देख कर अपना सदमा भूल गए और हाथ बाँध कर दूर ही से कहा — अगर यह करोगी, तो हम अपनी जान दे देंगे! गोया जान बचने की उम्मीद ही तो थी! चारों तरफ आग के शोले उठ रहे थे, धुआँ बादल की तरह छाया हुआ था, भागने की कोई तदबीर नहीं। हवा कहती है कि मैं आज ही तेजी दिखलाऊँगी, और आप कहते हैं कि मैं अपनी जान दे दूँगा।

इतने मे जब आग बहुत ही करीब आ गई, तो हुमायूँफर की हिम्मत छूट गई। बेचैनी की हालत में सारी छत पर घूमने लगे। आखिर यहाँ तक नौबत आई कि जो लोग करीब खड़े थे, वह लपटों के मारे और दूर भागने लग। आग हुमायूँफर से सिर्फ

एक गज के फासले पर थी। आँच से फुँके जाते थे। जब जिंदगी की कोई उम्मीद न रही, तो आखिरी बार सिपहआरा की तरफ टोपी उतार कर सलाम किया और बदन को तौल कर धम से कूद पड़े।

उधर सिपहआरा ने भी एक चीख मारी और खिड़की से नीचे कूदी।

शाहज़ादा साहब नीचे घास पर गिरे। यहाँ जमीन बिलकुल नर्म और गीली थी। गिरते ही बेहोश हो गए। लोग चारों तरफ से दौड़ पड़े और हाथों-हाथ जमीन से उठा लिया। लुत्फ की बात यह कि सिपहआरा को भी जरा चोट नहीं लगी थी। उसने उठते ही कहा कि लोगो, हुमायूँ शाहज़ादा बचा हो, तो हमें दिखा दो। नहीं तो उसी की कब्र में हमको भी जिंदा दफन कर देना।

इतने में नवाब साहब ने सिपहआरा को अलग ले जा कर कहा — तुम घबराओ नहीं। शाहज़ादा साहब खैरियत से हैं।

सिपहआरा — हाय! दूल्हा भाई, मैं क्योंकर मानूँ!

नवाब साहब — नहीं बहन, आओ, हम उन्हें अभी दिखाए देते हैं।

सिपहआरा — फिर दिखाओ मेरे दूल्हा भाई!

नवाब साहब — जरा भीड़ छुँट जाय, तो दिखाऊँ। तब तक घर चली चलो।

सिपहआरा — फिर दिखाओगे? हमारे सिर पर हाथ रख कर कहो।

नवाब साहब — इस सिर की कसम जरूर दिखाएँगे।

सिपहआरा को अन्दर पहुँचा कर नवाब साहब हुमायूँफर के यहाँ पहुँचे, तो देखा कि टाँग में कुछ चोट आई है। डॉक्टर पट्टी बाँध रहा है और बहुत से आदमी उन्हें घेरे खड़े हैं। लोग इस बात पर बहस कर रहे हैं कि आग लगी क्योंकर? रात भर शाहज़ादे की हालत बहुत खराब रही। दर्द के मारे तड़प-तड़प उठते। सुबह को चारपाई से उठ कर बैठे ही थे कि चिट्ठारसाँ ने आकर एक खत दिया। शाहज़ादे साहब ने इस खत को नवाब साहब की तरफ बढ़ा दिया। उन्होंने यह मजमून पढ़ सुनाया —

'अजी हजरत, तसलीम।

सच कहना, कैसा बदला लिया! लाख-लाख समझाया, मगर तुमने ने माना। आखिर, तुम खुद ही मुसीबत में पड़े। तुमने हमरा दिल जलाया है, तो हम तुम्हारा घर भी न जलाएँ? जिस वक़्त यह खत तुम्हारे पास पहुँचेगा, मकान जल-भुन के खाक हो गया होगा।

–शहसवार।'

शाहज़ादे साहब ने यह मजमून सुना, तो त्योरियों पर बल पड़ गए और चेहरा मारे गुस्से के सुर्ख पड़ गया।

54

रात का वक़्त था, एक सवार हथियार साजे, रातों-रात घोड़े को कड़कड़ाता हुआ बगटुट भागा जाता था। दिल में चोर था कि कहीं पकड़ न जाऊँ! जेलखाना झेलूँ। सोच रहा था, शाहज़ादे के घर में आग लगाई है, खैरियत नहीं। पुलिस की दौड़ आती ही होगी। रात भर भागता ही गया। आखिर सुबह को एक छोटा सा गाँव नजर आया। बदन थक कर चूर हो गया था। अभी घोड़े से उतरा ही था कि बस्ती की तरफ से गुल की आवाज आई। वहाँ पहुँचा, तो क्या देखता है कि गाँव भर के बाशिंदे जमा हैं, और दो गँवार आपस में लड़ रहे हैं। अभी यह वहाँ पहुँचा ही था कि एक ने दूसरे के सिर पर ऐसा लट्ठ मारा कि वह जमीन पर आ रहा। लोगों ने लट्ठ मारनेवाले को गिरफ्तार कर लिया और थाने पर लाए। शहसवार ने दरियाफ्त किया, तो मालूम हुआ कि दोनों की एक जोगिन से आशनाई थी।

सवार — यह जोगिन कौन है भई?

एक गँवार — इतनी उमिर आई, उस जोगिन कतहूँ न देखी।

इतने में थानेदार आ गए। जख्मी को चारपाई पर डाल कर अस्पताल भिजवाया और खूनी को गवाहों के साथ थाने ले गए। मियाँ सवार भी उनके साथ हो लिए, थाने में तहकीकात होने लगी।

थानेदार — यह किस बात पर झगड़ा हुआ जी?

चौकीदार — हुजूर, वह सास जौन जोगिन बनी है।

थानेदार — हम तुमसे इतना पूछता है किस बात पर लड़ाई हुआ?

चौकीदार — जैसे इहौ वहाँ जात रहै और वहौ वहाँ जात रहै। तौन आपस में लाग-डाँट ह्वै गई। ए बस एक दिन मार-धार ह्वै गई बस, लाठी चलै लाग। मूर से रकत बहुत बहा।

मौलवी — सूबेदार साहब, आज दोनों ने खूब कुज्जियाँ चढ़ाई थीं।

थानेदार — आप कौन हैं?

मौलवी — हुजूर, गाँव का काजी हूँ।

थानेदार — यहीं मकान है आपका?

मौलवी — जी हाँ, पुराना रईस हूँ।

शहसवार — बेशक!

थानेदार — देहातवाले भी अजीब जाँगलू होते हैं। एक बार एक देहाती मुशायरे में जाने का इत्तिफ़ाक़ हुआ। बड़े-बड़े गँवार के लट्ठ जमा थे। एक साहब ने शेर पढ़ा, तो आखिर में फरमाते हैं — बीमार हौं। लोग हैरत में थे कि इस हौं के क्या माने? फिर हजरत ने फरमाया — सरशार हौं। मारे हँसी के लोट गया। हाँ, मौलवी साहब, फिर क्या हुआ?

मौलवी — बस, जनाब, फिर दोनों में कुश्ती हुई। कभी यह ऊपर, वह नीचे, कभी वह नीचे, यह ऊपर। तब तो मैं भागा कि चौकीदार से कहूँ। दौड़ता गया।

थानेदार — जनाब, इस मुहावरे को याद रखिएगा।

मौलवी — बस, मैं दौड़ के पूरन चौकीदार के मकान पर गया। उसकी जोड़ू, बोली -

सवार — कौन बोली?

थानेदार — (हँस कर) सुना नहीं आपने? जोड़ू!

मौलवी — हुजूर, हुक्काम हैं, आपको हँसना न चाहिए।

थानेदार — जी हाँ, मैं हुक्काम हूँ; मगर आप भी तो उमराँ हैं! हाँ, फरमाओ जी।

मौलवी — देखिए, फरमाता हूँ।

सवार — अब हँसी जब्त नहीं हो सकती।

मौलवी — बस जनाब, वहाँ से मैं इस चौकीदार को लाया। वहाँ आकर देखा, तो खून के दरिया बह रहे थे।

इतने में खबर आई कि जख्मी दुनिया से रवाना हो गया। थानेदार साहब मारे खुशी के फूल गए। मामूली मार-पीट 'खून' हो गई। खूनी का चालान किया और जज ने उसे फाँसी की सजा दे दी।

जिस वक़्त खूनी को फाँसी हो रही थी, मियाँ सवार भी तमाशा देखने आ पहुँचे। मगर उस वक़्त की हालत देख कर उनके दिल पर ऐसा असर हुआ कि आँखें खुल गईं। सोचने लगे — दुनिया से नाता तोड़ लें। किसी से हसद और कीना न रखें। अगर कहीं पकड़ा गया होता, तो मुझे भी यों ही फाँसी मिलती। खुदा ने बहुत बचाया। मगर जरा इस जोगिन को देखना चाहिए। यह दिल में ठान कर जोगिन के मकान की तरफ चले।

जब लोगों से पूछते हुए उसके मकान पर पहुँचे, तो देखा कि एक ख़ूबसूरत बाग है और एक छोटा सा खुशनुमा बँगला, बहुत साफ सुथरा। मकान क्या, परीखाना था। जोगिन के करीब जा कर उसको सलाम किया। जोगिन के पोर-पोर पर जोबन था। जवानी फटी पड़ती थी। सिर से पैर तक संदली कपड़े पहने हुए थी। शहसवार हजार जान से लोट पोट हो गए। जोगिन इनकी चितवनों से ताड़ गई कि हजरत का दल आया है।

सवार – बड़ी दूर से आपका नाम सुन कर आया हूँ।

जोगिन – अक्सर लोग आया करते हैं। कोई आए, तो खुशी नहीं, न आए, तो रंज नहीं।

सवार – मैं चाहता हूँ कि उम्र भर आपके कदमों के तले पड़ा रहूँ।

जोगिन – आपका मकान कहाँ है?

सवार –

घर बार से क्या फकीर को काम?
क्या लीजिए छोड़े गाँव का नाम।

जोगिन – यहाँ कैसे आए?

सवार – रमते जोगी तो हैं ही, इधर भी आ निकले।

जोगिन — आखिर इतना तो बतलाओ; कि हो कौन?

सवार — एक बदनसीब आदमी।

जोगिन — क्यों?

सवार — अपने कर्मों का फल।

जोगिन — सच है!

सवार — मुझे इश्क ही ने तो गारद कर दिया। एक बेगम की दो लड़कियाँ हैं। उनसे आँखें लड़ गईं। जीते जी मर मिटा।

जोगिन — शादी नहीं हुई?

सवार — एक दुश्मन पैदा हो गया। आज़ाद नाम था। बहुत ही खूबसूरत सजीला जवान।

मियाँ आज़ाद का नाम सुनते ही जोगिन के चेहरे का रंग उड़ गया। आँखों से आँसू गिरने लगे। शहसवार दंग थे कि बैठे-बिठाए इसे क्या हो गया।

सवार — जरा दिल को ढारस दो, आखिर तुम्हें किस बात का रंज हैं?

जोगिन —

खौफ से लेते नहीं नाम कि सुन ले न कोई;

दिल ही दिल में तुम्हें हम याद किया करते हैं।

हमारी दास्तान गम से भरी हुई है! सुन कर क्या करोगे। हाँ, तुम्हें एक सलाह देती हूँ। अगर चाहते हो कि दिल की मुराद पूरी हो, तो दिल साफ रखो।

सवार — तुम्हारे सिवा अगर किसी और पर नजर पड़े, तो आँखें फूट जायँ।

जोगिन — यही दिल की सफाई है।

सवार — शीशी से गुलाब निकाल लो। मगर गुलाब की बू बाकी रहेगी। दुनिया को छोड़ तो बैठें, पर इश्क दिल से न जायगा। अब हम चाहते हैं कि तुम्हारे ही साथ जिंदगी बसर करें। आज़ाद उसके साथ रहें, हम तुम्हारे साथ।

जोगिन — भला तुम आज़ाद को पाओ, तो क्या करो?

सवार — कच्चा ही चबा जाऊँ?

जोगिन — तो फिर हमसे न बनेगी? अगर तुम्हारा दिल साफ नहीं, तो अपनी राह लगो।

सवार — अच्छा, अब आज से आज़ाद का नाम ही न लेंगे।

55

आज़ाद का जहाज जब इस्कंदरिया पहुँचा, तो वह खोजी के साथ एक होटल में ठहरे। अब खाना खाने का वक़्त आया, तो खोजी बोले — लाहौल, यहाँ खानेवाले की ऐसी तैसी चाहे इधर की दुनिया उधर हो जाय, मगर हम जरा सी तकलीफ के लिए अपना मजहब न छोड़ेंगे। आप शौक से जायँ और मजे से खायँ; हमें माफ ही रखिए।

आज़ाद — और अफीम खाना मजहब के खिलाफ नहीं?

खोजी — कभी नहीं! और, अगर हो तो भी क्या यह जरूरी है कि एक काम मजहब के खिलाफ किया, तो और सब काम मजहब के खिलाफ ही करें?

आज़ाद — अजी, तो किस गधे ने तुमसे कहा कि यहाँ खाना मजहब के खिलाफ है? मेज-कुर्सी देखी और चीख उठे कि मजहब के खिलाफ है? इस खब्त की भी कोई दवा है!

खोजी — अजी, वह खब्त ही सही। आप रहने दीजिए।

आज़ाद — खाओ, या जहन्नुम में जाओ।

खोजी — जहन्नुम में वे जायँगे, जो यहाँ खाएँगे। यहाँ तो सीधे जन्नत में पहुँचेंगे।

आज़ाद — वहाँ अफीम कहाँ से आएगी?

इतने में दो तुर्की आए और अपनी कुर्सियों पर बैठ कर मजे से खाने लगे। आज़ाद की चढ़ी बनी। पूछा, ख्वाजा साहब, बोल गीदी, अब शरमाया या नहीं? खोजी ने पहले तो कहा, ये मुसलमान नहीं हैं। फिर कहा, शायद हों ऐसे-वैसे! मगर जब मालूम हुआ कि दोनों खास तुर्की के रहनेवाले हैं, तो बोले — आप लोग यहाँ होटल में खाना खाते हैं? क्या यह मजहब के खिलाफ नहीं?

तुर्की — मजहब के खिलाफ क्यों होने लगा?

आखिर, खोजी झेंपे। फिर होटल में खाना खाया। थोड़ी देर के बाद आज़ाद तो एक साहब से मिलने चले और खोजी ने पीनक लेना शुरू किया। जब नींद खुली, तो सोचे कि हम बैठे-बैठे कब तक यहीं मक्खियाँ मारेंगे। आओ देखें, अगर कोई हिंदुस्तानी भाई मिल जाय, यो गप्पें उड़ें। इधर-उधर टहलने लगे। आखिरकार एक हिंदुस्तानी से मुलाकात हुई। सलाम-बन्दगी के बाद बातें होने लगीं। ख्वाजा साहब ने पूछा — क्यों साहब, यहाँ कोई अफीम की दुकान है? उस आदमी ने इसका कुछ जवाब ही नहीं दिया। खोजी तीखे आदमी। उनका भला यह ताब कहाँ कि

किसी से सवाल करें और वह जवाब न दे? बिगड़ खड़े हुए न हुई करौली, खुदा की कसम! वरना तमाशा दिखा देता।

हिंदुस्तानी ने समझा, यह पागल है। अगर बोलूँगा, तो खुदा जाने, काट खाए, या चोट करे। इससे यही अच्छा कि चुप ही रहो। मियाँ खोजी समझें कि दब गया, और भी अकड़ गए। उसने समझा, अब चोट किया ही चाहता है। जरा पीछे हट गया। उसका पीछे हटना था कि मियाँ खोजी और भी शेर हुए। मगर कुंदे तौल-तौल कर जाते थे। फिर रोब से पूछा — क्यों बे, यहाँ ठंडा पानी मिल सकता है? वह गरीब झट-पट ठंडा पानी लाया। खोजी ने दो-चार घूँट पानी पिया और अकड़ कर बोले — माँग, क्या माँगता है? उस आदमी ने समझा, यह जरूर दीवाना है! आपकी हालत तो इतनी खराब है, पल्ले टका तो है नहीं और कहते हैं — माँग, क्या माँगता है? खोजी ने फिर तन कर कहा — माँग कुछ। उस आदमी ने डरते-डरते कहा — यह जो हाथ में है, दे दीजिए।

खोजी का रंग उड़ गया। जान तक माँगता, तो देने में दरेग़ न करते; मगर चीनिया बेगम तो नहीं दी जाती।

उससे पूछा — तुम यहाँ कब से हो, क्या नाम है? उसने जवाब दिया — मुझे तहौबरखाँ कहते हैं!

खोजी — भला, उस होटल में मुसलमान लोग खाते हैं?

तहौवरखाँ — बराबर! क्यों न खायँ?

होटलवालों ने मिसकोट की कि खोजी को छेड़ना चाहिए। इस होटल में काहिरा का रहने वाला बौना था। लोग सोचे, इस बौने और खोजी से पकड़ हो तो अच्छा। बौना बड़ा शरीर था। लोगों ने उससे कहा — चलो, तुम्हारी कुश्ती बदी गई है। वह देखो, एक आदमी हिंदोस्तान से आया है। कितना अच्छा जोड़ है। यह सुन कर बौना मियाँ खोजी के करीब गया और झुक कर सलमा किया। खोजी ने देखा कि एक आदमी हमसे भी ऊँचा मिला, तो अकड़ कर आँखों से सलाम का जवाब दिया। बौने ने इधर-उधर देख कर एक दफा मौका जो पाया, तो मियाँ खोजी की टोपी उतार कर पड़ाक से एक धौल जमाई और टोपी फेंक कर भागा। मगर जरा-जरा से पाँव, भाग कर जाता कहाँ? खोजी भी झपटे। आगे-आगे बौना और पीछे-पीछे मियाँ खोजी। कहते जाते थे — ओ गीदी, न हुई करौली, नहीं तो इसी दम भोंक देता।

आखिर बौना हाँफ कर खड़ा हो गया। तब तो खोजी ने लपककर हाथ पकड़ा और पूछा — क्यों बे! इस पर बौने ने मुँह चिढ़ाया। खोजी गुस्से से भरे तो थे ही, आपने भी एक धप जड़ी।

खोजी — और लेगा?

बौना — (अपनी जबान में) छोड़, नहीं मार ही डालूँगा।

खोजी — दे मारूँ उठा कर?

बौना — रात आने दो।

खोजी ने झल्ला कर बौने को उठा कर दे मारा। चारों खाने चित्त, और अकड़ कर बोले — वो मारा। और लेगा! खोजी से ये बातें?

इतने में आज़ाद आ गए। खोजी तने बैठे थे, उम्र भर में उन्होंने आज पहली ही मर्तबा एक आदमी को नीचा दिखाया था। आज़ाद को देखते ही बोले — इस वक़्त एक कुश्ती और निकली!

आज़ाद — कुश्ती कैसी?

खोजी — कैसी होती है कुश्ती? कुश्ती और क्या?

आज़ाद — मालूम होता है, पिटे हो।

खोजी — पिटनेवाले की ऐसी-तैसी! और कहनेवाले को क्या कहूँ?

आज़ाद — कुश्ती निकाली!

तहौवरखाँ — हाँ हुजूर यह सच कहते हैं।

खोजी — लीजिए, अब तो आया यकीन!

आज़ाद — क्या हुआ क्या?

तहौवरखाँ — जी, यहाँ एक बौना है। उसने इनके एक धौल लगाई।

आज़ाद — देखा न! मैं तो समझा ही था कि पिटे होगे।

खोजी — पूरी बात तो सुन लो।

तहौवरखाँ — बस, धौल खा कर लपके। उसके कई चपतें लगाईं और उठा कर दे पटका।

खोजी — वह पटखनी बताई कि याद ही तो करता होगा। दो महीने तक खटिया से न उठ सकेगा।

तहौवरखाँ — वह देखिए, सामने खड़ा कौन अकड़ रहा है? तुम तो कहते थे कि दो महीने तक उठ ही न सकेगा।

रात को कोई नौ बजे खोजी ने पानी माँगा। अभी पानी पी ही रहे थे कि कमरे का लैंप गुल हो गया और कमरे में चटाख-चटाख की आवाज गूँजने लगी।

खोजी — अरे, यह तो वही बौना मालूम होता है। पानी इसी ने पिलाया था और चपत भी इसी ने जड़ी। दिल में कहा — क्या तड़का न होगा? जिंदा खोद कर गाड़ दूँ तो सही।

खोजी पानी पी कर लेटे कि दस्त की हाजत हुई। बौने ने पानी में जमाल-गोटा मिला दिया था। तिल-तिल पर दस्त आने लगे।

मशहूर हो गया कि खोजी को हैजा हुआ। डॉक्टर बुलाया गया। उसने दवा दी और खोजी दस्तों के मारे निढाल हो कर चारपाई पर गिर पड़े। आज़ाद एक रईस से मिलने गए थे। होटल के एक आदमी ने उनको जा कर इत्तला दी। घबराए हुए आए। खोजी ने आज़ाद को देख कर सलाम किया, और आहिस्ता से बोले – रुख़सत! खुदा करे, तुम जल्द यहाँ से लौटो। यह कह कर तीन बार कलमा पढ़ा।

आज़ाद – कैसी तबीयत है?

खोजी – मर रहा हूँ, एक हाफिज बुलवाओ और उससे कहो, कुरान शरीफ पढ़े।

आज़ाद – अजी, तुम दो दिन में अच्छे हो जाओगे।

खोजी – जिंदगी और मौत खुदा के हाथ है। मगर भाई, खुदा के वास्ते जरा अपनी जान का ख्याल रखना। हम तो अब चलते हैं। अब तक हँसी-खुशी तुम्हारा साथ दिया; मगर अब मजबूरी है। आब-दाने की बात है, हमको यहाँ की मिट्टी घसीट लाई।

आज़ाद – अजी नहीं आज के चौथे रोज दनदनाओगे। देख लेना। डंड पेलते होगे।

खोजी – खुदा के हाथ है।

आज़ाद — देखिए, कब मुलाकात होती है।

खोजी — इस बूढ़े को कभी-कभी याद करते रहना। एक बात याद रखना, पर देस का वास्ता है, सबसे मिल-जुल कर रहना। जूती-पैजार, लड़ाई-झगड़ा किसी से न करना। समझदार हो तो क्या, आखिर बच्चे ही हो। यार, जुदाई ऐसी अखर रही है कि बस, क्या बयान करूँ।

आज़ाद — अच्छे हो जाओ, तो हिंदोस्तान चले जाना।

खोजी — अरे मियाँ, यहाँ दम भर का भरोसा नहीं है।

दूसरे दिन आज़ाद खोजी से रुख़सत हो कर जहाज पर सवार हुए। इतने दिनों के बाद खोजी की जुदाई से उन्हें बहुत रंज हो रहा था। थोड़ी देर के बाद नींद आ गई, तो ख्वाब देखा कि वह हुस्नआरा बेगम के दरवाजे पर पहुँचे हैं और वह उन्हें फूलों का एक गुलदस्ता दे रही हैं। एकाएक तोप दगी और आज़ाद की आँख खुल गई। जहाज कुस्तुनतुनिया पहुँच गया था।

आज़ाद तो उधर काहिरे की हवा खा रहे थे, इधर हुस्नआरा बीमार पड़ीं। कुछ दिन तक तो हकीमों और डॉक्टरों की दवा हुई, फिर गंडे-ताबीज की बारी आई। आखिर आबोहवा तब्दील करने की ठहरी। बहारबेगम के पास गोमती के किनारे एक बहुत अच्छी कोठी थी। चारों बहनें बड़ी बेगम और घर के नौकर-चाकर सब इस नई कोठी में आ पहुँचे।

बेगम – मकान तो बड़ा कुशादा है! देखूँ, चंद्रबेधी है या सूर्यबेधी।

हुस्नआरा – हाँ, अम्माँजान, यह जरूर देखना चाहिए।

रूहअफजा – ले लो, जरूर। हजार काम छोड़ कर।

दोनों बहनें हँसती-बोलती मकान के दालान और कमरे देखने लगीं। छत पर एक कमरे के दरवाजे जो खोले, तो देखा दरिया लहरें मार रहा है। हुस्नआरा ने कहा – बाजी, इस वक़्त जी खुश हो गया। हमारी पलंगड़ी यहीं बिछे। बरसों की बीमार यहाँ रहे, तो दो दिन में अच्छा-भला चंगा हो जाय।

सिपहआरा – बहार बहन, भला कभी अँधेरे-उजाले दूल्हा भाई नहाने देते हैं दरिया में?

बहारबेगम – ऐ है, इसका नाम भी न लेना। इनको बहुत चिढ़ है इस बात की।

सुबह का वक़्त था, चारों बहनें ऊँची छत पर हवा खाने लगीं कि इतने में एक तरफ से धुआँ उठा। हुस्नआरा ने पूछा — यह धुआँ कैसा है?

रूहअफजा — इस घाट पर मुर्दे जलाए जाते हैं।

हुस्नआरा — मुर्दे यहीं जलते हैं?

बहारबेगम — हाँ, मगर यहाँ से दूर है।

सिपहआरा — हाय, क्या जाने कौन बेचारा जल रहा होगा?

रूहअफजा — जिंदगी का भरोसा नहीं।

बड़ी बेगम ने सुना कि यहाँ मुर्दे जलाए जाते हैं, तो होश उड़ गए। बोलीं — ऐ बहार तुम यहाँ कैसे रहती हो? खुरशेद दूल्हा आएँ, तो उनसे कहूँ।

हुस्नआरा — फायदा? बरसों से तो वह यहाँ रहते हैं; भला तुम्हारे कहने से मकान छोड़ देंगे!

सिपहआरा — यह हमेशा यहाँ रहते हैं, कुछ भी नहीं होता। हम जो दो दिन रहेंगे, तो मुर्दे आकर चिपट जायँगे भला?

बड़ी बेगम का बस चलता, तो खड़े-खड़े चली जातीं; मगर अब मजबूर थीं। यहाँ से चारों बहनें दूसरी छत पर गईं तो बहारबेगम ने कहा — यह जो उस तरफ दूर तक ऊँचे-ऊँचे टीले नजर आते

हैं, यहाँ आबादी थी। जहाँ तुम बैठी हो, यहाँ वजीर का मकान था। मजाल क्या था कि कोई इस तरफ आ जाता! मगर अब वहाँ खाक उड़ती हैं, कुत्ते लोट रहे हैं।

इतने में एक किश्ती इसी घाट पर रुकी। उस पर से दो आदमी उतरे, एक बूढ़े थे, दूसरा नौजवान। दोनों एक कालीन पर बैठे और बातें करने लगे। बूढ़े मियाँ ने कहा — मियाँ आज़ाद सा दिलेर जवान भी कम देखने में आएगा। यह उन्हीं का शेर है —

सीने को चमन बनाएँगे हम,
गुल खाएँगे गुल खिलाएँगे हम।

जवान (गुलबाज) – मियाँ आज़ाद कौन थे जनाब?

इस पर बूढ़े मियाँ ने आज़ाद की सारी दास्तान बयान कर दी। दोनो बहनें कान लगा कर दोनों आदमियों की बातें सुनती थीं और रोती थीं। हैरत हो रही थी कि ये दोनों कौन हैं और आज़ाद को कैसे जानते हैं? महरी से कहा — जाके पता लगा कि वह दोनों आदमी, जो दरख्त के साये में बैठे हुक्का पी रहे हैं, कौन हैं?

महरी ने एक भिश्ती के लड़के को इस काम पर तैनात किया। लड़के ने जरा देर में आकर कहा — दोनों आदमी सराय में

ठहरेंगे और दो दिन यहाँ रहेंगे। मगर हैं कौन, यह पता न चला। महरी ने जा कर यही बात हुस्नआरा से कह दी।

हुस्नआरा ने कहा — उस लड़के को यह चवन्नी दो और कहो, जहाँ ये टिकें, इनके साथ जाए और देख आए।

महरी ने जोर से पुकारा — अबे ओ शुबराती! सुन, इन दोनों आदमियों के साथ जा। देख, कहाँ टिकते हैं।

शुबराती — अजी, अभी पहुँचा।

शुबराती चले। रास्ते में आपको शौक चर्राया कि छल्लामीरी खेलें। एक घंटे में शुबराती ने कोई डेढ़ पैसे की कौड़ियाँ जीतीं। मगर लालच का बुरा हो, जमे, तो दम के दम में डेढ़ पैसा वह हारे, और बारह कौड़ियाँ गिरह से गईं, वहाँ से उदास हो कर चले। राह में बन्दर का तमाशा हो रहा था। अब मियाँ शुबराती जा चुके। कभी बन्दरिया को छेड़ा, कभी बकरे पर ढेला फेंका। मदारी ने देखा कि लौंडा तेज है, तो बोला — इधर आओ जवान, आदमी हो कि जानवर?

शुबराती — आदमी।

मदारी — सूअर कि शेर?

शुबराती — हम शेर, तुम सूअर।

मदारी — गधा कि गधी?

शुबराती — गधा

मदारी — उल्लू कि बैल!

शुबराती — तुम उल्लू, तुम्हारे बाप बैल, और तुम्हारे दादा बछिया के ताऊ।

थोड़ी देर के बाद मियाँ शुबराती यहाँ से रवाना हुए, तो एक रईस के यहाँ एक सपेरा साँप का तमाशा दिखा रहा था। मियाँ शुबराती भी डट गए। सँपेरा तोंबी में भैरवी का रंग दिखाता था।

रईस ने कहा — तब जानें, जब किसी के सिर से साँप निकालो।

सपेरे ने कहा — हुजूर, मंतर में सब कुदरत है। मुल कोई आध सेर आटा तो पेट भर खाने को दो। जिसके बदन से कहिए, साँप निकालूँ।

लौंडे यह सुन कर हुर्र हो गए कि धरे न जायँ। मियाँ शुबराती डटे खड़े रहे।

सपेरा — वाह जवान, तुम्हीं एक बहादुर हो।

शुबराती — और हमारे बाप हमसे बढ़ कर।

सपेरा — यहाँ बैठ तो जाओ।

मियाँ शुबराती बेधड़क जा बैठे। सपेरे ने झूठमूठ कोई मंत्र पढ़ा और जोर से मियाँ शुबराती की खोपड़ी पर धप जमा कर कहा यह लीजिए साँप। वाह-वाह का दौंगड़ा बज गया। रईस ने सँपेरे को पाँच रुपए इनाम दिए और कहा — इस लौंडे को भी चार आने पैसे दे दो। मियाँ शुबराती ने चवन्नी पाई, तो फूले न समाए। जाते दी गोल-गप्पेवाले से पैसे के कचालू, धेले के दही-बड़े, धेले की सोंठ की टिकिया ली और चखते हुए चले। फिर तकिए पर जा कर कौड़ियाँ खेलने लगे। दो पैसे की कौड़ियाँ हारे। वहाँ से उठे, तो हलवाई की दुकान पर एक आने की पूरियाँ खाईं और कुएँ पर पानी पिया। वहाँ से आकर महरी को पुकारा।

महरी — कहो, वह हैं?

शुबराती — वह तो चले गए।

महरी — कुछ मालूम हैं, कहाँ गए?

शुबराती — रेल पर सवार हो कर कहीं चल दिए।

महरी ने जा कर हुस्नआरा ने यह खबर कही, तो उन्होंने कहा — लौंडे से पूछो, शहर ही में हैं या बाहर चले गए?

महरी ने जा कर फिर शुबराती से पूछा – शहर में हैं या बाहर चले गए?

शुबराती को इसकी याद न रही कि मैंने पहले क्या कहा था, बोला – किसी और सराय में उठ गए।

महरी – क्यों रे झूठे, तू तो कहता था, रेल पर चले गए?

शुबराती – मैंने?

महरी – चल झूठे, तू गया कि नहीं।

शुबराती – अब्बा की कसम, गया था।

महरी – चल दूर हो, मुआ झूठा।

इतने में बड़ी बेगम का पुराना नौकर हुसैनबख्श आ गया। हुस्नआरा ने उसे बुला कर कहा – बड़े मियाँ, एक साहब आज़ाद के जानने वालों में यहाँ आए हैं और किसी सराय में ठहरे हैं। तुम जरा इस लौंडे शुबराती के साथ उस सराय तक जाओ और पता लगाओ कि वह कौन साहब हैं।

अब मियाँ शुबराती चकराए कि खुदा ही खैर करे। दिल में चोर था, कहीं ऐसा न हो कि वह अभी सराय में टिके ही हों, तो मुझ पर बेभाव की पड़ने लगें। दबे दाँतों कहा, चलिए। आगे-आगे हुसैनबख्श और पीछे-पीछे मियाँ शुबराती चले। राह में शुबराती

ने एक लौंडे की खोपड़ी पर धप जमाई, और आगे बढ़े, तो एक दीवाने पर कई ढेले फेंके, और दो कदम गए, तो एक बूढ़ी मामा से कहा — नानी, सलाम। वह गालियाँ देने लगी, मगर आप बहुत खिलखिलाए। और आगे चले, तो एक अंधा मिला। आपने उससे कहा — आगे गड्ढा है, और उसकी लाठी छीन ली। हुसैनबख्श कभी मुसकराते थे, कभी समझाते। चलते-चलते एक तेली मिला, मियाँ शुबराती ने पूछा — क्यों भई तेली, मरना, तो अपनी खोपड़ी मुझे दे देना। मंतर जगाऊँगा। तेली ने कहा — चुप! लौंडा बड़ा शरीफ है। और आगे बढ़े, तो एक अंगरेज से पूछा — क्यों बड़े भाई, अपनी दाढ़ी नहीं रँगते? उसने कहा — कहो, तुम्हारे बाप की दाढ़ी रँग दें नील से। अब सुनिए, दो हिंदू बोरिया-बकचा सँभाले कहीं बाहर जाने के लिए घर से निकले। मियाँ शुबराती एक आँख दबा कर सामने जा खड़े हुए। वे समझे, सचमुच काना है। एक ने कहा — अबे, हट सामने से ओ बे काने! आपने वह आँख खोल दी। दूसरी दबा ली। दोनों आदमी इसे असगुन समझ कर अन्दर चले गए। इतने में एक कानी औरत सामने से आई। मियाँ शुबराती ने देखते ही हाँक लगाई — 'एक लकड़िया बाँसे की, कानी आँख तमाशे की!'

ज्यों ही दोनों सराय में पहुँचे, हुसैनबख्श ने बढ़ कर बूढ़े मियाँ को सलाम किया। बड़े मियाँ बोले — जनाब, मियाँ आज़ाद से मेरी

पुरानी मुलाकात है। मेरी लड़कियों के साथ वह मुद्दत तक खेला किए हैं। मेरी छोटी लड़की से उनके निकाह की भी तजवीज हुई थी; अगर अब तो वह एक बेगम से कौल हार चुके हैं।

इसके बाद कुछ और बातें हुईं। शाम को हुसैनबख्श रुख़सत हुए और घर आकर हुस्नआरा से कहा — वह तो आज़ाद के पुराने मुलाकाती हैं। शायद आज़ाद ने उनकी एक लड़की से निकाह करने का वादा भी किया है।

यह सुनते ही हुस्नआरा का रंग फक हो गया। रात को हुस्नआरा ने सिपहआरा से कहा — कुछ सुना? उस बुड्ढे की एक लड़की के साथ आज़ाद का निकाह होने वाला है।

सिपहआरा — गलत बात है।

हुस्नआरा — क्यों?

सिपहआरा — क्यों क्या, आज़ाद ऐसे आदमी ही नहीं।

हुस्नआरा — दिल्लगी हो, जो कहीं आज़ाद उससे भी इकरार कर गए हों। चलो खैर-चार निकाह तो जायज़ भी हैं। लेकिन अल्लाह जानता है, यकीन नहीं आता। आज़ाद अगर ऐसे हरजाई होते तो जान हथेली पर ले कर रूम न जाते।

हुस्नआरा ने जबान से तो यह इतमीनान जाहिर किया, पर दिल से यह खयाल दूर न कर सकी कि मुमकिन है, आज़ाद ने वहाँ भी कौल हारा हो। एक तो उनकी तबीयत पहले ही से खराब थी, उस पर यह नई फिक्र पैदा हुई तो फिर बुखार आने लगा। दिल को लाख लाख समझातीं कि आज़ाद बात के धनी हैं, लेकिन यह खयाल दूर न होता। इधर एक नई मुसीबत यह आ गई कि उनके एक आशिक और पैदा हो गए। यह हजरत बहारबेगम के रिश्ते में भाई होते थे। नाम था मिर्जा अस्करी। अस्करी ने हुस्नआरा को लड़कपन में देखा था। एक दिन बहारबेगम से मिलने आए, और सुना कि हुस्नआरा बेगम आज-कल यहीं हैं, तो उन पर डोरे डालने लगे। बहारबेगम से बोले — अब तो हुस्नआरा सयानी हुई होंगी?

बहारबेगम — हाँ, खुदा के फजल से अब सयानी हैं।

अस्करी — दोनो बहनों में हुस्नआरा गोरी हैं न?

बहारबेगम — ऐ, दोनों खासी गोरी-चिट्टी हैं; मगर हुस्नआरा जैसी हसीन हमने तो नहीं देखी। गुलाब के फूल जैसा मुखड़ा है।

अस्करी — तुम हमारी बहन कैसी हो?

बहारबेगम — इसके क्या मानें?

अस्करी — अब साफ-साफ क्या कहूँ, समझ जाओ। बहन हो, बड़ी हो, इतने ही काम आओ। फिर और नहीं तो क्या आकबत में बख्शाओगी?

बहारबेगम — अस्करी, खुदा जानता है, हमें दिल से तुम्हारी मुहब्बत है।

अस्करी — बरसों साथ-साथ खेले हैं।

बहारबेगम — अरे, यों क्यों नहीं कहते कि मैंने गोदियों में खिलाया है।

अस्करी — यह हम न मानेंगे। ऐसी आप कितनी बड़ी हैं मुझसे। बसर नहीं हद दो बरस।

बहारबेगम — ऐ लो, इस झूठ को देखो, छतें पुरानी हैं।

अस्करी — अच्छा, फिर कोई पंद्रह-बीस बरस की छुटाई बड़ाई है?

बहारबेगम — हई है?

अस्करी — अच्छा, अब फिर किस दिन काम आओगी?

बहारबेगम — भई, अगर हुस्नआरा मंजूर कर लें, तो है। मैं आज अम्माँजान से जिक्र करूँगी।

इतने में हुस्नआरा बेगम ने ऊपर से आवाज दी — ऐ बाजी, जरी हमको हरे-हरे मुलायम सिंघाड़े नहीं मँगा देतीं?

मुहम्मद अस्करी ने रसूखियत जताने के लिए मामा से कहा — मेरे आदमी से जा कर कहो कि चार सेर ताजे सिंघाड़े तुड़वा कर ले आए।

हुस्नआरा ने जो उनकी आवाज सुनी, तो सिपहआरा से पूछा — यह कौन आया है?

सिपहआरा ने कहा — ऐ, वही तो हैं अस्करी! थोड़ी देर में मिर्जा अस्करी तो चले गए, और चलते वक़्त बहारबेगम से कह गए कि हमने जो कहा है, उसका खयाल रहे।

बहारबेगम ने कहा — देखो, अल्लाह चाहे तो आज के दूसरे ही महीने हुस्नआरा बेगम के साथ मँगनी हो।

हुस्नआरा उसी वक़्त नीचे आ रही थीं। यह बात उनके कान में पड़ गई। पाँव-तले से मिट्टी निकल गई। उलटे-पाँव लौट गईं और सिपहआरा से यह किस्सा कहा। उसे भी होश उड़ गए। कुछ देर तक दोनों बहनें सन्नाटे में पड़ी रहीं। फिर सिपहआरा ने दीवाने-हाफिज उठा लिया और फाल देखी, तो सिरे पर ही यह शेर निकला —

बैरों ई दाम मुर्गे दिगर नेह;

कि उनका रा बुलंद अस्त आशियाना।

(यह लाल दूसरी चिड़िया पर डाल। उनका का घोंसला बहुत ऊँचा है।)

सिपहआरा यह शेर पढ़ते ही उछल पड़ी। बोली — लो फतह है। बेड़ा पार हो गया। इतने में बहारबेगम आ पहुँचीं और हुस्नआरा से बोली — तुम लोगों ने मिर्जा अस्करी को तो देखा होगा? कितना खूबसूरत जवान है!

सिपहआरा — देखा क्यों नहीं, वही शौकीन से आदमी हैं न?

बहारबेगम — अबकी आएगा तो ओट में से दिखा दूँगी। बड़ा हँसमुख, मिलनसार आदमी है। जिस वक़्त आता है, मकान भर महकने लगता है। मेरी बीमारी में बेचारा दिन भर में तीन-तीन फेरे करता था।

हुस्नआरा ये बातें सुन कर दिल ही दिल में सोचने लगी कि यह कह क्या रही हैं। कैसे अस्करी? यहाँ तो आज़ाद को दिल दे चुके। वह टर्की सिधारे, हम कौल हारे। इनको अस्करी की पड़ी है। बहार बेगम ने बड़ी देर तक अस्करी की तारीफ की; मगर हुस्नआरा कब पसीजनेवाली थीं। आखिर, बहार-बेगम खफा होकर चली गईं।

दूसरे दिन जब अस्करी फिर आए, तो बहारबेगम ने उनसे कहा — मैंने हुस्नआरा से तुम्हारा जिक्र तो किया, मगर वह बोली तक नहीं। उस मुए आज़ाद पर लट्टू हो रही हैं।

अस्करी — मैं एक तरकीब बताऊँ, एक काम करो। जब हुस्नआरा बेगम और तुम पास बैठी हो, तो आज़ाद का जिक्र जरूर छेड़ो। कहना, अस्करी अभी-अभी अखबार पढ़ता था, उसका एक दोस्त है आज़ाद, वह नानबाई का लड़का है। उसकी बड़ी तारीफ छपी है। कहता था, इस नानबाई के लौंडे की खुशकिस्मती को तो देखो, कहाँ जा कर शिप्पा लड़ाया है? जब वह कहें कि आज़ाद शरीफ आदमी हैं, तो कहना, अस्करी के पास आज़ाद के न जाने कितने खत पड़े हैं। वह कसम खाता है कि आज़ाद नानबाई का लड़का है, बहुत दिनों तक मेरे यहाँ हुक्के भरता रहा।

यह कह कर मिर्जा अस्करी तो विदा हुए, और बहारबेगम हुस्नआरा के पास पहुँचीं।

हुस्नआरा — कहाँ थी बहन? आओ, दरिया की सैर करें।

बहारबेगम — जरा अस्करी से बातें करने लगी थी। किसी अखबार में उनके एक दोस्त की बड़ी तारीफ छपी है। क्या

जाने, क्या नाम बताया था? भला ही सा नाम है। हाँ, खूब याद आया, आज़ाद। मगर कहता था कि नानबाई का लड़का है।

हुस्नआरा — किसका?

बहारबेगम — नानबाई का लड़का बताता था। तुम्हारे आशिक साहब का भी तो यही नाम है। कहीं वही अस्करी के दोस्त न हों।

सिपहआरा — वाह, अच्छे आपके अस्करी हैं जो नानबाइयों के छोकरों से दोस्ती करते फिरते हैं।

बहार तो यह आग लगाकर चलती हुई, इधर हुस्नआरा के दिल में खलबली मची। सोचीं, आज़ाद के हाल से किसी को इत्तला तो है नहीं, शायद नानबाई ही हों। मगर यह शक्ल-सूरत, यह इल्म और कमाल, यह लियाकत और हिम्मत नानबाई में क्योंकर आ सकती है? नानबाई फिर नानबाई है। आज़ाद तो शाहज़ादे मालूम होते हैं। सिपहआरा ने कहा — बाजी, बहार बहन तो उधार खाए बैठी हैं कि अस्करी के साथ तुम्हारा निकाह हो। सारी कारस्तानी उसी की है। अस्करी के हथकंडों से अब बचे रहना। वह बड़ा नटखट मालूम होता है।

शाम को मामा ने एक खत ला कर हुस्नआरा को दिया। उन्होंने पूछा — किसका खत है?

मामा — पढ़ लीजिए।

सिपहआरा — क्या डाक पर आया है?

मामा — जी नहीं, कोई बाहर से दे गया है।

हुस्नआरा ने खत खोल कर पढ़ा। खत का मजमून यह था —

कदम रख देख कर उल्फ़त के दरिया में जरा ऐ दिल;
खतरा है डूब जाने का भी दरिया के नहाने में।

हुस्नआरा बेगम की खिदमत में आदाब। मैं जताए देता हूँ कि आज़ाद के फेर में न पड़िए। वह नीच कौम आपके काबिल नहीं। नानबाई का लड़का, तंदूर जलाने में ताक, आटा गूँधने में मश्शाक। वह और आपके लायक हो! अव्वल तो पाजी, दूसरे दिल का हरजाई, और फिर तुर्रा यह कि अनपढ़! बहार बहन मुझे खूब जानती हैं। मैं अच्छा हूँ या बुरा, इसका फैसला वही कर सकती हैं। आज़ाद मेरे दुश्मन नहीं, मैं उन्हें खूब जानता हूँ। इसी सबब से आपको सलाह देता हूँ कि आप उसका खयाल दिल से दूर कर दें। खुदा वह दिन न दिखाए कि आज़ाद से तुम्हारा निकाह हो।

तुम्हारा

– अस्करी

हुस्नआरा ने इस खत के जवाब में यह शेर लिखा —

न छेड़ ऐ निकहते बादे-बहारी, राह लग अपनी;
तुझे अठखेलियाँ सूझी हैं, हम बेजार बैठे हैं।

सिपहआरा ने कहा — क्यों बाजी, हम क्या कहते थे? देखा, वही बात हुई न? और झूठा तो इसी से साबित है कि मियाँ आज़ाद को अनपढ़ बताते हैं। खुदा की शान, यह और आज़ाद को अनपढ़ कहें! हम तो कहते ही थे कि यह बड़ा नटखट मालूम होता है।

हुस्नआरा ने यह पुर्जा मामा को दिया कि जा, बाहर दे आ। अस्करी ने यह खत पाया, तो जल उठे। दिल में कहा — अगर आज़ाद को नीचा न दिखाया, तो कुछ न किया। जा कर बड़ी बेगम से मिले और उनसे खूब नमक-मिर्च मिला-मिला कर बातें कीं। बहारबेगम ने भी हाँ-में-हाँ मिलाई और अस्करी की खूब तारीफें कीं। आज़ाद को जहाँ तक बदनाम करते बना, किया। यहाँ तक कि आखिर बड़ी बेगम भी अस्करी पर लट्टू हो गईं मगर हुस्नआरा और सिपहआरा अस्करी का नाम सुनते ही जल उठती थीं। दोनों आज़ाद को याद कर-करके रोया करतीं और बहारबेगम बार-बार अस्करी का जिक्र करके उन्हें दिक किया करतीं। यहाँ तक कि एक दिन बड़ी बेगम के सामने सिपहआरा और बहारबेगम में एक झौड़ हो गई। बहार कहती थीं कि

हुस्नआरा की शादी मिर्जा अस्करी से होगी, और जरूर होगी। सिपहआरा कहती थीं — यह मुमकिन नहीं।

एक दिन बड़ी बेगम ने हुस्नआरा को बुला भेजा, लेकिन जब हुस्नआरा गईं, तो मुँह फेर लिया। बहारबेगम भी वहीं बैठी थीं। बोलीं — अम्माँजान तुमसे बहुत नाराज हैं हुस्नआरा!

बेगम — मेरा नाम न लो।

बहारबेगम — जी नहीं, आप खफा न हों। मजाल है, आपका हुक्म न मानें।

बेगम — सुना हुआ है सब।

बहारबेगम — हुस्नआरा, अम्माँजान के पास आओ।

हुस्नआरा परेशान कि अब क्या करूँ। डरते-डरते बड़ी बेगम के पास जा बैठीं। बड़ी बेगम ने उनकी तरफ देखा तक नहीं।

बहारबेगम — अम्माँजान, यह आपके पास आई हुई हैं, इनका कसूर माफ कीजिए।

बेगम — जब यह मेरे कहने में नहीं हैं, तो मुझसे क्या वास्ता? अस्करी सा लड़का मशाल ले कर भी ढूँढ़े, तो न पाए। मगर इन्हें अपनी ही जिद है।

बहारबेगम — हुस्नआरा, खूब सोच कर इसका जवाब दो।

बेगम — मैं जवान-सवाब कुछ नहीं माँगती।

बहारबेगम — आप देख लीजिएगा, हुस्नआरा आपका कहना मान लेंगी।

बेगम — बस, देख लिया।!

बहारबेगम — अम्माँजान, ऐसी बातें न कहिए।

बेगम — दिल जलता है बहार, दिल जलता है।! अपने दिल में क्या-क्या सोचते थे, मगर अब उठ ही जायँ यहाँ से, तो अच्छा।

यह कह कर बड़ी बेगम उठ कर चली गईं हुस्नआरा भी ऊपर चली गई और लेट कर रोने लगीं। थोड़ी देर में बहार ने आकर कहा — हुस्नआरा, जरी पर्दे ही में रहना, अस्करी आते हैं। हुस्नआरा ने अस्करी का नाम सुना, तो काँप उठीं। इतने में अस्करी आकर, बरामदे में खड़े हो गए।

बहारबेगम — बैठो अस्करी।

अस्करी — जी हाँ, बैठा हूँ। खूब हवादार मकान है। इस कमरे में तुम रहती हो न?

बहारबेगम — नहीं, इसमें हमारी बहनें रहती हैं।

अस्करी — अब हुस्नआरा की तबीयत कैसी है?

बहारबेगम — पूछ लो, बैठी तो हैं।

अस्करी — नहीं, बताओ तो आखिर?

बहारबेगम — तुम भी तो हकीम हो? भला पर्दे के पास से नब्ज तो देखो?

हुस्नआरा मुसकराईं। सिपहआरा ने कहा — ऐ, हटो भी! बड़े आए वहाँ से हकीम!

बहारबेगम — तुम तो हवा से लड़ती हो।

सिपहआरा — लड़ती ही हैं!

अस्करी — इस वक़्त खाना खा चुकी होंगी। शाम को नब्ज देख लूँगा।

बहारबेगम — ऐ, अभी खाना कहाँ खाया?

सिपहआरा — हाँ-हाँ खा चुकी हैं।

मिर्जा अस्करी तो रुख़सत हुए, मगर बहारबेगम को सब्र कहाँ? पूछा — हुस्नआरा, अब बोलो, क्या कहती हो?सिपहआरा तिनक कर बोली — अब कोई और बात भी है, या रात-दिन यही जिक्र है? कह दिया एक दफा कि जिस बात से यह चिढ़ती हैं, वह क्यों करो।

बहारबेगम — होना वही है, जो हम चाहती हैं।

हुस्नआरा — खैर, बहन, हो होना है, हो रहेगा। उसका जिक्र ही क्या?

सिपहआरा — बहार बहन, नाहक बैठे-बिठाए रंज बढ़ाती हो।

बहारबेगम — याद रखना, अम्माँजान अभी-अभी कसम खा चुकी हैं कि वह तुम दोनो की सूरत न देखेंगी। बस, तुम्हें अब अख्तियार है, चाहे मानो, चाहे न मानो।

कई दिन इसी तरह गुजर गए। हुस्नआरा जब बड़ी बेगम के सामने जातीं, तो वह मुँह फेर लेतीं। दोनों बहनें रात-दिन रोया करतीं। सोचीं कि यह तो सब के सब हमारे खिलाफ हैं, आओ, रूहअफजा को बुलाएँ, शायद वह हमारा साथ दें। मामा ने कहा — मैं अभी-अभी जाती हूँ। जहाँ तक बन पड़ेगा, बहुत कहूँगी। और, कहना क्या है, ले ही आऊँगी।

इतने में बहारबेगम ने आकर कहा — ऐ हुस्नआरा, जरी पर्दा करके अस्करी को नब्ज दिखा दो। जीने पर खड़े हैं। हुस्नआरा मजबूर हो गई। सिपहआरा को इशारे से बुलाया और कहा — बहार बहन तो बाहर ही बैठेंगी। मेरे बदले तुम नब्ज दिखा दो। सिपहआरा ने मुसकरा कर कहा — अच्छा, और पर्दे के पास बैठ कर नब्ज दिखाया।

अस्करी — दूसरा हाथ लाइए।

बहारबेगम — बुखार तो नहीं है?

अस्करी — थोड़ा सा बुखार तो जरूर है। कमजोरी बहुत है।

जब अस्करी चले गए, तो हुस्नआरा ने बहारबेगम से कहा — आपके अस्करी तो बड़े होशियार हैं!

बहारबेगम — क्या शक भी है?

हुस्नाआरा — उफ, मारे हँसी के बुरा हाल है। वाह रे हकीम!

सिपहआरा — 'नीम हकीम, खतरे जान।'

बहारबेगम — यह काहे से?

हुस्नआरा — नब्ज किसकी देखी थी?

बहारबेगम — तुम्हारी।

हुस्नआरा — अरे वाह, कहीं देखी हो न? बस, देख ली हिकमत।

बहारबेगम — फिर किसी नब्ज देखी? क्या सिपहआरा बैठ गई थीं?

सिपहआरा — और नहीं तो क्या? कमजोरी बताते थे। कमजोरी हमारे दुश्मनों को हो!

बहारबेगम — भला इलाज में क्या हँसी करनी थी?

बाहर जा कर बहार ने अस्करी को खूब आड़े-हाथों लिया — ऐ बस, जाओ भी, मुफ्त में हमको बद बनाया! हुस्नआरा ने हँसी-हँसी में सिपहआरा को अपनी जगह बिठा दिया, और तुम जरा न पहचान सके। खुदा जानता है, मुझे बहुत शरम आई।

शाम को रूहअफजा बेगम आ पहुँचीं और बड़ी बेगम के पास जा कर सलाम किया।

बड़ी बेगम — तुम कब आई?

रूहअफजा — अभी-अभी चली आती हूँ। हुस्नआरा कहाँ हैं?

बहारबेगम — हमें उनका हाल मालूम नहीं। कोठे पर हैं।

रूहअफजा — जरी, बुलवाइए!

बहारबेगम — दोनो बहनें हमसे खफा हैं।

रूहअफजा कोठे पर गई, तो दोनों बहनें उनसे गले मिल कर खूब रोईं।

रूहअफजा — यह तुमको क्या हो गया हुस्नआरा? वह सूरत ही नहीं। माजरा क्या है?

सिपहआरा — अब तो आप आई हैं; सब कुछ मालूम हो जायगा। सारा घर हमसे फिरंट हो रहा है। हमें तो खाना-पीना उठना-बैठना सब हराम है!

बहारबेगम को यह सब्र कैसे होता कि रूहअफजा आएँ और दोनो बहनें इनसे अपना दुखड़ा रोएँ। आकर धीरे से बैठ गईं।

रूहअफजा — बहन, यह क्या बात है! आखिर किस बात पर यह रंजारंजी हो रही हैं?

बहारबेगम — मैं तुमसे पूछती हूँ, अस्करी में क्या बुराई है? शरीफ नहीं है वह, या पढ़ा-लिखा नहीं है, या अच्छे खानदान का नहीं है? आखिर इनके इनकार का सबब क्या है?

सिपहआरा — हमने एक दफे कह दिया कि हम अस्करी का नाम नहीं सुनना चाहते।

रूहअफजा — तो यह कहो, बात बहुत बढ़ गई है। मुझे जरा भी कुछ हाल मालूम होता, तो फौरन ही आ जाती।

बहारबेगम — अब आई हो, तो क्या बना लोगी? यह एक न मानेंगी।

रूहअफजा — वह तो शायद मान भी जायँ, मगर आपका मान जाना अलबत्ता मुश्किल है।

बहारबेगम — यह कहिए, आप इनकी तरफ से लड़ने आई हैं?

रूहअफजा — हाँ, हमसे तो यह नहीं देखा जाता कि खाहमख्वाह झगड़ा हो।

ये बातें हो रही थीं कि बड़ी बेगम साहब भी लठियाँ टेकती हुई आईं।

रूहअफजा — आइए अम्माँजान, बैठिए।

बेगम — मैं बैठने नहीं आई, यह कहने आई हूँ कि अस्करी के साथ हुस्नआरा का निकाह जरूर होगा। इसमें सारी दुनिया एक तरफ हो, मैं किसी की न सुनूँगी। मैं जान दे दूँगी। यह न मानेंगी, तो जहर खा लूँगी; मगर करूँगी यहीं, जो कह रही हूँ।

बड़ी बेगम यह कह कर चली गईं। हुस्नआरा इतना रोईं कि आँखें लाल हो गईं। रूहअफजा ने समझाया, तो बोलीं बहन, अम्माँजान मानेंगी नहीं, और हम सिवा आज़ाद के और किसी के साथ शादी न करेंगे? नतीजा यह होना है कि हमीं न होंगे।

हुस्नआरा बेगम की जान अजाब में थी। बड़ी बेगम से बोल-चाल बन्द, बहारबेगम से मिलना-जुलना तर्क। अस्करी रोज एक नया गुल खिलाता। वह एक ही काइयाँ था, रूहअफजा को भी बातों में लगा कर अपना तरफदार बना लिया। मामा को पाँच रुपए दिए। वह उसका दम भरने लगी। महरी को जोड़ा बनवा दिया, वह भी उसका कलमा पढ़ने लगी। नवाब साहब उसके दोस्त थे ही। हुसैनबख्श को भी गाँठ लिया। बस, अब सिपहआरा के सिवा हुस्नआरा का कोई हमदर्द न था। एक दिन रूहअफजा चुपके-चुपके उधर आई, तो देखा, कमरे के सब दरवाजे बन्द हैं। शीशे से झाँक कर देखा, हुस्नआरा रो रही हैं और सिपहआरा उदास बैठी हैं। रूहअफजा का दिल भर आया। धीरे से दरवाजा खोला और दोनो बहनों को गले लगा कर कहा — आओ, हवा में बैठें। जरी, मुँह धो डालो। यह क्या बात है! जब देखो, दोनों बहनें रोती रहती हो?

सिपहआरा — बहन, जान-बूझ कर क्यों अनजान बनती हो? भला आपसे भी कोई बात छिपी है? मगर आप भी हमारे खिलाफ हो गईं! खैर अल्लाह मालिक है।

रूहअफजा — तुम्हारी तो नई बातें हैं? जहाँ तुम्हारा पसीना गिरे, वहाँ हम लहू गिराएँ, और तुम समझती हो कि हम तुम्हें जलाते हैं। हम तो मुहब्बत से पूछते हैं, और तुम हमीं पर बिगड़ती हो।

हुस्नआरा – सुनो बाजी, तुम कौन सी बातें नहीं जानती हो, जो पूछती हो। हम साफ-साफ कह चुके कि या तो उम्र भर कुँआरी ही रहेंगे या आज़ाद के साथ निकाह होगा।

सिपहआरा – ऐसे-ऐसे 360 अस्करी हों, तो क्या? हलवा खाने को मुँह चाहिए।

रूहअफजा – अब इस वक़्त बात बढ़ जायगी। और कोई बात करो।

हुस्नआरा – हम इतना चाहते हैं कि आप जरा इन्साफ करें।

रूहअफजा – मगर यह गुत्थी क्यों कर सुलझेगी?

इतने में मामा ने अखबार ला कर रख दिया! हुस्नआरा ने पढ़ना शुरू किया। एकाएक एक मजमून देख कर चौंक उठी। मजमून यह था कि मियाँ आज़ाद ने टर्की में एक साईस की बीबी से शादी कर ली। साईस को जहर दिलवा दिया और अब साईमिन के साथ गुलछर्रे उड़ा रहे हैं। हुस्नआरा ने अखबार फेंक दिया और उठ कर कमरे में चली गईं। सिपहआरा ने भाँप लिया कि जरूर आज़ाद की कुछ खबर है। अखबार उठा कर देखने लगीं, तो यह मजमून नजर पड़ा। सन्नाटे में आ गईं। जिस आज़ाद के लिए वहाँ सारी दुनिया से लड़ाई हो रही थी, जिसका दोनों आसरा

लगाए बैठी थीं, उसका यह हाल! हुस्नआरा को जा कर तसकीन देने लगी — बाजी, यह सब गलत है।

हुस्नआरा — किस्मत की खूबी है।

सिपहआरा — हम तो फाल देखेंगे।

हुस्नआरा — हमारा तो दिल टूट गया। हाय, हम क्या जानते थे कि मुहब्बत यह बुरा दिन दिखाएगी।

हाल अव्वल से यह न था जाहिर,
कि इसी गम में होंगे हम आखिर।

अपना किया अपने आगे आया। मियाँ आज़ाद के हथकंडे क्या मालूम थे। इनको हमारा जरा खयाल न आया। एक नीच कौम की औरत को ब्याहा। हुस्नआरा को भूल गए। यहाँ महीनों इसी रंज में गुजर गए कि टर्की क्यों भेजा। बैठे बिठाए उनकी जान के दर पे क्यों हुई। रात-दिन दुआ माँगी कि वह खैरियत से घर आएँ। मगर यह क्या मालूम था कि एकाएक यह गम की बिजली गिर पड़ेगी। किस्मत फूट गई अब तो यही आरजू है कि एक दफा चार आँखें हों, फिर झुक कर सलाम करूँ।

सिपहआरा — अगर यही करना था, तो इतनी दूर गए क्या करने थे?

रूहअफजा कमरे में आई, तो देखा, हुस्नआरा दुलाई ओढ़े पड़ी हैं। बदन पर हाथ रखा, तो तेज बुखार। हुस्नआरा उन्हें देख कर रोने लगीं। रूहअफजा बोलीं — बहन, तबीयत को काबू में रखो। ऐसा भी नौज कोई बीमारी में घबराए। बहारबेगम ने सुना, तो वह भी घबराई हुई आईं। बदन पर हाथ रखा, तो मालूम हुआ, जैसे किसी ने झुलसा दिया। हुस्नआरा ने रो कर कहा — बाजी, हर तरह की बीमारी मैंने उठाई है; मगर दिल कभी इतना कमजोर न हुआ था। मालूम होता है कि जान निकल रही है। बहारबेगम ने बड़ी बेगम को बुलवाया। वह भी बदहवास आईं और हुस्नआरा के माथे पर हाथ रख कर बोलीं — अल्लाह, यह हुआ क्या!

बहारबेगम — बुखार सा बुखार है!

नवाब साहब दौड़े हुए आए। देखा, तो कुहराम मचा हुआ है। इतने में अस्करी आए। बहारबेगम ने कहा — भैया जरी नब्ज तो देखो। यह दम के दम में क्या हो गया?

अस्करी — (नब्ज देख कर) बहन, क्या बताऊँ, नब्ज ही नहीं मिलती!

इस फिकरे पर बहारबेगम सिर पीटने लगीं। नवाब साहब ने समझाया, यह वक़्त दवा और इलाज का है, रोना तो उम्र-भर है। अस्करी फौरन बड़े हकीम साहब को बुलाने गए। शाहज़ादा

हुमायूँफर भी आए थे। बोले — मैं जा कर सिविलसर्जन को साथ लाया हूँ। सर्जन साहब आए और नब्ज देख कर कहा — दिल पर कोई सदमा पहुँचा है। किसी अज़ीज के मरने की खबर सुनी हो, या ऐसी ही कोई और बात हो। नुस्खा लिखा और फीस ले कर चल दिए। इतने में बड़े हकीम साहब आए और नब्ज देख कर अस्करी के कान में कहा — काम तमाम हो गया। नुस्खा लिख कर आप भी बाहर गए। बहारबेगम सबसे ज्यादा बेकरार थीं।

शाम का वक़्त था, बड़ी बेगम नमाज पढ़ रही थीं, बहारबेगम उदास बैठी हुई थीं, नवाब साहब हुमायूँफर के साथ इसी बीमारी का जिक्र कर रहे थे कि एकाएक अन्दर से रोने की आवाज आई।

नवाब साहब — क्या हुआ, क्या! हुआ क्या!!

बहारबेगम — जो कुछ होना था, वह हो गया।

नवाब साहब ने जा कर देखा, तो हुस्नआरा की आँख फिर गई थी और बदन ठंडा हो गया था। नवाब साहब को देखते ही बड़ी बेगम ने एक ईंट उठाई ओर सिर पर पटक ली। सिपहआरा ने तीन बार दीवार से सिर टकराया। नवाब साहब डाक्टर को बुलाने दौड़े।

58

रूम पहुँचकर आज़ाद एक पारसी होटल में ठहरे। उसी होटल में जार्जिया की एक लड़की भी ठहरी हुई थी। उसका नाम था मीडा। आज़ाद खाना खा कर अखबार पढ़ रहे थे कि मीडा को बाग में टहलते देखा। दोनों की आँखें चार हुईं। आज़ाद के कलेजे में तीर सा लगा। मीडा भी कनखियों से देख रही थी कि यह कौन आदमी है। आदमी तो निहायत हसीन है, मगर तुर्की नहीं मालूम होता है।

आज़ाद को भी बाग की सैर करने की धुन सवार हुई, ते एक फूल तोड़ कर मीडा के सामने पेश किया, मीडा ने फूल तो ले लिया, मगर बिना कुछ कहे-सुने घोड़े पर सवार हो कर चली गई। आज़ाद सोच रहे थे कि यहाँ किसी से जान न पहचान, अब इस हसीना को क्योंकर देखेंगे? इसी फिक्र में बैठे थे कि होटल का मालिक आ पहुँचा। आज़ाद ने उससे बातों-बातों में पता लगा लिया कि यह एक कुँआरी लड़की है। इसकी खूबसूरती की दूर-दूर चर्चा है। जिसे देखिए, इसका आशिक हे। पियानो बजाने का

दिली शौक है। घोड़े पर ऐसा सवार होती है कि अच्छे-अच्छे शहसवार दंग रह जाते हैं।

शाम के वक़्त आज़ाद एक किताब देख रहे थे कि एक औरत ने आकर कहा — एक साहब बाहर आपकी तलाश में खड़े हैं। आज़ाद को हैरत कि यह कौन है? बाहर आए, तो देखा, एक औरत मुँह पर नकाब डाले खड़ी है। इन्हें देखते ही उसने नकाब उलट दी। यह मीडा थी।

मीडा — मैं वही हूँ, जिसे आपने फूल दिया था।

आज़ाद — और मैंने आपकी सूरत को अपने दिल पर खींच लिया था।

मीडा — यहाँ कब तक ठहरिएगा?

आज़ाद — लड़ाई में शरीक होना चाहता हूँ।

मीडा — इस लड़ाई का बुरा हो, जिसने हजारों घरों को बरबाद कर दिया! भला, अगर आप न जायँ, तो कोई हर्ज है?

आज़ाद — मजबूरी है!

मीडा ने आज़ाद का हाथ पकड़ लिया और बाग में टहलते-टहलते बोली — जब तक आप यहाँ रहेंगे, मैं रोज आऊँगी।

आज़ाद — मेरे लिए यह बड़ी ख़ुशनसीबी की बात है। मैं अच्छी सायत देख कर घर से चला था।

मीडा — आपने वजीर जंग से अपने लिए क्या तय किया?

आज़ाद — अभी तो उनसे मिलने की नौबत ही नहीं आई।

मीडा — मुझे उम्मीद हैं कि मैं आपको कोई अच्छा ओहदा दिला सकूँगी।

आज़ाद — आपका वतन कहाँ है?

मीड़ा — जार्जिया।

आज़ाद — तो यह कहिए, आप कोहकाफ़ की परी हैं।

इस तरह की बातें करके मीडा चली गई। आज़ाद कुछ देर तक सन्नाटे में खड़े रहे। इतने में एक फ्रांसीसी अफसर आकर बोला — तुम अभी किससे बातें कर रहे थे?

आज़ाद — मिस मीडा से।

अफसर — तुम्हें मालूम हैं, उससे मेरी शादी होनेवाली है?

आज़ाद — बिलकुल नहीं।

यह सुनते ही उस अफसर ने, जिसका नाम जदाब था, तलवार खींच कर आज़ाद पर हमला किया। आज़ाद ने खाली दी।

एकाएक किसी ने पीछे से आज़ाद पर तलवार चलाई। तलवार छिछलती हुई बाएँ कंधे पर लगी। पलट कर आज़ाद ने जो एक तुला हुआ हाथ लगाया, तो वह जख्मी हो कर गिर पड़ा। आज़ाद सँभलने ही को थे कि जदाब फिर उन पर झपटा। आज़ाद ने फिर खाली दी और कहा — मैं चाहूँ तो तुम्हें मार सकता हूँ। मगर मुझे तुम्हारी जवानी पर रहम आता है। यह कह कर आज़ाद ने पैंतरा बदला और तलवार उसके हाथ से छीन लीं। इतने में होटल से कई आदमी निकल आए और आज़ाद की तारीफ करने लगे। जदाब ने शरमिंदा हो कर कहा — मुझे इसका अफसोस है कि मेरे एक दोस्त ने मुझसे बगैर पूछे आप पर पीछे से हमला किया। इसके लिए मैं आपसे माफी माँगता हूँ। दोनों आदमी गले तो मिले, मगर फ्रांसीसी के दिल से कुदूरत न गई।

दूसरे दिन मियाँ आज़ाद हमीदपाशा के पास गए, जो जंग के वजीर थे। हमीद ने आज़ाद का डील-डौल देखा और उनकी बातचीत सुनी, तो फौजी ओहदा देने का वादा कर लिया। आज़ाद खुश-खुश लौटे आते थे कि मीडा घोड़े पर सवार आ पहुँची।

मीडा — आप कहाँ गए थे?

आज़ाद — वजीर-जंग के पास। कल तो आपकी बदौलत मेरी जान ही गई थी।

मीडा — सुन चुकी हूँ।

आज़ाद — अब आपसे बोलते डर मालूम होता है!

मीडा — जीत तो तुम्हारी ही हुई। तुम मुझे दिल में बुरा समझ रहे होगे; मगर मेरा दिल काबू से बाहर है। मेरा दिल तुम पर आया है। मैं चाहती हूँ, मेरी तुम्हारे साथ शादी हो।

आज़ाद — मुझे अफसोस है कि मेरी शादी तय हो चुकी है। खुदा को गवाह करके कहता हूँ, आपकी एक-एक अदा मेरे दिल में चुभ गई है। मगर मैं मजबूर हूँ।

मीडा ने उदास हो कर कहा — पछताओगे, और घोड़ा बढ़ा दिया। उसी रात को मीडा ने हमीदपाशा से जा कर कहा कि आज़ाद नाम का जो हिंदुस्तानी आज आपके पास आया था, वह रूस का मुखबिर है। उससे होशियार रहिएगा।

हमीद — तुम्हें इसका पूरा यकीन है?

मीडा — मुझे आज़ाद के एक दोस्त ही से यह बात मालूम हुई।

हमीद — तुम्हारा जिम्मा।

मीडा — बेशक।

यह आग लगा कर मीडा घर आई; मगर बार-बार यह सोचती थी कि मैंने बहुत बुरा किया। एक बेगुनाह को मुफ्त में फँसाया। खयाल आया कि जा कर वजीर-जंग से कह दे कि आज़ाद बेगुनाह है; मगर बदनामी के खौफ से जाने की हिम्मत न पड़ती थी। मियाँ आज़ाद होटल में बैठे हुक्का पी रहे थे किए तुर्की अफसर ने आकर कहा — आपको टर्की की सरकार ने कैद कर लिया।

आज़ाद — मुझको?

अफसर — जी हाँ।

आज़ाद — आप गलती कर रहे हैं।

अफसर — नहीं, मुझे आप ही का पता दिया गया है।

आज़ाद — आखिर मेरा कसूर?

अफसर — मुझे बताने का हुक्म नहीं।

तीन दिन तक आज़ाद कैदखाने मे रहे, चौथे दिन हमीदपाशा के सामने लाए गए।

हमीद — मुझे मालूम हुआ कि तुम रूसी जासूस हो।

आज़ाद — बिलकुल गलत। मैं कश्मीर का रहनेवाला हूँ। आप बतला सकते हैं किसने मुझ पर इलजाम लगाया?

हमीद — एक शरीफ लेडी ने, जिसका नाम मीडा है।

आज़ाद मीडा का नाम सुनते ही सन्नाटे में आ गए। दिल के टुकड़े-टुकड़े हो गए। मुँह से एक बात भी न निकली। अब आज़ाद फिर कैदखाने में आए, तो मुँह से बेअख्तियार निकल गया — मीडा! मीडा!! तूने मुझ पर बड़ा जुल्म किया!

आज़ाद को इसका इतना रंज हुआ कि उसी दिन से बुखार आने लगा। दो तीन दिन में उनकी हालत इतनी खराब हो गई कि जेल के दारोगा ने सुबह-शाम सैर करने का हुक्म दे दिया। एक दिन वह शाम को बाहर सैर कर रहे थे कि एक खूबसूरत नौजवान घोड़ा दौड़ता हुआ उनके करीब आकर खड़ा हो गया।

जवान — माफ कीजिएगा, आपकी सूरत मेरे एक दोस्त से मिलती है। मैंने समझा शायद वही हों। आप कुछ बीमार मालूम पड़ते हैं!

आज़ाद — जी हाँ, कुछ बीमार हूँ। मुझे खयाल आता हे कि मैंने कहीं आपको देखा है।

जवान — शायद देखा हो।

यह कह कर वह मुसकराया। आज़ाद ने फौरन पहचान लिया। यह मुसकराहट मीडा की थी। आज़ाद ने कहा — मीडा, तुमने मुझ पर बड़ा जुल्म किया, मुझे तुमसे ऐसी उम्मीद न थी।

मीडा — मैं अपने किए पर खुद शरमिंदा हूँ। मुझे माफ करो।

59

मियाँ खोजी पंद्रह रोज में खासे टाँठे हो गए, तो कांसल से जा कर कहा — मुझे आज़ाद के पास भेज दिया जाय। कांसल ने उनकी दरख्वास्त मंजूर कर ली। दूसरे दिन खोजी जहाज पर बैठ कर कुस्तुनतुनिया चले। उधर मियाँ आज़ाद अभी तक कैदखाने में ही थे। हमीदपाशा ने उनके बारे में खूब तहकीकात की थी, और गो उन्हें इत्मीनान हो गया था कि आज़ाद रूसी जासूस नहीं हैं, फिर भी अब तक आज़ाद रिहा न हुए थे।

एक दिन मियाँ आज़ाद कैदखाने में बैठे हुए थे कि एक फ्रांसीसी कैदी आया। उस पर भी जासूसी का इल्जाम था। आज़ाद ने पूछा — आपने अपनी सफाई नहीं पेश की?

फ्रांसीसी — अंधेर है, अंधेर? मैं तो इन तुर्कों का जानी दुश्मन हूँ।

आज़ाद — मुझे यह सुन कर अफसोस हुआ। मैं तो तुर्कों का आशिक हूँ। ऐसी दिलेर कौम दुनिया में नहीं है।

फ्रांसीसी — अभी आप इन लोगों को अच्छी तरह नहीं जानते। आप ही को बेवजह कैद कर लिया।

आज़ाद — लड़ाई के दिनों में सभी जगह ऐसी गलतियाँ हो जाती हैं।

फ्रांसीसी — आप रूसी जबान नहीं जानते?

आज़ाद — बिलकुल नहीं।

फ्रांसीसी — रूस की सरकार ने बहुत मजबूर हो कर लड़ाई की है।

आज़ाद — मैं तो समझता हूँ, रूसवालों की ज्यादती है, सारा यूरोप टर्की का दुश्मन है।

इस तरह की बातें करके फ्रांसीसी चला गया और दूसरे ही दिन मियाँ आज़ाद आज़ाद कर दिए गए। यह कैदी फ्रांसीसी न था, हमीदपाशा ने एक तुर्की अफसर को आज़ाद के दिल का भेद लेने के लिए भेजा था।

शाम का वक़्त था, आज़ाद बैठे हुए मीडा से बातें कर रहे थे कि एक आदमी ने आकर कहा — हुजूर, एक नाटा सा आदमी बाहर

खड़ा है, और कहता है कि हमें कोठी के अन्दर जाने दो। आज़ाद ने कहा — आने दो। एक मिनट में मियाँ खोजी आकर खड़े हो गए। आज़ाद ने दौड़ कर उन्हें गले लगा लिया और खैर-आफ़ियत पूछने के बाद अपनी राम कहानी सुनाई। मियाँ खोजी ने, जब आज़ाद के कैद होने का हाल सुना, तो बिगड़ कर बोले — खुदा ने चाहा, तो हम तुम्हारा बदला लेंगे। खड़े-खड़े बदला न ले लें, तो नाम नहीं!

आज़ाद — खैर, अब इसका अफसोस न कीजिए। मिस मीडा अभी आती होंगी, जरा उनके सामने बेहूदगी न कीजिएगा।

खोजी — भई, अभी उन्हें मत आने दो। जरा हम बन-ठन लें। अफसोस यही है कि हमारे पास करौली नहीं। बे करौली के हमसे कुछ न हो सकेगा।

आज़ाद — क्या उनसे लड़िएगा?

खोजी — नहीं साहब, लड़ना कैसा! बे करौली के जोबन नहीं आता। आप ये बातें क्या जानें।

इतने में मिस मीडा दूसरे कमरे से निकल आईं। खोजी ने अपना ठाट बनाने के लिए मेज पर का कपड़ा ओढ़ लिया, तौलिया सिर में बाँधा और एक छुरी हाथ में ले कर मीडा की तरफ घूरने लगे! मीडा ने जो उनकी सूरत देखी, तो मुसकरा दी। खोजी खिल

गए। आज़ाद से बोले — क्यों आज़ाद, सच कहना, मुझे देखते ही कैसा खिल गई! मीडा ने आज़ाद से पूछा — यह कौन आदमी है?

आज़ाद — एक पागल है। इसको यह खब्त है कि जो औरत इसे देखती है, रीझ जाती है। तुम जरा इसको बनाओ।

मीडा ने खोजी को इशारे से करीब बुलाया। आप जा कर एक कुर्सी पर डट गए।

मीड़ा — (हाथ में हाथ दे कर) आपका नाम क्या है?

खोजी — (आज़ाद से) मुझे समझाते जाओ जी!

आज़ाद ने दुभाषिये का काम करना शुरू किया। मीडा जो कहती थी, उनको समझाते थे, और वह जो कुछ कहते थे, इसे समझाते थे।

मीडा — कल आपकी दावत है। आप शराब पीते हैं?

खोजी — हाँ — नहीं। मगर अच्छा; नहीं-नहीं। कह दो अफीम पीता हूँ।

मीडा — यह आपका गुलाब सा चेहरा कुम्हला जायगा!

खोजी ने अकड़ कर आज़ाद की तरफ देखा।

मीडा — आप कुछ गाना भी जानते हैं।

खोजी — हाँ, और नाचना भी जानता हूँ।

मीडा — अहो-हो, तो फिर नाचो।

खोजी ने नाचना शुरू किया। अब मीडा हँसने लगी, तो आप और भी फूल गए। थोड़ी देर में मीडा होटल से चली गई। तब आज़ाद ने कहा — भई खोजी, यह बात अच्छी नहीं। मैं तुमको ऐसा नहीं जानता था।

खोजी — तो मैं क्या करूँ? जब वह खुद ही मेरे पीछे, पड़ी हुई है, तो रुखाई करना भी तो अच्छा नहीं मालूम होता।

थोड़ी देर में मीडा का खत आया। आज़ाद ने कहा — जनाब ख्वाजा साहब, हमको तो जरा खत दिखाना।

खोजी — बस, बस, चलिए, अलग हटिए।

आज़ाद — लाओ, हम पढ़ दें। तुमसे भला क्या पढ़ा जायगा?

खोजी — अजब आदमी हैं आप! आप कहाँ के ऐसे बड़े आलिम हैं!

खोजी ने खत को तीन बार चूमा और आज़ाद को अलग बुला कर पढ़ने को दिया। लिखा था —

'मेरे प्यारे जवान, तुम्हारी एक-एक अदा ने मेरे दिल में जगह कर ली है। तुम्हारी सारस की सी गर्दन और बन्दर की सी हरकतें

जब याद आती हैं, तो मैं उछल-उछल पड़ती हूँ। अब यह बताओ कि आज किस वक़्त आओगे? यह खत अपने दोस्त आज़ाद को न दिखाना और वादे पर जरूर आना।'

खोजी — यार, तुम्हें तो सब हाल मालूम हो गया, मगर उससे कह न देना।

आज़ाद — मैं तो जा कर शिकायत करूँगा कि हमसे छिपाया क्यों? अभी-अभी खत भेजता हूँ।

खोजी — खैर, जाइए, कह दीजिए। वह हम पर आशिक हैं। तुम ऐसे हजार लगी-लिपटी बातें करें, होता क्या है। आपकी हकीकत ही क्या है!

आज़ाद — यार, अब तुम्हारे साथ न रहेंगे।

खोजी — आखिर, सबब बताइए।

आज़ाद — गजब खुदा का! मीडा सी माहरू और हमारे सामने तुम्हें यह खत लिखे।

खोजी खिलखिला कर हँस पड़े। बोले — यह बात है? हम जवान ही ऐसे हैं, इसको कोई क्या करे। लेकिन अगर तुम खिलाफ हो गए, तो वल्लाह, मैं मीडा से बात तक न करूँगा। मुझे जान से भी ज्यादा प्यारे हो। कसम खुदा की, अब दुनिया में तुम्हारे सिवा

मेरा और कोई नहीं। बस फकत तुम! और हम तो बूढ़े हुए। यह भी मिस मीडा की मेहरबानी है। अजी, मिसर में तो तुम न थे। वहाँ पर भी एक औरत मुझ पर आशिक हो गई थी! मगर खराबी यह थी कि न हम उसकी बात समझें, न वह हमारी! हाँ इशारों में खूब बातें हुई।

अच्छा, फिर एक हज्जाम तो बुलाओ। आज जाना है न!

आज़ाद ने एक हज्जाम बुलवाया। हजामत बनने लगी।

खोजी — घोटो, घोटो। घोटे जा। अभी खूँटी बाकी हैं। खूब घोटो।

हज्जाम ने फिर छुरा फेरा। खोजी ने फिर टटोल कर कहा — अभी खूँटी बाकी है, घोटो।

हज्जाम — तो हुजूर, कब तक घोटा करूँ!

खोजी — दूने पैसे देंगे हम।

हज्जाम — माना, मगर कोई हद भी है?

खोजी — तुमको इससे क्या मतलब!

हज्जाम — खून निकलने लगेगा।

आज़ाद — और अच्छा है; लोग कहेंगे, नौसा के चेहरे से खून बरसता है।

खोजी — हाँ, खूब सोची।

हज्जाम — (किसबत सँभाल कर) अब किसी और नाई से घुटवाइए।

आज़ाद — अच्छा, पट्टे तो कतरते जाओ।

हज्जाम ने झल्ला कर आधे बाल करत डाले। एक तरफ की आधी मूँछ उड़ा दी। खोजी एक तो यों ही बड़े हसीन थे, अब हज्जाम ने बाल कतर कर और भी ठीक बना दिया। खोजी ने जो आईने में अपनी सूरत देखी, तो मूँछें नदारद। झल्ला कर कहा — ओ गीदी, यह क्या किया? हज्जाम डरा कि कहीं यह साहब मार न बैठें।

आज़ाद — क्यों, क्यों खफा हो गए भई!

खोजी — इसने पट्टे ऊल-जलूल करते, और आप बोले तक नहीं?

आज़ाद — मैं सच कहता हूँ, आप इतने हसीन कभी न थे।

खोजी — और चेहरे की तो फिक्र करो!

आज़ाद — हाँ, हाँ, घबराते क्यों हो?

खोजी — हमको याद आता है कि नौशा के सामने छोटे-छोटे लड़के गजलें पढ़ते हैं। दो-एक लौंडे बुलवा लीजिए, तो उनको गजलें रटा दें।

आज़ाद ने दो लड़के बुलवाए, और मियाँ, खोजी उनको गजलें याद कराने लगे। एक गजल मियाँ आज़ाद ने यह बतलाई —

भला यह तो बताओ कि यह कौन बशर है;
सब सूरते लंगूर, फकत दुम की कसर है।

खोजी — चलिए, बस अब दिल्लगी रहने दीजिए। वाह, अच्छे मिले!

आज़ाद — अच्छा, और गजल लिखवाए देता हूँ —

फुगाँ है, आह है, नाला है, बेकरारी है;
फिराके-यार में हालत अजब हमारी है।

खोजी — वाह, शादी को इस शेर से क्या वास्ता!

आज़ाद — अच्छा साहब, गजल याद करवा दीजिए

कहा था बुलबुल से हाल मैंने
तेरे सितम का बहुत छिपा कर;
यह किसने उनको खबर सुनाई
कि हँस पड़े फूल खिलखिला कर।
मेरे जनाजे को उनके कूचे में

नाहक अहबाब ले के आए;
निगाहे-हसरत से देखते हैं।
वह रुख से परदा उठा-उठा कर।

खोजी — वाह, जनाजे को शादी से क्या मतलब है भला!

आज़ाद — ऊपरवाला शेर पसंद है?

खोजी — हाँ, हँसना और खिलखिलाना, ऐसे लफ्ज हों, तो क्या पूछना!

आज़ाद — अच्छा, और सुनिए।

खोजी — नहीं, इतना ही काफी है। जरा बाजेवालों की तो फिक्र कीजिए। हाथी, घोड़े, पालकी, सभी चाहिए। मगर हमारे लिए जो घोड़ा मँगवाइएगा, वह जरा सीधा हो।

आज़ाद — भला, घोड़ा न मिले, तो खच्चर हो तो कैसा?

खोजी — वाह, आपने मुझे कोई गधा समझा है?

इतने में होटल का मैनेजर आ गया और यह तैयारियाँ देख कर हँसने लगा।

खोजी — क्यों साहब, यह आप हँसे क्यों?

मैनेजर — जनाब, यहाँ शरीफ लोग शादियों में बाजे-गाजे नहीं ले जाते; और पैदल ही जाते हैं। हाँ एक बात हो सकती है, दस-पाँच आदमियों को थालियाँ दे दीजिए, बाँस की खपाचों से उन्हें बजाते जायँ। आवाज की आवाज और बाजे का बाजा।

खोजी — भई आज़ाद, सोच लो।

आज़ाद — वह जब यहाँ दस्तूर ही नहीं, तो फिर क्या किया जायगा? हाँ, नौशे का पैदल जाना जरा बदनामी की बात है।

मैनेजर — तो पैदल न जाइए। जिस तरह यहाँ के रईस लोग जाते हैं, उस तरह जाइए — आदमी की गोद में।

खोजी — मंजूर। मगर हमको उठा सकेगा कोई?

मैनेजर — हम इसका बंदोबस्त कर देंगे। आप घबराए नहीं।

दो घड़ी दिन रहे खोजी की बरात चली। तीन मजदूर आगे-आगे थालियाँ बजाते जाते हैं, दो लौंडे आगे पीछे साथ। खोजी एक मजदूर की गोद में, गेरुए कपड़े पहने, अकड़े बैठे हैं। एकाएक आप बोले — अरे रे रे रोक लो बरात। रोक लो। पंशाखेवाले कहाँ हैं? कोई बोलता ही नहीं। परदेश में भी इनसान पर क्या मुसीबत पड़ती है? अब मैं दूल्हा बन कर रहूँ, या इंतजाम करूँ! ये दोनों गीदी तो निरे जाँगलू ही निकले। फिर याद आया कि

निशान का हाथी तो है ही नहीं। अरे! करौली भी नहीं। हुक्म दिया कि लौटा दो बरात। चलो होटल में।

आज़ाद — यह क्यों भई? क्या बात है? लौटे क्यों जाते हो?

खोजी — निशान का हाथी तो है ही नहीं।

आज़ाद — अजब आदमी हो भई, आप लड़ने जाते हैं, या शादी करने? और फिर यहाँ हाथी कहाँ? कहिए तो खच्चर पर एक झंडी रखवा दें।

इतने में मिस मीडा आती हुई दिखाई दीं। खोजी उन्हें देखते ही और भी अकड़ गए। क्या कहूँ, मेरे साथ के आदमी सब गोली मार देने लायक हैं। कोई इंतजाम ही न किया।

मीडा — खैर, कल आ जाइएगा। मगर आप से एक बात कहनी है। यहाँ एक रूसी बहुत दिनों से मेरा आशिक है। पहले उससे लड़ो, फिर हमारे साथ शादी हो।

खोजी — मजाल है उसकी कि मेरे सामने खड़ा हो जाय? हम पचास आदमियों से अकेले लड़ सकते हैं। अब बरात होटल पहुँची, तो मीडा ने कहा — तो उनसे कब लड़िएगा?

खोजी — जब कहिए। खून पी जाऊँगा।

मीडा — अच्छा, कल तैयार रहिएगा।

दूसरे दिन मीडा ने एक तुर्की पहलवान को ला कर होटल में बिठा दिया और खोजी से बोली — लीजिए, आपका दुश्मन आ गया। खोजी ने जब उसे देखा, तो होश उड़ गए। दुनिया भर के आदमियों से दो मुट्ठी ऊँचा। दिल में सोचने लगे, यह तो कच्चा ही खा जायगा। एक चपत दे, तो हम जमीन में धँस जायँ। इससे लड़ेगा कौन भला? मारे डर के जरा पीछे हट गए। मीडा ने कहा — आप तो अभी से डरने लगे। खोजी एकाएक धड़ाम से गिर पड़े और चिल्लाने लगे — इस तरह का दर्द हो रहा है कि कुछ न पूछो। अफसोस, दिल की दिल ही में रह गई! वल्लाह, वह पटकनी देता कि कमर टूट जाती। मगर खुदा को मंजूर न था। तुर्की पहलवान ने इनका हाथ पकड़ कर एक झटका दिया, तो दस कदम पर जा गिरे। बोले — ओ गीदी, जरा बीमार हो गया हूँ, नहीं तो कच्चा ही खा जाता, नमक भी न माँगता।

आखिर इस बात पर फैसला हुआ कि जब खोजी अच्छे हो जायँ, तो फिर किसी दिन कुश्ती हो।

मियाँ शहसवार का दिल दुनिया से तो गिर गया था, मगर जोगिन की उठती जवानी देख कर धुन समाई कि इसको निकाह में लावें। उधर जोगिन ने ठान ली थी कि उम्र भर शादी न करूँगी। जिसके लिए जोगिन हुई, उसी की मुहब्बत का दम भरूँगी। एक दिन शहसवार ने जो सुना कि सिपहआरा कोठे पर से कूद पड़ी, तो दिल बेअख्तियार हो गया। चल खड़े हुए कि देखें, माजरा क्या है? रास्ते में एक मुंशी से मुलाकात हो गई। दोनों आदमी साथ-साथ बैठे; और साथ ही साथ उतरे। इत्तिफ़ाक़ से रेल से उतरते ही मुंशी जी को हैजा हो गया। देखते-देखते चल बसे। शहसवार ने जो देखा कि मुंशी के पास दौलत काफी है, तो फौरन उनके बेटे बन गए और सारा माल असबाब ले कर चंपत हो गए। सात हजार की अशर्फियाँ, दस हजार के नोट और कई सौ रुपए हाथ आए। रईस बन बैठे। फौरन जोगिन के पास लौट गए।

जोगिन — क्या गए नहीं?

शहसवार — आधी ही राह से लौट आए। मगर हम अमीर हो कर आए हैं।

जोगिन — अमीर कैसे! बोलो? हमको बनाते हो?

शहसवार — कसम खुदा की, हजारों ले कर आया हूँ। आँखें खुल जायँगी।

दुनिया के भी अजब कारखाने है। शहसवार को बाईस हजार तो नकद मिले और जब कपड़ों की गठरी खोली, तो एक टोपी निकल आई, जिसमें हीरे और मोती टँके हुए थे। जोगिन के आशिकों में एक जौहरी भी था। उसने यह टोपी बीस हजार में खरीद ली। जब जौहरी चला गया, तो शहसवार ने जोगिन से कहा — लो, अब तो अल्लाह मियाँ ने छप्पर फाड़ के दौलत दी। कहो, अब निकाह की ठहरती है? क्यों मुफ्त में जवानी खोती हो?

जोगिन — अब रंग लाई गिलहरी। 'ओछे के घर तीतर, बाहर रखूँ कि भीतर।' रुपए क्या मिल गए, अपने आपको भूल गए।

शहसवार सचमुच ओछा था। अब तक तो आप जोगिन की खुशामद करते थे, ढई दिए बैठे थे कि कभी न कभी तो दिल पसीजेगा; मगर अब जमीन पर पाँव ही नहीं रखते। बात-बात पर तिनकते हैं। जोगिन तो दुनिया से मुँह मोड़े बैठी थी, इनके चोंचले क्यों बर्दाश्त करती? शहसवार से नफरत करने लगी।

एक दिन शहसवार हवा के घोड़े पर सवार डींग मारने लगे — इस वक़्त हम भी लाख के पेटे में हैं। और लाख रुपए जिसके पास होते हैं, उनको लोग तीन-चार लाख का आदमी आँकते हैं।

अब दो घोड़े और लेंगे। मगर हम यह महाजनी कारखाना न रखेंगे कि चारजामा और जीनपोश। बस, अंगरेजी काठी और एक जोड़ी फिटन के लिए। जो देखे, कहे, रईस जाता है। और रईस के क्या दो सींग होते हैं सिर पर? एक कोठी भी बनवाएँगे। कोई ताल्लुकेदार अपना इलाका बेचे, तो खड़े-खड़े खरीद लें।

जोगिन — अच्छा, खाना तो खा लो।

शहसवार — आज खाना क्या पका है?

जोगिन — बेसन की रोटी।

शहसवार — यह तो रईसों का खाना नहीं।

जोगिन — रईस कौन है?

शहसवार — हम-तुम, दोनों। क्या अब भी रईस होने में शक है? हाँ, खूब याद आया, एक हाथी भी खरीदेंगे।

जोगिन — हाँ, बस इसी की कसर थी। दो तीन गधे भी खरीदना।

शहसवार — गधे तो रईसों के यहाँ नहीं देखे।

जोगिन — नई बात सूझी।

शहसवार — हाँ, खूब सूझी।

जोगिन — फिर, यह सब कब खरीदोगे?

शहसवार — जब चाहे! रुपए का तो सारा खेल है। तीस-चालीस हजार रुपए बहुत होते हैं। इनसान गिने, तो बरसों में गिनती खत्म हो।

जोगिन — अजी, दो-तीन आदमी तो इतने अर्से में मर जायँ, दस-पाँच की आँखें फूट जायँ।

उस दिन से शहसवार की हालत ही कुछ और हो गई। कभी रोते, कभी बहकी-बहकी बातें करते। आखिर जोगिन ने वहाँ से कहीं भाग जाने का इरादा किया। पड़ोस में एक आदमी रहता था, जो मोम के खिलौने खूब बनाता था। मोम के आदमी ऐसे बनाता कि असल का धोखा होता था। उसे बुला कर जोगिन ने उसके कान में कुछ कहा और कारीगर दस दिन की मुहलत ले कर रुखसत हुआ।

नौ दिन तक तो जोगिन ने किसी तरह काटे, दसवें दिन एकाएक शहसवार ने उसे देखा, तो चुपचाप पड़ी है। बुलाया; जवाब नदारद। करीब जा कर देखा तो पछाड़ खा कर गिर पड़े। लगे दीवार से सिर टकराने। जी में आया कि जहर खा लें और इसी के साथ चले चलें। क्या लुत्फ से दिन कटते थे, अब ये रुपए किस काम आवेंगे। जान जाने का रंज नहीं, मगर यह रुपया कहाँ

जाएगा? आखिर वसीयत लिखी कि मेरे बाद मेरी सारी जायदाद सिपहआरा को दी जाय। यह वसीयत लिख कर शहसवार ने सिर पीटना शुरू किया। खिलौना बनानेवाला कारीगर उसे समझाने लगा – सब्र कीजिए। हाय, क्या मिजाज था! यह कह कर वह अपने भाई को बुला लाया। दोनों ने लाश को खूब लपेट कर कंधे पर उठाया। मियाँ शहसवार पीछे-पीछे चले।

कारीगर – तुम क्यों आते हो? कब्रिस्तान बहुत दूर है।

शहसवार – कब्र तक तो चलने दो।

कारीगर – क्या गजब करते हो। थानेवालों को खबर हो गई तो मुफ्त में धरे जाओगे।

शहसवार – मिट्टी तो दे दूँ।

कारीगर – बस, अब साथ न आइए।

61

कैदखाने से छूटने के बाद मियाँ आज़ाद को रिसाले में एक ओहदा मिल गया। मगर अब मुश्किल यह पड़ी कि आज़ाद के पास रुपए न थे। दस हजार रुपए के बगैर तैयारी मुश्किल।

अजनबी आदमी, पराया मुल्क, इतने रुपयों का इंतजाम करना आसान न था। इस फिक्र में मियाँ आज़ाद कई दिन तक गोते खाते रहे। आखिर यही सोचा कि यहाँ कोई नौकरी कर लें और रुपए जमा हो जाने के बाद फौज में जायँ। मन मारे बैठे थे कि मीडा आकर कुर्सी पर बैठ गई। जिस तपाक के साथ आज़ाद रोज पेश आया करते थे, उसका आज पता न था! चकरा कर बोली – उदास क्यों हो! मैं तो तुम्हें मुबारकबाद देने आई थी। यह उल्टी बात कैसी?

आज़ाद – कुछ नहीं। उदास तो नहीं हूँ।

मीडा – जरा आईने में सूरत तो देखिए।

आज़ाद – हाँ मीडा, शायद कुछ उदास हूँ। मैंने तुमसे अपने दिल की कोई बात कभी नहीं छिपाई। मुझे ओहदा तो मिल गया, मगर यहाँ टका पास नहीं। कुछ समझ में नहीं आता क्या करूँ?

मीडा – बस, इसीलिए आप इतने उदास हैं! यह तो कोई बड़ी बात नहीं। तुम इसकी कोई फिक्र न करो।

यह कह कर मीडा चली गई और थोड़ी देर बाद उसके आदमी ने आकर एक लिफाफा आज़ाद के हाथ में रख दिए। आज़ाद ने लिफाफा खोला, तो उछल पड़े। इस्तंबोल-बैंक के नाम बीस हजार का चेक था। आज़ाद रुपए पा कर खुश तो हुए, मगर यह

अफसोस जरूर हुआ कि मीडा ने अपने दिल में न जाने क्या समझा होगा। उसी वक़्त बैंक गए, रुपए लिए और सब सामान ठीक करके दूसरे दिन फौज में दाखिल हो गए।

दोपहर के वक़्त घड़घड़ाहट की आवाज आई। खोजी ने सुना, तो बोले – यह आवाज कैसी है भई? हम समझ गए। भूचाल आने वाला है। इतने में किसी ने कहा – फौज जा रही है। खोजी कोठे पर चढ़ गए। देखा, फौज सामने आ रही है। यह घड़घड़ाहट तोपख़ाने की थी। जरा देर में आज़ाद पर नजर पड़ी। घोड़े की बाग उठाए, रान जमाए चले जाते थे। खोजी ने पुकारा – मियाँ आज़ाद! अरे मियाँ, इधर, उधर! वाह, सुनते ही नहीं। फौज में क्या हो गए, मिजाज ही नहीं मिलते। हम भी पलटन में रह चुके हैं, रिसालदार थे, पर यह न था कि किसी की बात न सुनें।

सारे शहर में एक मेला सा लगा हुआ था, कोठे फटे पड़ते थे। औरतें अपने शौहरों को लड़ाई पर जाते देखती थीं और उन पर फूलों की बौछार करती थीं। माँएँ अपने बेटों के लिए खुदा से दुआ कर रही थीं।

फौज तो मैदान को गई और मियाँ खोजी मिस मीडा से मिलने चले। मीडा की एक सहेली का नाम था मिस रोज। मीडा खोजी

को देखते ही बोली — लीजिए, मैंने आपकी शादी मिस रोजी से ठीक कर दी। अब कल बरात ले कर आइए।

खोजी — खुदा आपको इस नेकी का बदला दे। मैं तो वजीर-जंग को भी नवेद दूँगा।

मीडा — अजी, सुलतान को भी बुलाइए।

खोजी — तो फिर बंदोबस्त कीजिए। शादी के लिए नाच सबसे ज्यादा जरूरी हैं। अगर तबले पर थाप न पड़ी, महफिल न जमी, तो शादी ही क्या?

मीडा — मगर यहाँ तो आदमी का नाच मना है। कहीं कोई औरत नाचे, तो गजब हो ही जाय।

खोजी — अच्छा, फिर किसी सबील से नाच का नाम तो हो जाय।

मीडा — इसकी तदबीर यों कीजिए कि किसी बन्दर नचानेवाले को बुला लीजिए। खर्च भी कम और लुत्फ भी ज्यादा। तीन बन्दरवाले काफी होंगे।

खोजी — तीन तो मनहूस हैं। पाँच हो जायँ तो अच्छा!

खैर, दूसरे दिन खोजी बरात सजा कर मीडा के मकान की ओर चले। आगे निशान का खच्चर था, पीछे रीछ और बन्दर। दस

पाँच लड़के मशालें लिए खोजी के चारों तरफ चले जाते थे; और खोजी टट्टू पर सवार, गेरुए रंग की पोशाक पहने सियाह पगड़ी बाँधे, अकड़े बैठे थे। टट्टू इतना मरियल था कि खोजी बार-बार उछलते थे, एड़-पर-एड़ लगाते थे, मगर वह दो कदम आगे जाता था तो चार कदम पीछे। एकाएक टट्टू बैठ गया। इस पर लड़कों ने उसे डंडे मारना शुरू किया। खोजी बिगड़ कर बोले – ओ मसखरो, तुम सब हँसते क्या हो! जल्द कोई तदबीर बताओ, वर्ना मारे करौलियों के बौला दूँगा।

साईस – हुजूर, मैं इस घोड़े की आदत खूब जानता हूँ। यहि बगैर चाबुक खाए उठने वाला नहीं।

खोजी – तू मसलहत करता है कि किसी तदबीर से टट्टू को मनाता है?

साईस – आप उतर पड़िए।

खोजी – उतर पड़े तो साईस ने टट्टू को मार-मार कर उठाया। खोजी फिर सवार होने चले। एक पैर रकाब पर रख कर दूसरा उठाया ही था कि टट्टू चलने लगा। खोजी अरा-रा करके धम से जमीन पर आ रहे। पगड़ी यह गिरी, करौली वह गिरी। डिबिया एक तरफ, टट्टू एक तरफ। साईस ने कहा – उठिए, उठिए।

घोड़े से गिरना शहसवारों ही का काम है। जिसे घोड़ा नसीब नहीं, वह क्या गिरेगा?

खोजी — खैरियत यह हुई कि मैं घोड़े पर न गिरा, वर्ना मेरे बोझ से उसका काम ही तमाम हो जाता।

खोजी ने फिर सिर पर पगड़ी रखी, करौली कमर से लगाई और एक लड़के से पूछा — यहाँ आईना तो कहीं नहीं मिलेगा? फिर से पोशाक सजी है, जरा मुँह तो देख लेते।

लड़का — आईना तो नहीं है, कहिए पानी ले आऊँ। उसी में मुँह देख लीजिए। यह कह कर वह एक हाँड़ी में पानी लाया। खोजी पीनक में तो थे ही, हाँड़ी जो उठाई तो सारा पानी ऊपर आ रहा। बिगड़ कर हाँड़ी पटक दी। फिर आगे बढ़े। मगर दो-चार कदम चल कर याद आया कि मिस रोज का मकान तो मालूम ही नहीं; बरात जायगी कहाँ? बोले — यारो, गजब हो गया! जुलूस रोक लो। कोई मकान जानता है?

साईस — कौन मकान?

खोजी — वही जी जहाँ चलना है।

साईस — मुझे क्या मालूम? जिधर कहिए चलूँ।

खोजी — तुम लोग अजीब घामड़ हो। बरात चली और दुलहिन के घर का पता तक न पूछा।

साईस — नाम तो बताइए? किसी से पूछ लिया जाय।

खोजी — अरे भई, मुझे उनका नाम न लेना चाहिए। अटकल से चलो उसी तरफ।

साईस — अरे, कुछ नाम तो बताइए।

खोजी — कोहकाफ़ की परी कह दो। पूरा नाम हम न लेंगे।

एक तरफ कई आदमी बैठे हुए थे। साईस ने पूछा — यहाँ कोई परी रहती है?

एक आदमी ने कहा — मुझे और तो नहीं मालूम, मगर शहर-बाहर पूरब की तरफ जो एक तालाब है, वहाँ पार साल जो एक फकीर टिके थे, उनके पास एक परी थी।

खोजी — लो, चल न गया पता! उसी तालाब की तरफ चले चलो।

अब सुनिए। उस तालाब पर एक रईस की कोठी थी। उसकी बीवी मर गई थी। घर में मातम हो रहा था। दरवाजे पर जो यह शोर-गुल मचा, तो उसने अपने नौकरों से पूछा — यह कैसा

गुल है? बाहर निकल कर खूब पीटो बदमाशों को! दो-तीन आदमी डंडे ले-ले कर फाटक से निकले।

खोजी — वाह रे आप के यहाँ का इंतजाम! कब से बरात खड़ी, और दरवाजे पर रोशनी तक नदारद!

एक आदमी — तू कौन है बे? क्या रात को बन्दर नचाने आया है?

खोजी — जबान सँभाल। जा कर अपने मालिक से कह, बरात आ गई है।

आदमियों ने बरात को पीटना शुरू किया। खोजी पर एक चपत पड़ी, तो पगड़ी गिर पड़ी। दूसरे ने टट्टू पर डंडे जमाए।

खोजी — भई, ऐसी दिल्लगी न करो। कुछ कमबख्ती तो नहीं आई तुम सबकी?

बन्दर वालों पर जब मार पड़ी तो वे सब भागे। लड़के भी चिराग फेंक फाँक कर भागे। टट्टू ने भी एक तरफ की राह ली। बेचारे खोजी अकेले पिट-पिटा कर होटल की तरफ चले।

जोगिन शहसवार से जान बचा कर भागी, तो रास्ते में एक वकील साहब मिले। उसे अकेले देखा, तो छेड़ने की सूझी। बोले — हुजूर को आदाब। आप इस अँधेरी रात में अकेले कहाँ जाती हैं?

जोगिन — हमें न छेड़िए।

वकील — शाहज़ादी हो? नवाबजादी हो? आखिर हो कौन?

जोगिन — गरीबज़ादी हूँ।

वकील — लेकिन आवारा।

जोगिन — जैसा आप समझिए।

वकील — मुझे डर लगता है कि तुम्हें अकेला पा कर कोई दिक न करे। मेरा मकान करीब है, वहीं चल कर आराम से रहो।

जोगिन — मुझे आपके साथ जाने में कोई उज्र नहीं; मगर शर्त यही है कि मेरी इज्जत के खिलाफ कोई बात न हो।

वकील — यह आप क्या फरमाती हैं? मैं शरीफ आदमी हूँ।

वकील साहब देखने में तो शरीफ मालूम होते थे, मगर दिल के बड़े खोटे थे। जोगिन ने समझा कि इस वक़्त और कहीं जाना तो मुनासिब नहीं। रात को यहीं रह जाऊँ, तो क्या हरज? वकील साहब के घर गई तो देखा, एक कमरे में टाट पर दरी बिछी है,

और एक टूटी मेज पर कलम-दावात रखी है। समझ गई, यह कोई टुटपुँजिए वकील है।

रात ज्यादा आ गई थी। जब जोगिन सोई, तो वकील साहब ने अपने नौकर सलारबख्श को यों पट्टी पढ़ाई — तुम सुबह इनसे कहना कि वकील साहब बहुत बड़े रईस हैं। इनके बाप चकलेदार थे। इनके यहाँ दो बग्घियाँ हैं और आदमियों की तनख्वाह महीने में तीन सौ रुपए देते हैं।

सलारबख्श — भला वह यह न कहेंगी कि रईस हैं, तो फटेहालों क्यों रहते हैं? एक तो खटिया आपके पास, और उस पर ये बातें कि हम ऐसे और हम वैसे। हाँ, मैं इतना कह दूँगा कि हमारे हुजूर दिल के बड़े वह हैं।

वकील — वह के क्या माने?

सलारबख्श — अजी, चालाक हैं।

वकील — आज खाना दिल लगा कर पकाना।

सलारबख्श — तो किसी बावरची को बुला लीजिए न! दो रुपए खरचिए, तो अच्छे से अच्छे खाने पकवा दूँ। और इनके लिए कोई मामा रखिए। बे इसके बात न बनेगी। हाँ, चाहे मार डालिए, हमें, हम झूठ न बोलेंगे कभी।

वकील — देखो, सब फिक्र हो जायगी।

सलारबख्श — फिक्र क्या खाक होगी? मुकदमेवाले तो आते ही नहीं।

वकील — अजी, एक मुकदमे में उम्र भर की कसर निकल जायगी।

सलारबख्श — तो क्या मिलेगा एक मुकदमे में!

वकील — अजी, मिलने की न कहो! मिलें, तो दो लाख मिल जायँ।

सलारबख्श — ऐं, इतना झूठ! मियाँ, मैं नौकरी नहीं करने का। देखिए, छत न गिर पड़े कहीं! लोग कहते हैं, काल पड़ता है, हैजा आता है, मेंह नहीं बरसता। बरसे क्या खाक, इस झूठ को तो देखिए, कुछ ठिकाना है, दो लाख एक मुकदमे में आप पाएँगे! कभी बाबा राज ने भी दो लाख की सूरत देखी थी? हमने तो आपके बाबा को भी जूतियाँ चटकाते ही देखा। वह तो कहिए, फकीर की दुआ से रोटियाँ चली जाती हैं। यही गनीमत समझो?

वकील — तुम बड़े गुस्ताख हो!

सलारबख्श — में तो खरी-खरी कहता हूँ।

वकील — खैर, कल एक काम तो करना! जरा दो-एक आदमियों को लगा लाना।

सलारबख्श — क्या करना?

वकील — दो आदमियों को मुवक्किल बना कर ले आना, जिसमें यह समझें कि इनके पास मुकदमे बहुत आते हैं। हम तो रंग जमाते हैं न अपना। यह बात! समझे!

सलारबख्श — अगर दो-एक को फाँस-फूँस कर लाए भी, तो फायदा क्या? टका तो वसूल न होगा।

वकील — वह समझेंगी तो कि यह बहुत बड़े वकील हैं।

सलारबख्श — अच्छा, इस वक़्त तो सोइए। सुबह देखी जायगी।

दोनों आदमी सोए। सबसे पहले जोगिन की आँख खुली। सलारबख्श से बोली — क्यों जी, इनका नाम क्या है?

सलारबख्श — इनका नाम है हींगन।

जोगिन — क्या? हींगन? तब तो शरीफ जरूर होंगे। और इनके बाप का नाम क्या है? बैंगन!

सलारबख्श — बाप का नाम मदारी।

जोगिन — वाह, बस, मालूम हो गया। और पेशा क्या है?

सलारबख्श — दलाली करते हैं।

जोगिन — ऐं, यह दलाल हैं?

सलारबख्श — जी, और क्या! बाप-दादे के वक़्त से दलाली होती आती है।

वकील साहब लेटे-लेटे सुन रहे थे और दिल ही दिल में सलारबख्श को गालियाँ दे रहे थे कि पाजी ने जमा-जमाया रंग फीका कर दिया। इतने में बारह की तोप दगी और वकील साहब उठ बैठे।

वकील — पानी लाओ। आज वह दूसरा खिदमतगार कहाँ है?

सलारबख्श — हुजूर, चिट्ठी ले गया है।

वकील — और मामा नहीं आई?

सलारबख्श — रात उसके लड़का हुआ है।

वकील — और कालेखाँ कहाँ मर गया आज!

सलारबख्श — लालखाँ के पास गया है हुजूर!

वकील — और हमार मुहर्रिर?

सलारबख्श — उन्हें नवाब साहब ने बुलवा भेजा है।

वकील — सब मुवक्किल कहाँ हैं?

सलारबख्श — हुजूर सब वापस चले गए।

वकील — कुछ परवा नहीं। हमको मुकदमों की क्या परवा!

सलारबख्श — हुजूर के घर की रियासत क्या कम है!

वकील — (जोगिन से) आज तो आप खूब सोईं।

जोगिन — मारे सर्दी के रात भर काँपती रही। कसम ले लो, जो आँख भी झपकी हो। यह तो बताइए, आपका नाम क्या है!

वकील — हमारा नाम मौलवी मिर्जा मुहम्मद सादिकअली बेग, वकील अदालत।

जोगिन — 'घर की पुटकी बासी साग।'

वकील — ऐ, और सुनिए।

जोगिन — तुम्हारा नाम हींगन है? और बैंगन के लड़के हो? दलाली करते हो?

वकील — हींगन किस पाजी का नाम है?

सलारबख्श — इनसे किसी ने हींगन कह दिया होगा।

वकील — तेरे सिवा और कौन कहने बैठा होगा?

सलारबख्श — तो क्या मैं ही अकेला आपका नौकर हूँ कुछ? पंद्रह-बीस आदमी हैं। किसी ने कह दिया होगा! इसको हम क्या करें ले भला?

वकील — ऊपर से हँसता है बेगैरत! (जोगिन से) हमसे एक फकीर ने कहा है कि तुम जल्द बादशाह होने वाले हो।

जोगिन — हाँ, फिर उल्लू तुम्हारे सिर पर बैठा ही चाहता है। दो ही तरह से गरीब आदमी बादशाह हो सकता है — या तो टाँग टूट जाय, या उल्लू सिर पर बैठे। अच्छा, आपकी आमदनी क्या होगी?

वकील — यह न पूछो। कुछ रुपया गाँव से आता है, कुछ वसीका है, कुछ वकालत से पैदा करते हैं।

जोगिन — और सवारी क्या है आपके पास?

वकील — आजकल तो बस, एक पालकी है और दो घोड़े।

जोगिन — बँधते कहाँ हैं?

सलारबख्श — इधर एक अस्तबल है, और उसके पास ही फीलखाना।

जोगिन — ऐं, क्या आपके पास हाथी भी है?

वकील — नहीं जी कहने दो इसे। यह यों ही कहा करता है।

जोगिन — अच्छा, वकालत में क्या मिलता होगा?

वकील — अब तो आजकल मुकदमें ही कम हैं।

जोगिन — तो भी भला?

सलारबख्श — इसकी न पूछिए, किसी महीने में दो-चार हाथी आ गए, किसी महीने दस-पाँच ऊँट मिल गए।

वकील — तू उठ जा यहाँ से। हजार बार कह दिया कि मसखरेपन से हमको नफरत है; मगर मानता ही नहीं शैतान! तुझसे कुछ कहा था हमने!

सलारबख्श — हाँ, हाँ, याद आ गया। लीजिए अभी जाता हूँ।

वकील साहब सलारबख्श के साथ बरामदे में आए कि कुछ और समझा दें, तो सलारबख्श ने कहा — अभी सबों को फाँसे लाता हूँ। आप इत्मीनान से बैठें। मगर यह भी बैठी रहें, जिसमें लोग समझें कि वकील की बड़ी आमदनी है। मैं कह दूँगा कि गाना सुनने के लिए नौकर रखा है। सौ रुपए महीना देते हैं।

वकील — सौ नहीं दो सौ कहना!

सलारबख्श — वही बात कहिएगा, जो बेतुकी हो। भला किसी को भी दुनिया में यकीन आवेगा कि यह वकील दो सौ रुपए खर्च कर सकता है?

वकील — क्यों,क्यों?

सलारबख्श — अब आप तो हिंदी की चिंदी निकालते हैं। धेले-धेले पर तो आप मुकदमे लेते हैं; दो सौ की रकम भला आप क्या खर्च करेंगे?

वकील — अच्छा, बक न बहुत। जा, फाँस ला दो-चार को।

सलारबख्श बाहर जा कर दो-चार अड़ोसियों-पड़ोसियों को सिखा पढ़ा कर मूँछों पर ताव देते हुए आया और हुक्का भर का जोगिन के सामने पेश किया!

जोगिन — क्या कक्कड़वाले की दुकान से लाए हो? हटा ले जाओ इसे! तुम्हें मदरिया भी नहीं जुरता?

वकील — अरे, तू यह हुक्का कहाँ से उठा लाया? वह हुक्का कहाँ है, जो नसीरुद्दीन हैदर के पीने का था? वह गंगा-जमनी गुड़गुड़ी कहाँ है, जो हमारे साले ने भेजी थी।

सलारबख्श — वह हुजूर के बहनोई ले गए।

वकील — तो आखिर, पेचवान और चाँदी का हुक्का क्यों नहीं निकालते? यह भदेसल हुक्का उठा लाए वहाँ से।

सलारबख्श — खुदावंद, वह बस तो बन्द हैं।

जोगिन — आखिर यह सब समान बन्द कहाँ है? जरी सा तो मकान आपका, मुर्गी के टापे के बरब्बर। वह किन कोठों में बन्द है सबका सब?

इतने में एक मुकदमेवाला आया। एक हाथ में झाड़ू, दूसरे में पंजा। आते ही झाड़ू कोने में खड़ी कर दी और पंजा टेक कर बैठ गया। वकील साहब सिर से पैर तक फुँक गए। पूछा — तुम कौन? उसने कहा — हम भंगी हैं साहब! जोगिन मुसकराई। वकील ने सलारबख्श की तरफ देखा। सलारबख्श सिर खुजलाने लगा।

वकील — क्या चाहता है?

भंगी — हुजूर, मेरी टट्टी का एक बाँस कोई निकाल ले गया। हुजूर को वकील करने आया हूँ। गुलाम हूँ खुदावंद।

वकील — कोई है, निकाल दो इस पाजी को।

सलारबख्श — खुदावंद, अमीरों का मुकदमा तो आप लें, और गरीबों का कौन ले? वकील तो दर्जी की सुई है, कभी रेशम में, कभी लट्ठे में!

वकील — गरीबों का मुकदमा गरीब वकील ले।

सलारबख्श — अब तो हुजूर, इसकी फरियाद सुन ही लें। अच्छा मेहतर, बताओ क्या दोगे?

मेहतर — हमारे पास तो दो मट्टू-साही हैं।

वकील — (झल्ला कर) निकालो, निकालो इस कमबख्त को!

वकील साहब ने गुस्से में मेहतर की झाड़ू उठा ली और उस पर खूब हाथ साफ किया। वह झाड़ू-पंजा छोड़ कर भागा।

जोगिन — अच्छा, आप अब अलग ही रहिएगा। जा कर गुस्ल कीजिए।

वकील — आज तो बड़ी सर्दी है।

जोगिन — अल्लाह जानता है, गुस्ल करो, नहीं तो छुएँगे नहीं।

सलारबख्श — हाँ, सच तो कहती हैं।

वकील — तू चुप रह।

जोगिन ने सलारबख्श को हुक्म दिया कि तुम पानी भरो। सलारबख्श पानी भर लाए। वकील साहब ने रोते-रोते कपड़े उतारे, लुँगी बाँधी और बैठे। जैसे बदन पर पानी पड़ा, आप गुल मचा कर भागे। सलारबख्श चमड़े का डोल लिए हुए पीछे दौड़ा। फिर पानी पड़ा, फिर रोए। जोगिन मारे हँसी के लोट-लोट गई। बारे किसी तरह आपका गुस्ल पूरा हुआ। थर-थर काँप रहे

थे। मुँह से बात न निकलती थी। उस पर सलारबख्श ने पंखा झलना शुरू किया, तब तो और भी झल्लाए और कस कर उसे दो-तीन लातें लगाईं। सलारू भाग खड़े हुए।

जोगिन — अब यह दरी तो उठवाओ।

वकील — क्यों, दरी ने क्या कसूर किया?

सलारबख्श — हुजूर, भंगी तो इसी पर बैठा था।

वकील — अरे, तू फिर बोला! कसम खुदा की, मारते-मारते उधेड़ कर रख दूँगा।

जोगिन — सलारबख्श, वह चाँदनी उठा ले जाओ।

दरी उठी, तो कलई खुल गई। नीचे एक फटा-पुराना टाट पड़ा थ, बाबा आदम के वक़्त का। वकील कट गए। जोगिन ने कहा — ले, अब इस पर कोई फर्श बिछवाओ।

वकील — वह बड़ी दरी लाओ, जो छकड़े पर लद कर आई थी।

सलारबख्श — वह! उसको तो एक लौंडा चुरा ले गया।

जोगिन — खुदा की पनाह, छकड़े पर लद कर तो मुई दरी आई, और जरा सा लौंडा चुरा ले गया!

वकील- अच्छा, वह न सही, जाओ, और जो कुछ मिले उठा लाओ।

यह कह कर वकील साहब तो बरामदे में चले गए और सलारबख्श जा कर अपना कंबल और एक दस्तरख़्वान उठा लाया। वकील कमरे में आए, तो देखा कि दस्तरख़्वान बिछा हुआ है और जोगिन खिलखिला कर हँस रही है। सलारबख्श एक कोठरी में छिप रहा था। वकील ने झल्ला कर डंडा निकाला और कोठरी में घुस कर उसे दो-तीन डंडे लगाए। फिर डाँट कर कहा – आखिर जो तू मेरा नमक खाता है, तो मेरा रंग क्यों फीका करता है? मैं एक कहूँ तो दो कहा कर। खैरख्वाही के माने यह हैं। सिखला दिया, समझा दिया; मगर तू हिंदी की चिंदी निकालता है।

सलारबख्श – अच्छा, हुजूर जैसा कहते हैं, वही करूँगा। और भी जो कुछ समझाना हो, समझा दीजिए। फिर मैं नहीं जानता।

वकील – अच्छा, हम जाते हैं, तू आकर कहना कि कसूर माफ कीजिए। और रोना खूब।

वकील साहब यह हिदायत करके चले गए और जोगिन से बातें करने लगे। इतने में सलारबख्श रोता हुआ आया। जोगिन धक से रह गई। सलारू थोड़ी देर तक खूब रोए, फिर वकील के कदमों पर गिर कर कहा – हुजूर, मेरा कसूर माफ करें।

वकील – अबे, तो कोई इस तरह रोता है?

जोगिन — मैं तो समझी कि आपके अजीजों में से कोई चल बसा।

इतने में वकील साहब के नाम एक खत आया। जोगिन ने पूछा — किसका खत है?

वकील — साहब के पास से आया है।

जोगिन — कौन साहब? कोई अंगरेज हैं?

वकील — हाँ, जिले के हाकिम हैं। हमसे याराना है।

सलारबख्श — आपसे न! और उनसे भी तो याराना है, जिन्होंने जुर्माना ठोंक दिया था?

वकील — साहब ने हमें बुलाया है।

जोगिन — तो शायद आज तुम्हारी दावत वहीं है? तभी आज खाना-वाना नहीं पक रहा है। दोपहर होने को आई, और अभी तक चूल्हा नहीं जला।

वकील — अरे सलारू, खाना क्यों नहीं पकाता?

सलारबख्श — बाजार बन्द है।

जोगिन — आग लगे तेरे मसखरेपन को! यहाँ आँतें कूँ-काँ कर रही हैं, और तुझे दिल्लगी सूझती है!

वकील ने बाहर जा कर सलारू से कहा — बनिये से आटा क्यों नहीं लाता?

सलारबख्श — हुजूर, कोई दे भी! कोई दस बरस से तो हिसाब नहीं हुआ। बाजार में निकलता हूँ, तो चारों तरफ से तकाजे होने लगते हैं।

वकील — अबे, इस वक़्त तो किसी बहाने से माँग ला। आखिर कभी-न-कभी मुकदमे आवेंगे ही। हमेशा यों ही सन्नाटा थोड़े ही रहेगा?

खैर, सलारबख्श ने खाना पकाया, और कोई चार बजे आठ मोटी-मोटी रोटियाँ, एक प्याली में माश की दाल और दूसरे में आध पाव गोश्त रख कर लाया!

वकील — अबे, आज पुलाव नहीं पका?

सलारबख्श — हुजूर, बिल्ली खा गई।

वकील — और गोश्त भी एक ही तरह का पकाया?

सलारबख्श — हुजूर मैं पानी भरने चला गया, तो कुत्ता चख गया।

जोगिन — यहाँ की बिल्ली और कुत्ते बड़े लागू हैं।

सलारबख्श — कुछ न पूछिए।

इतने में किसी ने दरवाजे पर हाथ मारा।

सलारबख्श — कौन साहब हैं?

वकील — देखो, मामू साहब न हों। कह देना, घर में नहीं हैं।

सलारबख्श — हुजूर, वह है मम्मन तेली।

वकील — कह दो, हम तेल-वेल न लेंगे। रात को हमारे यहाँ मोमबत्तियाँ जलती हैं, और खाने में तेल आता नहीं। फिर तेली का यहाँ क्या काम?

सलारबख्श — मुकदमा लाया है हुजूर!

तेली मैले-कुचैले कपड़े पहने हाथ में कुप्पी लिए आकर बैठ गया।

वकील — क्या माँगता है?

तेली — एक आदमी ने हम पर नालिश कर दी है हुजूर! अब आप ही बचावें तो बच सकता हूँ।

वकील — मेहनताना क्या दोगे?

सलारबख्श — हाय,हाय, पहले इसकी फरियाद तो सुनो कि वह कहता क्या है! बस, मुर्दा दोजख में जाय चाहे बिहिश्त में, आपको अपने हलवे-माँडे से काम। बताओ भई, क्या दोगे?

तेली — एक पली तेल।

वकील — निकाल दो इसे, निकाल दो!

तेली — अच्छा साहब, तीन पली ले लोक।

सलारबख्श — अच्छा, आधी कुप्पी तेल दे दो। बस, इतना कहना मानो।

वकील — हैं-हैं, क्यों शरह बिगाड़ते हो? तुम जाओ जी!

सलारबख्श — पहले देखिए तो! राजी भी होता है?

तेली आधी कुप्पी तेल देने पर राजी न हुआ और चला गया? थोड़ी देर के बाद सलारबख्श ने दबी जबान कहा — हुजूर शाम को क्या पकेगा?

वकील — अबे, शाम तो हो गई। अब क्या पकेगा?

सलारबख्श — खुदावंद, इस तरह तो मैं टें हो जाऊँगा। आप न खायँ, हमारे वास्ते तो बतला दीजिए।

वकील — अपने वास्ते छिछड़े ले आ जा कर।

सलारबख्श — (आहिस्ता से) वे भी बचने जो पावें आपसे।

जोगिन को हँसी आ गई। वकील ने कहा — मेरी बात पर हँसती होगी? मैं ऐसी ही कहता हूँ। इस पर जोगिन को और भी हँसी आई।

वकील — अल्लाह री शोखी -

खूब रू जितने हैं दिल लेती है सबकी शोखी;
है मगर आपकी शोखी तो गजब की शोखी!

रात को जोगिन ने अपने पास से पैसे दे कर बाजार से खाना मँगवाया, और खा कर सोई। सुबह को वकील साहब की नींद खुली, तो देखा, जोगिन का कहीं पता नहीं। घर भर में छान मारा। हाथ-पाँव फूल गए। बोले — सलारू गजब हो गया! हमारी किस्मत फूट गई।

सलारबख्श — फूट गई खुदावंद, आपकी किस्मत फूट गई।

वकील — फिर अब?

सलारबख्श — क्या अर्ज करूँ हुजूर!

वकील — घर भर में तो देख चुके न तुम?

सलारबख्श — हाँ और तो सब देख चुका, अब एक परनाला बाकी है, वहाँ आप झाँक लें।

जमाना भी गिरगिट की तरह रंग बदलता है। वही अलारक्खी जो इधर-उधर ठोकरें खाती-फिरती थी, जो जोगिन बनी हुई एक गाँव में पड़ी थी, आज सुरैया बेगम बनी हुई सरकस के तमाशे में बड़े ठाट से बैठी हुई है। यह सब रुपए का खेल है।

सुरैया बेगम — क्यों महरी, रोशनी काहे की है? न लैंप, न झाड़, न कँवल और सारा खेमा जगमगा रहा है।

महरी — हुजूर, अक्ल काम नहीं करती, जादू का खेल है। बस, दो अंगारे जला दिए और दुनिया भर जगमगाने लगी।

सुरैया बेगम — दारोगा कहाँ हैं? किसी से पूछें तो कि रोशनी काहे की है?

महरी — हुजूर, वह तो चल गए।

सुरैया बेगम — क्या बाजा है, वाह-वाह!

महरी — हुजूर, गोरे बजा रहे हैं।

सुरैया बेगम — जरा घोड़ों को तो देखो, एक से एक बढ़-चढ़ कर हैं। घोड़े क्या, देव हैं। कितना चौड़ा माथा है और जरा सी

थुँथनी! कितनी थोड़ी सी जमीन में चक्कर देते हैं! वल्लाह, अक्ल दंग है!

महरी — बेगम साहब, कमाल है।

सुरैया बेगम — इन मेमों का जिगर तो देखो, अच्छे-अच्छे शहसवारों को मात करती हैं।

महरी — सच है हुजूर, यह सब जादू के खेल हैं।

सुरैया बेगम — मगर जादूगर भी पक्के हैं।

महरी — ऐसे जादूगरों से खुदा समझे।

इस पर एक औरत जो तमाशा देखने आई थी, चिढ़ कर बोली — ऐ वाह, यह बेचारे तो हम सबका दिल खुश करें, और आप कोसें! आखिर उनका कुसूर क्या है; यही न कि तमाशा दिखाते हैं?

महरी — यह तमाशे वाले तुम्हारे कौन हैं?

औरत — तुम्हारे कोई होंगे।

महरी — फिर तुम चिटकीं तो क्यों चिटकीं?

औरत — बहन, किसी को पीठ-पीछे बुरा न कहना चाहिए।

महरी — ऐ, तो तुम बीच में बोलने वाली कौन हो?

औरत — तुम सब तो जैसे लड़ने आई हो। बात की, और मुँह नोच लिया।

सुरैया बेगम के साथ महरी के सिवा और भी कई लौंडियाँ थी, उनमें एक का नाम अब्बासी था। वह निहायत हसीना और बला की शोख थी। उन सबों ने मिल कर इस औरत को बनाना शुरू किया -

महरी — गाँव की मालूम होती हैं!

अब्बासी — गँवारिन तो हैं ही, यह भी कहीं छिपा रहता है?

सुरैया बेगम — अच्छा, अब बस, अपनी जबान बन्द करो। इतनी मेमें बैठी हैं, किसी की जबान तक न हिली। और हम आपस में कटी मरती हैं।

इतने में सामने एक जीबरा लाया गया। सुरैया बेगम ने कहा — यह कौन जानवर है? किसी मुल्क का गधा तो नहीं है? चूँ तक नहीं करता। कान दबा दौड़ा जाता है।

अब्बासी — हुजूर, बिलकुल बस में कर लिया।

महरी — इन फिरंगियों की जो बात है, अनोखी, जरा इस मेम को तो देखिए, अच्छे-अच्छे शहसवारों के कान काटे।

सवार लेडी ने घोड़े पर ऐसे-ऐसे करतब दिखाए कि चारों तरफ तालियाँ पड़ने लगीं। सुरैया बेगम ने भी खूब तालियाँ बजाई। जनाने दरजे के पास ही दूसरे दरजे में कुछ और लोग बैठे थे। बेगम साहब को तालियाँ बजाते सुना तो एक रंगीले शेख जी बोले — कोई माशूक है इस परदए जंगारी में।

मिर्जा साहब — रंगों में शोखी कूट-कूट कर भरी है।

पंडित जी — शौकीन मालूम होती हैं।

शेख जी — वल्लाह, अब तमाशा देखने को जी नहीं चाहता।

मिर्जा साहब — एक सूरत नजर आई।

पंडित जी — तुम बड़े खुशनसीब हो।

ये लोग तो यो चहक रहे थे। इधर सरकस में एक बड़ा कठघरा लाया गया, जिसमें तीन शेर बन्द थे। शेरों के आते ही चारों तरफ सन्नाटा छा गया। अब्बासी बोली — देखिए हुजूर, वह शेर जो बीच वाले कठघरों में बन्द है, वही सबसे बड़ा है।

महरी — और गुस्सेवर भी सबसे ज्यादा। मालूम होता है कि आदमी का सिर निगल जाएगा।

सुरैया बेगम — कहीं कठघरा तोड़ कर निकल भागें तो सबको खा जायँ।

महरी — नहीं हुजूर, सधे हुए हैं। देखिए, वह आदमी एक शेर का कान पकड़ कर किस तौर पर उसे उठाता-बैठाता है। देखिए-देखिए हजूर, उस आदमी ने एक शेर को लिटा दिया और किस तरह पाँव से उसे रौंद रहा है।

अब्बासी — शेर क्या है, बिलकुल बिल्ली है। देखिए, अब शेर से उस आदमी की कुश्ती हो रही है। कभी शेर आदमी को पछाड़ता है, कभी आदमी शेर के सीने पर सवार होता है।

यह तमाशा कोई आध घंटे तक होता रहा। इसके बाद बीच में एक बड़ी मेज बिछाई गई और उस पर बड़े-बड़े गोश्त के टुकड़े रखे गए। एक आदमी ने सींख पर एक टुकड़े में छेद दिया और गोश्त को कठघरे में डाला। गोश्त का पहुँचना था कि शेर उसके ऊपर ऐसा लपका जैसे किसी जिंदा जानवर पर शिकार करने के लिए लपकता है। गोश्त को मुँह में दबा कर बार-बार डकारता था और जमीन पर पटक देता था। जब डकारता, मकान गूँज जाता और सुनने वालों के रोंगटे खड़े हो जाते। बेगम ने घबरा कर कहा — मालूम होता है, शेर कठघरे से निकल भागा है। कहाँ हैं दारोगा जी, जरा उनको बुलाना तो!

बेगम साहब तो यहाँ मारे डर के चीख रही थीं और उनसे थोड़ी ही दूर पर वकील साहब और मियाँ सलारबख्श में तकरार हो रही थी -

वकील — रुक क्यों गया बे? बाहर क्यों नहीं चलता?

सलारबख्श — तो आप ही आगे बढ़ जाइए न!

वकील — तो अकेले हम कैसे जा सकते हैं?

सलारबख्श — यह क्यों? क्या भेड़िया खा जायगा? या पीठ पर लाद कर उठा ले जायगा, ऐसे दुबले पतले भी तो आप नहीं हैं। बैठिए तो काँख दें।

वकील — बगैर नौकर के जाना हमारी शान के खिलाफ हे।

सलारबख्श — तो आपका नौकर कौन है? हम तो इस वक़्त मालिक मालूम होते हैं?

वकील — अच्छा, बाहर निकल कर इसका जवाब दूँगा; देख तो सही!

सलारबख्श — अजी, जाओ भी; जब यहाँ ही जवाब न दिया तो बाहर क्या बनाओगे? अब चुपके ही रहिए। नाहक-बिन-नाहक को बात बढ़ेगी।

वकील — बस, हम इन्हीं बातों से तो खुश होते हैं।

सलारबख्श — खुदा सलामत रखे हुजूर को। आपकी बदौलत हम भी दो गाल हँस-बोल लेते हैं।

वकील — यार, किसी तरह इस सुरैया बेगम का पता तो लगाओ कि यह कौन है। शिब्बोजान तो चकमा देकर चली गई; शायद यही निकाह पर राजी हो जायँ!

सलारबख्श — जरूर! और खूबसूरत भी आप ऐसे ही हैं।

सुरैया बेगम चुपके-चुपके ये बातें सुनती और दिल ही दिल में हँसती जाती थी। इतने में एक खूबसूरत जवान नजर पड़ा। हाथ-पाँव साँचे के ढले हुए, मसें भीगती हुई, मियाँ आज़ाद से सूरत बिलकुल मिलती थी। सुरैया बेगम की आँखों में आँसू भर आए। अब्बासी से कहा — जरी, दारोगा साहब को बुलाओ। अब्बासी ने बाहर आकर देखा तो दारोगा साहब हुक्का पी रहे हैं। कहा — चलिए, नादिरी हुक्म है कि अभी-अभी बुला लाओ।

दारोगा — अच्छा-अच्छा। चलते हैं। ऐसी भी क्या जल्दी है! जरा हुक्का तो पी लेने दो।

अब्बासी — अच्छा, न चलिए, फिर हमको उलाहना न दीजिएगा। हम जताए जाते हैं।

दारोगा — (हुक्का पटक कर) चलो साहब, चलो। अच्छी नौकरी है, दिन-रात गुलामी करो तब भी चैन नहीं। यह महीना खत्म हो ले तो हम अपने घर की राह लें।

दारोगा साहब जब सुरैया बेगम के पास पहुँचे तो उन्होंने आहिस्ता से कहा — वह जो कुर्सी पर एक जवान काले कपड़े पहन कर बैठा हुआ है, उसका नाम जा कर दर्याफ्त करो। मगर आदमियत से पूछना।

दारोगा — या खुदा, हुजूर बड़ी कड़ी नौकरी बोलीं। गुलाम को ये सब बातें याद क्यों कर रहेगी। जैसा हुक्म हो।

अब्बासी — ऐ, तो बातें कौन ऐसी लंबी-चौड़ी हैं जो याद न रहेंगी?

दारोगा — अरे भाई, हममें-तुममें फर्क भी तो है! तुम अभी सत्रह-अठारह वर्ष की हो और यहाँ बिलकुल सफेद हो गए हैं। खैर, हुजूर, जाता हूँ।

दारोगा साहब ने जवान के पास जा कर पूछा तो मालूम हुआ कि उनका नाम मियाँ आज़ाद है। बेगम साहब ने आज़ाद का नाम सुना तो मारे खुशी के आँखों में आँसू भर गए। दारोगा को हुक्म दिया, जा कर पूछ आओ, अलारक्खी को भी आप जानते हैं? आज नमक का हक अदा करो। किसी तरकीब से इनको मकान तक लाओ।

दारोगा साहब समझ गए कि इस जवान पर बीबी का दिल आ गया। अब खुदा ही खैर करे। अगर अलारक्खी का जिक्र छेड़ा और ये बिगड़ गए तो बड़ी किरकिरी होगी। और अगर न जाऊँ तो तह निकाल बाहर करेंगी। चले, पर हर कदम पर सोचते जाते थे कि न जाने क्या आफत आए। जा कर जवान के पास एक कुर्सी पर बैठ गए और बोले – एक अर्ज है हुजूर, मगर शर्त यह है कि आप खफा न हों। सवाल के जवाब में सिर्फ 'हाँ' या 'नहीं' कह दें।

जवान – बहुत खूब! 'हाँ' कहूँगा या 'नहीं'।

दारोगा – हुजूर का गुलाम हूँ।

जवान – अजी, आप इतना इसरार क्यों करते हैं, आपको जो कुछ कहना हो कहिए। मैं बुरा न मानूँगा।

दारोगा एक बेगम साहब पूछती हैं कि हुजूर अलारक्खी के नाम से वाकिफ हैं?

जवान – बस, इतनी ही बात! अलारक्खी को मैं खूब जानता हूँ। मगर यह किसने पूछा है?

दारोगा – कल सुबह को आप जहाँ कहें, वहाँ आ जाऊँ। सब बातें तय हो जायँगी।

जवान — हजरत, कल तक की खबर न लीजिए, वरना आज रात को मुझे नींद न आएगी।

दारोगा ने जा कर बेगम साहब से कहा — हुजूर वह तो इसी वक़्त आने को कहते हैं। क्या कह दूँ! बेगम बोलीं — कह दो, जरूर साथ चलें।

उसी जगह एक नवाब अपने मुसाहबों के साथ बैठे तमाशा देख रहे थे नवाब ने फरमाया — क्यों मियाँ नत्थू, यह क्या बात निकाली है कि जिस जानवर को देखो, बस में आ गया। अक्ल काम नहीं करती।

नत्थू — खुदावंद, बस बात सारी यह है कि ये लोग अक्ल के पुतले हैं। दुनिया के परदे पर कोई ऐसी चीज नहीं जिसका इल्म इनके यहाँ न हो। चिड़िया का इल्म इनके यहाँ, हल चलाने का इल्म इनके यहाँ, गाने-बजाने का इल्म इनके यहाँ। कल जो बारहदरी की तरफ से हो कर गुजरा तो देखा, बहुत से आदमी जमा हैं। इतने में अंगरेजी बाजा बजने लगा तो हुजूर, जो गोरे बाजा बजाते थे, उनके सामने एक एक किताब खुली हुई थी। मगर बस, धोंतू, धोंतू! इसके सिवा कोई बोल ही सुनने में नहीं आया।

मिर्जा — हुजूर के सवाल का जवाब तो दो! हुजूर पूछते हैं कि जानवरों को बस में क्योंकर लाए!

नत्थू — कहा न कि इनके यहाँ हर बात का इल्म है। इल्म के जोर से देखा होगा कि कौन जानवर किस पर आशिक है। बस, वही चीज मुहैया कर ली।

नवाब — तसल्ली नहीं हुई। कोई खास वजह जरूर है।

नत्थू — हुजूर, हिंदोस्तान का नट भी वह काम करता है जो किसी और से न हो सके। बाँस गाड़ दिया, ऊपर चढ़ गया और अँगूठे के जोर से खड़ा हो गया।

मिर्जा — हुजूर गुलाम ने पता लगा लिया जो कभी झूठ निकले तो नाक कटा डालूँ। बस, हम समझ गए। हुजूर आज तक कोई बड़े से बड़ा पहलवान भी शेर से नहीं लड़ सका मगर इस जवान की हिम्मत को देखिए कि अकेला तीन-तीन शेरों से लड़ता रहा। यह आदमी का काम नहीं है, और अगर है तो कोई आदमी कर दिखाए! हुजूर के सिर की कसम, यह जादू का खेल है। वल्लाह, जो इसमें फर्क हो तो नाक कटवा डालूँ।

नवाब — सुभान-अल्लाह, बस यही बात है।

नत्थू — हाँ, यह माना। यहाँ पर हम भी कायल हो गए। इंसाफ शर्त है।

नवाब — और नहीं तो क्या, जरा सा आदमी, और आधे दर्जन शेरों से कुश्ती लड़े! ऐसा हो सकता है भला! शेर लाख कमजोर हो जाय, फिर शेर है। ये सब जादू के जोर से शेर, रीछ और सब जानवर दिखा देते हैं। असल में शेर-वेर कुछ भी नहीं हैं। सब जादू ही जादू है।

नत्थू — हुजूर हर तरह से रुपया खींचते हैं। हुजूर के सिर की कसम। हिंदोस्तानी इससे अच्छे शेर बना कर दिखा दें। क्या यहाँ जादूगरी है ही नहीं? मगर कदर तो कोई करता ही नहीं। हुजूर, जरा गौर करते तो मालूम हो जाता कि शेर लड़ते तो थे; मगर पुतलियाँ नहीं फिरती थीं। बस, यहाँ मालूम हो गया कि जादू का खेल है।

जबरखाँ — वल्लाह, मैं भी यही कहने वाला था। मियाँ नत्थू मेरे मुँह से बात छीन ले गए।

नत्थू — भला शेरों को देख कर किसी को डर लगता था! ईमान से कहिएगा।

जबरखाँ — मगर जब जादू का खेल है तो शेर से लड़ने में कमाल ही क्या है?

नवाब – और सुनिए, इनके नजदीक कुछ कमाल ही नहीं! आप तो वैसे शेर बना दीजिए! क्या दिल्लगीबाजी है? कहने लगे, इसमें कमाल ही क्या है।

मिर्जा – हुजूर यह ऐसे ही बेपर की उड़ाया करते हैं।

नत्थू – जादू के शेरों से न लड़े तो क्या सचमुच के शेरों से लड़े? वाह री आपकी अक्ल!

नवाब – कहिए, तो उससे, जो समझदार हो। बेसमझ से कहना फजूल हैं।

नत्थू – हुजूर, कमाल यह है कि हजारों आदमी यहाँ बैठे हैं, मगर एक की समझ में न आया कि क्या बात है।

नवाब – समझे तो हमीं समझे!

मिर्जा – हुजूर की क्या बात है। वल्लाह, खूब समझे!

इतने में एक खिलाड़ी ने एक रीछ को अपने ऊपर लादा और दूसरे की पीठ पर एक पाँव से सवार हो कर उसे दौड़ाने लगा। लोग दंग हो गए। सुरैया बेगम ने उस आदमी को पचास रुपए इनाम दिए।

वकील साहब ने यह कैफियत देखी तो सुरैया बेगम का पता लगाने के लिए बेकरार हो गए। सलारबख्श से कहा – भैया

सलारू; इस बेगम का पता लगाओ। कोई बड़ी अमीर-कबीर मालूम होती है।

सलारबख्श — हमें तो यह अफसोस हैं कि तुम भालू क्यों न हुए। बस, तुम इसी लायक हो कि रस्सों से जकड़ कर दौड़ाए।

वकील — अच्छा बचा, क्या घर न चलोगे?

सलारबख्श — चलेंगे क्यों नहीं, क्या तुम्हारा कुछ डर पड़ा है?

वकील — मालिक से ऐसी बातें करता है? मगर यार, सुरैया बेगम का पता लगाओ।

मियाँ आज़ाद नवाब और वकील दोनों की बातें सुन-सुन कर दिल ही दिल में हँस रहे थे। इतने में नवाब साहब ने आज़ाद से पूछा — क्यों जनाब, यह सब नजरबंदी है या कुछ और?

आज़ाद — हजरत, यह सब तिलस्मात का खेल है। अक्ल काम नहीं करती।

नवाब — सुना है, पाँच कोस के उधर का आदमी अगर आए तो उस पर जादू का खाक असर न हो।

आज़ाद — मगर इनका जादू बड़ा कड़ा जादू है। दस मंजिल का आदमी भी आए तो चकमा खा जाए।

नवाब — आपके नजदीक वह कौन अंगरेज बैठा था?

आज़ाद — जनाब, अंगरेज और हिंदोस्तानी कहीं नहीं है। सब जादू का खेल है।

नवाब — इनसे जादू सीखना चाहिए।

आज़ाद — जरूर सीखिए। हजार काम छोड़ कर।

जब तमाशा खत्म हो गया तो सुरैया बेगम ने आज़ाद को बहुत तलाश कराया, मगर कहीं उनका पता न चला। वह पहले ही एक अंगरेज के साथ चल दिए थे। बेगम ने दारोगा जी को खूब डाँटा और कहा — अगर तुम उन्हें न लाओगे तो तुम्हारी खाल खिंचवा कर उसमें भुस भरूँगी!

64

सुरैया बेगम मियाँ आज़ाद की जुदाई में बहुत देर तक रोया कीं, कभी दारोगा पर झल्लाईं, कभी अब्बासी पर बिगड़ीं, फिर सोचतीं कि अलारक्खी के नाम से नाहक बुलवाया, बड़ी भूल हो गई; कभी खयाल करतीं की वादे के सच्चे हैं। कल शाम को जरूर आएँगे, हजार काम छोड़ के आएँगे। रात भींग गई थी, महरियाँ सो रही

थीं, महलदार ऊँघता था, शहर-भर में सन्नाटा था; मगर सुरैया बेगम की नींद मियाँ आज़ाद ने हराम कर दी थी —

भरे आते हैं आँसू आँख में ऐ यार क्या बाइस,
निकलते हैं सदफ से गौहरे शहवार क्या बाइस?

सारी रात परेशानी में गुजरी, दिल बेकरार था, किसी पहलू चैन नहीं आता था, सोचतीं कि अगर मियाँ आज़ाद वादे पर न आए तो कहाँ ढूँढूँगी, बूढ़े दारोगा पर दिल ही दिल में झल्लाती थीं कि पता तक नहीं पूछा। मगर आज़ाद तो पक्का वादा कर गए थे, लौट कर जरूर मिलेंगे, फिर ऐसे बेदर्द कैसे हो गए कि हमारा नाम भी सुना और परवा न की। यह सोचते-सोचते उन्होंने यह गजल गानी शुरू की —

न दिल को चैन मर कर भी हवाए यार में आए;
तड़प कर खुल्द से फिर कूचए दिलदार में आए।
अजब राहत मिली, कुछ दीन-दुनिया की नहीं परवा;
जुनूँ के साया में पहुँचे बड़ी सरकार में आए।
एवज जब एक दिल के लाख दिल हों मेरे पहलू में;
तड़पने का मजा तब फुरकते दिलदार में आए।
नहीं परवा, हमारा सिर जो कट जाए तो कट जाए,
थके बाजू न कातिल का न बल तलवार में आए।
दमे-आखिर वह पोछे अश्क 'सफदर' अपने दामन से;

इलाही रहम इतना तो मिजाजे यार में आए।

सुरैया बेगम को सारी रात जागते गुजरी। सवेरे दारोगा ने आकर सलाम किया।

बेगम — आज का इकरार है न?

दारोगा — हाँ हुजूर, खुदा मुझे सुर्खरू करे। अलारक्खी का नाम सुन कर तो वे बेखुद हो गए। क्या अर्ज करूँ हुजूर!

बेगम — अभी जाइए और चारों तरफ तलाश कीजिए।

दारोगा — हुजूर, जरा सबेरा तो हो ले, दो-चार आदमियों से मिलूँ, पूछूँ-वूछूँ, तब तो मतलब निकले। यों उटक्करलैस किस मुहल्ले में जाऊँ और किससे पूछूँ?

अब्बासी — हुजूर, मुझे हुक्म हो तो मैं भी तलाश करूँ। मगर भारी सा जोड़ा लूँगी।

बेगम — जोड़ा? अल्लाह जानता है, सिर से पाँव तक जेवर से लदी होगी।

बी अब्बासी बन-ठन कर चलीं और उधर दारोगा जी मियाने पर लद कर रवाना हुए। अब्बासी तो खुश-खुश जाती थी और यह मुँह बनाए सोच रहे थे कि जाऊँ तो कहाँ जाऊँ? अब्बासी लहँगा

फड़काती हुई चली जाती थी कि राह में एक नवाब साहब की एक महरी मिली। दोनों में घुल-घुल कर बातें होने लगीं।

अब्बासी — कहो बहन खुश तो हो?

बन्नू — हाँ बहन, अल्लाह का फजल है। कहाँ चलीं?

अब्बासी — कुछ न पूछो बहन, एक साहब का पता पूछती फिरती हूँ।

बन्नू — कौन हैं, मैं भी सुनूँ।

अब्बासी — यह तो नहीं जानती, पर नाम है मियाँ आज़ाद। खासे घबरू जवान हैं।

बन्नू — अरे, उन्हें मैं खूब जानती हूँ। इसी शहर में रहनेवाले हैं। मगर हैं बड़े नटखट, सामने ही तो रहते हैं। कहीं रीझी तो नहीं हो? है तो जवान ऐसा ही।

अब्बासी — ऐ, हटो भी? यह दिल्लगी हमें नहीं भाती।

बन्नू — लो, यह मकान आ गया। इसी में रहते हैं! 'जोरू न जाँता, अल्लाह मियाँ से नाता।'

बन्नू तो अपनी राह गई, अब्बासी एक गली में हो कर एक बुढ़िया के मकान पर पहुँची। बुढ़िया ने पूछा — अब किस सरकार में हो जी!

अब्बासी – सुरैया बेगम के यहाँ।

बुढ़िया – और उनके मियाँ का क्या नाम है?

अब्बासी – जो तजवीज करो।

बुढ़िया – तो क्वाँरी हैं या बेवा! कोई जान-पहचान मुलाकाती है या कोई नहीं है?

अब्बासी – एक बूढ़ी सी औरत कभी-कभी आया करती हैं। और तो हमने किसी को आते-जाते नहीं देखा।

बुढ़िया – कोई देवजाद भी आता-जाता है?

अब्बासी – क्या मजाल! चिड़िया तक तो पर नहीं मार सकती? इतने दिनों में सिर्फ कल तमाशा देखने गई थीं।

बुढ़िया – ऐ लो, और सुनो। तमाशा देखने जाती है और फिर कहती हो कि ऐसी-वैसी नहीं हैं? अच्छा, हम टोह लगा लेंगी।

अब्बासी – उन्होंने तो कसम खाई है कि शादी ही न करूँगी, और अगर करूँगी भी तो एक खूबसूरत जवान के साथ जो आपका पड़ोसी है। मियाँ आज़ाद नाम है।

बुढ़िया – अरे, यह कितनी बड़ी बात है! गो मैं वहाँ बहुत कम आती-जाती हूँ, पर वह मुझे खूब जानते हैं! बिल्कुल घर का सा वास्ता है। तुम बैठो, मैं अभी आदमी भेजती हूँ।

वह कह कर बुढ़िया ने एक औरत को बुला कर कहा — छोटे मिर्जा के पास जाओ और कहो कि आपको बुलाती हैं। या तो हमको बुलाइए या खुद आइए।

इस औरत का नाम मुबारक कदम था। उसने जा कर मिर्जा आज़ाद को बुढ़िया का पैगाम सुनाया — हुजूर, वह खबर सुनाऊँ कि आप भी फड़क जायँ। मगर इनाम देने का वादा कीजिए।

आज़ाद — नहीं, अगर मालामाल न कर दें।

मुबारक — उछल पड़िएगा।

आज़ाद — क्या कोई रकम मिलने वाली है?

मुबारक — अजी, वह रकम मिले कि नवाब हो जाओ। एक बेगम साहबा ने पैगाम भेजा है। बस, आप मेरी बुढ़िया के मकान तक चले चलिए।

आज़ाद — उनको यहीं न बुला लाओ।

मुबारक — मैं बैठी हूँ, आप बुलवा लीजिए।

थोड़ी देर में बुढ़िया एक डोली पर सवार आ पहुँची और बोली — क्या इरादे हैं? कब चलिएगा?

आज़ाद — पहले कुछ बातें तो बताओ। हसीन है न?

बुढ़िया — अजी, हुस्न तो वह है कि चाँद भी मात हो जाय, और दौलत का तो कोई ठिकाना नहीं; तो कब चलने का इरादा है?

आज़ाद — पहले खूब पक्का-पोढ़ा कर लो, तो मुझे ले चलो। ऐसा न हो कि वहाँ चल कर झेंपना पड़े।

65

हमारे मियाँ आज़ाद और इस मिर्जा आज़ाद में नाम के सिवा और कोई बात नहीं मिलती थी। वह जितने ही दिलेर, ईमानदार, सच्चे आदमी थे; उतने ही यह फरेबी, जालिए और बदनियत थे। बहुत मालदार तो थे नहीं; मगर सवा सौ रुपए वसीके के मिलते थे। अकेला दम, न कोई अज़ीज, न रिश्तेदार; पल्ले सिरे के बदमाश, चोरों के पीर, उठाईगीरों के लँगोटिए यार, डाकुओं के दोस्त, गिरहकटों के साथी। किसी की जान लेना इनके बाएँ हाथ का करतब था। जिससे दोस्ती की, उसी की गरदन काटी। अमीर से मिल-जुल कर रहना और उसकी घुड़की-झिड़की सहना, इनका खास पेशा था। लेकिन जिसके यहाँ दखल पाया, उसको या तो लँगोटी बँधवा दी या कुछ ले-दे के अलग हुए। शहर के महाजन और साहूकार इनसे थरथर काँपते रहते! जिस महाजन से जो

माँगा, उसने हाजिर किया और जो इनकार किया तो दूसरे रोज चोरी हो गई। इनके मिजाज की अजब कैफियत थी। बच्चों में बच्चे, बूढ़ों में बूढ़े, जवानों में जवान। कोई बात ऐसी नहीं जिसका उन्हें तजर्बा न हो। एक साल तक फौज में भी नौकरी की थी। वहाँ आपने एक दिन यह दिल्लगी की कि रिसाले के बीस घोड़ों की अगाड़ी-पिछाड़ी खोल डाली। घोड़े हिनहिना कर लड़ने लगे । सब लोग पड़े सो रहे थे। घोड़े जो खुले, तो सब के सब चौंक पड़े। एक बोला — लेना-लेना! चोर-चोर! पकड़ लेना, जाने न पाए। बड़ी मुश्किल से चंद घोड़े पकड़े गए। कुछ जख्मी हुए, कुछ भाग गए। अब तहकीकात शुरू हुई। मिर्जा आज़ाद भी सबके साथ हमदर्दी करते थे और उस बदमाश पर बिगड़ रहे थे जिसने घोड़े छोड़े थे। अफसर से बोले — यह शैतान का काम है, खुदा की कसम।

अफसर — उसकी गोशमाली की जायगी।

आज़ाद — वह इसी लायक है। मिल जाय तो चचा ही बन कर छोड़ूँ!

खैर, एक बार एक दफ्तर में आप क्लर्क हो गए। एक दिन आपको दिल्लगी सूझी, अब अमलों के जूते उठा कर दरिया में फेंक दिए। सरिश्तेदार उठे, इधर-उधर जूता ढूँढ़ते हैं, कहीं पता

ही नहीं। नाजिर उठे, जूता नदारद। पेशकार को साहब ने बुलाया, देखते हैं तो जूता गायब।

पेशकार — अरे भाई, कोई साहब जूता ही उड़ा ले गए।

चपरासी — हुजूर, मेरा जूता पहन लें।

पेशकार — वाह, अच्छा लाला विशुनदयाल, जरा अपना बूट तो उतार दो।

लाला विशुनदयाल पटवारी थे। इनका लक्कड़तोड़ जूता पहन कर पेशकार साहब बड़े साहब के इजलास पर गए।

साहब — वेल-वेल पेशकार, आज बड़ा अमीर हो गया। बहुत बड़ा कीमती बूट पहना है।

पेशकार — हुजूर, कोई साहब जूता उड़ा ले गए। दफ्तर में किसी का जूता नहीं बचा।

बड़े साहब तो मुस्करा कर चुप हो गए; मगर छोटे साहब बड़े दिल्लगीबाज आदमी थे। इजलास से उठ कर दफ्तर में गए तो देखते हैं कि कहकहे पर कहकहे पड़ रहे हैं। सब लोग अपने-अपने जूते तलाश रहे हैं। छोटे साहब ने कहा — हम उस आदमी को इनाम देना चाहते हैं जिसने यह काम किया। जिस दिन हमारा जूता गायब कर दे, हम उसको इनाम दें।

आज़ाद — और अगर हमारा जूता गायब कर दे तो हम पूरे महीने की तनख्वाह दे दें।

एक बार मिर्जा आज़ाद एक हिंदू के यहाँ गए। वह इस वक़्त रोटी पका रहे थे। आपने चुपके से जूता उतारा और रसोई में जा बैठे, ठाकुर ने डाँट कर कहा — ऐं, यह क्या शरारत!

आज़ाद — कुछ नहीं, हमने कहा, देखें, किस तदबीर से रोटी पकाते हो।

ठाकुर — रसोई जूठी कर दी!

आज़ाद — भई, बड़ा अफसोस हुआ। हम यह क्या जानते थे। अब यह खाना बेकार जायगा?

ठाकुर — नहीं जी, कोई मुसलमान खा लेगा।

आज़ाद — तो हमसे बढ़ कर और कौन है?

आज़ाद बिस्मिल्लाह कह कर थाली में हाथ डालने को थे कि ठाकुर ने ललकारा — हैं-हैं, रसोई तो जूठी कर चुके, अब क्या बरतनों पर भी दाँत है?

खैर, आज़ाद ने पत्तों में खाना खाया और दुआ दी कि खुदा करे, ऐसा एक उल्लू रोज फँस जाए।

डोम-धारी, तबलिए, गवैए, कलावंत, कथक, कोई ऐसा न था जिससे मिर्जा आज़ाद से मुलाकात न हो। एक बार एक बीनकार को दो सौ रुपए इनाम दिए। तब से उस गिरोह में इनकी धाक बैठ गई थी। एक बार आप पुलिस के इंस्पेक्टर के साथ जाते थे। दोनों घोड़ों पर सवार थे। आज़ाद का घोड़ा टर्रा था और इनसे बिना मजाक के रहा न जाए। चुपके से उतर पड़े। घोड़ा हिनहिनाता हुआ इंस्पेक्टर साहब के घोड़े की तरफ चला? उन्होंने लाख सँभाला, लेकिन गिर ही पड़े। पीठ में बड़ी चोट आई।

अब सुनिए, बुढ़िया और अब्बासी जब बेगम साहब के यहाँ पहुँचीं तो बेगम का कलेजा धड़कने लगा। फौरन कमरे के अन्दर चली गईं। बुढ़िया ने आकर पूछा — हुजूर, कहाँ तशरीफ रखती हैं?

बेगम — अब्बासी, कहो क्या खबरें हैं?

अब्बासी — हुजूर के अकबाल से सब मामला चौकस है।

बेगम — आते हैं या नहीं? बस, इतना बता दो।

अब्बासी — हुजूर, आज तो उनके यहाँ एक मेहमान आ गए। मगर कल जरूर आएँगे।

इतने में एक महरी ने आकर कहा — दारोगा साहब आए हैं।

बेगम — आ गए! जीते आए, बड़ी बात!

दारोगा — हाँ हुजूर, आपकी दुआ से जीता आया। नहीं तो बचने की तो कोई सूरत ही न थी।

बेगम — खैर, यह बतलाओ, कहीं पता लगा?

दारोगा — हुजूर के नमक की कसम कि शहर का कोई मुकाम न छोड़ा।

बेगम — और कहीं पता न चला? है न!

दारोगा — कोई कूचा, कोई गली ऐसी नहीं जहाँ तलाश न की हो।

बेगम — अच्छा, नतीजा क्या हुआ? मिले या न मिले?

दारोगा — हुजूर, सुना कि रेल पर सवार हो कर कहीं बाहर जाते हैं। फौरन गाड़ी किराए की और स्टेशन पर जा पहुँचा, मियाँ आज़ाद से चार आँखें हुईं कि इतने में सीटी कूकी और रेल खड़खड़ाती हुई चली। मैं लपका कि दो-दो बातें कर लूँ, मगर अंगरेज ने हाथ पकड़ लिया।

बेगम — यह सब सच कहते हो न?

दारोगा — झूठ कोई और बोला करते होंगे।

बेगम — सुबह से तो कुछ खाया न होगा?

दारोगा — अगर एक घूँट पानी के सिवा कुछ और खाया हो तो कसम ले लीजिए।

अब्बासी — हुजूर, हम एक बात बताएँ तो इनकी शेखी अभी-अभी निकल जाए। कहारों को यहीं बुला कर पूछना शुरू कीजिए!

बेगम साहब हो यह सलाह पसंद आई। एक कहार को बुला कर तहकीकात करने लगीं।

अब्बासी — बचा, झूठ बोले तो निकल दिए जाओगे।

कहार — हुजूर, हमें तो सिखाया है, वह कह देते हैं।

अब्बासी — क्या कुछ सिखाया भी है?

कहार — सुबह से अब तक सिखाया ही किए या कुछ और किया? यहाँ से अपनी ससुराल गए। वहाँ किसी ने खाने को भी न पूछा तो वहाँ से एक मजलिस में गए। हिस्से लिए और चख कर बोले — कहीं ऐसी जगह चलो जहाँ किसी की निगाह न पड़े। हम लोगों ने नाक से बाहर एक तकिए में मियाना उतारा। दारोगा जी ने वहाँ नानबाई की दुकान से सालन और रोटी मँगा कर खाई। हम लोगों को चबैने के लिए पैसे दिए। दिन भर सोया किए। शाम को हुक्म दिया, चलो।

अब्बासी — दारोगा साहब, सलाम! अजी, इधर देखिए दारोगा साहब!

बेगम — क्यों साहब, यह झूठ! रेल पर गए थे? बोलिए!

दारोगा — हुजूर, यह नमकहराम है, क्या अर्ज करूँ!

दारोगा का बस चलता तो कहार को जीता चुनवा देते मगर बेबस थे। बेगम ने कहा — बस, जाओ। तुम किसी मसरफ के नहीं हो!

रात को अब्बासी बेगम साहब से मीठी-मीठी बातें कर रही थीं कि गाने की आवाज आई। बेगम ने पूछा — कौन गाता है?

अब्बासी — हुजूर, मुझे मालूम है। यह एक वकील हैं। सामने मकान है। वकील को तो नहीं जानती, मगर उनके यहाँ एक आदमी नौकर है, उसको खूब जानती हूँ। सलारबख्श नाम है। एक दिन वकील साहब इधर से जाते थे। मैं दरवाजे पर खड़ी थी। कहने लगे — महरी साहब, सलाम! कहो, तुम्हारी बेगम साहब का नाम क्या है? मैंने कहा, आप अपना मतलब कहिए, तो कहने लगे — कुछ नहीं, यों ही पूछता था।

बेगम — ऐसे आदमियों को मुँह न लगाया करो।

अब्बासी — मुखतार है हुजूर, महताबी से मकान दिखाई देता है।

बेगम — चलो देखें तो, मगर वह तो न देख लेंगे। जाने भी दो।

अब्बासी — नहीं हुजूर, उनको क्या मालूम होगा। चुपके से चल कर देख लीजिए। बेगम साहब महताबी पर गईं तो देखा कि वकील साहब पलंग पर फैले हुए हैं और सलारू हुक्का भर रहा है। नीचे आईं तो अब्बासी बोली — हुजूर, वह सलारबख्श कहता था कि किसी पर मरते हैं।

बेगम — वह कौन थी, जरा नाम तो पूछना।

अब्बासी — नाम तो बताया था, मगर मुझे याद नहीं है। देखिए, शायद जेहन में आ जाय। आप दस-पाँच नाम तो लें।

बेगम — नजीरबेगम, जाफरीबेगम, हुसेनीखानम, शिब्बोखानम!

अब्बासी — (उछल कर) जी हाँ, यही, यही मगर शिब्बोखानम नहीं, शिब्बोजान बताया था।

सुरैया बेगम ने सोचा इस पगले का पड़ोस अच्छा नहीं, जुल देके चली आई हूँ, ऐसा न हो, ताक-झाँक करे। दरवाजे तक आ ही चुका, अब्बासी और सलारू में बातचीत भी हुई; अब फकत इतना मालूम होना बाकी है कि यही शिब्बोजान हैं। कहीं हमारे आदमियों पर यह भेद खुल जाय तो गजब ही हो जाय। किसी तरह मकान बदल देना चाहिए। रात को इसी खयाल में सो

रहीं। सुबह को फिर वही धुन समाई कि आज़ाद आएँ और अपनी प्यारी-प्यारी सूरत दिखाएँ। वह अपना हाल कहें, हम अपनी बीती सुनाएँ। मगर आज़ाद अब की मेरा यह ठाट देखेंगे तो क्या खयाल करेंगे। कहीं यह न समझें कि दौलत पा कर मुझे भूल गई। अब्बासी को बुला कर पूछा — तो आज कब जाओगी?

अब्बासी — हुजूर, बस कोई दो घड़ी दिन रहे जाऊँगी और बात की बात में साथ ले कर आ जाऊँगी।

उधर मिर्जा आज़ाद बन-ठन कर जाने ही को थे कि एक शाह साहब खट-पट करते हुए कोठे पर आ पहुँचे। आज़ाद ने झुक कर सलाम किया और बोले — आप खूब आए। बतलाइए, हम जिस काम को जाना चाहते हैं। वह पूरा होगा या नहीं।

शाह — लगन चाहिए। धुन हो तो ऐसा कोई काम नही हो पूरा न हो।

आज़ाद — गुस्ताखी माफ कीजिए तो एक बात पूछूँ, मगर बुरा न मानिएगा।

शाह — गुस्ताखी कैसी, जो कुछ कहना हो शौक से कहो।

आज़ाद — उस पगली औरत से आपको क्यों मुहब्बत है?

शाह — उसे पगली न कहो, मैं उसकी सूरत पर नहीं, उसकी सीरत पर मरता हूँ। मैंने बहुत से औलिया देखे, पर ऐसी औरत मेरी नजर से आज तक नहीं गुजरी। अलारक्खी सचमुच जन्नत की परी है। उसकी याद कभी न भूलेगी। उसका एक आशिक आप ही के नाम का था।

इन्हीं बातों में शाम हो गई, आसमान पर काली घटाएँ छा गईं और जोर से मेंह बरसने लगा। आज़ाद ने जाना मुल्तवी कर दिया। सुबह को आप एक दोस्त की मुलाकात को गए। वहाँ देखा कि कई आदमी मिल कर एक आदमी को बना रहे हैं और तालियाँ बजा रहे हैं। वह दुबला-पतला, मरा-पिटा आदमी था। इनको करीने से मालूम हो गया कि वह चंडूबाज है। बोले — क्यों भाई चंडूबाज, कभी नौकरी भी की है?

चंडूबाज — अजी हजरत, उम्र भर डंड पेले और जोड़ियाँ हिलाईं। शाही में अब्बाजान की बदौलत हाथी-नशीन थे। अभी पारसाल तक हम भी घोड़े पर सवार हो कर निकलते थे। मगर जुए की लत थी, टके-टके को मुहताज हो गए। आखिर, सराय में एक भठियारी अलारक्खी के यहाँ नौकरी कर ली।

आज़ाद — किसके यहाँ?

चंडूबाज — अलारक्खी नाम था। ऐसी खूबसूरत कि मैं क्या अर्ज करूँ।

आज़ाद — हाँ, रात को भी एक आदमी ने तारीफ की थी।

चंडूबाज — तारीफ कैसी! तसवीर ही न दिखा दूँ?

यह कह कर चंडूबाज ने अलारक्खी की तसवीर निकाली।

आज़ाद — ओ-हो-हो!

अजब है खींची मुसव्विर ने किस तरह तसवीर;
कि शोखियों से वह एक रंग पर रहें क्योंकर!

चंडूबाज — क्यों, है परी या नहीं?

आज़ाद — परी, परी असली परी!

चंडूबाज- उसी सराय में मियाँ आज़ाद नाम के एक शरीफ टिके थे। उन पर आशिक हो गईं। बस, कुछ आप ही की सी सूरत थी।

आज़ाद — अब यह बताओ कि वह आजकल कहाँ है?

चंडूबाज — यह तो नहीं जानते, मगर यहीं कहीं हैं। सराय से तो भाग गई थीं।

आज़ाद ने ताड़ लिया कि अलारक्खी और सुरैया बेगम में कुछ न कुछ भेद जरूर है। चंडूबाज को अपने घर लाए और खूब चंडू पिलाया। जब दो-तीन छींटे पी चुके तो आज़ाद ने कहा — अब अलारक्खी का मुफ़स्सल हाल बताओ।

चंडूबाज — अलारक्खी की सूरत तो आप देख ही चुके, अब उनकी सीरत का हाल सुनिए। शोख, चुलबुली, चंचल, आगभभूका, तीखी चितवन, मगर हँसमुख। मियाँ आज़ाद पर रीझ गईं। अब आज़ाद ने वादा किया कि निकाह पढ़वाएँगे, मगर कौल हार कर निकल गए। इन्होंने नालिश कर दी, पकड़ आए, मगर फिर भाग गए। इसके बाद एक बेगम हुस्नआरा थीं, उस पर रीझे। उन्होंने कहा — रूम की लड़ाई में नाम पैदा करके आओ तो हम निकाह पर राजी हों। बस, रूम की राह ली। चलते वक़्त उनकी अलारक्खी से मुलाकात हुई तो उनसे कहा — हुस्नआरा तुम्हें मुबारक हो, मगर हमको न भूल जाना। आज़ाद ने कहा- हरगिज नहीं।

आज़ाद — हुस्नआरा कहाँ रहती हैं?

चंडूबाज — यह हमें नहीं मालूम।

आज़ाद — अलारक्खी को देखो तो पहचान लो या न पहचानो?

चंडूबाज — फौरन पहचान लें। न पहचानना कैसा?

मियाँ चंडूबाज तो पीनक लेने लगे। इधर अब्बासी मिर्जा आज़ाद के पास आई और कहा — अगर चलना है तो चले चलिए, वरना फिर आने जाने का जिक्र न कीजिएगा। आपके टालमटोल से वह बहुत चिढ़ गई हैं। कहती हैं, आना हो तो आएँ और न आना हो तो न आएँ। यह टालमटोल क्यों करते हैं?

आज़ाद ने कहा — मैं तैयार बैठा हूँ। चलिए।

यह कह कर आज़ाद ने गाड़ी मँगवाई और अब्बासी के साथ अन्दर बैठे। चंडूबाज कोचबक्स पर बैठे। गाड़ी रवाना हुई। सुरैया बेगम के महल पर गाड़ी पहुँची तो अब्बासी ने अन्दर जा कर कहा — मुबारक, हुजूर आ गए।

बेगम — शुक्र है!

अब्बासी — अब हुजूर चिक की आड़ बैठ जायँ।

बेगम — अच्छा, बुलाओ।

आज़ाद बरामदे में चिक के पास बैठे। अब्बासी ने कमरे के बाहर आकर कहा — बेगम साहब फरमाती हैं कि हमारे सिर में दर्द है, आप तशरीफ ले जाइए।

आज़ाद — बेगम साहब से कह दीजिए कि मेरे पास सिर के दर्द का एक नायाब नुस्खा है।

अब्बासी — वह फरमाती हैं कि ऐसे-ऐसे मदारी हमने बहुत चंगे किए हैं।

आज़ाद — और अपने सिर के दर्द का इलाज नहीं कर सकतीं?

बेगम — आपकी बातों से सिर का दर्द और बढ़ता है। खुदा के लिए आप मुझे इस वक़्त आराम करने दीजिए।

आज़ाद — हम ऐसे हो गए अल्लाह अकबर ऐ तेरी कुदरत;

हमारा नाम सुन कर हाथ वह कानों पर धरते हैं।

या तो वह मजे-मजे की बातें थीं; और अब यह बेवफाई!

बेगम — तो यह कहिए कि आप हमारे पुराने जाननेवालों में हैं। कहिए, मिजाज तो अच्छे हैं?

आज़ाद — दूर से मिजाजपुर्सी भली मालूम नहीं होती।

बेगम — आप तो पहेलियाँ बुझवाते है। ऐ अब्बासी, यह किस अजनबी को सामने ला कर बिठा दिया? वाह-वाह!

अब्बासी — (मुस्करा कर) हुजूर जबरदस्ती धँस पड़े।

बेगम — मुहल्लेवालों को इत्तिला दो।

आज़ाद — थाने पर रपट लिखवा दो और मुश्कें बँधवा दो।

यह कह कर आज़ाद ने अलारक्खी की तसवीर अब्बासी को दी और कहा — इसे हमारी तरफ से पेश कर दो। अब्बासी ने जा कर बेगम साहब को वह तसवीर दी। बेगम साहब तसवीर देखते ही दंग हो गईं। ऐं, इन्हें यह तसवीर कहाँ मिली? शायद यह तसवीर छिपा कर ले गए थे। पूछा — इस तसवीर की क्या कीमत है?

आज़ाद — यह बिकाऊ नहीं है।

बेगम — तो फिर दिखाई क्यों?

आज़ाद — इसकी कीमत देने वाला कोई नजर नहीं आता।

बेगम — कुछ कहिए तो, किस दाम की तस्वीर है!

आज़ाद — हुजूर मिला लें। एक शाहज़ादे इस तसवीर के दो लाख रुपए देते थे।

बेगम — यह तसवीर आपको मिली कहाँ?

आज़ाद — जिसकी यह तसवीर है उससे दिल मिल गया है।

बेगम — जरी मुँह धो आइए।

इस फिकरे पर अब्बासी कुछ चौंकी, बेगम साहब से कहा — जरा हुजूर मुझे तो दें। मगर बेगम ने संदूकचा खोल कर तसवीर रख दी।

आज़ाद — इस शहर की अच्छी रस्म है। देखने को चीज ली और हजम! बी अब्बासी, हमारी तसवीर ला दो।

बेगम — लाखों कुदूरतें हैं, हजारों शिकायतें।

आज़ाद — किससे?

कुदूरत उनको है मुझसे नहीं है सामना जब तक;
इधर आँखें मिलीं उनसे उधर दिल मिल गया दिल से।

बेगम — अजी, होश की दया करो।

आज़ाद — हम तो इस जब्त के कायल हैं।

बेगम — (हँस कर) बजा।

आज़ाद — अब तो खिलखिला कर हँस दीं। खुदा के लिए, अब इस चिक के बाहर आओ या मुझी को अन्दर बुलाओ। नकाब और घूँघट का तिलस्म तोड़ो। दिल बेकाबू है।

बेगम — अब्बासी, इनसे कहो कि अब हमें सोने दें। कल किसी की राह देखते-देखते रात आँखों में कट गई।

आज़ाद — दिन का मौका न था, रात को मेंह बरसने लगा।

बेगम — बस बैठे रहो।

यह अबस कहते हो, मौका न था और घात न थी;

मेहँदी पाँवों में न थी आपके, बरसात न थी।
कजअदाई के सिवा और कोई बात न थी;
दिन को आ सकते न थे आप तो क्या रात न थी?
बस, यही कहिए कि मंजूर मुलाकात न थी।

आज़ाद — माशूकपन नहीं अगर इतनी कजी न हो।

अब्बासी दंग थी कि या खुदा, यह क्या माजरा है। बेगम साहब तो जामे से बाहर ही हुई जातीं हैं। महरियाँ दाँतों अँगुलियाँ दबा रही थीं। इनको हुआ क्या है। दारोगा साहब कटे जाते थे, मगर चुप।

बेगम — कोई भी दुनिया में किसी का हुआ है? सबको देख लिया। तड़पा-तड़पाकर मार डाला! खैर, हमारा भी खुदा है।

आज़ाद — पिछली बातों को अब भूल जाइए।

बेगम — बेमुरौवतों को किसी के दर्द का हाल क्या मालूम? नहीं तो क्या वादा करके मुकर जाते!

आज़ाद — नालिश भी तो दाग ही आपने!

बेगम — इंतजार करते-करते नाक में दम आ गया।

राह उनकी तकते-तकते यह मुद्दत गुजर गई;
आँखों को हौसला न रहा इंतजार का।

आज़ाद, बस दिल ही जानता है। ठान ली थी कि जिस तरह मुझे जलाया है, उसी तरह तरसाऊँगी। इस वक़्त कलेजा बाँसों उछल रहा है। मगर बेचैनी और भी बढ़ती जाती है! अब उधर का हाल तो कहो, गए थे!

आज़ाद — वहाँ का हाल न पूछो, दिल पाश-पाश हुआ जाता है।

सुरैया बेगम ने समझा कि अब पाला हमारे हाथ रहा। कहा — आखिर, कुछ तो कहो। माजरा क्या है?

आज़ाद — अजी, औरत की बात का एतबार क्या?

बेगम — वाह, सबको शामिल न करो। पाँचों अँगुलियाँ बराबर नहीं होतीं। अब यह बतलाइए कि हमसे जो वादे किए थे, वे याद हैं या भूल गए ?

इकरार जो किए थे कभी हमसे आपने;

कहिए, वे याद हैं कि फरामोश हो गए?

आज़ाद — याद हैं। न याद होना क्या माने?

बेगम — आपके वास्ते हुक्का भर लाओ।

आज़ाद — हुक्म हो तो अपने खिदमतगार से हुक्का मँगवा लूँ। अब्बासी, जरा उनसे कहो, हुक्का भर लाएँ।

अब्बासी ने जा कर चंडूबाज से हुक्का भरने को कहा। चंडूबाज हुक्का ले कर ऊपर गए तो अलारक्खी को देखते ही बोले — कहिए, अलारक्खी साहब, मिजाज तो अच्छे हैं?

सुरैया बेगम धक से रह गईं। वह तो कहिए, खैर गुजरी कि अब्बासी वहाँ पर न थी। वरना बड़ी किरकिरी होती। चुपके से चंडूबाज को बुला कर कहा — यहाँ हमारा नाम सुरैया बेगम है। खुदा के वास्ते हमें अलारक्खी न कहना। यह तो बताओ, तुम इनके साथ कैसे हो लिए। तुमसे इनसे तो दुश्मनी थी? चलते वक़्त कोड़ा मारा था।

चंडूबाज — इसके बारे में फिर अर्ज करूँगा।

आज़ाद — क्या खुदा की शान है कि खिदमतगार को अन्दर बुलाया जाय और मालिक तरसे!

बेगम — क्यों घबराते हो? जरा बातें तो कर लेने दो? उस मुए मसखरे को कहाँ छोड़ा?

आज़ाद — वह लड़ाई पर मारा गया।

बेगम — ऐ है, मार डाला गया! बड़ा हँसोड़ था बेचारा!

सुरैया बेगम ने अपने हाथों से गिलौरियाँ बनाईं और अपने ही हाथ से मिर्जा आज़ाद को खिलाईं। आज़ाद दिल में सोच रहे थे कि या

खुदा, हमने कौन सा ऐसा सवाब का काम किया, जिसके बदले में तू हम पर इतना मेहरबान हो गया है! हालाँकि न कभी की जान, न पहचान। यकीन हो गया कि जरूर हमने कोई नेक काम किया होगा। चंडूबाज को भी हैरत हो रही थी कि अलारक्खी ने इतनी दौलत कहाँ पाई। इधर-उधर भौचक्के हो-हो कर देखते थे, मगर सबके सामने कुछ पूछना अदब के खिलाफ समझते थे। इतने में आज़ाद बोले – जमाना भी कितने रंग बदलता है।

सुरैया बेगम – हाँ, यह तो पुराना दस्तूर है। लोग इकरार कुछ करते हैं और करते कुछ हैं।

आज़ाद – यों नहीं कहतीं कि लोग चाहते कुछ हैं और होता कुछ और है।

सुरैया बेगम – दो-चार दिन और सब्र करो। जहाँ इतने दिनों खामोश रहे, अब चंद रोज तक और चुपके रहो।

चंडूबाज – खुदावंद, ये बातें तो हुआ ही करेंगी, अब चलिए, कल फिर आइएगा। मगर पहले बी अला..।

सुरैया बेगम – जरा समझ-बूझ कर!

चंडूबाज – कुसूर हुआ।

आज़ाद – हम समझे ही नहीं, क्या कुसुर हुआ?

सुरैया बेगम — एक बात है। यह खूब जानते हैं।

आज़ाद — फिर अब चलूँ! मगर ऐसा न हो कि यह सारा जोश दो-चार दिन में ठंडा पड़ जाय। अगर ऐसा हुआ तो मैं जान दे दूँगा।

सुरैया बेगम — मैं तो खुद ही कहने को थी। तुम मेरी जबान से बात छीन ले गए।

आज़ाद — हमारी मुहब्बत का हाल खुदा ही जानता है।

सुरैया बेगम — खुदा तो सब जानता है, मगर आपकी मुहब्बत का हाल हमसे ज्यादा और कोई नहीं जानता। या (चंडूबाज की तरफ इशारा करके) यह जानते हैं। याद है न? अगर अब की भी वैसा ही इकरार है तो खुदा ही मालिक है।

आज़ाद — अब उन बातों का जिक्र ही न करो।

सुरैया बेगम — हमें इस हालत में देख कर तुम्हें ताज्जुब तो जरूर हुआ होगा कि इस दरजे पर यह कैसी पहुँच गई। वह बूढ़ा याद है जिसकी तरफ से आपने खत लिखा था?

आज़ाद मिर्जा कुछ जानते होते तो समझते, हाँ-हाँ कहते जाते थे।

आखिर इतना कहा — तुम भी तो वकील के पास गई थीं? और हमको पकड़वा बुलाया था? मगर सच कहना, हम भी किस चालाकी से निकल भागे थे?

सुरैया बेगम — और उसका आप को फख्र है। शरमाओ न शरमाने दो।

आज़ाद — अजी, वह मौका ही और था।

सुरैया बेगम ने अपना सारा हाल कह सुनाया। अपना जोगिन बनना, शहसवार का आना, थानेदार के घर से भागना, फिर वकील साहब के यहाँ फँसना, गरज कर सारी बातें कह सुनाईं।

आज़ाद — ओफ्-ओह, बहुत मुसीबतें उठाईं!

सुरैया बेगम — अब तो जी चाहता है कि शुभ घड़ी निकाह हो तो सारा गम भूल जाय।

चंडूबाज — हम बेगम साहब की तरफ होंगे। आप ही ने तो कोड़ा जमाया था!

आज़ाद — कोड़ा अभी तक नहीं भूले! हम तो बहुत सी बातें भूल गए।

सुरैया बेगम — अब तो रात बहुत ज्यादा गई, क्यों न नीचे जा कर दारोगा साहब के कमरे में सो रहो।

आज़ाद उठने ही को थे कि अजान की आवाज कान में आई। बातों में तड़का हो गया। आज़ाद यहाँ से चले तो रास्ते में सुरैया बेगम का हाल पूछने लगे। क्यों जी, बेगम साहब हमको वही आज़ाद समझती हैं? क्या हमारी उनकी सूरत बिलकुल मिलती है?

चंडूबाज – जनाब, आप उनसे बीस हैं, उन्नीस नहीं।

आज़ाद – तुमने कहीं कह तो नहीं दिया कि और आदम है?

चंडूबाज – वाह-वाह, मैं कह देता तो आप वहाँ धँसने भी पाते? अब कहिए तो जा कर जड़ दूँ। बस, ऐसी ही बातों से तो आग लग जाती है?

ये बातें करते हुए आज़ाद घर पहुँचे और गाड़ी से उतरने ही को थे कि कई कान्स्टेबलों ने उनको घेर लिया, आज़ाद ने पैंतरा बदल कर कहा – ऐं, तुम लोग कौन हो?

जमादार ने आगे बढ़ कर वारंट दिखाया और कहा – आप मेरी हिरासत में हैं।

चंडूबाज दबके-दबके गाड़ी में बैठे थे। एक सिपाही ने उनको भी निकाला। आज़ाद ने गुस्से में आकर दो कान्स्टेबलों को थप्पड़ मारे, तो उन सबों ने मिल कर उनकी मुश्कें कस लीं और थाने की तरफ ले चले। थानेदार ने आज़ाद को देखा तो बोले –

आइए मिर्जा साहब, बहुत दिनों के बाद आप नजर आए। आज आप कहाँ भूल पड़े?

आज़ाद — क्या मरे हुए से दिल्लगी करते हो। हवालात से बाहर निकाल दो तो मजा दिखाऊँ। इस वक़्त जो चाहो, कह लो, मगर इज्जलास पर सारी कलई खोल दूँगा। जिस जिस आदमी से तुमने रिश्वत ली है, उनको पेश करूँगा, भाग कर जाओगे कहाँ?

थानेदार — रस्सी जल गई, मगर रस्सी का बल न गया।

आज़ाद तो डींगें मार रहे थे और चंडूबाज को चंडू की धुन सवार थी। बोले — अरे यारो, जरी चंडू पिलवा दो भई! आखिर इतने आदमियों में कोई चंडूबाज भी है, या सब के सब रूखे ही हैं?

थानेदार — अगर आज चंडू न मिले तो क्या हो?

चंडूबाज — मर जायँ और क्या हो?

थानेदार — अच्छा देखें, कैसे मरते हो? कोई शर्त बदता है? हम कहते हैं कि अगर इसको चंडू न मिले तो यह मर जाय।

इन्स्पेक्टर — और हम कहते हैं कि यह कभी न मरेगा।

चंडूबाज — वाह री तकदीर, समझे थे, अलारक्खी के यहाँ अब चैन करेंगे, चैन तो रहा दूर, किस्मत यहाँ ले आई।

थानेदार — अलारक्खी कौन? यह बता दो, तो चंडू मँगा दूँ।

चंडूबाज — साहब, एक औरत है जो सराय में रहती थी।

अब सुनिए, शाम के वक़्त सुरैया बेगम बन-ठन कर बैठी आज़ाद का इंतजार कर रही थी। मगर आज़ाद तो हवालात में थे। वहाँ आता कौन? अब्बासी को आज़ाद के गिरफ्तार होने की खबर तो मिल गई, मगर उसने सुरैया बेगम से कहा नहीं।

66

शाहज़ादा हुमायूँफर कई महीने तक नेपाल की तराई में शिकार खेल कर लौटे तो हुस्नआरा की महरी अब्बासी को बुलवा भेजा। अब्बासी ने शाहज़ादा के आने की खबर सुनी तो चमकती हुई आई। शाहज़ादे ने देखा तो फड़क गए। बोले — आइए, बी महरी साहबा हुस्नआरा बेगम का मिजाज तो अच्छा है? अब्बासी — हाँ, हुजूर!

शाहज़ादा — और दूसरी बहन? उनका नाम तो हम भूल गए।

अब्बासी — बेशक, उनका नाम तो आप जरूर ही भूल गए होंगे। कोठे पर से धूप में आईना दिखाए, घूरा-घरी किए और लोगों से

पूछे — बड़ी बहन ज्यादा हसीन हैं या छोटी? है ताज्जुब की बात कि नहीं?

शाहज़ादा — हमें तो तुम हसीन मालूम होती हो।

अब्बासी — हुजूर तो मुझे शरमिंदा करते हैं। अल्लाह जानता है, क्या मिजाज पाया है। यही हँसना-बोलना रह जाता है हुजूर!

शाहज़ादा — अब किसी तरकीब से ले चलो।

अब्बासी — हुजूर, भला मैं कैसे ले चलूँ! रईसों का घर, शरीफों की बहू-बेटियों में पराए मर्द का क्या काम।

शाहज़ादा — कोई तरकीब सोचो, आखिर किस दिन काम आओगी?

अब्बासी — आज तो किसी तरह मुमकिन नहीं। आज एक मिस आनेवाली हैं।

शाहज़ादा — फिर किसी तरकीब से मुझे वहाँ पहुँचा दो। आज तो आँखें सेंकने का खूब मौका है।

अब्बासी — अच्छा, एक तदबीर है। आज बाग ही में बैठक होगी। आप चल कर किसी दरख्त पर बैठ रहें।

शाहज़ादा — नहीं भाई, यह हमें पसंद नहीं। कोई देख ले तो नाहक उल्लू बनूँ। बस, तुम बाग़बान को गाँठ लो। यही एक तदबीर है।

अब्बासी ने आकर माली को लालच दिया। कहा — अगर शाहज़ादा को अन्दर पहुँचा दो तो दो अशर्फियाँ इनाम दिलवाऊँ। माली राजी हो गया। तब अब्बासी ने आकर शाहज़ादे से कहा — लीजिए हजरत, फतह है! मगर देखिए, धोती और मिर्जई पहननी पड़ेगी और मोटे कपड़े की भद्दी सी टोपी दीजिए, तब वहाँ पहुँच पाइएगा।

शाम को हुमायूँफर ने माली का वेश बनाया और माली के साथ बाग में पहुँचे तो देखा कि बाग के बीचोंबीच एक पक्का और ऊँचा चबूतरा है और चारों बहने कुर्सियों पर बैठी मिस फैरिंगटन से बातें कर रही हैं। माली ने फूलों का एक गुलदस्ता बना कर दिया और कहा — जा कर मेज पर रख दो। हुमायूँफर ने मिस साहब को झुक कर सलाम किया और एक कोने में चुपचाप खड़े हो गए।

सिपहआरा — हीरा-हीरा, यह कौन है?

हीरा — हुजूर, गुलाम है आपका। मेरा भांजा है।

सिपहआरा — क्या नाम है?

हीरा — लोग हुमायूँ कहते हैं हुजूर!

सिपहआरा — आदमी तो सलीकेदार मालूम होता है। अरे हुमायूँ, थोड़े फूल तोड़ ले और महरी को दे दे कि मेरे सिरहाने रख दे।

शाहज़ादा ने फूल तोड़ कर महरी को दिए और फूलों के साथ रूमाल में एक रुक्का बाँध दिया। खत का मजमून यह था -

'मेरी जान,

अब सब्र की ताकत नहीं। अगर जिलाना हो तो जिला लो, वरना कोई हिकमत काम न आएगी!

हुमायूँफर'

जब शाहज़ादा हुमायूँफर चले गए तो सिपहआरा ने माली से कहा — अपने भांजे को नौकर रख लो।

माली — हुजूर, सरकार ही का नमक तो खाता है! यों भी नौकर है, वों भी नौकर है।

सिपहआरा — मगर हुमायूँ तो मुसलमानों का नाम होता है।

माली — हाँ हुजूर, वह मुसलमान हो गया है।

दूसरे दिन शाम को सिपहआरा और हुस्नआरा बाग में आईं तो देखा, चबूतरे पर शतरंज के दो नक्शे खिंचे हुए हैं।

सिपहआरा — कल तक तो ये नक्शे नहीं थे। अहाहा, हम समझ गए। हुमायूँ माली ने बनाए होंगे।

माली — हाँ हुजूर, उसी ने बनाया है।

सिपहआरा — बहन, जब जानें कि नक्शा हल कर दो।

हुस्नआरा — बहुत टेढ़ा नक्शा है। इसका हल करना मुश्किल है (माली से) क्यों जी, तुम्हारे भांजे को शतरंज खेलना किसने सिखाया?

माली — हुजूर, उसको शौक है, लड़कपन से खेलता है।

हुस्नआरा — उससे पूछो, इस नक्शे को हल कर देगा?

माली — कल बुलवा दूँगा हुजूर!

सिपहआरा — इसका भांजा बड़ा मनचला मालूम होता है।

हुस्नआरा — हाँ, होगा। इस जिक्र को जाने दो।

सिपहआरा — क्यों-क्यों, बाजीजान! तुम्हारे चेहरे का रंग क्यों बदल गया?

हुस्नआरा — कल इसका जवाब दूँगी।

सिपहआरा — नहीं, आखिर बताओ तो? तुम इस वक़्त खफा क्यों हो?

हुस्नआरा — यह मिर्जा हुमायूँफर की शरारत है।

सिपहआरा — ओफ् ओह! यह हथकंडे!

हुस्नआरा — (माली से) सच-सच बता; यह हुमायूँ कौन है? खबरदार जो झूठ बोला!

सिपहआरा — भांजा है तेरा?

माली — हुजूर! हुजूर!

हुस्नआरा — हुजूर-हुजूर लगाई है, बताता नहीं। तेरा भांजा और यह नक्शे बनाए?

माली — हुजूर, मैं माली नहीं हूँ, जाति का कायस्थ हूँ, मगर घर-बार छोड़ कर बागवानी करने लगा। हमारा भांजा पढ़ा-लिखा हो तो कौन ताज्जुब की बात है।

हुस्नआरा — चल झूठे, सच-सच बता। नहीं अल्लाह जानता है, खड़े-खड़े निकलवा दूँगी।

सिपहआरा अपने दिल में सोचने लगी कि हुमायूँफर ने बेतौर पीछा किया। और फिर अब तो उनको खबर पहुँच ही गई है तो फिर माली बनने की क्या जरूरत है!

हुस्नआरा — खुदा गवाह है! सजा देने के काबिल आदमी है। भलमनसी के यह मानी नहीं हैं कि किसी के घर में माली या

चमार बन कर घुसे। यह हीरा निकाल देने लायक है। इसको कुछ चटाया होगा। जभी फिसल पड़ा।

माली के होश उड़ गए। बोला — हुजूर मालिक हैं। बीस बरस से इस सरकार का नमक खाता हूँ; मगर कोई कुसूर गुलाम से नहीं हुआ। अब बुढ़ापे में हुजूर यह दाग न लगाएँ।

हुस्नआरा — कल अपने भांजे को जरूर लाना।

सिपहआरा — अगर कुसूर हुआ है तो सच-सच कह दे।

माली — हुजूर, झूठ बोलने की तो मेरी आदत नहीं।

दूसरे दिन शाहज़ादा ने माली को फिर बुलवाया और कहा — आज एक बार और दिखा दो।

माली — हुजूर, ले चलने में तो गुलाम को उज्र नहीं, मगर डरता हूँ कि कहीं बुढ़ापे में दाग न लग जाय।

शाहज़ादा — अजी वह मौकूफ़ कर देंगी तो हम नौकर रख लेंगे।

माली — सरकार, मैं नौकरी को नहीं, इज्जत को डरता हूँ।

शाहज़ादा — क्या महीना पाते हो?

माली — 6 रुपए मिलते हैं हुजूर!

शाहज़ादा — आज से छः रुपए यहाँ से तुम्हारी जिंदगी भर मिला करेंगे। क्यों, हमारे आने के बाद औरतें कुछ कहती नहीं थीं?

माली — आपस में कुछ बातें करती थीं; मगर मैं सुन नहीं सका। तो मैं शाम को आऊँगा।

शाहज़ादा — तुम डरो नहीं, तुम्हारा नुकसान नहीं होने पाएगा।

माली तो सलाम करके रवाना हुआ और हुमायूँफर दुआ माँगने लगे कि किसी तरह शाम हो। बार-बार कमरे के बाहर जाते, बार-बार घड़ी की तरफ देखते। सोचे, आओ जरा सो रहें। सोने में वक़्त भी कट जायगा और बेकरारी भी कम हो जायगी। लेटे; मगर बड़ी देर तक नींद न आई। खाना खाने के बाद लेटे तो ऐसी नींद आई कि शाम हो गई। उधर सिपहआरा ने हीरा माली को अकेले में बुला कर डाँटना शुरू किया। हीरा ने रो कर कहा — नाहक अपने भांजे को लाया। नहीं तो यह लथाड़ क्यों सुननी पड़ती।

सिपहआरा — कुछ दीवाना हुआ है बुड्ढे! तेरा भांजा और इतना सलीकेदार? इतना हसीन?

हीरा — हुजूर, अगर भांजा न हो तो नाक कटवा डालूँ।

सिपहआरा — (महरी से) जरा तू इसे समझा दे कि अगर सच-सच बतला दे तो कुछ इनाम दूँ।

महरी ने माली को अलग ले जा कर समझाना शुरू किया — अरे भले आदमी बता दे। जो तेरा रत्ती भर नुकसान हो तो मेरा जिम्मा।

हीरा — इस बुढ़ौती में कलंक का टीका लगवाना चाहती हो?

महरी — अब मुझसे तो बहुत उड़ो नहीं, शाहज़ादा हुमायूँफर के सिवा और किसकी इतनी हिम्मत नहीं हो सकती। बता, थे वहीं कि नहीं?

हीरा — हाँ आए तो वही थे।

महरी — (सिपहआरा से) लीजिए हुजूर, अब इसे इनाम दीजिए।

सिपहआरा — अच्छा हीरा, आज जब वह आएँ तो यह कागज दे देना।

इत्तिफ़ाक़ से हुस्नआरा बेगम भी टहलती हुई आ गईं। वह भी दफ्ती पर एक शेर लिख लाई थीं। सिपहआरा को दे कर बोलीं — हीरा से कह दो, जिस वक़्त हुमायूँफर आएँ, यह दफ्ती दिखा दे।

सिपहआरा — ऐ तो बाजी, जब हुमायूँफर हों भी?

हुस्नआरा — कितनी सादी हो? जब हों भी?

सिपहआरा — अच्छा, हुमायूँफर ही सही! यह शेर तो सुनाओ।

हुस्नआरा — हमने यह लिखा है -

असीरे हिर्स वशहवत हर कि शुद नाकाम मीबाशद;
दरीं आतश कसे गर पुख्ता बाशद खाम मीबाशद।

(जो आदमी हिर्स और शहवत में कैद हो गया, वह नाकाम रहता है। इस आग में अगर कोई पका भी हो तो भी कच्चा रहता है।)

हीरा ने झुक कर सलाम किया और शाम को हुमायूँफर के मकान पहुँचा।

हुमायूँ — आ गए? अच्छा, ठहरो। आज बहुत सोए।

हीरा — खुदावंद, बहुत खफा हुई और कहा कि हम तुमको मौक़ूफ़ कर देंगे।

हुमायूँ — तुम इसकी फिक्र न करो।

हीरा — हुजूर, मुझे आध सेर आटे से मतलब है।

झुटपुटे वक़्त हुमायूँ हीरा के साथ बाग में पहुँचे। यहाँ हीरा ने दोनों बहनों के लिखे हुए शेर हुमायूँफर को दिखाए। अभी वह

पढ़ ही रहे थे कि हुस्नआरा बाग में आ गई और हीरा को बुला कर कहा — तुम्हारा भांजा आया?

हीरा — हाजिर है हुजूर!

हुस्नआरा — बुलाओ।

हुमायूँ ने आकर सलाम किया और गरदन झुका ली।

हुस्नआरा — तुम्हारा क्या नाम है जी?

हुमायूँ — हुमायूँ।

हुस्नआरा — क्यों साहब, मकान कहाँ है?

हुमायूँ —

घर बार से क्या फकीर को काम;
क्या लीजिए छोड़े गाँव का नाम?

हुस्नआरा — अक्खाह, आप शायर भी हैं।

हुमायूँ — हुजूर, कुछ बक लेता हूँ।

हुस्नआरा — कुछ सुनाओ।

हुमायूँ — हुक्म हो तो जमीन पर बैठ जाऊँ।

सिपहआरा — बड़े गुस्ताख हो तुम। कहीं नौकर हो?

हुमायूँ — जी हाँ हुज़ूर, आजकल शाहज़ादा हुमायूँफर की बहन के यहाँ नौकर हूँ।

इतने में बड़ी बेगम आ गईं। हुमायूँफर मारे खौफ के भाग गए।

67

सुरैया बेगम ने आज़ाद मिर्जा के कैद होने की खबर सुनी तो दिल पर बिजली सी गिर पड़ी। पहले तो यकीन न आया, मगर जब खबर सच्ची निकली तो हाय-हाय करने लगी।

अब्बासी — हुजूर, कुछ समझ में नहीं आया। मगर उनके एक अज़ीज हैं। वह पैरवी करने वाले हैं। रुपए भी खर्च करेंगे।

सुरैया बेगम — रुपया निगोड़ा क्या चीज है। तुम जा कर कहो कि जितने रुपयों की जरुरत हो, हमसे लें।

अब्बासी आज़ाद मिर्जा के चाचा के पास जा कर बोली — बेगम साहब ने मुझे आपके पास भेजा है और कहा है कि रुपए की जरूरत हो तो हम हाजिर हैं। जितने रुपए कहिए, भेज दें।

यह बड़े मिर्जा आज़ाद से भी बढ़ कर बगड़ेबाज थे। सुरैया बेगम के पास आकर बोले — क्या कहूँ बेगम साहब, मेरी तो इज्जत खाक में मिल गई।

सुरैया बेगम — या मेरे अल्लाह, क्या यह गजब हो गया?

बड़े मिर्जा — क्या करूँ, सारा जमाना तो उनका दुश्मन है। पुलिस से अदावत, अमलों से तकरार। मेरे पास इतने रुपए कहाँ कि पैरवी करूँ। वकील बगैर लिए-दिए मानते नहीं। जान अजाब में है।

सुरैया बेगम — इसकी तो आप फिक्र ही न करें। सब बंदोबस्त हो जायगा। सौ दो सौ, जो कहिए, हाजिर है।

बड़े मिर्जा — फौजदारी के मुकदमे में ऊँचे वकील जरा लेते बहुत हैं। मैं कल एक बैरिस्टर के पास गया था। उन्होंने कहा कि एक पेशी के दो सौ लूँगा। अगर आप चार सौ रुपए दे दें तो उम्मीद है कि शाम तक आज़ाद तुम्हारे पास आ जायँ।

बेगम साहब ने चार सौ रुपए दिलवा दिए। बड़े मिर्जा रुपए ले कर बाहर गए और थोड़ी देर के बाद आकर चारपाई पर धम से गिर पड़े और बोले — आज तो इज्जत ही गई थी, मगर खुदा ने बचा लिया। मैं जो यहाँ से गया तो एक साहब ने आकर कहा — आज़ाद मिर्जा को थानेदार हथकड़ी पहना कर चौक से ले

जाएगा। बस, मैंने अपना सिर पीट लिया। इत्तिफ़ाक़ से एक रिसालदार मिल गए। उन्होंने मेरी यह हालत देखी तो कहा — दो सौ रुपए दो तो पुलिसवालों को गाँठ लूँ। मैंने फौरन दो सौ रुपए निकाल कर उनके हाथ पर रखे। अब दो सौ और दिलवाइए तो वकीलों के पास जाऊँ। बेगम ने दो सौ रुपए और दिलवा दिए। बड़े मिर्जा दिल में खुश हुए, अच्छा शिकार फँसा। रुपए ले कर चलते हुए।

इधर सुरैया बेगम रो रो कर आँखें फोड़े डालती थी। महरियाँ समझातीं, दिन-रात रोने से क्या फायदा, अल्लाह पर भरोसा रखिए; उसकी मर्जी हुई तो आज़ाद मिर्जा दो-चार दिन में घर आएँगे। मगर ये नसीहतें बेगम साहब पर कुछ असर न करती थीं। एक दिन एक महरी ने आकर कहा — हुजूर, एक औरत ड्योढ़ी पर खड़ी है। कहिए तो बुलाऊँ। बेगम ने कहा — बुला लो। वह औरत परदा उठा कर आँगन में दाखिल हुई और झुक कर बेगम को सलाम किया। उसकी सजधज सारी दुनिया की औरतों से निराली थी। गुलबदन का चुस्त पाजामा, बाँका अमामा, मखमल का दगला, उस पर हलमा कारचोबी का काम, हाथ में आबनूस का पिंजड़ा, उसमें एक चिड़िया बैठी हुई। सारा घर उसी की ओर देखने लगा। सब की सब दंग थीं कि या खुदा, यह उठती जवानी, गुलाब सा रंग और यों गली-कूचों की सैर करती फिरे!

अब्बासी बोली — क्यों बीबी तुम्हारा मकान कहाँ है? और यह पहनावा किस मुल्क का है? तुम्हारा नाम क्या है बीबी?

औरत — हमारा घर मन-चले जवानों का दिल है और नाम माशूक।

यह कह कर उसने पिंजड़ा सामने रख दिया और यों चहकने लगी — हुजूर, आपको यकीन न आएगा। कल मैं परिस्तान में बैठी वहाँ की सैर देख रही थी कि पहाड़ पर बड़े जोरों की आँधी आई और इतनी गर्द उड़ी कि आसमान के नीचे एक और आसमान नजर आने लगा। इसके साथ ही घड़घड़ाहट की आवाज आई और एक उड़नखटोला आसमान से उतर पड़ा।

अब्बासी — अरे, उड़नखटोला! इसका जिक्र तो कहानियों में सुना करते थे।

औरत — बस हुजूर, उस उड़नखटोले में से एक सचमुच की परी उतरी और दम के दम में खटोला गायब हो गया। वह परी असल में परी न थी, वह एक इनसान था। मैं उसे देखते ही हजार जान से आशिक हो गई। अब सुना है कि वह बेचारा कहीं कैद हो गया है।

सुरैया बेगम — क्या, कैद है! भला, उस जवान का नाम भी तुम्हें मालूम है?

औरत — जी हाँ, हुजूर, मैंने पूछ लिया है। उसे आज़ाद कहते हैं।

सुरैया बेगम — अरे! यह तो कुछ और ही गुल खिला। किसी ने तुम्हें बहका तो नहीं दिया?

औरत — हुजूर, वह आपके यहाँ भी आए थे। आप भी उन पर रीझी हुई हैं।

सुरैया बेगम — मुझे तो तुम्हारी सब बातें दीवानों की बकझक मालूम होती हैं। कहाँ, परी, कहाँ आज़ाद, कहाँ उड़नखटोला! समझ में कोई बात नहीं आती।

औरत — इन बातों को समझने के लिए जरा अक्ल चाहिए।

यह कह कर उसने पिंजड़ा उठाया और चली गई।

थोड़ी देर में दारोगा साहब ने अन्दर आकर कहा — दरवाजे पर थानेदार और सिपाही खड़े हैं। मिर्जा आज़ाद जेल से भाग निकले हैं। और वही आज औरत के भेस में आए थे। बेगम साहब के होश-हवास गायब हो गए! अरे, यह आज़ाद थे!

आज़ाद अपनी फौज के साथ एक मैदान में पड़े हुए थे कि एक सवार ने फौज में आकर कहा — अभी बिगुल दो। दुश्मन सिर पर आ पहुँचा। बिगुल की आवाज सुनते ही अफसर, प्यादे, सवार सब चौंक पड़े। सवार ऐंठते हुए चले, प्यादे अकड़ते हुए बढ़े। एक बोला — मार लिया है। दूसरे ने कहा — भगा दिया है। मगर अभी तक किसी को मालूम नहीं कि दुश्मन कहाँ है। मुखबिर दौड़ाए गए तो पता चला कि रूस की फौज दरिया के उस पार पैर जमाए खड़ी है। दरिया पर पुल बनाया जा रहा है और अनोखी बात यह थी कि रूसी फौज के साथ एक लेडी, शहसवारों की तरह रान-पटरी जमाए, कमर से तलवार लटकाए, चेहरे पर नकाब से छिपाए, अजब शोखी और बाँकपन के साथ लड़ाई में शरीक होने के लिए आई है। उसके साथ दस जवान औरतें घोड़ों पर सवार चली आ रही हैं। मुखबिर ने इन औरतें की कुछ ऐसी तारीफ की कि लोग सुन कर दंग रह गए। बोला — इस रईसज़ादी ने कसम खाई है कि उम्र भर क्वाँरी रहूँगी। इसका बाप एक मशहूर जनरल था, उसने अपनी प्यारी बेटी को शहसवारी का फन खूब सिखाया था। रूस में बस यही एक औरत है जो तुर्कों से मुकाबला करने के लिए मैदान में आई है। उसने कसम खाई है कि आज़ाद का सिर ले कर जार के कदमों पर रख दूँगी।

आज़ाद — भला, यह तो बतलाओ कि अगर वह रईस की लड़की है तो उसे मैदान से क्या सरोकार? फिर मेरा नाम उसको क्योंकर मालूम हुआ?

मुखबिर — अब यह तो हुजूर, वही जानें, उनका नाम किस क्लारिसा है। वह आपसे तलवार का मुकाबिला करना चाहती हैं। मैदान में अकेले आप से लड़ेंगी, जिस तरह पुराने जमाने में पहलवानों में लड़ाई का रिवाज था।

आज़ाद पाशा के चेहरे का रंग उड़ गया। अफसरों ने उनको बनाना शुरू किया। आज़ाद ने सोचा, अगर कबूल किए लेता हूँ तो नतीजा क्या! जीता, तो कोई बड़ी बात नहीं। लोग कहेंगे, लड़ना-भिड़ना औरतों का काम नहीं। अगर चोट खाई तो जग की हँसाई होगी। मिस मीडा ताने देंगी। अलारक्खी आड़े हाथों लेंगी कि एक छोकरी से चरका खा गए। सारी डींग खाक में मिल गई। और अगर इनकार करते हैं तो भी तालियाँ बजेंगी कि एक नाजुकबदन औरत के मुकाबिले से भागे। तब खुद कुछ फैसला न कर सके तो पूछा — दिल्लगी तो हो चुकी, अब बतलाइए कि मुझे क्या करना चाहिए?

जनरल — सलाह यही है कि अगर आपको बहादुरी का दावा है तो कबूल कर लीजिए, वरना चुपके ही रहिए।

आज़ाद — जनाब, खुदा ने चाहा तो एक चोट न खाऊँ और बेदाग लौट आऊँ। औरत लाख दिलेर हो, फिर भी औरत है!

जनरल — यहाँ मूँछों पर ताव दे लीजिए, मगर वहाँ कलई खुल जायगी।

अनवर पाशा — जिस वक़्त वह हसीना हथियार कस कर सामने आएगी, होश उड़ जाएँगे। गश पर गश आएँगे। ऐसी हसीन औरत से लड़ना क्या कुछ हँसी है? हाथ न उठेगा। मुँह की खाओगे। उसकी एक निगाह तुम्हारा काम तमाम कर देगी।

आज़ाद — इसकी कुछ परवा नहीं! यहाँ तो दिली आरज़ू है कि किसी नाजनीन की निगाहों के शिकार हों।

यही बातें हो रही थी कि एक आदमी ने कहा — कोई साहब हजरत आज़ाद को ढूँढ़ते हुए आए हैं। अगर हुक्म हो, तो बुला लाऊँ। बड़े तीखे आदमी हैं। मुझसे लड़ पड़े थे। आज़ाद ने कहा, उसे अन्दर आने दो। सिपाही के जाते ही मियाँ खोजी अकड़ते हुए आ पहुँचे।

आज़ाद — मुद्दत के बाद मुलाकात हुई, कोई ताजा खबर कहिए।

खोजी — कमर तो खोलने दो, अफीम घोलूँ, चुस्की लगाऊँ तो होश आए। इस वक़्त थका-माँदा, मरा-मिटा आ रहा हूँ। साँस तक नहीं समाती है।

आज़ाद — मिस मीडा का हाल तो कहो!

खोजी — रोज कुम्मैत घोड़े पर सवार दरिया किनारे जाती हैं। रोज अखबार पढ़ती हैं। जहाँ तुम्हारा नाम आया, बस, रोने लगीं।

आज़ाद — अरे, यह अँगुली में क्या हुआ है जी! जल गई थी क्या?

खोजी — जल नहीं गई थी जी, यह अपनी सूरत गले का हार हुई।

आज़ाद — ऐ, यह माजरा क्या है? एक कान कौन कतर ले गया है?

खोजी — न हम इतने हसीन होते, न परियाँ जान देतीं!

आज़ाद — नाक भी कुछ चिपटी मालूम होती है।

खोजी — सूरत, सूरत! यही सूरत बला-ए-जान हो गई। इसी के हाथों यह दिन देखना पड़ा।

आज़ाद — सूरत-मूरत नहीं, आप कहीं से पिट कर आए हैं। कमजोर, मार खाने की निशानी; किसी से भिड़ पड़े होंगे। उसने ठोंक डाला होगा! यही बात हुई है न?

खोजी — अजी, एक परी ने फूलों की छड़ियों से सजा दी थी।

आज़ाद — अच्छा, कोई खत-वत लाए हो? या चले आए यों ही हाथ झुलाते?

खोजी — दो-दो खत हैं। एक मिस मीडा का, दूसरा हुरमुज जी का।

आज़ाद और खोजी नहर के किनारे बैठे बातें कर रहे थे। अब जो आता है, खोजी को देख कर हँसता है। आखिर खोजी बिगड़ कर बोले — क्या भीड़ लगाई है? चलो, अपना काम करो।

आज़ाद — तुमको किसी से क्या वास्ता, खड़े रहने दो।

खोजी — अजी नहीं, आप समझते नहीं हैं। ये लोग नजर लगा देंगे।

आज़ाद — हाँ, आपका कल्ला-ठल्ला देख कर नजर लग जाय तो ताज्जुब भी नहीं।

खोजी — अजी, वह एक सूरत ही क्या कम है! और कसम ले लो कि किसी मर्दक को अब तक मालूम हुआ हो कि हम इतने हसीन हैं! और हमें इसका कुछ गरूर भी नहीं — मुतलक नहीं गरूर जमालोकमाल पर।

आज़ाद — जी हाँ, बाकमाल लोग कभी गरूर नहीं करते, सीधे-सादे होते ही हैं। अच्छा, आप अफीम घोलिए, साथ है या नहीं?

खोजी — जी नहीं, और क्या! आपके भरोसे आते हैं? अच्छा, लाओ, निकलवाओ। मगर जरा उम्दा हो। कमसरियट के साथ तो होती होगी?

आज़ाद — अब तुम मरे। भला यहाँ अफीम कहाँ? और कमसरियट में? क्या खूब!

खोजी — तब तो बे-मौत मरे। भई, किसी से माँग लो।

आज़ाद — यहाँ अफीम का किसी को शौक ही नहीं।

खोजी — इतने शरीफजादे हैं और अफीमची एक भी नहीं? वाह!

आज़ाद — जी हाँ, सब गँवार हैं। मगर आज दिल्लगी होगी, जब अफीम न मिलेगी और तुम तड़पोगे, बिलबिलाओगे।

खोजी — यह तो अभी से जम्हाइयाँ आने लगीं। कुछ तो फिक्र करो यार!

आज़ाद — अब यहाँ अफीम न मिलेगी। हाँ, करौलियाँ जितनी चाहो, मँगा दूँ।

खोजी — (अफीम की डिबिया दिखा कर) यह भरी है अफीम! क्या उल्लू समझे थे! आने के पहले ही मैंने हुरमुज जी से कहा कि हुजूर, अफीम मँगवा दें। अच्छा, यह लीजिए हुरमुज जी का खत।

आज़ाद ने खत खोला तो यह लिखा था —

'माई डियर आज़ाद,

जरा खोजी से खैर व आफ़ियत तो पूछिए, इतना पिटे कि दो दाँत टूट गए, कान कट गए और घूँसे और मुक्के खाए। आप इनसे इतना पूछिए कि लालारुख कौन है?

तुम्हारा

हुरमुज।'

आज़ाद — क्यों साहब, यह लालारुख कौन है?

खोजी — ओफ ओह, हम पर चकमा चल गया। वाहरे हुरमुज जी, वल्लाह! अगर नमक न खाए होता तो जा कर करौली भोंक देता।

आज़ाद — नहीं, तुम्हें वल्लाह, बताओ तो, यह लालारुख कौन है?

खोजी — अच्छा हुरमुज जी समझेंगे?

सौदा करेंगे दिल का किसी दिलरुबा के साथ

इस बावफा को बेचेंगे एक बेवफा के हाथ।

हाय लालारुख, जान जाती है, मगर मौत भी नहीं आती।

आज़ाद — पिटे हुए हो, कुछ हाल तो बतलाओ। हसीन है?

खोजी — (झल्ला कर) जी नहीं, हसीन नहीं है। काली-कलूटी हैं। आप भी वल्लाह, निरे चोंच ही रहे! भला, किसी ऐसी-वैसी की जुर्रत कैसे होती कि हमारे साथ बात करती! याद रखो, हसीन पर जब नजर पड़ेगी, हसीन ही की पड़ेगी। दूसरे की मजाल नहीं।

'गालिब' इन सीमीतनों के वास्ते,

चाहनेवाला भी अच्छा चाहिए।

आज़ाद — अच्छा, अब लालारुख का तो हाल बताओ।

खोजी — अजी, अपना काम करो, इस वक़्त दिल काबू में नहीं है। वह हुस्न है कि आपके बाबाजान ने भी न देखा होगा। मगर हाथों में चुल है। घंटे भर में पाँच सात बार जरूर चपतियाती थीं। खोपड़ी पिलपिली कर दी। बस, हमको इसी बात से नफरत थी। वरन, नखशिख से दुरुस्त! और चेहरा चमकता हुआ, जैसे आबनूस! एक दिन दिल्लगी-दिल्लगी में उठ कर एक पचास जूते लगा दिए, तड़-तड़-तड़! हैं, हैं, यह क्या हिमाकत है, हमें यह दिल्लगी पसंद नहीं, मगर वह सुनती किसकी हैं! अब फरमाइए, जिस पर पचास जूते पड़ें, उसकी क्या गति होगी। एक रोज हँसी-

हँसी में कान काट लिया। एक दिन दुकान पर खड़ा हुआ सौदा खरीद रहा था। पीछे से आकर दस जूते लगा दिए। एक मरतबे एक हौज में हमको ढकेल दिया। नाक टूट गई। मगर हैं लाखों में लाजवाब।

तर्जे-निगाह ने छीन लिए जाहिदों के दिल,
आँखें जो उनकी उठ गईं दस्ते दुआ के साथ।

आज़ाद — तो यह कहिए, हँसी-हँसी में खूब जूतियाँ खाईं आपने!

खोजी — फिर यह तो है ही, और इश्क कहते किसे हैं? एक दफा मैं सो रहा था, आने के साथ ही इस जोर से चाबुक जमाई कि मैं तड़प कर चीख उठा। बस, आग हो गईं कि हम पीटें, तो तुम रोओ क्यों? जाओ, बस; अब हम न बोलेंगी। लाख मनाया, मगर बात तक न की। आखिर यह सलाह ठहरी कि सरे बाजार वह हमें चपतियाएँ और हम सिर झुकाए खड़े रहें।

लब ने जो जिलाया तो तेरी आँख ने मारा;
कातिल भी रहा साथ मसीहा के हमेशा।
परदा न उठाया कभी चेहरा न दिखाया;
मुश्ताक रहे हम रुखे जेबा के हमेशा।

आज़ाद — किसी दिन हँसी-हँसी में आपको जहर न खिला दे?

खोजी- क्यों साहब खिला दें क्यों नहीं कहते? कोई कंडेवाली मुकर्रर की है। वह भी रईसजादी हैं! आपकी मिस मीडा पर गिर पड़ें तो यह कुचल जायँ। अच्छा हमारी दास्तान तो सुन चुके, अपनी बीती कहो।

आज़ाद — एक नाजनीन हमसे तलवार लड़ना चाहती है। क्या राय है? पैगाम भेजा है कि किसी दिन आज़ाद पाशा से और हमसे अकेले तलवार चले।

खोजी — मगर तुमने पूछा तो होता कि सिन क्या है? शक्ल-सूरत कैसी है?

आज़ाद — सब पूछ चुके हैं। रूस में उसका सानी नहीं है। मिस मीडा यहाँ होतीं तो खूब दिल्लगी रहती। हाँ, तुमने तो उनका खत दिया ही नहीं। तुम्हारी बातों में ऐसा उलझा कि उसकी याद ही न रही।

खोजी ने मीडा का खत निकाल कर दिया। यह मजमून था —

'प्यारे आज़ाद,

आजकल अखबारों ही में मेरी जान बसती है। मगर कभी-कभी खत भी तो भेजा करो। यहाँ जान पर बन आई है, और तुमने वह

चुप्पी साधी है कि खुदा की पनाह। तुमसे इस बेवफाई की उम्मीद न थी।

यों तो मुँह-देखे की होती है मुहब्बत सबको,
जब मैं जानूँ कि मेरे बाद मेरा ध्यान रहे।

तुम्हारी

मीडा।'

69

दूसरे दिन आज़ाद का उस रूसी नाजनीन से मुकाबिला था। आज़ाद को रातभर नींद नहीं आई। सवेरे उठ कर बाहर आए तो देखा कि दोनों तरफ की फौजें आमने-सामने खड़ी हैं और दोनों तरफ से तोपें चल रही हैं।

खोजी दूर से एक ऊँचे दरख्त की शाख पर बैठे लड़ाई का रंग देख रहे थे और चिल्ला रहे थे, होशियार, होशियार! यारों, कुछ खबर भी है? हाय! इस वक़्त अगर तोड़ेदार बंदूक होती तो परे के परे साफ कर देता। इतने में आज़ाद पाशा ने देखा कि रूसी फौज के सामने एक हसीना कमर में तलवार लटकाए, हाथ में

नेजा लिए, घोड़े पर शान से बैठी सिपाहियों को आगे बढ़ने के लिए ललकार रही है। आज़ाद की उस पर निगाह पड़ी तो दिल में सोचे, खुदा इसे बुरी नजर से बचाए। यह तो इस काबिल है कि इसकी पूजा करे। यह, और मैदान जंग! हाय-हाय, ऐसा न हो कि उस पर किसी का हाथ पड़ जाय। गजब की चीज है यह हुस्न, इंसान लाख चाहता है, मगर दिल खिंच ही जाता है, तबीयत आ ही जाती है।

उस हसीना ने जो आज़ाद को देखा तो यह शेर पढ़ा —

सँभल के रखियो कदम राहे-इश्क में मजनूँ,
कि इस दयार में सौदा बरहनः पाई है।

यह कह कर घोड़ा बढ़ाया। आज़ाद के घोड़े की तरफ झुकी और झुकते ही उन पर तलवार का वार किया। आज़ाद ने वार खाली दिया और तलवार को चूम लिया। तुर्कों ने इस जोर से नारा मारा कि कोसों तक मैदान गूँजने लगा। मिस कलरिसा ने झल्ला कर घोड़े को फेरा और चाहा कि आज़ाद के दो टुकड़े कर दे, मगर जैसे ही हाथ उठाया, आज़ाद ने अपने घोड़े को आगे बढ़ाया और तलवार को अपनी तलवार से रोक कर हाथ से उस परी का हाथ पकड़ लिया। तुर्कों ने फिर नारा मारा और रूसी झेंप गए। मिस क्लारिसा भी लजाई और मारे गुस्से के झल्ला कर वार करने लगीं। बार-बार चोट आती थी, मगर आज़ाद की

यह कैफियत थी कि कुछ चोटें तलवार पर रोकीं और कुछ खाली दीं। आज़ाद उससे लड़ तो रहे थे, मगर वार करते दिल काँपता था। एक दफा उस शेरदिल औरत ने ऐसा हाथ जमाया कि कोई दूसरा होता, तो उसकी लाश जमीन पर फड़कती नजर आती, मगर आज़ाद ने इस तरह बचाया कि हाथ बिलकुल खाली गया। जब उस खातून ने देखा कि आज़ाद ने एक चोट भी नहीं खाई तो फिर झुँझला कर इतने वार किए कि दम लेना भी मुश्किल हो गया। मगर आज़ाद ने हँस-हँस कर चोटें बचाईं। आखिर उसने ऐसा तुला हुआ हाथ घोड़े की गरदन पर जमाया कि गरदन कट कर दूर जा गिरी। आज़ाद फौरन कूद पड़े और चाहते थे कि उछल कर मिस क्लारिसा के हाथ से तलवार छीन लें कि उसने घोड़े के चाबुक जमाई और अपनी फौज की तरफ चली। आज़ाद सँभलने भी न पाए थे कि घोड़ा हवा हो गया। आज़ाद घोड़े पर लटके रह गए।

जब घोड़ा रूस की फौज में दाखिल हुआ तो रूसियों ने तीन बार खुशी की आवाजें लगाईं और कोई चालीस-पचास आदमियों ने आज़ाद को घेर लिया। दस आदमियों ने एक हाथ पकड़ा, पाँच ने दूसरा हाथ। दो-चार ने टाँग ली। आज़ाद बोले — भई, अगर मेरा ऐसा ही खौफ है तो मेरे हथियार खोल लो और कैद कर दो। दस आदमियों का पहरा रहे। हम भाग कर जायँगे कहा?

अगर तुम्हारे यही हथकंडे हैं तो दस पाँच दिन में तुर्क जवान आप ही आप बँधे चले आएँगे। मिस क्लारिसा की तरह पंद्रह-बीस परियाँ मोरचे पर जायँ तो शायद तुर्की की तरफ से गोलंदाजी ही बन्द हो जाय!

एक सिपाही – टँगे हुए चले आए, सारी दिलेरी धरी रह गई!

दूसरा सिपाही – वाह री क्लारिसा! क्या फुर्ती है!

आज़ाद – इसमें तो शक नहीं कि इस वक़्त शिकार हो गए। मिस क्लारिसा की अदा ने मार डाला।

एक अफसर – आज हम तुम्हारी गिरफ्तारी का जश्न मनाएँगे।

आज़ाद – हम भी शरीक होंगे। भला, क्लारिसा भी नाचेंगी?

अफसर – अजी, वह आपको अँगुलियों पर नचाएँगी। आप हैं किस भरोसे?

आज़ाद – अब तो खुदा ही बचाए तो बचें। बुरे फँसे।

तेरी गली में हम इस तर से हैं आए हुए;
शिकार हो कोई जिस तरह चोट खाए हुए।

अफसर – आज तो हम फूले नहीं समाते। बड़े मूढ़ को फाँसा।

आज़ाद – अभी खुश हो लो; मगर हम भाग जाएँगे! मिस क्लारिसा को देख कर तबीयत लहराई, साथ चले आए।

अफसर — वाह, अच्छे जवाँमर्द हो! आए लड़ने और औरत को देख फिसल पड़े। सूरमा कहीं औरत पर फिसला करते हैं?

आज़ाद — बूढ़े हो गए हो न! ऐसा तो कहा ही चाहो।

अफसर — हम तो आपकी शहसवारी की बड़ी धूम सुनते थे। मगर बात कुछ और ही निकली। अगर आप मेरे मेहमान न होते तो हम आपके मुँह पर कह देते कि आप शोहदे हैं। भले आदमी, कुछ तो गैरत चाहिए।

इतने में रूसी सिपाही ने आकर अफसर के हाथ में एक खत रख दिया। उसने पढ़ा तो यह मजमून था —

(1) हुक्म दिया जाता है कि मियाँ आज़ाद को साइबेरिया के उन मैदानों में भेजा जाय, जो सबसे ज्यादा सर्द हैं।

(2) जब तक यह आदमी जिंदा रहे, किसी से बोलने न पाए। अगर किसी से बात करे तो दोनों पर सौ-सौ बेंत पड़ें।

(3) खाना सिर्फ एक वक़्त दिया जाय। एक दिन आध सेर उबाला हुआ साग और दूसरे दिन गुड़ की रोटी। पानी के तीन कटोरे रख दिए जायँ, चाहे एक ही बार पी जाय चाहे दस बार पिए।

(4) दस सेर आटा रोज पीसे और दो घंटे रोज दलेल बोली जाय। चक्की का पाट सिर पर रख कर चक्कर लगाए। जरा दम न लेने पाए।

(5) हफ्ते में एक बार बरफ में खड़ा कर दिया जाय और बारीक कपड़ा पहनने को दिया जाय।

आज़ाद – बात तो अच्छी है, गरमी निकल जायगी।

अफसर – इस भरोसे भी न रहना। आधी रात को सिर पर पानी का तड़ेड़ा रोज दिया जायगा।

आज़ाद मुँह से तो हँस रहे थे मगर दिल काँप रहा था कि खुदा ही खैर करे।

ऊपर से हुक्म आ गया तो फरियाद किससे करें और फरियाद करें भी तो सुनता कौन है? बोले, खत्म हो गया या और कुछ है।

अफसर – तुम्हारे साथ इतनी रियायत की गई है कि अगर मिस क्लारिसा रहम करें तो कोई हलकी सजा दी जाय।

आज़ाद – तब तो वह जरूर ही माफ कर देंगी।

यह कह कर आज़ाद ने यह शेर पढ़ा –

खोल दी है जुल्फ किसने फूल से रुखसार पर?
छा गई काली घटा है आन कर गुलजार पर।

अफसर — अब तुम्हारे दीवानापन में हमें कोई शक न रहा।

आज़ाद — दीवाना कहो, चाहे पागल बनाओ। हम तो मरमिटे।

सख्तियाँ ऐसी उठाईं इन बुतों के हिज्र में!
रंज सहते-सहते पत्थर सा कलेजा हो गया।

70

शाम के वक़्त हलकी-फुलकी और साफ-सुथरी छोलदारी में मिस क्लारिसा बनाव-चुनाव करके एक नाजुक आराम-कुर्सी पर बैठी थी। चाँदनी निखरी हुई थी, पेड़ और पत्ते दूध में नहाये हुए और हवा आहिस्ता-आहिस्ता चल रही थी! उधर मियाँ आज़ाद कैद में पड़े हुए हुस्नआरा को याद करके सिर धुनते थे कि एक आदमी ने आकर कहा — चलिए, आपको मिस साहब बुलाती हैं। आज़ाद छोलदारी के करीब पहुँचे तो सोचने लगे, देखें यह किस तरह पेश आती है। मगर कहीं साइबेरिया भेज दिया तो बेमौत ही मर जाएँगे। अन्दर जा कर सलाम किया और हाथ बाँध कर खड़े हो गए। क्लारिसा ने तीखी चितवन कर कहा — कहिए मिजाज ठंडा हुआ या नहीं?

आज़ाद – इस वक़्त तो हुजूर के पंजे में हूँ, चाहे कत्ल कीजिए, चाहे सूली दीजिए।

क्लारिसा – जी तो नहीं चाहता कि तुम्हें साइबेरिया भेजूँ, मगर वजीर के हुक्म से मजबूर हूँ! वजीर ने मुझे अख्तियार तो दे दिया है कि चाहूँ तो तुम्हें छोड़ दूँ, लेकिन बदनामी से डरती हूँ। जाओ रुखसत!

फौज के अफसर ने हुक्म दिया कि सौ सवार आज़ाद को ले कर सरहद पर पहुँचा आएँ। उनके साथ कुछ दूर चलने के बाद आज़ाद ने पूछा – क्यों यारो, अब जान बचने की भी कोई सूरत है या नहीं?

एक सिपाही – बस, एक सूरत है कि जो सवार तुम्हारे साथ जायँ वह तुम्हें छोड़ दें।

आज़ाद – भला, वे लोग क्यों छोड़ने लगे?

सिपाही – तुम्हारी जवानी पर तरस आता है। अगर हम साथ चले तो जरूर छोड़ देंगे।

तीसरे दिन आज़ाद पाशा साइबेरिया जाने को तैयार हुए। सौ सिपाही पहरे जमाए हुए, हथियारों से लैस, उनके साथ चलने को तैयार थे। जब आज़ाद घोड़े पर सवार हुए तो हजारों आदमी

उनकी हालत पर अफसोस कर रहे थे। कितनी ही औरतें रूमाल से आँसू पोंछ रही थीं। एक औरत इतनी बेकरार हुई कि जा कर अफसर से बोली — हुजूर, यह आप बड़ा गजब करते हैं। ऐसे बहादुर आदमी को आप साइबेरिया भेज रहे हैं।

अफसर — मैं मजबूर हूँ। सरकारी हुक्म की तामील करना मेरा फर्ज है।

दूसरी स्त्री — इस बेचारे की जान का खुदा हाफिज है। बेकसूर जान जाती है।

तीसरी स्त्री — आओ, सब की सब मिल कर चलें और मिस साहब से सिफारिश करें। शायद दिल पसीज जाय।

ये बातें करके वह कई औरतों के साथ मिस क्लारिसा के पास जा कर बोलीं — हुजूर, यह क्या गजब करती हैं! अगर आज़ाद मर गए तो आपकी कितनी बड़ी बदनामी होगी?

क्लारिसा — उनको छोड़ना मेरे इमकान से बाहर है।

वह स्त्री — कितनी जालिम! कितनी बेरहम हो! जरा आज़ाद की सूरत तो चल कर देख लो।

क्लारिसा — हम कुछ नही जानते!

अब तक तो आज़ाद को उम्मीद थी कि शायद मिस क्लारिसा मुझ पर रहम करें लेकिन जब इधर से कोई उम्मीद न रही और मालूम हो गया कि बिना साइबेरिया गए जान न बचेगी तो रोने लगे। इतने जोर से चीखे कि मिस क्लारिसा के बदन के रोएँ खड़े हो गए और थोड़ी ही दूर चले थे कि घोड़े से गिर पड़े।

एक सिपाही — अरे यारो, अब यह मर जायगा।

दूसरा सिपाही — मरे या जिए, साइबेरिया तक पहुँचाना जरूरी है।

तीसरा सिपाही — भई, छोड़ दो। कह देना, रास्ते में मर गया।

चौथा सिपाही — हमारी फौज में ऐसा खूबसूरत और कड़ियल जवान दूसरा नहीं है। हमारी सरकार को ऐसे बहादुर अफसर की कदर करनी चाहिए थी।

पाँचवाँ सिपाही — अगर आप सब लोग एक-राय हों तो हम इसकी जान बचाने के लिए अपनी जान खतरे में डालें। मगर तुम लोग साथ न दोगे।

छठा सिपाही — पहले इसे होश में लाने की फिक्र तो करो।

जब पानी में खूब छींटे दिए गए तो आज़ाद ने करवट बदली। सवारों को जान में जान आई। सब उनको ले कर आगे बढ़े।

71

आज़ाद तो साइबेरिया की तरफ रवाना हुए, इधर खोजी ने दरख्त पर बैठे-बैठे अफीम की डिबिया निकाली। वहाँ पानी कहाँ? एक आदमी दरख्त के नीचे बैठा था। आपने उससे कहा — भाईजान, जरा पानी पिला दो।

उसने ऊपर देखा, तो एक बौना बैठा हुआ है। बोला — तुम कौन हो?

दिल्लगी यह हुई कि वह फ्रांसीसी था। खोजी उर्दू में बात करते थे, वह फ्रांसीसी में जवाब देता था।

खोजी — अफीम घोलेंगे मियाँ! जरा सा पानी दे डालो भाई!

फ्रांसीसी — वाह, क्या सूरत है! पहाड़ पर न जा कर बैठो?

खोजी — भई वाह रे हिंदोस्तान! वल्लाह, इस फसल में सबीलों पर पानी मिलता है, केवड़े का बसा हुआ। हिंदू पौसरे बैठाते हैं और तुम जरा पानी भी नहीं देते।

फ्रांसीसी — कहीं ऊपर से गिर न पड़ना।

खोजी — (इशारे से) अरे मियाँ पानी-पानी!

फ्रांसीसी — हम तुम्हारी बात नहीं समझते।

खोजी — उतरना पड़ा हमें! अबे, ओ गीदी, जरा सा पानी क्यों नहीं दे जाता? क्या पाँवों में मेहँदी गिर जायगी?

फ्रांसीसी ने जब अब भी पानी न दिया तो खोजी ऊपर से पत्ते तोड़-तोड़ फेंकने लगे। फ्रांसीसी झल्ला कर बोला — बचा, क्यों शामतें आई हैं। ऊपर आकर इतने घूँसे लगाऊँगा कि सारी शरारत निकल जायगी।

खोजी ने ऊपर से एक शाख तोड़ कर फेंकी। फ्रांसीसी ने इतने ढेले मारे कि खोजी की खोपड़ी जानती होगी। इतने में एक तुर्क आ निकला। उसने समझा-बुझा कर खोजी को नीचे उतारा। खोजी ने अफीम घोली, चुस्की लगाई और फिर दरख्त पर जा कर एक मोटी शाख से टिक कर पीनक लेने लगे। अब सुनिए कि तुर्कों और रूसियों में इस वक़्त खूब गोले चल रहे थे। तुर्कों ने जान तोड़ कर मुकाबिला किया, मगर फ्रांसीसी तोपखाने ने उनके छक्के छुड़ा दिए और उनका सरदार आसफ पाशा गोली खा कर गिर पड़ा। तुर्क तो हार कर भाग निकले। रूसियों की एक पलटन ने इस मैदान में पड़ाव डाला। खोजी पीनक से चौंक कर यह तमाशा देख रहे थे कि एक रूसी जवान की नजर उन पर पड़ी। बोला-कौन? तुम कौन हो? अभी उतर आओ।

खोजी ने सोचा, ऐसा न हो कि फिर ढेले पड़ने लगें। नीचे उतर आए। अभी जमीन पर पाँव भी न रखा था कि एक रूसी ने इनको गोद में उठा कर फेंका तो धम से जमीन पर गिर गए।

खोजी – ओ गीदी, खुदा तुमसे और तुम्हारे बाप से समझे!

एक रूसी – भई, यह पागल है कोई।

दूसरा – इसको फौज के साथ रखो। खूब दिल्लगी रहेगी।

रूसियों ने कई तुर्क सिपाहियों को कैद कर लिया था। खोजी भी उन्हीं के साथ रख दिए गए। तुर्कों को देख कर उन्हें जरा तसकीन हुई। एक तुर्क बोला – तुम तो आज़ाद के साथ आए थे न? तुम उनके कौन हो?

खोजी – मेरा लड़का है जी, तुम नौकर बनाते हो।

तुर्क – ऐं, आप आज़ाद पाशा के बाप हैं!

खोजी – हाँ, हाँ, तो इसमें ताज्जुब की कौन बात है। मैंने ही तो आज़ाद को मार-मार कर लड़ना सिखाया।

तुर्कों ने खोजी को आज़ाद का बाप समझ कर फौजी कायदे से सलाम किया। तब खोजी रोने लगे – अरे यारो, कहीं से तो हमें लड़के की सूरत दिखा दो। क्या तुमको इसी दिन के लिए पाल-

पोस कर इतना बड़ा किया था? अब तुम्हारी माँ को क्या सूरत दिखाऊँगा?

तुर्क — आप ज्यादा बेचैन न हो। आज़ाद जरूर छूटेंगे।

खोजी — भई, मेरी इतनी इज्जत न करो। नहीं तो रूसियों को शक हो जायगा कि यह आज़ाद पाशा के बाप हैं। तब बहुत तंग करेंगे।

तुर्क — खुदा ने चाहा हो अफसर लोग आपको जरूर छोड़ देंगे।

खोजी — जैसी मौला की मरजी!

72

बड़ी बेगम का बाग परीखाना बना हुआ है। चारों बहनें रविशों में अठखेलियाँ करती हैं। नाजो-अदा से तौल-तौल कर कदम धरती हैं। अब्बासी फूल तोड़-तोड़ कर झोलियाँ भर रही है। इतने में सिपहआरा ने शोखी के साथ गुलाब का फूल तोड़ कर गेतीआरा की तरफ फेंका। गेतीआरा ने उछाला तो सिपहआरा की जुल्फ को छूता हुआ नीचे गिरा। हुस्नआरा ने कई फूल तोड़े और जहानारा बेगम से गेंद खेलने लगीं। जिस वक़्त गेंद फेंकने के

लिए हाथ उठाती थीं, सितम ढाती थीं। वह कमर का लचकाना और गेसू का बिखरना, प्यारे-प्यारे हाथों की लोच और मुसकरा-मुसकरा कर निशाने बाजी करना अजब लुत्फ दिखाता था।

अब्बासी — माशा-अल्लाह, हुजूर किस सफाई के साथ फेंकती हैं!

सिपहआरा — बस अब्बासी, अब बहुत खुशामद की न लो। क्या जहानारा बहन सफाई से नहीं फेंकतीं? बाजी जरी झपटती ज्यादा हैं। मगर हमसे न जीत पाएँगी। देख लेना।

अब्बासी — जिस सफाई से हुस्नआरा बेगम गेंद खेलती हैं, उस सफाई से जहानारा बेगम का हाथ नहीं जाता।

सिपहआरा — मेरे हाथ से भला फूल गिर सकता है! क्या मजाल!

इतने में जहानारा बेगम ने फूल को नोच डाला और उफ कह कर बोलीं — अल्लाह जानता है, हम तो थक गए।

सिपहआरा — ऐ वाह, बस इतने में ही थक गईं? हमसे कहिए, शाम तक खेला करें।

अब सुनिए कि एक दोस्त ने मिर्जा हुमायूँफर को जा कर इत्तिला दी कि इस वक़्त बाग में परियाँ इधर से उधर दौड़ रही हैं। इस वक़्त की कैफियत देखने काबिल है। शाहज़ादे ने यह खबर सुनी तो बोले — भई, खुशखबरी तो सुनाई, मगर कोई तदबीर तो

बताओ। जरा आँखें ही सेंक लें। हाँ, हीरा माली को बुलाओ। जरा देखें।

हीरा ने आकर सलाम किया।

शाहज़ादा — भई, इस वक़्त किसी हिकमत से अपने बाग की सैर कराओ।

हीरा — खुदावंद, इस वक़्त तो माफ करों, सब वहीं हैं।

शाहज़ादा — उल्लू ही रहे, अरे मियाँ, वहाँ सन्नाटा होता तो जा कर क्या करते! सुना है, चारों परियाँ वहीं हैं! बाग परिस्तान हो गया होगा! हीरा, ले चल, तुझे अपने नारायन की कसम! जो माँगे, फौरन दूँ।

हीरा — हुजूर ही का नमक खाता हूँ या किसी और का? मगर इस वक़्त मौका नहीं है।

शाहज़ादा — अच्छा, एक शेर लिख दूँ, वहाँ पहुँचा दो।

यह कह कर शाहज़ादा ने यह शेर लिखा —

छकाया तूने आलम को साकी जामे-गुलगूँ से,
हमें भी कोई एक सागर, हम भी हैं उम्मेदवारों में।

हीरा यह रुक्का ले कर चला। शाहज़ादे ने समझा दिया कि सिपहआरा को चुपके से दे देना। हीरा गया तो देखा कि अब्बासी

और बूढ़ी महरी में तकरार हो रही है। सुबह के वक़्त अब्बासी हुस्नआरा के लिए कुम्हारिन के यहाँ से दो झँझरियाँ लाई थी। दाम एक आना बताया। बड़ी बेगम ने जो यह झँझरियाँ देखीं तो महरी को हुक्म दिया कि हमारे वास्ते भी लाओ। महरी वैसी ही झँझरियाँ दो आने की लाई। इस वक़्त अब्बासी डींग मारने लगी कि मैं जितनी सस्ती चीज लाती हूँ, कोई दूसरा भला ला तो दे। महरी और अब्बासी में पुरानी चश्मक थी। बोली — हाँ भई, तुम क्यों न सस्ती चीज लाओ! अभी कमसिन हो न?

अब्बासी — तुम भी तो किसी जमाने में जवान थीं। बाजार भर को लूट लाई होगी। मेरे मुँह न लगना।

महरी — होश की दवा कर छोकरी! बहुत बढ़-बढ़ कर बातें न बना मुई! जमाने भर की आवारा! और सुनो?

अब्बासी — देखिए हुजूर, यह लाम काफ जबान से निकालती हैं। और मैं हुजूर का लिहाज करती हूँ। जब देखो, ताने के सिवा बात ही नहीं करतीं।

महरी — मुँह पकड़ कर झुलस देती मुरदार का!

अब्बासी — मुँह झुलस अपने होतों-सोतों का।

महरी — हुजूर, अब हम नौकरी छोड़ देंगे। हमसे ये बातें न सुनी जायँगी।

अब्बासी — ऐं, तुम तो बेचारी नन्हीं हो। हमीं गरदन मारने के काबिल हैं! सच है, और क्या!

सिपहआरा — सारा कुसूर महरी का है। यही रोज लड़ा करती हैं अब्बासी से।

महरी — ऐ हुजूर, पीच पीं हजार गेमत पाई! जो मैं ही झगड़ालू हूँ तो बिस्मिल्लाह, हुजूर लौंडी को आज़ाद कर दें। कोई बात न चीत, आप ही गालीगुफ्ते पर आमादा हो गई।

जहानारा — 'लड़ेंगे जोगी-जोगी और जायगी खप्पड़ों के माथे।' अम्माँजान सुन लेंगी तो हम सबकी खबर लेंगी।

अब्बासी — हुजूर इनसाफ से कहें। पहल किसी तरफ से हुई।

जहानारा — पहल तो महरी ने की। इसके क्या मानी कि तुम जवान हो इससे सस्ती चीज मिल जाती है। जिसको गाली दोगी, वह बुरा मानेगी ही।

हुस्नआरा — महरी, तुम्हें यह सूझी क्या? जवानी का क्या जिक्र था भला!

अब्बासी – हुजूर, मेरा कसूर हो तो जो चोर की सजा वह मेरी सजा।

महरी – मेरे अल्लाह, औरत क्या, बिस की गाँठ है।

अब्बासी – जो चाहो सो कह लो, मैं एक बात का भी जवाब न दूँगी।

महरी – इधर की उधर और उधर की इधर लगाया करती है। मैं तो इसकी नस-नस से वाकिफ हूँ!

अब्बासी – और मैं तो तेरी कब्र तक से वाकिफ हूँ!

महरी – एक को छोड़ा, दूसरे को बैठी, उसको खाया, अब किसी और को चट करेगी। और बातें करती है!

सत्तर... के बाद कुछ कहने ही को थी कि अब्बासी ने सैकड़ों गालियाँ सुनाईं। ऐसी जामे से बाहर हुई कि दुपट्टा एक तरफ और खुद दूसरी तरफ। हीरा माली ने बढ़ कर दुपट्टा दिया तो कहा – चल हट, और सुनो! इस मुए बूढ़े की बातें! इस पर कहकहा पड़ा। शोर सुनते ही बड़ी बेगम साहब लाठी टेकती हुई आ पहुँची, मगर यह सब चुहल में मस्त थीं। किसी को खबर भी न हुई।

बड़ी बेगम — यह क्या शोहदापन मचा था? बड़े शर्म की बात है। आखिर कुछ कहो तो? यह क्या धमा-चौकड़ी मची थी? क्यों महरी, यह क्या शोर मचा था?

महरी — ऐ हुजूर, बात मुँह से निकली और अब्बासी ने टेंटुआ लिया। और क्या बताऊँ।

बड़ी बेगम — क्यों अब्बासी, सच-सच बताओ! खबरदार!

अब्बासी — (रो कर) हुजूर!

बड़ी बेगम — अब टेसुए पीछे बहाना, पहले हमारी बात का जवाब दो।

अब्बासी — हुजूर, जहानारा बेगम से पूछ लें, हमें आवारा कहा, बेसवा कहा, कोसा, गालियाँ दी, जो जबान पर आया। कह डाला। और हुजूर, इन आँखों की ही कसम खाती हूँ, जो मैंने एक बात का भी जवाब दिया हो। चुप सुना की।

बड़ी बेगम — जहानारा, क्या बात हुई थी? बताओ साफ-साफ।

जहानारा — अम्माँजान, अब्बासी ने कहा कि हम दो झँझरियाँ एक आने को लाए और महरी ने दो आने दिए, इसी बात पर तकरार हो गई।

बड़ी बेगम — क्यों महरी, इसके क्या माने? क्या जवानों को बाजार वाले मुफ्त उठा देते हैं? बाल सफेद हो गए, मगर अभी तक अवारापन की बू नहीं गई। हमने तुमको मौकूफ किया, महरी! आज ही निकल जाओ।

इतने में मौका पा कर हीरा ने सिपहआरा को शाहज़ादे का खत दिया। सिपहआरा ने पढ़ कर यह जवाब लिखा — भई, तुम तो गजब के जल्दबाज हो। शादी-ब्याह भी निगोड़ा मुँह का नेवाला है! तुम्हारी तरफ से पैगाम तो आता ही नहीं।

हीरा खत ले कर चल दिया।

73

कोठे पर चौका बिछा है और एक नाजुक पलंग पर सुरैया बेगम सादी और हलकी पोशाक पहने आराम से लेटी हैं। अभी हम्माम से आई हैं। कपड़े इत्र में बसे हुए हैं। इधर-उधर फूलों के हार और गजरे रखे हैं, ठंडी-ठंडी हवा चल रही है। मगर तब भी महरी पंखा लिए खड़ी है। इतने में एक महरी ने आकर कहा — दारोगा जी हुजूर से कुछ अर्ज करना चाहते हैं। बेगम साहब ने कहा — अब इस वक़्त कौन उठे। कहो, सुबह को आएँ। महरी

बोली — हुजूर कहते हैं, बड़ा जरूरी काम है। हुक्म हुआ कि दो औरतें चादर ताने रहें और दारोगा साहब चादर के उस पार बैठें। दारोगा साहब ने आकर कहा — हुजूर, अल्लाह ने बड़ी खैर की। खुदा को कुछ अच्छा ही करना मंजूर था। ऐसे बुरे फँसे थे कि क्या कहें!

बेगम — अरे, तो कुछ कहोगे भी?

दारोगा — हुजूर, बदन के रोएँ खड़े होते हैं।

इस पर अब्बासी ने कहा — दारोगा जी, घास तो नहीं खा गए हो! दूसरी महरी बोली — हुजूर, सठिया गए हैं। तीसरी ने कहा — बौखलाए हुए आए हैं। दारोगा साहब बहुत झल्लाए। बोले — क्या कदर होती है, वाह! हमारी सरकार तो कुछ बोलती ही नहीं और महरियाँ सिर चढ़ी जाती हैं। हुजूर इतना भी नहीं कहतीं कि बूढ़ा आदमी है। उससे न बोलो।

बेगम — तुम तो सचमुच दीवाने हो गए हो। कहना है, वह कहते क्यों नहीं?

दारोगा — हुजूर, दीवाना समझें या गधा बनाएँ, गुलाम आज काँप रहा हैं। वह जो आज़ाद है, जो यहाँ कई बार आए भी थे, वह बड़े मक्कार, शाही चोर, नामी डकैत, परले सिरे के बगड़ेबाज, काले जुआरी, धावत शराबी, जमाने भर के बदमाश, छटे हुए गुर्गे, एक ही

शरीर और बदजात आदमी हैं। तूती का पिंजड़ा ले कर वही औरत के भेस में आया था। आज सुना, किसी नवाब के यहाँ भी गए थे। वह आज़ाद जिनके धोखे में आप हैं, वह तो रूम गए हैं। इनका उनका मुकाबिला क्या! वह आलिम-फाजिल, यह बेईमान-बदमाश। यह भी उसने गलत कहा कि हुस्नआरा बेगम का ब्याह हो गया।

बेगम — दारोगा, बात तो तुम पते की कहते हो, मगर ये बातें तुमसे बताई किसने?

दारोगा — हुजूर, वह चंडूबाज जो आज़ाद मिर्जा के साथ आया था। उसी ने मुझसे बयान किया।

बेगम — ऐ है, अल्लाह ने बहुत बचाया।

महरी — और बातें कैसी चिकनी-चुपड़ी करता था?

दारोगा साहब चले गए तो बेगम ने चंडूबाज को बुलाया। महरियों ने परदा करना चाहा तो बेगम ने कहा — जाने भी दो। बूढ़े खूसट से परदा क्या?

चंडूबाज — हुजूर, कुछ ऊपर सौ बरस का सिन है।

बेगम — हाँ, आज़ाद मिर्जा का तो हाल कहो।

चंडूबाज — उसके काटे का मंतर ही नहीं।

बेगम — तुमसे कहाँ मुलाकात हुई?

चंडूबाज — एक दिन रास्ते में मिल गए।

बेगम — वह तो कैद में थे! भागे क्योंकर?

चंडूबाज — हुजूर, यह न पूछिए, तीन-तीन पहरे थे। मगर खुदा जाने, किस जादू-मंतर से तीनों को ढेर कर दिया और भाग निकला।

बेगम — अल्लाह बचाए ऐसे मूजी से।

चंडूबाज — हुजूर, मुझे भी खूब सब्जबाग दिखाया।

महरी — अल्लाह जानता है, मैं उसकी आँखों से ताड़ गई थी कि बड़ा नटखट है।

चंडूबाज — हुजूर, यह कहना तो भूल ही गया था कि कैद से भाग कर थानेदार के मकान पर गया और उसे भी कत्ल कर दिया।

बेगम — सब आदमियों में से निकल भागा?

महरी — आदमी है कि जिन्नात?

अब्बासी — हुजूर, हमें आज डर मालूम होता है। ऐसा न हो, हमारे यहाँ भी चोरी करे।

चंडूबाज रुख़सत हो कर गए तो सुरैया बेगम सो गईं। महरियाँ भी लेटीं, मगर अब्बासी की आँखों में नींद न थी। मारे खौफ के इतनी हिम्मत भी न बाकी रही कि उठ कर पानी तो पीती। प्यास से तालू में काँटे पड़े थे। मगर दबकी पड़ी थी। उसी वक़्त हवा के झोंकों से एक कागज उड़ कर उसकी चारपाई के करीब खड़खड़ाया तो दम निकल गया!

सिपाही ने आवाज दी — 'सोनेवाले जागते रहो।' और यह काँप उठी। डर था, कोई चिमट न जाए। लाशें आँखों-तले फिरती थीं। इतने में बारह का गजर ठनाठन बजा। तब अब्बासी ने अपने दिल में कहा, अरे, अभी बारह ही बजे। हम समझे थे, सवेरा हो गया। एकाएक कोई विहाग की धुन में गाने लगा —

सिपहिया जागत रहियो,
इस नगरी के दस दरवाजे निकस गया कोई और।
सिपहिया जागत रहियो।

अब्बासी सुनते-सुनते सो गई; मगर थोड़ी देर में ठनाके की आवाज आई तो जाग उठी। आदमी की आहट मालूम हुई। हाथ-पाँव काँपने लगे। इतने में बेगम साहब ने पुकारा — अब्बासी, पानी पिला। अब्बासी ने पानी पिलाया और बोली — हुजूर, अब कभी लाशों-वाशों का जिक्र न कीजिएगा। मेरा तो अजब हाल था। सारी रात आँखों में ही कट गई।

बेगम — ऐसा भी डर किस काम का, दिन को शेर, रात को भेड़।

बेगम साहब सोने को ही थीं कि एक आदमी ने फिर गाना शुरू किया।

बेगम — अच्छी आवाज है।

अब्बासी — पहले भी गा रहा था।

महरी — ऐं, यह वकील हैं!

कुछ देर तक तीनों बातें करते-करते सो गईं! सवेरे मुँह-अँधेरे महरी उठी तो देखा कि बड़े कमरे का ताला टूटा पड़ा है। दो संदूक टूटे-फूटे एक तरफ रखे हुए हैं और असबाब सब तितर-बितर। गुल मचा कर कहा — अरे! लुट गई, हाय लोगों, लुट गई! घर में कुहराम मच गया। दारोगा साहब दौड़ पड़े। अरे, यह क्या गजब हो गया। बेगम की भी नींद खुली। यह हालत देखी तो हाथ मल कर कहा — लुट गई! यह शोरगुल सुन कर पड़ोसिनें गुल मचाती हुई कोठे पर आईं और बोलीं — बहन, यह बमचख कैसा है! क्या हुआ? खैरियत तो है!

बेगम — बहन, मैं तो मर मिटी।

पड़ोसिन — क्या चोरी हो गई? दो बजे तक तो मैं आप लोगों की बातें सुनती रही। यह चोरी किस वक़्त हुई?

अब्बासी — बहन, क्या कहूँ, हाय!

पड़ोसिन — देखिए तो अच्छी तरह। क्या-क्या ले गया, क्या-क्या छोड़ गया?

बेगम — बहन किसके होश ठिकाने हैं।

अब्बासी — मुझ जलम जली को पहले ही खटका हुआ था। कान खड़े हो गए फिर कुछ सुनाई न दिया। मैंने कुछ खयाल न किया।

दारोगा — हुजूर, यह किसी शैतान का काम हैं। पाऊँ तो खा ही डालूँ।

महरी — जिस हाथ से संदूक तोड़े, वह कट कर गिर पड़े। जिस पाँव से आया उसमें कीड़े पड़ें। मरेगा बिलख-बिलख कर।

अब्बासी — अल्लाह करे, अठवारे ही में खटिया मचमचाती निकले।

महरी — मगर अब्बासी, तुम भी एक ही कलजिमी हो। वही हुआ।

सुरैया बेगम ने असबाब की जाँच की तो आधे से ज्यादा गायब पाया। रो कर बोलीं — लोगों, मैं कहीं की न रही। हाय मेरे

अब्बा, दौड़ो। तुम्हारी लाड़िली बेटी आज लुट गई। हाय मेरी अम्माँजान! सुरैया बेगम अब फकीरिन हो गई।

पड़ोसिन — बहन, जरा दिल को ढारस दो। रोने से और हलाकान होगी।

बेगम — किस्मत ही पलट गई। हाय!

पड़ोसिन — ऐ! कोई हाथ पकड़ लो। फिर फोड़े डालती हैं। बहन, बहन। खुदा के वास्ते सुनो तो! देखो, सब माल मिला जाता है। घबराओ नहीं।

इतने में एक महरी ने गुल मचा कर कहा — हुजूर, यह जोड़ी कड़े की पड़ी है।

अब्बासी — भागते भूत की लँगोटी ही सही।

लोगों ने सलाह दी कि थानेदार को बुलाया जाय, मगर सुरैया बेगम तो थानेदार से डरी हुई थी; नाम सुनते ही काँप उठीं और बोलीं — बहन, माल चाहे यह भी जाता रहे, मगर थाने वालों को मैं अपनी ड्योढ़ी न लाँघने दूँगी। दारोगा जी ने आँख ऊपर उठाई तो देखा, छत कटी हुई है। समझ गए कि चोर छत काट कर आया था। एकाएक कई कांस्टेबिल बाहर आ पहुँचे। कब वारदात हुई? दौ दफे तो हम पुकार गए। भीतर-बाहर से बराबर

आवाज आई। फिर यह चोरी कब हुई? दारोगा जी ने कहा — हमको इस टाँय-आँय से कुछ वास्ता नहीं है जी? आए वहाँ से रोब जमाने! टके का आदमी और हमसे जबान मिलाता है। पड़े-पड़े सोते रहे और इस वक़्त तहकीकात करने चले हैं? साठ हजार का माल गया। कुछ खबर भी है!

कांस्टेबिलों ने जब सुना कि साठ हजार की चोरी हुई तो होश उड़ गए। आपस में यों बातें करने लगे -

एक — साठ हजार! पचास और दुई साठ? काहे?

दूसरा — पचास दुई साठ नहीं; पचास और दस साठ!

तीसरा — अजी खुदा-खुदा करो। साठ हजार। क्या निरे जवाहिरात ही थे? ऐसे कहाँ के सेठ हैं!

दारोगा — समझा जायगा, देखो तो सही? तुम सबकी साजिश है।

एक — दारोगा, तरकीब तो अच्छी की! शाबास!

दूसरा — बेगम साहब के यहाँ चोरी हुई तो बला से। तुम्हारी तो हाँडियाँ चढ़ गईं। कुछ हमारा भी हिस्सा है?

इतने में थानेदार साहब आ पहुँचे और कहा, हम मौका देखेंगे। परदा कराया गया। थानेदार साहब अन्दर गए तो बोले — अक्खाह, इतना बड़ा मकान है! तो क्यों न चोरी हो?

दारोगा — क्या? मकान इतना बड़ा देखा और आदमी रहते हैं सो नहीं देखते!

थानेदार — रात को यहाँ कौन सोया था?

दारोगा — अब्बासी, सबके नाम लिखवा दो।

थानेदार — बोलो अब्बासी महरी, रात को किस वक़्त सोई थीं तुम?

अब्बासी — हुजूर, कोई ग्यारह बज आँखें लगीं।

थानेदार — एक-एक बोटी फड़कती है। साहब के सामने इतना न चमकना।

अब्बासी — यह बातें मैं नहीं समझती। चमकना-मटकना बाजारी औरतें जानें। हम हमेशा बेगमों में रहा किए हैं। यह इशारे किसी और से कीजिए। बहुत थानेदारी के बल पर न रहिएगा। देखा कि औरतें ही औरतें घर में हैं तो पेट से पाँव निकाले।

थानेदार — तुम तो जामे से बाहर हुई जाती हो।

बेगम साहब कमरे में खड़ी काँप रही थीं। ऐसा न हो, कहीं मुझे देख ले। थानेदार ने अब्बासी से फिर कहा — अपना बयान लिखवाओ।

अब्बासी — हम चारपाई पर सो रहे थे कि एक बार आँख खुली। हमने सुराही से पानी उँड़ेला और बेगम साहब को पिलाया।

थानेदार — जो चाहो, लिखवा दो। तुम पर दरोगहलफी का जुर्म नहीं लग सकता।

अब्बासी — क्या ईमान छोड़ना है? जो ठीक-ठाक है वह क्यों छिपाएँ?

अब्बासी ने अँगुलियाँ मटका-मटका कर थानेदार को इतनी खरी-खोटी सुनाई कि थानेदार साहब की शेखी किरकिरी हो गई। दारोगा साहब से बोले — आपको किसी पर शक हो तो बयान कीजिए। बे-भेदिए के चोरी नहीं हो सकती। दारोगा ने कहा — हमें किसी पर शक नहीं। थानेदार ने देखा कि यहाँ रंग न जमेगा तो चुपके से रुखसत हुए।

74

खोजी आज़ाद के बाप बन गए तो उनकी इज्जत होने लगी। तुर्की कैदी हरदम उनकी खिदमत करने को मुस्तैद रहते थे।

एक दिन एक रूसी फौजी अफसर ने उनकी अनोखी सूरत और माशे-माशे भर के हाथ-पाँव देखे तो जी चाहा कि इनसे बातें करें। एक फारसीदाँ तुर्क को मुतरज्जिम बना कर ख्वाजा साहब से बातें करने लगा।

अफसर — आप आज़ाद पाशा के बाप हैं?

खोजी — बाप तो क्या हूँ, मगर खैर, बाप ही समझिए। अब तो तुम्हारे पंजू में पड़ कर छक्के छूट गए।

अफसर — आप भी किसी लड़ाई में शरीक हुए थे?

खोजी — वाह, और जिंदगी-भर करता क रहा? तुम जैसा गौखा अफसर आज ही देखा। हमारा कैंडा ही गवाही देता है कि हम फौज के जवान हैं। कैंडे से नहीं पहचानते? इसमें पूछने की क्या जरूरत है! दगलेवाली पलटन के रिसालदार थे। आप हमसे पूछते हैं, कोई लड़ाई देखी है! जनाब, यहाँ वह-वह लड़ाइयाँ देखी हैं कि आदमी की भूख-प्यास बन्द हो जाय।

अफसर — आप गोली चला सकते हैं?

खोजी — अजी हजरत, अब फस्द खुलवाइए। पूछते हैं गोली चलाई है! जरा सामने आ जाइए तो बताऊँ। एक बार एक कुत्ते से और हमसे लाग-डाट हो गई। खुदा की कसम, हमसे कुत्ता

ग्यारह-बारह कदम पर पड़ा था। धरके दागता हूँ तो पों-पों करता हुआ भाग खड़ा हुआ।

अफसर — ओ हो! आप खूब गोली चलाता है।

खोजी — अजी, तुम हमको जवानी में देखते!

अफसर ने इनकी बेतुकी बातें सुन कर हुक्म दिया कि दोनाली बंदूक लाओ। तब तो मियाँ खोजी चकराए। सोचे कि हमारी सात पीढ़ियों तक तो किसी ने बंदूक चलाई नहीं और न हमको याद आता है कि बंदूक कभी उम्र भर छुई भी हो, मगर इस वक़्त तो आबरू रखनी चाहिए। बोले इस बंदूक में गज तो नहीं होता?

अफसर — उड़ती चिड़िया पर निशाना लगा सकते हो?

खोजी — उड़ती चिड़िया कैसी! आसमान तक के जानवरों को भून डालूँ।

अफसर — अच्छा तो बंदूक लो।

खोजी — ताक कर निशाना लगाऊँ तो दरख्त की पत्तियाँ गिरा दूँ?

यह कह कर आप टहलने लगे।

अफसर — आप निशाना क्यों नहीं लगाता? उठाइए बंदूक।

खोजी ने जमीन में खूब जोर से ठोकर मारी और एक गजल गाने लगे। अफसर दिल में खूब समझ रहा था कि यह आदमी महज डींगे मारना जानता है। बोला — अब बंदूक लेते हो या इसी बंदूक से तुमको निशाना बनाऊँ?

खैर, बड़ी देर तक दिल्लगी रही। अफसर खोजी से इतना खुश हुआ कि पहरेवालों को हुक्म दे दिया कि इनपर बहुत सख्ती न रखना। रात को खोजी ने सोचा कि अब भागने की तदबीर सोचनी चाहिए वरना लड़ाई खत्म हो जायगी और हम न इधर के रहेंगे, न उधर के। आधी रात को उठे और खुदा से दुआ माँगने लगे कि ऐ खुदा! आज रात को तू मुझे इस कैद से नजात दे। तुर्कों का लश्कर नजर आए और मैं गुल मचा कर कहूँ कि हम आ पहुँचे; आ पहुँचे। आज़ाद से भी मुलाकात हो और खुश-खुश वतन चलें।

यह दुआ माँग कर खोजी रोने लगे। हाय, अब वह दिन कहाँ नसीब होंगे कि नवाबों के दरबार में गप उड़ रहे हों। वह दिल्लगी, वह चुहल अब नसीब हो चुकी। किस मजे ने कटी जाती थी और किस लुत्फ से गड़ेरियाँ चूसते थे! कोई खुटियाँ खरीदता है, कोई कतारे चुकाता है। शोर गुल की यह कैफियत है कि कान पड़ी आवाज नहीं सुनाई देती, मक्खियों की भिन्न भिन्न

एक तरफ, छिलकों का ढेर दूसरी तरफ, कोई औरत चंडूखाने में आ गई तो और भी चुहल होने लगी।

दो बजे खोजी बाहर निकले तो उनकी नजर उक छोटे से टट्टू पर पड़ी। पहरेवाले सो रहे थे। खोजी टट्टू के पास गए और उसकी गरदन पर हाथ फेर कर कहा — बेटा, कहीं दगा न देना। माना कि तुम छोटे-मोटे टट्टू हो और ख्वाजा साहब का बोझ तुमसे न उठ सकेगा, मगर कुछ परवा नहीं, हिम्मते मरदाँ मददे खुदा। टट्टू को खोला और उस पर सवार होकर आहिस्ता-आहिस्ता कैंप से बाहर की तरफ चले। बदन काँप रहा था, मगर जब कोई सौ कदम के फासले पर निकल गए तो एक सवार ने पुकारा — कौन जाता है? खड़ा रह!

खोजी — हम हैं जी ग्रासकट, सरकारी घोड़ों की घास छीलते हैं।

सवार — अच्छा तो चला जा।

खोजी जब जरा दूर निकल आए तो दो-चार बार खूब गुल मचाया — मार लिया, मार लिया! ख्वाजा साहब दो करोड़ रूसियों में से बेदाग निकले आते हैं। लो भई तुर्कों, ख्वाजा साहब आ पहुँचे।

अपनी फतह का डंका बजा कर खोजी घोड़े से उतरे और चादर बिछा कर सोए तो ऐसी मीठी नींद आई कि उम्र भर न आई थी। घड़ी भर रात बाकी थी कि उनकी नींद खुली। फिर घोड़े

पर सवार हुए और आगे चले। दिन निकलते-निकलते उन्हें एक पहाड़ के नजदीक एक फौज मिली। आपने समझा कि तुर्कों की फौज है। चिल्ला कर बोले — आ पहुँचे; आ पहुँचे! अरे यारो दौड़ो। ख्वाजा साहब के कदम धो-धो कर पीओ, आज ख्वाजा साहब ने वह काम किया कि रुस्तम के दादा से भी न हो सकता। दो करोड़ रूसी पहरा दे रहे थे और मैं पैंतरे बदलता हुआ दन से गायब, लकड़ी टेकी और उड़ा। दो करोड़ रूसी दौड़े, मगर मुझे पकड़ पाना दिल्लगी नहीं। कह दिया, लो हम लंबे होते हैं, चोरी से नहीं चले, डंके की चोट कह कर चले।

अभी वह यह हाँक लगा ही रहे थे कि पीछे से किसी ने दोनों हाथ पकड़ लिए और घोड़े से उतार लिया।

खोजी — ऐं, कौन है भई? मैं समझ गया मियाँ आज़ाद हैं।

मगर आज़ाद वहाँ कहाँ, यह रूसियों की फौज थी। उसे देखते ही खोजी का नशा हिरन हो गया। रूसियों ने उन्हें देख कर खूब तालियाँ बजाईं। खोजी दिल ही दिल में कटे जाते थे, मगर बचने की कोई तदबीर न सूझती थी। सिपाहियों ने खोजी को चपतें जमानी शुरू कीं। उधर देखा, इधर पड़ी। खोजी बिगड़ कर बोले — अच्छा गीदी, इस वक़्त तो बेबस हूँ, अबकी फँसाओ तो कहूँ। कसम है अपने कदमों की, आज तक कभी किसी को नहीं

सताया। और सब कुछ किया, पतंग उड़ाए, चंडू पिया, अफीम खाया, चरस के दम लगाए, मदक के छींटे उड़ाए, मगर किस मरदूद ने किसी गरीब को सताया हो!

यह सोच कर खोजी की आँखों से आँसू निकल आए।

एक सिपाही ने कहा — बस, अब उसको दिक न करो। पहले पूछ लो कि यह है कौन आदमी। एक बोला — यह तुर्की है, कपड़े कुछ बदल डाले हैं। दूसरे ने कहा — यह गोइंदा है, हमारी टोह में आया है।

औरों को भी यही शुबहा हुआ। कई आदमियों ने खोजी की तलाशी ली।

अब खोजी और सब असबाब तो दिखाते हैं, मगर अफीम की डिबिया नहीं खोलते।

एक रूसी — इसमें कौन चीज है? क्यों तुम इसको खोलने नहीं देते? हम जरूर देखेंगे।

खोजी — ओ गीदी, मारूँगा बंदूक, धुआँ उस पार हो जायगा। खबरदार जो डिबिया हाथ से छुई! अगर तुम्हारा दुश्मन हूँ तो मैं हूँ। मुझे चाहे मारो, चाहे कैद करो, पर मेरी डिबिया में हाथ न लगाना।

रूसियों को यकीन हो गया कि डिबिया में जरूर कोई कीमती चीज है। खोजी से डिबिया छीन ली। मगर अब उनमें आपस में लड़ाई होने लगी। एक कहता था, डिबिया में जो कुछ निकले वह सब आदमियों में बराबर-बराबर बाँट दी जाय। गरज डिबिया खोली गई तो अफीम निकली। सब के सब शरमिंदा हुए। एक सिपाही ने कहा — इस डिबिया को दरिया में फेंक दो। इसी के लिए हममें तलवार चलते-चलते बची।

दूसरा बोला — इसे आग में जला दो।

खोजी — हम कहे देते हैं, डिबिया हमें वापस कर दो, नहीं हम बिगड़ जायँगे तो क़यामत आ जायगी। अभी तुम हमें नहीं जानते!

सिपाहियों ने समझ लिया कि यह कोई दीवाना है, पागलखाने से भाग आया है। उन्होंने खोजी को एक बड़े पिंजरे में बन्द कर दिया। अब मियाँ खोजी की सिट्टी-पिट्टी भूल गई। चिल्ला कर बोले — हाय आज़ाद! अब तुम्हारी सूरत न देखेंगे। खैर, खोजी ने नमक का हक अदा कर दिया। अब वह भी कैद की मुसीबतें झेल रहा है और सिर्फ तुम्हारे लिए। एक बार जालिमों के पंजे से किसी तरह मार-कूट कर निकल भागे थे, मगर तकदीर ने फिर कैद में ला फँसाया। जवाँमरदों पर हमेशा मुसीबत आती है,

इसका तो गम नहीं; गम इसी का है कि शायद अब तुमसे मुलाकात न होगी। खुदा तुम्हें खुश रखे, मेरी याद करते रहना —

शायद वह आए मेरे जनाजे पर दोस्तो,
आँखें खुली रहें मेरी दीदार के लिए।

75

मियाँ आज़ाद कासकों के साथ साइबेरिया चले जा रहे थे। कई दिन के बाद वह डैन्यूब नदी के किनारे जा पहुँचे। वहाँ उनकी तबीयत इतनी खुश हुई कि हरी-हरी दूब पर लेट गए और बड़ी हसरत से यह गजल पढ़ने लगे —

रख दिया सिर को तेगे कातिल पर,
हम गिरे भी तो जाके मंजिल पर।
आँख जब बिसमिलों में ऊँची हो,
सिर गिरे कट के पाय कातिल पर।
एक दम भी तड़प से चैन नहीं,
देख लो हाथ रख के तुम दिल पर।

यह गजल पढ़ते-पढ़ते उन्हें हुस्नआरा की याद आ गई और आँखों से आँसू गिरने लगे। कासक लोगों ने समझाया कि भई,

अब वे बातें भूल जाओ, अब यह समझो कि तुम वह आज़ाद ही नहीं हो। आज़ाद खिल-खिला कर हँसे और ऐसा मालूम हुआ कि वह आपे में नहीं हैं। कासकों ने घबरा कर उनको सँभाला और समझाने लगे कि यह वक़्त सब्र से काम लेने का है। अगर होश-हवास ठीक रहे तो शायद किसी तदबीर से वापस जा सको वरना खुदा ही हाफिज हे। साइबेरिया से कितने ही कैदी भाग आते हैं, मगर तुम तो अभी से हिम्मत हारे देते हो।

इतने में वह जहाज जिस पर सवार हो कर आज़ाद को डैन्यूब के पार जाना था, तैयार हो गया। तब तो आज़ाद की आँखों से आँसुओं का ऐसा तार बँधा कि कासकों के भी रूमाल तर हो गए। जिस वक़्त जहाज पर सवार हुए दिल काबू में न रहा। रो-रो कर कहने लगे – हुस्नआरा, अब आज़ाद का पता न मिलेगा। आज़ाद अब दूसरी दुनिया में हैं, अब ख्वाब में इस आज़ाद की सूरत न देखोगी जिसे तुमने रूम भेजा।

यह कहते-कहते आज़ाद बेहोश हो गए। कासकों ने उनको इत्र सुँघाया और खूब पानी के छींटे दिए तब जा कर कहीं उनकी आँखें खुलीं। इतने में जहाज उस पर पहुँच गया तो आज़ाद ने रूम की तरफ मुँह करके कहा – आज सब झगड़ा खत्म हो गया। अब आज़ाद की कब्र साइबेरिया में बनेगी और कोई उस पर रोने वाला न होगा।

कासकों ने शाम को एक बाग में पड़ाव डाला और रात भर वहीं आराम किया। लेकिन जब सुबह को कूच की तैयारियाँ होने लगीं तो आज़ाद का पता न था। चारों तरफ हुल्लड़ मच गया, इधर-उधर सवार छूटे, पर आज़ाद का पता न पाया। वह बेचारे एक नई मुसीबत में फँस गए थे।

सबेरे मियाँ आज़ाद की आँख जो खुली तो अपने को अजब हालत में पाया। जोर की प्यास लगी हुई थी, तालू सूखा जाता था, आँखें भारी, तबीयत सुस्त, जिस चीज पर नजर डालते थे, धुँधली दिखाई देती थी। हाँ, इतना अलबत्ता मालूम हो रहा था कि उनका सिर किसी के जानू पर है। मारे प्यास के ओठ सूख गए थे, गो आँखें खोलते थे, मगर बात करने की ताकत न थी। इशारे से पानी माँगा और जब पेट भर पानी पी चुके तो होश आया। क्या देखते हैं कि एक हसीन औरत सामने बैठी हुई है। औरत क्या, हूर थी। आज़ाद ने कहा, खुदा के वास्ते बताओ कि तुम कौन हो? हमें कैसे यहाँ फाँस लाई, मेरी तो कुछ समझ ही में नहीं आता, कासक कहाँ हैं? डैन्यूब कहाँ है? मैं यहाँ क्यों छोड़ दिया गया? क्या साइबेरिया इसी मुकाम का नाम है? हसीना ने आँखों से इशारे से कहा — सब्र करो, सब कुछ मालूम हो जायगा। आप तुर्की हैं या फ्रांसीसी?

आज़ाद — मैं हिंदी हूँ। क्या यह आप ही का मकान है?

हसीना — नहीं, मेरा मकान पोलैंड में है, मगर मुझे यह जगह बहुत पसंद है। आइए, आपको मकान की सैर कराऊँ।

आज़ाद ने देखा कि पहाड़ की एक ऊँची चोटी पर कीमती पत्थरों की एक कोठी बनी है। पहाड़ ढालू था और उस पर हरी-हरी घास लहरा रही थी। एक मील के फासले पर एक पुराना गिरजा का सुनहला मीनार चमक रहा था। उत्तर की तरफ डेन्यूब नदी अजब शान से लहरें मारती थी! किश्तियाँ दरिया में आती हैं। रूस की फौजें दरिया के पार जाती हैं। मेढा हवा से उछल रहा है। कोठी के अन्दर गए तो देखा कि पहाड़ को काट कर दीवारें बनी हैं। उसकी सजावट देख कर उनकी आँखें खुल गईं। छत पर गए तो ऐसा मालूम हुआ कि आसमान पर जा पहुँचे। चारों तरफ पहाड़ों की ऊँची-ऊँची चोटियाँ हरी-हरी दूब से लहरा रही थीं। कुदरत का यह तमाशा देख कर आज़ाद मस्त हो गए और यह शेर उनकी जबान से निकला —

लगी है मेंह की झड़ी, बाग में चलो झूल,
कि झूलने का मजा भी इसी बहार में है।
यह कौन फूट के रोया कि दर्द की आवाज,
रची हुई जो पहाड़ों के आबशार में है।

हसीना — मुझे यह जगह बहुत पसंद है। मैंने जिंदगी भर यहीं रहने का इरादा किया है, अगर आप भी यहीं रहते तो बड़े मजे से जिंदगी कटती!

आज़ाद — यह आपकी मिहरबानी है! मैं तो लड़ाई खत्म हो जाने के बाद अगर छूट सका तो वतन चला जाऊँगा।

हसीना — इस खयाल में न रहिएगा, अब इसी को अपना वतन समझिए।

आज़ाद — मेरा यहाँ रहना कई जानों का गाहक हो जायगा। जिस खातून ने मुझे लड़ाई में शरीक होने के लिए यहाँ भेजा है, वह मेरे इंतजार में रो-रो कर जान दे देगी।

हसीना — आपकी रिहाई अब किसी तरह मुमकिन नहीं। अगर आपको अपनी जान की मुहब्बत है तो वतन का खयाल छोड़ दीजिए, वरना सारी जिंदगी साइबेरिया में काटनी पड़ेगी।

आज़ाद — इसका कोई गम नहीं, मगर कौल जान के साथ है।

हसीना — मैं फिर समझाए देती हूँ। आप पछताएँगे।

आज़ाद — आपको अख्तियार है।

यह सुनते ही उस औरत ने आज़ाद को फिर कैदखाने में भेजवा दिया।

अब मियाँ खोजी का हाल सुनिए। रूसियों ने उन्हें दीवाना समझ कर जब छोड़ दिया तो आप तुर्कों की फौज में पहुँच कर दून की लेने लगे। हमने यों रूसियों से मुकाबिला किया और यों नीचा दिखाया। एक रूसी पहलवान से मेरी कुश्ती भी हो गई, बहुत बफर रहा था। मुझसे न रहा गया। लँगोट कसा और खुदा का नाम ले कर ताल ठोंक के अखाड़े में उतर पड़ा, वह भी दाँव-पेंच में बक था और हाथ-पाँव ऐसे कि क्या कहूँ। मेरे हाथ-पाँव से भी बड़े।

एक सिपाही — ऐं,अजी हम न मानेंगे आपके हाथ-पाँव से ही हाथ-पाँव तो देव के भी न होंगे!

खोजी — बस, ज्यों ही उसने हाथ बढ़ाया, मैंने हाथ बाँध लिया। फिर जो जोर करता हूँ तो हाथ खट से अलग!

सिपाही — अरे, हाथ ही तोड़ डाले। बेचारे को कहीं का न रखा!

खोजी — बस, फिर दूसरा आया, मैंने गरदन पकड़ी और अंटी दी, धम से गिरा। तीसरा आया, चपत जमाई और धर दबाया। चौथा आया, अड़ंगा मारा और धम से गिरा दिया। पाँचवाँ आया और मैंने मारे करौलियों के कचूमर निकाल लिया।

सिपाही — आपने बुरा किया। ताकतवर लोग कमजोरों पर रहम किया करते हैं।

खोजी – तब कई सवार तोपें लिए हुए आए; मगर मैंने सबको पटका। आखिर कोई सत्तर आदमी मिल कर मुझ पर टूट पड़े तब जाके कहीं मैं गिरफ्तार हुआ।

सिपाही – बस, सत्तर ही! सत्तर आदमियों को तो आप पीस कर धर देते। कम से कम कोई दो सौ तो जरूर होंगे!

खोजी – झूठ न बोलूँगा, मुझे सबों ने रखा बड़ी इज्जत के साथ। रात भर तो मैं वहीं रहा, सबेरा होते ही करौली ले कर ललकारा कि आ जाओ जिसको आना हो, बंदा चलता है। बस कोई दो करोड़ रूसी निकल पड़े – लेना-लेना! अरे मैंने कहा कि किसका लेना और किसका देना, आ जा जिसे आना हो। खुदा की कसम जो किसी ने चूँ भी की हो। सब के सब डर गए।

तुर्क समझ गए कि निरा जाँगलू हैं। खोजी ने यही समझा कि मैंने इन सबों को उल्लू बनाया। दिन भर तो पीनक लेते रहे, शाम के वक़्त हवा खाने निकले। इत्तिफ़ाक़ से राह में एक गधा मिल गया। आप फौरन गधे पर सवार हुए और टिक-टिक करते चले। थोड़ी ही दूर गए थे कि एक आदमी ने ललकारा – रोक ले गधा, कहाँ लिए जाता है?

खोजी – हट जा सामने से।

जवान – उतर गधे से। उतरता है या मैं दूँ खाने भर को?

खोजी – तू नहीं छोड़ेगा, निकालूँ करौली फिर?

आखिर, उस जवान ने खोजी को गधे से ढकेल दिया, तब आप चोर-चोर का गुल मचाने लगे। यह गुल सुन कर दो-चार आदमी आ गए और खोजी को चपतें जमाने लगे।

खोजी – तुम लोगों की कजा आई है, मैं धुनके रख दूँगा।

जवान – चुपके से घर की राह लो, ऐसा न हो, तुम्हें तुम्हारी खोपड़ी सुहलानी पड़े।

इत्तिफ़ाक़ से एक तुर्की सवार का उस तरफ से गुजर हुआ। खोजी ने चिल्ला कर कहा – दोहाई है सरकार की! यह डाकू मारे डालते हैं।

सवार ने खोजी को देख कर पूछा – तुम यहाँ कहाँ?

खोजी – ये लोग मुझे तुर्की का दोस्त समझ कर मारे डालते हैं।

सवार ने उन आदमियों को डाँटा और अपने साथ चलने का हुक्म दिया। खोजी शेर हो गए। एक के कान पकड़े और कहा, आगे चल। दूसरे पर चपत जमाई और कहा, पीछे चल।

इस तरह खोजी ने इन बेचारों की बुरी गत बनाई, मगर पड़ाव पर पहुँच कर उन्हें छोड़वा दिया।

जब सब लोग खा कर लेटे तो खोजी ने फिर डींग मारनी शुरू की। एक बार मैं दरिया नहाने गया तो बीचोंबीच में जा कर ऐसा गोता लगाया कि तीन दिन पानी से बाहर न हुआ।

एक सिपाही — तब तो आप यों कहिए कि आप गोताखोरों के उस्ताद हैं। कल जरा हमें भी गोता ले कर दिखाइए।

खोजी — हाँ-हाँ, जब कहो।

सिपाही — अच्छा तो कल की रही।

खोजी ने समझा, यह सब रोब में आ जायँगे। मगर वे एक छटे गुर्गे। दूसरे दिन उन सबों ने खोजी को साथ लिया और दरिया नहाने को चले। पड़ाव से दरिया साफ नजर आता था। खोजी के बदन के रोंगटे खड़े हो गए। भागने ही को थे कि एक आदमी ने रोक लिया और दो तुर्कों ने उनके कपड़े उतार लिए। खोजी की यह कैफियत थी कि कलेजा थरथर काँप रहा था, मगर जबान से बात न निकलती थी। जब उन्होंने देखा कि अब गला न छूटेगा तो मिन्नतें करने लगे — भाइयो, मेरी जान के क्यों दुश्मन हुए हो? अरे यारो, मैं तुम्हारा दोस्त हूँ, तुम्हारे सबब से इतनी जहमत उठाई, कैद हुआ और अब तुम लोग हँसी-हँसी में मुझे डुबो देना चाहते हो।

गरज खोजी बहुत गिड़गिड़ाए, मगर तुर्कों ने एक न मानी। खोजी मिन्नतें करते-करते थक गए तो कोसने लगे — खुदा तुमसे समझे! यहाँ कोई अफसर भी नहीं है। न हुई करौली, नहीं इस वक़्त जीता चुनवा देता। खुदा करे, तुम्हारे ऊपर बिजली गिरे। सब के सब कपड़े उतार लिए, गोया उनके बाप का माल था। अच्छा गीदी, अगर जीता बचा तो समझ लूँगा। मगर दिल्लगीबाजों ने इतने गोते दिए कि वे बेदम हो गए और एक गोता खा कर डूब गए।

76

आज़ाद को साइबेरिया भेज कर मिस क्लारिसा अपने वतन को रवाना हुई और रास्ते में एक नदी के किनारे पड़ाव किया। वहाँ की आब-हवा उसको ऐसी पसंद आई कि कई दिन तक उसी पड़ाव पर शिकार खेलती रही। एक दिन मिस-कलरिसा ने सुबह को देखा कि उसके खेमे के सामने एक दूसरा बहुत बड़ा खेमा खड़ा हुआ है। हैरत हुई कि या खुदा, यह किसका सामान है। आधी रात तक सन्नाटा था, एकाएक खेमे कहाँ से आ गए! एक औरत को भेजा कि जा कर पता लगाए कि ये कौन लोग है।

वह औरत जो खेमे में गई तो क्या देखती है कि एक जवाहिरनिगार तख्त पर एक हूरों को शरमाने वाली शाहज़ादी बैठी हुई है। देखते ही दंग हो गई। जा कर मिस क्लारिसा से बोली — हुजूर, कुछ न पूछिए, जो कुछ देखा, अगर ख्वाब नहीं तो जादू जरूर है। ऐसी औरत देखी कि परी भी उसकी बलाएँ ले।

क्लारिसा — तुमने कुछ पूछा भी कि हैं कौन?

लौंडी — हुजूर, मुझ पर तो ऐसा रोब छाया कि मुँह से बात ही न निकली। हाँ, इतना मालूम हुआ कि एक रईसज़ादी है और सैर करने के लिए आई है।

इतने में वह औरत खेमे से बाहर निकल आई। क्लारिसा ने झुक कर उसको सलाम किया और चाहा कि बढ़ कर हाथ मिलाएँ, मगर उसने क्लारिसा की तरफ तेज निगाहों से देख कर मुँह फेर लिया। वह कोहकाफ़ की परी मीडा थीं। जब से उसे मालूम हुआ कि क्लारिसा ने आज़ाद को साइबेरिया भेजवा दिया है, वह उसके खून की प्यासी हो रही थी। इस वक़्त क्लारिसा को देखकर उसके दिल ने कहा कि ऐसा मौका फिर हाथ न आएगा, मगर फिर सोचा कि पहले नरमी से पेश आऊँ। बातों-बातों में सारा माजरा कह सुनाऊँ, शायद कुछ पसीजे।

क्लारिसा — तुम यहाँ क्या करने आई हो?

मीडा — मुसीबत खींच लाई है, और क्या कहूँ। लेकिन आप यहाँ कैसे आईं?

क्लारिसा — मेरा भी वही हाल है। वह देखिए, सामने जो कब्र है उसी में वह दफन है जिसकी मौत ने मेरी जिंदगी को मौत से बदतर बना दिया है। हाय! उसकी प्यारी सूरत मेरी निगाह के सामने हैं, मगर मेरे सिवा किसी को नजर नहीं आती।

मीडा — मैं भी उसी मुसीबत में गिरफ्तार हूँ। जिस जवान को दिल दिया, जान दी, ईमान दिया, वह अब नजर नहीं आता, उसको एक जालिम बाग़बान ने बाग से जुदा कर दिया। खुदा जाने, वह गरीब किन जंगलों में ठोकरें खाता होगा।

क्लारिसा — मगर तुम्हें यह तसकीन तो हैं कि तुम्हारा यार जिंदा है और कभी न कभी उससे मुलाकात होगी। मैं तो उसके नाम को रो चुकी। मेरे और उसके माँ-बाप शादी करने पर राजी थे, हम खुश थे कि दिल की मुरादें पूरी होंगी, मगर शादी के एक ही दिन पहले आसमान टूट पड़ा, मेरे प्यारे को फौज में शरीक होने का हुक्म मिला। मैंने सुना तो जान सी निकल गई। लाख समझाया, मगर उसने एक न सुनी। जिस रोज यहाँ से रवाना हुआ, मैंन खूब मातम किया और रुखसत हुई। यहाँ रात-दिन उसकी जुदाई में तड़पा करती थी, मगर अखबारों में लड़ाई के

हाल पढ़ कर दिल को तसल्ली देती थी। एका-एक अखबार में पढ़ा कि उसकी एक तुर्की पाशा से तलवार चली, दोनों जख्मी हुए, पाशा तो बच गया, मगर वह बेचारा जान से मारा गया। उस पाशा का नाम आज़ाद है। यह खबर सुनते ही मेरी आँखों में खून उतर आया, दिल में ठान लिया कि अपने प्यारे के खून का बदला आज़ाद से लूँगी। यह तय करके यहाँ से चली और जब आज़ाद मेरे हाथों से बच गया तो मैंने उसे साइबेरिया भेजवा दिया।

मीडा यह सुन कर बेहोश हो गई।

77

जिस वक़्त खोजी ने पहला गोता खाया तो ऐसे उलझे कि उभरना मुश्किल हो गया। मगर थोड़ी ही देर में तुर्कों ने गोते लगा कर इन्हें ढूँढ़ निकाला। आप किसी कदर पानी पी गए थे। बहुत देर तक तो होश ही ठिकाने न थे। जब जरा होश आया तो सबको एक सिरे से गालियाँ देना शुरू कीं। सोचे कि दो-एक रोज में जरा टाँठा हो लूँ तो इनसे खूब समझूँ। डेरे पर आकर आज़ाद के नाम खत लिखने लगे। उनसे एक आदमी ने कह दिया था

कि अगर किसी आदमी के नाम खत भेजना हो और पता न मिलता हो तो खत को पत्तों में लपेट दरिया कि किनारे खड़ा हो और तीन बार 'भेजो-भेजो' कह कर खत को दरिया में डाल दे, खत आप ही आप पहुँच जायगा। खोजी के दिल में यह बात बैठ गई। आज़ाद के नाम एक खत लिख कर दरिया में डाल आए। उस खत में आपने बहादुरी के कामों की खूब डींगे मारी थीं।

रात का वक़्त था, ऐसा अँधेरा छाया हुआ था, गोया तारीकी का दिल सोया हो। ठंडी हवा के झोंके इतने जोर से चलते थे कि रूह तक काँप जाती थी। एकाएक रूस की फौज से नक्कारे की आवाज आई। मालूम हुआ कि दोनों तरफ के लोग लड़ने को तैयार हैं। खोजी घबरा कर उठ बैठे और सोचने लगे कि यह आवाजें कहाँ से आ रही हैं? इतने में तुर्की फौज भी तैयार हो गई और दोनों फौजें दरिया के किनारे जमा हो गईं। खोजी ने दरिया की सूरत देखी तो काँप उठे। कहा — अगर खुश्की की लड़ाई होती तो हम भी आज जौहर दिखाते। यों तो सब अफसर और सिपाही ललकार रहे थे, मगर खोजी की उमंगें सबसे बढ़ी हुई थीं। चिल्ला-चिल्ला कर दरिया से कह रहे थे कि अगर तू खुश्क हो जाय तो मैं फिर मजा दिखलाऊँ। एक हाथ में परे के परे काट कर रख दूँ।

गोला चलने लगा। तुर्कों की तरफ से एक इंजीनियर ने कहा कि यहाँ से आध मील के फासले पर किश्तियों का पुल बाँधना चाहिए। कई आदमी दौड़ाए गए कि जा कर देखें, रूसियों की फौजें किस-किस मुकाम पर हैं। उन्होंने आकर बयान किया कि एक कोस तक रूसियों का नाम-निशान नहीं है। फौरन पुल बनाने का इंतजाम होने लगा। यहाँ से डेढ़ कोस पर पैंतीस किश्तियाँ मौजूद थीं। अफसर ने हुक्म दिया कि उन किश्तियों को यहाँ लाया जाय। उसी दम दो सवार घोड़े कड़कड़ाते हुए आए। उनमें से एक खोजी थे।

खोजी — पैंतीस किश्तियाँ यहाँ से आधा कोस पर मुस्तैद हैं। मैंने सोचा, जब तक सवार तुम्हारे पास पहुँचेंगे और तुम हुक्म दोगे कि किश्तियाँ आएँ तब तक यहाँ खुदा जाने क्या हो जाय, इसलिए एक सवार को ले कर फौरन किश्तियों को इधर लो आया।

फौज के अफसर ने यह सुना तो खोजी की पीठ ठोंक दी और कहा — शाबाश! इस वक़्त तो तुमने हमारी जान बचा दी।

खोजी अकड़ गए। बोले — जनाब, हम कुछ ऐसे-वैसे नहीं हैं! आज हम दिखा देंगे कि हम कौन हैं। एक-एक को चुन-चुन कर मारूँ!

इतने में इंजीनियरों ने फुर्ती के साथ किश्ती का पुल बाँधने का इंतजाम किया। जब पुल तैयार हो गया तो अफसर ने कुछ सवारों को उस पार भेजा। खोजी भी उनके साथ हो लिए। जब पुल के बीच में पहुँचे तो एक दफा गुल मचाया — ओ गीदी, हम आ पहुँचे।

तुर्कों ने उनका मुँह दबाया और कहा — चुप!

इतने में तुर्कों का दस्ता उस पार पहुँच गया। रूसियों को क्या खबर थी कि तुर्क लोग क्या कर रहे हैं। इधर खोजी जोश में आकर तीन-चार तुर्कों को साथ ले दरिया के किनारे-किनारे घुटनों के बल चले। जब उनको मालूम हो गया कि रूसी फौज थक गई तो तुर्कों ने एक दम से धावा बोल दिया। रूसी घबरा उठे। आपस में सलाह की कि अब भाग चलें। खोजी भी घोड़े पर सवार थे, रूसियों को भागते देखा तो घोड़े को एक एड़ दी और भागते सिपाहियों में से सात आदमियों के टुकड़े-टुकड़े कर डाले। तुर्की फौज में वाह-वाह का शोर मच गया। ख्वाजा साहब अपनी तारीफ सुन कर ऐसे खुश हुए कि परे में घुस गए और घोड़े को बढ़ा-बढ़ा कर तलवार फेंकने लगे। दम के दम में रूसी सवारों ने मैदान खाली कर दिया। तुर्की फौज में खुशी के शादियाने बजने लगे। ख्वाजा साहब के नाम फतह लिखी गई। इस वक़्त उनके दिमाग सातवें आसमान पर थे। अकड़े खड़े थे। बात-बात

पर बिगड़ते। हुक्म दिया — फौज के जनरल से कहो, आज हम उनके साथ खाना खाएँगे। खाना खाने बैठे तो मुँह बनाया, वाह! इतने बड़े अफसर और यह खाना। न मीठे चावल, न फिरनी, न पोलाव। खाना खाते वक़्त अपनी बहादुरी की कथा कहने लगे — वल्लाह, सबों के हौसले पस्त कर दिए। ख्वाजा साहब हैं कि बातें! मेरा नाम सुनते ही दुश्मनों के कलेजे काँप गए। हमारा बार कोई रोक ले तो जानें। बरसों मुसीबतें झेली हैं तब जा के इस काबिल हुए कि रूसियों के लश्कर में अकेले घुस पड़े! और हमें डर किसका है? बहिश्त के दरवाजे खुले हुए हैं।

अफसर — हमने वजीर-जंग से दरख्वास्त की है कि तुमको इस बहादुरी का इनाम मिले।

खोजी — इतना जरूर लिखना कि यह आदमी दगले वाली पलटन का रिसालदार था।

अफसर — दगलेवाली पलटन कैसी? मैं नहीं समझा।

खोजी — तुम्हारे मारे नाक में दम है और तुम हिंदी की चिंदी निकालते हो। अवध का हाल मालूम है या नहीं? अवध से बढ़ कर दुनिया में और कौन बादशाहत होगी?

अफसर — हमने अवध का नाम नहीं सुना। आपको कोई खिताब मिले तो आप पसंद करेंगे?

खोजी – वाह, नेकी और पूछ-पूछ!

उस दिन से सारी फौज में खोजी की धूम मच गई। एक दिन रूसियों ने एक पहाड़ी पर से तुर्कों पर गोले उतारने शुरू किए। तुर्क लोग आराम से लेटे हुए थे। एकाएक तोप की आवाज सुनी तो घबरा गए। जब तक मुकाबला करने के लिए तैयार हों तब तक उनके कई आदमी काम आए। उस वक़्त खोजी ने अपने सिपाहियों को ललकारा, तलवार खींच पहाड़ी पर चढ़ गए और कई आदमियों को जख्मी किया, इससे उनकी और भी धाक बैठ गई। जिसे देखो, उन्हीं की तारीफ कर रहा था।

एक सिपाही – आपने आज वह काम किया है कि रुस्तम से भी न होता। आपके वास्ते कोई खिताब तजबीजा जायगा।

खोजी – मेरा आज़ाद आ जाय तो मेरी मेहनत ठिकाने लगे, वरना सब हेच है।

अफसर – जिस वक़्त तुम घोड़े से गिरे, मेरे होश उड़ गए।

खोजी – गिरते ही सँभल भी गए थे।

अफसर – चित गिरे थे?

खोजी – जी नहीं। पहलवान जब गिरेगा, पट गिरेगा।

अफसर – जरा सा तो आप का कद है और इतनी हिम्मत!

खोजी — क्या कहा, जरा सा कद, किसी पहलवान से पूछिए। कितनी ही कुश्तियाँ जीत चुका हूँ।

अफसर — हमसे लड़िएगा?

खोजी — आप ऐसे दस हों तो क्या परवा?

फौज के अफसर ने उसी दिन वजीर-जंग के पास खोजी की सिफारिश लिख भेजी।

78

खोजी थे तो मसखरे, मगर वफादार थे। उन्हें हमेशा आज़ाद की धुन सवार रहती थी। बराबर याद किया करते थे। जब उन्हें मालूम हुआ कि आज़ाद को पोलैंड की शाहज़ादी ने कैद कर दिया है तो वह आज़ाद को खोजने निकले। पूछते-पूछते किसी तरह आज़ाद के कैदखाने तक पहुँच ही तो गए। आज़ाद ने उन्हें देखते ही गोद में उठा लिया।

खोजी — आज़ाद, आज़ाद, अरे मियाँ, तुम कौन हो?

आज़ाद — ओ-हो-हो!

खोजी — भाईजान, तुम भूत हो या प्रेत, हमें छोड़ दो। मैं अपने आज़ाद को ढूँढ़ने जाता हूँ।

आज़ाद — पहले यह बताओ कि यहाँ कैसे पहुँचे?

खोजी — सब बतलाएँगे मगर पहले यह तो बताओ कि तुम्हारी यह गति कैसी हो गई?

आज़ाद ने सारी बातें खोजी को समझाई, तो आपने कहा — वल्लाह, निरे गाउदी हो। अरे भाईजान, तुम्हारी जान के लाले पड़े हैं, तुमको चाहिए कि जिस तरह मुमकिन हो, शाहज़ादी को खुश करो, तुमको तो यह दिखाना चाहिए कि शाहज़ादी को छोड़ कर कहीं जाओगे ही नहीं। खूब इश्क जताओ, तब कहीं तुम्हारा एतबार होगा।

आज़ाद — हो सिड़ी तो क्या हुआ, मगर बात ठिकाने की करते हो, मगर यह तकरीर कौन करे?

खोजी — और हम आए क्या करने हैं?

यह कह कर आप शाहज़ादी के सामने आकर खड़े हो गए। उसने इनकी सूरत देखी तो हँस पड़ी। मियाँ खोजी समझे कि हम पर रीझ गई। बोले — क्या लड़वाओगी क्या? आज़ाद सुनेगा तो बिगड़ उठेगा। मगर वाह रे मैं! जिसने देखा, वही रीझा और यहाँ

यह हाल है कि किसी से बोलने तक नहीं। एक हो तो बोलूँ, दो हो तो बोलूँ, चार निकाह तक तो जायज़ हैं, मगर जब इंद्र का अखाड़ा पीछे पड़ जाय तो क्या करूँ?

शाहज़ादी — जरा बैठ तो जाइए। यह तो अच्छा नहीं मालूम होता कि मैं बैठी रहूँ और आप खड़े रहें।

खोजी — पहले यह बताओ कि दहेज क्या दोगी?

हबशिन — और अकड़ते किस बिरते पर हो। सूखी हड्डियों पर यह गरूर?

खोजी — तुम पहलवानों की बातें क्या जानो। यह चोर-बदन कहलाता है; मैं अखाड़े में उतर पड़ूँ तो फिर कैफियत देखो।

हबशिन — टेनी मुर्ग के बराबर तो आपका कद है और दावा इतना लंबा चौड़ा!

खोजी — तुम गँवारिन हो, ये बातें क्या जानो। तुम कद को देखा चाहो और यहाँ लंबे आदमी को लोग बेवकूफ कहते हैं। शेर को देखो और ऊँट को देखो। मिस्र में एक बड़े ग्रांडील जवान को पटकनी बताई। मारा,चारों खाने चित। उठ कर पानी भी न माँगा।

खैर; बहुत कहने-सुनने से आप कुरसी पर बैठे तो दोनों टाँगें कुरसी पर रख लीं और बोले — अब दहेज का हाल बताओ। लेकिन मैं एक शर्त से शादी करूँगा, इन सब लौंडियों को महल बनाऊँगा और इनके अच्छे-अच्छे नाम रखूँगा। ताऊस-महल, गुलाम-महल...।

शाहज़ादी — तो आप अपनी शादी के फेर में हैं, यह कहिए।

खोजी — हँसती आप क्या हैं, अगर हमारा करतब देखना हो किसी पहलवान को बुलाओ। अगर हम कुश्ती निकालें तो शादी मंजूर?

शाहज़ादी ने एक मोटी-ताजी हबशिन को बुलाया। खोजी ने आँख ऊपर उठाई तो देखते हैं कि एक काली-कलूटी देवनी हाथ में एक मोटा सोटा लिए चली आती हैं। देखते ही उनके होश उड़ गए। हबशिन ने आते ही इनके कंधे पर हाथ रखा तो इनकी जान निकल गई। बोले — हाथ हटाओ।

हबशिन — दम हो तो हाथ हटा दो।

खोजी — मेरे मुँह न लगना, खबरदार!

हबशिन ने उनका हाथ पकड़ लिया और मरोड़ने लगी। खोजी झल्ला-झल्ला कर कहते थे, हाथ छोड़ दे। हाथ टूटा तो बुरी तरह पेश आऊँगा, मुझसे बुरा कोई नहीं।

हबशिन ने हाथ छोड़ कर उनके दोनों कान पकड़े और उठाया तो जमीन से छः अंगुल ऊँचे!

हबशिन — कहो, शादी पर राजी हो या नहीं?

खोजी — औरत समझ कर छोड़ दिया। इसके मुँह कौन लगे!

इस पर हबसिन ने ख्वाजा साहब को गोद में उठाया और ले चली। उन्होंने सैकड़ों गालियाँ दीं — खुदा तेरा घर खराब करे, तुम पर आसमान टूट पड़े, देखो, मैं कहे देता हूँ कि पीस डालूँगा। मैं सिर्फ इस सबब से नहीं बोलता कि मर्द हो कर औरत जाति से क्या बोलूँ। कोई पहलवान होता तो मैं अभी समझ लेता, और समझता क्या? मारता चारों खाने चित।

हबशिन — खैर, दिल्लगी तो हो चुकी, अब यह बताओ कि आज़ाद से तुमने क्या कहा? वह तो आपके दोस्त हैं।

खोजी — ऊँह, तुमको किसी ने बहका दिया, वह दोस्त नहीं, लड़के हैं। मैंने उसके नाम एक खत लिखा है, ले जाओ और उसका जवाब लाओ!

हबशिन आपका खत ले कर आज़ाद के पास पहुँची और बोली — हुजूर, आपके वालिद ने इस खत का जवाब माँगा है।

आज़ाद — किसने माँगा है? तुमने यह कौन लफ्ज कहा?

हबशिन — हुजूर के वालिद ने...। वह जो ठेंगने से आदमी हैं।

आज़ाद — वह सुअर मेरे घर का गुलाम है। वह मसखरा है। हम उसके खत का जवाब नहीं देते।

हबशिन ने आकर खोजी से कहा — आपका खत पढ़ कर आपके लड़के बहुत ही खफा हुए।

खोजी — नालायक है कपूत, जी चाहता है, अपना सिर पीट लूँ।

शाहज़ादी ने कहा — जा कर आज़ाद पाशा को बुला लाओ, इस झगड़े का फैसला हो जाय।

जरा देर में आज़ाद आ पहुँचे। खोजी ने उन्हें देख कर सिटपिटा गए।

इधर तो शाहज़ादी खोजी के साथ यों मजाक कर रही थी। उधर एक लौंडी ने आकर कहा — हुजूर, दो सवार आए हैं और कहते हैं कि शाहज़ादी को बुलाओ। हमने बहुत कहा कि शाहज़ादी साहब को आज फुरसत नहीं है, मगर वह नहीं सुनते।

शाहज़ादी ने खोजी से कहा कि बाहर जा कर इन सवारों से पूछो कि वह क्या चाहते हैं? खोजी ने जा कर उन दोनों को खूब गौर से देखा और आकर बोले — हुजूर, मुझे तो रईसजादे मालूम होते हैं। शाहज़ादी ने जा कर शाहजादों को देखा तो आज़ाद भूल गई। उन्हें एक दूसरे महल में ठहराया और नौकरों को ताकीद कर दी कि इन मेहमानों को कोई तकलीफ न होने पाए। आज़ाद तो इस खयाल में बैठे थे कि शाहज़ादी आती होगी और शाहज़ादी नए मेहमानों की खातिरदारी का इंतजाम कर रही थी। लौंडियाँ भी चल दीं, खोजी और आज़ाद अकेले रह गए।

आज़ाद — मालूम होता है, उन दोनों लौंडों को देख कर लट्टू हो गई।

खोजी — तुमसे तो पहले ही कहते थे, मगर तुमने ने माना। अगर शादी हो गई होती तो मजाल थी कि गैरों को अपने घर में ठहराती।

आज़ाद — जी चाहता है, इसी वक़्त चल कर दोनों के सिर उड़ा दूँ।

खोजी — यही तो तुममें बुरी आदत है। जरा सब्र से काम लो, देखो क्या होता है।

79

इन दोनों शाहजादों में एक का नाम मिस्टर क्लार्क था और दूसरे का हेनरी! दोनों की उठती जवानी थी। निहायत खूबसूरत। शाहज़ादी दिन के दिन उन्हीं के पास बैठी रहती, उनकी बातें सुनने से उसका जी न भरता था। मियाँ आज़ाद तो मारे जलन के अपने महल से निकलते ही न थे। मगर खोजी टोह लेने के लिए दिन में कई बार यहाँ आ बैठते थे। उन दोनों को भी खोजी की बातों में बड़ा मजा आता।

एक दिन खोजी दोनों शाहजादों के पास गए, तो इत्तिफ़ाक़ से शाहज़ादी वहाँ न थी। दोनों शाहजादों ने खोजी की बड़ी खातिर की। हेनरी ने कहा — ख्वाजा साहब, हमको पहचाना?

यह कह कर उसने टोप उतार दिया! खोजी चौंक पड़े। यह मीडा थी। बोले — मिस मीडा, खूब मिलीं।

मीडा — चुप-चुप! शाहज़ादी न जानने पाए। हम दोनों इसलिए आए हैं कि आज़ाद को यहाँ से छुड़ा ले जायँ।

खोजी — अच्छा, क्या यह भी औरत हैं?

मीडा — यह वही औरत हैं जो आज़ाद को पकड़ ले गई थीं।

खोजी — अक्खाह, मिस क्लारिसा! आप तो इस काबिल हैं कि आपका बायाँ कदम ले।

मीडा — अब यह बताओ कि यहाँ से छुटकारा पाने की भी कोई तदबीर है?

खोजी — हाँ, वह तदबीर बताऊँ कि कभी पट ही न पड़े! यह शाहज़ादी बड़ी पीनेवाली है, इसे खूब पिलाओ और जब बेहोश हो जाय तो ले उड़ो।

खोजी — ने जा कर आज़ाद से यह किस्सा कहा। आज़ाद बहुत खुश हुए। बोले — मैं दोनों की सूरत देखते ही ताड़ गया था।

खोजी — मिस क्लारिस कहीं तुम्हें दगा न दे।

आज़ाद — अजी नहीं, यह मुहब्बत की घातें हैं।

खोजी — अभी जरा देर में महफिल जमेगी। न कहोगे, कैसी तदबीर बताई!

खोजी ने ठीक कहा था। थोड़ी ही देर में शाहज़ादी ने इन दोनों आदमियों को बुला भेजा। ये लोग वहाँ पहुँचे तो शराब के दौर चल रहे थे।

शाहज़ादी — आज हम शर्त लगा कर पिएँगे।

हेनरी — मंजूर। जब तक हमारे हाथ से जाम न छूटे तब तक तुम भी न छोड़ो। जो पहले छोड़ दे वह हारा।

क्लार्क — (आज़ाद से) तुम कौन हो मियाँ, साफ बोलो!

आज़ाद — मैं आदमी नहीं हूँ, देवजाद हूँ। परियाँ मुझे खूब जानती हैं।

क्लारिसा —

उड़ता है मुझसे ओ सितमईजाद किस लिए,
बनता है आदमी से परीजाद किस लिए?

क्लारिसा ने शाहज़ादी को इतनी शराब पिलाई कि वह मस्त हो कर झूमने लगी। तब आज़ाद ने कहा — ख्वाजा साहब, आप सच कहना, हमारा इश्क सच्चा है या नहीं। मीडा, खुद जानता है, आज का दिन मेरी जिंदगी का सबसे मुबारक दिन है। किसे उम्मीद थी कि इस कैद में तुम्हारा दीदार होगा?

खोजी — बहुत बहको न भाई, कहीं शाहज़ादी सुन रही हो तो आफत आ जाय।

आज़ाद — वह इस वक़्त दूसरी दुनिया में हैं।

खोजी — शाहज़ादी साहब, यह सब भागे जा रहे हैं, जरा होश में तो आइए।

आज़ाद — अबे चुप रह नालायक। मीडा, बताओ, किस तदबीर से भागोगी? मगर तुमने तो यह रूप बदला कि खुदा की पनाह! मैं यही दिल में सोचता था कि ऐसे हसीन शाहज़ादे कहाँ से आ गए, जिन्होंने हमारा रंग फीका कर दिया। वल्लाह, जो जरा भी पहचाना हो। मिस क्लारिसा, तुमने तो गजब ही कर दिया। कौन जानता था कि साइबेरिया भेज कर तुम मुझे छुड़ाने आओगी!

मीडा — अब तो मौका अच्छा है; रात ज्यादा आ गई है। पहरे वाले भी सोते होंगे, देर क्यों करें।

आज़ाद अस्तबल में गए और चार तेज घोड़े छाँट कर बाहर लाए। दोनों औरतें तो घोड़ों पर सवार हो गईं, मगर खोजी की हिम्मत छूट गई, डरे कि कहीं गिर पड़ें तो हड्डी-पसली चूर हो जाय। बोले — भई, तुम लोग जाओ; मुझे यहीं रहने दो। शाहज़ादी को तसल्ली देने वाला भी तो कोई चाहिए। मैं उसे बातों में लगाए रखूँगा जिसमें उसे कोई शक न हो। खुदा ने चाहा तो एक हफ्ते के अन्दर कुस्तुनतुनिया में तुमसे मिलेंगे।

यह कह कर खोजी तो इधर चले और वे तीनों आदमी आगे बढ़े। कदम-कदम पर पीछे फिर-फिर कर देखते थे कि कोई पकड़ने न आ रहा हो। सुबह होते-होते ये लोग डैन्यूब के किनारे आ पहुँचे और घोड़ों से उतर हरी-हरी घास पर टहलने लगे।

एकाएक पीछे से कई सवार घोड़े दौड़ाते आते दिखाई पड़े। इन लोगों ने अपने घोड़े चरने को छोड़ दिए थे। अब भागें कैसे? दम के दम में सब के सब सवार सिर पर आ पहुँचे और इन तीनों आदमियों को गिरफ्तार कर लिया। अकेले आज़ाद भला तीस आदमियों को क्या मुकाबला करते!

दोपहर होते-होते ये लोग शाहज़ादी के यहाँ जा पहुँचे। शाहज़ादी तो गुस्से से भरी बैठी थी। अन्दर ही से कहला भेजा कि आज़ाद को कैद कर दो। यह हुक्म दे कर शाहजादों को देखने के लिए बाहर निकली तो शाहजादों की जगह दो शाहजादियाँ खड़ी नजर आईं? धक से रह गई। या खुदा, यह मैं क्या देख रही हूँ!

क्लारिसा — बहन, मर्द के भेस में तो तुम्हें प्यार कर चुके। अब आओ, बहनें-बहनें मिल कर प्यार करें। हम वही हैं जिनके साथ तुम शादी करने वाली हो।

शाहज़ादी — अरे क्लारिसा, तुम यहाँ कहाँ?

क्लारिसा — आओ गले मिलें। मुझे खौफ हैं कि कहीं तुम्हारे ऊपर कोई आफत न आ जाय। ऐसे नामी सरकारी कैदी को उड़ा लाना तुम्हें मुनासिब न था। वजीरजंग को यह खबर मिल गई है। अब तुम्हारी खैरियत इसी में है कि उस तुर्की जवान को हमारे हवाले कर दो।

शाहज़ादी समझ गई कि अब आज़ाद को रुखसत करना पड़ेगा। आज़ाद से जा कर बोली — प्यारे आज़ाद, मैंने तुम्हारे साथ जो बुराइयाँ की हैं, उन्हें माफ करना। मैंने जो कुछ किया, दिल की जलन से मजबूर हो कर किया। तुम्हारी जुदाई मुझसे बरदाश्त न होगी। जाओ, रुखसत।

यह कह कर उसने क्लारिसा से कहा — शाहज़ादी, खुदा के लिए उन्हें साइबेरिया न भेजना। वजीरजंग से तुम्हारी जान-पहचान है! वह तुम्हारी बात मानते हैं, अगर तुम माफ कर दोगी, तो वह जरूर माफ कर देंगे।

80

उधर आज़ाद जब फौज से गायब हुए तो चारों तरफ उनकी तलाश होने लगी। दो सिपाही घूमते-घामते शाहज़ादी के महल की तरफ आ निकले। इत्तिफ़ाक़ से खोजी भी अफीम की तलाश में घूम रहे थे। उन दोनों सिपाहियों ने खोजी को आज़ाद के साथ पहले देखा था। खोजी को देखते ही पकड़ लिया और आज़ाद का पता पूछने लगे।

खोजी — मैं क्या जानूँ कि आज़ाद पाशा कौन है। हाँ, नाम अलबत्ता सुना है।

एक सिपाही — तुम आज़ाद के साथ हिंदोस्तान से आए हो और तुमको खूब मालूम है कि आज़ाद पाशा कहाँ हैं।

खोजी — कौन आज़ाद के साथ आया है? मैं पठान हूँ, पेशावर से आया हूँ, मुझसे आज़ाद से वास्ता?

मगर वह दोनों सिपाही भी छँटे हुए थे, खोजी के झाँसे में न आए। खोजी ने जब देखा कि इन जालिमों से बचना मुश्किल है तो सोचे कि सिड़ी बन जाओ। कुछ का कुछ जवाब दो। मरना है तो दूसरे को ले कर मरो। मरना न होता तो अपना वतन छोड़ कर इतनी दूर आते ही क्यों। खास मजे में नवाब के यहाँ दनदनाते थे। उल्लू बना-बना कर मजे उड़ाते थे। चीनी की प्यालियों में मालवे की अफीम घुलती थी, चंडू के छींटे उड़ते थे, चरस के दम लगते थे। वह सब मजे छोड़-छाड़ कर उल्लू बने, मगर फँसे सो फँसे!

सिपाही — तुम्हारा नाम क्या है? सच-सच बता दो।

खोजी — कल तक दरिया चढ़ा था, आज चिड़िया दाना चुगेगी।

सिपाही — तुम्हारे बाप का क्या नाम था?

खोजी — हमको अपना नाम तो याद ही नहीं। बाप के नाम को कौन कहे?

सिपाही — तुम यहाँ किसके साथ आए?

खोजी — शैतान के साथ?

सिपाहियों ने जब देखा कि यह ऊल-जलूल बक रहा है तो उन्हें एक मोटे से दरख्त में बाँधा और बोले — ठीक-ठीक बतलाते हो तो बतला दो वरना हम तुम्हें फाँसी दे देंगे।

खोजी की आँखों से आँसू निकल पड़े। खुदा से दुआ माँगने लगे कि ऐ खुदा, मैं तो अब दुनिया से जा रहा हूँ, मगर मरते वक़्त दुआ माँगता हूँ कि आज़ाद का बाल भी बाँका न हो।

आखिर सिपाहियों को खोजी के सिड़ी होने का यकीन आ ही गया। छोड़ दिया। खोजी के सिर से यह बला टली तो चहकने लगे। तुम लोग जिंदगी के मजे क्या जानो, हमने वह-वह मजे उड़ाए हैं कि सुनो तो फड़क जाओ। नवाब साहब की बदौलत बादशाह बने फिरते थे, सुबह से दस बजे तक चंडू के छींटे उड़े, फिर खाना खाया, सोए तो चार बजे की खबर लाए, चार बजे से अफीम घूमने लगी, पौंडे छोले और गँड़ेरियाँ चूसीं, इतने में नवाब साहब निकल आए। वैसे रईस यहाँ कहाँ? वहाँ के एक अदना कहार ने बीस लाख की शराब अपनी बिरादरी वालों को एक रात

में पिला दी। एक कहार ने सोने-चाँदी की कुज्जियों में शराब पिलाई। इस पर एक बूढ़े खुर्राट ने कहा — न भाई पंचो, आपन मरजाद न छोड़ब। हमरे बाप यही कुज्जी माँ पिहिन। हमरे दादा पिहिन, अब हम कहाँ के बड़े रईस होइ गयन! महरा ने सोने-चाँदी की प्यालियाँ मँगवाईं और फकीरों को बाँट दीं। दस हजार प्यालियाँ चाँदी की थीं और दस हजार सोने की। जब बादशाह को यह खबर मिली तो हुक्म दिया कि जितने कहार आए हों, सबको एक-एक लहँगा दिलवा दिया जाय। अब इस गई-गुजरी हालत पर भी जो बात वहाँ है वह कहीं नहीं है।

सिपाही — आपके मुल्क में सिपाही तो अच्छे-अच्छे होंगे?

खोजी — हमारे मुल्क में एक से एक सिपाही मौजूद हैं। जो हैं अपने वक़्त का रुस्तम।

सिपाही — आप भी तो वहाँ के पहलवान ही मालूम होते हैं।

खोजी — इस वक़्त तो सर्दी ने मार डाला है, अब बुढ़ापा आया। जवानी में अलबत्ता मैं भी हाथी की दुम पकड़ लेता था तो हुमस नहीं सकता था। अब न वह शौक, न वह दिल, अब तो फकीरी अख्तियार की।

सिपाही — आपकी शादी भी हुई है?

खोजी — आपने भी वही बात पूछी! फकीर आदमी, शादी हुई न हुई, बराबर के लड़के हैं।

सिपाही — आप कुछ पढ़े-लिखे भी हैं?

खोजी — ऊह, पूछते हैं, पढ़े-लिखे हैं। यहाँ बिला पड़े ही आलिम-फाजिल हैं; पढ़ने का मरज नहीं पालते, यह आरजा तो यहीं देखा, अपने यहाँ तो चंडू, चरस; मदक के चरचे रहते हैं। हाँ, अगले जमाने में पढ़ने-लिखने का भी रिवाज था।

सिपाही — तो आपका मुल्क जाहिलों ही से भरा हुआ है?

खोजी — तुम खुद गँवार हो। हमारे यहाँ एक-एक पहलवान ऐसे पड़े हैं जो तीन-तीन हजार हाथ जोड़ी के हिलाते हैं। दंडों पर झुक गए तो चार पाँच हजार दंड पेल डाले। गुलचले ऐसे कि अँधेरी रात में सिर्फ आवाज पर तीर लगाया और निशाना खाली न गया।

ये बातें करके, खोजी ने अफीम घोली और रूसियों से पीने के लिए कहा। और सबों ने तो इनकार किया, मगर एक मुसाफिर की शामत जो आई तो उसने एक चुस्की लगाई। जरा देर में नशे ने रंग जमाया तो झूमने लगा। साथियों ने कहकहा लगाया।

खोजी — एक दिन का जिक्र है कि नवाब साहब के यहाँ हम बैठे गप्पें उड़ा रहे थे। एक मौलवी साहब आए। यहाँ उस वक़्त सरूर डटा हुआ था, हमने अर्ज की, मौलवी साहब, अगर हुक्म हो तो एक प्याली हाजिर करूँ। मौलवी ने आँखें नीली-पीली कीं और कहा — कोई मसखरा है बे तू! मैंने कहा — यार, ईमान से कह दो कि तुमने कभी अफीम पी है या नहीं? मौलवी साहब इतने जामे से बाहर हुए कि मुझे हजारों गालियाँ सुनाईं। आज बड़ी सर्दी है, हम ठिठुरे जाते हैं।

सिपाही — यह वक़्त हवा खाने का है।

खोजी — खुदा की मार इस अक्ल पर। यह वक़्त हवा खाने का है? यह वक़्त आग तापने का है। हमारे मुल्क के रईस इस वक़्त खिड़कियाँ बन्द करके बैठे होंगे। हवा खाने की अच्छी कही, यहाँ तो रूह तक काँप रही है और आपको हवा खाने की सूझती है।

सिपाही — एक मुसाफिर ने हमसे कहा था कि हिंदोस्तान में लोग पुरानी रस्मों के बहुत पाबन्द हैं। अब तक पुरानी लकीरें पीटते जाते हैं।

खोजी — तो क्या हमारे बाप-दादे बेवकूफ थे? उनकी रस्मों को जो न माने वह कपूत, जो रस्म जिस तरह पर चली आती है उसी तरह रहेगी।

सिपाही — अगर कोई रस्म खराब हो तो क्या उसमें तरमीम की जरूरत नहीं?

खोजी — लाख जरूरत हो तो क्या, पुरानी रस्मों में कभी तरमीम न करनी चाहिए। क्या वे लोग अहमक थे? एक आप ही बड़े अक्लमंद पैदा हुए!

रूसियों को खोजी की बातों में बड़ा मजा आया। उन्हें यकीन हो गया कि यह कोई दूसरा आदमी है। आज़ाद का दोस्त नहीं। खोजी को छोड़ दिया और कई दिन के बाद यह कुस्तुनतुनिया पहुँच गए।

81

एक दिन दो घड़ी दिन रहे चारों परियाँ बनाव-चुनाव हँस-खेल रही थीं। सिपहआरा का दुपट्टा हवा के झोंकों से उड़ा जाता था। जहानारा मोतिये के इत्र में बसी थीं। गेतीआरा का स्याह रेशमी दुपट्टा खूब खिल रहा था।

हुस्नआरा — बहन, यह गरमी के दिन और काला रेशमी दुपट्टा! अब कहने से तो बुरा मानिएगा, जहानारा बहन निखरें तो आज

दूल्हा भाई आने वाले हैं; यह आपने रेशमी दुपट्टा क्या समझ के फड़काया!

अब्बासी — आज चबूतरे पर अच्छी तरह छिड़काव नहीं हुआ।

हीरा — जरा बैठ कर देखिए तो, कोई दस मशकें तो चबूतरे ही पर डाली होगी।

एकाएक महरी की छोकरी प्यारी दौड़ती हुई आई और बोली — हुजूर; हमने यह आज बिल्ली पाली है। बड़ी सरकार ने खरीद दी और दो आने महीना बाँध दिया। सुबह को हम हलुआ खिलाएँगे। शाम को पेड़ा। उधर सिपहआरा और गेतीआरा गेंद खेलने लगीं तो हुस्नआरा ने कहा, अब रोज गेंद ही खेला करोगी? ऐसा न हो, आज भी अम्माँजान आ जायँ।

अब्बासी — हुजूर, गेंद खेलने में कौन सा ऐब है? दो घड़ी दिल बहलता है। बड़ी सरकार की न कहिए; वह बूढ़ी हुई, बिगड़ी ही चाहे।

यही बातें हो रही थीं कि शाहज़ादा हुमायूँफर हाथी पर सवार बगीचे की दीवार से झाँकते हुए निकले। सिपहआरा बेगम को गेंद खेलते देखा तो मुसकरा दिए। हाथी तो आगे बढ़ गया, मगर हुस्नआरा को शाहज़ादे का यों झाँकना बुरा लगा। दारोगा को बुला कर कहा, कल इस दीवार पर दो रद्दे और चढ़ा दो, कोई

हाथी पर इधर से निकल जाता है तो बेपरदगी होती है। सौ काम छोड़ कर यह काम करो।

जब दारोगा चले गए तो जहानारा ने कहा — सिपहआरा बहन ने इनको इतना ढीठ कर दिया, नहीं शाहज़ादे हों चाहे खुद बादशाह हों, ऐसी अंधेर-नगरी नहीं है कि जिसका जी चाहे, चला आए।

फिर वही चहल-पहल होने लगी। सिपहआरा और अब्बासी पचीसी खेलने लगीं।

अब्बासी — हुजूर, अबकी हाथ में यह गोट न पीटूँ तो अब्बासी नाम न रखूँ।

सिपहआरा — वाह! कहीं पीटी न हो।

अब्बासी — या अल्लाह, पचीस पड़ें। अरे! दिए भी तो तीन काने? बाजी खाक में मिल गई।

हुस्नआरा — ले के हरवा न दी हमारी बाजी! बस अब दूर हो।

अब्बासी — ऐ बीबी, मैं क्या करूँ ले भला। पाँसा वही है लेकिन वक़्त ही तो है।

हुस्नआरा — अच्छा बाजी हो ले, तो हम फिर आएँ।

सिपहआरा — अब मैं दाँव बोलती हूँ।

हुस्नआरा — हमसे क्या मतलब, वह जानें, तुम जानो। बोलो अब्बासी।

अब्बासी — हुजूर, जब बाजी सत्यानाश हो गई तब तो हमको मिली हौर अब हुजूर निकली जाती हैं।

हुस्नआरा — हम नहीं जानते। फिर खेलने क्यों बैठी थीं?

अब्बासी — अच्छा मंजूर हैं, फेंकिए पाँसा।

सिपहआरा — दो महीने की तनख्वाह है, इतना सोच लो।

अब्बासी — ऐ हुजूर, आपकी जूतियों का सदका, कौन बड़ी बात है। फेंकिए तीन काने।

सिपहआरा ने जो पाँसा फेंका तो पचीस! दूसरा पचीस, तीस, फिर पचीस, गरज सात पेचें हुई। बोलीं — ले अब रुपए बाएँ हाथ से ढीले कीजिए। महरी, बाजी की संदूकजी तो ले आओ, आलमारी के पास रखी है।

हुस्नआरा ने महरी को आँख के इशारे से मना किया। महरी कमरे से बाहर आकर बोली — ऐ हुजूर, कहाँ है? वहाँ तो नहीं मिलती।

सिपहआरा — बस जाओ भी, हाथ झुलाती आईं, चलो हम बतावें कहाँ है।

महरी – जो हुजूर बता दें तो और तो लौंडी की हैसियत नहीं है, मगर सेर भर मिठाई हुजूर की नजर करूँ।

सिपहआरा – महरी को साथ ले कर कमरे की तरफ चली। देखा तो संदूकची नदारद! हैं, यह संदूकची कौन ले गया? महरी ने लाख हँसी जब्त की, मगर जब्त न हो सकी। तब तो सिपहआरा झल्लाईं यह बात है! मैं भी कहूँ, संदूकची कहाँ गायब हो गई। तुम्हें कसम है, दे दो।

सिपहआरा फिर नाक सिकोड़ती हुई बाहर आई तो सबने मिलकर कहकहा लगाया। एक ने पूछा – क्यों, संदूकची मिली? दूसरी बोली – हमारा हिस्सा न भूल जाना। हुस्नआरा ने कहा – बहन; दस ही रुपया निकालना। अब्बासी ने कहा – हुजूर, देखिए, हमीं ने जितवा दिया, अब कुछ रिश्वत दीजिए।

महरी – और बीबी, मैं भला काहे को छिपा देती, कुछ मेरी गिरह से जाता था।

सिपहआरा – बस-बस बैठो, चलीं वहाँ से बड़ी वह बन के।

महरी – अपनी हँसी को क्या करूँ, मुझी पर धोखा होता है।

इतने में दरबान ने आवाज दी, सवारियाँ आई हैं, और जरा देर में दो औरतें डोलियों से उतर कर अन्दर आईं। एक का नाम था नजीर बेगम, दूसरी का जानी बेगम।

हुस्नआरा — बहुत दिन बाद देखा। मिजाज अच्छा रहा बहन? दुबली क्यों हो इतनी?

नजीर — माँदी थी, बारे खुदा-खुदा करके, अब सँभली हूँ।

हुस्नआरा — हमने तो सुना भी नहीं। जानी बेगम हमसे कुछ खफा सी मालूम होती हैं, खुदा खैर करे!

जानी — बस, बस, जरी मेरी जबान न खुलवाना, उलटे चोर कोतवाल को डाँटे। यहाँ तक आते मेहँदी घिस जाती।

जानी बेगम की बोटी बोटी फड़कती थी। नजीर बेगम भोली-भाली थीं। जानी बेगम ने आते ही आते कहा, हुस्नआरा आओ, आँख-मूँदी धप खेलें।

जहानारा — क्या यह कोई खेल है?

जानी — ऐ है, क्या नन्हीं बनी जाती हैं!

नजीर — बस हम तुम्हारी इन्हीं बातों से घबराते हैं। अच्छी बातें न करोगी।

जानी — ऐ, वह निगोड़ी अच्छी बातें कौन सी होती है, सुनें तो सही।

नजीर — अब तुम्हें कौन समझाए।

जानी बेगम सिपहआरा के गले में हाथ डाल कर बागीचे की तरफ ले गईं तो हुस्नआरा ने कहा — इनके तो मिजाज ही नहीं मिलते।

बड़ी बेगम — बड़ी कल्ला दराज छोकरी है। इसके मियाँ की जान अजाब में हैं, हम तो ऐसे को अपने पास भी न आने दें।

हुस्नआरा — नहीं अम्माँजान, यह न फरमाइए, ऐसी नहीं है, मगर हाँ; जबान नहीं रुकती।

एकाएक जानी बेगम ने आकर कहा — अच्छा बहन, अब रुखसत करो। घर से निकले बड़ी देर हुई।

हुस्नआरा — आज तुम दोनों न जाने पाओगी। अभी आए कितनी देर हुई?

जानी — नजीर बेगम को चाहे न जाने दो, मैं तो जाऊँगी ही। मियाँ के आने का यही वक़्त है। मुझे मियाँ का जितना डर है, उतना और किसी का नहीं। नजीर की आँखों को तो पानी मर गया है।

नजीर — इसमें क्या शक, तुम बेचारी बड़ी गरीब हो।

इसी तरह आपस में बहुत देर तक हँसी-दिल्लगी होती रही। मगर जानी बेगम ने किसी का कहना न माना। थोड़ी ही देर में वह उठ कर चली गईं।

82

सुरैया बेगम चोरी के बाद बहुत गमगीन रहने लगीं। एक दिन अब्बासी से बोलीं — अब्बासी, दिल को जरा तकसीन नहीं होती अब हम समझ गए कि जो बात हमारे दिल में है वह हासिल न होगी।

> शीशा हाथ आया न हमने कोई सागर पाया;
> साकिया ले तेरी महफिल से चले भर पाया।

सारी खुदाई में हमारा कोई नहीं।

अब्बासी ने कहा — बीबी, आज तक मेरी समझ में न आया कि वह, जिसके लिए आप रोया करती हैं, कौन हैं? और यह जो आज़ाद आए थे, यह कौन हैं। एक दिन बाँकी औरत के भेष में आए, एक दिन गोसाई बन के आए।

सुरैया बेगम ने कुछ जवाब न दिया। दिल ही दिल में सोची कि जैसा किया वैसा पाया। आखिर हुस्नआरा में कौन सी बात है जो हममें नहीं। फर्क यही है कि वह नेकचलन हैं और मैं बदनाम।

यह सोच कर उनकी आँखें भर आईं, जी भारी हो गया। गाड़ी तैयार कराई और हवा खाने चलीं। रास्ते में सलारू और उसकी वकील साहब नजर पड़े। सलारू कह रहा था — जनाब, हम वह नौकर हैं जो बाप बन के मालिक के यहाँ रहते हैं। आपको हमारी इज्जत करनी चाहिए। इत्तिफ़ाक़ से वकील साहब की नजर इस गाड़ी पर पड़ी। बोले — खैर बाप पीछे बन लेना जरी जा कर देखो तो, इस गाड़ी में कौन सवार है? सलारू ने कहा, हुजूर, मैं फटेहालों हूँ, कैसे जाऊँ! आप भारी-भरकम आदमी हैं, कपड़े भी अच्छे-अच्छे पहने हैं। आप ही जायँ। वकील साहब ने नजदीक आकर कोचवान से पूछा — किसकी गाड़ी है? कोचवान पंजाब का रहने वाला पठान था। झल्ला कर बोला — तुमसे क्या वास्ता, किसी की गाड़ी है!

सलारू बोले — हाँ जी, तुमको इससे क्या वास्ता कि किसकी गाड़ी है? हट जाओ रास्ते से। देखते हैं कि सवारियाँ हैं, मगर डटे खड़े हैं। अभी जो कोई उनका अज़ीज साथ होता तो उतर के इतना ठोकता कि सिट्टी-पिट्टी भूल जाती। तुम वहाँ खड़े होनेवाले कौन हो?

वकील साहब को एक तो यही गुस्सा था कि कोचवान ने डपटा, उस पर सलारू ने पाजी बनाया। लाल-लाल आँखों से घूर कर रह गए, पाते तो खा ही जाते।

सलारू — यह तो न हुआ कि कोचवान को एक डंडा रसीद करते। उलटे मुझ पर बिगड़ रहे हो।

कोचवान चाहता था कि उतर कर वकील साहब की गरदन नापे, मगर सुरैया बेगम ने कोचवान को रोक लिया और कहा — घर लौट चलो।

बेगम साहब जब घर पहुँचीं तो दारोगा जी ने आकर कहा कि हुजूर, घर से आदमी आया है। मेरा पोता बहुत बीमार है। मुझे हुजूर, रुखसत दो। यह लाला खुशवक़्त राय मेरे पुराने दोस्त हैं, मेरी एवज काम करेंगे।

सुरैया बेगम ने कहा — जाइए, मगर जल्द आइएगा।

दूसरे दिन सुरैया बेगम ने लाला खुशवक़्तराय से हिसाब माँगा। लाला साहब पुराने फैशन की दस्तार बाँधे, चपकन पहने, हाथ में कलमदान लिए आ पहुँचे।

सुरैया बेगम — लाला, क्या सरदी मालूम होती है, या जूड़ी आती है, लेहाफ दूँ।

लाला साहब — हुजूर, बारहों महीने इसी पोशाक में रहता हूँ। नवाब साहब के वक़्त में उनके दरबारियों की यही पोशाक थी। अब वह जमाना कहाँ, वह बात कहाँ, वह लोग कहाँ। मेरे वालिद 6 रुपया माहवारी तलब पाते थे। मगर बरकत ऐसी थी कि उनके घर के सब लोग बड़े आराम से रहते थे। दरवाजे पर दो दस्ते मुकर्रर थे। बीस जवान। अस्तबल में दो घोड़े। फीलखाने में एक मादा हाथी! एक जमाना वह था कि दरवाजे पर हाथी झूमता था। अब वह कोने में जान बचाए बैठे हैं।

यह कहते-कहते लाला साहब नवाब साहब की याद करके रोने लगे।

एकाएक महरी ने आकर कहा — हुजूर, आज फिर लुट गए। लाला साहब भी पगड़ी सँभालते हुए चले। सुरैया बेगम झपटी कि चल कर देखें तो, मगर मारे रंज के चलना मुश्किल हो गया। जिस कोठरी में लाला साहब सोए थे उसमें सेंध लगी हैं। सेंध देखते ही रोएँ खड़े हो गए। रो कर बोलीं — बस अब कमर टूट गई। मुहल्ले में हलचल मच गई। फिर थानेदार साहब आ पहुँचे, तहकीकात होने लगी।

थानेदार रात को इस कोठरी में कौन सोया था?

लाला साहब — मैं! ग्यारह बजे से सुबह तक।

थानेदार — तुम्हें किस वक़्त मालूम हुआ कि सेंध लगी।

लाला साहब — दिन चढ़े।

थानेदार — बड़े ताज्जुब की बात है कि रात को कोठरी में आदमी सोए, उसके कल्ले पर सेंध दी जाय ओर उसको जरा भी खबर न हो। आप कितने दिनों से यहाँ नौकर हैं? आपको पहले कभी न देखा।

लाला साहब — मैं अभी दो ही दिन का नौकर हूँ। पहले कैसे देखते।

सुरैया बेगम की रूह काँप रही थी कि खुदा ही खैर करे। माल का माल गया और यह कमबख्त इज्जत का अलग गाहक है। खैर, थानेदार साहब तो तहकीकात करके लंबे हुए। इधर सुरैया बेगम मारे गम के बीमार पड़ गईं। कई दिन तक इलाज होता रहा, मगर कुछ फायदा न हुआ। आखिर एक दिन घबरा कर हुस्नआरा को एक खत लिखवाया जिसमें अपनी बेकरारी का रोना रोने के बाद आज़ाद का पता पूछा था और हुस्नआरा को अपने यहाँ मुलाकात करने के लिए बुलाया था। हुस्नआरा बेगम के पास यह खत पहुँचा तो दंग हो गईं। बहुत सोच-समझ कर खत का जवाब लिखा।

'बेगम साहब की खिदमत में आदाब!

आपका खत आया, अफसोस! तुम भी उसी मरज में गिरफ्तार हो। आपसे मिलने का शौक तो है, मगर आ नहीं सकती, अगर तुम आ जाओ तो दो घड़ी गम-गलत हो। आज़ाद का हाल इतना मालूम है कि रूम की फौज में अफसर हैं। सुरैया बेगम, सच कहती हूँ कि अगर बस चलता तो इसी दम तुम्हारे पास जा पहुँचती। मगर खौफ है कि कहीं मुझे लोग ढीठ न समझने लगें।

तुम्हारी

हुस्नआरा'

यह खत लिख कर अब्बासी को दिया। अब्बासी खत ले कर सुरैया बेगम के मकान पर पहुँची, तो देखा कि वह बैठी रो रही हैं।

अब सुनिए कि वकील साहब ने सुरैया बेगम की टोह लगा ली। दंग हो गए कि या खुदा, यह यहाँ कहाँ। घर जा कर सलारू से कहा। सलारू ने सोचा, मियाँ पागल तो हैं ही, किसी औरत पर नजर पड़ी होगी, कह दिया शिब्बोजान हैं। बोला — हुजूर, फिर कुछ फिक्र कीजिए। वकील साहब ने फौरन खत लिखा —

'शिब्बोजान, तुम्हारे चले जाने से दिल पर जो कुछ गुजरी, दिल ही जानता हो। अफसोस, तुम बड़ी बेमुरव्वत निकलीं। अगर जाना ही था तो मुझसे पूछ कर गई होतीं। यह क्या कि बिना कहे

सुने चल दीं, अब खैर इसी में है कि चुपके से चली आओ। जिस तरह किसी को कानोंकान खबर न हुई और तुम चल दीं, उसी तरह अब भी किसी से कहो न सुनो, चुपचाप चली आओ। तुम खूब जानती हो कि मैं नामी-गिरामी वकील हूँ।

तुम्हारा

वकील'

सलारू ने कहा — मियाँ, खूब गौर करके लिखना और नहीं हम एक बात बतावें। हमको भेज दीजिए, मैं कहूँगा, बीबी, वह तो मालिक हैं, पहले उनके गुलाम से तो बहस कर लो। गो पढ़ा-लिखा नहीं हूँ; मगर उम्र भर लखनऊ में रहा हूँ!

वकील साहब ने सलारू को डाँटा और खत में इतना और बढ़ा दिया, अगर चाहूँ तो तुमको फँसा दूँ। लेकिन मुझसे यह न होगा। हाँ, अगर तुमने बात न मानी तो हम भी दिक करेंगे।

यह खत लिख कर एक औरत के हाथ सुरैया बेगम के पास भेज दिया। बेगम ने लाला साहब से कहा — जरा यह खत पढ़िए तो। लाला साहब ने खत पढ़ कर कहा, यह तो किसी पागल का लिखा मालूम होता है। वह तो खत पढ़ कर बाहर चले गए और सुरैया बेगम सोचने लगीं कि अब क्या किया जाय? यह मूजी बेतरह पीछे पड़ा। सबेरे लाला खुशवक़्त राय सुरैया बेगम की

ड्योढ़ी पर आए तो देखा कि यहाँ कुहराम मचा हुआ है। सुरैया बेगम और अब्बासी का कहीं पता नहीं। सारा महल छान डाला गया, मगर बेगम साहब का पता न चला। लाला साहब ने घबरा कर कहाँ – जरा अच्छी तरह देखो, शायद दिल्लगी में कहीं छिप रही हों। गरज सारे घर में तलाशी की, मगर बेफायदा।

लाला साहब – यह तो अजीब बात है। आखिर दोनों चली कहाँ गईं? जरा असबाब-वसबाब तो देख लो, है या सब ले-दे के चल दीं।

लोगों ने देखा कि जेवर का नाम भी न था। जवाहिरात और कीमती कपड़े सब नदारद।

83

शाहज़ादा हुमायूँफर भी शादी की तैयारियाँ करने लगे। सौदागरों की कोठियों में जा-जा कर सामान खरीदना शुरू किया। एक दिन एक नवाब साहब से मुलाकात हो गई। बोले – क्यों हजरत, यह तैयारियाँ!

शाहज़ादा – आपके मारे कोई सौदा न खरीदे?

नवाब — जनाब, चितवनों से ताड़ जाना कोई हमसे सीख जाय।

शाहज़ादा — आपको यकीन ही न आए तो क्या इलाज?

नवाब — खैर, अब यह फरमाइए, हैदर को पटने से बुलवाइएगा या नहीं? भला दो हफ्ते तक धमा-चौकड़ी रहे। मगर उस्ताद, तायफे नोक के हों। रद्दी कलावंत होंगे तो हम न आएँगे। बस यह इंतजाम किया जाय कि दो महफिलें हों। एक रईसों के लिए और एक कदरदानों के लिए।

इधर तो यह तैयारियाँ हो रही थीं, उधर बड़ी बेगम के यहाँ यह खत पहुँचा कि शाहज़ादा हुमायूँफर को गुर्दे के दर्द की बीमारी है और दमा भी आता है। कई बार वह जुए की इल्लत में सजा पा चुका है। उसको किसी नशे से परहेज नहीं।

बड़ी बेगम ने यह खत पढ़वा कर सुना तो बहुत घबराईं। मगर हुस्नआरा ने कहा, यह किसी दुश्मन का काम है। आज तक कभी तो सुनते कि हुमायूँफर जुए की इल्लत में पकड़े गए। बड़ी बेगम ने कहा — अच्छा, अभी जल्द न करो। आज डोमिनियाँ न आएँ। कल परसों देखा जायगा।

दूसरे दिन अब्बासी यह खत ले कर शाहज़ादा हुमायूँफर के पास गई। शाहज़ादा ने खत पढ़ा तो चेहरा सुर्ख हो गया। कुछ देर

तक सोचते रहे। तब अपने संदूक से एक खत निकाल कर दोनों की लिखावट मिलाई।

अब्बासी — हुजूर ने दस्तखत पहचान लिया न?

शाहज़ादा — हाँ, खूब पहचाना, पर यह बदमाश अपनी शरारत से बाज नहीं आता। अगर हाथ लगा तो ऐसा ठीक बनाऊँगा कि उम्र भर याद करेगा। लो, तुम यह खत भी बेगम साहब को दिखा देना और दोनों खत वापस ले आना।

यह वही खत था जो शाहज़ादे की कोठी में आग लगने के बाद आया था।

रात भर शाहज़ादे को नींद नहीं आई, तरह-तरह के खयाल दिल में आते थे। अभी चारपाई से उठने भी न पाए थे कि भाँड़ों का गोल आ पहुँचा। लाला कालीचरन ने जो ड्योढ़ी का हिसाब लिखते थे, खिड़की से गरदन निकाल कर कहा — अरे भाई, आज क्या...

इतना कहना था कि भाँड़ों ने उन्हें आड़े हाथों लिया। एक बोला — हमें तो सूम मालूम होता है। दूसरे ने कहा — लखनऊ के कुम्हारों के हाथ चूम लेने के काबिल हैं। सचमुच का बनमानुस बना कर खड़ा कर दिया। तीसरे ने कहा — उस्ताद, दुम की कसर रह गई। चौथा बोला — फिर खुदा और इनसान के काम

में इतना फर्क भी न रहे! लाला साहब झल्लाए तो इन लोगों ने और भी बनाना शुरू किया। चोट करता है, जरा सँभले हुए। अब उठा ही चाहता है। एक बोला – भला बताओ तो, यह बनमानुस यहाँ क्यों कर आया? किसी ने कहा – चिड़ीमार लाया है। किसी ने कहा – रास्ता भूल कर बस्ती की तरफ निकल आया है। आखिर एक अशर्फी दे कर भाँड़ों से नजात मिली।

दूसरे दिन शाहज़ादा सुबह के वक़्त उठे तो देखा कि एक खत सिरहाने रखा है। खत पढ़ा तो दंग हो गए।

'सुनो जी, तुम बादशाह के लड़के हो और हम भी रईस के बेटे हैं। हमारे रास्ते में न पड़ो, नहीं तो बुरा होगा! एक दिन आग लगा चुका हूँ, अगर सिपहआरा के साथ तुम्हारी शादी हुई तो जान ले लूँगा। जिस रोज से मैंने यह खबर सुनी है, यही जी चाह रहा है कि छुरी ले कर पहुँचूँ और दम के दम में काम तमाम कर दूँ। याद रखो कि मैं बेचोट किए न रहूँगा।'

शाहज़ादा हुमायूँफर उसी वक़्त साहब-जिला की कोठी पर गए और सारा किस्सा कहा। साहब ने खुफिया पुलिस के एक अफसर को इस मामले की तहकीकात करने का हुक्म दिया।

साहब से रुखसत हो कर वह घर आए तो देखा कि उनके पुराने दोस्त हाजी साहब बैठे हुए हैं। यह हजरत एक ही घाघ थे,

आलिमों से भी मुलाकात थी, बाँकों से भी मिलते-जुलते रहते थे। शाहज़ादा ने उनसे भी इस खत का जिक्र किया। हाजी साहब ने वादा किया कि हम इस बदमाश का जरूर पता लगाएँगे।

शहसवार ने इधर तो हुमायूँफर को कत्ल करने की धमकी दी, उधर एक तहसीलदार साहब के नाम सरकारी परवाना भेजा। आदमी ने जा कर दस बजे रात को तहसीलदार को जगाया और यह परवाना दिया -

'आपको कलमी होता है मुबलिग पाँच हजार रुपया अपनी तहसील के खजाने से ले कर, आज रात को कालीडीह के मुकाम पर हाजिर हो। अगर आपको फुरसत न हो तो पेशकार को भेजिए, ताकीद जानिए।'

तहसीलदार ने खजांची को बुलाया, रुपया लिया, गाड़ी पर रुपया लदवाया और चार चपरासियों को साथ ले कर कालीडीह चले। यह गाँव यहाँ से दो कोस पर था। रास्ते में एक घना जंगल पड़ता था। बस्ती का कहीं नाम नहीं। जब उस मुकाम पर पहुँचे तो एक छोलदारी मिली। वहाँ जा कर पूछा — क्या साहब सोते हैं?

सिपाही — साहब ने अभी चाय पी है। आज रात भर लिखेंगे। किसी से मिल नहीं सकते।

तहसीलदार — तुम इतना कह दो कि तहसीलदार रुपया ले कर हाजिर है।

चपरासी ने छोलदारी में जा कर इत्तला की। साहब ने कहा, बुलाओ। तहसीलदार साहब अन्दर गए तो एक आदमी ने उनका मुँह जोर से दबा दिया और कई आदमी उन पर टूट पड़े। सामने एक आदमी अंगरेजी कपड़े पहने बैठा था। तहसीलदार खूब जकड़ दिए गए तो वह मुसकरा कर बोला — वेल तहसीलदार! तुम रुपया लाया, अब मत बोलना। तुम बोला और मैंने गोली मारी। तुम हमको अपना साहब समझो।

तहसीलदार — हुजूर को अपने साहब से बढ़ कर समझता हूँ, वह अगर नाराज होंगे तो दरजा घटा देंगे। आप तो छुरी से बात करेंगे।

शहसवार ने तहसीलदार को चकमा दे कर रुखसत किया और अपने साथियों में डींग मारने लगा — देखा, इस तरह यार लोग चकमा देते हैं। साथी लोग हाँ में हाँ मिला रहे थे कि इतने में एक गंधी तेल की कुप्पियाँ और बोतलें लटकाए छोलदारी के पास आया और बोला, हुजूर, सलाम करता हूँ। आज सौदा बेचने जरा दूर निकल गया था, लौटने में देर हो गई। आगे घना जंगल है, अगर हुक्म हो तो यहीं रह जाऊँ?

शहसवार — किस-किसी चीज का इत्र है? जरा मोतिए का तो दिखाओ।

गंधी — हुजूर, अव्वल नंबर का मोतिया है, ऐसा शहर में मिलेगा नहीं।

शहसवार ने ज्यों ही इत्र लेने के लिए हाथ बढ़ाया, गंधी ने सीटी बजाई और सीटी की आवाज सुनते ही पचास-साठ कांस्टेबिल इधर-उधर से निकल पड़े और शहसवार को गिरफ्तार कर लिया। यह गंधी न था, इंस्पेक्टर था, जिसे हाकिम-जिला ने शहसवार का पता लगाने के लिए तैनात किया था।

मियाँ शहसवार, जब इंस्पेक्टर के साथ चले तो रास्ते में उन्हें ललकारने लगे। अच्छा बचा, देखो तो सही, जाते कहाँ हो।

इंस्पेक्टर — हिस्स! चोर के पाँव कितने, चौदह बरस को जाओगे।

शहसवार — सुनो मियाँ, हमारे काटे का मंत्र नहीं, जरा जबान को लगाम दो, वरना आज के दसवें दिन तुम्हारा पता न होगा।

इंस्पेक्टर — पहले अपनी फिक्र तो करो।

शहसवार — हम कह देंगे कि इस इंस्पेक्टर की हमसे अदावत है।

इंस्पेक्टर — अजी, कुढ़-कुढ़ कर जेलखाने में मरोगे।

84

इधर बड़ी बेगम के यहाँ शादी की तैयारियाँ हो रही थीं, डोमिनियों का गाना हो रहा था। उधर शाहज़ादा हुमायूँफर एक दिन दरिया की सैर करने गए। घटा छाई हुई थी। हवा जोरों के साथ चल रही थी। शाम होते-होते आँधी आ गई और किश्ती दरिया में चक्कर खा कर डूब गई। मल्लाह ने किश्ती के बचाने की बहुत कोशिश की, मगर मौत से किसी का क्या बस चलता है। घर पर यह खबर आई तो कुहराम मच गया। अभी कल की बात है कि दरवाजे पर भाँड़ मुबारकबाद गा रहे थे, आज बैन हो रहा है, कल हुमायूँफर जामे में फूले नहीं समाते थे कि दूल्हा बनेंगे, आज दरिया में गोते खाते हैं। किसी तरफ से आवाज आती है — हाय मेरे बच्चे! कोई कहता है — हैं, मेरे लाला को क्या हुआ! रोने वाला घर भर और समझाने वाला कोई नहीं। हुमायूँफर की माँ रो-रोक कर कहती थीं, हाय! मैं दुखिया इसी दिन के लिए अब तक जीती रही कि अपने बच्चे की मय्यत देखूँ। अभी तो मसें भी नहीं भीगने पाई थीं कि तमाम बदन दरिया में भीग गया। बहन रोती थी, मेरे भैया, जरी आँख तो खोलो। हाय, जिन हाथों से मैंने

मेहँदी रची थी उनसे अब सिर और छाती पीटती हूँ। कल समझते थे कि परसों बरात सजेगी, खुशियाँ मनाएँगे और आज मातम कर रहे हैं। उठो, अम्माँजान तुम्हारे सिरहाने खड़ी रो रही हैं।

यहाँ तो रोना-पीटना मचा हुआ था, वहाँ बड़ी बेगम ने ज्यों ही खबर पाई आँखों से आँसू जारी हो गए। अब्बासी से कहा — जा कर लड़कियों से कह दे कि नीचे बाग में टहलें। कोठे पर न जायँ। अब्बासी ने जा कर यह बात कुछ इस तरह कही कि चारों बहनों में कोई न समझ सकीं। मगर जहानारा ताड़ गई। उठ कर अन्दर गई तो बड़ी बेगम को रोते देखा। बोली — अम्माँजान, साफ-साफ बताओ।

बड़ी बेगम — क्या बताऊँ बेटी, हुमायूँफर चल बसे।

जहानारा — अरे!

बड़ी बेगम — चुप-चुप, सिपहआरा न सुनने पाए। मैंने गाड़ी तैयार होने का हुक्म दिया है, चलो बाग को चलें, तुम जरा भी जिक्र न करना।

जहानारा — हाय अम्मीजान, यह क्या हुआ?

बड़ी बेगम — खुदा के वास्ते बेटी, चुप रहो, बड़ा बुरा वक़्त जाता है।

जहानारा — उफ, जी घबराता है, हमको न ले चलिए, नहीं सिपहआरा समझ जायँगी। हमसे रोना जब्त न हो सकेगा। कहा मानिए, हमको न ले चलिए।

बड़ी बेगम — यहाँ इतने बड़े मकान में अकेली कैसी रहोगी?

जहानारा — यह मंजूर है, मगर जब्त मुमकिन नहीं।

सब की सब दिल में खुश थीं कि बाग की सैर करेंगे; मगर यह खबर ही न थी कि बड़ी बेगम किस सबब से बाग लिए जाती हैं। चारों बहनें पालकी गाड़ी पर सवार हुई और आपस में मजे-मजे की बातें करती हुई चलीं। मगर अब्बासी और जहानारा के दिल पर बिजलियाँ गिरती थीं। बाग में पहुँच कर जहानारा ने सिर-दर्द का बहाना किया और लेट रहीं, चारों बहनें चमन की सैर करने लगीं। सिपहआरा ने मौका पा कर कहा — अब्बासी, एक दिन हम और शहजादे इस बाग में टहल रहे होंगे। निकाह हुआ और हम उनको बाग में ले आए। हम पाँच रोज यहाँ ही रहेंगे। अब्बासी की आँखो में बेअख्तियार आँसू निकल पड़े। दिल में कहने लगी, किधर खयाल है, कैसा निकाह और कैसी शादी? वहाँ जनाजे और कफन की तैयारियाँ हो रही होंगी।

एकाएक सिपहआरा ने कहा — बहन, हिचकियाँ आने लगीं।

हुस्नआरा — कोई याद कर रहा होगा।

अब सुनिए कि उसी बाग के पास एक शाह साहब का तकिया था जिसमें कई शाहजादों और रईसों की कबरें थीं। हुमायूँफर का जनाजा भी उसी तकिए में गया, हजारों आदमी साथ थे। बाग के एक बुर्ज से बहनों ने इस जनाजे को देखा तो सिपहआरा बोली — बाजीजान, किससे पूछें कि यह किस बेचारे का जनाजा है। खुदा उसको बख्शे।

हुस्नआरा — ओफ ओह! सारा शहर साथ है। अल्लाह, यह कौन मर गया, किससे पूछें?

अब्बासी — हुजूर, जाने भी दें, रात के वक़्त लाश न देखें।

हुस्नआरा — नहीं, गुलाब माली से कहो, अभी-अभी पूछे।

अब्बासी थरथर काँपने लगी। गुलाब माली के कान में कुछ कहा। वह बाग का फाटक खोल कर बाहर गया, लोगों से पूछा। फिर दोनों में कानाफूसी हुई। इसके बाद अब्बासी ने ऊपर जा कर कहा। हुजूर, कोई रईस थे। बहुत दिनों से बीमार थे। यहाँ कजा आ पहुँची।

गेतीआरा — कुछ ठिकाना है! आदमियों का कहाँ से कहाँ तक ताँता लगा हुआ है।

सिपहआरा — खुदा जाने, जवान था या बूढ़ा?

अब्बासी ने बड़ी बेगम से जा कर जनाजे का हाल कहा तो उन्होंने सिर पीट कर कहा — तुम्हें हमारी कसम है जो उलटे पाँव न चल जाओ।

हुस्नआरा — अम्माँजान, आप नाहक घबराती हैं, आखिर यहाँ खड़े रहने में क्या डर हैं?

बड़ी बेगम — अच्छा, तुमको इससे क्या मतलब।

सिपहआरा — किसी का जनाजा जाता है। लाखों आदमी साथ हैं।

हुस्नआरा — खुदा जाने, कौन था बेचारा।

बड़ी बेगम — अल्लाह के वास्ते चली जाओ!

जहानारा — इतनी कसमें देती जाती हैं और कोई सुनता ही नहीं।

सिपहआरा — बाजी, सुनिए, कैसी दर्दनाक गजल है! खुदा जाने कौन गा रहा है।

शबे फिराक है और आँधियाँ हैं आहों की;
चिराग को मेरे जुलमत कहे में बार नहीं।
जमीन प्यार से मुझको गले लगाती है;
अजाब है यह दिला गोर में फिशार नहीं।
पस अज़ फिना भी किसी तौर से करार नहीं;
मिला बहिश्त तो कहता हँ कूए यार नहीं।

अब्बासी — कोई बूढ़ा आदमी था।

सिपहआरा — तो फिर क्या गम!

बड़ी बेगम — तो फिर जितने बूढ़े मर्द और बूढ़ी औरतें हों, सबको मर जाना चाहिए?

सिपहआरा — ऐसी बातें न कहिए, अम्माँजान!

हुस्नआरा — बूढ़े और जवान सबको मरना है एक दिन।

बड़ी बेगम और सिपहआरा नीचे चली गईं। हुस्नआरा भी जा रही थीं कि कब्रिस्तान से आवाज आई — हाय हुमायूँफर, तुमसे इस दगा की उम्मीद न थी।

हुस्नआरा — ऐं अब्बासी, यह किसका नाम लिया?

अब्बासी — हुजूर, बहादुर मिर्जा कहा, कोई बहादुर मिर्जा होंगे।

हुस्नआरा — हाँ, हमीं को धोखा हुआ। पाँव-तले से जमीन निकल गई।

जब तीनों बहनें नीचे पहुँच गईं, तो बड़ी बेगम ने कहा — आखिर तुम्हारे मिजाज में इतनी जिद क्यों है?

हुस्नआरा — अम्माँजान, वहाँ बड़ी ठंडी हवा थी।

बड़ी बेगम — मुरदा वहाँ आया हुआ है और इस वक़्त, भला सोचो तो।

सिपहआरा — फिर इससे क्या होता है?

बड़ी बेगम — चलो बैठो, होता क्या है!

तीनों बहनें लेटीं तो सिपहआरा को नींद आ गई, मगर हुस्नआरा और गेतीआरा की आँख न लगी। बातें करने लगीं!

हुस्नआरा — क्या जाने, कौन बेचारा था?

गेतीआरा — कोई उसके घरवालों के दिल से पूछे।

हुस्नआरा — कोई बड़ा शाहज़ादा था!

गेतीआरा — हमें तो इस वक़्त चारों तरफ मौत की शक्ल नजर आती हैं।

हुस्नआरा — क्या जाने, अकेले थे या लड़के-वाले भी थे।

गेतीआरा – खुदा जाने, मगर था अभी जवान।

हुस्नआरा – देखो बहन, सैकड़ों आदमी जमा हैं, मगर कैसा सन्नाटा है! जो हैं, ठंडी साँसें भरता है!

इतने में सिपहआरा भी जाग पड़ीं! बोलीं – कुछ मालूम हुआ बाजीजान, इस बेचारे की शादी हुई थी कि नहीं? जो शादी हुई होगी तो सितम है।

हुस्नआरा – खुदा न करे कि किसी पर ऐसी मुसीबत आए।

सिपहआरा – बेचारी बेवा अपने दिल में न जाने क्या सोचती होगी?

हुस्नआरा – इसके सिवा और क्या सोचती होगी कि मर मिटे!

रात को सिपहआरा ने ख्वाब में देखा कि हुमायूँफर बैठे उनसे बातें कर रहे हैं।

हुमायूँ – खुदा का हजार शुक्र है कि आज यह दिन दिखाया, याद है, हम तुमसे गले मिले थे?

सिपहआरा – बहुरूपिये के भी कान काटे!

हुमायूँ – याद है, जब हमने महताबी पर कनकौआ ढाया था?

सिपहआरा – एक ही जात शरीफ हैं आप।

हुमायूँ — अच्छा, तुम यह बताओ कि दुनिया में सबसे ज्यादा खुशनसीब कौन है?

सिपहआरा — हम!

हुमायूँ — और जो मैं मर जाऊँ तो तुम क्या करो?

इतना कहते-कहते हुमायूँफर के चेहरे पर जर्दी छा गई और आँखें उलट गईं। सिपहआरा एक चीख मार कर रोने लगीं। बड़ी बेगम और हुस्नआरा चीख सुनते ही घबराई हुई सिपहआरा के पास आईं। बड़ी बेगम ने पूछा — क्या है बेटी, तुम चिल्लाई क्यों?

अब्बासी — ऐ हुजूर, जरी आँख खोलिए।

बड़ी बेगम — बेटा, आँख खोल दो।

बड़ी मुश्किल से सिपहआरा की आँखें खुलीं। मगर अभी कुछ कहने भी न पाई थीं कि किसी ने बागीचे की दीवार के पास रो कर कहा — हाय शाहज़ादा हुमायूँफर!

सिपहआरा ने रो कर कहा — अम्मीजान, यह क्या हो गया! मेरा तो कलेजा उलटा जाता है।

दीवार के पास से फिर आवाज आई — हाय हुमायूँफर! क्या मौत को तुम पर जरा भी रहम न आया?

सिपहआरा — अरे, क्या यह मेरे हुमायूँफर हैं!! या खुदा, यह क्या हुआ अम्मीजान!

बड़ी बेगम — बेटी सब्र करो, खुदा के वास्ते सब्र करो।

सिपहआरा — हाय, कोई हमें प्यारे शाहज़ादे की लाश दिखा दो।

बड़ी बेगम — बेटा मैं तुम्हें समझाऊँ कि इस दिन में तुम पर यह मुसीबत पड़ी और तुम मुझे समझाओ कि इस बुढ़ापे में यह दिन देखना पड़ा।

सिपहआरा — हाय, हमें शाहज़ादे की लाश दिखा ओ। अम्मीजान, अब सब्र की ताकत नहीं रही, मुझे जाने दो, खुदा के लिए मत रोको, अब शर्म कैसी और हिजाब किसके लिए?

बड़ी बेगम — बेटी, जरा दिल को मजबूत रखो, खुदा की मर्जी में इनसान को क्या दखल!

सिपहआरा — क्या कहती हैं आप अम्मीजान, दिल कहाँ है, दिल का तो कहीं पता ही नहीं। यहाँ तो रूह तक पिघल गई।

बड़ी बेगम — बेटी खूब खुल कर रो लो। मैं नसीबों-जली यही दिन देखने के लिए बैठी थी!

सिपहआरा — आँसू नहीं है अम्मीजान, रोऊँ कैसे? बदन में जान ही नहीं रही, बाजीजान को बुला दी। इस वक़्त वह भी मुझे छोड़ कर चल दीं?

हुस्नआरा अलग जा कर रो रही थीं। आईं, मगर खामोश। न रोईं, न सिर पीटा, आकर बहन के पलंग के पास बैठ गईं।

सिपहआरा — बाजी, चुप क्यों हो! हमें तकसीन तक नहीं देतीं; वाह!

हुस्नआरा खामोश बैठी रहीं हाँ, सिर उठा कर सिपहआरा पर नजर डाली।

सिपहआरा — बाजी, बोलिए, आखिर चुप कब तक रहिएगा?

इतने में रूहअफजा भी आ गई, उन्होंने मारे गम के दीवार पर सिर पटक दिया था। सिपहआरा ने पूछा — बहन, यह पट्टी कैसी बँधी है?

रूहअफजा — कुछ नहीं, यों ही।

सिपहआरा — कहीं सिर-विर तो नहीं फोड़ा? अम्माँजान, अब दिल नहीं मानता, खुदा के लिए हमें लाश दिखा दो। क्यों अम्माँजान; शाहज़ादे की माँ की हालत क्या होगी?

बड़ी बेगम — क्या बताऊँ बेटी —

औलाद किसी की न जुदा होवे किसी से;
बेटी, कोई इस दाग को पूछे मेरे जी से!

इतने में एक आदमी ने आकर कहा कि हुमायूँफर की माँ रो रही हैं और कहती हैं कि दुलहिन को लाश के करीब लाओ। हुमायूँफर की रूह खुश होगी।

बड़ी बेगम ने कहा – सोच लो, ऐसा कभी हुआ नहीं है; ऐसा न हो कि मेरी बेटी डर जाय, उसका तो और दिल बहलाना चाहिए, न कि लाश दिखाना। और लोगों से पूछो, उनकी क्या राय है। मेरे तो हाथ-पाँव फूल गए हैं।

आखिर यह राय तय पाई कि दुलहिन लाश पर जरूर जायँ।

सिपहआरा चलने को तैयार हो गईं।

बड़ी बेगम – बेटा, अब मैं क्या कहूँ, तुम्हारी जो मर्जी हो वह करो।

सिपहआरा – बस हमें लाश दिखा दो, फिर हम कोई तकलीफ न देंगे।

बड़ी बेगम – अच्छा जाओ, मगर इतना याद रखना कि जो मरा वह जिंदा नहीं हो सकता।

सिपहआरा ने अब्बासी को हुक्म दिया कि जा कर संदूक लाओ। संदूक आया तो सिपहआरा ने अपना कीमती जोड़ा निकाला, सुहाग का इत्र मला, कीमती दुपट्टा ओढ़ा जिसमें मोतियों की बेल लगी हुई थी। सिर पर जड़ाऊ छपका, जड़ाऊ टीका, चोटी में सीसफूल, नाक में नथ, जिसके मोतियों की कीमत अच्छे-अच्छे जौहरी न लगा सकें, कानों में पत्ते, बालियाँ, बिजलियाँ, करनफूल, गले में मोतियों की माला, तौक, चंदनहार, चंपाकली, हाथों में कंगन, चूड़ियाँ, पोर-पोर छल्ले, पाँव में पायजेब, छागल। इस तरह सोलहों सिंगार करके वह बड़ी बेगम और अब्बास के साथ पालकी गाड़ी में सवार हुई। शहर में धूम मच गई कि दुलहिन दूल्हा की लाश पर जाती हैं। शाहज़ादे की माँ को इत्तला दी गई कि दुलहिन आती हैं। जरा देर में गाड़ी पहुँच गई। हजारों आदमियों ने छाती पीटना शुरू किया। सिपहआरा ने गाड़ी से उतरते ही लाश को छाती से लगाया और उसके सिरहाने बैठ कर ऊँची आवाज से कहा — प्यारे शाहज़ादे, जरी आँख खोल कर मुस्करा दो। बस, दो दिन हँसा कर उम्र भर रुलाओगे? जरी अपनी दुलहिन को तो आँख-भर के देख लो। क्यों जी, यही मुहब्बत थी, इसी दिन के लिए दिल मिलाया था?

शाहज़ादे की माँ ने सिपहआरा को छाती से लगा कर कहा — बेटी हुमायूँफर तुम्हारे बड़े दुश्मन निकले। हाय, यह अंधेर भी

कहीं होता है कि दुलहिन लाश पर आए। निकाह के वक़्त वकील और गवाह तो दूर रहे, दूसरा मुकदमा छिड़ गया।

सिपहआरा ने अपनी माँ की तरफ देख कर कहा — अम्माँजान, आपने हमारे साथ बड़ी दुश्मनी की पहले ही शादी कर देती तो यों नामुराद तो न जाती।

इधर तो यह कुहराम मचा हुआ था, उधर शहर के बेफिक्रे अपनी खिचड़ी अलग ही पकाते थे।

एक औरत — आज जब घर से निकली थी तो काने आदमी का मुँह देखा था। इधर डोली में पाँव गया और उधर पट से छींक पड़ी।

दूसरा आदमी — अजी बीबी, न कुछ छींक से होता है, न किसी से, 'करम-लेख नहिं मिटै करै कोई लाखन चतुराई।' किस्मत के लिखे को कोई भी आज तक मिटा सका है? देखिए,करोड़ों रुपए घर में भरे हैं, मगर किस काम के!

मौलवी — मियाँ, दुनिया के यही कारखाने हैं, इनसान को चाहिए कि किसी से न झगड़े, न किसी से फसाद करे, बस, खुदा की याद करता रहे।

एक बुढ़िया — सुनते हैं कि दो-तीन दिन से रात को बुरे-बुरे ख्वाब देखते थे।

मौलवी — हम इसके कायल नहीं, ख्वाब क्या चीज है!

सिपहआरा को इस वक़्त वह दिन याद आया, जब शाहज़ादा हुमायूँफर अपनी बहन बन कर उनसे गले मिलने गए। एक वह दिन था और एक आज का दिन है। हमने उस हुमायूँफर को बुरा-भला क्यों कहा था?

बड़ी बेगम ने कहा — बेटी, अब जरी बैठ जाओ, दम ले लो।

अब्बासी — हुजूर, इस मर्ज का तो इलाज ही नहीं है।

सिपहआरा — दवा हर मर्ज की है! इस मर्ज की दवा भी सब्र ही है। सब्र ही ने हमें इस काबिल किया कि हुमायूँफर की लाश अपनी आँखों देख रहे हैं!

जब लोगों ने देखा कि सिपहआरा की हालत खराब होती जाती है तो उन्हें लाश के पास से हटा ले गए। गाड़ी पर सवार किया और घर ले गए।

गाड़ी में बैठ कर सिपहआरा रोने लगीं और बड़ी बेगम से बोलीं — अम्माँजान, अब हमें कहाँ लिए चलती हो?

बड़ी बेगम — बेटी, मैं क्या करूँ, हाय!

सिपहआरा — अम्माँजान, करोगी क्या, मैंने क्या कर लिया?

अब्बासी — हमारी किस्मत फूट गई, शादी का दिन देखना नसीब में लिखा ही न था। आज के दिन और हम मातम करें!

सिपहआरा — अम्माँजान, इस वक़्त बेचारा कहाँ होगा?

बड़ी बेगम — बेटी, खुदा के कारखाने में किसी को दखल है?

85

एक पुरानी, मगर उजाड़ बस्ती में कुछ दिनों से दो औरतों ने रहना शुरू किया है। एक का नाम फिरोजा है, दूसरी का फरखुंदा। इस गाँव में कोई डेढ़ हजार घर आबाद होंगे, मगर उन सब में दो ठाकुरों के मकान आलीशान थे। फिरोजा का मकान छोटा था, मगर बहुत खुशनुमा। वह जवान औरत थी, कपड़े-लत्ते भी साफ-सुथरे पहनती थी, लेकिन उसकी बातचीत से उदासी पाई जाती थी। फरखुंदा इतनी हसीन तो न थी, मगर खुशमिजाज थी। गाँववालों को हैरत थी कि यह दोनों औरतें इस गाँव में कैसे आ गईं और कोई मर्द भी साथ नहीं! उनके बारे में लोग तरह-तरह की बातें किया करते थे। गाँव की सिर्फ दो

औरतें उनके पास जाती थीं, एक तंबोलिन, दूसरी बेलदारिन। यार लोग टोह में थे कि यहाँ का कुछ भेद खुले, मगर कुछ पता न चलता था। तंबोलिन और बेलदारिन से पूछते थे तो वह भी आँय-बाँय-साँय उड़ा देती थीं।

एक दिन उस गाँव में एक कांस्टेबिल आ निकला। आते ही एक बनिये से शक्कर माँगी। उसने कहा — शक्कर नहीं गुड़ है। कांस्टेबिल ने आव देखा न ताव, गाली दे बैठा। बनिये ने कहा — जबान पर लगाम दो। गाली न जबान से निकालो। इतना सुनना था कि कांस्टेबिल ने बढ़ कर दो घूँसे लगाए और दुकान की चीजें फेंक-फाँक दीं। सामने वाला दुकानदार मारे डर के शक्कर ले आया, तब हजरत ने कहा — काली मिर्च लाओ। वह बेचारा काली मिर्च भी लाया। तब आपने दो लोटे शरबत की पिए और कुएँ की जगत पर लेट कर एक लाला जी को पुकारा — ओ लाला, सराफी पीछे करना; पहले एक चादर तो दे जाओ। लाला बोले — हमारे पास और कोई बिछौना नहीं है, बस एक बिस्तरा है। कांस्टेबिल उठ कर दुकान पर गया। चादर उठा ली और कुएँ की जगत पर बिछा कर लेटा। लाला बेचारे मुँह ताकने लगे। अभी हजरत सो रहे थे कि एक औरत पानी भरने आई। आपने पाँव की आहट जो पाई तो चौंक उठे और गुल मचा कर बोले — अलग हट, चली वहाँ से घड़ा सिर पर लिए

पानी भरने! सूझता नहीं, कौन लेटा है, कौन बैठा है? इस पर एक आदमी ने कहा — वाह! तुम तो कुएँ के मालिक बन बैठे! अब तुम्हारे मारे कोई पानी न भरे? दूसरा बोला — सराफ की दुकान से चादर लाए, मुफ्त में शक्कर ली और डपट रहे हैं।

एक ठाकुर साहब टट्टू पर सवार चले जाते थे। इन लोगों की बातें सुन कर बोले — साहब को एक अर्जी दे दो, बस सारी शेखी किरकिरी हो जाय।

कांस्टेबिल ने ललकारा — रोक ले टट्टू। हम चालान करेंगे।

ठाकुर — क्यों रोक लें, हम अपनी राह जा रहे हैं, तुमसे मतलब?

ठाकुर — तो जुल्मी कहाँ है? हम ऐसे-वैसे ठाकुर नहीं है, हमसे बहुत रोब न जमाना।

इतने में दो-एक आदमियों ने आकर दोनों को समझाया, भाई, जवान, छोड़ दो, इज्जतदार आदमी हैं। इस गाँव के ठाकुर हैं, उनको बेइज्जत न करो।

इधर ठाकुर को समझाया कि रुपया-अधेली ले-दे कर अलग करो, कहाँ की झंझट लगाई है। मुफ्त में चालान कर देगा तो गाँव भर में हँसी होगी। कुछ यह समझे, कुछ वह समझे। अठन्नी निकाल कर कांस्टेबिल की नजर की, तब जा कर पीछा छूटा।

अब तो गाँव मे और भी धाक बँध गई। पनभरनियाँ मारे डर के पानी भरने न आईं, यह इधर-उधर ललकारने लगे। गल्ले की चंद गाड़ियाँ सामने से गुजरीं। आपने ललकारा, रोक ले गाड़ी। क्यों बे पटरी से नहीं जाता, सड़क तो साहब लोगों के लिए है। एक गाड़ीवान ने कहा — अच्छा साहब, पटरी पर किए देते हैं। आपने उठ कर एक तमाचा लगा दिया और बोले, और सुनो, एक तो जुर्म करें, दूसरे टर्रायँ। सब के सब दंग हो गए कि टर्राया कौन, उस बेचारे ने तो इनके हुक्म की तामील की थी। हलवाई से कहा — हमको सेर भर पूरी तौल दो। वह भी काँप रहा था कि देखें, कब शामत आती है, कहा, अभी लाया। तब आप बोले कि आलू की तरकारी है? वह बोला — आलू तो हमारे पास नहीं है, मगर उस खेत से खुदवा लाओ तो सब मामला ठीक हो जाय। कहने भर की देर थी। आप जा कर किसान से बोले — अरे, एक आध सेर आलू खोद दे। उसकी शामत जो आई तो बोला — साहब, चार आने सेर होई, चाहे लेव चाहे न लेव। समझ लो। आपने कहा, अच्छा भाई लाओ, मगर बड़े-बड़े हों।

किसान आलू लाया। तरकारी बनी, जब आप चलने लगे तो किसान ने पैसे माँगे। इसके जवाब में आपने उस गरीब को पीटना शुरू किया।

किसान — सेर भर आलू लिहिस पैसा न दिहिस, और ऊपर से मारत है।

मुराइन — और अलई के पलवा बकत है, राम करै, देवी-भवानी खा जायँ।

लोगों ने किसान को समझाया कि सरकारी आदमी के मुँह क्यों लगते हो। जो कुछ हुआ सो हुआ, अब इन्हें दो सेर आलू ला दो। किसान आलू खोद लाया। आपने उसे रूमाल में बाँधा और 8 पैसे निकाल कर हलवाई को देने लगे।

हलवाई — यह भी रहने दो, पान खा लेना।

कांस्टेबिल — खुशी तुम्हारी। आलू तो हमारे ही थे।

हलवाई — बस, अब सब आप ही का है।

कांस्टेबिल ने खा-पी कर लंबी तानी तो दो घंटे तक सोया किए। जब उठे तो पसीने में तर थे। एक गँवार को बुला कर कहा — पंखा झल। वह बेचारा पंखा झलने लगा। जब आप गाफिल हुए तो उसने इनकी लुटिया और लकड़ी उठाई और चलता धंधा किया। यह उनके भी उस्ताद निकले।

जमादार की आँख खुली तो पंखा झलने वाले का कहीं पता ही नहीं। इधर-उधर देखा तो लुटिया गायब। लाठी नदारद। लोगों

से पूछा, धमकाया, डराया, मगर किसी ने न सुना। और बताए कौन? सब के सब तो जले बैठे थे। तब आपने चौकीदारों को बुलाया और धमकाने लगे। फिर सबों को ले कर गाँव के ठाकुर के पास गए और कहा — इसी दम दौड़ आएगी। गाँव-भर फूँक दिया जायगा, नहीं तो अपने आदमियों से पता लगवाओ।

ठाकुर — ले अब हम कस-कस उपाव करी। चोर का कहाँ ढूँढ़ी?

जमादार — हम नहीं जानता। ठाकुर हो कर के एक चोर का पता नहीं लगा सकता।

ठाकुर — तुमहू तो पुलिस के नौकर हो। ढूँढ़ निकालो।

ठाकुर साहब से लोगों ने कहा — यह सिपाही बड़ा शैतान है। आप साहब को लिख भेजिए कि हमारी रिआया को सताता है। बस, यह मौकूफ हो जाय। ठाकुर बोले — हम सरकारी आदमियों से बतबढ़ाव नहीं करते। कांस्टेबिल को तीन रुपए दे कर दरवाजे से टाला।

जमादार साहब यहाँ से खुश-खुश चले तो एक घोसी की लड़की से छेड़छाड़ करने लगे। उसने जा कर अपने बाप से कह दिया। वह पहलवान था, लँगोट बाँध कर आया और जमादार साहब को पटक कर खूब पीटा।

बहुत से आदमी खड़े तमाशा देख रहे थे। जमादार ने चूँ तक न की, चुपके से झाड़-पोंछ कर उठ खड़े हुए और गाँव की दूसरी तरफ चले। इत्तिफ़ाक़ से फीरोजा अपनी छत पर खड़ी बाल सुलझा रही थी। जमादार की नजर पड़ी तो हैरत हुई। बोले — अरे, यह किसका मकान है? कोई है इसमें?

पड़ोसी — इस मकान में एक बेगम रहती हैं। इस वक़्त कोई मर्द नहीं है।

जमादार — तू कौन है? बता इसमें कौन रहता है? और मकान किसका है?

पड़ोसी — मकान तो एक अहीर का है, गुल इसमें एक बेगम टिकी हैं।

जमादार — कहो, दरवाजे पर आवें। बुला लाओ।

पड़ोसी — वाह, वाह परदेवाली हैं। दरवाजे पर न आएगी।

जमादार — क्या! परदा कैसा? बुलाता है कि घुस जाऊँ घर में? परदा लिए फिरता है!

फीरोजा के होश उड़ गए। फरखुंदा से बोली — अब गजब हो गया। भाग के यहाँ आई थी, मगर यहाँ भी वही बला सिर पा आई।

फरखुंदा — इसको कहाँ से खबर हुई?

फीरोजा — क्या बताऊँ? इस वक़्त कौन इससे सवाल-जवाब करेगा?

फरखुंदा — देखिए, पड़ोसिन को बुलाती हूँ। शायद वह काम आएँ।

दरवाजा खुलने में देर हुई तो कांस्टेबिल ने दरवाजे पर लात मारी और कहा — खोल दो दरवाजा, हम दौड़ लाए हैं। मुहल्लेवालों ने कहा — भई, तुम्हारे पास न सम्मन, न सफीना। फिर किसके हुक्म से दरवाजा खुलवाते हो? ऐसा भी कहीं हुआ है। इन बेचारियों का जुर्म तो बताओ!

जमादार — जुर्म चल के साहब से पूछो जिनके भेजे हम आए हैं। सम्मन सफीना दीवानी के मजकूरी लाते हैं। हम पुलिस के आदमी हैं।

दूसरे आदमी ने आगे बढ़ कर कहा — सुनो भई जवान, तुम इस वक़्त बड़ा भारी जुल्म कर रहे हो। भला इस तरह कोई काहे को रहने पाएगा।

जमादार ने अकड़ कर कहा — तुम कौन हो? अपना नाम बताओ। तुम सरकारी आदमी को अपना काम करने से रोकते हो। हम रपट बोलेंगे।

यह सुन कर वह हजरत चकराए और चुपके लंबे हुए। तब जमादार ने गुल मचा कर कहा, मुखबिरों ने हमें खबर दी है कि तुम्हारे लड़का होने वाला है। हमको हुक्म है कि दरवाजे पर पहरा दें।

पड़ोसिन ने जो यह बात सुनी तो दाँतों-तले अँगुली दबाई — ऐ है, यह गजब खुदा का, हमें आज तक मालूम ही न हुआ, हम भी सोचते थे कि यह जवान-जहान औरत शहर से भाग कर गाँव में क्यों आई! यह मालूम ही न था कि यहाँ कुछ और गुल खिलनेवाला है।

इतने में फरखुंदा ने कोठे पर जा कर पड़ोसिन से कहा — हरी अपने मियाँ से कहो कि इस सिपाही से कुल हाल पूछें — माजरा क्या है?

पड़ोसिन कुछ सोच कर बोली — भई, हम इस मामले में दखल न देंगे। ओह, तुम्हारी बेगम ने तो अच्छा जाल फैलाया था, हमारे मियाँ को मालूम हो जाय कि यह ऐसी हैं तो मुहल्ले से खड़े-खड़े निकलवा दें।

इतने में पड़ोसिन के मियाँ भी आए। फरखुंदा उनसे बोली, खाँ साहब, जरी इस सिपाही को समझाइए, यह हमारे बड़ी मुसीबत का वक़्त है।

खाँ साहब — कुछ न कुछ तो उसे देना ही पड़ेगा।

फरखुंदा — अच्छा, आप फैसला करा दें। जो माँगे वह हमसे इसी दम ले।

खाँ साहब — इन पाजियों ने नाक में दम कर दिया है और इस तरफ की रिआया ऐसी बोदी है कि कुछ न पूछो। सरकार ने इन पियादों को इंतजाम के लिए रखा है और यह लोग जमीन पर पाँव नहीं रखते। सरकार को मालूम हो जाय तो खड़े-खड़े निकाल दिए जायँ।

पड़ोसिन — पहले बेगम से यह तो पूछो कि शहर से यहाँ आकर क्यों रही हैं? कोई न कोई वजह तो होगी।

फरखुंदा ने दो रुपए दिए और कहा, जा कर यह दे दीजिए। शायद मान जाय। खाँ साहब ने रुपए दिए तो सिपाही बिगड़ कर बोला — यह रुपया कैसा? हम रिश्वत नहीं लेते!

खाँ साहब — सुनो मियाँ, जो हमसे टर्राओगे, तो हम ठीक कर देंगे। टके का पियादा, मिजाज ही नहीं मिलता।

सिपाही — मियाँ, क्यों शामतें आई हैं, हम पुलिस के लोग हैं, जिस वक़्त चाहे, तुम जैसों को जलील कर दें। बतलाओ तुम्हारी गुजर-बसर कैसे होती है? बचा, किसी भले घर की औरत भगा लाए हो और ऊपर से टर्राते हो!

खाँ साहब — यह धमकियाँ दूसरों को देना। यहाँ तुम जैसे को अँगुलियों पर नचाते हैं।

सिपाही ने देखा कि यह आदमी कड़ा है तो आगे बढ़ा। एक नानबाई की दुकान पर बैठ कर मजे का पुलाव उड़ाया और सड़क पर जा कर एक गाड़ी पकड़ी। गाड़ीवान की लड़की बीमार थी। बेचारा गिड़गिड़ाने लगा, मगर सिपाही ने एक न मानी। इस पर एक बाबू जी बोल उठे — बड़े बेरहम आदमी हो जी! छोड़ क्यों नहीं देते?

सिपाही — कप्तान साहब ने मँगवाया है, छोड़ कैसे दूँ? यह इसी तरह के बहाने किया करते हैं, जमाने भर के झूठे!

आखिर गाड़ीवान ने सात पैसे और एक कद्दू दे कर गला छुड़ाया। तब आपने एक चबूतरे पर बिस्तर जमाया और चौकीदार से हुक्का भरवा कर पीने लगे। जब जरा अँधेरा हुआ, तो चौकीदार ने आकर कहा — हवलदार साहब, बड़ा अच्छा शिकार

चला जात है। एक महाजन की मेहरिया बैलगाड़ी पर बैठी चली जात है। गहनन से लदी है।

सिपाही — यहाँ से कितनी दूर है?

चौकीदार — कुछ दूर नाहिन, घड़ी भर में पहुँच जैहों। बस एक गाड़ीवान है और एक छोकरा। तीसर कोऊ नहीं।

सिपाही — तब तो मार लिया है। आज किसी भले आदमी का मुँह देखा है। हमारे साथ कौन-कौन चलेगा?

चौकीदार — आदमी सब ठीक हैं, कहें भर की देर है। हुक्म होय तो हम जाके सब ठीक करी।

सिपाही — हाँ-हाँ और क्या?

अब सुनिए कि महाजन की गाड़ी बारह बजे रात को एक बाग की तरफ से गुजरी जा रही थी कि एकाएक छः सात आदमी उस पर टूट पड़े। गाड़ीवान को एक डंडा मारा। कहार को भी मार के गिरा दिया। औरत के जेवर उतार लिए और चोर-चोर का शोर मचाने लगे। गाँव में शोर मच गया कि डाका पड़ गया। कांस्टेबिल ने जा कर थाने में इत्तला की। थानेदार ने चौकीदार से पूछा, तुम्हारा किस पर शक है। चौकीदार ने कई आदमियों का नाम लिखाया और फिरोजा के पड़ोसी खाँ साहब भी उन्हीं में

थे। दूसरे दिन उसी सिपाही ने खाँ साहब के दरवाजे पर पहुँच कर पुकारा। खाँ साहब ने बाहर आकर सिपाही को देखा तो मूँछों पर ताव दे कर बोले, क्या है साहब, क्या हुक्म है? सिपाही- चलिए, वहाँ बरगद के तले तहकीकात हो रही है! दारोगा जी बुलाते हैं।

खाँ — कैसी तहकीकात? कुछ सुने तो!

सिपाही — मालूम हो जायगी! चलिए तो सही।

खाँ — सुनो जी, हम पठान हैं। जब तक चुप हैं तब तक चुप हैं। जिस दम गुस्सा आया, फिर या तुम न होगे या हम न होंगे। कहाँ चलें, कहाँ?

सिपाही — मुझे आपसे कोई दुश्मनी तो है नहीं, मगर दारोगा जी के हुक्म से मजबूर हूँ।

चौकीदार — लोधे को बुलाया है, घोसी को और तुमको।

खाँ — ऐं, वह तो सब डाकू हैं।

सिपाही — और आप बड़े साहु हैं! बड़ी शेखी।

खाँ — क्यों अपनी जान के दुश्मन हुए हो?

सिपाही — अब चलिएगा या वारंट आए।

खाँ साहब घर में कपड़े पहनने गए तो बीवी ने कहा, कैसे पठान हो? मुए प्यादे की क्या हकीकत है कि दरवाजे पर खोटी-खरी कहे। भला देखूँ तो निगोड़ा तुम्हें वह क्योंकर ले जाता है। यह कह कर वह दरवाजे पर आकर बोली, क्यों रे, तू इन्हें कहाँ लिए जाता है? बता, किस बात की तहकीकात होगी? क्या तेरा बाप कतल किया करता है?

सिपाही — आप खाँ साहब को भेज दें। अजी खाँ साहब, आइएगा या वारंट आए?

बीवी — वारंट ले जा अपने होतों-सोतों के यहाँ।

सिपाही — यह औरत तो बड़ी कल्ला-दराज हैं।

बीवी — मेरे मुँह लगेगा तो मुँह पकड़ के झुलस दूँगी। वारंट अपने बाप-दादा के नाम ले जा!

इतने में खाँ साहब ढाटा बाँध कर बाहर निकले और बोले — ले तुझे दाएँ हाथ खाना हराम है जो न ले चले।

सिपाही — बस, बहुत बढ़-बढ़ कर बातें न कीजिए, चुपके से मेरे साथ चलिए।

खाँ साहब अकड़ते हुए चले तो सिपाही ने फिरोजा के दरवाजे पर खड़े हो कर कहा, इन्हें तो लिए जाते हैं, अब तुम्हारी बारी भी आएगी।

खाँ साहब बरगद के नीचे पहुँचे तो देखा, गाँव भर के बदमाश जमा हैं। और दारोगा जी चारपाई पर बैठे हुक्का पी रहे हैं। बोले, क्यों जनाब, हमें क्यों बुलाया?

दारोगा — आज गाँव भर के बदमाशों की दावत है।

खाँ साहब ने डंडे को तौल कर कहा, तो फिर दो एक बदमाशों की हम भी खबर लेंगे।

दारोगा — बहुत गरमाइए नहीं, चौकीदारों ने हमसे जो कहा वह हमने किया।

खाँ — और जो चौकीदार आपको कुएँ में कूद पड़ने की सलाह दे?

दारोगा — तो हम कूद पड़ें?

खाँ — तो हमारी निस्बत आखिर क्या जुर्म लगाया गया है?

दारोगा — कल रात को तुम कहाँ थे?

खाँ — अपने घर पर, और कहाँ।

चौकीदार — हुजूर, बखरी में नाहीं रहे और एक मनई इनका वही बाग के भीतर देखिस रहा।

खाँ साहब ने चौकीदार को एक चाँटा दिया, सुअर, अबे हम चोर हैं? रात को हम घर पर न थे?

दारोगा जी ने कहा, क्यों जी, हमारे सामने यह मार-पीट! तुम भी पठान हो और हम भी पठान हैं। अगर अबकी हाथ उठाया तो तुम्हारी खैरियत नहीं।

इतने में एक अंगरेज घोड़े पर सवार उधर से आ निकला। यह जमघट देख कर दारोगा से बोला, क्या बात है? दारोगा ने कहा, गरीब परवर, एक मुकदमे की तहकीकात करने आए हैं। इस पठान की निस्बत एक चोरी का शक है, मगर यह तहकीकात नहीं करने देता। चौकीदार को कई मरतबा पीट चुका है। चौकीदार ने कहा, दोहाई है साहब की! दोहाई है, मारे डारत है।

साहब ने कहा — वेल, चालान करो। हमारी गवाही लिखवा दो, हमारा नाम मेजर कास है।

लीजिए, चोरी और डाका तो दूर रहा, एक नया जुर्म साबित हो गया।

अब दारोगा जी ने गवाहों के बयान लिखने शुरू किए। पहले एक तंबोलिन आई। भड़कीला लहँगा पहने हुए, माँग-चोटी से लैस, मुँह में गिलौरी दबी हुई, हाथ में पान के बीड़े, आकर दरोगा जी को बीड़े दे कर खड़ी हो गई।

दारोगा — तुमने खाँ साहब को रात के वक़्त कहाँ देखा था?

तंबोलिन — उस पूरे के पास। इनके साथ तीन-चार आदमी और थे। सब लट्ठ बन्द। एक आदमी ने कहा, छीन लो सास से, मैं बोली कि बोटियाँ नोच लूँगी, मैं कोई गँवारिन नहीं हूँ। खाँ साहब ने मुझसे कहा, तंबोलिन, कहो फतह है।

खाँ — अरी तंबोलिन!

तंबोलिन — जरा अरी तरी न करना मुझसे, मैं कोई चमारिन नहीं हूँ।

खाँ — तुमने हमको चोरों के साथ देखा था?

तंबोलिन — देखा ही था क्या कुछ अंधे हैं, चोर तो तुम हो ही।

खाँ — खुदा इस झूठ की सजा देगा।

तंबोलिन — इसका हाल तो जब मालूम होगा, तब बड़े घर में चक्की पीसोगे।

खाँ — और वहाँ गीत गाने के लिए तुमको बुला लेंगे।

दूसरे गवाह ने बयान किया, मैं रात को ग्यारह बजे इस पूरे की तरफ जाता था तो खाँ साहब मुझे मिले थे।

खाँ — कसम खुदा की, कोई आदमी मेरी ही शक्ल का रहा होगा।

दारोगा — आपने ठीक कहा।

काले खाँ — जब पठान हो के ऐसी हरकतें करने लगे तो इस गाँव का खुदा ही मालिक है। कौन कह सकता है कि यह सफेद-पोश आदमी डाका डालेगा।

खाँ — खुदा की कसम, जी चाहता है सिर पीट लूँ, मगर खैर, हम भी इसका मजा चखा देंगे।

दारोगा — पहले अपने घर की तलाशी तो करवाइए, मजा पीछे चखवाइएगा।

यह कह कर दारोगा जी खाँ साहब के घर पहुँचे और कहा, जल्दी परदा करो, हम तालाशी लेंगे। खाँ साहब की बीवी ने सैकड़ों गालियाँ दीं, मगर मजबूर हो कर परदा किया। तलाशी होने लगी। दो बालियाँ निकलीं, एक जुगनू और एक छपका! खाँ साहब की बीवी हक्का-बक्का हो कर रह गई, यह जेवर यहाँ कहाँ से आए? या खुदा, अब हमारी आबरू तेरे ही हाथ है!

86

फीरोजा बेगम और फरखुंदा रात के वक़्त सो रही थीं कि धमाके की आवाज हुई फरखुंदा की आँख खुल गई। यह धमाका कैसा? मुँह पर से चादर उठाई, मगर अँधेरा देख कर उठने की हिम्मत न पड़ी। इतने में पाँव की आहट मिली, रोएँ खड़े हो गए। सोची, अगर बोली तो यह सब हलाल कर डालेंगे। दबकी पड़ी रही। चोर ने उसे गोद में उठाया और बाहर ले जा कर बोला — सुनो अब्बासी, हमको तुम खूब पहचानती हो? अगर न पहचान सकी हो, तो अब पहचान लो।

अब्बासी — पहचानती क्यों नहीं, मगर यह बताओ कि यहाँ किस गरज से आए हो? अगर हमारी आबरू लेनी चाहते हो तो कसम खा कर कहती हूँ, जहर खा लूँगी।

चोर — हम तुम्हारी आबरू नहीं चाहते, सिर्फ तुम्हारा जेवर चाहते हैं। तुम अपनी बेगम को जगाओ, जरा उनसे मिलूँगा। नाहक इधर-उधर मारी-मारी फिरती हैं, हमारे साथ निकाह क्यों नहीं कर लेतीं?

यकायक फीरोजा की आँख भी खुल गई। देखा तो मिर्जा आज़ाद खड़े हैं। बोली, आज़ाद मिर्जा, अगर हमें दिक करने से तुम्हें कुछ मिलता हो तो तुमको अख्तियार है। नाहक क्यों हमारी जान के दुश्मन हुए हो? इस मुसीबत के वक़्त तुमसे मदद की उम्मीद थी और तुम उल्टे गला रेतने को मौजूद?

अब्बासी — बेगम आपको हमेशा याद किया करती हैं।

आज़ाद — मेरे लायक जो काम हो, उसके लिए हाजिर हूँ, तुम्हारे लिए जान तक हाजिर है।

सुरैया — आपकी जान आपको मुबारक रहे, हम सिर्फ एक काम को कहते हैं। यहाँ एक कांस्टेबल ने हमें बहुत दिक किया है, तुम किसी तदबीर से हमें उसके पंजे से छुड़ाओ, (आज़ाद के कान में कुछ कह कर) मुझे इस बात का बड़ा रंज है। मेरी आँखों से आँसू निकल पड़े।

आज़ाद — वही कांस्टेबल तो नहीं है जो खाँ साहब को पकड़ ले गया है।

फीरोजा — हाँ-हाँ, वही।

आज़ाद — अच्छा, समझा जायगा। खड़े-खड़े उससे समझ लूँ तो सही। उसने अच्छे घर बयाना दिया!

सुरैया — कमबख्त ने मेरी आबरू ले ली, कहीं मुँह दिखाने लायक न रखा। यहाँ भी बला की तरह सिर पर सवार हो गया। तुमने भी इतने दिनों के बाद आज खबर ली। दूसरों का दर्द तुम क्या समझोगे? जो बेइज्जती कभी न हुई थी वह आज हो गई। एक दिन वह था कि अच्छे-अच्छे आदमी सलाम करने आते थे और आज एक कांस्टेबल मेरी आबरू मिटाने पर तुला हुआ है और तुम्हारे होते।

आज़ाद — सुरैया बेगम, खुदा की कसम, मुझे बिलकुल खबर न थी, मैं इसी वक़्त जा कर दारोगा और कांस्टेबल दोनों को देखता हूँ। देख लेना, सुबह तक उनकी लाश फड़कती होगी, ऐसे-ऐसे कितनों को जहन्नुम के घाट उतार चुका हूँ। इस वक़्त रुखसत करो, कल फिर मिलूँगा।

यह कह कर आज़ाद मिर्जा बाहर निकले। यहाँ उनके कई साथी खड़े थे, उनसे बोले, भाई जवानों! आज कोतवाल के घर हमारी दावत है, समझ गए, तैयार हो जाओ। उसी वक़्त आज़ाद मिर्जा और लक्ष्मी डाकू, गुलबाज, रामू यह सब के सब दारोगा के मकान पर जा पहुँचे। रामू को तो बैठक में रखा और मुहल्ले भर के मकानों की कुंडियाँ बन्द करके दारोगा जी के घर में सेंध लगाने की फिक्र करने लगे।

दरबान — कौन! तुम लोग कौन हो, बोलते क्यों नहीं?

आज़ाद — क्या बताएँ, मुसीबत के मारे हैं, इधर से कोई लाश तो नहीं निकली?

दरबान — हाँ, निकली तो है, बहुत से आदमी साथ थे।

आज़ाद — हमारे बड़े दोस्त थे, अफसोस!

लक्ष्मी — हुजूर, सब्र कीजिए, अब क्या हो सकता है!

दरबान — हाँ भाई, परमेश्वर की माया कौन जानता है, आप कौन ठाकुर हैं?

लक्ष्मी — कनवजिया ब्राह्मण हैं। बेचारे के दो छोटे-छोटे बच्चे हैं, कौन उनकी परवरिश करेगा!

दरबान को बातों में लगा कर इन लोगों ने उसकी मुश्कें कर लीं और कहा, बोले और हमने कत्ल किया। बस, मुँह बन्द किए पड़े रहो।

दीवार में सेंध पड़ने लगी। रामू कहीं से सिरका लाया। सिरका छिड़क-छिड़ककर दीवार में सेंध दी। इतने में एक कांस्टेबल ने हाँक लगाई — जागते रहियो, अँधेरी रात है।

आज़ाद — हमारे लिए अँधेरी रात नहीं, तुम्हारे लिए होगी।

चौकीदार — तुम लोग कौन हो?

आज़ाद — तेरे बाप। पहचानता है या नहीं?

यह कह कर आज़ाद ने करौली से चौकीदार का काम तमाम कर दिया।

लक्ष्मी — भाई, यह तुमने बुरा किया। कितनी बेरहमी से इस बेचारे की जान ली!

आज़ाद — बस, मालूम हो गया कि तुम ना के चोर हो, बिलकुल कच्चे!

अब यह तजवीज पाई कि मिर्जा आज़ाद सेंध के अन्दर जाएँ। आज़ाद ने पहले सेंध में पाँव डाले, डालते ही किसी आदमी ने अन्दर से तलवार जमाई दोनों पाँव खट से अलग।

आज़ाद — हाय मरा! अरे दौड़ो!

लक्ष्मी — बड़ा धोखा हुआ, कहीं के न रहे!

चोरों ने मिल कर आज़ाद मिर्जा का धड़ उठाया और रोते-पीटते ले चले, मगर रास्ते ही में पकड़ लिए गए।

मुहल्ले भर में जाग हो गई। अब जो दरवाजा खोलता है, बन्द पाता है। यह कौन बन्द कर गया? दरवाजा खोलो! कोई सुनता ही नहीं। चारों तरफ यही आवाजें आ रही थीं। सिर्फ एक

दरवाजे में बाहर से कुंडी न थी। एक बूढ़ा सिपाही एक हाथ में मशाल, दूसरे में सिरोही लिए बाहर निकला। देखा तो दारोगा जी के घर में सेंध पड़ी हुई है! चोर-चोर!

एक कानि. – खून भी हुआ है। जल्द आओ।

सिपाही — मार लिया है, जाने न पावे।

यह कह कर उसने दरवाजे खोलने शुरू किए। लोग फौरन लट्ठ ले-ले कर बाहर निकले। देखा तो चोरों और कानिस्टिबिलों में लड़ाई हो रही है। इन आदमियों को देखते ही चोर तो भाग निकले! आज़ाद मिर्जा और लक्ष्मी रह गए। आज़ाद की टाँगे कटी हुई। लक्ष्मी जख्मी। थाने पर खबर हुई। दारोगा जी भागे हुए अपने घर आए। मालूम हुआ कि उनके घर की बारिन ने चोरों को सेंध देते देख लिया था। फौरन जा कर कोठरी में बैठ रही। ज्यों ही आज़ाद मिर्जा ने सेंध में पाँव डाला, तलवार से उनके दो टुकड़े कर दिए।

आज़ाद पर मुकदमा चलाया गया। जुर्म साबित हो गया। कालेपानी भेज दिए गए।

जब जहाज पर सवार हुए तो एक आदमी से मुलाकात हुई। आज़ाद ने पूछा, कहो भाई, क्या किया था? उसने आँखों में आँसू भर के कहा, भाई, क्या बताऊँ? बे-कसूर हूँ। फौज में नौकर था,

इश्क के फेर में नौकरी छोड़ी, मगर माशूक तो न मिला, हम खराब हो गए।

यह शहसवार था।

87

खाँ साहब पर मुकदमा तो दायर ही हो गया था; उस पर दारोगा जी दुश्मन थे। दो साल की सजा हो गई। तब दारोगा जी ने एक औरत को सुरैया बेगम के मकान पर भेजा। औरत ने आकर सलाम किया और बैठ गई।

सुरैया – कौन हो? कुछ काम है यहाँ?

औरत – ऐ हुजूर, भला बगैर काम के कोई भी किसी के यहाँ जाता है? हुजूर से कुछ कहना है, आपके हुस्न का दूर-दूर तक शोहरा है। इसका क्या सबब है कि हुजूर इस उम्र में, इस हालत में जिंदगी बसर करती हैं?

सुरैया – बहन, मैं एक मुसीबत की मारी औरत हूँ ।

औरत — ऐ हुजूर, मुझे बहिन न कहें, मैं लौंडी, हुजूर शाहज़ादी हैं। हुजूर पर ऐसी क्या मुसीबत है? हुजूर तो इस काबिल हैं कि बादशाहों के महल में हों।

औरत — अल्लाह मालिक है। कोशिश यह करनी चाहिए कि दुनिया में इज्जत के साथ रहे और किसी का हो के रहे।

सुरैया — मगर जब खुदा को भी मंजूर हो। हमने तो बहुत चाहा कि शादी कर लें, मगर खुदा को मंजूर ही न था। किस्मत का लिखा कौन मिटा सकता है?

औरत — हुजूर का हुक्म हो तो कहीं फिक्र करूँ?

सुरैया — हमको माफ कीजिए। हम अब शादी न करेंगे।

औरत — हुजूर से मैं अभी जवाब नहीं चाहती। खूब सोच लीजिए। दो-तीन दिन में जवाब दीजिएगा। यहाँ एक रईसजादे रहते हैं, बहुत ही खूबसूरत, खुशमिजाज और शौकीन। दिल बहलाने के लिए नौकरी कर ली है। हुकूमत की नौकरी है।

सुरैया — हुकूमत की नौकरी कैसी होती है?

औरत — ऐसी नौकरी, जिसमें सब पर हुकूमत करें। कोतवाल हैं।

अब्बासी — अच्छा, उन्हीं थानेदार का पैगाम लाई होगी!

औरत — ऐ, थानेदार काहे को हैं, बराय नाम नौकरी कर ली, वरना उनको नौकरी की क्य जरूरत है, वह ऐसे-ऐसे दस थानेदारों को नौकर रख सकते हैं।

अब्बासी — हुजूर को तो शादी करना मंजूर ही नहीं है।

औरत — वाह! कैसी बातें करती हो।

सुरैया — तुम उनकी सिखाई-पढ़ाई आई हो, हम समझ गए। उनसे कह देना कि हम बेकस औरत हैं, हम पर रहम करो, क्यों हमारी जान के दुश्मन हुए हो, हमने तुम्हारा क्या बिगाड़ा है जो पंजे झाड़ के हमारे पीछे पड़े हो?

औरत — हुजूर के कदमों की कसम, उन्होंने नहीं भेजा है।

सुरैया — अच्छा तो इसमें जबरदस्ती काहे की है।

औरत — आपके और उनके दोनों के हक में यही इच्छा है कि हुजूर इन्कार न करें। वह अफसर पुलिस हैं, जरा सी देर में बे-आबरू कर सकते हैं?

सुरैया — हमारा भी खुदा है।

औरत — खैर न मानो।

औरत दो-चार बातें सुना कर चली गई तो अब्बासी और सुरैया बेगम सलाह करने लगीं-

सुरैया — अब यहाँ से भी भागना पड़ा, और आज ही कल में।

अब्बासी — इस मुए को ऐसी जिद पड़ गई कि क्या कहें! मगर अब भाग के जायँगे कहाँ?

सुरैया — जिधर खुदा ले जाय। कहीं से लाला खुशवक़्त राय को लाओ, बड़ा नमकहलाल बुड्ढा है। कोई ऐसी तदबीर करो कि वह कल सुबह तक यहाँ आ जाय।

अब्बासी — कहिए तो कल्लू को भेजूँ, बुला लाए।

कल्लू कौम का लोहार था। ऊपर से तो मिला हुआ था, मगर दिल में इनका दुश्मन था। अब्बासी ने उसको बुला के कहा, तुम जाके लाला खुशवक़्त राय को लिवा लाओ। कल्लू ने कहा, तुम साथ चलो तो क्या मुजायका है, मगर अकेला तो मैं न जाऊँगा। आखिर यही तै हुआ कि अब्बासी भी साथ जाय। शाम के वक़्त दोनों यहाँ से चले। अब्बासी मर्दाना भेष में थी। कुछ दूर चल कर कल्लू बोला, अब्बासी बुरा न मानो तो एक बात कहूँ! तुम इस बेगम के साथ क्यों अपनी जिंदगी खराब करती हो? उनकी जमा-जथा ले कर चली आओ और मेरे घर पर पड़ रहो।

अब्बासी — तुम मर्दों का ऐतबार क्या?

कल्लू — हम उन लोगों में नहीं हैं।

अब्बासी — भला अब लाला साहब का मकान कितनी दूर होगा?

कल्लू — यही कोई दो कोस, कहो तो सवारी किराया कर लूँ या गोद में ले चलूँ।

अब्बासी — ऐं, या तो घर बिठाते थे, या गोद बिठाने लगे।

कल्लू — भई, बहुत कही, ऐसी कही कि हमारी जबान बन्द हो गई।

अब्बासी — ऐ, तुम ऐसे गँवारों को बन्द करना कौन बात है।

थोड़ी देर में दोनों एक मकान में पहुँचे। यह कल्लू के दोस्त शिवदीन का मकान था। शिवदीन ने कहा, आओ यार, मिजाज अच्छे?

कल्लू — सब चैन ही चैन है। इनको ले आया हूँ, जो कुछ सलाह करनी हो, कर लो। सुनो अब्बासी, शिवदीन की और हमारी यह राय है कि तुमको अब यहाँ से न जाने दें। बस हमें अपनी बेगम के माल-टाल का पता बतला दो।

अब्बासी — बड़ी दगा दी कल्लू, बड़ी दगा दी तुमने।

कल्लू — अब तुम रात भर यहीं रहो, हम लोग जरा सुरैया बेगम से मुलाकात करने जायँगे।

अब्बासी — बड़ा धोखा दिया, कहीं के न रहे।

अब्बासी तो यहाँ रोती रही, उधर वह दोनों चोर कई आदमियों के साथ सुरैया बेगम के मकान पर जा पहुँचे और दरवाजा तोड़ कर अन्दर दाखिल हुए। सुरैया बेगम की आँख खुल गई, बिचारी अकेली मकान में मारे डर के दबकी पड़ी थी। बोली — कौन है? अब्बासी?

कल्लू — अब्बासी नहीं है, हम है, अब्बासी के मियाँ।

सुरैया — हाय मेरे अल्लाह, गजब हो गया?

शिव. – चुप्पे-चुप्पे बोल, बताओ, रुपया कहाँ हैं? सच बता दो, नहीं मारी जाओगी

कल्लू — बताएँ तो अच्छा न बताएँ तो अच्छा, हम घर भर ढूँढ़ ही मरेंगे। सुना है कि तुम्हारे पास जवाहिर के ढेर हैं।

सुरैया — अमीर जब थी तब थी, अब तो मुसीबत की मारी हूँ।

कल्लू — तुम यों न बताओगी, हम कुछ और ही उपाय करेंगे, अब भी बताती है कि नहीं।

सुरैया बेगम ने मारे खौफ के एक-एक चीज का पता बतला दिया। जब सारी जमा-थमा ले कर वे सब चलने लगे, तो कल्लू सुरैया बेगम से बोला, चल हमारे साथ, उठ।

सुरैया — खुदा के लिए मुझे छोड़ दो! रहम करो।

शिव. – चल, चल उठ, रात जाती है।

सुरैया बेगम ने हाथ जोड़े, पाँव पड़ी, रो-रोक कर कहा,खुदा के वास्ते मेरी इज्जत न लो। मगर कल्लू ने एक न सुनी। कहने लगा, तुझे किसी रईस अमीर के हाथ बेचेंगे; तुम भी चैन करोगी, हम भी चैन करेंगे।

सुरैया — मेरा माल लिया, अब तो छोड़ो।

कल्लू — चलो, सीधे से चलो, नहीं तो धकियाई जाओगी। देखो मुँह से आवाज न निकले वरना हम छुरी भोंक देंगे।

सुरैया (रो कर) – या खुदा, मैंने कौन सा गुनाह किया था, जिसके एवज यह मुसीबत पड़ी!

कल्लू — चलती है कि बैठी रोती है?

आखिर सुरैया बेगम को अँधेरी रात में घर छोड़ कर उनके साथ जाना पड़ा।

88

आध कोस चलने के बाद इन चोरों ने सुरैया बेगम को दो और चोरों के हवाले किया। इनमें एक का नाम बुधसिंह था, दूसरे का

हुलास। यह दोनों डाकू दूर-दूर तक मशहूर थे, अच्छे-अच्छे डकैत उनके नाम सुन कर अपने कान पकड़ते थे। किसी आदमी की जान लेना उनके लिए दिल्लगी थी। सुरैया बेगम काँप रही थी कि देखें आबरू बचती है या नहीं। हुलास बोला, कहो बुद्धसिंह, अब क्या करना चाहिए?

बुद्धसिंह — अपनी तो यह मरजी है कि कोई मनचला मिल जाए तो उसी दम पटील डालो।

हुलास — मैं तो समझता हूँ, यह हमारे साथ रहे तो अच्छे-अच्छे शिकार फँसे। सुनो बेगम, हम डकैत हैं, बदमाश नहीं। हम तुम्हें किसी ऐसे जवान के हाथ बेचेंगे, जो तुम्हें अमीरजादी बना कर रखे। चुपचाप हमारे साथ चली आओ।

चलते चलते तीनों आमों के एक बाग में पहुँचे। दोनों डाकू तो चरस पीने लगे, सुरैया बेगम सोचने लगी — खुदा जाने, किसके हाथ बेचें, इससे तो यही अच्छा है कि कत्ल कर दें। इतने ही में दो आदमी बातें करते हुए निकले -

एक — मिर्जा जी, दो बदमाशों से यह शहर पाक हो गया। आज़ाद और शह-सवार। दोनों ही कालेपानी गए। अब दो मुड्ढा और बाकी हैं।

मिर्जा — वह दो कौन है?

पहला — वही हुलास और बुद्धसिंह। अरे, वह दोनों तो यहीं बैठे हुए हैं! क्यों यारो, चरस के दम उड़ रहे हैं? तुम लोगों के नाम वारंट जारी है।

हुलास — मीर साहब, आप भी बस वही रहे। पड़ोस में रहते हो, फिर भी वारंट से डराते हो? ऐसे-ऐसे कितने वारंट रोज ही जारी हुआकरते हैं। हमसे और पुलिस से तो जानी दुश्मनी है, मगर कसम खा के कहता हूँ कि अगर पचास आदम भी गिरफ्तार करने आएँ तो हमारी गर्द तक न पाए। हम दोनों एक पलटन के लिए काफी हैं। कहिए, आप लोग कहाँ जा रहे हैं?

मिर्जा — अजी, हम भी किसी शिकार ही के तलाश में निकले हैं।

जब मीर और मिर्जा चले गए तो दोनों चोर भी सुरैया बेगम को ले कर चले। इत्तिफ़ाक़ से उसी वक़्त एक सवार आ निकला। बुद्धसिंह ने साईस को तो मार गिराया और मुसाफिर से कहा, अगर आबरू के साथ घोड़ा नजर करो तो बेहतर है, नहीं तो तुम भी जमीन पर लोट रहे होगे। सवार बेचारा उतर पड़ा। हुलास ने तब सुरैया बेगम को घोड़े पर सवार किया और लगाम ले कर चलने लगा।

सुरैया बेगम दिल में सोचती थी कि इतनी ही उम्र में हमने क्या-क्या देखा। यह नौबत पहुँची है कि जान भी बचती दिखाई नहीं देती।

हुलास — बीबी, क्या सोचती जाती हो? कुछ गाना जानती हो तो गाओ। इस जंगल में मंगल हो।

बुद्धसिंह — इससे कहो कि कोई भजन गाए।

हुलास — इनको गजलें याद होंगी या ठुमरी-टप्पा। यह भजन क्या जानें!

सुरैया — नहीं मियाँ, हमें कुछ नहीं आता, हम बहू-बेटियाँ गाना क्या जानें।

इतने में किसी की आवाज आई। हुलास ने बुद्धसिंह से पूछा, यह किसकी आवाज आई?

बुद्धसिंह — अरे, कौन सा आदमी बोला था?

आवाज — जरा इधर तक आ जाओ। मैं मिर्जा हूँ, जरा सुन लो।

हुलास और बुद्धसिंह दोनों आवाज की तरफ चले, इधर-उधर देखा, कोई न मिला। सुरैया बेगम का कलेजा धड़कने लगा। मारे डर के आँखें बन्द कर लीं और आहिस्ता-आहिस्ता दोनों को पुकारने लगीं। हाय! खुदा किसी को मुसीबत में न डाले। यह दोनों डाकू

उसको बेचने की फिक्र में थे, और इसने मुसीबत के वक़्त उन्हीं दोनों को पुकारा। वह आवाज की तरफ कान लगाए हुए चले तो देखा कि एक बूढ़ा आदमी घास पर पड़ा सिसक रहा है। इनको देख कर बोला, बाबा, मुझ फकीर को जरा सा पानी पिलाओ। बस, मैं पानी पी कर इस दुनिया से कूच कर जाऊँगा। फिर किसी को अपना मुँह न दिखाऊँगा।

हुलास ने उसे पानी पिलाया, पानी पी कर वह बोला, बाबा, खुदा तुम्हें इसका बदला दे। इसके एवज तुम्हें क्या दूँ। खैर, अगर दो घंटे भी जिंदा रहा तो अपना कुछ हाल तुमसे बयान करूँगा और तुम्हें कुछ दूँगा भी।

हुलास – आपके पास जो कुछ जमा-जथा हो वह हमको बता दीजिए।

बूढ़ा – कहा न कि दो घंटे भी जिंदा रहा तो सब बातें बता दूँगा। मैं सिपाही हूँ, लड़कपन से यही मेरा पेशा है।

हुलास – आपने तो एक किस्सा छेड़ दिया, मुझे खौफ है कि ऐसा न हो कि आपकी जान निकल जाय तो फिर वह रुपया वहीं का वहीं पड़ा रहे।

बूढ़ा (गा कर) – पहुँची न राहत हमसे किसी को...

हुलास — जनाब, आपको गाने को सूझती है और हम डर रहे हैं कि कहीं आप का दम न निकल जाय। रुपए बता दो, हम बड़ी धूमधाम से तुम्हारा तीजा करेंगे।

बुद्धसिंह — पानी और पिलवा दो तो फिर खूब ठंडा हो कर बताएगा।

बूढ़ा — मेरा एक लड़का है, दुनिया में ओर कोई नहीं। बस यही एक लड़का, जवान, खूबसूरत, घोड़े पर खूब सवार होता था।

सुरैया — फिर अब कहाँ है वह?

बूढ़ा — फौज में नौकर था। किसी बेगम पर आशिक हुआ, तब से पता नहीं। अगर इतना मालूम हो जाय कि उसकी जान निकल गई तो कब्र बनवा दूँ।

सुरैया — लंबे हैं या ठिंगने?

बूढ़ा — लंबा है। चौड़ा सीना, ऊँची पेशानी, गोरा रंग।

सुरैया — हाय-हाय? क्या बताऊँ बड़े मियाँ, मेरा उनका बरसों साथ रहा है। मेरे साथ निकाह होने को था।

बूढ़ा — बेटा, जरी हमारे पास आ जाओ। कुछ उसका हाल बताओ। जिंदा तो है?

सुरैया — हाँ, इतना तो मैं कह सकती हूँ कि जिंदा हैं।

बूढ़ा — अब वह है कहाँ? जरा देख लेता तो आरजू पूरी हो जाती।

हुलास — आपका सर दबा दूँ, तलुवे मलूँ, जो खिदमत कहिए करूँ।

बूढ़ा — नहीं, मौत का इलाज नहीं है। मैंने अपने लड़के को लड़ाई के फन खूब सिखाए थे। हर एक के साथ मुरौवत से पेश आता था। बस, इतना बता दो कि जिंदा है या मर गया?

सुरैया — जिंदा हैं और खुश हैं।

बूढ़ा — अब मैं अपनी सारी तकलीफें भूल गया। ख्याल भी नहीं कि कभी तकलीफ हुई थी।

ये बातें हो रही थीं कि पचास आदमियों ने आकर इन लोगों को चारों तरफ से घेर लिया। दोनों डाकुओं की मुश्कें कस ली गईं। बुद्धसिंह मजबूत आदमी था। रस्सी तोड़ कर, तीन सिपाहियों को जख्मी किया और भाग कर झील में कूद पड़ा, किसी की हिम्मत न पड़ी कि झील में कूद कर उसे पकड़े। हुलास बँधा रह गया।

यह पुलिस का इंस्पेक्टर था।

सुरैया बेगम हैरान थीं कि यह क्या माजरा है। इन लोगों को डाकुओं की खबर कैसे मिल गई। चुपचाप खड़ी थी कि

सिपाहियों ने उससे हँसी-दिल्लगी करनी शुरू की। एक बोला, वाह-वाह, यह तो कोई परी है भाई। दूसरा बोला, अगर ऐसी सूरत कोई दिखा दे तो महीने की तनख्वाह हार जाऊँ।

हुलास — सुनते हो जी, उस औरत से न बोलो, तुमको हमसे मतलब है या उससे।

इंस्पेक्टर — इसका जवाब तो यह है कि तेरे एक बीस लगाए और भूल जाय तो फिर से गिने। आँखें नीची कर, नहीं खोद के गाड़ दूँगा।

सुबह के वक़्त शहर में दाखिल हुए तो सुरैया बेगम ने चादर से मुँह छिपा लिया। इस पर एक चौकीदार बोला, सत्तर चूहे खा के बिल्ली हज को चली! ओढ़नी मुँह पर ढाँपती है, हटाओ ओढ़नी।

सुरैया बेगम की आँखों से आँसू जारी हो गए। उसके दिल पर जो कुछ गुजरती थी, उसे कौन जान सकता है। रास्ते में तमाशाइयों में बातें होने लगीं!

रँगरेज — भई, यह दुपट्टा कितना अच्छा रँगा हुआ है!

नानबाई — कहाँ से आते हो जवानो? क्या कहीं डाका पड़ा था?

शेख जी — अरे यारो, यह नाजनीन कौन है? क्या मुखड़ा है, कसम खुदा की, ऐसी सूरत कभी न देखी थी। बस, यही जी चाहता है

कि इससे निकाह पढ़वा लें। यह तो शब्बोजान से भी बढ़ कर है।

यह शेख जी वही वकील साहब थे जिनके यहाँ अलारक्खी शब्बोजान बन कर रही थी। सलारू भी साथ था। बोला, मियाँ, आँखों वाले तो बहुत देखे, मगर आपकी आँख निराली है।

वकील — क्यों बे बदमाश, फिर तूने गुस्ताखी की।

सलारू — जब कहेंगे, खरी कहेंगे। आप थाली के बैंगन हैं।

वकील साहब इस पर झल्ला कर दौड़े। सलारू भागा, आप मुँह के बल गिरे।

इस पर लोगों ने कहकहा मारा। सुरैया बेगम सोच रही थीं कि मैंने इस आदमी को कहीं देखा है, पर याद न आता था।

यह लोग और आगे चले तो तरह-तरह की अफवाहें उड़ने लगीं। एक मुहल्ले में यह खबर उड़ी कि दरिया से एक घोड़मुँहा आदमी निकाला गया है। उसी के साथ एक परी भी निकली है। दो-तीन मुहल्लों में यह अफवाह उड़ी कि एक औरत अपने घर से जेवर ले कर भाग गई थी, अब पकड़ी गई है। नौ बजते-बजते यह लोग थाने में जा पहुँचे। हुलास और सुरैया बेगम हवालात में बन्द कर दिए गए। रात को तरह-तरह के ख्वाब दिखाई दिए।

पहले देखा कि उसका बूढ़ा शौहर कब्र से गर्दन निकाल कर कहता है, सुरैया, वह कैसी बुरी घड़ी थी, जब तेरे साथ निकाह किया और अपने खानदान की इज्जत खाक में मिलाई। फिर दूसरा ख्वाब देखा कि आज़ाद एक दरख्त के साये में लेटे और सो गए। एक साँप उनके सिरहाने आ बैठा और काटना ही चाहता था कि सुरैया बेगम की आँख खुल गई।

सबेरे उठ कर बैठी कि एक सिपाही ने आकर कहा, तुम्हारे भाई तुमसे मिलने आए हैं। सुरैया बेगम ने सोचा, मेरा भाई तो कोई पैदा ही नहीं हुआ था, यह कौन भाई बन बैठा? सोची; शायद कोई दूर के रिश्तेदार होंगे, बुला लिया। जब वह आया तो उसे देख कर सुरैया बेगम के होश उड़ गए। यह वही वकील साहब थे। आपने आते ही आते कहा, बहन, खैर तो है, यह क्या, हुआ क्या? हमसे बयान तो करो। कुछ दौड़-धूप करें? हुक्काम से मिल कर कोई सबील निकालें।

सुरैया – मियाँ, मेरी तकदीर में यही लिखा था, तो तुम क्या करोगे और कोई क्या करेगा?

वकील – खैर, अब उन बातों का जिक्र ही क्या। सच कहता हूँ शब्बोजान, तुम्हारी याद दिल से कभी नहीं उतरी, मगर अफसोस कि तुमने मेरी मुहब्बत की कदर न की। जिस दिन तुम मेरे घर

से निकल भागीं, मुझे ऐसा मालूम हुआ कि बदन से जान निकल गई। अब तुम घबराओ नहीं। हम तुम्हारी तरफ से पैरवी करेंगे। तुम जानती ही हो कि हम कैसे मशहूर वकील हैं और कैसे-कैसे मुकदमे बात की बात में जीत लेते हैं।

सुरैया — इस वक़्त आप आ गए, इससे दिल को बड़ी तसकीन हुई। तुम्हारे घर से निकली तो पहिले एक मुसीबत में फँस गई, बारे खुदा-खुदा करके उससे नजात पाई और कुछ दौलत भी हाथ आई तो तुम्हारे ही मुहल्ले में मकान लिया और बेगमों की तरह रहने लगी।

वकील — अरे, वह सुरैया बेगम आप ही थीं?

सुरैया — हाँ, मैं ही थी।

वकील — अफसोस, इतने करीब रह कर भी कभी मुझे न बुलाया। मगर वह आपकी दौलत क्या हुई और यहाँ हवालात में क्योंकर आईं?

सुरैया — हुआ क्या, दो बार चोरी हो गई, ऊपर से थानेदार भी दुश्मन हो गया। आखिर हम अपनी महरी को ले कर चल दिए। एक गाँव में रहने लगी, मगर वहाँ भी चोरी हुई और डाकुओं के फंदे में फँसी।

इतने ही में एक थानेदार ने आकर वकील साहब से कहा, अब आप तशरीफ ले जाइए। वक़्त खत्म हो गया। सुरैया बेगम ने इस थानेदार को देखा, तो पहचान गई। यह वही आदमी था जिसके पास एक बार वह आज़ाद पर रपट करने गई थी। बोली — क्यों साहब, पहचाना? अब क्यों पहचानिएगा?

थानेदार — अलारक्खी, खुदा को गवाह रख कर कहता हूँ कि इस वक़्त मारे खुशी के रोना आता है। मैं तो बिलकुल मायूस हो गया था। मुझे अब भी तुम्हारी वैसी ही मुहब्बत है जो पहिले थी।

रात के वक़्त थानेदार ने हवालात में आकर उसे जगाया और आहिस्ता से कान में कहा, बहुत अच्छा मौका है, चलो, भाग चलें। मैंने चौकीदारों को मिला लिया है।

सुरैया बेगम ने थानेदार को समझाया कि कहीं पकड़ न लिए जायँ। मगर जब वह न माना, तो वह उसके साथ चलने पर तैयार हो गई। बाहर आकर थानेदार ने सुरैया बेगम को मर्दाना कपड़े पहिनाए ओर गाड़ी पर सवार कराके चला। जब दो कोस निकल गए तो सबेरा हुआ। थानेदार ने गाड़ी से दरी निकाली और आराम से लेट कर हुक्का पीने लगे कि एक मुसाफिर सवार

ने आक पूछा — क्यों भाई मुसाफिर हिंदू हो या मुसलमान? मुसलमान हो तो हुक्का पिलाओ।

थानेदार ने खातिर से बैठाया। लेकिन जब मुसाफिर के चेहरे पर गौर से नजर डाली तो कुछ शक हुआ। कहा — जनाब, मेरे दिल में आपकी तरफ से एक शक पैदा हुआ है। कहिए अर्ज करूँ, कहिए खामोश रहूँ? आप ही तो जबलपुर में एक सौदागर के यहाँ मुंशी थे। वहाँ आपने दो हजार रुपए का गबन किया और साल भर की सजा पाई। कहिए, गलत कहता हूँ?

मुसाफिर — जनाब, आपको धोखा हुआ है, यहाँ खानदानी रईस है। गबन पर लानत भेजते हैं।

थानेदार — यह चकमे किसी और को दीजिएगा। दाई से पेट नहीं छिपता।

मुसाफिर — अच्छा, मान लीजिए, आप ही का कहना दुरुस्त है। भला हम फँस जायँ तो आपको क्या मिले?

थानेदार — पाँच सौ रुपए नकद, तरक्की और नेकनामी अलग!

मुसाफिर — बस! हमसे एक हजार ले लीजिए, अभी-अभी गिना लीजिए। लेकिन गिरफ्तार करने का इरादा हो तो मेरे हाथ में भी तलवार है।

थानेदार — हजरत, यह रकम बहुत थोड़ी है, हमें जँचती नहीं।

मुसाफिर — आखिर दो ही हजार तो मेरे हाथ लगे थे। उसका आधा आपको नजर करता हूँ! मगर गुस्ताखी माफ हो, तो मैं भी कुछ कहूँ! मुझे आपके इन दोस्त पर कुछ शक होता है। कहिए, कैसा भाँपा?

थानेदार ने देखा कि पर्दा खुल गया तो झगड़ा बढ़ाना मुनाबिस न समझा। डरे, कहीं जा कर अफसरों से जड़ दे, तो रास्ते ही में धर लिए जायँ। बोले, हजरत, अब आपको अख्तियार है, हमारी लाज अब आपके हाथ है।

मुसाफिर — मेरी तरफ से आप इतमीनान रखिए।

दोनों आदमियों में दोस्ती हो गई। थोड़ी देर के बाद तीनों यहाँ से रवाना हुए, शाम होते-होते एक नदी के किनारे एक गाँव में पहुँचे। वहाँ एक साफ-सुथरा मकान अपने लिए ठीक किया और जमींदार से कहा कि अगर कोई आदमी हमें पूछे तो कहना, हमें नहीं मालूम। तीनों दिन भर के थके थे, खाने-पीने की भी सुध न रही। सोए तो सबेरा हो गया। सुबह के वक़्त थानेदार साहब बाहर आए तो देखा कि जमींदार उनके इंतजार में खड़ा है। इनको देखते ही बोला, जनाब, आपने तो उठते-उठते नौ बजा दिए। एक अजनबी आदमी यहाँ आपकी तलाश में आया है।

वरदी तो नहीं पहिने है, हाँ, सिर पर पगड़ी बाँधे है। पंजाबी मालूम होता है। मुझे तो बहुत डर लग रहा है कि न जाने क्या आफत आए।

थानेदार — किसी बहाने से हमको अपने मकान पर ले चलो और ऐसी जगह बैठाओ, जहाँ से हम सुन सकें कि क्या बातें करता है।

जमींदार — चलिए, मगर आपका चलना अच्छा नहीं। अन्दर ही बैठिए, अगर कोई खटके की बात होगी तो आपको इत्तला दूँगा।

थानेदार — जनाब, मैंने पुलिस में नौकरी की है; चलने का डर आपको होगा। मैं अभी दाढ़ी हज्जाम की नजर करता हूँ और मूँछें करतवा डालता हूँ। चलिए, छुट्टी हुई।

सुरैया बेगम ने समझाया कि कहीं फँस गए तो कहीं के न रहोगे। आप भी जाओगे और मुझे भी ले डूबोगे। मगर थानेदार साहब ने एक न सुनी। फौरन नाई को बुलाया, दाढ़ी मुड़वाई, स्याह किनारे को धाती पहनी, अंगरखा डाटा, काली मंदिल सर पर रखी और आधे हिंदू और आधे मुसलमान बने हुए जमींदार के पास जा पहुँचे। सलाम-बन्दगी के बाद बातें होने लगीं। थानेदार ने अपना नाम शेख बुद्दू बतलाया और घर बंगाल में। जमींदार के पास एक पंजाबी भी बैठा हुआ था। समझ गए कि यही

हजरत हमें गिरफ्तार करने आए हैं! नाम पूछा तो उसने बतलाया शेरसिंह।

थानेदार – आप तो पंजाब के रहने वाले होंगे?

शेरसिंह – जी हाँ, हम खास अंबरसर में रहते हैं।

थानेदार – आप कहाँ नौकर हैं?

शेरसिंह – हम जमींदार हैं। अंबरसर के पास हमारा इलाका है, उसको हमारा भाई देखता है, हम घूमते रहते हैं। आप यहाँ किसर गरज से आए हैं? और टिके आप कहाँ हैं?

थानेदार – इसी गाँव में मैं भी ठहरा हूँ। अगर तकलीफ न हो तो हमारे साथ घर तक चलिए।

थानेदार उनको ले कर डेरे पर आए। सुरैया बेगम दौड़ कर छिपने को थीं; मगर थानेदार ने मना किया और कहा कि यह मेरे भाई हैं। इनसे पर्दा करना फुजूल है!

शेरसिंह – यह आपकी कौन है?

थानेदार – जी, मेरे घर पड़ गई हैं?

सुरैया बेगम – ऐ हटो भी, क्या वाहियात बातें करते हो। हजरत, यह मेरे भाई हैं। इस पर शेरसिंह ने कहकहा लगाया और थानेदार झेंपे।

शेरसिंह — मुए पर सौ दुर्रे और गधे की सवारी। बस, अब मैं यहाँ से भाग जाऊँगा और उम्र भर तुम्हारी सूरत न देखूँगा। खुदा तुझसे समझे।

थानेदार — सुनो भाईजान, यह फकत चकमा था। हम आजमाते थे कि देखें, तुम कौल के कहाँ तक सच्चे हो। अब हम साफ कहते हैं कि हम कातिल नहीं हैं, लेकिन मुजरिम हैं। अब कहिए।

शेरसिंह — अजी, जब इतने बड़े जुर्म की सजा न दी तो अब क्या खौफ है! क्या कहीं से माल मार लाए हो?

थानेदार — भाई, माफ करो तो बता दें। सुनिए, हम वही थानेदार हैं जिसकी तलाश में तुम निकले हो। और यह वही बेड़िन हैं। अब चाहे बाँध ले चलो, चाहे दोस्ती का हक अदा करो।

शेरसिंह — ओफ! बड़ा झाँसा दिया। मुझे तो हैरत है कि तुमसे मेरे पास आया क्यों कर गया। मैं पंजाब से खास इसी काम के लिए बुलवाया गया था। यहाँ दो दिन से तुम्हें भी देख रहा हूँ और बेड़िन से नोंक-झोंक भी हो रही है। मगर टाँय-टाँय-फिस।

सुरैया — हुजूर, ले जरा मुँह सम्हाल कर बात कीजिए। बेड़िन कोई और होगी। बेड़िन की सूरत नहीं देखी!

थानेदार — यह बेगम हैं। खुदा की कसम। सुरैया बेगम नाम है।

शेरसिंह — वह तो बातचीत से जाहिर है। अच्छा बेगम साहब, बुरा न मानो तो एक बात कहूँ। अगर अपनी और इनकी रिहाई चाहती हो, तो इनको इस्तीफा दो और हमसे वादा करो।

थानेदार — इनको राजी कीजिए। हमसे क्या वास्ता। हमको तो अपनी जान प्यारी है।

सुरैया — ऐ वाह! अच्छे मिले। तुम थानेदारी क्या करते थे! अच्छा, दिल्लगी तो हो चुकी। अब मतलब की बात कहो। हम दोनों भागें, तो भाग के जायँ कहाँ? और भागे तो रहें कहाँ?

शेरसिंह — एक काम करो। हमको वापस जाने दो। हम वहाँ जा कर आयँ-बायँ-सायँ उड़ा देंगे। इसके बाद आकर तुमको पंजाब ले जायँगे।

थानेदार — अच्छा तो है। हम सब मिल कर पंजाब चलेंगे।

सुरैया — तुम जाओ, हम तो न जायँगे। और सुनिए, वाह!

थानेदार — हमारी बात मानिए। आप घर-घर तहकीकात कीजिए और दो दिन तक यहाँ टिके रहिए और वहाँ जा कर कहिए कि मुलजिम तराई की तरफ निकल गया।

शेरसिंह — हाँ, सलाह तो अच्छी है। तो आप यहाँ रहें, मैं जाता हूँ।

शेरसिंह ने दिन भर सारे कस्बे में तहकीकात की। जमींदारों को बुला कर खूब डाँट-फटकार सुनाई। शाम को आकर थानेदार के साथ खाना खाया और सदर को रवाना हुए। जब शेरसिंह चले गए तो थानेदार साहब बोले — दुनिया में रह कर अगर चालाकी न करें तो दम भर गुजारा न हो। दुनिया में आठों गाँठ कुम्मैत हो तब काम चले।

सुरैया — वाह! आदमी को नेक होना चाहिए, न कि चालाक।

थानेदार — नेकी से कुछ नहीं होता, चालाकी बड़ी चीज है। अगर हम शेरसिंह से चालाकी न करते तो उनसे गला कैसे छूटता।

दूसरे दिन थानेदार साहब भी रवाना हुए। दिन भर चलने के बाद गाड़ीवान से कहा — भाई, यहाँ से मीरडीह कितनी दूर है?

गाड़ीवान ने कहा — हुजूर यही मीरडीह है।

थानेदार — यहाँ हम किसके मकान में टिकेंगे?

गाड़ीवान — हुजूर, आदमी भेज दिया गया है।

यह कह कर उसने नंदा-नंदा पुकारा। बड़ी देर बाद नंदा आया और गाड़ी को एक टीले की तरफ ले चला। वहीं एक मकान में उसने दोनों आदमियों को उतारा और तहखाने में ले गया।

थानेदार — क्या कुछ नीयत खोटी है भई?

सुरैया — हम तो इसमें न जाते के। अल्लाह रे अँधेरा!

नंदा — आप चलें तो सही।

थानेदार ने तलवार म्यान से खींच ली और सुरैया बेगम के साथ चले।

थानेदार — अरे नंदा, रोशनदान तो जरा खोल दे जाके।

नंदा — अजी, क्या जाने, किस वक़्त के बन्द पड़े हैं।

सुरैया — है-है! खुदा जाने, कितने बरसों से यहाँ चिराग नहीं जला। यह जीने तो खत्म ही होने नहीं आते।

नंदा — कोई एक सौ दस जीने हैं।

सुरैया — उफ! बस अब मैं मर गई।

नंदा — अब नगिचाय आए। कोई पचीस ठो और हैं।

बड़ी मुश्किलों से जीने तय हुए। मगर तहखाने में पहुँचे तो ऐसी ठंडक मिली कि गुलाबी जाड़े का मजा आया। दो पलंग बिछे हुए

थे। दोनों आराम से बैठे। खाना भी पहले से एक बावर्ची ने पका रखा था। दोनों ने खाना खाया और आराम करने लगे। यह मकान चारों तरफ पहाड़ों से ढका था। बाहर निकलने पर पहाड़ों की काली-काली चोटियाँ नजर आती थीं। उन पर हिरन कुलेलें भरते थे। थानेदार ने कहा — बहुत मुकामों की सैर की है, मगर ऐसी जगह कभी देखने में नहीं आई थी। बस, इसी जगह हमारा और तुम्हारा निकाह होना चाहिये।

सुरैया — भई, सुनो, बुरा मानने की बात नहीं। मैंने दिल में ठान ली है कि किसी से निकाह न करूँगी। दिल का सौदा सिर्फ एक बार होता है। अब तो उसी के नाम पर बैठी हूँ। किसी और के साथ निकाह करने की तरफ तबियत मायल नहीं होती।

थानेदार — आखिर वह कौन साहब हैं। जिन पर आपका दिल आया है? मैं भी तो सुनूँ।

सुरैया — तुम नाहक बिगड़ते हो। तुमने मेरे साथ जो सलूक किए हैं, उनका एहसान मेरे सिर पर हैं; लेकिन यह दिल दूसरे को हो चुका है।

थानेदार — अगर यह बात थी तो मेरी नौकरी क्यों ली? मुझे क्यों मुसीबत में गिरफ्तार किया? पहले ही सोची होती। अब से बेहतर है, तुम अपनी राह लो, मैं अपनी राह लूँ।

सुरैया — यह तुमने लाख रुपए की बात कही। चलिए, सस्ते छूटे।

थानेदार — तुम न होगी तो क्या जिंदगी न होगी?

सुरैया — और तुम न होगे तो क्या सबेरा न होगा?

थानेदार — नौकरी की नौकरी गई और मतलब का मतलब न निकला —

गैर आँखें सेंके उस बुत से दिले मुजतर जले,
बाये बेदर्दी कोई तापे किसी का घर जले।

सुरैया — आँखें सेंकवाने वालियाँ और होती हैं।

थानेदार — इतने दिनों से दुनिया में आवारा फिरती हो और कहती हो; हम नेक। वाह री नेकी!

सुरैया — तुमसे नेकी की सनद तो नहीं माँगती?

थानेदार — अब इस वक़्त तुम्हारी सूरत देखने को जी नहीं चाहता!

सुरैया — अच्छा, आप अलग रहें। हमारी सूरत न देखिए, बस छुट्टी हुई।

थानेदार — हमको मलाल यह है कि नौकरी मुफ्त गई।

सुरैया — मजबूरी!!

89

सुरैया बेगम ने अब थानेदार के साथ रहना मुनासिब न समझा। रात को जब थानेदार खा पी कर लेटा तो सुरैया बेगम वहाँ से भागी। अभी सोच ही रही थी कि एक चौकीदार मिला। सुरैया बेगम को देख कर बोला — आप कहाँ? मैंने आपको पहचान लिया है। आप ही तो थानेदार साहब के साथ उस मकान में ठहरी थीं। मालूम होता है, रूठ कर चली आई हो। मैं खूब जानता हूँ।

सुरैया — हाँ, है तो यही बात, मगर किसी से जिक्र न करना।

चौकीदार — क्या मजाल, मैं नवाबों और रईसों की सरकार में रहा हूँ।

बेगम — अच्छा, मैं इस वक़्त कहाँ जाऊँ?

चौकीदार — मेरे घर।

बेगम — मगर किसी पर जाहिर न होने पाए, वरना हमारी इज्जत जायगी।

बेगम साहब चौकीदार के साथ चलीं और थोड़ी देर में उसके घर जा पहुँचीं। चौकीदार की बीवी ने बेगम की बड़ी खातिर की और कहा – कल यहाँ मेला है, आज टिक जाओ। दो-एक दिन में चली जाना।

सुरैया बेगम ने रात वहीं काटी। दूसरे दिन पहर दिन चढ़े मेला जमा हुआ। चौकीदार के मकान के पास एक पादरी साहब खड़े वाज कह रहे थे। सैकड़ों आदमी जमा थे। सुरैया बेगम भी खड़ी हो कर वाज सुनने लगीं। पादरी साहब उसको देख कर भाँप गए कि यह कोई परदेशी औरत है। कहीं से भूल-भटक कर यहाँ आ गई है। जब वाज खत्म करके चलने लगे तो सुरैया बेगम से बोले – बेटी, तुम्हारा घर यहाँ तो नहीं है?

सुरैया – जी नहीं, बदनसीब औरत हूँ। आपका वाज सुन कर खड़ी हो गई।

पादरी – तुम यहाँ कहाँ ठहरी हो?

सुरैया – सोच रही हूँ कि कहाँ ठहरूँ।

पादरी – मेरा मकान हाजिर है, उसे अपना घर समझो। मेरी उम्र अस्सी वर्ष से ज्यादा है। अकेले पड़ा रहता हूँ। तुम मेरी लड़की बन कर रहना।

दूसरे दिन जब पारदी साहब गिरजाघर में आए, तो उनके साथ एक नाजुक बदन मिस कीमती अंगरेजी कपड़े पहने आई और शान से बैठ गई। लोगों को हैरत थी कि या खुदा, इस बुड्ढे के साथ यह परी कौन है! पादरी साहब ने उसे भी पास की कुर्सी पर बैठाया। इस औरत की चाल-ढाल से पाया जाता था कि कभी सोहबत में नहीं बैठी है। हर चीज को अजनबियों की तरह देखती थी।

रंगीले जवानों में चुपके-चुपके बातें होने लगीं।

टाम — कपड़े अंगरेजी है, रंग गोरा, मगर जुल्फ सियाह है और आँखें भी काली। मालूम होता है, किसी हिंदोस्तानी औरत को अंगरेजी कपड़े पहना दिए हैं।

डेविस — इस काबिल है कि जोरू बनाएँ।

टाम — फिर आओ, हम-तुम डोरे डालें, देखें, कौन खुशनसीब है।

डेविस — न भई, हम यों डोरे डालनेवाले आदमी नहीं। पहले मालूम तो हो कि है कौन? चाल-चलन का भी तो कुछ हाल मालूम हो। पादरी साहब की लड़की तो नहीं है। शायद किसी औरत को बपतिस्मा दिया है।

तीन हिंदोस्तानी आदमी भी गिरजा गए थे। उनमें यों बातें होने लगीं -

मिर्जा — उस्ताद, क्या माल है, सच कहना?

लाला — इस पादरी के तो कोई लड़का-बाला नहीं था।

मुंशी — वह था या नहीं था, मगर सच कहना, कैसी खूबसूरत है!

नमाज के बाद जब पादरी साहब घर पहुँचे तो सुरैया से बोले — बेटी, हमने तुम्हारा नाम मिस पालेन रखा है। अब तुम अंगरेजी पढ़ना शुरू करो।

सुरैया — हमें किसी चीज के सीखने की आरजू नहीं है। बस, यही जी चाहता है कि जान निकल जाय। किसका पढ़ना और कैसा लिखना। आज से हम गिरजाघर न जायँगे।

पादरी — यह न कहो बेटी! खुदा के घर मे जाना अपनी आकबत बनाना है। यह खुदा का हुक्म है।

सुरैया — अगर आप मुझे अपनी बेटी समझते हैं तो मैं भी आपको अपना बाप समझती हूँ, मगर मैं साफ-साफ कहे देती हूँ कि मैं ईसाई मजहब न कबूल करूँगी।

रात को जब सुरैया बेगम सोई, तो आज़ाद की याद आई और यहाँ तक रोई कि हिचकियाँ बँध गईं।

पादरी साहब चाहते थे कि यह लड़की किसी तरह ईसाई मजहब अख्तियार कर ले, मगर सुरैया बेगम ने एक न सुनी। एक दिन वह बैठी कोई किताब पढ़ रही थी कि जानसन नाम का एक अंगरेज आया और पूछने लगा — पादरी साहब कहाँ हैं?

सुरैया — मैं अंगरेजी नहीं समझती।

जानसन — (उर्दू में) पादरी साहब कहाँ हैं?

सुरैया — कहीं गए हैं।

जानसन — मैंने कभी तुमको यहाँ नहीं देखा था।

सुरैया — जी हाँ, मैं यहाँ नहीं थी।

जानसन — यह कौन-सी किताब है?

सुरैया — सेनेका की नसीहतें हैं! पादरी साहब मुझे यह किताब पढ़ाते हैं।

जानसन — मालूम होता है, पादरी साहब तुम्हें भी 'नन' बनाना चाहते हैं।

सुरैया — नन किसे कहते हैं?

जानसन — नन उन औरतों को कहते हैं जो जिंदगी भर क्वाँरी रह कर मसीह की खिदमत करती हैं। उनका सिर मुँड़ा दिया

जाता है और आदमियों से अलग एक मकान में रख दी जाती हैं।

सुरैया — यह तो बड़ी अच्छी बात है। मैं भी चाहती हूँ कि उन्हीं में शामिल हो जाऊँ और तमाम उम्र शादी न करूँ।

जानसन ने यह बातें सुनीं तो और ज्यादा बैठना फुजूल समझा। हाथ मिला कर चला गया।

सुरैया बेगम यहाँ आ तो फँसी थीं, मगर भाग निकलने का मौका ढूँढ़ती थीं। इस तरह तीन महीने गुजर गए।

90

नेपाल की तराई में रियासत खैरीगढ़ के पास एक लक व दक जंगल है। वहाँ कई शिकारी शेर का शिकार करने के लिए आए हुए हैं। एक हाथी पर दो नौजवान बैठे हुए हैं। एक का सिन बीस-बाईस बरस का है, दूसरे का मुश्किल से अट्ठारह का। एक का नाम है वजाहत अली, दूसरे का माशूक हुसैन। वजाहत अली दोहरे बदन का मजबूत आदमी है। माशूक हुसैन दुबला-पतला छरहरा आदमी है। उसकी शक्ल-सूरत और चाल-ढाल से ऐसा

मालूम होता है कि अगर इसे जनाने कपड़े पहना दिए जायँ, तो बिलकुल औरत मालूम हो। पीछे-पीछे छह हाथी और आते थे। जंगल में पहुँच कर लोगों ने हाथी रोक लिए ताकि शेर का हाल दरियाफ्त कर लिया जाय कि कहाँ है। माशूक हुसैन ने काँप कर कहा — क्या शेर का शिकार होगा? हमारे तो होश उड़ गए। अल्लाह के लिए हमें बचाओ। मेरी तो शेर के नाम से ही जान निकल जाती है। तुमने तो कहा था हिरनी और पाढ़े का शिकार खेलने चलते हैं।

वजाहत अली — वाह इसी प कहती थीं कि हम बन-बन फिरे हैं। भूत-प्रेत से नहीं डरते। अब क्या हो गया कि जरा सा शेर का नाम सुना और काँप उठीं!

माशूक हुसैन — शेर जरा सा होता है! ऐ, वह इस हाथी का कान पकड़ ले तो चिंघाड़ कर बैठ जाय। निगोड़ा हाथी बस देखने ही भर को होता है। इसके बदन में खून कहाँ। बस, पानी ही पानी है।

वजाहत अली — अव्वल तो शेर का शिकार नहीं है, और अगर शेर आया भी तो हम उसका मुकाबिला कर सकेंगे। अट्ठारह-अट्ठारह निशानेबाज साथ हैं। इनमें दो तीन आदमी तो ऐसे बढ़े हुए हैं कि रात के वक़्त आवाज पर तीर लगाते हैं। क्या मजाल

कि निशाना खाली जाय। तुम घबराओ नहीं, ऐसा लुत्फ आएगा कि सारी उम्र याद करोगी।

माशूक हुसैन — तुम्हें कसम है, हमें यहाँ से कहीं भेज दो। अल्लाह! कब यहाँ से छुटकारा होगा। ऐसी बुरी फँसी कि कुछ कहा नहीं जाता।

नवाब साहब ने मुसकरा कर पूछा — किससे?

माशूक हुसैन — ऐ, हटो भी! तुम्हें दिल्लगी सूझी है और हम क्या सोच रहे हैं। शेर ऐसा जानवर, एक थप्पड़ में देव को सुला दे। आदमी जरी सा भुनगा, चले हैं शेर के शिकार को! हाथी रोक लो, नहीं अल्लाह जानता है, हम हाथी पर से कूद पड़ेंगे। बला से जान जाय या रहे।

नवाब — हैं-हैं। जान तुम्हारे दुश्मनों की जाय। आखिर इतने आदमियों को अपनी जान प्यारी है या नहीं? कोई और भी चूँ करता है?

माशूक — इतने आदमी जायँ चूल्हें में। इन मुओं को जान भारी हुई है। यह घर से लड़ कर आए हैं। जोरू ने जूतियाँ मार-मार कर निकाल दिया है। इनकी और मेरी कौन सी बराबरी। हमें उतार दो, हम अब जायँगे।

नवाब — जरा ठहरो तो, मैं बंदोबस्त किए देता हूँ। किसी बड़े दरख्त पर एक मचान बाँध देंगे। बस वहीं से बैठ के देखना

माशूक — वाह, जरी सा मचान और जंगल का वास्ता। अकेली डर न जाऊँगी? हाँ, तुम भी बैठो तो अलबत्ता!

नवाब — यह तो बड़े शर्म की बात है कि हम मर्द हो कर मचान पर बैठें और लोग शिकार खेलें।

माशूक — इन लोगों से कह दो कि हमारे दोस्त की यही राय है। डर किस बात का है? साफ-साफ कह दो कि यह औरत हैं और हमारा इनके साथ निकाह होने वाला है।

नवाब — यह नहीं हो सकता। यह मशहूर करना कि एक कमसिन औरत को मर्दाना कपड़े पहना कर यहाँ लाए हैं, मुनासिब नहीं। इतने में आदमियों ने आकर कहा — हुजूर, सामने एक कछार है। उसमें एक शेरनी बच्चों के पास बैठी है। इसी दम हाथी को पेल दीजिए।

इतना सुनना था कि नवाब साहब ने खिदमतगार को हुक्म दिया — इनको एक शाली रूमाल और पचास अशर्फियाँ आज ही देना। हाथी के लिए पेल का लफ्ज खूब लाए! सुभान-अल्लाह।

इस पर मुसाहबों ने नवाब साहब की तारीफों के पुल बाँध दिए।

एक — सुभान-अल्लाह, वाह मेरे शाहज़ादे। क्यों न हो।

दूसरा — खुदा आपको एक हजार बरस की उम्र दे। हातिम का नाम मिटा दिया। रियासत इसे कहते हैं।

नवाब — अच्छा, अब सब तैयार हो और कछार की तरफ हाथी ले चलें।

माशूक — अरे लोगों, यह क्या अंधेर हैं। आखिर इतनों में किसी के जोरू जाँत भी है या सब निहंग-लाडले, बेफिकरे, उठाऊ-चूल्हे ही जमा हैं। खुदा के लिए इनको समझाओ। इतनी सी जान, गोली लगी और आदमी टें से रह गया। आदमी में है क्या! अल्लाह करे, शेर न मिले। मुई बिल्ली से तो डर लगता है। शेर की सूरत क्योंकर देखूँगी। भला इतना बताओ कि बँधा होगा या खुला? तमाशे में हमने शेर देखे थे, मगर सब कठघरों में बन्द थे।

एकाएक दो पासियों ने आकर कहा कि शेरनी कछार से चली गई! नवाब साहब ने वहीं डेरा डाल दिया और माशूक हुसैन के साथ अन्दर आ बैठे।

नवाब — यह बात भी याद रहेगी कि एक बेगम साहब बहादुरी के साथ शेर का शिकार खेलने को गईं?

माशूक — ऐ वाह! जो शरीफ़ज़ादी सुनेगी, अपने दिल में यही कहेगी कि शरीफ की लड़की और इतनी ढीठ। भलेमानस की बहू-बेटी वह है कि जंगल के कुत्ते का नाम सुनते ही बदन के रोएँ खड़े हो जायँ। अकेले कमरे में बिल्ली आए तो थरथर काँपने लगे। ख्वाब में भी रस्सी देखे तो चौंक पड़े। अच्छी पट्टी पढ़ाते हो !

दूसरे दिन नवाब साहब ने शिकारी लिबास पहना। खेमे से निकले। माशूक हुसैन भी पीछे से निकले मगर इस वक़्त बेगमों की पोशाक में थे और बेगम भी कौन? वही सुरैया, जो मिस पालेन बनी हुई पादरी साहब के साथ रही थी। ऐसा मालूम हुआ, कोई परी पर खोले चली आती है। नवाब साहब ने कहा —

आगाजे इश्क ही में हमें मौत आ गई,
आगाह भी न हाल से वह बेखबर हुआ।

सुरैया बेगम ने तिनक के कहा — बस, यह मनहूस बातें हमें एक आँख नहीं भातीं। मरने-जीने का कौन जिक्र है?

नवाब — सुनिए हुजूर! जो आप आँखें दिखलाएँगी तो हम भी बिगड़ जाएँगे। इतना याद रखिए।

सुरैया — खुदा के लिए जरा हया से काम लो। इन सबके सामने हमें रुसवा न करो। वह शरीफ़ज़ादी क्या, जो शर्म से मुँह मोड़े। इतने आदमी खड़े हैं और तुमको कुछ ख्याल ही नहीं।

खुदा का कहर, बुतो का एताब रहता है,
इस एक जान प' क्या-क्या अजाब रहता है।

सुरैया — बस, हम न जायँगे। चाहे इधर की दुनिया उधर हो जाय।

नवाब साहब ने कदमों पर टोपी रख दी, और कहा — मार डालो, मगर साथ चलो; वरना घुट-घुट के जान जायगी।

बारे खुदा-खुदा करके बेगम साहब उठीं। इतने में चौकीदार ने आकर कहा — खुदावंद, दो शेर जंगल में दिखाई दिए हैं। अब भी मौका है, वरना शेरनी की तरह वह भी भाग जाएँगे और फिर शिकार न मिलेगा।

बेगम — आदमी कैसे मुए जान के दुश्मन हैं!

नवाब साहब ने हुक्म दिया कि हाथी को बैठाओ। पीलबान ने 'बरी-बरी' कह कर हाथी को बैठाया। तब जीना लगाया गया। बेगम साहब ने जीने पर कदम रखा, मगर झिझक कर उतर गईं।

नवाब — पहली बार तो बेझिझक बैठ गई थीं, अबकी डरती हो।

बेगम — ऐ लो, उस बार कहा था कि मुर्गाबी का शिकार होगा।

नवाब — शेर का शिकार आसान है, मुर्गाबी का शिकार मुश्किल है।

बेगम — चलिए, रहने दीजिए। हमने कच्ची गोलियाँ नहीं खेली हैं। यहाँ रूह काँप रही है कि या खुदा, क्या होगा?

नवाब — होगा क्या? कुछ भी नहीं।

आखिर बेगम साहब भी बैठीं। नवाब साहब भी बैठे। हवाली-मवाली भी दूसरे हाथियों पर बैठे और हाथी झूमते हुए चले। थोड़ी देर के बाद लोग एक झील के पास पहुँचे। शिकारी ने कहा — झील में पानी कम है, हाथी निकल जाएँगे।

बेगम — क्या कहा! क्या इस समुंदर में से जाना होगा?

नवाब — अभी दम के दम में निकले जाते हैं।

बेगम — कहीं निकले न? हमें यहाँ डुबोने लाए हो? जरी हाथी का पाँव फिसला और चलिए, पानी के अन्दर गोते खाने लगे।

नवाब साहब ने बहुत समझाया, तब बेगम साहब अपने हाथी को झील के अन्दर डालने राजी हुई, मगर आँखें बन्द कर लीं और गुल मचाया कि जल्दी निकल चलो। पाँच हाथी तो साथ-साथ

चले, दो पीछे थे। नवाब साहब ने कहा — अब आँखें खोल दो, आधी दूर चले आए हैं, आधी दूर और बाकी है। बेगम ने आँखें खोलीं तो झील की कैफियत देख कर खिल उठीं। किनारों पर ऊँचे-ऊँचे दरख्त झूम रहे थे। कोई झील के पानी को चूमता था, किसी की शाखें झील की तरफ झुकी थीं। बेगम ने कहा — अब हमें डर नहीं मालूम होता। मगर अल्लाह करे, कोई शेर आज न मिले।

नवाब — खुदा न करे।

बेगम — वाह! आ जाय क्या मजाल है। हम मंतर पढ़ देंगे।

नवाब — भला आप इतनी हुई तो!

बेगम — अजी, मैं तुम सबको बनाती हूँ, डर कैसा! मगर कहीं शेर सचमुच निकल आए, तो गजब ही हो जाय। सुनते ही रोएँ खड़े होते हैं।

इस झील के उस पार कछार था और कछार में एक शेरनी अपने बच्चों को लिए बैठी थी। खेमे के आदमियों ने कहा — हुजूर, अब हाथी रोक लिए जाँय। सुरैया बेगम काँप उठीं। हाय! क्या हुआ। यह शेरनी कहाँ से निकल आई। या तो उसको कजा लाई है या हमको।

नवाब साहब ने हुक्म दिया, खेदा किया जाय। तीस आदमी बड़े-बड़े कुत्ते ले कर कछार की तरफ दौड़े। सुरैया बेगम बहुत सहमी हुई थीं। फिर भी शिकार में एक किस्म का लुत्फ भी आता था। एकाएक दूर से रोशनी दिखाई दी। बेगम ने पूछा — वह रोशनी कैसी है? नवाब बोले — शेरनी निकली होगी और शायद हमला किया हो। इसीलिए रोशनी की गई कि डर से भाग जाय।

शेरनी ने जब आदमियों की आवाज सुनी, तो घबराई। बच्चों को एक ऐसी जगह ले गई जहाँ आदमी का गुजर मुहाल था। खेदे के लोग समझे कि शेरनी भाग गई। सुरैया बेगम यह खबर सुन कर खिलखिला कर हँस पड़ीं। लो, अब खेलो शिकार, बड़े वह बन कर चले थे! हमारी दुआ और कबूल न हो?

नवाब — आज बे-शिकार किए न जायँगे। लो, कसम खाई।

नवाब साहब रईस तो थे ही, कसम खा बैठे। एक मुसाहब ने कहा — हुजूर, मुमकिन है कि शेर आज न मिले। कसम खाना ठीक नहीं।

नवाब — हम हरगिज खाना न खाएँगे जब तक शेर का शिकार न करेंगे। इसमें चाहे रात हो जाय, शेर का जंगल में न मिलना कैसा?

बेगम — खुदा तुम्हारी बात रख ले।

मुसाहब — जैसी हुजूर की मर्जी।

बेगम — खुदा के लिए अब भी चले चलो। क्या तुम पर कोई जिन सवार है या किसी ने जादू कर दिया है। अब दिन कितना बाकी है?

नवाब — दिन कितना ही हो, हम शिकार जरूर करेंगे!

बेगम — तुम्हें बाएँ हाथ का खाना हराम है जो शेर का शिकार खेले बगैर जाओ।

नवाब — मंजूर! जब तक शेर का शिकार न करेंगे, खाना न खाएँगे।

बेगम — बात तो यही है, खुदा तुम्हारी बात रख ले। ओ लोगो, कोई इनको समझाओ, यह किसी का कहना नहीं मानते, कोई सलाह देने वाला भी है या नहीं?

एक मुसाहब — हुजूर ने तो कसम खा ली, लेकिन साथ के सब आदमी भूखे-प्यासे हैं, उनके हाल पर रहम कीजिए, वरना सब हलकान हो जायँगे।

नवाब — हमको किसी का गम नहीं है, कुछ परवा नहीं है। अगर आप लोग हमारे साथी हैं तो हमारा हुक्म मानिए।

बेगम — शाम होने आई, और शिकार का पता नहीं, फिर अब यहाँ ठहरना बेवकूफी है या और कुछ?

बरकत — हुजूर ही के सब काँटे बोए हैं।

इतने में खेदेवालों ने कहा — खुदावंद, अब होशियार रहिए। शेरनी आती है। अब देर नहीं है। कछार छोड़ कर पूरब की तरफ भागी थी। हम लोगों को देख कर इस जोर से गरजी कि होश उड़ गए, अट्ठाईस आदमी साथ थे, अट्ठाईसों भाग गए। उस वक़्त कदम जमाना मुहाल था। शेर का कायदा है कि जब गोली लगती है तो आग हो जाता है। फिर गोली के बाप की नहीं मानता। अगर बम का गोला भी हो तो वह इस तरह आएगा जैसे तोप का गोला आता है। और शेरनी का कायदा है कि अगर अपने बच्चों के पास हो और सारी दुनिया के गोले कोई ले कर आए तो भी मुमकिन नहीं कि उसके बच्चों पर आँच आ सके।

बेगम — बँधी है या खुली हुई है? तमाशेवाले शेरों की तरह कठघरे में बन्द है न?

मुसाहब — हाँ-हाँ, साहब, बँधी हुई है।

बेगम — भला उसको बाँधा किसने होगा?

अब एक दिल्लगी सुनिए। एक हाथी पर दो बंगाली थे। उन्होंने इतना ही सुना था कि नवाब साहब शिकार के लिए जाते हैं। अगर यह मालूम होता कि शेर के शिकार को जाते हैं तो करोड़ बरस न आते। समझे थे कि झीलों में चिड़ियों का शिकार होगा। जब यहाँ आए और सुना कि शेर का शिकार है तो जान निकल गई। एक का नाम कालीचरण घोष, दूसरे का शिवदेव बोस था। इन दोनों में यों बातें होने लगी।

बोस — नवाब हमको बड़ा धोखा दिया, हम नहीं जानता था कि यह लोग हमारा दुश्मन है।

घोष — हम इनसे समझेगा। ओ शाला फील का बान, हमारे को कीधर ले जाएगा?

फीलबान ने हाथी को और भी तेज किया तो यह दोनों साहब चिल्लाए।

बोस — ओ शाला!

घोष — ओ शाला फील का बान, अच्छा हम साहब के यहाँ तुम्हारा नालिश करेगा। अरे बाबा, हम लोग जाने नहीं माँगता। शेर शाला का मुकाबिला कौन करने सकता?

फीलबान — बाबू जी, डरो नहीं। अभी तो शेर दूर है। जब हौदा पकड़ लेगा तब दिल्लगी होगी, अभी शाला-शाला कहते जाओ।

बोस — अरे भाई, तुम हमारे का बाप, हमारे का बाप का बाप, हम हाथी को फेरने माँगता। ओ शाला, तुम आरामजादा।

फीलबान — अच्छा बाबू, देते जाओ गालियाँ। खुदा की कसम, शेर के मुँह में हाथी न ले जाऊँ तो पाजी।

बोस — बाप रे बाप, हमारे को बचाओ, हम रिश्वत देगा। हमारा बाप है, माँ है, सब तुम है।

जितने आदमी साथ थे, सब हँस रहे थे। इन दोनों की घबराहट देखने काबिल थी। कभी फीलबान के हाथ जोड़ते, कभी टोपी उतार कर खुदा से दुआ माँगते थे, कभी जंगल की तरफ देख कर कहते थे — बाबा, हमारा जान लेने को हम यहाँ आया। हमारा मौत हमको यहाँ लाया। अरे बाबा, हम लोग लिखने-पढ़ने में अच्छा होता है। हम लोग बिलायत जा कर अंगरेजी सीखता है। हम कभी शेर का शिकार नहीं करता, हमारा अपना जान से बैर नहीं है। ओ फील का बान, हम खबर के कागज में तुम्हारा तारिप छापेगा।

फीलबान — आप अपनी तारीफ रहने दें।

घोष — नहीं, तुम्हारा नाम हो जायगा। बड़ा-बड़ा लोग तुम्हार नाम पढ़ेगा तो बोलेगा, यह फील का बान बड़ा होशियार है, तुम पचास-साठ का नौकर हो जायगा। हम तुमको नौकर रखा देगा।

फीलबान — पचार-साठ! इतने रुपए मैं रखूँगा कहाँ? अच्छा दूसरी शादी कर लूँगा, मगर तारीफ किस बात की लिखिएगा। जरा हाथी दौड़ाऊँ?

बोस — तुम बड़ा नटखट है। ओ शाला, तुम फिर दौड़ाया?

जब झील के करीब पहुँचे, तो दोनों बंगाली और भी डरे। घोष ने पूछा — ओ फील का बान, इस झील में कित्ता गहरा?

फीलबान ने कहा — हाथी डुबाव है?

घोष — और इस झील के अन्दर से हम लोग को जाने होगा भी।

फीलबान — जी हाँ, इसी में से जाने होगा भी।

घोष — और जो हाथी का पाँव फिसल गई तो हम लो का क्या...।

फीलबान — अगर हाथी का पाँव फिसल गई तो तुम लोग का टाँग और नाक टूट जाएगा, बस और कुछ न होगा, और मुँह बिगड़ जायगी तुम लोग की।

घोष — और तुम शाला कहाँ से बचने सकेगा?

फीलबान — हम उम्र भर हाथी पर चढ़ा किए हैं। हाथी फिसले तो डर नहीं और वह जाय तो खौफ नहीं।

घोष — बाबा, तुम्हारी हाथी पानी से डरती है या नहीं? हमसे शाच-शाच कह दो।

फीलबान — तुम इतना डरता था तो आया क्यों!

घोष — अरे बाबा, गोली लगने से तो सब कोई डरता है? जान फेरके आने सकेगा नहीं।

फीलबान ने हाथी को झील में डाला, तो इन दोनों ने वह चिल्ल-पों मचाई कि कुछ न पूछो। एक बोला — हम डूब गया, तो हमारा जागीर किसके पास जायगा!

फीलबान मुसकरा कर बोला — वहीं से सब लिख के भेज दीजिएगा।

घोष — ओ शाला, तू हमारा जान लेगा! तुम जान लेगा शाला!

फीलबान — बाबू, गोल-माल न करो, खुदा को याद करो।

घोष — गोल-माल तुम करता है कि हम करता है?

बोस — हाथी हिलेगी तो हम तुमको ढकेल देगा, तुम मर जायगा!

घोष — अरे बाबा, घूस ले-ले, हम बहुत से रुपए देने सकता।

फीलबान — अच्छा, एक हजार रुपया दीजिए तो हम हाथी को फेर दें। भले आदमी, इतना नहीं सोचते कि पाँच हाथी तो उस पार निकल गए और एक हाथी पीछे आ रहा है। किसी का बाल बाँका नहीं हुआ तो क्या आप ही डूब जायँगे! क्या जान आप ही की प्यारी है?

घोष — अरे बाबा, तुम बात न करे। तुम हाथी का ध्यान करे, जो पाँव फिसलेगी तो बड़ी गजब हो जायगा।

फीलबान — अजी, न पाँव फिसलेगी, न बड़ी गजब होगा। बस चुपचाप बैठे रहिए। बोलिए चालिए नहीं।

घोष — किस माफिक नहीं बोलेगा, जरूर करके बोलेगा, ओ शाला! तुम्हारा बाप आज ही मर जाय।

फीलबान — हमारा बाप तो कब का मर चुका, अब तुम्हारी नानी मरने की बारी है।

फीलबान ने मारे शरारत के हाथी को दो-तीन बार अंकुश लगाया, तो दोनों आदमी समझे कि बस, अब जान गई। आपस में बातें करने लगे -

घोष — आमी दुई जानी डूबी जावो।

बोस — ई, हाथीवाला बड़ो बोरू।

घोष — जोनी आए बची आज, तेखे दली कोरा आम आर शिकार खेलने जाबेना।

बोस — तुमी अमाए जाबरदस्ती नीए एछो।

घोष — आमारा प्रान भवाए आचे।

घोष — हाथी रोक ले ओ शाला!

फीलबान — बाबू जी, अब हाथी हमारे मान का नहीं। अब इसका पाँव फिसला चाहता है, जरा सँभले रहिएगा।

नवाब साहब ने दोनों आदमियों का रोना-चीखना सुना तो महावत से बोले- खबरदार जो इनको डराएगा तो तू जानेगा।

घोष — नवाब शाब, हमारा मदद करो, अब हम जाता है बैकुंठ।

महावत ने आहिस्ता से कहा — बैकुंठ जा चुके, नरक में जाओगे।

इस पर घोष बाबू बहुत बिगड़े और गालियाँ देने लगे। तुम शाला को पानी के बाहर जाके हम मार डालेगा।

महावत ने कहा — जब पानी के बाहर जा सको न।

घोष — नवाब शाब, यह शाला हमारे को गाली देता।

नवाब — गाली कैसी बाबू, आप इतना घबराते क्यों हैं?

घोष — हमारे को यह शाला गाली देते हैं।

नवाब — क्यों बे, खबरदार जो गाली-गलौज की।

फीलबान — हुजूर, मैं ऐसी सवारी से दरगुजरा, इनको चारों तरफ मौत ही मौत नजर आती है। इन्हें आप शिकार में क्यों लाए?

बोस — अरे शाले का शाला, तुम बात करेगा, या हाथी को देखेगा? अरे बाबा, अब हम ऐसी सवारी पर न आएगा।

बारे हाथी उस पार पहुँचा, तो इन दोनों की जान में जान आई। बोस बाबू बोले — नवाब शाब, हम इसी का साथ बड़ा तकलीफ पाया। यह महावत हमारा उस जन्म का बैरी है बाबा, हम ऐसा शिकार नहीं खेलना चाहता, अब हम हाथी पर से उतर जायगा।

नवाब साहब ने फीलबान को हुक्म दिया कि हाथी को बैठाओ और बाबू लोगों से कहा — अगर आप लोगों को तकलीफ होती है तो उतर जाइए। इस पर घोष और बोस दोनों सिर पीटने लगे — अरे बाबा, इस जंगल के बीच में तुम हमको छोड़के भागना माँगता। हम जायगा कहाँ? इधर जंगल, उधर जंगल। हमारे को घर पहुँचा दो।

नवाब साहब ने कहा — अगर एक हाथी को अकेला भेज दूँ तो शायद शेर या सुअर या कोई अन्य जानवर हमला कर बैठे, हाथी जख्मी हो जाय और महावत की जान पर आ बने। आप लोग गोली चलाने से रहे, फिर क्या हो?

घोष — आपको अपना हाथी प्यारा, फील का बान प्यारा, हमारा जान प्यारा नहीं। फील का बान सात-आठ रुपए का नौकर, हमर लोग हेडक्लर्की करता और क्या बात करेगा। हम जान नहीं रखता, वह जान रखता है?

नवाब — अच्छा, फिर बैठे रहो, मगर डरो नहीं।

घोष — अच्छा अब हम न बोलेगा।

बोस — कैसे न बोलेगा, तुम न बोलेगा? तुम न बोलेगा तो हम बोलेगा।

घोष — तुम शाला सुअर है। तुम क्या बोलेगा? बोलेगा तो हम तुमको कतल कर डालेगा। शाला हमारे को फाँस के लाया और अब जान लेना माँगता है।

बोस — (धोती सँभाल कर) तुम दुष्ट चुप रहो। तुम नीच कोम है।

घोष — बोलेगा तो हम हलाल करेगा।

बोस — (दाँत दिखा कर) हम तुमको दाँत काट लेगा।

घोष — अरे तुम बोके जाय शाला बोदजात, दुष्ट।

बोस — तुम नीच कोम, छोटा को, भीख माँगनेवाला सुअर।

दोनों में खूब तकरार हुई। कभी घोष ने घूँसा ताना, कभी बोस ने पैंतरा बदला; मगर दोनों में कोई वार न करता था। दोनों कुंदे तोल-तोल कर रह जाते थे। नवाब साहब ने यह हाल देखा तो चाहा कि दोनों को अलग-अलग हाथियों पर बिठाएँ, मगर घोष ने मंजूर न किया, बोले — यह हमारा देश का, हम इसका देश का, और कोई हमारा देश का नहीं।

इतने में आदमियों ने ललकार कर कहा — खबरदार, शेरनी निकली जाती है। हुक्म हुआ है कि हाथी इस तरफ बढ़ाओ। सब हाथी बढ़ाए गए। एक दरख्त की आड़ में शेरनी दो बच्चे लिए हुए दबकी खड़ी थी। नवाब साहब ने फौरन गोली सर की, वह खाली गई। नवाब साहब ने फिर बंदूक सर की, अब की गोली शेरनी के कल्ले पर जा पड़ी। गोली खाना था कि वह झल्ला कर पलट पड़ी और तोप के गोले की तरह झपटी। आते ही उसने एक हाथी को थप्पड़ लगाया तो वह चिंघाड़ कर भागा। नवाब साहब ने फिर बंदूक चलाई, मगर निशाना खाली गया। शेरनी ने उसी हाथी को जिसे थप्पड़ मारा था, कान पकड़ कर

बैठा दिया। बारे चौथा निशाना ऐसा पड़ा कि शेरनी तड़प कर गिर पड़ी।

इधर तो यह कैफियत हो रही थी, उधर बंगाली बाबू दोनों हौदे के अन्दर औंधे पड़े थे। आँखें दोनों हाथें से बन्द कर ली थी। बेगम साहब ने उन्हें हौदे में बैठे न देखा तो पूछा — क्या वह दोनों बाबू भाग गए?

फीलबान — नहीं खुदावंद, मैं हाथी बढ़ाए लाता हूँ।

हाथी करीब आया तो नवाब साहब दोनों बंगालियों को देख कर इतना हँसे कि पेट में बल पड़-पड़ गए।

नवाब — अब उठोगे भी या सोते ही रहोगे? बाबू जी तो बोलते ही नहीं।

बेगम — क्या अच्छे आदमी थे बेचारे!

नवाब — मगर चल बसे। अभी बातें कर रहे थे।

बेगम — अब कुछ कफन-दफन की फिक्र करोगे या नहीं।

फीलबान ने कंधा पकड़ कर हिलाया तो बोस बाबू उठे। उठते ही शेरनी की लाश देखी, तो काँप कर बोले — नवाब शाब, शाच-शाच बोलो कि यह मिट्टी का शेर है या ठीक-ठीक शेर है? हम समझ गया कि मिट्टी का है।

नवाब — आप तो हैं पागल।

घोष — आप लोग जान को कुछ नहीं समझता?

बोस — ये लोग गँवार हैं। हम लोग एम.ए.,बी.ए. पास करता है। हम लोग बहुत सा बात ऐसा करता है कि आप लोग नहीं करने सकता।

नवाब — अच्छा, अब हाथी से तो उतरो।

फीलबान — बाबू साहब, शेरनी तो मर गई; अब क्या डर है।

दोनों बाबुओं ने हाथी से उतर कर शेरनी की तरफ देखना शुरू किया, मगर आगे कोई नहीं बढ़ता।

बोस — आगे बढ़ो महाशाई।

घोष — तुम्हीं बढ़ो, तुम बड़ा मर्द है तो तुम बढ़े।

नवाब — बढ़ना नहीं। खबरदार, बढ़े और शेर खा गया।

घोष — बाबा, अब चाहे जान जाता रहे, पर हम उसके पास जरूर करके जायगा।

यह कह कर आप आगे बढ़े, मगर फिर उलटे पाँव भागे और पीछे फिर कर भी न देखा।

जब रात को सब लो खा-पी कर लेटे, तो नवाब साहब ने दोनों बंगालियों को बुलाया और बोले — खुदा ने आप दोनों साहबों को बहुत बचाया, वरना शेरनी खा जाती।

बोस — हम डरता नहीं था, हम शाला ईश फील का बान को मारना चाहता था कि हम ईश देश का आदमी नहीं है। इस माफिक हमारे को डराने सकता और हाथी को बोदजाती से हिलाने माँगें। जब तो हम लोग बड़ा गुस्सा हुआ कि अरे सब लोग का हाथी हिलने नहीं माँगता, तुम क्यों हिलने माँगता है। और हमसे बोला कि बाबू शाब, अब तो मरेगा। हाथी का पाँव फिसलेगी और तुम मर जायँगे। हम बोला — अरे, जो हाथी की पाँव फिसल जायगी तो तुम शाले का शाला कहाँ बच जायगा? तुम भी तो हमारा एक साथ मरेगा।

नवाब — अच्छा, जो कुछ हुआ सो हुआ। अब यह बतलाइए कि कल शिकार खेलने जाइएगा या नहीं?

बोस — जायगा जो जरूर करके, मगर फील का बान बोदजाती करेगा, तो हम आपका बुराई छपवा देगा। हमारे हाथी पर बेगम शाब बैठे तो हम चला जायगा।

सुरैया — बेगम साहब तो तुझ ऐसों को अपना साया तक न छूने दें। पहले मुँह तो बनवा!

बोस — अब हमारे को डर पास नहीं आते, हम खूब समझ गया कि जान जानेवाला नहीं है।

नवाब — अच्छा जाइए, कल आइएगा।

जब नवाब और सुरैया बेगम अकेले रह गए तो नवाब ने कहा — देखो सुरैया बेगम, इस जिंदगी का कोई भरोसा नहीं। अभी कल की बात है कि शाहज़ादा हुमायूँफर के निकाह की तैयारियाँ हो रही थीं और आज उनकी कब्र बन रही है। इसलिए इनसान को चाहिए कि जिंदगी के दिन हँसी-खुशी से काट दे। यहाँ तो सिर्फ यही ख्वाहिश है कि हम हों और तुम हो। मुझे किसी से मतलब न सरोकार। अगर तुम साथ रहो तो खुदा गवाह है, बादशाही की हकीकत न समझूँ। अगर यकीन न आए तो आजमा लो।

बेगम — आप साफ-साफ अपना मंशा बतलाइए। मैं आपकी बात कुछ नहीं समझी।

नवाब — साफ-साफ कहते हुए डर मालूम होता है।

बेगम — नहीं, यह क्या बात है, आप कहें तो।

नवाब — (दबी जबान से) निकाह!

बेगम — सुनिए, मुझे निकाह में कोई उज्र नहीं। आप अव्वल तो कमसिन, दूसरे रईसजादे, तीसरे खूबसूरत, फिर मुझे निकाह में क्या उज्र हो सकता है। लेकिन रफ्ता-रफ्ता अर्ज करूँगी कि किस सबब से मुझे मंजूर नहीं।

नवाब — हाय-हाय! तुमने यह क्या सितम ढाया?

बेगम — मैं मजबूर हूँ, इसकी वजह फिर बयान करूँगी?

नवाब — अगर मंजूर नहीं तो हमें कत्ल कर डालो। बस छुट्टी हुई। अब जिंदगी और मौत तुम्हारे हाथ है।

दूसरे दिन नवाब साहब सो ही रहे थे कि खिदमतगार ने आकर कहा — हुजूर, और सब लोग बड़ी देर से तैयार हैं, देर हो रही है।

नवाब साहब ने शिकारी लिबास पहना और सुरैया बेगम के साथ हाथी पर सवार हो कर चले।

बेगम — वह बाबू आज कहाँ हैं? मारे डर के न आते होंगे!

बोस — हम तो आज शुबु से ही साथ-साथ हैगा। अब हमारे को कुछ खोफ लगती नहीं।

बेगम — बाबू, तुम्हारे को हाथी तो नहीं हिलती?

घोष — ना, आज हाथी नहीं हिलती। कल का बात कल के साथ गया।

हाथी चले। थोड़ी दूर जाने पर लोगों ने इत्तला दी कि शेर यहाँ से आध मील पर है और बहुत बड़ा शेर है। नवाब साहब ने खुश हो कर कहा — हाथियों को दौड़ा दो। बाबुओं के फीलबान ने जो हाथी तेज किया, तो बोस बाबू मुँह के बल जमीन पर आ रहे।

घोष — अरे शाला, जमीन पर गिरा दिया!

फीलबान — चुप-चुप, गुल न मचाइए, मैं हाथी रोके लेता हूँ।

घोष — गुल न मचाएँ तो फिर क्या मचाएँ?

फीलबान — वह देखिए, बाबू साहब उठ बैठे, चोट नहीं आई।

घोष — महाशाई, लागे ने तो?

बोस — बड़ी बोद लोग।

घोष — अपना समाचार बोलो।

बोस — अपना समाचार की बोलबो बाबा!

मिस्टर बोस झाड़-पोंछ कर उठे और महावत को हजारों गालियाँ दीं।

बोस — महाशाई, तुम ईश को मारो, मारो ईश दुष्ट को।

घोष — ओ शाला, तुम्हारा शिर पर बाल नहीं, हम पट्टे पकड़ कर तुमको मार डालने माँगता।

फीलबान हँस दिया। इस पर बोस आगे हो गए, और कई ढेले चलाए, मगर कोई ढेला फीलबान तक न पहुँच सका। फीलबान ने कहा — हुजूर, अब हाथी पर बैठ लें तो हम नवाब साहब के हाथियों से मिला दें। बोस बोले — हम डरपोक आदमी नहीं है। हम महाराजा बड़ौदा के यहाँ किसिम-किसिम का जानवर देख चुका है।

घोष — अब बातें कब तक करेगा। आ के बैठ जा।

फीलबान — हुजूर, कुरान की कसम खा कर कहता हूँ, मेरा कुसूर नहीं। आप कभी हाथी पर सवार तो हुए नहीं। हौदे पर लटक कर बैठे हुए थे। हाथी जो हिला तो आप भद से गिर पड़े।

बोस — हमारा दिल में आई कि तुम्हारा कान नोच डाले। हम कभी हाथी पर नहीं चढ़ा? तुम बोलता है। तुम्हारा बाप के सामने हम हाथी पर चढ़ा था। तुम क्या जानेगा।

जब शेर थोड़ी दूर पर रह गया और नवाब साहब ने देखा कि बाबूवाला हाथी नहीं है तो डरे कि न जाने उन बेचारों की क्या

हालत होगी। हुक्म दिया कि सब हाथी रोक लिए जायँ और धरतीधमक को दौड़ा कर ले जाओ। देखो, उन बेचारों पर क्या तबाही आई!

धरतीधमक रवाना हुआ और कोई दस-बारह मिनट में बाबू साहबों का हाथी दूर से नजर आया। जब हाथी करीब आया तो नवाब ने पूछा — बाबू साहब, खैरियत तो है? हाथी कहाँ रह गया था? बाबू साहबों ने कुछ जवाब न दिया; मगर फीलबान बोला — हुजूर, यह दोनों बाबू लोग आपस में लड़ते थे, इसी से देर हो गई।

अब बोस बाबू से न रहा गया। बिगड़ कर बोले — ओ शाला, तुम हमारे मुँह पर झूठ बोलता है। तुम शाला बिला कहे हाथी को दौड़ा दिए, हम तो गाफिल पड़ा था।

इतने में आदमियों ने इत्तला दी कि शेर समने की झील के किनारे लेटा हुआ है। लोग बंदूकें सँभाल-सँभाल कर आगे बढ़े तो देखा, एक बनैला सुअर ऊँची-ऊँची घास में छिपा बैठा है। सबकी सलाह हुई कि चारों तरफ से खाली निशाने लगाए जायँ ताकि घबरा कर निकले, मगर नवाब साहब के दिल में ठन गई कि हम इस पतावर में हाथी जरूर ले जायँगे। सुरैया बेगम अब तक तो सैर देखती थीं मगर पतावर में जाना बहुत अखरा। बोलीं

— नवाब, तुम्हारे सिर की कसम, अब हम न जायँगे। पतावर तलवार की धार से भी ज्यादा तेज होती है। हमें किसी और हाथी पर बिठा दो।

नवाब ने दो शिकारियों को अपने हाथी पर बिठा लिया और सुरैया बेगम को दूसरे हाथी पर बिठा दिया। एक और हाथी उनके साथ-साथ उनकी हिफाजत के लिए छोड़ दिया गया। तब नवाब साहब पतावर में पहुँचे। जब सुअर ने देखा कि दुश्मन चला आ रहा है तो उठा और भाग खड़ा हुआ। नवाब साहब ने गोली चलाई। फिर और शिकारियों ने भी बंदूकें सर कीं! सुअर तड़प कर झील की तरफ झपटा। इतने में तीसरे गोली आई। लोगों ने समझा कि अब काम तमाम हो गया। नवाब साहब को शौक चर्राया कि उसे अपने हाथ से कत्ल करें। हाथी से उतर कर तलवार म्यान से निकाली और साथियों को झील के किनारे इधर-उधर हटा दिया कि सुअर समझे, सब चल दिए हैं। जब सुअर ने देखा कि मैदान खाली है तो आहिस्ता-आहिस्ता झील से निकला। नवाब साहब घात में थे ही, ताक कर ऐसा हाथ दिया कि बनैला बोल गया। लोगों ने चारों तरफ से वाह-वाह का शोर मचाना शुरू किया।

एक — हुजूर, यह करामात है।

दूसरा — सुभान अल्लाह, क्या तुला हुआ हाथ लगाया कि बोला तक नहीं।

तीसरा — तलवार के धनी ऐसे ही होते हैं। एक ही हाथ में चौरंग कर दिया । क्या हाथ पड़ा है, वाह!

चौथा — धूम पड़ गई, धूम पड़ गई। क्या कमाल है, एक ही वार में ठंडा हो गया!

नवाब — अरे भाई देखते हो! बरसों शिकार की नौबत नहीं आती, मगर लड़कपन से शिकार खेला है। वह बात कहाँ जा सकती है। जरा किसी सूरत से बेगम साहब को यहाँ लाते और उनको दिखाते कि हमने कैसा शिकार किया है!

बेगम साहब का हाथी आया तो बनैले को देख कर डर गईं। अल्लाह जानता है, तुम लोगों को जान की जरा भी परवा नहीं। और जो फिर पड़ता तो कैसी ठहरती।

नवाब — तारीफ न की, कितनी जवाँमर्दी से अकेले आदमी ने शिकार किया। लाश तो देखो, कहाँ से कहाँ तक है!

एक मुसाहब — हुजूर ने वह काम किया जो सारी दुनियाँ में किसी से नहीं हो सकता। दस-पाँच आदमी मिल कर तो जिसे

चाहे मार लें; मगर एक आदमी का तलवार ले कर बनैले से भिड़ना जरा मुश्किल है।

बेगम — ऐ है, तुम अकेले शिकार करने गए थे! कसम खुदा की, बड़े ढीठ हो। मेरे तो रोएँ खड़े हुए जाते हैं।

नवाब — अब तो हमारी बहादुरी का यकीन आया कि अब भी नहीं!

यहाँ से फिर शिकार के लिए रवाना हुए। बनैले का शिकार तो घाते में था। झील के करीब पहुँचे, तो हाथी जोर-जोर से जमीन पर पाँव पटकने लगा।

फीलबान — शेर यहाँ से बीस कदम पर है। बस यही समझिए कि अब निकला, अब निकला। काशीसिंह, हाथी पर आ जाओ। दिलाराम से भी कहो, बहुत आगे न बढ़े।

काशीसिंह — हुँह, सहर के मनई, नेवला देखे डर जायँ, हमका राह देखावत हैं। वह सेर तो हम सवा सेर!

नवाब — यह उजडुपन अच्छा नहीं। काशीसिंह, आ जाओ। दिलाराम, तुम भी किसी और हाथी पर चले जाओ। मानो कहना।

दिलाराम — हुजूर, चार बरस की उमिर से बाघ मारत चला आवत हाँ, खा जाई, ससुर खा जाय।

बेगम — ऐ है, बड़े ढीठ हैं। नवाब, तुम अपना हाथी सब हाथियों के बीच में रखो। हमारे कलेजे की धड़कन को तो देखो।

अब सुनिए कि इत्तिफ़ाक़ से एक शिकारी ने शेर देख लिया। एक दरख्त के नीचे चित सो रहा था? उन्होंने किसी से न कुछ कहा, न सुना, बंदूक दाग ही तो दी। गोली पीठ पर पड़ी। शेर आग हो गया और गरजता हुआ लपका, तो खलबली मच गई। आते ही काशीसिंह को एक थप्पड़ दिया, दूसरा थप्पड़ देने को ही था कि काशीसिंह सँभला और तलवार लगाई। तलवार हाथ पर पड़ी। तलवार खाते ही हाथी की तरफ झपटा, और नवाब साहब के हाथी के दोनों कान पकड़ लिए। हाथी ने ठोकर दी तो शेर 5-6 कदम पर गिरा। इधर हाथी, उधर शेर, दोनों गरजे। बाबू साहबों ने दोहाई देनी शुरू की।

बोस — अरे, हमारा नानी मर गया। अरे, बाबा, हम तो काल ही से रोता था कि हम नहीं जायगा।

घोष — ओ भाई, तुम शेर को रोक लेगा जल्दी से।

बोस — हम नीचे होता तो जरूर करके रोक लेता।

दो हाथी तो शेर की गरज सुन कर भागे; मगर बाबू का हाथी डटा खड़ा था। इस पर बोस ने रो कर कहा — ओ शाला

हमारा हाथी, अरे तुम किस माफिक भागता नहीं! तुम्हारा भाई भो जाता है, तुम क्यों खड़ा है?

शेर ने झपट कर नवाब साहब के हाथी के मस्तक पर एक हाथ दिया तो गोश्त खिंच आया। नवाब साहब के हाथ-पाँव फूल गए। एक शिकारी जो उनके पीछे बैठा था, नीचे गिर पड़ा। शेर ने फिर थप्पड़ दिया। इतने में एक चौकीदार ने गोली चलाई। गोली सिर तोड़ कर बाहर निकल गई और शेर गिर पड़ा, मगर नवाब साहब ऐसे बदहवास थे कि अब तक गोली न चलाई। लोग समझे, शेर मर गया। दो आदमी नजदीक गए और देख कर बोले, हुजूर, अब इसमें जान नहीं है, मर गया। नवाब साहब हाथी से उतरने ही को थे कि शेर गरज कर उठा और एक चौकीदार को छाप बैठा। चारों तरफ हुल्लड़ मच गया। कोई बंदूक छतियाता है, कोई ललकारता है। कोई कहता है — तलवार ले कर दस-बारह आदमी पहुँच जाओ, अब शेर नहीं उठ सकता।

नवाब — क्या कोई गोली नहीं लगा सकता?

एक — हुजूर, शेर के साथ आदमी की भी जान जायगी।

नवाब — तुम तो अपनी बड़ी तारीफ करते थे। अब वह निशानेबाजी कहाँ गई? लगाओ गोली।

गोली पीठ को छूती हुई निकल गई। शिकारी ने एक और गोली लगाई तो शेर का काम तमाम हो गया। मगर यह गोली इस उस्तादी से चलाई थी कि चौकीदार पर आँच न आने पाई। सब लोगों ने तारीफ की। शेर ऊपर था और चौकीदार नीचे। सात आदमी तलवार ले कर झपटे और शेर पर वार करने लगे। जब खूब यकीन हो गया कि शेर मर गया तो लाश को हटाया। देखा कि चौकीदार मर रहा है।

नवाब — गजब हो गया यारो, हा! अफसोस।

बेगम — हाथी यहाँ से हटा ले चलो। कहते थे कि शिकार को न चलो। तुमने मेरा कहा न माना।

नवाब — फीलबान, हाथी बिठा दे, हम उतरेंगे।

बेगम — उतरने का नाम भी न लेना। हम न जाने देंगे।

नवाब — बेगम, तुम तो हमको बिलकुल डरपोक ही बनाया चाहती हो। हमारा आदमी मर रहा है, मुझे दूसरे से तमाशा देखना मुनासिब नहीं।

बेगम ने नवाब के गले में हाथ डाल कर कहा — अच्छी बात है, जाइए, अब या तो हम-तुम दोनों गिरेंगे या यहीं रहेंगे।

नवाब दिल में बहुत खुश हुए कि बेगम को मुझसे इतनी मुहब्बत है। आदमियों से कहा — जरा देखो, उसमें कुछ जान बाकी है? आदमियों ने कहा — हुजूर, इतना बड़ा शेर, इतनी देर तक छापे बैठा रहा। बेचारा घुट-घुट के कभी मर गया होगा!

बेगम — अब फिर तो कभी शिकार को न आओगे? एक आदमी की जान मुफ्त में ली?

नवाब — हमने क्यों जान ली, जो हमीं को शेर मार डालता!

बेगम — क्या मनहूस बातें जबान से निकालते हो, जब देखो, अपने को कोसा करते हो।

खेमे में पहुँच कर नवाब साहब ने वापसी की तैयारियाँ कीं और रातों-रात घर पहुँच गए।

92

आज तो कलम की बाँछें खिली जाती हैं। नौजवानों के मिजाज की तरह अठखेलियाँ पर है। सुरैया बेगम खूब निखर के बैठी हैं। लौंडियाँ-महरियाँ बनाव-चुनाव किए घेरे खड़ी हैं। घर में जश्न

हो रहा है। न जाने सुरैया बेगम इतनी दौलत कहाँ से लाईं। यह ठाट तो पहले भी नहीं था।

महरी — ऐ बी सैदानी, आज तो मिजाज ही नहीं मिलते। इस गुलाबी जोड़े पर इतना इतरा गईं?

सैदानी — हाँ, कभी बाबराज काहे को पहना था? आज पहले-पहल मिला है। तुम अपने जोड़े का हाल तो कहो।

महरी — तुम तो बिगड़ने लगी। चलो, तुम्हें सरकार याद करती हैं।

सैदानी — जाओ, कह दो, हम नहीं आते, आई वहाँ से चौधराइन बनके। अब घूरती क्या हो, जाओ, कह दो न!

महरी ने आकर सुरैया बेगम से कहा — हुजूर, वह तो नाक पर मक्खी नहीं बैठने देतीं। मैंने इतना कहा कि सरकार ने याद किया है तो मुझे सैकड़ों बातें सुनाईं।

सुरैया बेगम ने आँख उठा कर देखा तो महरी के पीछे सैदानी खड़ी मुसकरा रही थी। महरी पर घड़ों पानी पड़ गया।

सैदानी — हाँ हाँ, कहो, और क्या कहती हो? मैंने तुम्हें गालियाँ दीं, कोसा और भी कुछ?

सुरैया बेगम की माँ बैठी हुई शादी का इंतजाम कर रही थीं। उनके सामने सुरैया बेगम की बहन जाफरी बेगम भी बैठी थीं। मगर यह माँ और बहन आई कहाँ से? इन दोनों का तो कहीं पता ही न था। माँ तो कब की मर चुकी। बहनों का जिक्र ही न सुना। मजा यह कि सुरैया बेगम के अब्बा जान भी बाहर बैठे शादी का इंतजाम कर रहे हैं। समझ में नहीं आता, यह माँ, बहन कहाँ से निकल पड़े। इसका किस्सा यों है कि नवाब वजाहत अली ने सुरैया बेगम से कहा — अगर यों ही निकाह पढ़वा लिया गया तो हमारे रिश्तेदार लोग तुमको हकीर समझेंगे कि किसी बेसवा को घर डाल लिया होगा। बेहतर है कि किसी भले आदमी को तुम्हें अपनी लड़की बनाने पर राजी कर लिया जाए।

सुरैया बेगम को यह बात पसंद आई। दूसरे दिन सुरैया बेगम एक सैयद के मकान पर गईं। सैयद साहब को मुफ्त के रुपए मिले, उन्हें नवाब साहब के ससुर बनने में क्या इनकार होता। किस्मत खुल गई। पड़ोसी हैरत में थे कि यह सैयद साहब अभी कल तक तो जूतियाँ चटकाते फिरते थे। आज इतना रुपया कहाँ से आया कि डोमिनियाँ भी हैं, नाच-रंग भी, नौकर-चाकर भी और सबके सब नए जोड़े पहने हुए। एक पड़ोसी ने सैयद साहब से यों बात-चीत की -

पड़ोसी — आज तो आपके मिजाज ही नहीं मिलते। मगर आप चाहे आधी बात न करें, मैं तो छेड़ के बोलूँगा।

गो नहीं पूछते हरगिज वह मिजाज,
हम तो कहते हैं दुआ करते हैं।

सैयद — हजरत, बड़े फिक्र में हूँ। आप जानते हैं, लड़की की शादी झंझट से खाली नहीं। खुदा करे, खैरियत से काम पूरा हो जाय।

पड़ोसी — जनाब, खुदा बड़ा कारसाज है। शादी कहाँ हो रही है?

सैयद — नवाब वजाहत अली के यहीं, यही सामने महल है, बड़ी कोशिश की, जब मैंने मंजूर किया। मेरी तो मंशा यही थी कि किसी शरीफ और गरीब के यहाँ ब्याहूँ।

पड़ोसी — क्यों? गरीब के यहाँ क्यों ब्याहते? आपका खानदान मशहूर है। बाकी रहा रुपया। यह हाथ का मैल है। मगर अब यह फर्माइए कि सब बंदोबस्त कर लिया है न, मैं आपका पड़ोसी हूँ, मेरे लायक जो खिदमत हो उसके लिए हाजिर हूँ।

सैयद — ऐ हजरत आपकी मिहरबानी काफी है। आपकी दुआ और खुदा की इनायत से मैंने हैसियत के मुआफिक बंदोबस्त कर लिया है।

इधर तो ये बातें होती थीं, उधर नवाब के दोस्त बैठे आपस में चुहल कर रहे थे।

एक दोस्त — हजरत, इस बारे में आप किस्मत के धनी हैं।

नवाब — भई, खुदा की कसम, आपने बहुत ठीक कहा, और सैयद साहब की तो बिलकुल फकीर ही समझिए। उनकी दुआ में तो ऐसा असर है कि जिसके वास्ते जो दुआ माँगी, फौरन कबूल हो गई।

दोस्त — जभी तो आप जैसे आली खानदानी शरीफजादे के साथ लड़की का निकाह हो रहा है। इस वक़्त शहर में आपका सा रईस और कौन है!

मीर साहब — अजी, शाहजादों के यहाँ से जो न निकले वह आपके यहाँ है।

लाला — इसमें क्या शक, लेकिन यहाँ एक-एक शाहज़ादा ऐसा पड़ा है जिसके घर में दौलत लौंडी बनी फिरती है।

मीर साहब — कुछ बेधा हो के तो नहीं आया है! बढ़ कर दूसरा कौन रईस है शहर में, जिसके यहाँ है यह साज-सामान?

लाला — तुम खुशामद करते हो और बंदा साफ-साफ कहता है।

मीर साहब — ना पहले मुँह बनवा, चला वहाँ से बड़ा साफगो बन के।

दोस्त — ऐसे आदमी को तो खड़े-खड़े निकलवा दे, तमीज तो छू ही नहीं गई। गौखेपन के सिवा और कोई बात नहीं।

नवाब — बदतमीज आदमी है, शरीफों की सोहबत में नहीं बैठा।

मीर साहब — बड़ा खरा बना है, खरा का बच्चा!

नवाब — अजी, सख्त बदतमीज है।

घर में सुरैया बेगम की हमजोलियाँ छेड़-छाड़ कर रही थीं। फीरोजा बेगम ने छेड़ना शुरू किया — आज तो हुजूर का दिल उमंगों पर है।

सुरैया बेगम — बहन, चुप भी रहो, कोई बड़ी-बूढ़ी आ जाएँ तो अपने दिल में क्या कहें, आज के दिन माफ करो, फिर दिल खोल के हँस लेना। मगर तुम मानोगी काहे को!

फीरोजा — अल्लाह जानता है, ऐसा दूल्हा पाया है कि जिसे देख कर भूख-प्यास बन्द हो जाय।

इतने में डोमिनियों ने यह गजल गानी शुरू की —

दिल किसी तरह चैन पा जाए,
गैर की आई हमको आ जाए;

दीदा व दिल हैं काम के दोनों,
वक़्त पर जो मजा दिखा जाए।
शेख साहब बुराइयाँ मय की,
और जो कोई चपत जमा जाए;
जान तो कुछ गुजर गई उस पर,
मुँह छिपा के जो कोसता जाए।
लाश उठेगी जभी कि नाज के साथ,
फेर कर मुँह वह मुसकरा जाए;
फिर निशाने लेहद रहे न रहे,
आ के दुश्मन भी खाक उड़ा जाए।
वह मिलेंगे गले से खिलवत में,
मुझको डर है हया न आ जाए।

फीरोजा बेगम ने यह गजल सुन कर कहा – कितना प्यारा गला है; लेकिन लै अच्छा नहीं।

सुरैया बेगम ने डोमिनियों को इशारा कर दिया कि यह बहुत बढ़-बढ़ कर बातें कर रही हैं, जरा इनकी खबर लेना। इस पर एक डोमिनी बोली – अब हुजूर हम लोगों को लै सिखा दें।

दूसरी – यह तो मुजरे को जाया करें तो कुछ पैदा कर लाएँ।

तीसरी – बहन, ऐसी कड़ी न कहो।

इतने में एक औरत ने आकर कहा — हुजूर, कल बरात न आएगी। कल का दिन अच्छा नहीं। अब परसों बरात निकलेगी।

93

सुरैया बेगम के यहाँ वही धमा-चौकड़ी मची थी। परियों का झुरमुट, हसीनों का जमघट, आपस की चुहल और हँसी से मकान गुलजार बना हुआ था। मजे-मजे की बातें हो रही थीं कि महरी ने आकर कहा — हुजूर, रामनगर से असगर मियाँ की बीवी आई हैं। अभी-अभी बहली से उतरी हैं। जानी बेगम ने पूछा — असगर मियाँ कौन हैं? कोई देहाती भाई हैं? इस पर हशमत बहू ने कहा, बहन वह कोई हों। अब तो हमारे मेहमान हैं। फीरीजा बेगम बोलीं — हाँ-हाँ तमीज से बात करो, मगर वह जो आई है, उनको नाम क्या है? महरी ने आहिस्ता से कहा — फैजन। इस पर दो-तीन बेगमों ने एक दूसरे की तरफ देखा।

हशमत बहू — वाह, क्या प्यारा नाम है। फैजन, कोई मिरासिन हैं क्या?

सुरैया बेगम — तुम आज लड़वाओगी। जानी बेगम कौन सा अच्छा नाम है।

फीरोजा — देहात के तो यही नाम हैं, कोई जैनब है, कोई जीनत, कोई फैजन।

सुरैया बेगम — फैजन बड़ी अच्छी औरत है। न किसी के लेने में, न देने में।

इतने में बी फैजन तशरीफ लाई और मुसकरा कर बोलीं — मुबारक हो!

यहाँ जितनी बेगमें बैठी थीं सब मुँह फेर-फेर कर मुसकराईं। बी फैजन के पहनावे से ही देहातीपन बरसता था।

फैजन — बहन, आज ही बरात आएगी न, कौन-कौन रस्म हुई? हम तो पहले ही आते, मगर हमारे देवर की तबियत अच्छी न थी।

फीरोजा — बहन, तुम्हारा नाम क्या है?

फैजन — फैजन।

फीरोजा — और तुम्हारे मियाँ का नाम?

फैजन — हमारे यहाँ मियाँ का नाम नहीं लेते। तुम अपने मियाँ का नाम बताओ!

फीरोजा बेगम ने तड़ से कहा — असगर मियाँ। इस पर वह फर्मायशी कह कह पड़ा कि दूर तक आवाज गई। फैजन दंग हो गईं और दिल ही दिल में सोचने लगीं कि इस शहर की औरतें बड़ी ढीठ है। मैं इनसे पेश न पाऊँगी।

हशमत बहू — तो असगर मियाँ बी फैजन के मियाँ हैं। या तुम्हारे मियाँ, पहले इसका फैसला हो जाय।

फीरोजा — ऐ है, इतना भी न समझीं, पहले इनसे निकाह हुआ था, फिर हमसे हुआ और अब असगर मियाँ के दो महल हैं, एक तो ये बेगम, दूसरे हम।

इस पर फिर कहकहा पड़ा, फैजन के रहे-सहे हवास भी गायब हो गए। अब इतनी हिम्मत भी न थी कि जबान खोल सकें। जानी बेगम ने कहा — क्यों फैजन बहन, तुम्हारे यहाँ कौन-कौन रस्में होती हैं? हमारे यहाँ तो दूल्हा लड़की के घर जा कर देख आता है, बस फिर बात तै हो जाती है।

फैजन — क्या यहाँ मियाँ पहले ही देख लेते हैं? हमारे यहाँ तो नव बरस भी ऐसा न हो।

फीरोजा — यह नव बरस क्या, क्या यह भी कोई टोटका है? नव बरस की कैद मुई कैसी!

फैजन — बहन, हम मुई-टुई क्या जानें।

यह सुन कर हमजोलियाँ और भी हँसीं।

फीरोजा — यह महरी मुई-टुई कहाँ चली गई? एक भी मुई-टुई दिखाई नहीं देती।

हशमत बहू — हमका मालूम है, मगर हम न बताउब!

फीरोजा — अरे मुई-टुई पंखिया कहाँ गायब हो गई?

हशमत बहू — जिस मुई-टुई को गर्मी मालूम हो वह ढूँढ़ ले।

इतने में जुलूस सजा और दुलहिन के हाथ दूल्हा के लिए सेहरा गया। चाँदी की खुशनुमा किश्तियों में फूलों के हार, बुद्धियाँ और जड़ाऊ सेहरा। इसके बाद डोमिनियों का गाना होने लगा। फैजन ने कहा — हमने तो यहाँ की बड़ी तारीफ सुनी है। इस पर एक बूढ़ी औरत ने पोपले मुँह से कहा — ऐ हुजूर, अब तो नाम ही नाम है, नहीं तो हमारे लड़कपन में डोमिनियों का मुहल्ला बड़ी रौनक पर था। यह महबूबन जो सामने बैठी हैं, इनकी दादी का वह दौर दौरा था कि अच्छे-अच्छे शाहज़ादे सिर टेक कर आते थे। एक बार बादशाह तक उनके यहाँ आए थे। हाथी वहाँ तक नहीं जा सकता था। हुक्म दिया कि मकान गिरा दिए जायँ और चौगुना रुपया मालिकों को दिया जाय। एक बूढ़ी औरत जिसकी

भवें तक सफेद थीं, हाथी की सूँड़ पकड़ कर खड़ी हो गई और कहा — मैं हाथी को आगे न बढ़ने दूँगी। मेरे बुजुर्गों की हड्डियाँ खोदके फेंक दी गईं। यह मकान मेरे बुजुर्गों की हड्डी है। बादशाह ने उसके बुजुर्गों के नाम से खैरात खाना जारी कर दिया। जब बादशाह का घोड़ा महबूबन की दादी के मकान पर पहुँचा, तो दस-बारह हजार आदमी गली में खड़े थे। मगर वाह री जहूरन! इतना सब कुछ होते भी गरूर छू न गया था। बरसात के दिन थे, बादशाह ने कहा — जहूरन, जब जाने कि मेंह बरसा दो। मुसकरा कर कहा — हुजूर, लौंडी एक अदना सी डोमिनी है, मगर खुदा के नजदीक कुछ मुश्किल नहीं है। यह कह कर तान ली -

'आयो बदरा कारे-कारे रही बिजली चमक मोरे आँगन में'

बस पच्छिम तरफ के झूमती हुई घटा उठी। स्याही छलकने लगी। जहूरन को खुदा बक्शे, फिर तान लगाई और मूसलाधार मेंह बरसने लगा, ऐसा बरसा कि दरिया बढ़ गया और तालाब से दरिया तक पानी ही पानी नजर आता था? जब तो यहाँ कि डोमिनियाँ मशहूर हैं। और अब तो खुदा का नाम है। इतनी डोमिनियाँ बैठी हैं कोई गाए तो?

खुदारा जल्द ले आकर खबर तू ऐ मेरे ईसा;

तेरे बीमार का अब कोई दम में दम निकलता है।
नसीहत दोस्तो करते हो पर इतना तो बतलाओ,
कहीं आया हुआ दिल भी सँभाले से सँभलता है।

महबूबन — बड़ी गलेबाज हैं आप, और क्यों न हो, किनकी-किनकी आँखें देखी हैं। हम क्या जानें।

हैदरी — हम लोगों के गले इसी सिन में काम नहीं करते, जब इनकी उम्र को पहुँचेंगे तो खुदा जाने क्या हाल होगा।

बुढ़िया कब्र में एक पाँव लटकाए बैठी थी। सिर हिलता था, लठिया टेक के चलती थीं, मगर तबीयत ऐसी रंगीन की जवानों को मात करती थी। सबेरे उबटन न मले तो चैन न आए। पट्टियाँ जरूर जमाती थी, तो बहुत ही खुशमिजाज और हँस-मुख थी, मगर जहाँ किसी ने इसको बूढ़ी कहा, बस, फिर अपने आपे में नहीं रहती थी। फीरोजा ने छेड़ने के लिए कहा — तुमने जो जमाना देखा है वह हम लोगों को कहाँ नसीब होगा। कोई सौ बरस का सिन होगा, क्यों?

बुढ़िया ने पोपले मुँह से कहा — अब इसका मैं क्या जवाब दूँ, बूढ़ी मैं काहे से हो गई, बालों पर नजला गिरा, सफेद हो गए, इससे कोई बूढ़ा हो जाता है!

शाम से आधी रात तक यही कैफियत, यही मजाक, यही चहल-पहल रही। नई दुलहिन गोरी-गोरी गरदन झुकाए, प्यारा-प्यारा मुखड़ा छिपाए, अदब और हया के साथ चुप-चाप बैठी थी, हमजोलियाँ चुपके-चुपके छेड़ती जाती थीं। आधी रात के वक़्त दुलहिन को बेसन मल-मल कर नहलाया गया। हिना का इत्र, सुहाग, केवड़ा और गुलाब बदन से मला गया। इसके बाद जोड़ा पहनाया गया! हरे बाफते का पैजामा, सूहे की कुरती, सूहे की ओढ़नी, बसंती रंग का काश्मीरी दुशाला ओढ़ाया गया। भावजों ने मेढ़ियाँ गूँथी थीं, अब जेवर पहनाने बैठीं। सोने के पाजेब, छागल के कड़े दसों पोरों में छल्ले, हाथों में चूहेदंत्तियाँ, जड़ाऊ कंगन, सोने के कड़े, गले में मोतियों का हार, कानों में करनफूल और बाले, सिर पर छपका और सीसफूल माँग में मोतियों की लड़ी देख कर नजर का पाँव फिसला जाता था। जवाहिरात की चमक-दमक से गुमान होता था कि जमीन पर चाँद निकल आया।

जानी बेगम — चौथी के दिन और ठाट होंगे, आज क्या है।

फैजन — आज कुछ हई नहीं। ऐसा महकौवा इत्र कभी नहीं सूँघा।

इस पर सब खिलखिला कर हँस पड़ीं।

हशमत बहू — बी फैजन की बातों से दिल की कली खिल जाती है।

फीरोजा — कैसी कुछ, और चंचल कैसी हैं, रग-रग में शोखी है।

जानी बेगम — बहन फैजन, हम तुम्हारे मियाँ के साथ निकाह पढ़वा लें, बुरा तो न मानोगी?

फीरोजा — दो दिल राजी तो क्या करेगा काजी।

हशमत बहू — बहन, तुम्हारी आँखों का पानी बिलकुल ढल गया। हया भून खाई।

महरी — हुजूर, यही तो दिन हँसी-मजाक के हैं। जब हम इन सिनों थे तो हमारी भी यही कैफियत थी।

इतने में एक हमजोली ने आकर कहा — फीरोजा बेगम, वह आई हैं मुबारक महल। उनके सामने जरी ऐसी बातें न करना, वह बड़ी नाजुक मिजाज हैं। इतनी बेलिहाजी अच्छी नहीं होती।

फीरोजा — तो तुम जाके अदब से बैठों। तुम्हारा वजीफा आज से बँध जायगा।

मुबारक महल आईं और सबसे गले मिल कर सुरैया बेगम के पास जा बैठीं।

मुबारक महल — हमने सुरैया बेगम को आज ही देखा, खुदा मुबारक करे।

फीरोजा — ऐ सुरैया बेगम, जरी गरदन ऊँची करो, वाह यह तो और झुकी जाती हैं। हम तो सीना तान के बैठे थे, क्या किसी का डरा पड़ा है।

हशमत — तुम तो अंधेर करती हो, नई दुलहिन कहीं अकड़ कर बैठती हैं?

महरी — ऐ हाँ हुजूर, दुलहिन कहीं तन कर बैठती है! क्या कुछ नई रीति है।

फीरोजा — अच्छा साहब, यो ही सही, जरी और झुक जाओ।

एकाएक बाजे की आवाज आई। दूल्हा के यहाँ से दुलहिन को सेहरा बड़े ठाट से आ रहा था। जब सेहरा अन्दर आया तो सुरैया बेगम की माँ ने कहा, अब इस वक़्त कोई छींके-मींकें नहीं। सेहरा अन्दर आता है।

सेहरा अन्दर आया। दूल्हा के बहनोई ने साली के सिर पर सेहरा बाँधा और सास से नेग माँगा।

सास — हाँ-हाँ, बाँध लो, इस वक़्त तुम्हारा हक है।

बहनोई — इन चकमों में न आऊँगा। लाइए, नेग लाइए।

हशमत — हाँ, बेझगड़े न मानना दूल्हा भाई।

बहनोई — मान चुका, तोड़ों के मुँह खोलिए। अब देर न कीजिए।

सुरैया बेगम की माँ ने पाँच अशर्फियाँ दीं। वह तो ले कर बाहर गए। इधर दूल्हा के यहाँ की ओढ़नी दुलहिन को ओढ़ाई गई। पायजामे में नाड़े की इक्कीस गिरहें दी गई। परदा डाला गया। दुलहिन एक पलंग पर बैठी। फूलों के तौक और बद्धियाँ पहनाई गईं। फूलों का तुर्रा बाँध गया। अब बरात के आने का इंतजार था।

फीरोजा- क्यों बहन फैजन, सच कहना, इस वक़्त दुलहिन पर कैसा जोबन है?

फैजन — वह तो यों ही खूबसूरत हैं!

फीरोजा — बरात बड़े धूम से आएगी, हमने चाहा था कि मुन्ने मियाँ के यहाँ से बरात का ठाट देखें।

हशमत बहू — ऐ तो बरात यहीं से क्यों न देखो। महरी, जा के देखो, चिकें सब दुरुस्त हैं ना।

महरी — हुजूर, सब सामान लैस है।

फीरोजा बेगम उस कमरे की तरफ चलीं जहाँ से बरात देखने का बंदोबस्त था। लेकिन जब कमरे में गईं और नीचे झाँक के देखा तो सहम कर बोलीं, ओफ्फोह, इतना ऊँचा कमरा, मैं तो मारे डर के गिर पड़ी होती। जानी बेगम ने जब सुना कि वह डर गईं तो आड़ें हाथों लिया — हमने सुना, आप इस वक़्त सहम गईं, वाह!

फीरोजा — खुदा गवाह है, दिल्लगी न करो, मेरे होश ठिकाने नहीं।

जानी बेगम — चलो, बस ज्यादा मुँह न खुलवाओ।

फीरोजा — अच्छा, जाके झाँको तो मालूम हो।

हशमत बहू — हम भी चलते हैं। हम भी झाँकेंगे।

महरी — न बीबी, मैं झाँकने को न कहूँगी। एक बार का जिक्र सुनो कि मैं ताजबीबी का रोजा देखने गई। अल्लाह री तैयारी, रोजा क्या सचमुच बिहिश्त है। फिरंगी तक जब आते हैं तो मारे रोब के टोपी उतार लेते हैं। मेरे साथ एक बेगम भी थीं, जब रोजे के फाटक पर पहुँचे तो मुजाविर बाहर चले गए। मालियों को हुक्म हुआ कि पीठ फेर कर काम करें, गँवारों से परदा क्या।

फीरोजा — उहँ, परदा दिल का।

हशमत — फिर मुजाविरों को क्यों हटाया?

महरी — वह आदमी हैं और माली जानवर, भला इन मजदूरों से कौन परदा करता है। अच्छा, यह तो बताओ कि दुलहिन को कहाँ से बरात दिखाओगी?

हशमत — हमारे यहाँ की दुलहिनें बरात नहीं देखा करतीं।

फीरोजा — वाह, क्या अनोखी दुलहिन हैं!

जानी बेगम — जिस दिन तुम दुलहिन बनी थीं, उस दिन बरात देखी होगी।

फीरोजा — हाँ-हाँ, न देखना क्या माने। हमने अम्माँजान से कहा कि हमको दूल्हा दिखा दो, नहीं हम शादी न करेंगे। उन्होंने कहा, अच्छा झरोखे से बरात देखो, हमने देखी। हमारे मियाँ घोड़े पर अकड़े बैठे थे। एक फूल उनके सिर पर मारा।

हशमत — क्यों नहीं, शाबाश, क्या कहना!

जानी बेगम — फूल नाहक मारा, एक जूता खींच मारा होता।

फीरोजा — खूब याद दिलाया, अब सही।

जानी बेगम — अच्छा महरी, तुमने उन बेगम साहब का जिक्र छेड़ा था जिनके साथ ताजबीबी का रोजा देखने गई थी। फिर क्या हुआ?

महरी — हाँ, खूब याद आया। हम लोग एक बुर्ज पर चढ़ गए, मैं क्या कहूँ हुजूर, कम से कम होंगे तो कोई सात-आठ सौ जीने होंगे।

फीरोजा — ओफ्फोह, इतना झूठ, अच्छा फिर क्या हुआ, कहती जाओ।

महरी — खैर, दम ले-ले के फिर चढ़े, जब धुर पर पहुँचे तो दम नहीं बाकी रहा कि जरा हिल भी सकें। बेगम साहब ने ऊपर से नीचे को झाँका तो गश आ गया, धम से गिरीं।

हशमत बहू — हाय-हाय! मरीं कि बची?

महरी — बच जाने की एक ही कही। हड्डी-पसली चूर हो गई।

फीरोजा — मैंने कहा तो किसी को यकीन नहीं आया। अल्लाह जानता है, इतने ऊँचे पर से जो सड़क देखी होश उड़ गए।

जानी बेगम — जाने दो भई, अब उसका जिक्र न करो, चलो दुलहिन के पास बैठो।

खबरें आने लगीं कि आज तक इस शहर में ऐसी बरात किसी ने नहीं देखी थी। एक नई बात यह है कि गोरों का बाजा है। हजारों आदमी गोरों का बाजा सुनने आए हैं। छतें फटी पड़ती हैं, एक-एक कमरा चौक में आज दो-दो अशर्फियाँ किराए पर नहीं

मिलता। सुना कि बरात के साथ नई रोशनी है जिसकी गैस लाइट बालते हैं।

फीरोजा — उस रोशनी और इस रोशनी में क्या फर्क है?

महरी — ऐ हुजूर, जमीन ओर आसमान का फर्क है। यह मालूम होता है कि दिन है।

94

आज़ाद पोलैंड की शाहज़ादी से रुखसत हो कर रातोंरात भागे। रास्ते में रूसियों की कई फौजें मिलीं। आज़ाद को गिरफ्तार करने की जोरों से कोशिश हो रही थी, मगर आज़ाद के साथ शाहज़ादी का जो आदमी था वह उन्हें सिपाहियों की नजरें बचा कर ऐसे अनजान रास्तों से ले गया कि किसी को खबर तक न हुई। दोनों आदमी रात को चलते थे और दिन को कहीं छिप कर पड़ रहते थे। एक हफ्ते तक भागा-भाग चलने के बाद आज़ाद पिलौना पहुँच गए। इस मुकाम को रूसी फौजों ने चारों तरफ से घेर लिया था। आज़ाद के आने की खबर सुनते ही पिलौने वालों ने कई हजार सवार रवाना किए कि आज़ाद को

रूसी फौजों से बचा कर निकाल लाएँ। शाम होते-होते आज़ाद पिलौनावालों से जा मिले।

पिलौना की हालत यह थी कि किले के चारों तरफ रूस की फौज थी और इस फौज के पीछे तुर्कों की फौज थी। रात को किले से तोपें चलने लगीं। इधर रूसियों की फौज भी दोनों तरफ गोले उतार रही थी। किलेवाले चाहते थे कि रूसी फौज दो तरफ से घिर जाय, मगर यह कोशिश कारगर न हुई। रूसियों की फौज बहुत ज्यादा थी। गोली से काम न चलते देख कर आज़ाद ने तुर्की जनरल से कहा — अब तो तलवार से लड़ने का वक़्त आ पहुँचा, अगर आप इजाजत दें तो मैं रूसियों पर हमला करूँ।

अफसर — जरा देर ठहरिए, अब मार लिया है। दुश्मन के छक्के छूट गए हैं।

आज़ाद — मुझे खौफ है कि रूसी तोपों से किले की दीवारें न टूट जायँ।

अफसर — हाँ, यह खौफ तो हैं। बेहतर है, अब हम लोग तलवार ले कर बढ़ें।

हुक्म की देर थी। आज़ाद ने फौरन तलवार निकाल ली। उनकी तलवार की चमक देखते ही हजारों तलवारें म्यान से निकल

पड़ीं। तुर्की जवानों ने दाढ़ियाँ मुँह में दबाईं और अल्लाह-अकबर कह के रूसी फौज पर टूट पड़े। रूसी भी नंगी तलवारें ले कर मुकाबिले के लिए निकल आए। पहले दो तुर्की कंपनियाँ बढ़ीं, फिर कुछ फासले पर छह कंपनियाँ और थीं। सबसे पीछे खास फौज की चौदह कंपनियाँ थीं। तुर्कों ने यह चालाकी की थी कि सिर्फ फौज के एक हिस्से को आगे बढ़ाया था, बाकी कालमों को इस तरह आड़ में रखा कि रूसियों को खबर न हुई। करीब था कि रूसी भाग जायँ, मगर उनके तोपखाने ने उनकी आबरू रख ली। इसके सिवा तुर्की फौज मंजिलें मारे चली जाती थी और रूसी फौज ताजा थी। इत्तिफ़ाक़ से रूसी फौज का सरदार एक गोली खा कर गिरा, उसके गिरते ही रूसी फौज में खलबली मच गई, आखिर रूसियों को भागने के सिवा कुछ न बन पड़ी। तुर्कों ने छह हजार रूसी गिरफ्तार कर लिए।

जिस वक़्त तुर्की फौज पिलौना में दाखिल हुई, उस वक़्त की खुशी बयान नहीं की जा सकती। बूढ़े और जवान सभी फूले न समाते थे। लेकिन यह खुशी देर तक कायम न रही। तुर्कों के पास न रसद का सामान काफी था, न गोला-बारूद। रूसी फौज ने फिर किले को घेर लिया। तुर्क हमलों का जवाब देते थे, मगर भूखे सिपाही कहाँ तक लड़ते। रूसी ग़ालिब आते जाते थे और ऐसा मालूम होता था कि तुर्कों को पिलौना छोड़ना पड़ेगा। पचीस

हजार रूसी तीन घंटे किले की दीवारों पर गोले बरसाते रहे। आखिर दीवार फट गई और तुर्कों के हाथ-पाँव फूल गए। आपस में सलाह होने लगी।

फौज का अफसर — अब हमारा कदम नहीं ठहर सकता, अब भाग चलना ही मुनासिब है।

आज़ाद — अभी नहीं, जरा और सब्र कीजिए, जल्दी क्या है।

अफसर — कोई नतीजा नहीं।

किले की दीवार फटते ही रूसियों ने तुर्की फौज के पास पैगाम भेजा, अब हथियार रख दो, वरना मुफ्त में मारे जाओगे।

लेकिन अब भी तुर्कों ने हथियार रखना मंजूर न किया। सारी फौज किले से निकल कर रूसी फौज पर टूट पड़ी। रूसियों के दिल बढ़े हुए थे कि अब मैदान हमारे हाथ रहेगा, और तुर्क तो जान पर खेल गए थे। मगर मजबूर हो कर तुर्कों को पीछे हटना पड़ा। इसी तरह तुर्कों ने तीन धावे किए और तीनों मरतबा पीछे हटने पर मजबूर हुए। तुर्की जनरल फिर धावा करने की तैयारियाँ कर रहा था कि बादशाही हुक्म मिला — फौजें हटा लो, सुलह की बातचीत हो रही है। दूसरे दिन तुर्की फौजें हट गईं और लड़ाई खत्म हो गई।

जिस दिन आज़ाद कुस्तुनतुनिया पहुँचे, उनकी बड़ी इज्जत हुई। बादशाह ने उनकी दावत की और उन्हें पाशा का खिताब दिया। शाम का आज़ाद होटल में पहुँचे और घोड़े से उतरे ही थे कि यह आवाज कान में आई, भला गीदी, जाता कहाँ है। आज़ाद ने कहा — अरे भई, जाने दो। आज़ाद की आवाज सुन कर खोजी बेकरार हो गए। कमरे से बाहर आए और उनके कदमों पर टोपी रख कर कहा — आज़ाद, खुदा गवाह है, इस वक़्त तुम्हें देख कर कलेजा ठंडा हो गया, मुँह-माँगी मुराद पाई।

आज़ाद — खैर, यह तो बताओ, मिस मीडा कहाँ हैं?

खोजी — आ गईं, अपने घर पर हैं।

आज़ाद — और भी कोई उनके साथ है?

खोजी — हाँ, मगर उस पर नजर न डालिएगा।

आज़ाद — अच्छा, यह कहिए।

खोजी — हम तो पहले ही समझ गए थे कि आज़ाद भावज भी ठीक कर लाए, मगर अब यहाँ से चलना चाहिए।

आज़ाद — उस परी के साथ शादी तो कर लो।

खोजी — अजी, शादी जहाज पर होगी।

मिस मीडा और क्लारिसा को आज़ाद के आने की ज्यों ही खबर मिली, दोनों उनके पास आ पहुँचीं।

मीडा — खुदा का हजार शुक्र हैं। यह किसको उम्मीद थी कि तुम जीते-जागते लौटोगे। अब इस खुशी में हम तुम्हारे साथ नाचेंगे।

आज़ाद — मैं नाचना क्या जानूँ।

क्लारिसा — हम तुमको सिखा देंगे।

खोजी — तुम एक ही उस्ताद हो।

आज़ाद — मुझे भी वह गुर याद हैं कि चाहूँ तो परी को उतार लूँ।

खोजी — भई, कहीं शरमिंदा न करना।

तीन दिन तक आज़ाद कुस्तुनतुनिया में रहे। चौथे दिन दोनों लेडियों के साथ जहाज पर सवार हो कर हिंदोस्तान चले।

आज़ाद, मीडा, क्लारिसा और खोजी जहाज पर सवार हैं। आज़ाद लेडियों का दिल बहलाने के लिए लतीफें और चुटकुले कह रहे हैं। खोजी भी बीच-बीच में अपना जिक्र छेड़ देते हैं।

खोजी — एक दिन का जिक्र है, मैं होली के दिन बाजार निकला। लोगों ने मना किया कि आज बहार न निकलिए, वरना रंग पड़ जायगा। मैं उन दिनों बिलकुल गैंडा बना हुआ था। हाथी की दुम पकड़ ली तो हुमस न सका। चें से बोल कर चाहा कि भागे, मगर क्या मजाल! जिसने देखा, दाँतों उँगली दबाई कि वाह पट्ठे।

आज़ाद — ऐं, तब तक आप पट्ठे ही थे?

खोजी — मैं आपसे नहीं बोलता। सुनो मिस मीडा, हम बाजार में आए तो देखा, हरबोंग मचा हुआ है। कोई सौ आदमी के करीब जमा थे और रंग उछल रहा था। मेरे पास पेशकब्ज और तमंचा, बस क्या कहूँ।

आज़ाद — मगर करौली न थी?

खोजी — भई, मैंने कह दिया, मेरी बात न काटो। ललकार कर बोला, यारो, देख-भाल के, मरदों पर रंग डालना दिल्लगी नहीं है। एक पठान ने आगे बढ़ के कहा — खाँ साहब, आप सिपाही आदमी हैं, इतना गुस्सा न कीजिए, होली के दिन रंग खेलना माफ

है। मैंने कहा, सुनो भाई, तुम मुसलमान हो के ऐसी बात कहते हो? पठान बोला, हजरत, हमारा इन लोगों से चोली-दामन का साथ है।

इतने में दो लौंडों ने पिचकारी तानी और रंग डाल दिया, ऊपर से उसी पठान ने पीछे से तान के एक जूता दिया तो खोपड़ी पिलपिली हो गई। फिरके जो देखता हूँ, तो डबल जूता, समझावन-बुझावन। मुसकरा कर आगे बढ़ा।

आज़ाद — ऐं, जूता खा के आगे बढ़े!

मीडा — और उस जमाने में सिपाही भी थे, जिस पर जूता खा के चुप रहे?

आज़ाद — चुप रहते तो खैरियत थी, मुसकराए भी। और बात भी दिल्लगी की थी, मुसकराते न तो क्या रोते?

खोजी — मैं तो सिपाही हूँ, तलवार से बात करता हूँ, जूते से काम नहीं लेता। कहाँ तलवार, कहाँ जूती पैजार!

क्लारिसा — एक हाकिम ने गवाह से पूछा कि मुद्दई की माँ तुम्हारे सामने रोती थी या नहीं? गवाह ने कहा, जी हाँ, बाईं आँख से रोती थी।

खोजी – यह तो कोई लतीफा नहीं, मुझे रह-रह के खयाल आता है जिस आदमी ने होली में बेअदबी की थी, उसे पा जाऊँ तो खूब मरम्मत करूँ।

आज़ाद – अच्छा, अब घर पहुँच कर सबसे पहले उसकी मरम्मत कीजिएगा। यह लीजिए, स्वेज की नहर!

मिस मीडा ने कहा – हम जरा यहाँ की सैर करेंगे। आज़ाद को भी यह बात पसंद आई। इस्कंदरिया के उसी होटल में ठहरे जहाँ पहले टिके थे। खोजी अकड़ते हुए उनके पास आए और कहा, अब यहाँ जरा हमारे ठाट देखिएगा। पहले तो लोगों से दरियाफ्त कर लो कि हमने कुश्ती निकाली थी या नहीं? मारा चारों शाने चित, और किसको? उस पहलवान को जो सारे मिस्र में एक था। जिसका नाम ले कर मिस्र के पहलवानों के उस्ताद कान पकड़ते थे। उसको देखो तो आँखें खुल जायँ। किसी का बदन चोर होता है। उसका कद चोर है। पहले तो मुझे रेलता हुआ अखाड़े के बाहर ले गया और मैं भी चुपचाप चला गया, बस भाई, फिर तो मैंने कदम जमा के जो रेला दिया तो बोल गया। अब पेंचें होने लगीं, मगर वह उस्ताद, तो मैं जगत-उस्ताद! उसने पेंच किया, मैंने तोड़ किया। उसने दस्ती खींची, मैं बगली हुआ। उसने डंडा लगाया, मैंने उचक के काट खाया।

आज़ाद — सुभान-अल्लाह, यह पेंच सबसे बढ़ कर है। आपने इतनी तकलीफ क्यों की, बैठके कोसना क्यों न शुरू कर दिया?

दोनों लेडियाँ हँसने लगीं तो खोजी भी मुसकराए, समझे कि मेरी बहादुरी पर दोनों खुश हो रही हैं। बोले — बस, जनाब, दो घंटे तक बराबर की लड़ाई रही, वह कड़ियल जवान, मोटा-ताजा, पंचहत्था। उसका कद क्या बताऊँ, बस जैसे हुसैनाबाद का सतखंडा। उसमें कूबत और यहाँ उस्तादी करतब, मैंने उसे हँफा-हँफा के मारा, जब उसका दम टूट गया तो चुर्र-मुर्र कर डाला। बस जनाब, किला जग के पेंच पर मारा तो चारों शाने चित। कोई पचास हजार आदमी देख रहे थे। तमाम शहर में मशहूर था कि हिंद का पहलवान आया।

आज़ाद — भाई जान, सुनो, अपने मुँह मियाँ मिट्ठू बनने की सनद नहीं। जब जानें कि हमारे सामने पटकनी दो और पहले उस पहलवान को भी देख लें कि कैसा है, तुम्हारी-उसकी जोड़ है या नहीं।

खोजी — कुछ अजीब आदमी हैं आप, कहता जाता हूँ कि ग्रांडील पँचहत्था जवान है, आपको यकीन नहीं आता, हम इसको क्या करें।

इतने में होटल के दो-एक आदमी खोजी को देख कर जमा हो गए, खोजी ने पूछा — क्यों भाई, हमने यहाँ एक कुश्ती निकाली थी या नहीं?

एक आदमी — वाह, हमारे होटल के बौने ने तो उठा के दे पटका था, चले वहाँ से कुश्ती निकालने!

खोजी — ओ गीदी, झूठ बोलना ओर सुअर खाना बराबर है।

दूसरा आदमी — हाथ-पाँव तोड़ के धर देगा। आप और कुश्ती!

खोजी — जी हाँ, हम और कुश्ती! कोई आए तब न! (ताल ठोक कर) बुलवाओ उस पहलवान को।

इतने में बौना सामने आ खड़ा हुआ और आते ही खोजी को चिढ़ाने लगा। ख्वाजा साहब ने कहा — यही पहलवान है जिसको हमने पटका था। आज़ाद बहुत हँसे, बस! टाँय-टाँय फिस। बौने से कुश्ती निकाली तो क्या। किसी बराबर वाले से कुश्ती निकालते तो जानते। इसी पर घमंड था।

खोजी — साहब, कहने और करने में बड़ा फर्क है, अगर उससे हाथ मिलाएँ तो जाहिर हो जाय।

बौना ताल ठोंक के सामने आ खड़ा हुआ और खोजी भी पैंतरे बदल कर पहुँचे। आज़ाद, मीडा और होटल के बहुत से आदमी उन दोनों के गिर्द टट लगा के खड़े हो गए।

खोजी — आओ, आओ बच्चा। आज भी गुद्दा दूँगा।

बौना — आज तुम्हारी खोपड़ी है और मेरा जूता।

खोजी — ऐसा गुद्दा दूँ कि उम्र भर याद रहे।

बौना — इनाम तो मिलेगा ही, फिर हमारा क्या हर्ज है?

अब सुनिए कि दोनों पहलवान गुँथ गए। खोजी ने घूँसा ताना, बौने ने मुँह चिढ़ाया। खोजी ने चपत जमाई, बौने ने धौल लगाई। दोनों की चाँद घुटी-घुटाई, चिकनी थी। इस जोर की आवाज आती थी कि सुननेवालों और देखनेवालों का जी खुश हो जाता था।

मीडा — खूब आवाज आई, तड़ाक। एक और।

क्लारिसा — ओफ, मारे हँसी के पेट में बल पड़ गए।

खोजी — हँसी क्यों न आएगी! जिसकी खोपड़ी पर पड़ती है उसी का दिल जानता है।

आज़ाद — अरे यार, जरा जोर से चपतबाजी हो।

खोजी — देखिए तो, दम के दम में बेदम किए देता हूँ कि नहीं।

आज़ाद — मगर यार; यह तो बिलकुल बौना है।

खोजी — हाय अफसोस, तुम अभी बिलकुल लौंडे हो। अरे कमबख्त, इसका कद चोर है, यों देखने में कुछ नहीं मालूम होता, मगर अखाड़े में चिट और लँगोट बाँध कर खड़ा हुआ, बस फिर देखिए, बदन की क्या कैफियत होती है। बिलकुल गैंडा मालूम होता है। कोई कहता है, दुम-कटा भैंसा है, कोई कहता है, हाथी का पाठा है, कोई नागौरी बैल बताता है, कोई कहता है जमुनापारी बकरा है, मगर मुझे इसका गम नहीं। जानता हूँ कि कोई बोला और मैंने उठा के दे मारा।

खोजी ने कई बार झल्ला-झल्ला कर चपतें लगाईं। एक बार इत्तिफ़ाक़ से उसके हाथ में इनकी गरदन आ गई, ख्वाजा साहब ने बहुत हाथ-पैर मारे, बहुत कुछ जोर लगाए, मगर उसने दोनों हाथों से गरदन पकड़ लीं और लटक गया। खोजी कुछ झुके, उनका झुकना था कि उसने जोर से मुक्का दिया और दो-तीन लप्पड़ लगा के भागा। खोजी उसके पीछे दौड़े, उसने कमरे में जा कर अन्दर से दरवाजा बन्द कर लिया। खोजी ने चपतें खाईं तो लोग हँसे और मिस क्लारिसा ने तालियाँ बजाईं। तब तो आप

बहुत ही झल्लाए, आसमान सिर पर उठा लिया, ओ गीदी, अगर शरीफ का बच्चा है तो बाहर आ जा। गिरा तो भाग खड़ा हुआ?

आज़ाद — अरे मियाँ, यह हुआ क्या? कौन गिरा, कौन जीता? हम तो उस तरफ देख रहे थे! मालूम नहीं हुआ, किसने दे मारा।

खोजी — ऐसी बात काहे को देखने लगे थे? अंजर-पंजर ढीले कर दिए गीदी के। वल्लाह, कुश्ती देखने के काबिल थी। मैंने एक नया पेंच किया था। उसके गिरने के वक़्त ऐसी आवाज आई कि यह मालूम होता था, जैसे पहाड़ फट पड़ा, आपने सुना ही होगा!

आज़ाद — वह है कहाँ? क्या खोदके जमीन में गाड़ दिया आपने?

खोजी — नहीं भाई, हारे हुए पर हाथ नहीं उठाता, और कसम है, पूरा जोर नहीं किया, वरना मेरे मुकाबिले में क्या ठहरता। हाथ पाँव तोड़के चुर्र-मुर्र कर डालता। नानी ही तो मर गई कमबख्त की, बस रोता हुआ भागा।

आज़ाद — मगर ख्वाजा साहब, गिरा तो वह और यह आपकी पीठ पर इतनी गर्द क्यों लगी है?

खोजी — भई, यहाँ पर हम भी कायल हो गए।

क्लारिसा — इसी तरह उस दफा भी तुमने कुश्ती निकाली थी?

मीडा – बड़े शरम की बात हे कि जरा सा बौना तुमसे न गिराया गया।

खोजी – जी चाहता है, दोनों हाथों से अपना सिर पीटूँ। कहता जाता हूँ कि उस गीदी का कद चोर है। आखिर मेरा बदन चोर है या नहीं, इस वक़्त मेरे बदन पर अंगरखा नहीं है। खासा देव बना हुआ हूँ। अभी कपड़े पहन लूँ तो पिद्दी मालूम होने लगूँ। बस यही फर्क समझो। अव्वल तो मैं गिरा नहीं, अपनी ही जोर में आप आ गया। दूसरे उसका कद चोर है, फिर आप कैसे कहते हैं कि जरा सा बौना था?

दूसरे दिन आज़ाद दोनों लेडियों को ले कर बाजार की एक कोठी से बाहर आते थे, तो क्या देखते हैं कि खोजी अफीम की पीनक में ऊँघते हुए चले आ रहे हैं। सामने से साठ-सत्तर दुंबे जाते थे। दुंबेवाले ने पुकारा – हटो-हटो, बचो-बचो, वह अपे में हों तो बचें। नतीजा यह हुआ कि एक दुंबे से धक्का लगा तो धम से सड़क पर आ रहे और गिरते ही चौंक के गुल मचाया – कोई है? लाना करौली। आज अपनी जान और इसकी जान एक करूँगा। खुदा जाने, इसको मेरे साथ क्या अदावत पड़ गई। अरे वाह बे बहुरूपिए, आज हमारे मुकाबिले के लिए साँड़नियाँ लाया है। अबे, यहाँ हर वक़्त चौकन्ने रहते हैं। उस दफा बजाज की दुकान पर आए तो मिठाई खाने में आई, आज यह हाथ-पाँव तोड़ डालने से

क्या मिला। घुटने लहूलुहान हो गए। अच्छा बचा, अब तो मैं होशियार हो गया हूँ, अबकी समझूँगा।

97

सुरैया बेगम का मकान परीखाना बना हुआ था। एक कमरे में वजीर डोमिनी नाच रही थी। दूसरे में शहजादी का मुजरा होता था।

फीरोजा – क्यों फैजन बहन, तुमको इस उजड़े हुए शहर की डोमिनियों का गाना काहे को अच्छा लगता होगा?

जानी बेगम – इनके लिए देहात की मीरासिनें बुलवा दो।

फैजन – हाँ, फिर देहाती तो हम हैं ही, इसका कहना क्या?

इस फिकरे पर वह कहकहा पड़ा कि घर भर गूँज उठा और फैजन बहुत शरमाई। जानी बेगम ने कहा – बस यही बात तो हमें अच्छी नहीं लगती। एक तो बेचारी इतनी देर के बाद बोलीं, उस पर भी सबने मिल कर उनको बना डाला।

फहीमन डोमिनी मुजरा करने लगी। उसके साथ दो औरतें सारंगी लिए थीं, एक तबला बजा रही थी और एक मजीरे की जोड़ी। उसके गाने की शहर में धूम थी।

बन्दनवार बाँधो सब मिलके मालिनियाँ।

इसको उसने इस तरह अदा किया कि जिसने सुना, लट्टू हो गया।

जानी बेगम — चौथी के दिन तीस-चालीस तवायफों का नाच होगा!

नजीर बेगम — कश्मीरी नहीं आते, हमें उनकी बातों में बड़ा मजा आता है।

हशमत बहू — नवाब साहब को जनाने में नाच कराने की चिढ़ है।

फीरोजा — सुनो बहन! जो औरत बदी पर आए तो उसकी बात ही और है, नहीं तो शरीफ़ज़ादी के लिए सबसे बड़ा परदा दिल का है।

फैजन — फहीमन, यह गीत गाओ —

'डात गयो कोऊ टोना रे।'

फीरोजा — क्या गाओ गीत! गीत कंडेवालियाँ गाती हैं!

जानी — और इनको ठुमरी, टप्पे, गजल से क्या मतलब। नकटा गाओ।

फीरोजा और जानी बेगम की बातें सुन कर मुबारक महल बिगड़ गईं।

फीरोजा — बहन, हमारी बातों से बुरा न मानना।

मुबारक — बुरा मान कर ही क्या लूँगी।

जानी — ऐसी बातें से आपस में फसाद हो जाता है।

फीरोजा — यह लड़वाती हैं बहन, सच कहती हूँ!

मुबारक — तुम दोनों एक-सी हो, जैसे तुम वैसे वह, न तुम कम, न वह कम, शरीफों में बैठने लायक नहीं हो। पढ़-लिख कर भी यह बातें सीखीं!

जानी — देखिए तो सही, अब दिल में कट गई होंगी।

मुबारक — मैं ऐसों से बात तक नहीं करती।

फीरोजा — (तिनक कर) जितना दबो, उतना और दबाती हैं, तुम बात नहीं करती, यहाँ कौन तुमसे बात करने के लिए बेकरार है।

मुबारक — महरी, हमारी पालकी मँगवाओ, हम जायँगे।

बेगम साहब को खबर हुई तो उन्होंने दोनों को समझा-बुझा कर राजी कर दिया।

शाम हुई, रोशनी का इंतजाम होने लगा। बेगम ने कहा — फर्राशों को हुक्म दो कि बारहदरी को झाड़-कँवल से सजाएँ, कमरे और दालानों में साफ चाँदनियाँ बिछें, उन पर ऊनी और चीनी गलीचे हों। महरी ने बाहर जा कर आगा साहब से ये बातें कहीं — बोले, हाँ-हाँ साहब, सुना। बेगम साहब से कहो किया तो हमको इंतजाम करने दें, या खुद ही बाहर चली आएँ। आखिर हमको कोई गँवार समझी हैं? कल से इंतजाम करते-करते हम शल हो गए और जब बरात आने का वक़्त आया तो हुक्म देने लगीं कि यह करो, वह करो। जा कर कह दो कि बाहर का इंतजाम हमारे ताल्लुक है। आप क्यों दखल देती हैं। हम अपने बंदोबस्त कर लेंगे।

महरी ने अन्दर जा कर बेगम साहब से कहा — हुजूर, बाहर का सब इंतजाम ठीक है। बारहदरी के फाटक पर नौबतखाना है, उस पर कारचोबी झूल पड़ी है, कहीं कंबल और गिलास हैं, कहीं हरी और लाल हाँड़ियाँ। रंग-बिरंग के कुमकुमे बड़ी बहार दिखाते हैं।

हशमत बहू — दरवाजे पर यह शोर कैसा हो रहा है?

महरी — हुजूर, शोर की न पूछें, आदमियों की इतनी भीड़ लगी हुई है कि कंधे से कंधा छिलता है। दुकानें भी बहुत सी आई हैं। तंबोली लाल कपड़े पहने दूकानों पर बैठे हैं। हाथों में चाँदी के कड़े, थालियों में सुफेद पान, एक थाली में छोटी इलायचियाँ, एक में डलियाँ, कत्था इत्र में बसा हुआ, सफाई के साथ गिलौरियाँ बना रहा है। एक तरफ साकिनों की दुकानें हैं। बिगड़े-दिल दमों पर दम लगाते हैं,बे-फिकरे टूटे पड़ते हैं।

फीरोजा — सुनती हो फैजन बहन, चलो जरा बाहर देख आए, यह नाक-भौं क्यों चढ़ाए बैठी हो। क्या घर से लड़ कर आई हो!

फैजन — हमारे पीछे क्यों पड़ी हो, हम न किसी से बोलें, न चालें।

हशमत — हाँ फीरोजा, यह तुममें बड़ी बुरी आदत हैं।

फीरोजा — लड़वाओ, वह तो सीधी-सादी हैं, शायद तुम्हारे भर्रों में आ जायँ।

जानी — फीरोजा बेगम जिस महफिल में न हों वह बिलकुल सूनी मालूम हो।

फीरोजा — हमें अफसोस यही है कि हमसे मुबारक महल बहन खफा हो गईं। अब कोई मेल करवा दे।

मुबारक — बहन, तुम बड़ी मुँहफट हो।

फीरोजा — अब साफ-साफ कहूँ तो बुरा मानो, जरी-जरी सी बात में चिटकती हो। आपस में हँसी-दिल्लगी हुआ करती हैं। इसमें बिगड़ना क्या? फैजन बुरा माने तो एक बात भी है, यह बेचारी देहात में रहती हैं, यहाँ के राह-रस्म क्या जानें, मगर तुम शहर की हो कर बात-बात में रोए देती हो। रही मैं, मैं तो हाजिर-जवाब हूँ ही। हाँ, जानी बेगम की तरह जबाँदराज नहीं!

जानी — अब मेरी तरफ झुकीं।

हशमत — चौमुखा लड़ती हैं, उफ री शोखी!

अब दूल्हा के यहाँ का जिक्र सुनिए। वहाँ इससे भी ज्यादा धूम-धाम थी। नौजवान शाहज़ादे और नवाबजादे जमा थे। दिल्लगी हो रही थी।

एक — यार, आज तो बे सरूर जमाए जाना मुनासिब नहीं।

दूसरा — मालूम होता है, आज पीके आए हो।

पहला — अरे मियाँ, खुदा से डरो, पीनेवाले की ऐसी-तैसी।

दूल्हा — जरूर पीके आए हो। आप हमारी बरात के साथ न चलिए।

दीवानखाने में बुजुर्ग लोग बैठे पुराने जमाने की बातें कर रहे थे। एक मौलवी साहब बोले — न अब वह लोग हैं, न जमाना। अब किसके पास जायँ, कोई मिलने के काबिल ही नहीं। इल्म की तो अब कदर ही नहीं। अब तो वह जमाना है कि गाली खाए, मगर जवाब न दे।

ख्वाजा साहब — अब आप देखें कि उस जमाने में दस, बीस, तीस की नौकरियाँ थीं, मगर वाह रे बरकत। एक भाई घर में नौकर है और दस भाई चैन कर रहे हैं।

रात के दस बजे नवाब साहब महल में नहाने गए। चारों तरफ बन्दनवार बँधी हुई थीं। आम, अमरूद और नारंगियाँ लटक रही थीं। नीचे एक सौ एक कोरे घड़े थे, एक मटके पर इक्कीस टोंटी का बधना रखा था और बधने में जौ लगे हुए थे। दूल्हा की माँ ने कहा — कोई छींके-वींके नहीं, खबरदार कोई छींकने न पाए। घर-भर में बच्चों को मना कर दो कि जिसको छींक आए, जब्त करे। अब दिल्लगी देखिए कि इस टोकने से सबको छींक आने लगी। किसी ने नाक को उँगली से दबाया, कोई लपक के बाहर चला गया। दूल्हा ने लुंगी बाँधी, बदन में उबटन मला गया। बहनें सिर पर पानी डालने लगीं।

दूल्हा — कितना सर्द पानी है। ठिठुरा जाता हूँ।

महरी — फिर हुजूर, शादी करना कुछ दिल्लगी है।

बहन — दिल में तो खुश होंगे। आज तुम्हें भला सर्दी लगेगी।

नहा कर दूल्हा ने खड़ाऊँ पहनी, कमरे में आए, कपड़े पहने! मशरू का पायजामा, जामदानी का अंगरखा, सिर पर पगड़ी के इर्द-गिर्द मोती टंके हुए, बीच में पुखराज का रंगीन नगीना, कमर में शाली पटका, पगड़ी पर फूलों का सेहरा, हाथ में लाल रेशमी रूमाल और कंधे पर हरा दुशाला, पैरों में फुँदनेदार बूट।

जब दूल्हा बाहर गया तो बेगम साहब ने लड़कियों से कहा — अब चलने की तैयारी करो। हमको बरात से पहले पहुँच जाना चाहिए। दूल्हा की बहनें अपने-अपने जोड़े पहनने लगीं। महरियों-लौंडियों को भी हुक्म हुआ कि कपड़े बदलो। जरा देर में सुखपाल और झप्पान दरवाजे पर ला कर लगा दिए गए। दोनों बहनें चलीं। दाएँ-बाएँ महरियाँ, मशालचियों के हाथ में मशालें, सिपाही और खिदमतगार लाल फुँदनेदार पगड़ियाँ बाँधे साथ चले। जिस तरफ से सवारी निकल गई, गलियाँ इत्र की महक से बस गईं। यही मालूम होता था कि परियों का उड़न-खटोला है।

जब दोनों बहनें समधियाने पहुँच गईं, तो नवाब साहब की माँ भी चलीं। वहाँ दुलहिन की माँ ने इनकी पेशवाई की। इत्र-पान से खातिर हुई और डोमिनियों को नाच होने लगा।

थोड़ी देर के बाद दूल्हा के यहाँ से बरात चली, सबके आगे हाथी पर निशान था। हाथी के सामने अनार और हजारे छूट रहे थे। हाथियों के पीछे अंगरेजी बाजेवालों की धूम थी। फिर सजे हुए घोड़े सिर से पाँव तक जेवर से लदे चले आते थे। साईस उनकी बाग पकड़े हुए थे और दो सिपाही इधर-उधर कदम बढ़ाते चले जाते थे। दूल्हा के सामने शहनाई बज रही थीं। तमाशा देखने वाले यह ठाठ-बाट देख कर दंग हो रहे थे।

एक — भई, अच्छी बरात सजाई; और खूब आतशबाजी बनाई है। आतशबाजी क्या बनवाई है, यों कहिए कि चाँदी गलवाई है।

दूसरा — अनार तो आसमान की खबर लाता है, मगर धुआँ आसमान के भी पार हो जाता है।

तख्त ऐसे थे कि जो देखता, दाँतों अँगुली दबाता। एक हाथी ऐसा नादिर बना था कि नकल को असल कर दिखाया था। बाज-बाज तख्त आदमियों को मुगालता देते थे, खास कर चंडूबाजों का तख्त तो ऐसा बनाया था कि चंडूवालों को शर्माया। एक चंडूबाज ने झल्ला कर कहा — इन कुम्हारों को हमसे अदावत है। खुदा इनसे समझे। एक महफिल की तसवीर बहुत ही खूबसूरत थी। फर्श पर बैठे लोग नाच देख रहे हैं, बीच में मसनद बिछी है, दूल्हा तकिया लगाए बैठा है और सामने नाच हो रहा है। सबके पीछे

एक आदमी हाथी पर बैठा रुपए लुटाता आता था और शोहदे गुल मचाते थे। एक-एक रुपए पर दस-दस गिरे पड़ते थे। जान पर खेल कर पिले पड़ते थे।

यह वही सुरैया बेगम हैं जो अभी कल तक मारी-मारी फिरती थीं। जिनको सारी दुनिया में कहीं ठिकाना न था, वही सुरैया बेगम आज शान से दुलहिन बनी बैठी हैं और इस धूम-धाम से उनकी बरात आती है। माँ, बाप, भाई, बहन, सभी मुफ्त में मिल गए। इस वक़्त उनके दिल में तरह-तरह के खयाल आते थे — यहाँ किसी को मालूम न हो जाय कि यही सराय में रहती थी, इसी का नाम अलारक्खी भठियारी था, फिर तो कहीं की न रहूँ। इस खयाल से उन्हें इतनी घबराहट हुई कि इधर दरवाजे पर बरात आई और उधर वह बेहोश हो गईं। सबने दुलहिन को घर लिया। अरे खैर तो है। यह हुआ क्या, किसी ने मिट्टी पर पानी डाल कर सुँघाया। दुलहिन की माँ इधर-उधर दौड़ने लगी।

हशमत — ऐ, वह हुआ क्या अम्माँजान?

फीरोजा — अभी अच्छी खासी बैठी हुई थीं। बैठे-बैठे गश आ गया।

बाहर दूल्हा ने यह खबर सुनी तो अपनी महरी को बुलवाया और समझाया कि जाके पूछो, अगर जरूरत हो तो डॉक्टर को बुलवा

लूँ। महरी ने आकर कहा — हुजूर, अब तबियत बहाल है, मगर पसीना आ रहा हे और पानी-पानी करती हैं। नवाब साहब की जान में जान आई। बार-बार तबीयत का हाल पूछते थे। जब दुलहिन की हालत दुरुस्त हो गई तो हमजोलियों ने दिक करना शुरू किया।

जानी — आखिर इस गश का सबब क्या था? हाँ, सब समझी। अभी सूरत देखी नहीं और गश आने लगे।

फीरोजा — ऐ नहीं, क्या जाने अगली-पिछली कौन बात याद आ गई।

जानी — सूरत से तो खुशी बरसती है, वह हँसी आई। ऐ, लो वह फिर गरदन झुका ली।

हशमत — यहाँ तो पाँव-तले से मिट्टी निकल गई।

फीरोजा — मजा तो जब आता कि निकाह के वक़्त गश आता, मियाँ को बनाते तो, कि अच्छे सब्जकदम हो।

अब सुनिए कि महल से बराबर खबरें आ रही हैं कि तबियत अच्छी है, मगर नवाब साहब को चैन नहीं आता। आखिर डॉक्टर साहब को बुलवा ही लिया। उनका महल में दाखिल होना था कि हमजोलियों ने उन पर आवाजें कसने शुरू किए।

एक — मुआ सूँस है कि आदमी, अच्छे भदभद को बुलाया।

दूसरी — तोंद क्या, चार आनेवाला फर्रुखाबादी तरबूज है।

तीसरा — तम्बाकू का पिंडा है या आदमी है?

चौथी — कह दो, कों अच्छा हकीम बुलावें, इस जंगली हूश की समझ में क्या खाक आएगा।

पाँचवीं — खुदा की मार ऐसे मुए पर!

डॉक्टर साहब कुर्सी पर बैठे, नए आदमी थे, उर्दू वाजिबी ही वाजिबी समझते थे। बोले — दारोद होते कौन जाओ?

महरी — नहीं डॉक्टर साहब, दारोद तो नहीं बतातीं, मगर देखते-देखते गश आ गाय।

डॉक्टर — गास की को बोलते?

महरी — हुजूर मैं समझती नहीं। घास क्या!

डॉक्टर — गास किसको बोलते? तुम लोग क्या गोल-माल करने माँगता। हम जुबान देखे।

फीरोजा — नौज ऐसा हकीम हो। डॉक्टर की दुम बना है।

जानी — कहो, नब्ज देखें।

डॉक्टर — नाबुज कैसा बात। हम लोग नाबुज देखना नहीं माँगता, जुबान दिखाए, जुबान, इस माफिक।

डॉक्टर साहब ने मुँह खोल कर जबान बाहर निकाली।

फीरोजा — मुँह काहे को घंटावेग की गड़हिया है।

जानी — अरे महरी, देखती क्या है, मुँह में धुल झोंक दे।

हशमत — एक दफा फिर मुँह खोले तो मैं पंखे की डंडी हलक में डाल दूँ।

डॉक्टर — जिस माफिक हम जुबान दिखाया, उस माफिक हम देखना माँगता। सब भाई लोग हँसी करता। जुबान दिखाने में क्या बात है।

फीरोजा — नवाब साहब से कहो, पहले इसके दिमाग का इलाज करें।

सुरैया बेगम जब किसी तरह जबान दिखाने पर राजी न हुई तो डॉक्टर साहब ने नब्ज देख कर नुस्खा लिखा और चलते हुए! सुरैया का जी कुछ हलका हुआ। मगर इसी वक़्त मेहमानों के साथ उन्होंने एक ऐसी औरत को देखा जो उनसे खूब वाकिफ थी, वह मैके में इनके साथ बरसों रह चुकी थी। होश उड़ गए कि कहीं यह पूरा हाल सबसे कह दे तो कहीं की न रहूँ। इस औरत

का नाम ममोला था। वह एक शरीर, आवाजें कसने लगी। एक लड़के को गोद में ले कर उसके साथ खेलने लगी और बातों बातों में सुरैया बेगम को सताने लगी। हम खूब पहचानते हैं। सराय में भी देखा था, महल में भी देखा था। अलारक्खी नाम था। इन फिकरों ने सुरैया बेगम को और भी बेचैन कर दिया, चेहरे पर जर्दी छा गई। कमरे में जा कर लेट रहीं, उधर ममोला ने भी समझा कि अगर ज्यादा छेड़ती हूँ तो दुलहिन दुश्मन हो जायगी। चुप हो रही।

बाहर महफिल जमी हुई थी। दूल्हा ज्यों ही मसनद पर बैठा, एक हसीना नजाकत के साथ कदम उठाती मसफिल में आई। यारों ने मुँह-माँगी मुराद पाई। एक बूढ़े मियाँ ने पोपले मुँह से कहा — खुदा खैर करें। इस पर महफिल भर ने कहकहा लगाया और वह परी भी मुसकरा कर बोली — बूढ़े मुँह मुँहासे, इस बुढ़ौती में भी छेड़छाड़ की सूझी! आपने हँस कर जवाब दिया — बीबी, हम भी कभी जवान थे, बूढ़े हुए तो क्या, दिल तो वही है।

यह परी नाचने खड़ी हुई तो ऐसा सितम ढाया कि सारी महफिल लोट-पोट हो गई। नौजवानों में आहिस्ता आहिस्ता बातें होने लगीं।

एक — बे अख्तियार जी चाहता है कि इसके कदमों पर सिर रख दूँ।

दूसरा — कल ही परसों हमारे घर न पड़ जाय तो अपना नाम बदल डालूँ, देख लेना।

तीसरा — कसम खुदा की, मैं तो इसकी गुलामी करने को हाजिर हूँ, पूछो तो कहाँ से आई है।

चौथा — शीन-काफ से दुरुस्त है।

पाँचवाँ — हमसे पूछो, मुरादाबाद से आई है।

हसीना ने सुरीली आवाज में एक गजल गाई। इस गजल ने महफिल को मस्त कर दिया। एक साहब की आँखों से आँसू बह चले, यह वही साहब थे जिन्होंने कहा था कि हम इसे घर डाल लेंगे। लोगों ने समझाया — भई, इस रोने-धोने से क्या मतलब निकलेगा। यह कोई शरीफ की बहू-बेटी तो है नहीं, हम कल ही शिप्पा लड़ा देंगे। मगर इस वक़्त तो खुदा के वास्ते आँसू न बहाओ, वरना लोग हँसेंगे। उन्होंने कहा — भाई, दिल को क्या करूँ, मैं तो खुद चाहता हूँ कि दिल का हाल जाहिर न हो, मगर वह मानता ही नहीं तो मेरा क्या कुसूर है।

यह हजरत तो रो रहे थे। और लोग उसकी तारीफें कर रहे थे। एक ने कहा — यह हमारे शहर की नाक हैं। दूसरा बोला — इसमें क्या शक। आप बहुत ही मिलनसार, नेक, खुश-मिजाज हैं। तीसरे साहब बोले — ऐ हजरत, दूर-दूर तक शोहरत हे इनकी? अब इस शहर में जो कुछ हैं, यही हैं।

इस जलसे में दो-चार देहाती भी बैठे थे। उनको यह बातें नागवार लगीं। मुन्ने मियाँ बोले — वाह, अच्छा दस्तूर है शहर का, पतुरिया को सामने बिठा लिया।

छुट्टन — हमारे देश में अगर पतुरिया को कोई बीच में बिठाए तो हुक्का पानी बन्द हो जाय।

गजराज — पतुरिया बैठे काहे को, पनही न खाय?

नवाब — जी हाँ, शहरवाले बड़े ही बेशरम होते हैं।

आगा — देहातियों की लियाकत हम बेचारे कहाँ से लाएँ?

गजराज — हई है, हम लोग इज्जतदार हैं। कोई नंगे-लुच्चे नहीं हैं।

आगा — तो जनाब, आप शहर की मजलिस में क्यों आए?

गजराज — काहे को बुलाया, क्या हम लोग बिन बुलाए आए?

आगा — अच्छा, अब गुस्से को थूक दीजिए।

जब ये लोग जरा ठंडे हुए, तो उस हसीना ने एक फारसी गजल गाई, इस पर एक कमसिन नवाबजादे ने जो पंद्रह-सोलह साल से ज्यादा न था, ऊँची आवाज में कहा — वाह जानमन, क्यों न हो! इस लड़के के बाप भी महफिल में बैठे थे, मगर इस लड़के के जरा भी शरम न आई।

इसके बाद तायफा बदली गई। यह आकर महफिल में बैठ गई और इसके पीछे साजिंदे भी बैठ गए।

नवाब — ऐं, खैरियत तो है? ऐ साहब, नाचिए-गाइए।

हसीना — कल से तबियत खराब है। दो-एक चीजें आपकी खातिर से कहिए तो गा दूँ।

नवाब — मजा किरकिरा कर दिया, तुम्हारे नाच की बड़ी तारीफ सुनी है।

हसीना — क्या अर्ज करूँ। आज तो नाचने के काबिल नहीं हूँ।

यह कह कर, उसने एक ठुमरी शुरू कर दी। इधर बड़े नवाब साहब महल में गए और जहाँ दुलहिन का पलंग था, वहाँ बैठे। खवास ने चिकनी डली, इलायची, गिलौरियाँ पेश कीं। इत्र की शीशियाँ सामने रखीं। बड़े नवाब साहब हुक्का पीने लगे।

सुरैया बेगम की माँ परदे की आड़ से बोली — आदाब अर्ज है।

बड़े नवाब — बन्दगी, खुदा करे, इसकी औलाद देखो।

बेगम — खुदा आपकी दुआ कबूल करे। शुक्र है कि इस शादी की बदौलत आपकी ज़ियारत हुई।

बड़े नवाब — दुलहिन से पूछूँ। क्यों बेटी, मेरे लड़के से तुम्हारा निकाह होगा। तुम उसे मंजूर करती हो?

सुरैया बेगम ने इसका कुछ जवाब न दिया। बड़े नवाब साहब ने कई मरतबा वही सवाल पूछा, मगर दुलहिन ने सिर उपर न उठाया। आखिर जब हशमत बहू ने आकर कहा — क्या सबको दिक करती हो, जी तो चाहता होगा कि बेनिकाह ही चल दो, मगर नखरों से बाज नहीं आती हो। तब सुरैया बेगम ने आहिस्ता से कहा — हूँ।

बड़ी बेगम — आपने सुना?

बड़े नवाब — जी नहीं, जरा भी नहीं सुना।

बड़ी बेगम ने कहा — आप लोग जरा खामोश हो जायँ तो नवाब साहब लड़की की आवाज सुन लें। जब वह खामोश हो गई तो दुलहिन ने फिर आहिस्ता से कहा — हूँ।

उधर नौशा के दोस्त उससे मजाक कर रहे थे।

एक — आपसे जो पूछा जाय कि निकाह मंजूर है या नहीं, तो आप घंटे भर तक जवाब न दीजिएगा।

दूसरा — और नहीं तो क्या, हाँ कह देंगे?

तीसरा- जब लोग हाथ-पैर जोड़ने लगें, तब आहिस्ते से कहना, मंजूर है।

चौथा — ऐसा न हो, तुम फौरन मंजूर कर लो और उधरवाले हमारी हँसी उड़ाएँ।

दूल्हा — दूल्हा तो नहीं बने मगर बरातें तो बहुत देखी हैं। अगर आप लोगों की यही मरजी है तो मैं दो घंटे में मंजूर करूँगा।

अब मेहर पर तकरार होने लगी। दुलहिन के भाई ने कहा — मेहर चार लाख से कम न होगा। बड़े नवाब साहब बोले — भाई, और भी बढ़ा दो, चार लाख मेरी तरफ से, पूरे आठ लाख का मेहर बँधे।

निकाह के बाद किश्तियाँ आईं, किसी में दुशाला, किसी में भारी-भारी हार, तश्तरियों में चिकनी डली, इलायची, पान, शीशियों में इत्र। किस किश्ती में मिठाइयाँ और मिश्री के कूजे। जब काजी साहब रुखसत हो गए तो दूल्हा ने पाँच अशर्फियाँ नजर दिखाईं। नवाब साहब बाहर आए। थोड़ी देर के बाद महल से शरबत

आया। नवाब साहब ने इक्कीस अशर्फियाँ दीं। दुलहिन के खिदमतगार ने पाँच अशर्फियाँ पाईं। पहले तो दुशाला माँगता रहा, मगर लोगों के समझाने से इनाम ले लिया। दुलहिन के लिए जूठा शरबत भेजा गया। महफिलवालों ने शरबत पिया, हार गले में डाला, इत्र लगाया और पान खा कर गाना सुनने लगे। इतने मे अन्दर से आदमी दूल्हा को बुलाने आया। दूल्हा यहाँ से खुश-खुश चला। जब ड्योढ़ी में पहुँचा तो उसकी बहनों ने आँचल डाला और ले जा कर दुलहिन के मसनद पर बिठा दिया। डोमिनियों ने रीत-रस्म शुरू की। पहले आरसी की रस्म अदा की।

फीरोजा — कहिए, 'बीबी, मुँह खोलो! मैं तुम्हारा गुलाम हूँ।'

नवाब — बीबी मुँह खोलो, मैं तुम्हारे गुलाम का गुलाम हूँ।

हशमत — जब तक हाथ न जोड़ोगे, मुँह न खोलेंगी।

मुबारक महल — ऊपर के दिल से गुलाम बनते हो, दिल से कहो तो आँखें खोल दें।

नवाब — या खुदा, अब और क्योंकर कहूँ, बीबी तुम्हारा गुलाम हूँ। खुदा के लिए जरा सूरत दिखा दो।

दूल्हा ने एक दफा झूठ-मूठ गुल मचा दिया, वह आँखें खोलीं, सखियों ने कहा — झूठ कहते हो, कौन कहता है, आँख खोली।

डोमिनी — बेगम साहब, अब आँखें खोलिए, बेचारे गुलाम बनते-बनते थक गए। आप फकत आँख खोल दें। वह आपको देखे, आप चाहे उन्हें न देखें।

फीरोजा — वाह, दूल्हा तो चाहे पीछे देखे, यह पहले ही घूर लेंगी।

आखिर सुरैया बेगम ने जरा सिर उठाया और नवाब साहब से चार आँखें होते ही शरमा कर गर्दन नीचे कर ली।

नवाब — कहिए, अब आँखें खोलीं या अब भी नहीं खोलीं?

फीरोजा — अभी नाहक आँखें खोलीं, जब कदमों पर टोपी रखते तब आँखें खोलती।

दूल्हा ने इक्कीस पान का बीड़ा खाया, पायजामे में एक हाथ से इजारबन्द डाला और तब सास को सलाम किया। सास ने दुआ दी और गले में मोतियों का हार डाल दिया। अब मिश्री चुनवाने की रस्म अदा हुई। दुलहिन के कंधे, घुटने, हाथ वगैरह पर मिश्री के छोटे-छोटे टुकड़े रखे गए और दूल्हा ने झुक-झुक के खाए। सुरैया बेगम को गुदगुदी मालूम हो रही थी। सालियाँ दूल्हा को

छेड़ रही थीं। किसी ने चुटकी ली, किसी ने गुद्दी पर हाथ फेरा, यह बेचारे इधर-उधर देख कर रह जाते थे।

जानी — फीरोजा बेगम जैसी चरबाँक साली भी न देखीं होगी।

नवाब — एक चरबाँक हो तो कहूँ, यहाँ तो जो है, आफत का परकाला है और फीरोजा बेगम का तो कहना ही क्या, सवार को घोड़े पर से उतार लें।

फीरोजा — क्या तारीफ की है,वाह-वाह!

जानी — क्या कुछ झूठ है? तुम्हारी जबान क्या, कतरनी है!

फीरोजा — और तुम अपनी कहो, दूल्हा को उसी वक़्त से घूर रही हो। उनकी नजर भी पड़ती है तुम्हीं पर।

जानी — फिर पड़ा ही चाहे, पहले अपनी सूरत तो देखो।

फीरोजा — सुरैया बेगम गाती खूब है और बताने में तो उस्ताद हैं, कोई कथन इनके सामने क्या नाचेगा, कहो एक घुँघरू बोले, कहो दोनों बोलें और तलवार पर तो ऐसा नाचती हैं कि बस, कुछ न पूछो।

जानी — सुना, किसी कथक ने दिल लगाके नाचना सिखाया है। नवाब साहब की चाँदी है, रोज मुफ्त का नाच देखेंगे।

हशमत — भई, इतनी बेहयाई अच्छी नहीं, हँसी-दिल्लगी का भी एक मौका होता है।

फीरोजा — हमारी समझ ही में नहीं आता कि वह कौन सा मौका होता है, बरात के दिन न हँसें-बोले तो फिर किस दिन हँसें-बोलें?

इस तरह हँसी-दिल्लगी में रात कट गई। सबेरे चलने की तैयारियाँ होने लगीं। दुलहिन की माँ-बहनें सब की सब रोने लगीं। माँ ने समधिन से कहा — बहन, लौंडी देती हूँ, इस पर मिहरबानी की निगाह रहे। वह बोलीं — क्या कहती हो? औलाद से ज्यादा है। जिस तरह अपने लड़कों को समझती हूँ उसी तरह इसको भी समझूँगी। इसके बाद दूल्हा ने दुलहिन को गोद में उठा कर सुखपाल पर सवार किया। समधिनें गले मिल कर रुखसत हुई।

जब बरात दूल्हा के घर पर आई, तो एक बकरा चढ़ाया गया, इसके बाद कहारियाँ पालकी को उठा कर जनानी ड़योढ़ी पर ले गईं। तब दूल्हा की बहन ने आकर दुलहिन के पाँव दूध से धोए और तलवे में चाँदी की वरक लगाए। इसके बाद दूल्हा ने दुलहिन के दामन पर नमाज पढ़ी। फिर खीर आई, पहले दुलहिन के हाथ पर रख कर दूल्हा को खिलाई गई, फिर दूल्हा के हाथ

पर खीर रखी गई और दुलहिन से कहा गया कि खाओ, तो वह शरमाने लगी। आखिर दूल्हा की बहनों ने दूल्हा का हाथ दुलहिन के मुँह की तरफ बढ़ा दिया। इस तरह यह रस्म अदा हुई, फिर मुँह दिखावे की रस्म पूरी हुई और दूल्हा बाहर आया।

98

शाहज़ादा हुमायूँफर की मौत जिसने सुनी, कलेजा हाथों से थाम लिया। लोगों का खयाल था कि सिपहआरा यह सदमा बरदाश्त न कर सकेगी और सिसक-सिसक कर शाहज़ादे की याद में जान दे देगी। घर में किसी की हिम्मत नहीं पड़ती थी कि सिपहआरा को समझाए या तसकीन दे, अगर किसी ने डरते-डरते समझाया भी तो वह और रोने लगती और कहती – क्या अब तुम्हारी यह मर्जी है कि मैं रोऊँ भी न, दिल ही में घुट-घुट कर मरूँ। दो-तीन दिन तक वह कब्र पर जा कर फूल चुनती रही, कभी कब्र को चूमती, कभी खुदा से दुआ माँगती कि ऐ खुदा, शाहज़ादे बहादुर की सूरत दिखा दे, कभी आप ही आप मुसकराती, कभी कब्र की चट-चट बलाएँ लेती। एक आँख से हँसती, एक आँख से रोती। चौथे दिन वह अपनी बहनों के साथ वहाँ गई। चमन में टहलते-

टहलते उसे आज़ाद की याद आ गई। हुस्नआरा से बोली — बहन, अगर दूल्हा भाई आ जायँ तो हमारे दिल को तसकीन हो। खुदा ने चाहा तो वह दो-चार दिन में आना ही चाहते हैं।

हुस्नआरा — अखबारों से तो मालूम होता है कि लड़ाई खत्म हो गई।

सिपहआरा — कल मैं अम्माँजान को भी लाऊँगी

एक उस्तानी जी भी उनके पास थीं। उस्तानी जी से किसी फकीर ने कहा था कि जुमेरात के दिन शाहज़ादा जी उठेगा। और किसी को तो इस बात का यकीन न आता था, मगर उस्तानी जी को इसका पूरा यकीन था। बोलीं — कल नहीं, परसों बेगम साहब को लाना।

सिपहआरा — उस्तानी जी, अगर मैं यहीं दस-पाँच दिन रहूँ तो कैसा हो?

उस्तानी — बेटा, तुम हो किस फिक्र में! जुमेरात के दिन देखो तो, अल्लाह क्या करता है, परसों ही तो जुमेरात है, दो दिन तो बात करते कटते हैं।

सिपहआरा — खुशी का तो एक महीना भी कुछ नहीं मालूम होता, मगर रंज की एक रात पहाड़ हो जाती है। खैर, दो दिन और सही, शायद आप ही का कहना सच निकले।

हुस्नआरा — उस्तानी जी जो कहेंगी, समझ-बूझ कर कहेंगी। शायद अल्लाह को इस गम के बाद खुशी दिखानी मंजूर हो।

सिपहआरा ने कब्र पर चढ़ाने के लिए फूल तोड़ते हुए कहा — फूल तो दो-एक दिन हँस भी लेते हैं, मगर कलियाँ बिन खिले मुरझा जाती हैं, उन पर हमें बड़ा तरस आता है।

उस्तानी — जो खिले वे भी मुरझा गए, जो नहीं खिले वे भी मुरझा गए। इनसान का भी यही हाल है, आदमी समझता है कि मौत कभी आएगी ही नहीं। मकान बनवाएगा तो सोचेगा कि हजार बरस तक इसी बुनियाद ऐसी ही रहे; लेकिन यह खबर ही नहीं कि 'सब ठाट पड़ा रह जावेगा जब लाद चलेगा बनजारा।' सबसे अच्छे वे लोग हैं जिनको न खुशी से खुशी होती है, न गम से गम।

हुस्नआरा — क्यों उस्तानी जी, आप को इस फकीर की बात का यकीन है?

उस्तानी — अब साफ-साफ कह दूँ, आज के दूसरे दिन हुमायूँफर यहीं न बैठे हों तो सही।

हुस्नआरा — तुम्हारे मुँह में घी-शक्कर, कल भी कुछ दूर नहीं है, कल के बाद ही तो परसों आएगा।

सिपहआरा — बाजीजान, मुझे तो जरा यकीन नहीं आता। भला आज तक किसी ने यह भी सुना है कि मुर्दा कब्र से निकल आया?

यह बात होती ही थी कि कब्र के पास से हँसी की आवाज आई, सबको हैरत थी कि यह कहकहा किसने लगाया। किसी की समझ में यह बात न आई।

दस बजते-बजते सब की सब घर लौट आईं। यहाँ पहिले ही से एक शाह साहब बैठे हुए थे। चारों बहनों को देखते ही महरी ने आकर कहा — हुजूर, यह बड़े पहुँचे हुए फकीर हैं, यह ऐसी बातें कहते हैं, जिनसे मालूम होता है कि शाहज़ादा साहब के बारे में लोगों को धोखा हुआ था। वह मरे नहीं हैं, बल्कि जिंदा हैं। उस्तानी जी ने शाह साहब को अन्दर बुलाया और बोलीं — आपको इस वक़्त बड़ी तकलीफ हुई, मगर हम ऐसी मुसीबत में गिरफ्तार हैं कि खुदा सातवें दुश्मन को भी न दिखाए।

शाह साहब — खुदा की कारसाजी में दखल देना छोटा मुँह बड़ी बात है। मगर मेरा दिल गवाही देता है कि शाहज़ादा हुमायूँफर जिंदा हैं। यों तो यह बात मुहाल मालूम होती है; लेकिन इनसान

क्या, और उसकी समझ क्या, इतना तो किसी को मालूम ही नहीं कि हम कौन हैं, फिर कोई खुदा की बातों को क्या समझेगा?

उस्तानी — आप अभी तो यहीं रहेंगे?

शाह साहब — मैं उस वक़्त यहाँ से जाऊँगा, जब दूल्हा के हाथ में दुलहिन का हाथ होगा।

उस्तानी — मगर दुलहिन को तो इस बात का यकीन ही नहीं। आता आप कुछ कमाल दिखाएँ तो यकीन आए।

शाह साहब — अच्छा तो देखिए -

शाह साहब ने थोड़ी सी उरद मँगवाई और उस पर कुछ पढ़ कर जमीन पर फेंक दी। आध घंटा भी न गुजरा था कि वहाँ की जमीन फट गई।

बड़ी बेगम — अब इससे बढ़ कर क्या कमाल हो सकता है।

सिपहआरा — अम्माँजान, अब मेरा दिल गवाही देता है कि शायद शाह साहब ठीक कहते हों! (हुस्नआरा से) बाजी, अब तो आप फकीरों के कमाल की कायल हुई।

उस्तानी — हाँ बेटा, इसमें शक क्या है। फकीरों का कोई आज तक मुकाबिला कर सका है? वह लोग बादशाही की क्या हकीकत समझते हैं!

शाह साहब — फकीरों पर शक उन्हीं लोगों को होता है जो कामिल फकीरों की हालत से वाकिफ नहीं, वरना फकीरों ने मुर्दों को जिंदा कर दिया है, मंजिलों से आपस में बातें की हैं, और आगे का हाल बता दिया है।

बेगम साहब ने अपने रिश्तेदारों को बुलाया और यह खबर सुनाई। इस पर लोग तरह-तरह के शुबहे करने लगे। उन्हें यकीन ही नहीं था कि मुर्दा कभी जिंदा हो सकता है।

दूसरे दिन बेगम साहब ने खूब तैयारियाँ कीं। घर भर में सिर्फ हुस्नआरा के चेहरे से रंज जाहिर होता था, बाकी सब खुश थे कि मुँह-माँगी मुराद पाई। हुस्नआरा को खौफ था, कहीं सिपहआरा की जान के लाले न पड़ जायँ।

तमाम शहर में यह खबर मशहूर हो गई और जुमेरात को चार घड़ी दिन रहे से मेला जमा होने लगा। वह भीड़ हो गई कि कंधे से कंधा छिलता था। लोगों मे ये बातें हो रही थीं -

एक — मुझे तो यकीन है कि शाहज़ादे आज जिंदा हो जायँगे।

दूसरा — भला फकीरों की बात कहीं गलत होती है?

तीसरा — और ऐसे कामिल फकीर की!

चौथा — विंध्याचल पहाड़ की चोटी पर बरसों नीम की पत्तियाँ उबाल कर नमक के साथ खाई हैं। कसम खुदा की, इसमें जरा झूठ नहीं।

पाँचवाँ — सुलतान अली की बहू तीन दिन तक खून थूका कीं, वैद्य भी आए, हकीम भी आए, पर किसी से कुछ न हुआ, तब मैं जाके इन्हीं शाह साहब को बुला लाया। जला कर एक नजर उसको देखा और बोले, क्या ऐसा हो सकता है कि सब लोग वहाँ से हट जायँ, सिर्फ मैं और यह लड़की रहे। लड़की के बाप को शाह साहब पर पूरा भरोसा था। सब आदमियों को हटाने लगा। यह देख कर शाह साहब हँसे और कहा, इस लड़की को खून नहीं आता! यह तो बिलकुल अच्छी है। यह कह कर शाह साहब ने लड़की के सिर पर हाथ रखा, तब से आज तक उसे खून नहीं आया। फकीरों ही से दुनिया कायम है।

इतने में खबर हुई कि दुलहिन घर से रवाना हो गई हैं। तमाशा देखने वालों की भीड़ और भी ज्यादा हो गई, उधर सिपहआरा बेगम ने घर से बाहर पाँव निकाला तो बड़ी बेगम ने कहा — खुदा ने चाहा तो आज फतह है, अब हमें जरा भी शक नहीं रहा।

सिपहआरा — अम्माँजान, बस अब इधर या उधर, या तो शाहज़ादे को ले के आऊँगी, या वहीं मेरी भी कब्र बनेगी।

बेगम — बेटी, इस वक़्त बदसगुनी की बातें न करो।

सिपहआरा — अम्माँजान, दूध तो बख्श दो; यह आखिरी दीदार है। बहन, कहा-सुना माफ करना, खुदा के लिए मेरा मातम न करना। मेरी तसवीर आबनूस के संदूक में है, जब तुम हँसो-बोलो तो मेरी तसवीर भी सामने रख लिया करना। ऐ अम्माँजान, तुम रोती क्यों हो?

बहारबेगम — कैसी बातें करती हो सिपहआरा, वाह!

रूहअफजा — बहन, जो ऐसा ही है तो न जाओ।

बड़ी बेगम — हुस्नआरा, बहन को समझाओ।

हुस्नआरा की रोते-रोते हिचकी बंध गई। मुश्किल से बोली — क्या समझाऊँ।

सिपहआरा — अम्माँजान, आपसे एक अर्ज है, मेरी कब्र भी शाहज़ादे की कब्र के पास ही बनवाना। जब तक तुम अपने मुँह से न कहोगी, मैं कदम बाहर न रखूँगी।

बड़ी बेगम — भला बेटी, मेरे मुँह से यह बात निकलेगी! लोगो, इसको समझाओ, इसे क्या हो गया है।

उस्तानी — आप अच्छा कह दें, बस।

सिपहआरा — मैं अच्छा-अच्छा नहीं जानती, जो मैं कहूँ वह कहिए।

उस्तानी — फिर दिल को मजबूत करके कह दो साहब।

बड़ी बेगम — ना, हमसे न कहा जायगा।

हुस्नआरा — बहन, जो तुम कहती हो वही होगा। अल्लाह वह घड़ी न दिखाए, अब अब हठ न करो।

सिपहआरा — मेरी कब्र पर कभी-कभी आँसू बहा लिया करना बाजीजान। मैं सोचती हूँ कि तुम्हारा दिल कैसे बहलेगा।

यह कह कर सिपहआरा बहनों से गले मिली और बस की बस रवाना हुई। जब सवारियाँ किले के फाटक पर पहुँचीं तो शाह साहब ने हुक्म दिया, कि दुलहिन घोड़े पर सवार हो कर अन्दर दाखिल हो। बेगम साहब ने हुक्म दिया, घोड़ा लाया जाय। सिपहआरा घोड़े पर सवार हुई और घोड़े को उड़ाती हुई कब्र के पास पहुँच कर बोली — अब क्या हुक्म होता है? खुदा आओगे या हमको भी यहीं सुलाओगे। हम हर तरह राजी हैं।

सिपहआरा का इतना कहना था कि सामने रोशनी नजर आई। ऐसी तेज रोशनी थी कि सबकी नजर झपक गई और एक लहमे में शाहज़ादा हुमायूँफर घोड़े पर सवार आते हुए दिखाई दिए।

उन्हें देखते ही लोगों ने इतना गुल मचाया कि सारा किला गूँज उठा। सबको हैरत थी कि यह क्या माजरा है। वह मुर्दा जिसकी कब्र बन गई हो और जिसको मरे हुए हफ्तों गुजर गए हों, वह क्यों कर जी उठा!

हुस्नआरा और शाहज़ादे की बहन खुरशेद में बातें होने लगीं -

हुस्नआरा — क्या कहूँ, कुछ समझ में नहीं आता!

खुरशेद — हमारी अक्ल भी कुछ काम नहीं करती।

हुस्नआरा — तुम अच्छी तरह कह सकती हो कि हुमायूँफर यही हैं?

खुरशेद — हाँ साहब, यही हैं। यही मेरा भाई है।

और लोगों की भी यही हैरत हो रही थी। अकसर आदमियों को यकीन ही नहीं आता था कि यह शहजादा हैं?

एक आदमी — भाई, खुदा की जात से कोई बात बईद नहीं। मगर यह सारी करामात शाह साहब की है।

तीसरा — जभी तो दुआ में इतनी ताकत है।

99

नवाब वजाहत हुसैन सुबह को जब दरबार में आए तो नींद से आँखें झुकी पड़ती थीं। दोस्तों मे जो आता था, नवाब साहब को देख कर पहले मुसकराता था। नवाब साहब भी मुसकरा देते थे। इन दोस्तों में रौनकदौला और मुबारक हुसैन बहुत बेतकल्लुफ थे। उन्होंने नवाब साहब से कहा – भाई, आज चौथी के दिन नाच न दिखाओगे? कुछ जरूरी है कि जब कोई तायफा बुलवाया जाय तो बदी ही दिल में हो? अरे साहब, गाना सुनिए, नाच देखिए, हँसिए, बोलिए, शादी को दो दिन भी नहीं हुए और हुजूर मुल्ला बन बैठे। मगर यह मौलवीपन हमारे सामने न चलने पाएगा। और दोस्तों ने भी उनकी हाँ में हाँ मिलाई। यहाँ तक कि मुबारक हुसैन जा कर कई तायफे बुला लाए, गाना होने लगा। रौनकदौला ने कहा – कोई फारसी गजल कहिए तो खूब रंग जमे।

हसीना – रंग जमाने की जिसको जरूरत हो वह यह फिक्र करे, यहाँ तो आ के महफिल में बैठने भर की देर है। रंग आप ही आप जम जायगा। गा कर रंग जमाया तो क्या जमाया?

रौनक – हुस्न का भी बड़ा गरूर होता है, क्या कहना!

हसीना — होता ही है। और क्यों न हो, हुस्न से बढ़ कर कौन दौलत है?

बिगड़े दिल — अब आपस ही में दाना बदलौवल होगा या किसी की सुनोगी भी, अब कुछ गाओ।

रौनक — यह गजल शुरू करो —

बहार आई है भर दे बादये गुलगूँ से पैमाना,
रहे साकी तेरा लाखों बरस आबाद मैखाना।

इतने में महलसरा से दूल्हा की तलबी हुई। नवाब साहब महल में गए तो दुलहिन और दूल्हा को आमने-सामने बैठाया गया। दस्तरख़्वान बिछा, चाँदी के लगन रखी गई, डोमिनियाँ आईं और उन्होंने दुलहिन के दोनों हाथों में दूल्हा के हाथ से तरकारी दी, फिर दुलहिन के हाथों से दूल्हा को तरकारी दी, तब गाना शुरू किया।

अब तरकारियाँ उछलने लगीं। दूल्हा को साली ने नारंगी खींच मारी, हशमत बहू और जानी बेगम ने दूल्हा को बहुत दिक किया। आखिर दूल्हा ने भी झल्ला कर एक छोटी सी नारंगी फीरोजा बेगम को ताक कर लगाई।

जानी बेगम — तो झेंप काहे की है। शरमाती क्या हो?

मुबारक महल — हाँ, शरमाने की क्या बात है, और है भी तो तुमको शर्म काहे की। शरमाए तो वह जिसको कुछ हया हो।

हशमत बहू — तुम भी फेंको फीरोजा बहन! तुम तो ऐसी शरमाईं कि अब हाथ ही नहीं उठता।

फीरोजा — शरमाता कौन है, क्यों जी फिर मैं भी हाथ चलाऊँ?

दूल्हा — शौक से हुजूर हाथ चलाएँ, अभी तक तो जबान ही चलती थी।

फीरोजा — अब क्या जवाब दूँ, जाओ छोड़ दिया तुमको।

अब चारों तरफ से मेवे उछलने लगे। सब की सब दूल्हे पर ताक-ताक कर निशाना मारती थीं। मगर दूल्हा ने बस एक फीरोजा को ताक लिया था, जो मेवा उठाया, उन्हीं पर फेंका। नारंगी पर नारंगी पड़ने लगी।

थोड़ी देर तक चहल-पहल रही।

फीरोजा — ऐसे ढीठ दूल्हा भी नहीं देखे।

दूल्हा — और ऐसी चंचल बेगम भी नहीं देखी। अच्छा यहाँ इतनी हैं, कोई कह दे कि तुम जैसी शोख और चंचल औरत किसी ने आज तक देखी है?

फीरोजा — अरे, यह तुम हमारा नाम कहाँ से जान गए साहब?

दूल्हा — आप मशहूर औरत हैं या ऐसी-वैसी। कोई ऐसा भी है जो आपको न जानता हो?

फीरोजा — तुम्हें कसम है, बताओ, हमारा नाम कहाँ से जान गए?

मुबारक महल — बड़ी ढीठ है। इस तरह बातें करती हैं, जैसे बरसों की बेतकल्लफी हो।

फीरोजा — ऐ तो तुमको इससे क्या, इसकी फिक्र होगी तो हमारे मियाँ को होगी, तुम काहे को काँपती जाती हो।

दूल्हा — आपके मियाँ से और हमसे बड़ा याराना है।

फीरोजा — याराना नहीं वह है। वह बेचारे किसी से याराना नहीं रखते, अपने काम से काम है।

दूल्हा — भला बताओ तो, उनका नाम क्या है। नाम लो तो जानें कि बड़ी बेतकल्लुफ हो।

फीरोजा — उनका नाम, उनका नाम है नवाब वजाहत हुसैन।

दूल्हा — बस, अब हम हार गए, खुदा की कसम, हार गए।

मुबारक महल — इनसे कोई जीत ही नहीं सकता। जब मर्दों से ऐसी बेतकल्लुफ हैं तो हम लोगों की बात ही क्या है, मगर इतनी शोखी नहीं चाहिए।

फीरोजा — अपनी-अपनी तबीयत, इसमें भी किसी का इजारा है।

दूल्हा — हम तो आपसे बहुत खुश हुए, बड़ी हँस-मुख हो। खुदा करे, रोज दो-दो बातें हो जाया करें।

जब सब रस्में हो चुकीं तो और औरतें रुखसत हुई। सिर्फ दूल्हा और दुलहिन रह गए।

नवाब — फीरोजा बेगम तो बड़ी शोख मालूम होती है। बाज-बाज मौके पर मैं शरमा जाता था। पर वह न शरमाती थीं। जो मेरी बीवी ऐसी होती तो मुझसे दम भर न बनती। गजब खुदा का! गैर-मर्द से इस बेतकल्लुफी से बातें करना बुरा है। तुमने तो पहले इन्हें काहे को देखा होगा।

सुरैया — जैसे मुफ्त की माँ मिल गई और मुफ्त की बहनें बन बैठीं, वैसे ही यह भी मुफ्त मिल गईं।

नवाब — मुझे तो तुम्हारी माँ पर हँसी आती थी कि बिलकुल इस तरह पेश आती थीं जैसे कोई खास अपने दामाद के साथ पेश आता है।

सुरैया — आप भी तो फीरोजा बेगम को खूब घूर रहे थे।

नवाब — क्यों मुफ्त में इलजाम लगाती हो, भला तुमने कैसे देख लिया?

सुरैया — क्यों? क्या मुझे कम सूझता है?

नवाब — गरदन झुकाए दुलहिन बनी तो बैठी थीं, कैसे देख लिया कि मैं घूर रहा था! और ऐसी खूबसूरत भी तो नहीं हैं।

सुरैया — मुझसे खुद उसने कसमें खा कर यह बात कही। अब सुनिए, अगर मैंने सुन पाया कि आपने किसी से दिल मिलाया, या इधर-उधर सैर-सपाटे करने लगे तो मुझसे दम भर भी न बनेगी।

नवाब — क्या मजाल, ऐसी बात है भला!

सुरैया — हाँ, खूब याद आया, भूल ही गई थी। क्यों साहब, यह नारंगियाँ खींच मारना क्या हरकत थी? उनकी शोखी का जिक्र करते हो और अपनी शरारत का हाल नहीं कहते।

नवाब — जब उसने दिक किया तो मैं भी मजबूर हो गया।

सुरैया — किसने दिक किया? वह भला बेचारी क्या दिक करती तुमको! तुम मर्द और वह औरतजात।

नवाब — अजी, वह सवा मर्द है। मर्द उसके सामने पानी भरे।

सुरैया — तुम भी छँटे हुए हो!

उसी कमरे में कुछ अखबार पड़े थे, सुरैया बेगम की निगाह उन पर पड़ी तो बोलीं — इन अखबारों को पढ़ते-पढ़ाते भी हो या यों ही रख छोड़े हैं।

नवाब — कभी-कभी देख लेता हूँ। यह देखो, ताजा अखबार है। इसमें आज़ाद नाम के एक आदमी की खूब तारीफ छपी है।

सुरैया — जरा मुझे तो देना, अभी दे दूँगी।

नवाब — पढ़ रहा हूँ, जरा ठहर जाओ।

सुरैया — और हम छीन लें तो! अच्छा जोर-जोर से पढ़ो, हम भी सुनें।

नवाब — उन्होंने तो लड़ाई में एक बड़ी फतह पाई है।

सुरैया — सुनाओ-सुनाओ। खुदा करें, वह सुर्खरू हो कर आएँ।

नवाब — तुम इनको कहाँ से जानती हो, क्या कभी देखा है।

सुरैया — वाह, देखने की अच्छी कहीं। हाँ, इतना सुना है कि तुर्कों की मदद करने के लिए रूम गए थे।

100

शाहज़ादा हुमायूँफर के जी उठने की खबर घर-घर मशहूर हो गई। अखबारों में जिसका जिक्र होने लगा। एक अखबार ने लिखा, जो लोग इस मामले में कुछ शक करते है उन्हें सोचना

चाहिए कि खुदा के लिए किसी मुर्दे को जिला देना कोई मुश्किल बात नहीं। जब उनकी माँ और बहनों को पूरा यकीन है तो फिर शक की गुंजाइश नहीं रहती।

दूसरे अखबार ने लिखा... हम देखते हैं कि सारा जमाना दीवाना हो गया है। अगर सरकार हमारा कहना माने तो हम उसको सलाह देंगे कि सबको एक सिरे से पागलखाने भेज दे। गजब खुदा का, अच्छे-अच्छे पढ़े आदमियों को पूरा यकीन है कि हुमायूँफर जिंदा हो गए। हम इनसे पूछते हैं, यारो, कुछ अक्ल भी रखते हो। कहीं मुर्दे भी जिंदा होते हैं? भला कोई अक्ल रखनेवाला आदमी यह बात मानेगा कि एक फकीर की दुआ से मुर्दा जी उठा। कब्र बनी की बनी ही रही ओर हुमायूँफर बाहर मौजूद हो गए। जो लोग इस पर यकीन करते हैं उनसे ज्यादा अहमक कोई नहीं। हम चाहते हैं कि सरकार इस मामले में पूरी तहकीकात करे। बहुत मुमकिन है कि कोई आदमी शाहज़ादी बेगम को बहका कर हुमायूँफर बन बैठा हो। जिसके मानी यह हैं कि वह शाहज़ादी बेगम की जायदाद का मालिक हो गया।

जिले के हुक्काम को भी इस मामले में शक पैदा हुआ। कलेक्टर ने पुलिस के कप्तान को बुला कर सलाह की कि हुमायूँफर से मुलाकात की जाय। यह फैसला करके दोनों घोड़े पर सवार हुए और दन से शाहज़ादी बेगम के मकान पर जा पहुँचे। हुमायूँफर

के भाई ने सबसे हाथ मिलाया और इज्जत के साथ बैठाया। जनाने में खबर हुई तो शाहज़ादी बेगम ने कहा — हम शाह साहब के हुक्म के बगैर हुमायूँफर को बाहर न जाने देंगे।

लेकिन जब शाह साहब से पूछा गया तो उन्होंने साफ कह दिया कि हुमायूँफर महलसरा से बाहर नहीं निकल सकते। वह बाहर आए और मैंने अपना रास्ता लिया। हाँ, साहब को जो कुछ पूछना हो, लिख कर पूछ सकते हैं। आखिर हुमायूँफर ने साहब के नाम पर एक रुक्का लिख कर भेजा। साहब ने अपनी जेब से हुमायूँफर का एक पुराना खत निकाला और दोनों खतों को एक सा पाकर बोले — अब तो मुझे यकीन आ गया कि यह शाहज़ादा हुमायूँफर ही हैं, मगर समझ में नहीं आता, वह फकीर क्यों उन्हें हमसे मिलने नहीं देता।

आखिर उन्होंने हुमायूँफर के भाई से पूछा, आपको खूब मालूम है कि हुमायूँफर यही हैं?

लड़का हँस कर बोला — आप को यकीन ही नहीं आता तो क्या किया जाय, आप खुद चल कर देख लीजिए।

शाहज़ादी बेगम ने जब देखा कि हुक्काम टाले न टलेंगे तो उन्होंने शाहज़ादा को एक कमरे में बैठा दिया। हुक्काम बरामदे में

बैउठाए गए। साहब ने पूछा — वेल शाहज़ादा हुमायूँफर, यह सब क्या बात है?

शाहज़ादा — खुदा के कारखाने में किसी को दखल नहीं।

साहब — आप शाहज़ादा हुमायूँफर ही हैं या कोई और?

शाहज़ादा — क्या खूब, अब तक शक है?

साहब — हमने आपको कुछ दिया था, आपने पाया या नहीं?

शाहज़ादा — मुझे याद नहीं। आखिर वह कौन चीज थी?

साहब — याद कीजिए।

साहब ने हुमायूँफर से और कई बातें पूछीं, मगर वह एक का भी जवाब न दे सके। तब तो साहब को यकीन हो गय कि यह हुमायूँफर नहीं है।

101

आज़ाद पाशा को इस्कंदरिया में कई दिन रहना पड़ा। हैजे की वजह से जहाजों का आना-जाना बन्द था। एक दिन उन्होंने खोजी से कहा — भाई, अब तो यहाँ से रिहाई पाना मुश्किल है।

खोजी — खुदा का शुक्र करो कि बचके चले आए, इतनी जल्दी क्या है?

आज़ाद — मगर यार, तुमने वहाँ नाम न किया, अफसोस की बात है।

खोजी — क्या खूब, हमने नाम नहीं किया तो क्या तुमने नाम किया? आखिर आपने क्या किया, कुछ मालूम तो हो, कौन गढ़ फतह किया, कौन लड़ाई लड़े! यहाँ तो दुश्मनों को खदेड़-खदेड़ के मारा। आप बस मिसों पर आशिक हुए, और तो कुछ नहीं किया।

आज़ाद — आप भी तो बुआ जाफरान पर आशिक हुए थे!

मीडा — अजी, इन बातों को जाने दो, कुछ अपने मुल्क के रईसों का हाल बयान करो, वहाँ कैसे रईस हैं?

खोजी — बिल्कुल तबाह, फटे हाल, अनपढ़, उनके शौक दुनिया से निराले हैं। पतंगबाजी पर मिटे हुए, तरह तरह के पतंग बनते हैं, गोल, माहीजाल, माँगदार, भेड़िया, तौकिया, खरबूजिया, लँगोटिया, तुक्कल, ललपत्ता, कलपत्ता। दस-दस अशर्फियों के पेंच होते हैं। तमाशाइयों की वह भीड़ होती है कि खुदा की पनाह! पतंगबाज अपने फन के उस्ताद। कोई ढील लड़ाने का उस्ताद है, कोई घसीट लड़ाने का यकता। इधर पेंच पड़ा, उधर गोता देते ही

कहा, वह काटा! लूटनेवालों की चाँदी है। एक-एक दिन में दस-दस सेर डोर लूटते हैं।

आज़ाद – क्यों साहब, यह कोई अच्छी आदत है?

खोजी – तुम क्या जानो, तुम तो किताब के कीड़े हो। सच कहना, पतंग लड़ाया है कभी?

आज़ाद – हमने पतंग की इतनी किस्में भी नहीं सुनी थीं।

खोजी – इसी से तो कहता हूँ, जाँगलू हो। भला पेटा जानते हो, किसे कहते है?

आज़ाद – हाँ हाँ, जानता क्यों नहीं, पेटा इसी को कहते हैं न कि किसी की डोर तोड़ ली जाय।

खोजी – भई, निरे गाउदी हो।

मीडा – अच्छा बोलो, करते क्या हैं,क्या सारा दिन पतंग ही उड़ाया करते हैं?

खोजी – नहीं साहब, अफीम और चंडू कसरत से पीते हैं।

आज़ाद – और कबूतरबाजी का तो हाल बयान करो।

क्लारिसा – हमने सुना है कि हिंदोस्तान की औरतें बिलकुल जाहिल होती है।

आज़ाद — मगर हुस्नआरा को देखो तो खुश हो जाओ।

क्लारिसा — हम तो बेशक खुश होंगे, मगर खुदा जाने, वह हमको देख कर खुश होती हैं या नहीं।

मीडा — नहीं, उम्मीद नहीं कि हम दोनों को देख कर खुश हों। जब हमको और तुमको देखेंगी तो उनको बड़ा रंज होगा।

क्लारिसा — मुझे क्यों नाहक बदनाम करती हो, मुझे आज़ाद से मतलब? मैं तुम्हारी तरह किसी पर फिसल पड़ने वाली नहीं।

मीडा — जरा होश की बातें करो। जब उन्होंने करोड़ों बार नाक रगड़ी तब मैंने मंजूर किया। वरना इनमें है क्या? न हसीन, न जवान, न रंगीले।

खोजी — और हम? हमको क्या समझती हो आखिर?

मीडा — तुम बड़े तरहदार जवान हो। और तो और, डील डौल में तो कोई तुम्हारा सानी नहीं।

आज़ाद — हम भी किसी जमाने में ख्वाजा साहब की तरह शहजोर थे, मगर अब वह बात कहाँ, अब तो मरे-बूढ़े आदमी हैं।

खोजी — अभी अभी क्या है, जवानी में हमको देखिएगा।

आज़ाद — आपकी जवानी शायद कब्र में आएगी।

खोजी — अजी, क्या बकते हो, अभी हमें शादी करनी है भाई।

मीडा — तुम मिस क्लारिसा के साथ शादी कर लो।

क्लारिसा — आप ही को मुबारक रहें।

आज़ाद — भई, यहाँ तुम्हारी शादी हो जाय तो अच्छी बात है, नहीं तो लोगों को शक होगा कि इन्हें किसी ने नहीं पूछा।

खोजी — वल्लाह, यह तो तुमने एक ही सुनाई। अब हमें शादी की जरूरत आ पड़ी।

आज़ाद — मगर तुम्हारे लिए तो कोई खूबसूरत चाहिए जिस पर सबकी निगाह पड़े।

खोजी — जी हाँ, जिसमें आपको भी घूरा-घारी करने का मौका मिले। यहाँ ऐसे अहमक नहीं हैं। जोरू के मामले में बंदा किसी से याराना नहीं रखता।

आज़ाद तो सैर करने चले गए। खोजी ने मिस क्लारिसा से कहा — हमारे लिए कोई ऐसी बीवी ढूँढ़ो जिस पर सारी दुनिया के शाहज़ादे जान देते हों। आज़ाद का खटका जरूर है, यह आदमी भाँजी मारने से बाज न आएगा। यह तो इसकी आदत में दाखिल है कि जो औरत हमारे ऊपर रीझेगी उसको बहकाएगा। लेकिन यह भी जानता हूँ कि जो औरत एक बार हमें देख लोगी, उसे

आज़ाद क्या, आज़ाद के बाप भी न बहका सकेंगे। मुझे देख-देख कर यह हजरत जला करते हैं।

क्लारिसा — आज़ाद तुम्हारी सी जवानी कहाँ से लाएँ।

खोजी — बस-बस, खुदा तुमको सलामत रखें। खुदा करे, तुमको मेरा सा शौहर मिले। इससे ज्यादा और क्या दुआ दूँ।

क्लारिसा — कहीं तुम्हारी शामत तो नहीं आई है?

खोजी — क्यों, क्या हुआ? आखिर हममें कौन बात नहीं है, कुछ मालूम हो, अंधा हूँ, काना हूँ, लूला हूँ, लंगड़ा हूँ। आखिर मुझमें कौन सी बात नहीं है?

क्लारिसा — पहले जा कर मुँह बनवाओ। चले हैं हमारे साथ शादी करने, कुछ पागल तो नहीं हो गए हो?

खोजी — पागल! ठीक, मेरे पागलपने का हाल मिस्र, अदन, रूम, हिंदोस्तान की औरतों से जा कर पूछ लो, आखिर कुछ देख कर ही तो वह सब मुझ पर आशिक हुई थीं।

इतने में मियाँ आज़ाद ने आकर पूछा — क्या बातें हो रही है? क्लारिसा, तुम इनके फेर में न आना। यह बड़े चालाक आदमी हैं। यह बातों ही बातों में अपना रंग जमा लेते हैं।

खोजी — खैर, अब तो तुमने इनसे कह ही दिया, वरना आज ही शादी होती। खैर, आज नहीं, कल सही। बिना शादी किए तो अब मानता नहीं।

क्लारिसा — तो आप अपने को इस काबिल समझने लगे?

खोजी — काबिल के भरोसे न रहिएगा। मेरी जबान में जादू है।

आज़ाद — तुम्हारे लिए तो बुआ जाफरान की सी औरत चाहिए।

खोजी — अगर मिस क्लारिसा ने मंजूर न किया तो और कहीं शिप्पा लगाएँगे। मगर मुझे तो उम्मीद है कि मिस क्लारिसा आजकल में जरूर मंजूर कर लेंगी।

आज़ाद — अजी, मैंने तुम्हारे लिए वह औरत तलाश कर रखी है कि देख कर फड़क उठो, वह तुम पर जान देती है। बस, कल शादी हो जायगी।

खोजी बहुत खुश हुए। दूसरे दिन आज़ाद ने एक गाड़ी मँगवाई। आप दोनों मिसों के साथ गाड़ी में बैठे, खोजी को कोच-बक्स पर बैठाया और शादी करने चले। खोजी ऊपर से हटो-बचो की हाँक लगाते जाते थे। एक जगह एक बहरा गाड़ी के सामने आ गया। यह गुल मचाते ही रहे और गाड़ी उसके कल्ले पर पहुँच गई।

आप बहुत ही बिगड़े, भला बे गीदी, अब और कुछ बस न चला तो आज जान देने आ गया।

आज़ाद — क्या है भाई, खैरियत तो है?

खोजी — अजी, आज वह बहुरूपिया नया भेस बदल कर आया, हम गला फाड़-फाड़ कर चिल्ला रहे हैं और वह सुनता ही नहीं। तब मैं समझा कि हो न हो बहुरूपिया है। गाड़ी के सामने अड़ जाने से उसका मतलब था कि हमें पकड़ा दे। वह तो दो-चार दिन में लोट-पोट के चंगा हो जाता, मगर हमारी गाड़ी पकड़ जाती। अब पूछो कि तुमको क्या फिक्र है, हम लोग भी तो सवार हैं। इसका जवाब हमसे सुनिए। मिसें तो औरत बन कर छूट जातीं, रहे हम और तुम। तो जिसकी नजर पड़ती, हमीं पर पड़ती। तुमको लोग खिदमतगार समझते, हम रईस के धोखे में धर लिए जाते। बस, हमारे माथे जाती।

इतने में दस-ग्यारह दुंबे सामने से आए। खोजी ने चरवाहे को उसी तीखी चितवन से देखा कि खा ही जायँगे। उसे इनका कैंड़ा देख कर हँसी आ गई। बस आप आग ही तो हो गए। कोचवान को डाँट बताई। रोक ले, रोक ले।

आज़ाद — अब क्या मुसीबत पड़ी!

खोजी — इस बदमाश से कहो बाग रोक ले, मैं उस चरवाहे को सजा दे आऊँ तो बात करूँ। बदमाश मुझे देख कर हँस दिया, कोई मसखरा समझा है।

आज़ाद — कौन था, कौन, जरा नाम तो सुनूँ।

खोजी — अब राह चलते का नाम मैं क्या जानूँ। कहिए, उटक्करलैस कोई नाम बता दूँ। मुझे देखा तो हँसे आप, मेरी आँखों में खून उतर आया।

आज़ाद — अरे यार, तुम्हें देख कर, मारे खुशी के हँस पड़ा होगा।

खोजी — भई, तुमने सच कहा, यही बात है।

आज़ाद — अब बताओ, हो गधे कि नहीं, जो मैं न समझाता तो फिर?

खोजी — फिर क्या, एक बेगुनाह का खून मेरी गरदन पर होता।

एकाएक कोचवान ने गाड़ी रोक ली। खोजी घबरा कर कोच-बक्स से उतरे तो पायदान से दामन अटका और मुँह के बल गिरे, मगर जल्दी से झाड़-पोंछ कर उठ खड़े हुए। आज़ाद और दोनों औरतें हँसने लगीं।

आज़ाद — अजी, गर्द-वर्द पोंछो, जरा आदमी बनो। जो दुलहिन वाले देख लें तो कैसी हो?

खोजी — अरे यार, गर्द-वर्द तो झाड़ चुका, मगर यह तो बताओ कि यह किसकी शरारत है, मैं तो समझता हूँ, वही बहुरूपिया मेरी आँखों में धूल झोंक कर मुझे घसीट ले गया। खैर, शाही हो ले। फिर बीवी की सलाह से बदमाश को नीचा दिखाऊँगा।

आज़ाद तो दोनों मिसों के साथ गाड़ी से उतरे और खोजी की ससुराल के दरवाजे पर आए। खोजी गाड़ी के अन्दर बैठे रहे। जब अन्दर से आदमी उन्हें बुलाने आया तो उन्होंने कहा — उनसे कह दो, मेरी अगवानी करने के लिए किसी को भेज दें।

आज़ाद ने अन्दर जा कर एक पंचहत्थी मोटी-ताजी औरत भेज दी। उसने आव देखा न ताव, खोजी को गाड़ी से उतारा और गोद में उठा कर अन्दर ले चली। खोजी अभी सँभलने न पाए थे कि उसने उन्हें ले जा कर आँगन में दे मारा और ऊपर से दबाने लगी। खोजी चिल्ला-चिल्ला कर कहने लगे — अम्माँजान माफ करो, ऐसी शादी पर खुदा की मार, मैं क्वाँरा ही रहूँगा।

आज़ाद — क्या है भई, यह रो क्यों रहे हो?

खोजी — कुछ नहीं भाईजान, जरा दिल्लगी हो रही थी।

आज़ाद — अम्माँजान का लफ्ज किसी ने कहा था?

खोजी — तो यहाँ तुम्हारे सिवा हिंदोस्तानी और कौन है।

आज़ाद – और आप कहाँ के रहने वाले हैं?

खोजी – मैं तुर्क हूँ।

आज़ाद – अच्छा, जा कर दुलहिन के पास बैठो। वह कब से गरदन झुकाए बैठी है बेचारी, और आप सुनते ही नहीं।

खोजी ऊपर गए तो देखा, एक कोने में दुशाला ओढ़े दुलहिन बैठी है। आप उसके करीब जा कर बैठ गए। क्लारिसा और मीडा भी जरा फासले पर बैठी थीं। ख्वाजा साहब दून की लेने लगे। हमारे अब्बाजान सैयद थे और अम्माँजान काबुल के एक अमीर की लड़की थीं। उनके हाथ-पाँव अगर आप देखतीं तो डर जातीं। अच्छे-अच्छे पहलवान उनका नाम सुन कर कान पकड़ते थे। सीना शेर का सा था, कमर चीते की सी, रंग बिलकुल जैसे सलजम, आँखों में खून बरसता था। एक दफे रात को घर में चोर आया, मैं तो मारे डर के सन्नाटा खींचे पड़ रहा, मगर वाह री अम्माँजान, चोर की आहट पाते ही उस बदमाश को जा पकड़ा। मैंने पुकार कर कहा, अम्माँजान, जाने न पाए, मैं भी आ पहुँचा। इतने में अब्बाजान की आँख खुल गई। पूछा – क्या है? मैंने कहा – अम्माँजान से और एक चोर से पकड़ हो रही है। अब्बाजान बोले – तो फिर दबके पड़े रहो, उसने चोर को कत्ल

कर डाला होगा। मैं जो जाके देखता हूँ तो लाश फड़क रही है। जनाब, हम ऐसों के लड़के हैं।

आज़ाद — तभी तो ऐसे दिलेर हो, सुअरों के सुअर ही होते हैं।

खोजी — (हँस कर) मिस क्लारिसा हमारी बातों पर हँस रही हैं। अभी हम इनकी नजरों में नहीं जँचते।

आज़ाद — दुलहिन आज बहुत हँसती हैं। बड़ी हँसमुख बीवी पाई।

खोजी — उर्दू तो यह क्या समझती होंगी।

आज़ाद — आप भी बस चोंगा ही रहे। अरे बेवकूफ, इन्हें हिंदी-उर्दू से क्या ताल्लुक।

खोजी — बड़ी खराबी यह है कि यहाँ जिस गली-कूचे में निकल जायँ, सबकी नजर पड़ा चाहे और लोग मुझसे जला ही चाहे, इसको मैं क्या करूँ। अगर इनको सैर कराने साथ न ले चलूँ तो नहीं बनती, ले चलूँ तो नहीं बनती। कहीं मुझ पर किसी परीछम की निगाह पड़े और वह घूर-घूर कर देखे, तो यह समझें कि कोई खास वजह है। अब कहिए, क्या किया जाय?

आज़ाद — दुलहिन मुँह बन्द किए क्यों बैठी हैं, नाक की तो खैर है?

खोजी – क्या बकते हो मियाँ, मगर अब मुझे भी शक हो गया, तुम लोग जरा समझा दो भाई कि नाक दिखा दें।

मिस क्लारिसा ने दुलहिन को समझाया, तो उसने चेहरे को छिपा कर जरा सी नाक दिखा दी। खोजी ने जा कर नाक को छूना चाहा तो उसने इस जोर के चपत दी कि खोजी बिलबिला उठे।

आज़ाद – खुदा की कसम, बड़े बेअदब हो।

खोजी – अरे मियाँ, जाओ भी। यहाँ होश बिगड़ गए, तुमको अदब की पड़ी है, मगर यार, यह बुरा सगुन हुआ।

आज़ाद – अरे गाउदी, यह नखरे है, समझा!

खोजी – (हँस कर) वाह रे नखरे!

आज़ाद – अच्छा भाई, तुम कभी लड़ाई पर भी गए हो?

खोजी – उँह, कभी की एक ही कही, क्या नन्हें बने जाते हैं? अरे मियाँ, शाही में गुलचले मशहूर थे, अब भी जो चाँदमारी हुई, उसमें हमीं बीस रहे।

आज़ाद – मिस मीडा हँस रही हैं, गोया तुम झूठे हो।

खोजी – यह अभी छोकरी है, यह बातें क्या जानें। अब्बाजान को खुदा बख्शे। दो ऐसे गुर बता गए हैं जो हर जगह काम आते

हैं। एक तो यह कि जब किसी से लड़ाई हो तो पहला वार खुद करना, बात करते ही चाँटा देना।

आज़ाद — आप तो कई जगह इस नसीहत को काम में ला चुके हैं। एक तो बुआ जाफरान पर हाथ उठाया था। दूसरे जैनब की नाक में दम कर दिया था।

खोजी — अब मैं अपना सिर पीट लूँ, क्या करूँ। जिस-जिस जगह अपनी भलमनसी से शरमिंदा हुआ था, उन्हीं का जिक्र करते हो। वह तो कहिए, खैरियत है कि दुलहिन उर्दू नहीं समझतीं, वरना नजरों से गिर जाता।

यह फिकरा सुन कर दुलहिन मुसकराईं तो ख्वाजा साहब अकड़ कर बोले — वल्लाह, वह हँसमुख बीवी पाई है कि जी खुश हो गया। बात नहीं समझती, मगर हँसने लगती है। भई, जरा आँखें भी देख लेना।

आज़ाद — जनाब, दोनों आँखें हैं, और बिलकुल हाथी की सी!

खोजी — बस यही मैं चाहता हूँ, वह क्या जिसकी बड़ी-बड़ी आँखें हो! तारीफ यह है कि जरा-जरा सी आँखें हो और हँसने के वक़्त बिलकुल बन्द हो जायँ, मगर यार, गला कैसा है?

आज़ाद — ऐं, क्या हिंदोस्तान में गाने की तालीम दोगे?

खोजी — ऐ है, समझते तो हो ही नहीं, मतलब यह कि गरदन लंबी है या छोटी? पहले समझ लो, फिर एतराज जड़ो।

आज़ाद — गरदन, सिर और धड़ सब सपाट है?

खोजी — यह क्या, तो क्या, छोटी गरदन की तारीफ है?

आज़ाद — और क्या, सुना नहीं, 'छोटी गरदन, तंग पेशानी, हसीन औरत की यही निशानी।' क्या मुहावरे भी भूल गए?

खोजी — मुहावरे कोई हमसे सीखे, आप क्या जानें, मगर खुदा के लिए जरा मुझसे अदब से बातें कीजिए, वरना यहाँ मेरी किरकिरी होगी। और यह आप उनके करीब क्यों बैठे हैं, हटके बैठिए जरा।

आज़ाद — क्यों साहब, आप अपनी ससुराल में हमारी बेइज्जती करते हैं? अच्छा! खैर, देखा जाएगा।

खोजी — आप तो दिल्लगी में बुरा मान जाते हैं और मेरी आदत कमबख्त ऐसी खराब है कि बेचुहल किए रहा नहीं जाता।

आज़ाद — खैर चलो, होगा कुछ। मगर यार, यहाँ एक अजीब रस्म है, दुलहिन अपने दूल्हा के दोस्तों से हँस-हँस कर बात करती है।

खोजी — यह तो बुरी बात है, कसम खुदा की, अगर तुमने इनसे एक बात भी की होगी तो करौली ले कर अभी-अभी काम तमाम कर दूँगा।

आज़ाद — सुन तो लो, जरा सुनो तो सही।

खोजी — अजी बस, सुन चुके। इस वक़्त आँखों में खून उतर आया, ऐसी दुलहिन की ऐसी-तैसी, और कैसी दबकी-दबकाई बैठी हैं, गोया कुछ जानती ही नहीं।

आज़ाद — हर मुल्क की रस्म अलग अलग है। इसमें आप ख़्वाहमख़्वाह बिगड़ रहे हैं।

खोजी — तो आप आँखें क्या दिखाते हैं? कुछ आपका मुहताज या गुलाम हूँ? लूट का रुपया मेरे पास भी है, यहाँ से हिंदोस्तान तक अपनी बीवी के साथ जा सकता हूँ। अब आप तो जायँ, मैं जरा इनसे दो-दो बातें कर लूँ, फिर शादी की राय पीछे दी जायगी।

आज़ाद उठने ही को थे कि दुलहिन ने पाँव से दामन दबा दिया।

आज़ाद — अब बताओ, उठने नहीं देतीं, मैं क्या करूँ।

खोजी — (डपट कर) छोड़ दो।

आज़ाद — छोड़ दो साहब, देखो तुम्हारे मियाँ खफा होते हैं।

खोजी – अभी मुझे मियाँ न कहिए, शादी-बयाह नाजुक मामला है।

आज़ाद – पहले आपकी इनसे शादी हो जाय, फिर अगर बंदा आँख उठा के देखे तो गुनहगार।

खोजी – अच्छा मंजूर, मगर इतना समझा देना कि यह बड़े कड़े खाँ हैं, नाक पर मक्खी भी नहीं बैठने देते। मगर आप क्यों समझायेंगे। मैं खुद ही क्यों न कह दूँ। सुनो बी साहब, हमारे साथ चलती हो तो शर्तें माननी होंगी। एक यह कि किसी गैर आदमी को सूरत न दिखाओ। दूसरी यह कि मुझे जो कोई औरत देखती है, पहरों घूरा करती है, टकटकी बँध जाती है। ऐसा न हो कि तुम्हें सौतिया डाह होने लगे। भई आज़ाद, जरा इनको इनकी जबान में समझा दो।

आज़ाद – आप जरा एक मिनट के लिए बाहर चले जाइए, तो मैं सब बातें समझा दूँ।

खोजी – जी, दुरुस्त यह भर्रे लौंडों को दीजिएगा, आप ऐसे छोकड़े मेरी जेब में पड़े हैं। और सुनिए, क्या उल्लू समझा है! अब तुम जाओ, हम इनसे दो-दो बात कर लें।

आज़ाद बाहर चले गए तो खोजी पलंग पर दुलहिन के पास बैठे और बोले — भई, अब तो घूँघट उठा लो, जब हम तुम्हारे हो चुके तो हमसे क्या शर्म, क्यों तरसाती हो?

जब दुलहिन ने अब भी घूँघट न खोला तो खोजी जरा और आगे खिसक गए — जानेमन, इस वक़्त शर्म को भून खाओ, क्यों तरसाती हो, अरे, अब कब लग तरसाए रखियो जी! कब लग तरसाए रखियो जी!

दो-तीन मिनट तक खोजी ने गा-गा कर रिझाया मगर जब यों भी दुलहिन ने न माना तो आपने उसके घूँघट की तरफ हाथ बढ़ाया। एकाएक दुलहिन ने उनका हाथ पकड़ लिया। अब आप लाख जोर मारते हैं, मगर हाथ नहीं छूटता। तब आप खुशामद की बातें करने लगे। छोड़ दो भाई, भला किसी गरीब का हाथ तोड़ने से तुम्हें क्या मिलेगा। और यह तो तुम जानती हो कि मैं तुमसे जोर न करूँगा। फिर क्यों दिक करती हो, मेरा तो कुछ न बिगड़ेगा, अगर तुम्हारे मुलायम हाथ दुखने लगेंगे।

यह कह कर खोजी दुलहिन के पैरों पर गिर पड़े और टोपी उतार कर उसके कदमों पर रख दी। उनकी हरकत पर दुलहिन को हँसी आ गई।

खोजी – वाह हँसी आई, नाक पर आई, बस अब मार लिया है, अब इसी बात पर गले लग जाओ।

दुलहिन ने हाथ फैला दिए। खोजी गले मिले तो दुलहिन ने इतने जोर से दबाया कि आप चीख पड़े। छोड़ दो, छोड़ दो, चोट आ जायगी। मगर अब की दुलहिन ने उन्हें उठा कर दे मारा और छाती पर सवार हो गई। मियाँ खोजी अपनी बदनसीबी पर रोने लगे। इनको रोते देख कर उसने छोड़ दिया, तब आप सोचे कि बिना अपनी जवाँमरदी दिखाए, इस पर रोब न जमेगा। बहुत होगा, मार डालेगी, और क्या। आपने कपड़े उतारे और पैंतरा बदल कर बोले – सुनो जी, हम शाहज़ादे हैं। तलवार के धनी, बात के शूर, नाक पर मक्खी बैठ जाय तो तलवार से नाक उड़ा दें, समझीं? अब तक मैं दिल्लगी करता था। तुम औरत, मैं मर्द, अगर अब की तुमने जरा भी गुस्ताखी की तो आग हो जाऊँगा। ले अब घूँघट उठा दो, वरना खैरियत नहीं है। यह कहीं ऊँचा तो नहीं सुनती? (तालियाँ बजा कर) अजी सुनती हो, बुर्का उठाओ।

ख्वाजा साहब बका किए, मगर वहाँ कुछ असर न हुआ। तब आप बिगड़ गए और फिर पैंतरे बदलने लगे। अब की दुलहिन ने उन्हें बगल में दबा लिया; अब आप तड़प रहे हैं; दाँत पीसते हैं, मगर गरदन नहीं छूटती। तब आपने झल्ला कर दाँत काट खाया। काटना था कि उसने जोर से एक थप्पड़ दिया। ख्वाजा

साहब का मुँह फिर गया। तब आप कोसने लगे — खुदा करे तेरे हाथ टूटें। हाय, अगर इस वक़्त खुदा एक मिनट के लिए जोर दे-दे तो सुर्मा बन डालूँ।

मिस क्लारिसा और मीडा एक झरोखे से यह कैफियत देख रही थीं, जब खोजी पिट-पिटा कर बाहर निकले तो क्लारिसा ने कहा — मुबारक हो।

आज़ाद — कहिए, दुलहिन कैसी है? यार, हो खुशनसीब!

खोजी — खुदा करे, आप भी ऐसे खुशनसीब हों।

आज़ाद — हमने तो बड़ी तारीफ सुनी थी, मगर तुम कुछ रंजीदा मालूम होते हो, इसका क्या सबब?

खोजी — भाईजान, वहाँ तो फौजदारी हो गई। औरत क्या, देवनी है, वल्लाह, कचूमर निकल गया।

आज़ाद — आप तो हैं पागल, यह इस मुल्क का रिवाज है कि पहले दिन दो घंटे तक दुलहिन मियाँ को मारती है, काट खाती है, फिर मियाँ बाहर आता है, फिर जाता है।

खोजी — अजी, वहाँ तो मार-पीट तक हो गई, जी में तो आया था कि उठा कर दे मारूँ; मगर औरत के मुँह कौन लगे। देखे, अब की कैसी गुजरती है, या तो वही नहीं या हमीं नहीं।

आज़ाद — क्या सचमुच फौजदारी ही पर आमादा हो? भाई, करौली अपने साथ न ले जाना, और जो हो सो हो।

खोजी — अजी, यहाँ हाथ क्या कम हैं! करौली मर्द के लिए हैं, औरत के लिए करौली की क्या जरूरत?

आज़ाद — बस, अब की जाके मीठी-मीठी बातें करो। हाथ जोड़ो, पैर दबाओ, फिर देखिए, कैसी खुशी होती हैं। अब देर होती है, जाइए।

ख्वाजा साहब कमरे में गए और दुलहिन के पाँव दबाने लगे।

दुलहिन — हमको छोड़ कर चले तो न जाओगे।

खोजी — अरे, यह तो उर्दू बोल लेती हैं, यह क्या माजरा है!

दुलहिन — मियाँ, कुछ न पूछो। हमको एक हब्शी बहका कर बेचने के लिए लिए जाता था। बारे खुदा-खुदा करके यह दिन नसीब हुआ।

खोजी — अब तक तुम हमसे साफ-साफ न बोलीं! ख़्वाहमख़्वाह किसी भले आदमी को दिक करने से फायदा?

दुलहिन — तुम्हारे साथी आज़ाद ने हमें जैसा सिखाया वैसा हमने किया।

खोजी – अच्छा आज़ाद। ठहर जाओ बचा, जाते कहाँ हो। देखो तो कैसा बदला लेता हूँ।

यह कह कर खोजी ने अपनी टोपी दुलहिन के कदमों पर रख दी और बोले – बीबी, बस अब यह समझो कि मियाँ नहीं, खिदमतगार है। मगर कब तक? जब तक हमारी हो कर रहो। उधर आपने तेवर बदले, इधर हम बिगड़ खड़े हुए। मुझसे बढ़ कर मुरव्वतदार कोई नहीं, मगर मुझसे बढ़ कर शरीर भी कोई नहीं; अगर किसी ने मुझसे दोस्ती की तो उसका गुलाम हो गया, और अगर किसी ने हेकड़ी जताई तो मुझसे ज्यादा पाजी कोई नहीं। डंडे से बात करता हूँ। देखने में दुबला हूँ, मगर आज तक किसी ने मुझे जेर नहीं किया। सैकड़ों पहलवानों से लड़ा, और हमेशा कुश्तियाँ निकालीं।

दुलहिन – तुम्हारे पहलवान होने में शक नहीं, वह तो डील-डौल ही से जाहिर है।

खोजी – इसी बात पर अब घूँघट हटा दो।

दुलहिन – यह घूँघट नहीं है जी, कल से हमारी मूँछ में दर्द है।

खोजी – काहे में दर्द है, क्या कहा?

दुलहिन – ऐ, मूँछ तो कहा, कानों की ठेठियाँ निकाल।

खोजी — मूँछ क्या! बकती क्या हो? औरत हो या मर्द? खुदा जाने, तुम मूँछ किसको कहती हो।

दुलहिन — (खोजी की मूँछ पकड़ कर) इसे कहते हैं, यह मूँछ नहीं हैं?

खोजी — अल्लाह जानता है, बड़ी दिल्लगीबाज हो, मैं भी सोचता था कि क्या कहती हैं।

दुलहिन — अल्लाह जानता है, मेरी मूँछों में दर्द है।

ख्वाजा साहब ने गौर करके देखा तो जरा-जरा सी मूँछें। पूछा — आखिर बताओ तो जानेमन, यह मूँछ क्या है?

दुलहिन — देखता नहीं, आँखें फूट गई हैं क्या?

खोजी — ऐ तो बीबी, आखिर यह मूँछ कैसी? कहता तो कहता, सुनता सिड़ी हो जाता है। औरत हो या मर्द। खुदा जाने, तुम मूँछ किसे कहती हो?

दुलहिन — तो तुम इतना घबराते क्यों हो? मैं मरदानी औरत हूँ।

खोजी — भला औरत और मूँछ से क्या वास्ता?

दुलहिन — ऐ है; तुम तो बिलकुल अनाड़ी हो, अभी तुमने औरतें देखी कहाँ?

खोजी — ऐसी औरतों से बाज आए।

एकाएक दुलहिन ने घूँघट उठा दिया तो खोजी की जान निकल गई। देखा तो वही बहुरूपिया। बोले — जी चाहता है कि करौली भोंक दूँ, कसम खुदा की, इस वक़्त यही जी चाहता है।

बहुरूपिया — पहले उस पारसल के रुपए लाइए जिसका लिफाफा आपने अपने नाम लिखवा लिया था। बस, अब दाएँ हाथ से रुपए लाइए!

खोजी — ओ गीदी, बस अलग ही रहना, तुम अभी मेरे गुस्से से वाकिफ नहीं हो?

बहुरूपिया — खूब वाकिफ हूँ। कमजोर, मार खाने की निशानी।

खोजी — हम कमजोर हैं? अभी चाहूँ तो गरदन तोड़के रख दूँ। जा कर होटल-वालों से तो पूछो कि किस जवाँमरदी के साथ मिस्र के पहलवानों को उठा के दे मारा।

बहुरूपिया — अच्छा, अब तुम्हारी कजा आई है। ख़्वाहमख़्वाह हाथ-पाँव के दुश्मन हुए हो।

खोजी — सच कहता हूँ, अभी तुमने मेरा गुस्सा नहीं देखा, मगर हम-तुम परदेशी हैं, हमको-तुमको मिल-जुल कर रहना चाहिए।

तुम न जाने कैसे हिंदोस्तानी हो कि हिंदोस्तानी का साथ नहीं देते।

बहुरूपिया — पारसल का रुपया दाहिने हाथ से दिलवाइए तो खैर।

खोजी — अजी, तुम भी कैसी बातें करते हो; 'हिसाबे दोस्ताँ दर दिल अगर हम बेवफा समझे।' पारसल का जिक्र कैसा, बजाज की दुकान पर हम भी तो तुम्हारी तरफ से कुछ पूछ आए थे? कुछ तुम समझे, कुछ हम समझे।

इतने में आज़ाद दोनों लेडियों के साथ अन्दर आए।

आज़ाद — भाई, शादी मुबारक हो। यार, आज हमारी दावत करो।

खोजी — जहर खिलाओ और दावत माँगो। यह जो हमने आपको लाखों खतरों से बचाया उसका यह नतीजा निकला। अब हम या तो यहीं नौकरी कर लेंगे, या फिर रूम वापस जाएँगे। वहाँ के लोग कदरदाँ हैं, दो-चार शेर भी कह लेंगे तो खाने भर को बहुत है। खैर, आदमी कुछ खो कर सीखता है। हम भी खो कर सीखे, अब दुनिया में किसी का भरोसा नहीं रहा।

क्लारिसा — यह मिठाइयाँ न देने की बातें हैं, यह चकमे किसी और को देना, हम बे-दावत लिए न रहेंगे।

खोजी — हाँ साहब, आपको क्या। खुदा करे, जैसी बीवी हमने पाई, वैसा ही शौहर तुम पाओ, अब इसके सिवा और क्या दुआ दूँ।

मीडा — हमने तो बहुत सोच-समझ कर तुम्हारी शादी तजवीज की थी।

खोजी — अजी, रहने भी दो। हमें आप लोगों से कोई शिकायत नहीं, मगर आज़ाद ने बड़ी दगा दी। हिंदोस्तान से इतनी दूर आए। तब मौका पड़ा, इनके लिए जान लड़ा दी। पोलैंड की शाहज़ादी के यहाँ हमीं काम आए, वरना पड़े-पड़े सड़ जाते। इन सब बातों का अंजाम यह हुआ कि हमीं पर चकमे चलने लगे। अब चाहे जो हो, हम आज़ाद की सूरत न देखेंगे।

102

चौथी के दिन रात को नवाब साहब ने सुरैया बेगम को छेड़ने के लिए कई बार फीरोजा बेगम की तारीफ की। सुरैया बेगम

बिगड़ने लगीं और बोली — अजब बेहूदा बातें हैं तुम्हारी, न जाने किन लोगों में रहे हो कि ऐसी बातें जबान से निकलती हैं।

नवाब — तुम नाहक बिगड़ती हो, मैं तो सिर्फ उनके हुस्न की तारीफ करता हूँ।

सुरैया — ऐ, तो कोई ढूँढ़ के वैसी ही की होती।

नवाब — तुम्हारे यहाँ कभी-कभी आया-जाया करती है?

सुरैया — मुझे उस घर का हाल क्योंकर मालूम हो। मगर जो तुम्हारे यही लच्छन हैं तो खुदा ही मालिक है। आज ही से ये बातें शुरू हो गईं। हाँ, सच है, घर की मुर्गी साग बराबर। खैर, अब तो मैं आकर फँस ही गई, मगर मुझे वही मुहब्बत है जो पहले थी। हाँ, अब तुम्हारी मुहब्बत अलबत्ता जाती रही।

नवाब — तुम इतनी समझदार हो कर जरा सी बात पर इतना रूठ गईं। भला अगर मेरे दिल में यही होता तो मैं तुम्हारे सामने उनकी तारीफ करता, मुझे कोई पागल समझा है? मतलब यह था कि दो घड़ी की दिल्लगी हो, मगर तुम कुछ और ही समझीं। खुद याद रखना कि जब तक मेरी और तुम्हारी जिंदगी है, किसी और औरत को बुरी नजर से न देखूँगा। आगे देखूँ तो शरीफ नहीं।

सुरैया — वह औरत क्या जो अपने शौहर के सिवा किसी मर्द को बुरी नजरों से देखे और वह मर्द क्या जो अपनी बीवी के सिवा पराई बहू-बेटी पर नजर डाले।

नवाब — बस, यही हमारी भी राय है और जो लोग दस-दस शादियाँ करते हैं उनको मैं अहमक समझता हूँ।

सुरैया — देखना इन बातों को भूल न जाना।

सुबह को दुलहिन के मैके से महरी आई और अर्ज की कि आज साली ने दूल्हा और दुलहिन को बुलाया है, पहला चाला है।

बेगम — (नवाब साहब की माँ) तुम्हारे यहाँ वह लड़की तो बड़े ही गजब की है, फीरोजा, किसी से दबती ही नहीं!

महरी — हुजूर, अपना-अपना मिजाज है।

बेगम — अरे, कुछ तो शर्म-हया का खयाल हो। बेचारी फैजन को बात-बात पर बनाती थी। वह लाख गँवारों की सी बातें करे, फिर इससे क्या, जो अपने यहाँ आए उसकी खातिर करनी चाहिए, न कि ऐसा बनाए कि वह कभी फिर आने का नाम ही न ले।

खुरशेद — (नवाब की बहन) हमको तो उनकी बातों से ऐसा मालूम होता था कि (दबे दाँतों) नेक नहीं, आगे खुदा जाने।

बेगम — यह न कहो बेटा, अभी तुमने देखा क्या है।

नवाब — (इशारा करके) उनकी महरी बैठी है, उसके सामने कुछ न कहो।

बेगम साहब ने सुरैया बेगम को उसी वक़्त रुखसत किया। शाम को दूल्हा भी चला। मुसाहबों ने उसकी रियासत और ठाट-बाट की तारीफ करनी शुरू की -

बबरअली — हुजूर, इस वक़्त ईरान के शाहज़ादे मालूम होते हैं।

नूरखाँ — इसमें क्या शक है, यह मालूम होता है कि कोई शाहज़ादा मसनद लगाए बैठा है।

बबरअली — हुजूर, आज जरा चौक की तरफ से चलिएगा। जरा इधर-उधर कमरों से तारीफ की आवाज तो निकले।

नवाब — क्या फायदा, जिसके बीवी हो, उसको इन बातों में न पड़ना चाहिए।

नूरखाँ — ऐ हुजूर, यह तो रियासत का तमगा ही है।

ईदू — ऐ हुजूर, यह तो गरीब आदमियों के लिए है कि एक से ज्यादा न हो, दूसरी बीवी को क्या खिलाएगा, खाक! मगर अमीरों का तो यह जौहर है। बादशाहों के आठ-आठ नौ-नौ से ज्यादा महल होते थे, एक-दो की कौन कहे। जिसे खुदा देता है वही इस काबिल समझा जाता है।

इन लोगों ने नवाब साहब को ऐसा चंग पर चढ़ाया कि चौक ही से ले गए, मगर नवाब साहब ने गरदन जो नीची की तो चौक भर में किसी कमरे की तरफ देखा ही नहीं। इस पर मुसाहबों ने हाशिए चढ़ाए — ऐ हुजूर, एक नजर तो देख लीजिए, कैसा कटाव हो रहा है। सारी खुदाई का हाल तो कौन जाने, मगर इस शहर में तो कोई जवान हुजूर के चेहरे-मोहरे को नहीं पाता। बस, यही मालूम होती है कि शेर कछार से चला आता है।

नवाब साहब दिल में सोचते जाते थे कि इन खुशामदियों से बचना मुश्किल है। इनके फंदे में फँसे और दाखिल जहन्नुम हुए। हमने ठान ली है कि अब किसी औरत को बुरी निगाह से न देखेंगे। यों हँसी-दिल्लगी की और बात है।

नवाब साहब ससुराल में पहुँचे, तो बाहर दीवानखाने में बैठे। नाच शुरू हुआ और मुसाहबों ने तायफों की तारीफ के तुल बाँध दिए — जनाब, ऐसी गाने वाली अब दूसरी शहर में नहीं है, अगर शाही जमाना होता तो लाखों रुपए पैदा कर लेती और अब भी हमारे हुजूर के जहर-शिनास बहुत हैं, मगर फिर भी कम हैं। क्यों हुजूर, होली गाने को कहूँ?

नवाब — जो जी चाहे, गाएँ।

मुसाहब — हुजूर, फरमाते हैं, यह जो गाएगी, अपना रंग जमा लेंगी, मगर होली हो तो और भी अच्छा।

नवाब — हमने यह नहीं कहा, तुम लोग हमें जलील करा दोगे।

मुसाहब — क्या मजाल हुजूर, हुजूर का नमक खाते हैं, हम गुलामों से यह उम्मीद? चाहे सिर जाता रहे, मगर नमक का पास जरूर रहेगा, और यह तो हुजूर, दो घड़ी हँसने-बोलने का वक़्त ही है।

गनीमत जान इस मिल बैठने को,
जुदाई की घड़ी सिर पर खड़ी है।

इसके बाद नवाब साहब अन्दर गए और खाना खाया। साली ने एक भारी खिलअत बहनोई को और एक कीमती जोड़ा बहन को दिया। दूसरे दिन दूल्हा-दुलहिन रुखसत हो कर घर गए।

103

कुछ दिन तो मियाँ आज़ाद मिस्र में इस तरह रहे जैसे और मुसाफिर रहते हैं, मगर जब कांसल को इनके आने का हाल

मालूम हुआ तो उसने उन्हें अपने यहाँ बुला कर ठहराया और बातें होने लगी।

कांसल — मुझे आपसे सख्त शिकायत है कि आप यहाँ आए और हमसे न मिले। ऐसा कौन है जो आपके नाम से वाकिफ न हो, जो अखबार आता है उसमें आपका जिक्र जरूर होता है। वह आपके साथ मसखरा कौन है? वह बौना खोजी?

आज़ाद ने मुसकरा कर खोजी की तरफ इशारा किया?

खोजी — जनाब, वह मसखरे कोई और होंगे और खोजी खुदा जाने, किस भकुए का नाम है। हम ख्वाजा साहब हैं और बौने की एक ही कही। हाय, मैं किससे कहूँ कि मेरा बदन चोर है।

आज़ाद — क्या अखबारों में ख्वाजा साहब का जिकर रहता है?

कांसल — जी हाँ, इनकी बड़ी धूम है, मगर एक मुकाम पर तो सचमुच इन्होंने बड़ा काम कर दिखाया था। आपका दौलतखाना किस शहर में है जनाब? मुझे हैरत तो यह है कि इतने नन्हें-नन्हें तो आपके हाथ-पाँव, लड़ाई में आप किस बिरते पर गए थे।

खोजी — (मुसकरा कर) यही तो कहता हूँ हुजूर कि मेरा बदन चोर है, देखिए जरा हाथ मिलाइए। हैं फौलाद की अँगुलियाँ या

नहीं? अगर अभी जोर करूँ तो आपकी एक-आध अँगुली तोड़ कर रख दूँ।

थोड़ी देर तक वहाँ बातचीत करके आज़ाद चले तो खोजी ने कहा — यह आपकी अजीब आदत है कि गैरों के सामने मुझे जलील करने लगते हैं। अगर मुझे गुस्सा आ जाता और मैं मियाँ कांसल के हाथ-पाँव तोड़ देता तो बताओ कैसी ठहरती! मैं मारे मुरव्वत के तरह देता जाता हूँ, वरना मियाँ की सिट्टी-पिट्टी भूल जाती।

आज़ाद — अजी, ऐसी मुरव्वत भी क्या जिससे हमेशा जूतियाँ खानी पड़े। कई जगह आप पिटे, मगर मुरव्वत न छोड़ी। एक दिन इस मुरव्वत की बदौलत आप कहीं काँजी-हौस न भेजे जाइए। अच्छा, यह अब यह पूछता हूँ कि जब सारे जमाने ने मेरा हाल सुना तो क्या हुस्नआरा ने न सुना होगा?

खोजी — जरूर सुना होगा भाई, अब आज के आठवें दिन शादी लो। मगर उस्ताद, दो-एक दिन बंबई में जरूर रहना। जरा बेगम साहब से बातें होंगी।

आज़ाद — भाई, अब तो बीच में ठहरने का जी नहीं चाहता।

खोजी — यह नहीं हो सकता, इतनी बेवफाई करना मुनासिब नहीं, वह बेचारी हम लोगों की राह देख रही होंगी।

आज़ाद – अच्छा तो यह सोच लो कि अगर उन्होंने पूछा कि खोजी के साथ कोई औरत क्यों नहीं आई तो क्या जवाब दोगे? हमारी तो सलाह है कि किसी को यहीं से फाँस ले चलो?

खोजी – नहीं जनाब, मुझे यहाँ की औरतें पसंद नहीं। हाँ, अपने वतन में हो तो मुजायका नहीं।

आज़ाद – अच्छा कैसी औरत चाहते हो?

खोजी – बस यही कि उम्र ज्यादा न हो। और शक्ल-सूरत अच्छी हो।

आज़ाद – ऐसी एक औरत तो हुस्नआरा के मकान के पास है। उसी दर्जी की बीवी है जो उनके मकान के सामने रहता है। रंगत तो साँवली है, मगर ऐसी नमकीन कि आपसे क्या कहूँ और अभी कमसिन। बहुत-बहुत तो कोई 40-42 की होगी।

खोजी – भला मीडा में और उसमें क्या फर्क है?

आज़ाद – यह उससे दो-चार बरस कमसिन हैं, बस, और तो कोई फर्क नहीं। हाँ, यह गोरी हैं और उसका रंग साँवला है।

खोजी – भला नाम क्या है?

आज़ाद – नाम है शिताबजान।

खोजी — तब तो भाई, हम हाजिर हैं। मगर पक्की-पोढ़ी बात तो हो ले पहले।

आज़ाद — आपको इससे क्या वास्ता? कुछ तो समझ के हमने कहा है! हमारे पास उसका खत आया था कि अगर ख्वाजा साहब मंजूर करें तो मैं हाजिर हूँ।

खोजी — तब तो भाई, बनी-बनाई बात है, खुदा ने चाहा तो आज के आठवें दिन शिताबजान हमारी बगल में होंगी।

आज़ाद — शाम को कांसल से मिल कर चले चलो आज ही।

खोजी — कांसल! हमको शिताबजान की पड़ी है, हमारे सामने खत लिख के भेज दो। मजमून हम बताएँगे।

आज़ाद कलम-दावत ले कर बैठे। खोजी ने खत लिखवाया और जा कर उसे डाकखाने में छोड़ आए। तब मिस मीडा से जा कर बोले — अब हमारी खुशामद कीजिए। आज के आठवें दिन हमारे यहाँ आपकी दावत होगी। अच्छे से अच्छे किस्म की ब्रांडी तय कर रखिए। शिताबजान के हाथ पिलवाऊँगा।

मीडा — शिताबजान कौन! क्या तुम्हारी बहन का नाम है?

खोजी — अरे तौबा! शिताबजान से मेरी शादी होने वाली है। उसने मुझे भेजा था कि रूम जा कर नाम करो तो फिर निकाह

होगा। अब मैं वहाँ से नाम करके लौटा हूँ, पहुँचते-पहुँचते शादी होगी।

मीडा — क्या सिन होगा? बेवा तो नहीं है?

खोजी — खुदा न करे, दर्जी अभी जिंदा है?

मीडा — क्या मियाँवाली है, और आप उसके साथ निकाह करेंगे? सिन क्या है?

खोजी — अभी क्या सिन है, कल की लड़की है, कोई पैंतालिस बरस की हो शायद।

मीडा — बस, पैंतालीस ही बरस की? तब तो उसे पालना पड़ेगा!

खोजी — हम तो किस्मत के धनी हैं।

मीडा — भला शक्ल-सूरत कैसी है?

खोजी — यह आज़ाद से पूछो। चाँद में मैल है, उसमें मैल नहीं, मैं तो आज़ाद को दुआएँ देता हूँ जिनकी बदौलत शिताबजान मिलीं।

यहाँ से खोजी होटलवालों के पास पहुँचे और उनसे भी वही चर्चा की। अजी, बिलकुल साँचे की ढली है, कोई देखे तो बेहोश हो जाय। अब आज़ाद के सामने उसे थोड़ा ही आने दूँगा, हरगिज नहीं।

खानसामा — तुमसे बातचीत भी हुई या दूर ही से देखा?

खोजी — जी हाँ, कई बार देख चुका हूँ। बातें क्या करती है, मिश्री की डली घोलती है।

होटलवालों ने खोजी को खूब बनाया। इतनी देर में आज़ाद ने जहाज का बंदोबस्त किया और एक रोज दोनों परियों और ख्वाजा साहब के साथ जहाज पर सवार हुए। सवार होते ही खोजी ने गाना शुरू किया —

अरे मल्लाह लगा किश्ती मेरा महबूब जाता है,
शिताबो की तमन्ना में मुझे दिल ले के आता है।
मगर छोड़ा विदेशी हो के ख्वाजा ने गए लड़ने,
शिताबो के लिए जी मेरा कल से तिलमिलाता है।

आज़ाद ने शह दे-दे कर और चंग पर चढ़ाया। ज्यों-ज्यों उनकी तारीफ करते थे, वह और अकड़ते थे। जहाज थोड़ी ही दूर चला था कि एक मल्लाह ने कहा — लोगों, होशियार! तूफान आ रहा है। यह खबर सुनते ही कितनों ही के तो होश उड़ गए और मियाँ खोजी तो दोहाई देने लगे — जहाज की दोहाई! बेड़े की दोहाई! समुद्र की दोहाई! हाय शिताबजान, अरे मेरी प्यारी शिताब, दुआ माँग।

यह कह कर आपने अकड़ कर आज़ाद की तरफ देखा। आज़ाद ताड़ गए कि इस फिकरे की दाद चाहते हैं। कहा — सुभान अल्लाह, शिताबजान के लिए शिताब, क्या खूब।

खोजी — इस फन में कोई मेरी बराबरी क्या करेगा भला। उस्ताद हूँ, उस्ताद।

आज़ाद — और लुत्फ यह है कि ऐसे नाजुक वक़्त में भी नहीं चूकते।

खोजी — या खुदा, मेरी सुन ले। यारों, रो-रो कर उसकी दरगाह से दुआ माँगो कि ख्वाजा बच जायँ और शिताबजान से ब्याह हो। खूब रोओ।

आज़ाद — जनाब, यह क्या सबब है कि आप सिर्फ अपने लिए दुआ माँगते हैं, और बेचारों का भी तो खयाल रखिए।

इतने में आँधी आ गई। आज़ाद तो जहाज के कप्तान के साथ बातें कर रहे थे। खोजी ने सोचा, अगर जहाज डूब गया तो शिताबजान क्या करेगी? फौरन अफीम की डिबिया ली और खूब कस कर कमर में बाँध कर बोले — लो यारो, हम तो तैयार हैं। अब चाहे आँधी आए या बगूला। तूफान नहीं, तूफ़ान का बाप आए तो क्या गम है।

जहाज वाले तो घबराए हुए थे कि नहीं मालूम, तूफान क्या गुल खिलाए, मगर ख्वाजा साहब तान लगा रहे थे —

शिताबो की तमन्ना में मेरा दिल तिलमिलाता है।

आज़ाद — ख्वाजा साहब, आप तो बेवक़्त की शहनाई बजाते हैं। पहले तो रोए-चिल्लाए और अब तान लगाने लगे।

एक ठाकुर साहब भी जहाज पर सवार थे। खोजी को गाते देख कर समझे कि यह कोई बड़े वली हैं। कदमों पर टोपी रख दी और बोले — साईं जी, हमारे हक में दुआ कीजिए।

खोजी — खुश रहो बाबा, बेड़ा पार है।

आज़ाद ने खोजी के कान में कहा — यार, यह तो अच्छा उल्लू फँसा! रास्ते में खूब दिल्लगी रहेगी।

ठाकुर साहब बार-बार खोजी से सवाल करते थे और मियाँ खोजी अनाप-शनाप जवाब देते थे।

ठाकुर — साईं जी, जुमे के दिन सफर करना कैसा है?

खोजी — बहुत अच्छा दिन है।

ठाकुर — और जुमेरात?

खोजी — उससे भी अच्छा।

आज़ाद – ठाकुर साहब, आप कब से सफर कर रहे हैं?

ठाकुर – जनाब, कोई चालीस बरस हुए।

आज़ाद – चालीस बरस सफर करते हो गए और अभी तक आप अच्छे और बुरे दिन पूछते जाते हैं?

ठाकुर – सनीचर के दिन आप सफर करके देख लें।

खोजी – हमने इस बारे में बहुत गौर किया है। बुरी साइत का सफर कभी पूरा नहीं होता।

ठाकुर – साईं जी, कुछ और नसीहत कीजिए, जिससे मेरा भला हो।

खोजी – अच्छा सुनो, पहली बात तो यह है कि जिस दिन चाहो, सफर करो, मगर पहर रात रहे से, तुम्हारी मंजिल दूनी हो जायगी। दूसरी नसीहत यह है कि एक बीवी से ज्यादा के साथ शादी न करना, अगर वह मर जाय तो दूसरी शादी का खयाल भी दिल में न लाना। तीसरी बात यह है कि रात को दो घंटे तक ठंडे पानी में रह कर खुदा की याद करना। गरमी, जाड़ा, बरसात तीनों मौसिमों में इसका खयाल रखना। चौथी नसीहत यह है कि अच्छे खाने और अच्छे कपड़े से परहेज रखना। खाने को जौ की रोटी और पीने को औटाया हुआ पानी काफी है।

खोजी ने यह नसीहतें कुछ इस तरह कीं, गोया वह पहुँचे हुए फकीर हैं। ठाकुर ने अपनी नोटबुक पर ये सब बातें लिख लीं और बोला — साईं जी, आपसे मुलाकात करना चाहूँ तो कैसे करूँ?

खोजी — बस, लखनऊ में शिताबजान का मकान पूछते हुए चले आना।

ठाकुर — शिताबजान कौन है?

खोजी — कोई हों, तुम्हें इससे मतलब?

यों ही ठाकुर साहब को बनाते हुए रास्ता कट गया और बंबई सामने से नजर आने लगा। खोजी की बाँछें खिल गईं, चिल्ला कर कहा — यारों, जरा देखना, शिताबजान की सवारी तो नहीं आई है। करीमबख्श नामी महरी साथ होगी। अतलस का लहँगा है, कहारों की पगड़ियाँ रँगी हुई हैं, मछलियाँ जरूर लटक रही होंगी। अरे महरी, महरी! क्या बहरी है?

लोगों ने समझाया कि साहब, अभी बन्दरगाह तो आने दो। शिताबजान यहाँ से क्योंकर सुन लेंगी? बोले — अजी, हटो भी, तुम क्या जानो। कभी किसी पर दिल आया हो तो समझो? अरे नादान, इश्क के कान दो कोस तक की खबर लाते हैं, क्या शिताबजान ने आवाज न सुनी होगी? वाह, भला कोई बात है! मगर

जवाब क्यों न दिया? इसमें एक लिम है, वह यह कि अगर आवाज के साथ ही आवाज का जवाब दें तो हमारी नजरों से गिर जायँ। मजा जब है कि हम बौखलाए हुए इधर-उधर ढूँढ़ते और आवाज देते हों और वह हमें पीछे से एक धौल जमाएँ और तिनक कर कहें — मुड़ीकाटा, आँखों का अंधा नाम नैनसुख, गुल मचाता फिरता है, और हम धौल खा कर रहे कि देखिए सरकार, अब की धौल लगाई तो खैर जो अब लगाई तो बिगड़ जायगी। इस पर वह झल्ला कर इस घुटी हुई खोपड़ी पर तड़ातड़ दो-चार जमा दें, तब मैं हँस कर कहूँ, तो फिर दो-एक जूते भी लगा दो, इसके बगैर तबीयत बेचैन है।

आज़ाद — बिलफेल कहिए तो मैं ही लगा दूँ।

खोजी — अजी नहीं, आपको तकलीफ होगी।

आज़ाद — अल्लाह, किस मकुए को जरा भी तकलीफ हो।

खोजी — मियाँ, पहले मुँह धो आओ, इन खोपड़ियों के सुहलाने के लिए परियों के हाथ चाहिए, तुम जैसे देवों के नहीं।

इतने में समुद्र का किनारा नजर आया, तो खोजी ने गुल मचा कर कहा — शिताबजान साहब, आपका यह गुलाम, फर्जिदाना आदाब अर्ज...।

इतना कह चुके थे कि लोगों ने कहकहा लगाया और खोजी की समझ में कुछ न आया कि लोग क्यों हँस रहे हैं।

आज़ाद से पूछा कि इस बेमौक़ा हँसी का क्या सबब है? आज़ाद ने कहा — इसका सबब है कि आपकी हिमाकत। क्या आप शिताब के बेटे हैं जो उनको फर्जिदाना आदाब बजा लाते हैं, जोरू को कोई इस तरह सलाम करता है?

खोजी — (गालों पर थप्पड़ लगा कर) अररर, गजब हो गया, बुरा हुआ। वल्लाह, इतना जलील हुआ कि क्या कहूँ। भाई, इश्क में होश-हवास कब ठीक रहते हैं, अनाप-शनाप बातें मुँह से निकल ही जाती हैं, मगर खैर! अब तो पालकी साफ-साफ नजर आती है। वह देखिए, महरी सामने डटी खड़ी है। अख्ख़ाह, अब तो महरी भी बाढ़ पर है!

जहाज ने लंगर डाला और उतरने लगे। ख्वाजा साहब दूर ही से शिताबजान को ढूँढ़ने लगे। आज़ाद दोनों लेडियों को ले कर खुश्की पर आए तो बंबई के मिर्जा साहब ने दौड़ कर उन्हें गले लगाया। फिर दोनों परियों को देखकर ताज्जुब से बोले — इन दोनों को कहाँ से लाए, क्या परिस्तान की परियाँ हैं।

आज़ाद ने अभी कुछ जवाब न दिया था कि खोजी कफन फाड़ कर बोल उठे — इधर शिताबजान, इधर, ओ करमबक्श

करमफोड़ कमबख्ती के निशान, यहाँ क्यों नहीं आती! दूर ही से बुत्ते बताती हैं!

मिर्जा — किसको पुकारते हो ख्वाजा साहब, मैं बुला लूँ। क्या ब्याह लाए हो कोई परी? मगर उस्ताद नाम तो हिंदोस्तान का है, जरा दिखा तो दो।

आज़ाद ने खैर-आफ़ियत पूछी और दोनों आदमियों में शाहज़ादा हुमायूँफर की चर्चा होने लगी। फिर लड़ाई का जिक्र छिड़ गया।

उधर ख्वाजा साहब ने अफीम घोली और चुस्की लगा कर गुल मचाया — शिताबजान प्यारी, मैं तरे वारी, जल्द से आ री, सूरत दिखा री, आँसू हैं जारी। जानेमन, जिस बिस्तर पर तुम सोई थीं उसको हर रोज सूँघ लिया करता हूँ और उसी खुशबू की पर जिंदगी का दार मदार है।

तेरी-सी न बू किसी में पाई
सारे फूलों को सूँधता हूँ।

मिर्जा साहब ने कहा — आखिर यह माजरा क्या है। जनाब ख्वाजा साहब, क्या सफर में अक्ल भी खो आए, यह आपको क्या हो गया है? अगर सच्चे आशिक हो तो फरियाद कैसी?

खोजी — जनाब, कहने और करने में जमीन-आसमान का फर्क है।

मिर्जा -

कब अपने मुँह से आशिक शिकवए बेदाद करते हैं;
दहाने गैर से वह मिस्ल नै फरियाद करते हैं।

खोजी — मुझसे कहिए तो ऐसे दो करोड़ शेर पढ़ दूँ, आशिकी दूसरी चीज है, शायरी दूसरी चीज।

मिर्जा — दो करोड़ शेर तो दस करोड़ बरस तक भी आपसे न पढ़े जाएँगे। आप दो ही चार शेर फरमाएँ।

खोजी — अच्छा तो सुनिए और गिनते जाइए, आप भी क्या कहेंगे —

यही कह-कहके हिजरे यार में फरियाद करते है;
वह भूले हमको बैठे हैं जिन्हे हम याद करते हैं।
असीराने कुहन पर ताजा वह बेदाद करते हैं,
रही ताकत न जब उड़ने की तब आज़ाद करते हैं।
रकम करता हूँ जिस दम काट तेरी तेग अब्रू की;
गरीबाँ चाक अपना जामए फौलाद करते हैं।
सिफत होती है जानाँ जिस गजल में तेरे अब्रू की;
तो हम हर बैत पर आँखों से अपनी साद करते हैं।

अब भी न कोई शरमाए तो अंधेर है, दो करोड़ शेर न पढ़ कर सुनाऊँ तो नाम बदल डालूँ। हाँ, और सुनिए —

नहीं हम याद से रहते हैं गाफिल एकदम हमदम;
जो बुत को भूल जाते हैं खुदा को याद करते हैं।

आज़ाद — इस वक़्त तो मिर्जा साहब को आपने खूब आड़े हाथों लिया।

खोजी — अजी, यहाँ कोई एक शेर पढ़े तो हम दस करोड़ शेर पढ़ते हैं। जानते हो कहाँ के रहनेवाले हैं हम! बंबई वालों को हम समझते क्या हैं।

इतने में औरत ने खोजी को इशारे से बुलाया तो उनकी बाँछें खिल गईं। बोले — क्या हुक्म है हुजूर?

औरत — ऐ दुर हुजूर के बच्चे! कुछ लाया भी वहाँ से, या खाली हाथ झुलाता चला आता है?

खोजी — पहले तुम अपना नाम तो बताओ?

औरत — ऐ लो, पहरों से नाम रट रहा है और अब पूछता है, नाम बता दो। (धप जमा कर) और नाम पूछेगा?

खोजी — ऐ, तुमने तो धप लगानी शुरू की, जो कहीं अब की हाथ उठाया तो बहुत ही बेढब होगी।

आज़ाद – अरे यार, यह क्या माजरा है? बेभाव की पड़ने लगी।

खोजी – अजी, मुहब्बत के यही मजे हैं भाईजान। तुम यह बातें क्या जानो।

मिर्जा – यह आपकी ब्याहता हैं या सिर्फ मुलाकात है?

शिताब – हमारे बुजुर्गों से यह रिश्ता चला आता है।

मिर्जा – तो यह कहो कि तुम इनकी बहन हो।

खोजी – जनाब, जरा सँभल कर फरमाइएगा। मैं आपका बड़ा लिहाज करता हूँ।

शिताब – ऐ, तो कुछ झूठ भी है। आखिर आप मेरे हैं कौन? मुफ्त में मियाँ बनने का शौक चर्राया है?

खोजी – अरे तो निकाह तो हो ले। कसम खुदा की, लड़ाई के मैदान में भी दिल तुम्हारी ही तरफ रहता था।

आज़ाद – हमेशा याद करते थे बेचारे!

जब आज़ाद लेडियों के साथ गाड़ी में बैठ गए तब मिर्जा ने खोजी से कहा – चलिए, वह लोग जा रहे हैं।

खोजी – जा रहे हैं तो जाने दीजिए। अब मुद्दत के बाद माशूक से मुलाकात हुई है, जरा बातें कर लूँ। आप चलिए, मैं अभी हाजिर होता हूँ।

वह लोग इधर रवाना हुए, उधर शिताबजान ने खोजी को दूसरी गाड़ी में सवार कराया और घर चलीं। ख्वाजा साहब खुश थे कि दिल्लगी में माशूक हाथ आया। घर पहुँच कर शिताबजान ने खोजी से कहा – अब कुछ खिलवाइए, बहुत भूख लगी है।

खोजी – भई वाह, मैं सिपाही आदमी, मेरे पास सिवा ढाल-तलवार, बरछी-कटार के और क्या है? या तमगे हैं, सो वह मैं किसी को दे नहीं सकता।

शिताब – कमाई करने गए थे वहाँ, या रास्ता नापने? तमगे ले कर चाटूँ, तलवार से अपनी गरदन मार लूँ, छुरी भोंक के मर जाऊँ? छुरी-तलवार से कहीं पेट भरता है?

खोजी – अभी कुछ खिलवाओ-पिलवाओ, जब हम रिसालदारी करेंगे तो तुमको मालोमाल कर देंगे। अब परवाना आया चाहता है। लड़ाई में मैंने जो बड़े-बड़े काम किए वह तो तुम सुन ही चुकी होगी। दस हजार सिपाहियों की नाक काट डाली। उधर दुश्मन की फौज ने शिकस्त पाई, इधर मैंने करौली उठाई और मैदान में खट से दाखिल। जिसको देखा कि बिलकुल ठंडा हो

गया है, उसकी नाक उड़ा दी। जब तक लड़ाई होती रहती थी, बंदा छिपा बैठा रहता था; कभी पेड़ पर चढ़ गया, कभी किसी झोपड़े में लुक गया। मुफ्त में जान देना कौन सी अक्लबंदी है। मगर लड़ाई खत्म होते ही मैदान में जा पहुँचता था। जिस शहर में जाता था, शहर भर की औरतें मेरे पीछे पड़ जाती थीं, मगर मैं किसी की तरफ आँख उठा कर भी न देखता था। गरज की लड़ाई में मैंने बड़ा नाम किया, यह मेरी ही जूतियों का सदका है कि आज़ाद पाशा बन बैठे। वह तो जानते भी न थे कि लड़ाई किस चिड़िया का नाम है।

शिताब – मगर यह तो बताओ कि बंदूक से नाक क्योंकर काटी जाती है?

खोजी – तुम इन बातों को क्या जानो, यह सिपाहियों के समझने की बातें हैं।

इधर आज़ाद मिर्जा साहब के घर पहुँचे तो बेगम साहब फूली न समाईं। खिदमतगार ने आज़ाद को झुक कर सलाम किया। दोनों दोस्त कमरे में जा कर बैठे। मिर्जा साहब ने घर में जा कर देखा तो बेगम साहब पलंग पर पड़ी थीं। महरी से पूछा तो मालूम हुआ, आज तबियत कुछ खराब है। बाहर आकर आज़ाद से कहा – घर में सोती हैं और तबियत भी अच्छी नहीं। मैंने

जगाना मुनासिब न समझा। आज़ाद समझे कि बीमारी महज बहाना है, हमसे कुछ नाराज हैं।

इतने में एक चपरासी ने आकर मिर्जा साहब को एक लिफाफा दिया। युनिवर्सिटी के रजिस्ट्रार ने कुछ सलाह करने के लिए उन्हें बुलाया था। मिर्जा साहब बोले — भाई, इस वक़्त तो जाने को जी नहीं चाहता। मुद्दत क बाद एक दोस्त आए हैं, उनकी खातिर-तवाजो में लगा हुआ हूँ। मगर जब आज़ाद ने कहा कि आप जाइए, शायद कोई जरूरी काम हो, तो मिर्जा साहब ने गाड़ी तैयार कराई और रजिस्ट्रार से मिलने गए।

इधर आज़ाद के पास जैनब ने आकर सलाम किया।

आज़ाद — कहो, जैनब, अच्छी रहीं?

जैनब — हुजूर के जान-माल की दुआ देती हूँ। हुजूर तो अच्छे रहे?

आज़ाद — बेगम साहब क्या अभी आराम ही में हैं? अगर इजाजत हो तो सलाम कर आऊँ।

जैनब — हुजूर के लिए पूछने की जरूरत नहीं, चलिए।

आज़ाद जैनब के साथ अन्दर गए तो कमरे में कदम रखते ही महरी ने कहा — वहीं बैठिए, कुर्सी आती है।

आज़ाद – सरकार कहाँ हैं? बेगम साहब की खिदमत में आदाब अर्ज हैं।

बेगम – बन्दगी। आपको जो कुछ कहना हो कहिए, मुझे ज्यादा बातें करने की फुरसत नहीं।

आज़ाद – खुदा खैर करे, आखिर किस जुर्म में यह खफगी है? कौन सा गुनाह हुआ?

बेगम – बस जबान न खुलवाइए, गजब खुदा का, एक खत तक भेजना कसम था, कोई इस तरह अपने अजीजों को तड़पाता है?

आज़ाद – कुसूर माफ कीजिए, बेशक गुनाह तो हुआ, मगर मैंने सोचा कि खत भेज कर मुफ्त में मुहब्बत बढ़ाने से क्या फायदा, न जाने जिंदा आऊँ या न आऊँ, इसलिए ऐसी फिक्र करूँ कि उनके दिल से भूल ही जाऊँ। अगर जिंदगी बाकी है तो चुटकियों में गुनाह माफ करा लूँगा।

इस फिकरे ने बेगम साहब के दिल पर बड़ा असर किया। सारा गुस्सा हवा हो गया। जैनब को नीचे भेजा कि हुक्का भर लाओ, खवास को हुक्म दिया कि पान बनाओ। तब मैदान खाली पा कर चिक उठा दी और बोलीं – वह कहाँ गए हैं?

आज़ाद — किसी साहब ने बुलाया है, उनसे मिलने गए हैं। खुदा ने मुझे यह खूब मौका दिया।

बेगम — क्या कहा, क्या कहा! जरा फिर तो कहिएगा, जरा सनूँ तो किस चीज का मौका मिला?

आज़ाद — यही हुजूर को सलाम करने का।

बेगम — हाँ, यों बातें कीजिए, अदब के साथ। हुस्नआरा के नाम तुमने कोई खत भेजा था? मुझे लिखा है कि जिस दिन आएँ, फौरन तार से इत्तला देना।

आज़ाद — अब तो यही धुन है कि किसी तरह वहाँ पहुँचूँ और जिंदगी के अरमान पूरे करूँ।

बेगम — जी नहीं,पहले आपका इम्तहान होगा। आप रंगीन आदमी ठहरे, आपका एतबार ही क्या?

आज़ाद — ओफ्फोह! यह बदगुमानी। खैर साहब अख्तियार है, मगर हमारे साथ चलने का इरादा है या नहीं?

बेगम — नहीं साहब, यह हमारे यहाँ का दस्तूर नहीं। बहनोई के साथ जवान सालियाँ सफर नहीं करती। वक़्त पर उनके साथ आ जाऊँगी।

आज़ाद — खैर, इतनी इनायत क्या कम है। अब आप जा कर परदे में बैठिए, मैं दीवाना हो जाऊँगा।

बेगम — क्यों साहब, यही आपका इश्क है? इसी बूते पर इम्तहान दीजिएगा।

बेगम साहब ने वहाँ ज्यादा देर तक बैठना मुनासिब न समझा। आज़ाद भी बाहर चले गए। खिदमतगार ने हुक्का भर दिया। पलंग पर लेटे-लेटे हुक्का पीने लगे तो खयाल आया कि आज मुझसे बड़ी गलती हुई, अगर मिर्जा साहब मुझे घूरते देख लेते तो अपने दिल में क्या कहते। अब यहाँ ज्यादा ठहरना गलती है। खुदा करे, आज के चौथे दिन वहाँ पहुँच जाऊँ। बेगम साहब ने मुझे हिकारत की निगाह से देखा होगा।

वह अभी यही सोच रहे थे कि जैनब ने बेगम साहब का एक खत ला कर उन्हें दिया। लिखा था — अभी-अभी मैंने सुना है कि आपके साथ दो लेडियाँ आई हैं। दोनों कमसिन हैं और आप भी जवान। आग और फूस का साथ क्या? अगर वाकई तुमने इन दोनों के साथ शादी कर ली है तो बड़ा गजब किया, फिर उम्मीद न रखना कि हुस्नआरा तुमको मुँह लगाएँगी। तुमने सारी की-कराई मेहनत तक खाक में मिला दी। और अगर शादी नहीं की तो यहाँ लाए क्यों? तुम्हें शर्म नहीं आती? हुस्नआरा गरीब तो

तुम्हारी मुहब्बत की आग में जले और तुम सौतों को साथ लाओ —

क्या कहर हैं क्योंकर न उठे दर्द जिगर में,
मेरी तो बगल खाली है और आपके बर में।
एक आन भी मुझसे न मिलो आठ पहर में,
घर छोड़ के अपना रहो यों और के घर में।

तुम और गैरों को साथ लाओ, तुम्हारी तरह हुस्नआरा भी अब तक शादी कर लेतीं तो तुम क्या बना लेते? तुमको इतना भी ख्याल न रहा कि हुस्नआरा के दिल पर क्या असर होगा! तुम्हारे हजारों चाहने वाले हैं तो उसके गाहक भी अच्छे-अच्छे शाहज़ादे हैं। मैंने ठान ली है कि हुस्नआरा को आपके हाल से इत्तला दूँ, और कह दूँ कि अब वह आज़ाद नहीं रहे, अब दो-दो बगल में रहती हैं, उस पर बहू-बेटियों पर बुरी निगाह रखते हैं। अगर तुमने मेरा इत्मीनान न कर दिया तो पछताओगे।

यह खत पढ़ कर आज़ाद ने जैनब से कहा — क्यों, तुम इधर की उधर लगा-लगा कर आपस में लड़वाती हो? तुमने उनसे जा के क्या कह दिया, मुझसे भी पूछ लिया होता।

जैनब — ऐ हुजूर, तो मेरा इसमें क्या कुसूर। मुझसे जो सरकार ने पूछा, वह मैंने बयान कर दिया। इसमें बंदी ने क्या गुनाह किया!

आज़ाद — खैर, तो हुआ सो हुआ, लाओ कलम-दावात।

आज़ाद ने उसी वक़्त इस खत का जवाब लिखा — बेगम साहब की खिदमत में आदाब-अर्ज करता हूँ। आप मुझ पर बेवफाई का इलजाम लगाती हैं। आपको शायद यकीन न आएगा, मगर अकसर मुकामों पर ऐसी-ऐसी परियाँ मुझ पर रीझी हैं कि अगर हुस्नआरा का सच्चा इश्क न होता तो मैं हिंदोस्तान में आने का नाम न लेगा, मगर अफसोस है कि मेरी कुल मेहनत बेकार गई। मेरा खुदा जानता है, जिन-जिन जंगलों, पहाड़ों पर मैं गया, कोई कम गया होगा। हफ्तों एक अँधेरी कोठरी मे कैद रहा, जहाँ किसी जानदार की सूरत नजर न आती थी। और यह सब इसलिए कि एक परी मुझसे शादी करना चाहती थी और मैं इन्कार करता था कि हुस्नआरा को क्या मुँह दिखाऊँगा। यह दोनों लेडियाँ जो मेरे साथ हैं, उन्होंने मुझ पर बड़े-बड़े एहसान किए हैं। गाढ़े वक़्त में काम आई हैं, वरना आज आज़ाद यहाँ न होता। मगर इतने पर भी आप नाराज हो रही हैं, इसे अपनी बदनसीबी के सिवा और क्या कहूँ। खुदा के लिए कहीं हुस्नआरा को न लिख भेजना। और अगर यही चाहती हो कि मैं जान दूँ तो

साफ-साफ कह दो। हुस्नआरा को लिखने से क्या फायदा। और क्या लिखूँ। तबीयत बेचैन है।

बेगम साहब ने यह खत पढ़ा तो गुस्सा ठंडा हो गया, छमछम करती हुई परदे के पास आकर खड़ी हुई तो देखा — आज़ाद सिर पर हाथ रख कर रो रहे हैं। आहिस्ता से पुकारा — आज़ाद!

जैनब — हुजूर, देखिए कौन सामने खड़ा है? जरी उधर निगाह तो कीजिए।

बेगम — आज़ाद, जो रोए तो हमीं को है-है करे। जैनब, जरा सुराही तो उठा ला, मुँह पर छींटे दे।

जैनब — हुजूर, क्या गजब कर रहे हैं, वह सामने कौन खड़ा है?

आज़ाद — (बेगम साहब की तरफ रुख कर के) क्या हुक्म है?

बेगम — मेरा तो कलेजा धक-धक कर रहा है।

आज़ाद — कोई बात नहीं। खुदा जाने, इस वक़्त क्या याद आया। आपको तकलीफ होती है, आप जायँ, मैं बिलकुल अच्छा हूँ।

बेगम — अब चोंचले रहने दो, मुँह धो डालो, वाह, मर्द हो कर आँसू बहाते हो? तुमसे तो छोकरियाँ अच्छी। यह तुम लड़ाई में क्या करते थे?

आज़ाद — जलाओ और उस पर ताने दो।

बेगम — क्या खूब, जलाने की एक ही कही। जलाते तुम हो या मैं? एक छोड़ दो-दो। वहाँ से लाए, ऊपर से बातें बनाते हो, मुँह दिखाने काबिल नहीं रखा अपने को हुस्नआरा ने उड़ती खबर पाई थी कि आज़ाद ने किसी औरत को ब्याह लिया तो पछाड़ें खाने लगीं। एक तुम हो कि जोड़ी साथ लाए और ऊपर से कहते हो, जलाओ। तुम्हें शर्म भी नहीं आती?

आज़ाद — क्या टेढ़ी खीर है, न खाते बने, न छोड़ते बने।

बेगम — तो फिर साफ-साफ क्यों नहीं बता देते?

आज़ाद — ब्याहता बीवी हैं दोनों, और क्या कहें।

बेगम — अच्छा साहब, ब्याहता बीवी नहीं, दोनों आपकी बहनें सही, अब खुश हुए? बरसों बाद आए तो एक काँटा साथ ले के। भला सोचो, मैं चुपकी हो रहूँ तो हुस्नआरा क्या कहेगी कि वाह बहन, तुमने हमको लिखा भी नहीं। लेकिन दो में क्या फायदा होगा तुम्हें?

आज़ाद — आप दिल्लगी करती हैं और मैं चुप हूँ। फिर मेरी भी जबान खुलेगी।

बेगम – तुम हमको सिर्फ इतना बतला दो कि यह दोनों यहाँ किस लिए आई हैं, तो मैं चुप ही रहूँ।

आज़ाद – तो उन दोनों को यहाँ बुला लाऊँ?

बेगम – उनको आने दो, उनसे सलाह ले के जवाब दूँगी।

आज़ाद – तो क्या आप हममें और उनमें कोई फर्क समझती हैं। मैं तो तुमको और हुस्नआरा को एक नजर से देखता हूँ।

बेगम – बस, अब मैं कह बैठूँगी। बड़े बेशर्म हो, छँटे हुए बेहया।

इतने में जैनब ने आकर कहा – मिर्जा साहब आ गए। बेगम साहब झपट कर कोठे पर हो रहीं और आज़ाद बारादरी में आकर लेट रहे।

मिर्जा – आपने अभी तक हम्माम किया या नहीं? बड़ी देर हो गई है। जिस तरफ जाता हूँ, लोग गाड़ी रोक कर आपका हाल पूछने लगते हैं। कल शाम को सब लोग आपसे टाउनहाल में मिलना चाहते हैं। हाँ यह तो फरमाइए, यह दोनों परियाँ कौन हैं? एक तो उनमें से किसी और मुल्क की मालूम होती है।

आज़ाद – एक तो रूस की है और दूसरी कोहकाफ की।

मिर्जा – यार, बुरा किया। हुस्नआरा सुनेंगी तो क्या कहेंगी?

इधर तो यह बातें हो रही थीं, उधर शिताबजान ने खोजी से कहा- जरा अकेले में चलिए, आपसे कुछ कहना है। खोजी ने कहा — खुदा की कुदरत है कि माशूक तक हमसे अकेले में चलने को कहते हैं। जो हुक्म हो, बजा लाऊँ। अगर तोप के मोहरे पर भेज दो तो अभी चला जाऊँ। यह तो कहो, तुम्हारे सबब से चुप हूँ, नहीं अब तक दस-पाँच को कत्ल कर चुका होता।

यह कह कर ख्वाजा साहब झपट कर बाहर निकले। इत्तिफ़ाक़ से एक गाड़ीवान आहिस्ता-आहिस्ता गाड़ी हाँकता चला जाता था। खोजी उसे गालियाँ देने लगे — भला बे गीदी, भला, खबरदार जो आज से यह बेअदबी की। तू जानता नहीं, हम कौन हैं? हमारे मकान की तरफ से गाता हुआ निकलता है। हमें भी रिआया समझ लिया है। भला बी शिताबजान गाड़ी की घड़घड़ाहट सुनेंगी तो उनके कानों को कितना नागवार लगेगा! गाड़ीवाला पहले तो घबराया कि यह माजरा क्या है! गाड़ी रोक कर खोजी की तरफ घूरने लगा। मगर जब ख्वाजा साहब झपट कर गाड़ी के पास पहुँचे, और चाहा कि लकड़ी जमाएँ कि उसने इनके दोनों हाथ पकड़ लिए। अब आप सिटपिटा रहे हैं और वह छोड़ता ही नहीं।

खोजी – कह दिया, खैर इसी में है कि हमारा हाथ छोड़ दो, वरना बहुत पछताओगे। मैं जो बिगड़ूँगा तो एक पलटन के मनाए भी न मानूँगा।

गाड़ीवान – हाथ तो अब तुम्हारे छुड़ाए नहीं छूट सकता।

खोजी – लाना तो मेरी करौली।

गाड़ीवान – लाना तो मेरा ढाई तलेवाला चमरौधा।

खोजी – शरीफों में ऐसी बातें नहीं होतीं।

गाड़ीवान – शरीफ कभी तुम्हारे बाप भी थे कि तुम्हीं शरीफ हुए?

खोजी – अच्छा, हाथ छोड़ दो। वरना इतनी करौलियाँ भोंकूँगा कि उम्र भर याद करोगे।

गाड़ीवान ने इस पर झल्ला कर खोजी का हाथ मरोड़ना शुरू किया। खोजी की जान पर बन आई, मगर क्या करें। सबसे ज्यादा ख्याल इस बात का था कि कहीं शिताबजान न देख लें, नहीं तो बिलकुल नजरों से गिर जाऊँ।

खोजी – कहता हूँ, हाथ छोड़ दे, मैं कोई ऐसा वैसा आदमी नहीं हूँ।

गाड़ीवान — मैं तो गाता हुआ चला जाता था। आपने गालियाँ क्यों दीं?

खोजी — हमारे घर की तरफ से क्यों गाते जाते थे?

गाड़ीवान — आप मना करने वाले कौन? क्या किसी की जबान बन्द कर दीजिएगा?

बारे कई आदमियों ने गाड़ीवान को समझा कर खोजी का हाथ छुड़ाया। खोजी झाड़-पोंछ कर अन्दर गए और शिताबजान से बोले — मैं बात पीछे करता हूँ, करौली पहले भोंकता हूँ। पाजी गाता हुआ जाता था। मैंने पकड़ कर इतनी चपतें लगाईं कि भुरता ही बना दिया। मेरे मुँह में आग बरसती है। अच्छा, अब यह फरमाइए कि किस नेकबख्त बदनसीब से तुम्हारी शादी पहले हुई थी वह अब कहाँ है और कैसा आदमी था?

शिताबजान — यह तो मैं पीछे बतलाऊँगी। पहले यह फरमाइए कि उसको नेकबख्त कहा तो बदनसीब क्यों कहा? जो नेकबख्त है वह बदनसीब कैसे हो सकता है?

खोजी — कसम खुदा की, मेरी बातें जवाहिरात में तौलने के काबिल हैं। नेकबख्त इसलिए कहा कि तुम जैसी बीवी पाई। बदनसीब इसलिए कहा कि या तो वह मर गया या तुमने उसे निकाल बाहर किया।

शिताबजान — अच्छा सुनिए, पहले मेरी शादी एक खूबसूरत जवान के साथ हुई थी। जिसकी नजर उस पर पड़ी, रीझ गया।

खोजी — यहाँ भी तो वही हाल है। घर से निकलना मुश्किल है।

शिताबजान — हाजिर-जवाब ऐसा था कि बात की बात में गजलें कह डालता था।

खोजी — यह बात मुझमें भी है। दस हजार शेर एक मिनट में कह दूँ, एक कम न एक ज्यादा!

शिताबजान — मैं यह कब कहती हूँ कि तुम उससे किसी बात में कम हो। अव्वल तो जवान गभरू, अभी मसें भींगती हैं। आदमी क्या, शेर मालूम होते हो। फिर सिपाही आदमी हो, उस पर शायर भी हो। बस जरा झल्ले हो, इतनी खराबी है।

खोजी — अगर मेरा हुक्म मानती हो तो मोम हो जाऊँगा। हाँ, लड़ोगी तो हमारा मिजाज बेशक झल्ला है।

शिताबजान — मियाँ, मैं लौंडी बन के रहूँगी। मुझसे लड़ाई-झगड़े से वास्ता? मगर यह बताओ कि रहोगे कहाँ? मैं बंबई में रहूँगी। तुम्हारे साथ मारी-मारी न फिरूँगी।

खोजी — तुम जहाँ रहोगी, वहीं मैं रहूँगा; मगर...

शिताबजान — अगर-मगर मैं कुछ नहीं जानती। एक तो तुमको अफीम न खाने दूँगी! तुमने अफीम खाई और मैंने किसी बहाने से जहर खिला दिया।

खोजी — अच्छा न खाएँगे। कुछ जरूरी है कि अफीम खाए ही। न खाई, पी ली, चलो छुट्टी हुई।

शिताबजान — पीने भी न दूँगी। दूसरी शर्त यह है कि नौकरी जरूर करो, बगैर नौकरी के गुजारा नहीं। तीसरी शर्त यह है कि मेरे दोस्त और रिश्तेदार जो आते हैं, बदस्तूर आया करेंगे।

खोजी — वाह, कहीं आने न दूँ। इन बदमाशों को फटकने न दूँगा।

शिताबजान — अच्छा तो कल मेरे घर चलो, वहीं हमारा निकाह होगा।

दूसरे दिन खोजी शिताबजान के साथ उसके घर चले। बंबई से कई स्टेशन के बाद शिताबजान गाड़ी से उतर पड़ी और खोजी से कहा — अब आपके पास जितने रुपए पैसे हों, चुपके से निकाल कर रख दो। मेरे घरवाले बिना नजराना लिए शादी न करेंगे।

खोजी ने देखा कि यहाँ बुरे फँसे। अब अगर कहते हैं कि मेरे पास रुपए नहीं हैं तो हेठी होती है। उन्होंने समझा था कि शादी

का दो घड़ी मजाक रहेगा, मगर अब जो देखा कि सचमुच शादी करनी पड़ेगी तो चौकन्ने हुए। बोले — मैं तो दिल्लगी करता था जी। शादी कैसी और ब्याह कैसा? कुछ ऊपर साठ बरस का तो मेरा सिन है, अब भला मैं शादी क्या करूँगा। तुम अभी जवान हो, तुमको सैकड़ों जवान मिल जाएँगे।

शिताबजान — तुमको इससे मतलब क्या! इसकी मुझे फिक्र होनी चाहिए। जब मेरा तुम पर दिल आया और तुम भी निकाह करने पर राजी हुए तो अब इनकार करना क्या माने। अच्छे हो तो मेरे, बुरे हो तो मेरे।

मियाँ खोजी घबराए, सिट्टी-पिट्टी भूल गई। अपनी अक्ल पर बहुत पछताए और उसी वक़्त आज़ाद के नाम यह खत लिखा — मेरे बड़े भाई साहब, सलाम! मेरी आँख से अब गफलत का परदा उठ गया। मैं कुछ ऊपर साठ बरस का हूँगा। इस सिन में निकाह का ख्याल सरासर गैर मुनासिब है। मगर शिताबजान मुझ पर बुरी तरह आशिक हो गई है। उसका सबब यह है कि जिस तरह मेरा जिस्म चोर है उसी तरह मेरी सूरत भी चोर है। मुझे कोई देखे तो समझे कि हड्डियाँ तक गल गई हैं, मगर आप खूब जानते हैं कि इन्हीं हड्डियों के बल पर मैंने मिस्र के नामी पहलवान को लड़ा दिया और बुआ जाफरान जैसी देवनी की लातें सहीं। दूसरा होता, तो कचूमर निकल जाता। उसी तरह मेरी

सूरत में भी यह बात है कि जो देखता है, आशिक हो जाता है। मैं खुद सोचता हूँ कि यह क्या बात है, मगर कुछ समझ में नहीं आता। खैर, अब आपसे यह अर्ज है कि खत देखते मेरी मदद के लिए दौड़ो, वरना मौत का सामना है। सोचा था कि शादी न होगी तो लोग हँसेंगे कि आज़ाद तो दो-दो साथ लाए और ख्वाजा साहब मोची के मोची रहे। लेकिन यह क्या मालूम था कि यह शादी मेरे लिए जहर होगी। जरा शर्तें तो सुनिए — अफीम छोड़ दो और नौकरी कर लो। अब बताइए कि अफीम छोड़ दूँ तो जिंदा कैसे रहूँ? अब रही नौकरी। यहाँ लड़कपन से फिकरेबाजों की सोहबत में रहे। गप्पे उड़ाना, बातें बनाना, अफीम की चुस्की लगाना हमारा काम है। भला हमसे नौकरी क्या होगी, और करना भी चाहें तो किसकी नौकरी करें। सरकारी नौकरी तो मिलने से रही, वहाँ तो आदमी पचपन साल का हुआ और निकाला गया, और यहाँ पचपन और दस पैंसठ बरस के हैं। हम तो इसी काम के हैं कि किसी नवाबजादे की सोहबत में रहें और उसको ऐसा पक्का रईस बना दें कि वह भी याद करे। चंडू का कवाम हमसे बनवा ले, अफीम ऐसी पिलायें कि उम्र भर याद करे, रहा यह कि हम जमा खर्च लिखें, यह हमसे न होगा, जिसको अपना काम गारत कराना हो वह हमें नौकर रखे। इसलिए अगर मेरा गला यहाँ से छुड़ा दो तो बड़ा एहसान हो। खुदा जाने, तुम लोग मुझे क्यों

खाक में मिलाते हो, तुम्हारे साथ रूम गया, तुम्हारी तरफ से लड़ा-भिड़ा, वक़्त-बेवक़्त काम आया और अब तुम मुझे जबह किए देते हो।

यह खत लिख कर शिताबजान को दिया और आज़ाद के पास जल्द पहुँचा दो। शादी के मामले में उनसे कुछ सलाह करनी है।

शिताबजान — सलाह की क्या जरूरत है भला?

खोजी — शादी-ब्याह कोई खाला जी का घर नहीं है, जरा आदमी को इस बारे में ऊँच-नीच सोच लेना चाहिए, मैंने सिर्फ यह पूछा है कि तुम्हारी शर्तें मंजूर करूँ या नहीं।

शिताबजान — अच्छा जाओ, मैं कोई शर्त नहीं करती।

खोजी — अब मंजूर, दिल से मंजूर, मगर यह खत तो भेज दो।

अब सुनिए कि सिताबजान के साथ एक खाँ साहब भी थे। मालबे के रहनेवाले। उन्होंने खोजी को दो दिन में इतनी अफीम पिला दी जितनी वह चार दिन में भी न पीते। सफर में सेहत भी कुछ बिगड़ गई थी। दो ही दिन में चुर्र-मुर्र हो गए। लेटे-लेटे खाँ साहब से बोले — जनाब, दूसरा इतनी अफीम पीता तो बोल जाता, क्या मजाल कि इस शहर में कोई मेरा मुकाबिला कर

सके, और इस शहर पर क्या मौकूफ है, जहाँ कहिए, मुकाबिले के लिए तैयार हूँ, कोई तोले भर पिए तो मैं सेर भर पी जाऊँ।

खाँ साहब — मगर उस्ताद, आज कुछ अंजर-पंजर ढीले नजर आते हैं, शायद अफीम ज्यादा हो गई।

खोजी — वाह, ऐसा कहीं कहिएगा भी नहीं। जब जी चाहे, साथ बैठ कर पी लीजिए।

शाम तक खोजी की हालत और भी खराब हो गई। शिताबजान ने उन्हें दिक करना शुरू किया। ऐ आग लगे तेरे सोने पर मरदुए, कब तक सोता रहेगा!

खोजी — सोने दो, सोने दो।

शिताब — भला खैर, हम तो समझे थे, खबर आ गई।

खाँ — कहती किससे हो, वह पहुँचे खुदागंज।

शिताब — ऐ फिर पीनक आ गई, अभी तो जिंदा हो गया था।

खाँ — (कान के पास जा कर) ख्वाजा साहब!

खोजी — जरा सोने दो भाई।

शिताब — मेरे यहाँ पीनकवालों का काम नहीं है।

खाँ — ख्वाजा साहब, अरे ख्वाजा साहब, ये बोलते ही नहीं! चल बसे!

ख्वाजा साहब की हालत जब बहुत खराब हो गई, तो एक हकीम साहब बुलाए गए। उन्होंने कहा — जहर का असर है। नुस्खा लिखा। बारे कुछ रात जाते-जाते नशा टूटा। खोजी की आँखें खुलीं।

शिताब — मैं तो समझी थी, तुम चल बसे।

खोजी — ऐसा न कहो भाई, जवानी की मौत बुरी होती है।

शिताब — मर मुड़ीकाटे, अभी जवान बना है!

खोजी — बस जबान सँभालो, हम समझ गए कि तुम कोई भठियारी हो। मैं अगर अपने हालात बयान करूँ तो आँखें खुल जाएँ। हम अमीर-कबीर के लड़के हैं। लड़कपन में हमारे दरवाजे पर हाथी बँधता था, तुम जैसी भठियारियों को मैं क्या समझता हूँ।

यह कह कर आप मारे गुस्से के घर से निकल खड़े हुए, समझते थे कि शिताबजान मुझ पर आशिक है ही, उससे भला कैसा रहा जायगा, जरूर मुझे तलाश करने आएगी, लेकिन जब बहुत देर गुजर गई और शिताबजान ने खबर न ली तो आप लौटे! देखा तो

शिताबजान का कहीं पता नहीं, घर का कोना-कोना टटोला, मगर शिताबजान वहाँ कहाँ? उसी मुहल्ले में एक हबशिन रहती थी। खोजी ने जा कर उससे अपना सारा किस्सा कहा, तो वह हँस कर बोली — तुम भी कितने अहमक हो। शिताबजान भला कौन है? तुमको मिर्जा साहब और आज़ाद ने चकमा दिया है।

खोजी को आज़ाद की बेवफाई का बहुत मलाल हुआ। जिसके साथ इतने दिनों तक जान-जोखिम करके रहे, उसने हिंदोस्तान में ला के उन्हें छोड़ दिया। खूब रोए, तब हबशिन से बातें करने लगे —

खोजी — किस्मत कहाँ से हमें कहाँ लाई?

हबशिन — आपका घोंसला किस झाड़ी में है?

खोजी — हम खोजिस्तान के रहनेवाले हैं।

हबशिन — यह किस जगह का नाम लिया? खोजिस्तान तो किसी जगह का नाम नहीं मालूम होता।

खोजी — तो क्या सारी दुनिया तुम्हारी देखी हुई है? खोजिस्तान एक सूबा है, शकरकंद और जिलेबिस्तान के करीब। बताशा नदी उसे सैराब करता है।

हबशिन — भला शकरकंद भी कोई देस है?

खोजी — है क्यों नहीं, समरकंद का छोटा भाई है।

हबशिन — वहाँ आप किस मुहल्ले में रहते थे?

खोजी — हलुवापुर में।

हबशिन — तब तो आप बड़े मीठे आदमी हैं।

खोजी — मीठे तो नहीं, हैं तो तीखे, नाक पर मक्खी नहीं बैठने देते, मगर मीठी नजर के आशिक हैं -

ख्वाहिश न कंद की है, न तालिब शकर के हैं;
चस्के पड़े हुए तेरी मीठी नजर के हैं।

हबशिन — तो आप भी मेरे आशिकों मे हैं?

खोजी — आशिक कोई और होंगे, हम माशूकों के माशूक हैं। सारी दुनिया छान डाली, पर जहाँ गया, माशूकों के मारे नाक में दम हो गया। बुआ जाफरान नामी एक औरत हम पर इतनी रीझी कि पट्टे पकड़ के दे जूता दे जूता मार के उड़ा दिया। मगर हमारी बहादुरी देखो कि उफ तक न की।

हबशिन — हमको यकीन क्योंकर आए? हम तो जब जानें कि सिर झुकाओ और हम दो-चार लगाएँ, फिर देखें, कैसे नहीं उफ करते।

खोजी – हाँ, हम हाजिर हैं, मगर आज अभी अफीम यों ही सी पी है। जब नशा जमे तब अलबत्ता आजमा लो।

हबशिन – ऐ है, फिर निगोड़ी अफीम का नाम लिया, मरते-मरते बचे और अब तक अफीम ही अफीम कहते जाते हो?

खोजी – तुम इसके मजे क्या जानो। अफीम खाना फकीरी है। गरूर को तो यह खाक में मिला देती है। मैं कितनी ही जगह पिटा, कभी जूतियाँ खाईं, कभी कोई काँजी-हौज ले गया, मगर हमने कभी जवाब न दिया।

हबशिन चली गई तो खोजी साहब ने एक डोली मँगवाई और उसमें बैठ कर चंडूखाने पहुँचे। लोगों ने इन्हें देखा तो चकराए कि यह नया पंछी कौन फँसा।

खोजी – सलाम आलेकुम भाइयो!

इमामी – आलेकुम भाई, आलेकुम। कहाँ से आना हुआ?

खोजी – जरा टिकने दो, फिर कहूँ। दो बरस लड़ाई पर रहा, जब देखो मोरचाबंदी, मर मिटा, मगर नाम भी वह किया कि सारी दुनिया में मशहूर हो गया।

इमामी – लड़ाई कैसी? आजकल तो कहीं लड़ाई नहीं है।

खोजी – तुम घर में बैठे-बैठे दुनिया का क्या हाल जानो।

कादिर — क्या रूम-रूस की लड़ाई से आते हो क्या?

खोजी — खैर, इतना तो सुना।

इमामी — अजी, यह न कहिए, इनको सारी दुनिया का हाल मालूम रहता है। कोई बात इनसे छिपी थोड़ी हैं।

कादिर — रूम वाले ने रूस के बादशाह से कहा कि जिस तरह तुम्हारा चचा हकीमी कौड़ी देता था उसी तरह तुम भी दिया करो, मगर उसने न माना। इसी बात पर तकरार हुई, तो रूम वाले ने कहा, अच्छा, अपने चचा की कब्र में चलो और पूछ देखो, क्या आवाज आती है। बस जनाब, सुनने की बात है कि रूम वाले ने न माना। रूम के बादशाह के पास हजरत सुलेमान की अँगूठी थी। उन्होंने जो उसे हवा में उछाला, तो सैकड़ों जिन्न हाजिर हो गए। बादशाह ने कहा कि रूस में चारों तरफ आग लगा दो। चारों तरफ आग लग गई। तब रूस के बादशाह ने वजीरों को जमा करके कहा, आग बुझाओ, बस सवा करोड़ मिश्ती मशकें भर भरके दौड़े। एक-एक मशक में दो-दो लाख मन पानी आता था।

खोजी — क्यों साहब, यह आपसे किसने कहा है?

इमामी — अजी, यह न पूछो, इनसे फरिश्ते सब कह जाते हैं।

कादिर — बस साहब, सुनने की बातें हैं कि सवा दो करोड़ मशकें मुल्क के चारों कोनों पर पड़ती थीं, मगर आग बढ़ती ही जाती थी। तब बादशाह ने हुक्म दिया कि दो करोड़ लाख भिश्ती काम करें और मशकों में छब्बीस-छब्बीस करोड़ मन पानी हो।

खोजी — ओ गीदी, क्यों इतना झूठ बोलता है?

शुबराती — मियाँ, सुनने दो भाई, अजब आदमी हो।

खोजी — अजी, मैं तो सुनते-सुनते पागल हो गया।

कादिर — आप लखनऊ के महीन आदमी, उन मुल्कों का हाल क्या जानें। रूम, रूस, तुरान, अनूपशहर का हाल हमसे सुनिए।

इमामी — वहाँ के लोग भी देव होते हैं देव!

कादिर — रूस के बादशाह की खुराक का हाल सुनो तो चकरा जाओ। सबेरे मुँह अँधेरे 6 बकरों की यखनी, चार बकरों के कबाब, दस मुर्ग का पोलाव और दस मुरैले तरकीब से खाते हैं, और 9 बजे के वक़्त सौ मुर्गों का शोरबा और दस सेर ठंडा पानी, बारह बजे जवाहिरात का शरबत, कभी पचास मन, कभी साठ मन, चार बजे दो कच्चे बकरे, दो कच्चे हिरन, शाम को शराब का एक पीपा और पहर रात गए गोश्त का एक छकड़ा।

इमामी — जब तो ताकतें होती हैं कि सौ-सौ आदमियों को एक आदमी मार डालता है। हिंदोस्तान का आदमी क्या खा कर लड़ेगा।

शुबराती — हिंदोस्तान में अगर हाजमे की ताकत कुछ है तो चंडू के सबब से, नहीं तो सब के सब मर जाते।

इमामी — सुना, रूसवाले हाथी से अकेले लड़ जाते हैं।

कादिर — हमसे सुनो, दस हाथी हों और एक रूसी तो वह दसों को मार डालेगा।

खोजी — आप रूस कभी गए भी हैं?

कादिर — अजी हम बैठे सारी दुनिया की सैर कर रहे हैं।

खोजी — हम तो अभी लड़ाई के मैदान से आते हैं, वहाँ एक हाथी भी न देखा।

कादिर — रूमवालों ने जब आग लगा दी, तो वह ग्यारह बरस, ग्यारह महीने, ग्यारह दिन, ग्यारह घंटे जला की। अब जा के जरी-जरी आग बुझी है, नहीं तो अजब नक्शा था कि सारा मुल्क चल रहा है और पानी का छिड़काव हो रहा है। रूमवाले जब रात को सोते हैं तो हर मकान में दो देवों का पहरा रहता है।

खोजी – अरे यारो, इस झूठ पर खुदा की मार, हम बरसों रहे, एक देव भी न देखा।

कादिर – आपकी तो सूरत ही कहे देती है कि आप रूम जरूर गए होंगे। खुदा झूठ न बुलवाए तो घर के बाहर कदम नहीं रखा।

खोजी समझे थे कि चंडूखाने में चल कर अपने सफर का हाल बयान करेंगे और सबको बन्द कर देंगे, चंडूखाने में इनकी तूती बोलने लगेगी, मगर यहाँ जो आए तो देखा कि उनके भी चचा मौजूद हैं। झल्ला कर पूछा, बतलाओ तो रूम के पायतख्त का क्या नाम है?

कादिर – वाह, इसमें क्या रखा है, भला-सा नाम तो है, हाँ मर्जबान।

खोजी – इस नाम का तो वहाँ कोई शहर ही नहीं।

कादिर – अजी, तुम क्या जानो, मर्जबान वह शहर है जहाँ पहाड़ों पर परियाँ रहती हैं। वहाँ पहाड़ों पर बादल पानी पी-पी कर जाते हैं और सबको पानी पिलाते हैं।

खोजी – तो वह कोई दूसरा रूम होगा। जिस रूम से मैं आता हूँ वह और है।

कादिर — अच्छा बताओ, रूम के बादशाह का क्या नाम है?

खोजी — सुलतान अब्दुलहमीद खाँ।

कादिर — बस-बस, रहने दीजिए आप नहीं जानते, उस पर दावा यह है कि हम रूम से आते हैं। भला लड़ाई का क्या नतीजा हुआ, यही बताइए?

खोजी — पिलौना की लड़ाई में तुर्क हार गए और रूसियों ने फतह पाई।

कादिर — क्या बकता है बेहूदा। खबरदार जो ऐसा कहा होगा तो इतने जूते लगाऊँगा कि भुरकस ही निकल जायगा।

इमामी — हमारे बादशाह के हक में बुरी बात निकालता है, बेअदब कहीं का। बच्चा, यहाँ ऐसी बातें करोगे तो पिट जाओगे।

खोजी — सुनो जी, हम फौजी आदमी हैं।

कादिर — अब ज्यादा बोलोगे तो उठ कर कचूमर ही निकाल दूँगा।

शुबराती — यह हैं कहाँ के, जरा सूरत तो देखो, मालूम होता है,कब्र से निकल भागा है।

खोजी को सबने मिल कर ऐसा डपटा कि बेचारे करौली और तमंचा भूल गए। गए तो बड़े जोम में थे कि चंडूखाने में खूब

डींग हाँकेंगे, मगर वहाँ लेने के देने पड़ गए। चुपके से चंडू के छींटे उड़ाए और लंबे हुए। रास्ते में क्या देखते हैं कि बहुत से आदमी एक जगह खड़े हैं। आपने घुस कर देखा तो एक पहलवान बीच में बैठा है और लोग खड़े उसकी तारीफों के पुल बाँध रहे हैं। खोजी ने समझा कि हमने भी तो मिस्र के पहलवान को पटका था, हम क्या किसी से कम हैं? इस जोम में आपने पहलवान को ललकारा – भाई पहलवान, हम इस वक़्त इतने खुश हैं कि फूले नहीं समाते। मुद्दत के बाद आज अपना जोड़ीदार पाया।

पहलवान – तुम कहाँ के पहलवान हो भाई साहब?

खोजी – यार, क्या बताएँ। अपने साथियों में कोई रहा ही नहीं। अब तो कोई पहलवान जँचता ही नहीं।

पहलवान – उस्ताद, कुछ हमको भी बताओ।

खोजी – अजी, तुम खुद उस्ताद हो।

पहलवान – आप किसके शागिर्द हैं?

खोजी – शागिर्द तो भाई, किसी के नहीं हुए। मगर हाँ, अच्छे-अच्छे उस्तादों ने लोहा मान लिया। हिंदोस्तान से रूम तक और रूम से रूस तक सर कर आया। तुम आजकल कहाँ रहते हो?

पहलवान — आजकल एक नवाब साहब के यहाँ हैं। तीन रुपया रोज देते हैं। एक बकरा, आठ सेर दूध और दो सेर घी बँधा है। नवाब अमजदअली नाम है।

खोजी — भला वहाँ चंडू की भी चर्चा रहती हैं?

पहलवान — कुछ मत पूछिए भाई साहब, दिन-रात।

खोजी — भला वहाँ मस्तियाबेग भी हैं?

पहलवान — जी हाँ हैं, आप कैसे जान गए?

खोजी — अजी, वह कौन सा नवाब है जिसकी हमने मुसाहबी न की हो। नवाब अमजदअजी के यहाँ बरसों रहा हूँ। बटेरों का अब भी शौक है या नहीं?

पहलवान — अजी, अभी तक सफशिकन का मातम होता है।

खोजी — तुम्हारा कब तक जाने का इरादा है?

पहलवान — मैं तो आज ही जा रहा हूँ।

खोजी — तो भाई, हमको भी जरूर लेते चलो। हम अपना किराया दे देंगे।

पहलवान — तो चलिए, मेरा इसमें हरज ही क्या है। हमको नवाब साहब ने सिर्फ दो दिन की छुट्टी दी थी। कल यहाँ दाखिल

हुए, आज दंगल में कुश्ती निकाली और शाम को रेल पर चल देंगे। हमारे साथ मस्तियाबेग भी हैं।

शाम को पहलवान के साथ खोजी स्टेशन पर आए। पहलवान ने कहा — वह देखिए मिर्जा साहब खड़े हैं, जा कर मिल लीजिए। ख्वाजा आहिस्ता-आहिस्ता गए और पीछे से मिर्जा साहब की आँखें बन्द कर लीं।

मिर्जा — कौन है भाई, कोई मुसम्मात हैं क्या? हाथ तो ऐसे ही मालूम होते हैं।

पहलवान — भला बूझ जाइए तो जानें।

मिर्जा — कुछ समझ में नहीं आता, मगर है कोई मुसम्मात।

खोजी — भला गीदी, भला, अभी से भूल गया, क्यों?

मिर्जा — अख्खाह, ख्वाजा साहब हैं! कहो भाई खोजी, अच्छे तो रहे?

खोजी — खोजी कहीं और रहते होंगे। अब हमें ख्वाजा साहब कहा करो।

मिर्जा — अरे कमबख्त, गले तो मिल ले।

खोजी — सरकार कैसे हैं, घर में तो खैर-आफ़ियत है?

मिर्जा — हाँ, सब खुदा का फजल है, बेगम साहब पर कुछ आसेब था, मगर अब अच्छी हैं। कहो, तुमने तो खूब नाम पैदा किया।

खोजी — नाम, अरे हम मेजर थे।

मिर्जा — सरकार को इस लड़ाई के जमाने में अखबार से बड़ा शौक था। आज़ाद को तो सब जानते हैं, मगर तुम्हारा हाल जब से पढ़ा तब से सरकार को अखबारों का एतबार जाता रहा। कहते थे कि समुद्र की सूरत देख कर इसका जिगर क्यों न फट गया। भला इसे लड़ाई से क्या वास्ता।

खोजी — अब इसका हाल तो उन लोगों से पूछो जो मोरचों पर हमारे शरीक थे। तुम मजे से बैठे-बैठे मीठे टुकड़े उड़ाया किए, तुमको इन बातों से क्या सरोकार, मगर भाई, नशों में नशा शराब का। इधर डंके पर चोट पड़ी, उधर सिपाही कम कस कर तैयार हो गए।

मिर्जा — अब सरकार के सामने न कहना, नहीं खड़े-खड़े निकाल दिए जाओगे।

खोजी — अजी, अब तो सरकार के बाप के निकाले भी नहीं निकल सकते।

मिर्जा — एक बार तो अखबार में लिखा था कि खोजी ने शादी कर ली है।

खोजी — अरे यार, इसका हाल न पूछो, अपनी शक्ल-सूरत का हाल तो हमको बाहर जा कर मालूम हुआ। जिस शहर में निकल गए, करोड़ों औरतें हम पर आशिक हो गईं। खास कर एक कमसिन नाजनीन ने तो मुझे कहीं का न रखा।

मिर्जा — तो आपकी सूरत पर सब औरतें जान देती थीं? क्या कहना है, तुमने बहादुरी के काम भी तो खूब किए।

खोजी — भाईजान, मोरचे पर मेरी बहादुरी देखते तो दंग हो जाते। खैर, उस परी पर मेरे सिवा पचास तुर्की अफसर भी आशिक थे। यह राय तय पाई कि जिससे वह परी राजी हो उससे निकाह करें। एक रोज सब बन-ठन कर आए, मगर उस शोख की नजर आपके खादिम ही पर पड़ती थी।

मिर्जा — ऐ क्यों नहीं, हजार जान से आशिक हो गई होगी।

खोजी — आव देखा न ताव, इठलाती हुई आई और मेरा हाथ अपने सीने पर रख लिया। अब सुनिए, उन सबों के दिल में हसद की आग भड़की, कहने लग, यों हम न मानेंगे, जो उससे निकाह करे वह पहले पचासों आदमियों से लड़े। हमने कहा, खैर! तलवार खींच कर जो चला, तो वह-वह चोटें लगाईं कि सब के सब

बिलबिलाने लगे। बस परी हमको मिल गई। अब दरबार के रंग ढंग बयान करो।

मिर्जा — सब तुम्हारी याद किया करते हैं। झम्मन ने वह चुगुलखोरी पर कमर बाँधी हैं कि सैकड़ों खिदमतगार और कितने ही मुसाहबों को मौकूफ करा दिया।

खोजी — एक ही पाजी आदमी है। हम रूम गए, फ्रांस गए, सारी दुनिया के रईस देख डाले, मगर नवाब सा भोला-भाला रईस कहीं न देखा। गजब खुदा का कि एक बदमाश ने जो कह दिया, उसका यकीन हो गया, अब कोई लाख समझाए, वह किसी की सुनते ही नहीं।

मिर्जा — मेरा तो अब वहाँ रहने को जी नहीं चाहता।

खोजी — अजी, इस झगड़े को चूल्हे में डालो। अब हम-तुम चल कर रंग जमाएँगे। तुम मेरी हवा बाँधना और हम दोनों एक जान दो काबिल हो कर रहेंगे।

मिर्जा — मैं कहूँगा, खुदावंद, अब यह सब मुसाहबों के सिरताज हुए, सारी दुनिया में हुजूर का नाम किया। मगर तुम जरा अपने को लिए रहना।

खोजी — अजी, मैं तो ऐसा बनूँ कि लोग दंग हो जायँ।

जब घंटी बजी और मुसाफिर चले तो खोजी भी पहलवान की तरह अकड़ कर चलने लगे। रेल के दो-चार मुलाजिमों ने उन पर आवाजें कसना शुरू किया।

एक — आदमी क्या गैंडा है, माशा-अल्लाह, क्या हाथ-पाँव हैं!

दूसरा — क्यों साहब, आप कितने दंड पेल सकते हैं?

खोजी — अजी, बीमारी ने तोड़ दिया, नहीं एक पूरी रेल पर लदके जाता था।

तीसरा — इसमें क्या शक है, एक-एक रान दो-दो मन की है।

खोजी — कसम खा के अर्ज करता हूँ कि अब आधा नहीं रहा! यह पहलवान हमारे अखाड़े का खलीफा है, और बाकी सब शागिर्द हैं! सब मिला के हमारे चालीस-बयालीस हजार शागिर्द होंगे।

एक मुसाफिर — दूर-दूर से लोग शागिर्दी करने आते होंगे?

खोजी — दूर-दूर से। अब आप मुलाहिजा फरमाएँ कि हिंदोस्तान से ले कर रूस तक मेरे लाखों शागिर्द हैं। मिस्र में ऐसा हुआ कि एक पहलवान की शामत आई, एक मेले मे हमको टोक बैठा। टोकना था कि बंदा भी चट लँगोट कस के सामने आ खड़ा हुआ। लाखों ही आदमी जमा थे। उसका सामने आना ही था

कि मैं उसी दम जुट गया, दाँव-पेंच होने लगे। उसके मिस्री दाँव थे। हमारे हिंदुस्तानी दाँव थे। बस दम की दम में मैंने उठा के दे पटका।

इतने में दूसरी घंटी हुई। खोजी ऐसे बौखलाए कि जनाने दर्जे में फँस पड़े। वहाँ लेना-लेना का गुल मचा। भागे तो पहले दर्जे में घुस गए, वहाँ एक अंगरेज ने डाँट बताई। बारे निकल कर तीसरे दर्जे में आए। थके-माँदे बहुत थे, सोए तो सारी रात कट गई। आँख खुली तो लखनऊ आ गया। शाम के वक़्त नवाब साहब के यहाँ दाखिल हुए।

खोजी — आदाब अर्ज है हुजूर।

नवाब — अख्ख़ाह, खोजी हैं! आओ भाई, आओ।

खोजी — हाजिर हूँ खुदावंद, खुदा का शुक्र है कि आपकी ज़ियारत हुई।

गफूर — खोजी मियाँ, सलाम।

खोजी — सलाम भाई, सलाम, मगर हमको खोजी मियाँ न कहना, अब हम फौज के अफसर हैं।

झम्मन — आप बादशाह हों या वजीर, हमारे तो खोजी ही हो।

खोजी — हाँ भाई, यह तो है ही। हुजूर के नमक की कसम, मुल्कों-मुल्कों इस दरबार का नाम किया।

नवाब — शाबाश! हमने अखबारों में तुम्हारी बड़ी-बड़ी तारीफें पढ़ीं।

खोजी — हुजूर, गुलाम किस लायक है।

झम्मन — भला यार, तुम समुद्र में जहाज पर कैसे सवार हुए?

खोजी — वाह, तुम जहाज की लिए फिरते हो। यहाँ मोरचों पर बड़े-बड़े मेजरों और जनरलों से भिड़-भिड़ पड़े हैं। हुजूर, पिलौना की लड़ाई में कोई दस लाख आदमी एक तरफ थे और सत्तर सवारों के साथ गुलाम दूसरी तरफ था, फिर यह मुलाहिजा कीजिए कि चौदह दिन तक बराबर मुकाबिला किया और सबके छक्के छुड़ा दिए।

झम्मन — इतना झूठ, उधर दस लाख, इधर सत्तर! भला कोई बात है।

खोजी — तुम क्या जानो, वहाँ होते तो होश उड़ जाते।

नवाब — भाई, इसमें तो शक नहीं कि तुमने बड़ा नाम किया। खबरदार, आज से इनको कोई खोजी न कहे। पाशा के लकब से पुकारे जायँ।

खोजी — आदाब हुजूर। झम्मन गीदी ने मुँह की खाई न आखिर। रईसों की सोहबत में ऐसे पाजियों का रहना मुनासिब नहीं।

नवाब — क्यों साहब, हिंदोस्तान के बाहर भी हमको कोई जानता है? सच-सच बताना भाई!

खोजी — हुजूर, जहाँ-जहाँ गुलाम गया, हुजूर का नाम बादशाहों से ज्यादा मशहूर हो गया।

104

आज़ाद बंबई से चले तो सबसे पहले जीनत और अख्तर से मुलाकात करने की याद आई। उस कस्बे में पहुँचे तो एक जगह मियाँ खोजी की याद आ गई। आप ही आप हँसने लगे। इत्तिफ़ाक़ से एक गाड़ी पर कुछ सवारियाँ चली जाती थीं। उनमें से एक ने हँस कर कहा — वाह रे भलेमानस, क्या दिमाग पर गरमी चढ़ गई है क्या?

आज़ाद रंगीन मिजाज आदमी तो थे ही। आहिस्ता से बोले — जब ऐसी-ऐसी प्यारी सूरतें नजर आएँ तो आदमी के होश-हवास क्योंकर ठिकाने रहें।

इस पर वह नाजनीन तिनक कर बोली — अरे, यह तो देखने को ही दीवाना मालूम होते थे, अपने मतलब के बड़े पक्के निकले। क्यों मियाँ, यह क्या सूरत बनाई है, आधा तीतर और आधा बटेर? खुदा ने तुमको वह चेहरा-मोहरा दिया है कि लाख दो लाख में एक हो। अगर इस शक्ल-सूरत पर जो लंबे-लंबे बाल हों, बालों में सोलह रुपए वाला तेल पड़ा हो, बारीक शरबती का अंगरखा हो, जालीलोट के कुरते से गोरे-गोरे डंड नजर आएँ, चुस्त घुटन्ना हो, पैरों में एक अशर्फी का टाटबाफी बूट हो, अँगरखे पर कामदानी की सदरी हो, सिर से पैर तक इत्र में बसे हो, मुसाइबों की टोली साथ हो, खिदमतगारों के हाथ में काबुकें और बटेरें हों और इस ठाट के साथ चौक में निकलो, तो अँगुलियाँ उठें कि वह रईस जा रहा है! तब लोग कहें कि इस सज-धज, नख-सिख, कल्ले-ठल्ले का गभरू जवान देखने में नहीं आया। यह सब छोड़ पट्टे कतरवा के लंडूरे हो गए, ऐ वाह री आपकी अक्ल!

आज़ाद — जरा मैं तो जानूँ कि किसकी जबान से यह बातें सुन रहा हूँ। इनसान हम भी हैं, फिर इनसान से क्या परदा?

नाजनीन — अच्छा, तो आप भी इनसान होने का दम भरते हैं। मेढकी भी चली मदारों को।

आज़ाद — खैर साहब, इनसान न सही।

नाजनीन — (परदा हटा कर) ऐ साहब लीजिए, बस अब तो चार आँखें हुई, अब कलेजे में ठंडक पहुँची?

आज़ाद ने देखा तो सोचने लगे कि यह सूरत तो कहीं देखी हे और अब खयाल आता है कि आवाज भी कहीं सुनी है। मगर इस वक़्त याद नहीं आता कि कहाँ देखा था।

नाजनीन — पहचाना? भला आप क्यों पहचानने लगे! रुतबा पा कर कौन किसे पहचानता है?

आज़ाद — इतना तो याद आता है कि कहीं देखा है, पर यह खयाल नहीं कि कहाँ देखा है।

नाजनीन — अच्छा, एक पता देते हैं, अब भी न समझो तो खुदा तुमसे समझे। याद है, किसने यह गजल गाई थी...?

कोई मुझ सा दीवाना पैदा न होगा,
हुआ भी तो फिर ऐसा रुसवा न होगा।
न देखा हो जिसने कहे उसके आगे,
हमें लंतरानी सुनाना न होगा।

आज़ाद — अब समझ गया! जहूरन, वहाँ की खैर-आफ़ियत बयान करो। उन्हीं दोनों बहनों से मिलने के लिए बंबई से चला आ रहा हूँ।

जहूरन — सब खुदा का फजल है। दोनों बहनें आराम से हैं, अख्तर के मियाँ तो उनका जेवर खा-पी कर भाग गए, अब उन्होंने दूसरी शादी कर ली है। जीनत बेगम खुश हैं।

आज़ाद — तो अब हम उनके मैके जायँ या ससुराल?

जहूरन — ससुराल न जाइए, मैके में चलिए और वहाँ से किसी महरी के जबानी पैगाम भेजिए। हमने तो हुजूर को देखते ही पहचान लिया।

आज़ाद — हमको इन दोनों बहनों का हाल बहुत दिनों से नहीं मालूम हुआ।

जहूरन — यह तो हुजूर, आप ही का कुसूर है; कभी आपने एक पुरजा तक न भेजा। जिस दिन जीनत बेगम के मियाँ ने उनसे कहा कि लो, आज़ाद वापस आते हैं तो मारे खुशी के खिल उठीं। तो अब आना हो तो आइए, शाम होती है।

थोड़ी देर में आज़ाद जीनत बेगम के मकान पर जा पहुँचे। जहूरन ने जा कर उनकी चाची से आज़ाद के आने की इत्तला की। उसने आज़ाद को फौरन बुला लिया।

आज़ाद – बन्दगी अर्ज करता हूँ। आप तो इतने ही दिनों में बूढ़ी हो गईं।

चाची – बेटा, अब हमारे जवानी के दिन थोड़े ही हैं। तुम तो खैर-आफ़ियत के साथ आए? आँखें तुम्हें देखने को तरस गईं।

आज़ाद – जी हाँ, मैं खैरियत से आ गया। दोनों साहबजादियों को बुलवाइए। सुना, जीनत की भी शादी हो गई है।

चाची – हाँ, अब तो दोनों बहनें आराम से हैं। अख्तरी का पहला मियाँ तो बिलकुल नालायक निकला। जेवर गहना-पाता, सब बेच कर खा गया और खुदा जाने, किधर निकल गया। अब दूसरी शादी हुई है। डाक्टर हैं। साठ रुपया तनख्वाह है और ऊपर से कोई चार रुपया रोज मिलता है। जीनत के मियाँ स्कूल में पढ़ाते हैं। दो सौ की तलब है। तुम्हारे चाचाजान तो मुझे छोड़ कर चल दिए।

इधर महरी ने जा कर दोनों बहनों को आज़ाद के आने की खबर दी। जीनत ने अपनी आया को साथ लिया और मैके की तरफ चली। घर के अन्दर कदम रखते ही आज़ाद से हाथ मिला कर

बोली — वाह रे बेमुरव्वतों के बादशाह! क्यों साहब, जब से गए, एक पुरजा तक भेजने की कसम खा ली?

आज़ाद — यह तो न कहोगी कि सबसे पहले तुम्हारे दरवाजे पर आया। यह तो फरमाइए कि यह पोशाक कब से अख्तियार की?

जीनत — जब से शादी हुई। उन्हें अंगरेजी पोशाक बहुत पसंद है।

आज़ाद — जीनत, खुदा गवाह है कि इस वक़्त जामे में फूला नहीं समाता। एक तो तुमको देखा और दूसरे यह खुशखबरी सुनी कि तुम्हारे मियाँ पढ़े-लिखे आदमी हैं और तुम्हें प्यार करते हैं। मियाँ-बीवी में मुहब्बत न हो तो जिंदगी का लुत्फ ही क्या।

इतने में अख्तरी भी आ गई और आते ही कहा — मुबारक!

आज़ाद — आपको बड़ी तकलीफ हुई, मुआफ करना।

अख्तर — मैंने तो सुना था कि तुमने वहाँ किसी साइसिन से शादी कर ली।

आज़ाद — और तुम्हें इसका यकीन भी आ गया?

अख्तर — यकीन क्यों न आता। मर्दों के लिए यह कोई नई बात थोड़ी ही हैं। जब लोग एक छोड़, चार-चार शादियाँ करते हैं तो यकीन क्यों न आता।

आज़ाद — वह पाजी है जो एक के सिवा दूसरी का खयाल भी दिल में लाए।

जीनत — ऐसे मियाँ-बीवी का क्या कहना, मगर यहाँ तो वही पाजी नजर आते हैं जो बीवी के होते भी उसकी परवा नहीं करते।

आज़ाद — अगर बीवी समझदार हो तो मियाँ कभी उसके काबू से बाहर न हो।

अख्तर — यह तो हम मान चुके। खुदा न करे कि किसी भलेमानस का पाला शोहदे मियाँ से पड़े।

जीनत — जिसके मिजाज में पाजीपन हो उससे बीवी की कभी न पटेगी। मियाँ सुबह से जायँ तो रात के एक बजे घर में आएँ और वह भी किसी रोज आए, किसी रोज न आए। बीवी बेचारी बैठी उनकी राह देख रही है। बाज तो ऐसे बेरहम होते हैं कि बात हुई और बीवी को मार बैठे।

आज़ाद — यह तो धुनिया जुलाहों की बातें हैं।

जीनत — नहीं जनाब, जो लोग शरीफ कहलाते हैं उनमें भी ऐसे मर्दों की कमी नहीं है।

अख्तर — ऐ चूल्हे में जायँ ऐसे मर्द, जभी तो बेचारियाँ कुएँ में कूद पड़ती हैं, जहर खा के सो रहती हैं।

जीनत — मुझे खूब याद है कि एक औरत अपने मियाँ को जरा सी बात पर हाथ फैला-फैला कोस रही थी कि कोई दुश्मन को भी न कोसेगा।

आज़ाद — जहाँ ऐसे मर्द हैं वहाँ ऐसी औरतें भी हैं।

अख्तर — ऐसी बीवी का मुँह ले के झुलस दे।

जीनत — मेरे तो बदन के रोएँ खड़े हो गए।

आज़ाद — मेरी तो समझ ही में नहीं आता कि ऐसे मियाँ और बीवी में मेलजोल कैसे हो जाता है।

इस तरह बातें करते-करते यूरोपियन लेडियों की बात चल पड़ी। जीनत और अख्तर ने हिंदोस्तानी औरतों की तरफदारी की और आज़ाद ने यूरोपियन लेडियों की।

आज़ाद — जो आराम यूरोप की औरतों को हासिल है वह यहाँ की औरतों को कहाँ नसीब। धूप में अगर मियाँ-बीवी साथ चलते हों तो मियाँ छतरी लगाएगा।

अख्तर — यहाँ भी महाजनों को देखो। औरतें दस-दस हजार का जेवर पहन कर निकलती हैं और मियाँ लँगोटा लगाए दुकान पर मक्खियाँ मारा करते हैं।

आज़ाद — यहाँ की औरतों को तालीम से चिढ़ है।

जीनत — इसका इलजाम भी मर्दों ही की गरदन पर है। वह खुद औरतों को पढ़ाते डरते हैं कि कहीं ये उनकी बराबरी न करने लगें।

आज़ाद — हमारे मकान के पास एक महाजन रहते थे। मैं लड़कपन में उनके घर खेलने जाया करता था। जैसे ही मियाँ बाहर से आता, बीवी चारपाई से उतर कर जमीन पर बैठ जाती। अगर तुमसे कोई कहे कि मियाँ के सामने घूँघट करके जाओ तो मंजूर करो या नहीं?

अख्तर — वाह, यहाँ तो घर में कैद न रहा जाय, घूँघट कैसा!

आज़ाद — यूरोपियन लेडियों को घर के इंतजाम का जो सलीका होता है, वह हमारी औरतों को कहाँ?

जीनत — हिंदोस्तानी औरतों में जितनी वफा होती है वह यूरोपियन लेडियों में तलाश करने से भी न मिलेगी। यहाँ एक के

पीछे सती तो जाती हैं, वहाँ मर्द के मरते ही दूसरी शादी कर लेती हैं।

105

वहाँ दो दिन और रह कर दोनों लेडियों के साथ लखनऊ पहुँचे और उन्हें होटल में छोड़ कर नवाब साहब के मकान पर आए। इधर वह गाड़ी से उतरे, उधर खिदमतगारों ने गुल मचाया कि खुदावंद, मुहम्मद आज़ाद पाशा आ गए। नवाब साहब मुसाहबों के साथ उठ खड़े हुए तो देखा कि आज़ाद रप-रप करते हुए तुर्की वर्दी डाटे चले आते हैं। नवाब साहब झपट कर उनके गले लिपट गए और बोले – भाईजान, आँखें तुम्हें ढूँढ़ती थीं।

आज़ाद – शुक्र है कि आपकी ज़ियारत नसीब हुई।

नवाब – अजी, अब यह बातें न करो, बड़े-बड़े अंगरेज हुक्काम तुमसे मिलना चाहते हैं।

मुसाहब – बड़ा नाम किया। वल्लाह करोड़ों आदमी एक तरफ और हुजूर एक तरफ।

खोजी – गुलाम भी आदाब अर्ज करता है।

आज़ाद — तुम यहाँ कब आ गए ख्वाजा साहब?

नवाब — सुना, आपने तीन-तीन करोड़ आदमियों से अकेले मुकाबिला किया!

गफूर — अल्लाह की देन है हुजूर!

नवाब — अरे भाई, गंगा-जमुनी हुक्का भर लाओ आपके वास्ते, आज़ाद पाशा को ऐसा-वैसा न समझना। इनकी तारीफ कमिश्नर तक की जबान से सुनी। सुना, आपसे रूस के बादशाह से भी मुलाकात हुई। भाई, तुमने वह दरजा हासिल किया है कि हम अगर हुजूर कहें तो बजा है। कहाँ रूस के बादशाह और कहाँ हम!

खोजी — खुदावंद, मोरचे पर इनको देखते तो दंग रह जाते। जैसे शेर कछार में डकारता है।

नवाब — क्यों भाई आज़ाद, इन्होंने वहाँ कोई कुश्ती निकाली थी?

आज़ाद — मेरे सामने तो सैकड़ों ही बार चपतियाए गए और एक बौने तक ने इनको उठा के दे मारा।

मुसाहब — भाई, इस वक़्त तो भंभाड़ा फूट गया।

आज़ाद — क्या यह गप उड़ाते थे कि मैंने कुश्तियाँ निकालीं?

मस्तियाबेग — ऐ हुजूर, जब से आए हैं, नाक में दम कर दिया। बात हुई और करौली निकाली।

गफूर — परसों तो कहते थे कि मिस्र में हमने आज़ाद के बराबर के पहलवान को दम भर में आसमान दिखा दिया।

आज़ाद — क्या खूब! एक बौने तक ने तो उठा के दे मारा, चले वहाँ से दून की लेने।

इतने में नवाब साहब के यहाँ एक मुंशी साहब आए और आज़ाद को देख कर बोले — वल्लाह, आज़ाद पाशा साहब हैं, आपने तो बड़ा नाम पैदा किया, सुभान-अल्लाह।

नवाब — अजी, कमिश्नर साहब इनकी तारीफ करते हैं। इससे ज्यादा इज्जत और क्या होगी।

खोजी — साहब, लड़ाई के मैदान में कोई इनके सामने ठहरता ही न था।

मुंशी — आपने भी बड़ा साथ दिया ख्वाजा साहब, मगर आपकी बहादुरी का जिक्र कहीं सुनने में नहीं आया।

खोजी — आप ऐसे गीदियों को मैं क्या समझता हूँ, मैंने वह-वह काम किए हैं कि कोई क्या करेगा। करौली हाथ में ली और सफों की सफें साफ कर दीं।

मुंशी — आप तो नवाब साहब के यहाँ बने हैं न?

खोजी — बने होंगे आप, बनना कैसा! क्या मैं कोई चरकटा हूँ। कसम है हुजूर के कदमों की, सारी दुनिया छान डाली, मगर आज तक ऐसा बदतमीज देखने में नहीं आया।

आज़ाद — जनाब ख्वाजा साहब ने जो बातें देखी हैं वह औरों को कहाँ नसीब हुई। आप जिस जगह जाते थे वहाँ की सारी औरतें आपका दम भरने लगती थीं। सबसे पहले बुआ जाफरान आशिक हुई।

खोजी — तो फिर आपको बुरा क्यों लगता है? आप क्यों जलते हैं?

नवाब — भई आज़ाद, यह किस्सा जरूर बयान करो। अगर आपने इसे छिपा रखा तो वल्लाह, मुझे बड़ा रंज होगा। अब फरमाइए, आपको मेरा ज्यादा ख्याल है या इस गीदी का?

खोजी — हुजूर, मुझसे सुनिए। जिस रोज आज़ाद पाशा और हम पिलौना के किले में थे, उस रोज की कार्रवाई देखने लायक थी। किला पाँचों तरफ से घिरा हुआ था।

मुसाहब — यह पाँचवाँ कौन तरफ है साहब? यह नई तरफ कहाँ से लाए? जो बात कहोगे वही अनोखा।

खोजी – तुम हो गधे, किसी ने बात की और तुमने काट दी, यों नहीं वों, वों नहीं यों। एक तरफ दरिया था और खुश्की भी थी। अब हुई पाँच तरफें या नहीं, मगर तुम ऐसे गौखों को हाल क्या मालूम। कभी लड़ाई पर गए हो? कभी तोप की सूरत देखी है? कभी धुआँ तक तो देखा न होगा और चले हैं वहाँ से बड़े सिपाही बन कर! तो बस जनाब, अब करें तो क्या करें। हाथ-पाँव फूले हुए कि अब जायँ तो किधर जायँ और भागे तो किधर भागें।

नवाब – सचमुच वक़्त बड़ा नाजुक था।

खोजी – और रूसियों की यह कैफियत कि गोले बरसा रहे थे। बस आज़ाद पाशा ने मुझसे कहा कि भाईजान, अब क्या सोचते हो, मरोगे या निकल जाओगे! मेरे बदन में आग लग गई। बोला, निकलना किसे कहते है जी! इतने में किले की दीवारें चलनी हो गई। जब मैंने देखा कि अब फौज के बचने की कोई उम्मीद नहीं रही, तो तलवार हाथ में ली और अपने अरबी घोड़े पर बैठ कर निकल पड़ा और उसी वक़्त दो लाख रूसियों को काट कर रख दिया।

मुसाहब – इस झूठ पर खुदा की मार।

खोजी – अच्छा, आज़ाद से पूछिए, बैठे तो हैं सामने।

नवाब — हजरत, सच-सच कहिएगा। बस फकत इतना बता दीजिए, यह बात कहाँ तक सच है?

आज़ाद — जनाब, पिलौना का जो कुछ हाल बयान किया वह तो सब ठीक है, मगर दो लाख आदमियों का सिर काट लेना महज गप है। लुत्फ यह है कि पिलौना की तो इन्होंने सूरत भी न देखी। उन दिनों तो यह खास कुस्तुनतुनियाँ में थे।

इस पर बड़े जोर का कहकहा पड़ा। बेगम साहब ने कहकहे की आवाज सुनी तो महरी से कहा — जा देख, यह कैसी हँसी हो रही है।

महरी — हुजूर, वह आए हैं मियाँ आज़ाद, वह गोरे-गोरे से आदमी, बस वही हँसी हो रही है।

बेगम — अख्खाह, आज़ाद आ गए, जाके खैर-आफ़ियत तो पूछ! हमारी तरफ से न पूछना! वहाँ कहीं ऐसी बात न करना।

महरी — वाह हुजूर, कोई दीवानी हूँ क्या? सुनती हूँ उस मुल्क में बड़ा नाम किया। तुमने कभी तोप देखी है गफूरन?

गफूरन — ऐ खुदा न करे हुजूर!

महरी — हमने तो तोप देखी है, बल्कि रोज ही देखती हूँ।

बेगम — तोप देखी है! तुम्हारे मियाँ सवारों के साईस होंगे। तोप नहीं वह देखी है।

महरी — हुजूर, यह सामने तोप ही लगी है या कुछ और?

महल में रहीमन नाम की एक महरी और सबों से मोटी-ताजी थी। महरी ने जो उसकी तरफ इशारा किया तो बेगम साहब खिल-खिला कर हँस पड़ीं।

रहीमन — क्या पड़ा पाया है बहन गफूरन?

गफूरन — आज एक नई बात देखने में आई है बहन।

रहीमन — हमको भी दिखाओ। देखें कोई मिठाई है या खिलौना है?

गफूरन — तोप की तोप और औरत की औरत।

रहीमन — (बात समझ कर) तुम्हीं लोगों ने तो मिल कर हमें नजर लगा दी।

बेगम — ऐ आग लगे, अब और क्या मोटी होती, फूल के कुप्पा तो हो गई है।

उधर खोजी ने देखा कि यार लोग रंग नहीं जमने देते तो मौका पा कर आज़ाद के कदमों पर टोपी रख दी और कहा — भाई

आज़ाद, बरसों तुम्हारा साथ दिया है, तुम्हारे लिए जान देने को तैयार रहा हूँ। मेरी दो-दो बातें सुन लो।

आज़ाद — मैं आपका मतलब समझ गया, कहाँ तक जब्त करूँ?

खोजी — इस दरबार में मेरे जलील करने से अगर आपको कुछ मिले तो आपको अख्तियार है।

आज़ाद — जनाब, आप मेरे बुजुर्ग हैं, भला मैं आपको जलील करूँगा?

खोजी — हाय अफसोस, तुम्हारे लिए जान लड़ा दी और अब इस दरबार में, जहाँ रोटियों का सहारा है, आप हमको उल्लू बनाते हैं, जिसमें रोटियों से भी जायँ!

आज़ाद — भई, माफ करना, अब तुम्हारी ही सी कहेंगे।

खोजी — मुझे रंग तो बाँधने दो जरा।

आज़ाद — आप रंग जमाएँ, मैं आपकी ताईद करूँगा।

ख्वाजा साहब का चेहरा खिल गया कि अब गप के पुल बाँध दूँगा और जब आज़ाद मेरा कलमा पढ़ने लगेंगे तो फिर क्या पूछना।

नवाब — ख्वाजा साहब, यह क्या बातें हो रही हैं हमसे छिप-छिप कर?

खोजी — खुदावंद, एक मामले पर बहस हो रही थी।

नवाब — कैसी बहस किस मामले पर?

खोजी — हुजूर, मेरी राय है कि इस मुल्क में भी नहरें जारी होनी चाहिए और आज़ाद पाशा की राय है कि नहरों से आबपाशी तो होगी, मगर मुल्क की आबहवा खराब हो जायगी।

मस्तियाबेग — अख्खाह, तो यह कहिए कि आप शहर के अंदेशे में दुबले हैं!

खोजी — तुम गौखे हो, यह बातें क्या जानो। पहले यह तो बताओ कि एक बाट्री में कितनी तोपें होती हैं? चले वहाँ से सुकरात की दुम बन के।

नवाब — खोजी है तो सिड़ी, मगर बातें कभी-कभी ठिकाने की करता है।

आज़ाद — इन बातों का तो इन्हें अच्छा तजरबा है।

गफूर — हुजूर, इनको बड़ी-बड़ी बातें मालूम हुई हैं।

आज़ाद — साहब, सफर भी तो इतना दूर-दराज का किया था! कहाँ हिंदोस्तान, कहाँ रूम! खयाल तो कीजिए।

मीर साहब — क्यों ख्वाजा साहब, पहाड़ तो आपने बहुत देखे होंगे?

खोजी – एक-दो नहीं, करोड़ों, आसमान से बातें करने वाले।

नवाब – भला आसमान वहाँ से कितनी दूर रह जाता है?

खोजी – हुजूर, बस एक दिन की राह। मगर जीना कहाँ?

नवाब – और क्यों साहब, वहाँ से तो खूब मालूम होता होगा कि मेंह किस जगह से आता है?

खोजी – जनाब, पहाड़ की चोटी पर मैं था और मेंह नीचे बरस रहा था।

नवाब – क्यों साहब, यह सच है? अजीब बात है भाई!

आज़ाद – जी हाँ, यह तो होता ही है, पहाड़ पर से नीचे मेंह का बरसना साफ दिखाई देता है।

मस्तियाबेग – और जो यह मशहूर है कि बादल तालाबों में पानी पीते हैं?

खोजी – यह तुम जैसे गधों में मशहूर होगा।

नवाब – भई, यह तजरबेकार लोग हैं, जो बयान करें वह सही है।

खोजी – हुजूर ने दरिया डैन्यूब का नाम तो सुना ही होगा। इतना बड़ा दरिया है कि उसके आगे समुद्र भी कोई चीज नहीं।

इतना बड़ा दरिया और एक रईस के दीवानखाने के हाते से निकला है।

मीर साहब — ऐं, हमें तो यकीन नहीं आता।

खोजी — आप लोग कुएँ में मेढक हैं।

नवाब — मकान के हाते से! जैसे हमारे मकान का यह हाता?

खोजी — बल्कि इससे भी छोटा। हुजूर, खुदा की खुदाई है, इसमें बंदे को क्या दखल। और खुदावंद, हमने इस्तम्बोल में एक अजायबखाना देखा।

मीर साहब — तुमको तो किसी ने धोखे में बन्द नहीं कर दिया।

खोजी — बस, इन जांगलुओं को और कुछ नहीं आता!

नवाब — अजी, तुम अपना मतलब कहो, उस अजायबखाने में कोई नई बात थी?

खोजी — हुजूर, एक तो हमने भैंसा देखा। भैंसा क्या, हाथी का पाठा था। और नाक के ऊपर एक सींग। इत्तिफ़ाक़ से जिस मकान में वह बन्द था उसकी तीन छड़ें टूट गई थीं। उसे रास्ता मिल तो सिमट-सिमट कर निकला। जनाब, कुछ न पूछिए, दो हजार आदमी गड़-बड़ एक के ऊपर एक इस तरह गिरे कि बेहोश। कोई चार-पाँच सौ आदमी जख्मी हुए। मैंने यह कैफियत

देखी तो सोचा, अगर तुम भी भागते हो तो हँसी होगी। लोग कहेंगे कि यह फौज में क्या करते थे। जरा से भैंसे को देख कर डर गए। बस एक बार झपट के जो जाता हूँ तो गरदन हाथ आई, बस बाएँ हाथ से गरदन दबाई और दबोच के बैठ गया, फिर लाख-लाख जोर उसने मारे, मगर मैंने हुमस ने न दिया। जरा गरदन हिलाई और मैंने दबोचा। जितने आदमी खड़े थे सब दंग हो गए कि वाह से पहलवान! आखिर जब मैंने देखा कि उसका दम टूट गया तो गरदन छोड़ दी। फिर उसने बहुत चाहा कि उठे, मगर हुमस न सका। मुझसे लोग मिन्नतें करने लगे कि उसे कठघरे में डाल दो, ऐसा न हो कि बफरे तो सितम ही कर डाले। इस पर मैंने उसे एक थप्पड़ जो लगाया तो चौंधिया कर तड़ से गिरा।

मस्तियाबेग — इसके क्या मतलब? आपके खौफ के मारे लेटा तो था ही, फिर लेटे-लेटे क्यों गिर पड़ा?

खोजी — बाही हो। बस हुजूर, मैंने कान पकड़ा तो इस तरह साथ हो लिया जैसे बकरी। उसी कठघरे में फिर बन्द कर दिया।

नवाब — क्यों साहब, यह किस्सा सच है?

आज़ाद — मैं उस वक़्त मौजूद न था, शायद सच हो।

मीर साहब — बस-बस, कलई खुल गई, गजब खुदा का, झूठ भी तो कितना! इस वक़्त जी चाहता है, उठ के ऐसा गुद्दा दूँ कि दस गज जमीन में धँस जाय।

खोजी — कसम है खुदा की, जो अब की कोई बात मुँह से निकली तो इतनी करौलियाँ भोंकूँगा कि उम्र भर याद करेगा। तू अपने दिल में समझा क्या है! यह सूखी हड्डियाँ लोहे की हैं।

नवाब — इतने बड़े जानवर से इनसान क्या मुकाबला कर सकता है?

आज़ाद — हुजूर बात यह है कि बाज आदमियों को यह कुदरत होती है कि इधर जानवर को देखा, उधर उसकी गरदन पकड़ी। ख्वाजा साहब को भी यह तरकीब मालूम है।

नवाब — बस, हमको यकीन आ गया।

मस्तियाबेग — हाँ खुदावंद, शायद ऐसा ही हो।

मुसाहब — जब हुजूर की समझ में एक बात आ गई तो आप किस खेत की मूली हैं।

मीर साहब — और जब एक बात की लिम भी दरियाफ्त हो गई तो फिर उसमें इनकार करने की क्या जरूरत?

नवाब — क्यों साहब, लड़ाई में तो आपने खून नाम पैदा किया है, बताइए कि आपके हाथ से कितने आदमियों का खून हुआ होगा?

खोजी — गुलाम से पूछिए, इन्होंने कुल मिला कर दो करोड़ आदमियों को मारा होगा।

नवाब — दो करोड़!

खोजी — जभी तो रूम और शाम, तूरान और मुलतान, आस्ट्रिया और इंगलिस्तान, जर्मनी और फ्रांस में इनका नाम हुआ है।

नवाब — ओफ्फोह, खोजी को इतने मुल्कों के नाम याद हैं।

आज़ाद — हुजूर, अब इन्हें वह खोजी न समझिए।

खोजी — खुदावंद, मैंने एक दरिया पर अकेले एक हजार आदमियों का मुकाबिला किया।

नवाब — भाई, मुझे तो यकीन नहीं आता।

मस्तियाबेग — हुजूर, तीन हिस्से झूठ और एक हिस्सा सच।

मीर साहब — हम तो कहते हैं, सब डींग है।

आज़ाद — नवाब साहब, इस बात की तो हम भी गवाही देते हैं। इस लड़ाई में मैं शरीक न था, मगर मैंने अखबार में इनकी तारीफ देखी थी और वह अखबार मेरे पास मौजूद है।

नवाब — तो अब हमको यकीन आ गया, जब जनरल आज़ाद ने गवाही दी तो फिर सही है।

खोजी — वह मौका ही ऐसा था।

आज़ाद — नहीं-नहीं भाई, तुमने वह काम किया कि बड़े-बड़े जनरलों ने दाँतों अँगुली दबाई। वहीं तो सफशिकन भी तुम्हें नजर आए थे?

खोजी — हुजूर, यह कहना तो मैं भूल ही गया। जिस वक़्त मैं दुश्मनों का सुथराव कर रहा था, उसी वक़्त सफशिकन को एक दरख्त पर बैठे देखा।

नवाब — लो साहबो, सुनो, मेरे सफशिकन रूम की फौज में भी जा पहुँचे।

मुसाहब — सुभान-अल्लाह! वाह रे सफशिकन, बहादुर हो तो ऐसा हो।

खोजी — खुदावंद, इस डाँट-डपट का बटेर भी कम देखा होगा।

नवाब — देखा ही नहीं, कम कैसा? अरे मियाँ, गफूर, जरा घर में इत्तला करो कि सफशिकन खैरियत से हैं।

गफूर ड्योढ़ी पर आया। वहाँ खिदमतगार, दरबान, चपरासी सब नवाब की सादगी पर खिलखिला कर हँस रहे थे।

खिदमतगार — ऐसा उल्लू का पट्ठा भी कहीं न देखा होगा।

गफूर — निरा पागल है, वल्लाह निरा पागल।

चपरासी — अभी देखिए, तो क्या-क्या किस्से गढ़े जाते हैं।

महरी ने यह खबर बेगम साहब को दी तो उन्होंने कहकहा लगाया और कहा — इन पाजियों ने नवाब को अँगुलियों पर नचाना शुरू किया। जाके कह दो कि जरी खड़े-खड़े बुलाती हैं।

नवाब साहब उठे, मगर उठते ही फिर बैठ गए और कहा — भाई, जाने को तो मैं जाता हूँ, मगर कहीं उन्होंने मुफस्सल हाल पूछा तो?

आज़ाद — ख्वाजा साहब से उनका हाल पूछिए, इन्हें खूब मालूम हैं।

खोजी — साथ तो सच पूछिए तो मेरा ही उनका बहुत रहा। इनके अंगरेजी लिबास से चकराते थे।

नवाब — भला किस मोरचे पर गए थे या नहीं, या दूर ही से दुआ दिया किए?

खोजी — खुदावंद गुलाम जो अर्ज करेगा, किसी को यकीन न आएगा, इस पर मैं झल्लाऊँगा और मुफ्त ठाँय-ठाँय होगी।

नवाब – क्या मजाल, खुदा की कसम, अब तुम मेरे खास मुसाहब हो, तुमने तो तजरबा हासिल किया है वह औरों को कहाँ नसीब। तुम्हारा कौन मुकाबिला कर सकता है?

खोजी – यह हुजूर के इकबाल का असर है, वरना मैं तो किसी शुमार में न था। बात यह हुई कि गुलाम एक नदी के किनारे अफीम घोल रहा था कि जिस दरख्त की तरफ नजर डालता हूँ, रोशनी छाई हुई है। घबराया कि या खुदा, यह क्या माजरा है, इसी फिक्र में पड़ा था कि हुजूर सफशिकन न जाने किधर से आकर मेरे हाथ पर बैठ गए।

नवाब – खुदा का शुक्र है, तुम तो बड़े खुश हुए होगे?

खोजी – हुजूर, जैसे करोड़ों रुपए मिल गए। पहले हुजूर का हाल बयान किया। फिर शहर का जिक्र करने लगे। दुनिया की सभी बातें उन पर रोशन थीं। बस हुजूर, तो यह कैफियत हुई कि दुश्मन किसी लड़ाई में जम ही न सके। इधर रूसियों ने तोपों पर बत्ती लगाई, उधर मेरे शेर ने कील ठोंक दी।

नवाब – वाह-वाह, सुभान-अल्लाह, कुछ सुनते हो यारो?

मस्तियाबेग – खुदावंद, जानवर क्या, जादू है!

खोजी — भला उनको कोई बटेर कह सकता है! और जानवर तो आप खुद हैं। आप उनकी शान में इतना सख्त और बेहूदा लफ्ज मुँह से निकालते हैं।

नवाब — मस्तियाबेग, अगर तुमको रहना है तो अच्छी तरह रहो, वरना अपने घर का रास्ता लो। आज तो सफशिकन को जानवर बनाया, कल को मुझे जानवर बनाओगे।

मुसाहब — खुदावंद, यह निरे फूहड़ हैं। बात करने की तमीज नहीं।

गफूर — अच्छा तो अब खामोश ही रहिए साहब, कुसूर हुआ।

खोजी — नहीं, सारा हाल तो सुन चुके, मगर तब भी अपनी ही सी कहे जाएँगे, दूसरा अगर इस वक़्त जानवर कहता तो गलफड़े चीर कर धर देता, न हुई करौली!

नवाब — जाने भी दो, बेशऊर है।

खोजी — खुदावंद, खुशी में तो सभी लड़ सकते हैं, मगर तरी में लड़ना मुश्किल है। सो हुजूर, तरी की लड़ाई में सफशिकन सबसे बढ़ कर रहे। एक दफा का जिक्र है कि एक छोटा-दरिया था। इस तरफ हम, उस तरफ दुश्मन। मोरचे-बंदी हो गई, गोलियाँ चलने लगीं, बस क्या देखता हूँ कि सफशिकन ने एक कंकरी ली

और उस पर कुछ कर पढ़ इस जोर से फेंकी कि एक तोप के हजार टुकड़े हो गए।

नवाब — वाह-वाह, सुभान अल्लाह।

मुसाहब — क्या पूछना है, एक जरा की कंकरी की यह करामात!

खोजी — अब सुनिए, कि दूसरी कंकरी जो पढ़ कर फेंकी तो एक ओर तोप फटी और बहत्तर टुकड़े हो गए। कोई तीन-चार हजार आदमी काम आए।

नवाब — इस कंकरी को देखिएगा। वल्लाह-वल्लाह! एक हजार टुकड़े तोप के और तीन-हजार आदमी गायब! वाह रे मेरे सफशिकन।

खोजी — इस तरह कोई चौदह तोपें उड़ा दीं और जितने आदमी थे सब भुन गए। कुछ न पूछिए हुजूर, आज तक किसी की समझ में न आया कि यह क्या हुआ। अगर एक गोला भी पड़ा होता तो लोग समझते, उसमें कोई ऐसा मसाला रहा होगा, मगर कंकरी तो किसी को मालूम भी नहीं हुई।

नवाब — बला की कंकरी थी कि तोप के हजारों टुकड़े कर डाले और हजारों आदमियों की जान ली। भई, जरा कोई जा कर सफशिकन की काबुक तो लाओ?

इतने में महरी ने फिर आकर कहा — हुजूर; बड़ा जरूरी काम है, जरा चल कर सुन लें। नवाब साहब खोजी को ले कर जनानखाने में चले। खोजी की आँखों में दोहरी पट्टी बाँधी गई और वह ड्योढ़ी में खड़े किए गए।

बेगम — क्या सफशिकन का कोई जिक्र था, कहाँ हैं आजकल?

नवाब — यह कुछ न पूछो, रूम जा पहुँचे। वहाँ कई लड़ाइयों में शरीक हुए और दुश्मनों का काफिया तंग कर दिया। खुदा जाने, यह सब किससे सीखा है?

बेगम — खुदा की देन है, सीखने से भी कहीं ऐसी बातें आती हैं?

नवाब — वल्लाह, सच कहती हो बेगम साहब! इस वक़्त तुमसे जी खुश हो गया। कहाँ तोप, कहाँ सफशिकन, जरा खयाल तो करो।

बेगम — अगर पहले से मालूम होता तो सफशिकन को हजार परदों में छिपा के रखती। हाँ, खूब याद आया, वह तो अभी जीते-जागते हैं और तुमने उनकी कब्र बनवा दी।

नवाब — वल्लाह, खूब याद दिलाया। सुभान-अल्लाह!

बेगम — यह तो कोसना हुआ किसी बेचारे को।

नवाब — अगर कहीं यहाँ आ जायँ, और पढ़े लिखे तो हैं ही, कहीं कब्र पर नजर पड़ गई, उस वक़्त यही कहेंगे कि यह लोग मेरी

मौत मना रहे हैं, क्या झपाके से कब्र बनवा दी। इससे बेहतर यही है कि खुदवा डालूँ।

बेगम — जहन्नुम में जाय। इस अफीमची को घर के अन्दर लाने की क्या जरूरत थी?

नवाब — अजी, यह वही हैं जिनको हम लोग खोजी-खोजी कहते हैं। लड़ाई के मैदान में सफशिकन इन्हीं से मिले थे। अगर कहो तो यहाँ बुला लूँ।

बेगम — ऐ जहन्नुम में जाय मुआ, और सुनो, उस अफीमची को घर के अन्दर लाएँगे।

नवाब — सुन तो लो। पहले बूढ़ा, पेट में आँत न मुँह में दाँत, दूसरे मातबर, तीसरे दोहरी पट्टी बँधी है।

बेगम — हाँ, इसका मुजायका नहीं, मगर मैं उन मुए लुंगाड़ों के नाम से जलती हूँ, उन्हीं की सोहबत में तुम्हारा यह हाल हुआ।

नवाब — ऐं, क्या खूब!

खोजी — खुदावंद, गुलाम हाजिर है।

महरी — मैं तो समझी कि कुएँ में से कोई बोला।

बेगम — क्या यह हरदम पीनक में रहता है?

नवाब — ख्वाजा साहब, क्या सो गए?

दरबार — ख्वाजा साहब, देखो सरकार क्या फरमाते हैं?

खोजी — क्या हुक्म है खुदावंद!

बेगम — देखो, खुदा जानता है, ऊँघ रहा था। मैं तो कहती ही थी।

नवाब — भाई, जरा सफशिकन का हाल तो कह चलो।

खोजी — खुदावंद, तो अब आँखें तो खुलवा दीजिए।

बेगम — क्या कुतिया के पिल्ले की आँखें हैं जो अब भी नहीं खुलतीं।

नवाब — पहले हाल तो बयान करो। जरा तोपवाला जिक्र फिर करना, यहाँ किसी को यकीन ही नहीं आता।

खोजी — हुजूर, क्योंकर यकीन आए, जब तक अपनी आँखों से न देखेंगे, कभी न मानेंगे।

नवाब — तो भाई हमने क्योंकर मान लिया, इतना तो सोचो?

खोजी — खुदा ने सरकार को देखने वाली आँखें दी हैं। आप न समझें तो कौन समझे। हुजूर, यह कैफियत हुई कि दरिया के दोनों तरफ आमने-सामने तोपें चढ़ी हुई थीं। बस सफशिकन ने

एक कंकरी उठा कर, खुदा जाने क्या जादू फूँक दिया कि इधर कंकरी फेंकी और उधर तोप के दो सौ टुकड़े और हर टुकड़े ने सौ-सौ रूसियों की जान ली।

बेगम — इस झूठ को आग लगे, अफीम पी-पी के निगोड़ों को क्या-क्या सूझती है। बैठे-बैठे एक कंकरी से तोप के सौ टुकड़े हो गए। खुदा का डर ही नहीं।

नवाब — तुम्हें यकीन ही न आए तो कोई क्या करे।

बेगम — चलो, बस खामोश रहो, जरा सा मुआ बटेर और कंकरी से उसने तोप के दो सौ टुकड़े कर डाले। खुदा जानता है, तुम अपनी फस्द खुलवाओ।

नवाब — अब खुदा जाने, हमें जनून है या तुम्हें।

खोजी — खुदावंद, बहस से क्या फायदा! औरतों की समझ में यह बातें नहीं आ सकतीं।

बेगम — महरी, जरा दरबान से कह, इस निगोड़े अफीमची को जूते मार के निकाल दे। खबरदार जो इसको कभी ड्योढ़ी में आने दिया।

खोजी — सरकार तो नाहक खफा होती हैं।

बेगम — मालूम होता है, आज मेरे हाथों तुम पिटोगे, अरे महरी, खड़ी सुनती क्या है, जाके दरबान को बुला ला।

हुसैनी दरबान ने आकर खोजी के कान पकड़े और चपतियाता हुआ ले चला।

खोजी — बस-बस, देखो, कान-वान की दिल्लगी अच्छी नहीं।

महबूबन — अब चलता है या मचलता है?

खोजी — (टोपी जमीन से उठा कर) अच्छा, अगर आज जीते बच जाओ तो कहना। अभी एक थप्पड़ दूँ तो दम निकल जाय।

इतना कहना था कि दूसरी महरी आ पहुँची और कान पकड़ कर चपतियाने लगी। खोजी बहुत बिगड़े, मगर सोचे कि अगर सब लोगों को मालूम हो जायगा कि महरियों की जूतियाँ खाईं तो बेढब होगी। झाड़-पोंछ कर बाहर आए और एक पलंग पर लेट रहे।

खोजी के जाने के बाद बेगम साहब ने नवाब को खूब ही आड़े हाथों लिया। जरा सोचो तो कि तुम्हें हो क्या गया है। कहाँ बटेर और कहाँ तोप, खुदा झूठ न बोलाए तो बिल्ली खा गई हो, या इन्हीं मुसाहबों में से किसी ने निकल कर बेच लिया होगा

और तुम्हें पट्टी पढ़ा दी कि वह सफशिकन थे। आखिर तुम किसी अपने दोस्त से पूछो। देखो, लोगों की क्या राय हैं?

नवाब — खुदा के लिए मेरे मुसाहबों को न कोसों, चाहे मुझे बुरा-भला कह लो।

बेगम — इन मुफ्तखोरों से खुदा समझे।

नवाब — जरा आहिस्ता-आहिस्ता बोलो, कहीं वह सब सुन लें, तो सब के सब चलते हों और मैं अकेला मक्खियाँ मारा करूँ।

बेगम — ऐ है, ऐसे बड़े खरे हैं! तुम जूतियाँ मार के निकालो तो भी ये चूँ न करें। जो बस निकल जायँ तो होगा क्या? वह कल जाते हों तो आज ही जायँ।

महरी — हुजूर तो चूक गईं, जरी इस मुए खोजी की कहानी तो सुनी होती। हँसते-हँसते लोट जातीं।

बेगम — सच, अच्छा तो उसको बुलाओ जरी, मगर कह देना कि झूठ बोला और मैंने खबर ली।

नवाब — या खुदा, यह तुमसे किसने कह दिया कि वह झूठ ही बोलेगा। इतने दिनों से दरबार में रहता है, कभी झूठ नहीं बोला तो अब क्यों झूठ बोलने लगा?और आखिर इतना तो समझो कि झूठ बोलने से उसको मिल क्या जायगा?

बेगम — अच्छा, बुलाओ। मैं भी जरा सफशिकन का हाल सुनूँ।

महरी ने जा कर खोजी को बुलाया। ख्वाजा साहब झल्लाए हुए पलंग पर पड़े थे । बोले — जा कर कह दो, अब हम वह खोजी नहीं हैं जो पहले थे, आने-वाले और जानेवाले, बुलाने वाले और बुलवाने वाले, सबको कुछ कहता हूँ।

आखिर लोगों ने समझाया तो ख्वाजा साहब ड्योढ़ी में आए और बोले — आदाब अर्ज करता हूँ सरकार, अब क्या फिर कुछ मेहरबानी की नजर गरीब के हाल पर होगी? सभी कुछ इनाम बाकी हो तो अब मिल जाय।

बेगम — सफशिकन का कुछ हाल मालूम हो तो ठीक-ठीक कह दो। अगर झूठ बोले तो तुम जानोगे।

खोजी — वाह री किस्मत, हिंदोस्तान से बंबई गए, वहाँ सब के सब 'हुजूर-हुजूर' कहते थे। तुर्की और रूस में कोहकाफ की परियाँ हाथ बाँधे हाजिर रहती थीं। मिस रोज एक-एक बात पर जान देती थीं, अब भी उसकी याद आ जाती है तो रात भर अच्छे-अच्छे ख्वाब देखा करता हूँ —

ख्वाब में एक नूर आता है नजर;
याद में तेरी जो सो जाते हैं हम।

बेगम — अब बताओ, है पक्का अफीमची या नहीं, मतलब की बात एक न कही वाही-तबाही बकने लगा।

खोजी — एक दफे का जिक्र है कि पहाड़ के ऊपर तो रूसी और नीचे हमारी फौज। हमको मालूम नहीं कि रूसी मौजूद है। वहीं पड़ाव का हुक्म दे दिया। फौज तो खाने पीने का इंतजाम करने लगी और मैं अफीम घोलने लगा कि एकाएक पहाड़ पर से तालियों की आवाज आई। मैं प्याली ओठों तक ले गया था कि ऊपर से रूसियों ने बाढ़ मारी। हमारे सैकड़ों आदमी घायल हो गए। मगर वाह रे, खुदा गवाह है, प्याली हाथ से न छूटी। एकाएक देखता हूँ कि सफशिकन उड़े चले आते हैं, आते ही मेरे हाथ पर बैठ कर चोंच अफीम से तर की, और उसके दो कतरे पहाड़ पर गिरा दिए। बस धमाके की आवाज हुई और पहाड़ फट गया। रूस की सारी फौज उसमें समा गई। मगर हमारी तरफ का एक आदमी भी न मरा। मैंने सफशिकन का मुँह चूम लिया।

बेगम — भला सफशिकन बातें किस जबान में करते हैं?

खोजी — हुजूर, एक जबान हो तो कहूँ, उर्दू, फारसी, अरबी, तुर्की, अंगरेजी।

बेगम — क्या और जबानों के नाम नहीं याद हैं?

खोजी — अब हुजूर से कौन कहे।

नवाब — अब यकीन आया कि अब भी नहीं? और जो कुछ पूछना हो, पूछ लो।

बेगम — चलो, बस चुपके बैठ रहो। मुझे रंज होता है कि इन हरामखोरों के पास बैठ-बैठ तुम कहीं के न रहे।

नवाब — हाय अफसोस, तुम्हें यकीन ही नहीं आता, भला सोचो तो, यह सब के सब मुझसे क्यों झूठ बोलेंगे। खोजी को मैं कुछ इनाम दे देता हूँ या कोई जागीर लिख दी है इसके नाम?

खोजी — खुदावंद, अगर इसमें जरा भी शक हो तो आसमान फट पड़े। झूठ बात तो जबान से निकलेगी ही नहीं, चाहे कोई मार डाले।

बेगम — अच्छा, ईमान से कहना कि कभी मोरचे पर भी गए या झूठ-मूठ के फिकरे ही बनाया करते हो?

खोजी — हुजूर मालिक हैं, जो चाहे, कह दें, मगर गुलाम ने जो बात अपनी आँखों देखी, वह बयान की। अगर फर्क हो तो फाँसी का हुक्म दे दीजिए।

एक बूढ़ी महरी ने खोजी की बातें सुनने के बाद बेगम से कहा — हुजूर, इसमें ताज्जुब की कौन बात है, हमारे मुहल्ले में एक

बड़ा काला कुत्ता रहा करता था। मुहल्ले के एक लड़के उसे मारते, कान पकड़ कर खींचते, मगर वह चूँ भी नहीं करता था। एक दिन मुहल्ले के चौकीदार ने उस पर एक ढेला फेंका। ढेला उसके कान में लगा और कान से खून बहने लगा। चौकीदार दूसरा ढेला मारना ही चाहता था कि एक जोगी ने उसका हाथ पकड़ लिया और कहा, क्यों जान का दुश्मन हुआ है बाबा। यह कुत्ता नहीं है। उसी रात को चौकीदार ने ख्वाब देखा कि कुत्ता उसके पास आया! और अपना घाव दिखा कर कहा — या तो हमीं नहीं, या तुम्हीं नहीं। सबेरे जो चौकीदार उठा तो उसने पास-पड़ोस वालों से ख्वाब का जिक्र किया। मगर अब देखते हैं तो कुत्ते का कहीं पता ही नहीं। दोपहर को चौकीदार कुएँ पर पानी भरने गया तो पानी देखते ही भूँकने लगा।

बेगम — सच?

महरी — हुजूर, अल्लाह बचाए इस बला से, कुत्ते के भेस में क्या जाने कौन था।

नवाब — अब इसको क्या कहोगी भई, अब भी सफशिकन के कमाल को न मानोगी?

बेगम — हाँ, ऐसी बातें तो हमने भी सुनी हैं, मगर...

खोजी — अगर-मगर की गुंजाईश नहीं, गुलाम आँखों देखी कहता है। एक किस्सा और सुनिए, आपको शायद इसका भी यकीन न आए। सफशिकन मेरे सिर पर आकर बैठ गए और कहा, रूसियों की फौज में धँस पड़ो। मेरे होश उड़ गए। बोला, साहब आप हैं कहाँ? मेरी जान जायगी, आपके नजदीक दिल्लगी है, मगर वह सुनते किसकी हैं। कहा, चलो तो तुम! आधी रात थी, घटा छाई हुई थी, मगर मजबूरन जाना पड़ा। बस, रूसी फौज में जा पहुँचा। देखा, कोई गाता है, कोई सोता है। हम सबको देखते हैं, मगर हमें कोई नहीं देखता। सफशिकन अस्तबल की तरफ चले और फुदक के एक घोड़े की गरदन पर जा बैठे। घोड़ा धम से जा गिरा, अब जिस घोड़े की गरदन पर बैठते हैं, जमीन पर लोटने लगता है। इस तरह कोई सात हजार घोड़े उसी दम धम-धम करके लोट गए। फौज से निकले तो आपने पूछा, कहो आज की दिल्लगी देखी, कितने सवार बेकार हुए!

मैं — हुजूर, पूरे सात हजार!

सफशिकन — आज इतना ही बहुत है, कल फिर देखी जायगी, चलो, अपने पड़ाव पर चलें। चलते-चलते जब थक जाओ तो हमसे कह दो।

मैं — क्यों, आपसे क्या कह दूँ?

सफशिकन — इसलिए कि हम उतर जायँ।

मैं — वाह, मुट्ठी भर के आप, भला आपके बैठने से मैं क्या थक जाऊँगा? आप क्या और आपका बोझ क्या?

इतना सुनना था कि खुदा जाने ऐसा कौन सा जादू कर दिया कि मेरा कदम उठाना मुहाल हो गया। मालूम होता था, सिर पर पहाड़ का बोझ लदा हुआ है। बोला, हुजूर, अब तो बहुत ही थक गया, पैर ही नहीं उठते। बस, फुर्र से उड़ गए। ऐसा मालूम हुआ कि सिर से दस-बीस करोड़ मन बोझा उतर गया।

नवाब — यह तो भाई, नई-नई बातें मालूम होती जाती हैं। वाह रे सफशिकन।

खोजी — हुजूर, खुदा जाने, किस औलिया ने यह भेस बदला है।

बेगम साहब ने इस वक़्त तो कुछ न कहा, मगर ठान ली कि आज रात को नवाब साहब को खूब आड़े हाथों लूँगी। नवाब साहब ने समझा कि बेगम साहब को सफशिकन के कमाल का यकीन आ गया। बाहर आकर बोले — वल्लाह, तुमने तो ऐसा समा बाँध दिया कि अब बेगम साहब को उम्र भर शक न होगा।

खोजी — हुजूर, सब आँखों देखी बात बयान की है।

नवाब — यही तो मुश्किल है कि वह सच्ची बातों को भी बनावट समझती हैं।

खोजी — समझ में नहीं आता, मुझसे क्यों इतनी नाराज हैं।

नवाब — नाराज नहीं हैं जी, मतलब यह कि अब इस बात को सिवा पढ़े-लिखे आदमी के और कौन समझ सकता है। और भई, मैं सोचता हूँ कि आखिर कोई झूठ क्यों बोलने लगा, झूठ बोलने में किसी को फायदा ही क्या है।

खोजी — ऐ सुभान-अल्लाह, क्या बात हुजूर ने पैदा की है! सचमुच कोई झूठ क्यों बोलने लगा। एक तो झूठा कहलाए, दूसरे बे आबरू हो।

नवाब — भाई, हम इनसान को खूब पहचानते हैं। आदमी का पहचानना कोई हमसे सीखे। मगर दो को हमने भी नहीं पहचाना। एक तुमको, दूसरे सफशिकन को।

खोजी — खुदावंद, मैं यह न मानूँगा, हुजूर की नजर बड़ी बारीक है।

नवाब साहब खोजी की बातों से इतने खुश हुए कि उनके हाथ में हाथ दिए बाहर आए। मुसाहबों ने जो इतनी बेतकल्लुफी देखी तो जल मरे, आपस में इशारे होने लगे —

मस्तियाबेग — ऐं, मियाँ खोजी ने तो जादू कर दिया यारो!

गफूर — जरूर किसी मुल्क से जादू सीख आए हैं।

मस्तियाबेग — तजरबाकार हो गया न, अब इसका रंग कुछ जम गया।

गफूर — कैसा कुछ, अब तो सोलहों आने के मालिक हैं।

मिर्जा — अरे मियाँ, दोनों हाथ में हाथ दे कर निकले, वाह री किस्मत। मगर यह खुश किस बात पर हुए?

गफूर — इनको अभी तक यही नहीं मालूम, बताइए साहब!

मस्तियाबेग — मियाँ, अजब, कूढमगज हो, कहने लगे, खुश किस बात पर हुए। सफशिकन की तारीफों के पुल बाँध दिए। सूझ ही तो है, अब लाख चाहे कि उसका रंग फीका कर दें, मुमकिन नहीं।

मिर्जा — इस वक़्त तो खोजी का दिमाग चौथे आसमान पर होगा।

मस्तियाबेग — अजी, बल्कि और उसके भी पार, सातवें आसमान पर।

गफ़ूर — मैं बाग में गया था, देखा, नवाब साहब मोढ़े पर बेठे हैं और खोजी तिपाई पर बैठा हुआ, खास सरकार की गुड़गुड़ी पी रहा है?

मिर्जा — सच, तुम्हें खुदा की कसम!

गफ़ूर — चल कर देख लीजिए न, बस जादू कर दिया। यह वही खोती हैं जो चिलमें भरा करते थे, मगर जादू का जोर, अब दोस्त बने हुए हैं।

मिर्जा — खोजी को सब के सब मिल कर मुबारकबाद दो और उनसे बढ़िया दावत लो। अब इससे बढ़ कर कौन दरजा है?

इतने में नवाब साहब खोजी को लिए हुए दरबार में आए, मुसाहब उठ खड़े हुए। ख्वाजा साहब को सरकार ने अपने करीब बिठाया और आज़ाद से बोले — हजरत, आपकी सोहबत में ख्वाजा साहब पारस हो गए।

आज़ाद — जनाब, यह सब आपकी खिदमत का असर है। मेरी सोहबत में तो थोड़े ही दिनों से हैं, आपकी शागिर्दी करते बरसों गुजर गए।

नवाब — वाह, अब तो ख्वाजा साहब मेरे उस्ताद हैं जनाब!

मस्तियाबेग – खुदावंद, यह क्या फरमाते हैं। हुजूर के सामने खोजी की क्या हस्ती है?

नवाब – क्या बकता है? खोजी की तारीफ से तुम सब क्यों जल मरते हो?

मिर्जा – खुदावंद, यह मस्तियाबेग तो दूसरों को देख कर हमेशा जलते रहते हैं।

गफूर – यह परले सिर के गुस्ताख हैं, बात तो समझे नहीं, जो कुछ मुँह में आया, बक दिए। आखिर ख्वाजा साहब बेचारे ने इनका क्या बिगाड़ा!

नवाब – मुझको सुनो साहब, दिल में पुरानी कुदूरत है।

मुसाहब – सुभान-अल्लाह! हुजूर, बस यही बात है।

खोजी – हुजूर इसका ख्याल न करें। यह जो चाहे, कहें। भाई गफूर, जरा सा पानी पीएँगे।

नवाब – ठंडा पानी लाओ ख्वाजा साहब के वास्ते।

खिदमतगार सुराही का झला ठंडा पानी लाया, चाँदी के कटोरे में पानी दिया। जब ख्वाजा साहब पानी पी चुके तो नवाब साहब ने पानदान से दो गिलौरियाँ निकाल कर खास अपने हाथ से उनको दीं।

मिर्जा — मैंने मस्तियाबेग से हजार बार कहा कि भाई, तुम किसी को देख के जले क्यों मरते हो, कोई तुम्हारा हिस्सा नहीं छीन ले जाता, फिर ख़्वाहमख़्वाह के लिए अपने को क्यों हलकान करते हो।

नवाब — मुझे इस वक़्त उसकी बातें बहुत नागवार मालूम हुई।

मुसाहब — जानते हैं कि इस दरबार में खुशामदियों की दाल नहीं गलती, फिर भी अपनी हरकत से बाज नहीं आते।

मुसाहब लोग तो बाहर बैठे सलाह कर रहे थे, इधर दरबार में नवाब साहब, आज़ाद और खोजी में यूरोप के रईसों का जिक्र होने लगा। आज़ाद ने यूरोप के रईसों की खूब तारीफ की।

नवाब — क्यों साहब, हम लोग भी उन रईसों की तरह रह सकते हैं?

आज़ाद — बेशक, अगर उन्हीं की राह पर चलिए। आपकी सोहबत में चंडूबाज, मदरिए, चरसिए इस कसरत से हैं कि शायद ही कोई इनसे खाली हो। यूरोप के रईसों के यहाँ ऐसे आदमी फटकने भी न पाएँ!

नवाब — कहिए तो ख्वाजा साहब के सिवा और सबको निकाल दूँ।

खोजी — निकालिए चाहे रहने दीजिए, मगर इतना हुक्म जरूर दे दीजिए कि आपके सामने दरबार में न कोई चंडू के छींटे उड़ाए, न मदक के दम लगाए और न अफीम घोले।

आज़ाद — दूसरी बात यह है कि खुशामदी लोग आपकी झूठी तारीफें कर-करके खुश करते हैं। इनको झिड़क दीजिए और इनकी खुशामद पर खुश न होइए।

नवाब — आप ठीक कहते हैं। वल्लाह, आपकी बात मेरे दिल में बैठ गई। यह सब भर्रे दे-दे कर मुझे बिलटाए देते हैं।

आज़ाद — आपको खुदा ने इतनी दौलत दी है, यह इस वास्ते नहीं कि आप खुशामदियों पर लुटाएँ। इसको इस तरह काम में लाएँ कि सारी दुनिया में नहीं तो हिंदोस्तान भर में आपका नाम हो जाय। खैरातखाना कायम कीजिए, अस्पताल बनवाइए, आलिमों की कदर कीजिए। मैंने आपके दरबार में किसी आलिम फाजिल को नहीं देखा।

नवाब — बस, आज ही से इन्हें निकाल बाहर करता हूँ।

आज़ाद — अपनी आदतें भी बदल डालिए, आप दिन को ग्यारह बजे सो कर उठते और हाथ-मुँह धो कर चंडू के छींटे उड़ाते हैं। इसके बाद इन फिकरेबाजों से चुहल होती है। सुबह का खाना आपको तीन बजे नसीब होता है। आप फिर आराम करते हैं तो

शाम से पहले नहीं उठते। फिर वही चंडू और मदक का बाजार गर्म होता है। कोई दो बजे रात को आप खाना खाते हैं। अब आप ही इनसाफ कीजिए कि दुनिया में आप कौन सा काम करते हैं।

नवाब — इन बदमाशों ने मुझे तबाह कर दिया।

आज़ाद — सबेरे उठिए, हवा खाने जाइए, अखबार पढ़िए, भले आदमियों की सोहबत में बैठिए, अच्छी-अच्छी किताबें पढ़िए, जरूरी कागजों को समझिए, फिर देखिए कि आपकी जिंदगी कितनी सुधर जाती हैं।

नवाब — खुदा की कसम, आज से ऐसा ही करूँगा,एक-एक हर्फ की तामील न हो तो समझ लीजिएगा, बड़ा झूठा आदमी हैं।

खोजी — हुजूर, मुझे तो बरसों इस दरबार में हो गए, जब सरकार ने कोई बात ठान ली तो फिर चाहे जमीन और आसमान एक तरफ हो जाय, आप उसके खिलाफ कभी न करेंगे। बरसों से यही देखता आता हूँ।

आज़ाद — एक इश्तहार दे दीजिए कि लोग अच्छी-अच्छी किताबें लिखें, उन्हें इनाम दिया जायगा। फिर देखिए, आपका कैसा नाम होता है!

नवाब — मुझे किसी बात में उज्र नहीं है।

उधर मुसाहबों में और ही बातें हो रही थीं -

मस्तियाबेग — वल्लाह, आज तो अपना खून पी कर रह गया यारो।

मिर्जा — देखते हो, किस तरह झिड़क दिया!

मस्तियाबेग — झिड़क क्या दिया, बस कुछ न पूछो, मैं — जान-बूझ कर चुप हो रहा, नहीं बेढब हो जाती। किसी ने अपनी इज्जत नहीं बेची है। और अब आपस में सलाहें हो रही हैं। खोजी ने सबको बिलटाया।

मस्तियाबेग — कोई लाख कहे, हम न मानेंगे, यह सब जादू का खेल हैं।

गफूर — मियाँ, इसमें क्या शक है, यह जादू नहीं तो है क्या?

मिर्जा — अजी, उल्लू का गोश्त नवाब साहब को न खिला दिया हो तो नाक कटवा डालूँ। इन लोगों ने मिल कर उल्लू का गोश्त खिला दिया है, जभी तो उल्लू बन गए, अब उनसे कहे कौन?

मस्तियाबेग — कह के बहुत खुश हुए कि अब किसी दूसरे को हिम्मत होगी।

गफूर — अब तो कुछ दिन खोजी की खुशामद करनी पड़ेगी।

मस्तियाबेग — हमारी जूती उस पाजी की खुशामद करती है।

मिर्जा — फिर निकाले जाओगे, यहाँ रहना है तो खोजी को बाप बनाओ, दरिया में रहना और मगर से बैर?

मस्तियाबेग — दो-चार दिन रह के यहाँ का रंग-ढंग देखते हैं। अगर यही हाल रहा तो हमारा इस्तीफा है, ऐसी नौकरी से बाज आए! बराबरवालों की खुशामद हमसे न हो सकेगी।

मीर साहब — बराबर वाले कौन? तुम्हारे बराबर वाले होंगे। हम तो खोजी को जलील समझते हैं।

गफूर — अरे साहब, अब तो यह सबके अफसर हैं और हम तो उन्हें गुड़-गुड़ी पिला चुके। आप लोग उन्हें मानें या न मानें, हमारे तो मालिक हैं।

मिर्जा — सौ बरस बाद घूरे के भी दिन फिरते हैं। भाईजान, किसी को इसका गुमान भी था कि खोजी को सरकार इस तपाक से अपने पास बिठाएँगे, मगर अब आँखों देख रहे हैं।

नवाब साहब बाहर आए तो इस ढंग से कि उनके हाथ में एक छोटी सी गुड़गुड़ी और ख्वाजा साहब पी रहे हैं। मुसाहबों के रहे-सहे होश भी उड़ गए। ओफ्फोह, सरकार के हाथ में गुड़गुड़ी

और यह टुकरचा, रईस बना हुआ दम लगा रहा है। नवाब साहब मसनद पर बैठे तो खोजी को भी अपने बराबर बिठाया। मुसाहब सन्नाटे में आ गए। कोई चूँ तक नहीं करता, सबकी निगाह खोजी पर है। बारे मीर साहब ने हिम्मत करके बात-चीत शुरू की -

मीर साहब — खुदावंद, आज कितनी बहार का दिन है, चमन से कैसी भीनी-भीनी खुशबू आ रही हैं।

नवाब — हाँ, आज का दिन इसी लायक है कि कोई इल्मी बहस हो।

मीर साहब — खुदावंद, आज का दिन तो गाना सुनने के लिए बहुत अच्छा है।

नवाब — नहीं, कोई इल्मी बहस होनी चाहिए। ख्वाजा साहब, आप कोई बहस शुरू कीजिए।

मस्तियाबेग — (दिल में) इनके बाप ने भी कभी इल्मी बहस की थी?

मिर्जा — हुजूर, ख्वाजा साहब की लियाकत में क्या शक है, मगर -

नवाब — अगर-मगर के क्या मानी? क्या ख्वाजा साहब के आलिम होने में आप लोगों को कुछ शक है?

मिर्जा — मिस इल्म की बहस कीजिएगा ख्वाजा साहब? इल्म का नाम तो मालूम हो।

खोजी — हम इल्म जालोजी में बहस करते हैं, बतलाइए, इस इल्म का क्या मतलब है?

मिर्जा — किस इल्म का नाम लिया आपने, जालोजी! यह जालोजी क्या बला है?

नवाब — जब आपको इस इल्म का नाम तक नहीं मालूम तो बहस क्या खाक कीजिएगा। क्यों ख्वाजा साहब, सुना है कि दरिया में जहाजों के डुबो देने के औजार भी अंगरेजों ने निकाले हैं। यह तो खुदाई करने लगे!

खोजी — उस औजार का नाम तारपेडो है। दो जहाज हमारे सामने डुबो दिए गए! पानी के अन्दर ही अन्दर तारपेडो छोड़ा जाता है, बस जैसे ही जहाज के नीचे पहुँचा वैसे ही फटा। फिर तो जनाब, जहाज के करोड़ों टुकड़े हो जाते हैं।

मस्तियाबेग — और क्यों साहब, यह बम का गोला कितनी दूर का तोड़ करता है?

खोजी — बम के गोले कई किस्म के होते हैं, आप किस किस्म का हाल दरियाफ्त करते हैं?

मस्तियाबेग — अजी, यही बम को गोले।

खोजी — आप तो यही-यही करते हैं, उसका नाम तो बतलाइए?

नवाब — क्यों जनाब, लड़ाई के वक़्त आदमी के दिल का क्या हाल होता होगा? चारों तरफ मौत ही मौत नजर आती होगी?

मिर्जा — मैं अर्ज करूँ हुजूर, लड़ाई के मैदान में आकर जरा...।

नवाब — चुप रहो साहब, तुमसे कौन पूछता है, कभी बंदूक की सूरत भी देखी है या लड़ाई का हाल ही बयान करने चले!

खोजी — जनाब, लड़ाई के मैदान में जान का जरा भी खौफ नहीं मालूम होता। आपको यकीन न आएगा, मगर मैं सही कहता हूँ कि इधर फौजी बाजा बजा और उधर दिलों में जोश उमड़ने लगा। कैसा ही बुजदिल हो, मुमकिन नहीं कि तलवार खींच कर फौज के बीच में धँस न जाय। नंगी तलवार हाथ में ली और दिल बढ़ा। फिर अगर दो करोड़ गोले भी सिर पर आएँ तो क्या मजाल कि आदमी हट जाय।

खोजी यही बातें कर रहे थे कि खिदमतगार ने आकर कहा — हुजूर, बाहर एक साहब आए हैं, और कहते हैं, नवाब साहब को हमारा सलाम दो, हमें उनसे कुछ कहना है। नवाब साहब ने कहा — ख्वाजा साहब, आप जरा जा कर दरियाफ्त कीजिए कि

कौन साहब हैं। खोजी बड़े गरूर के साथ उठे और बाहर जा कर साहब को सलाम किया। मालूम हुआ कि यह पुलिस का अफसर है, जिले के हाकिम ने उसे आज़ाद का हाल दरियाफ्त करने के लिए भेजा है।

खोजी – आप साहब से जा कर कह दीजिए, आज़ाद पाशा नवाब साहब के मेहमान हैं और उनके साथ ख्वाजा साहब भी हैं।

अफसर – तो साहब उनसे मिलनेवाला है। अगर आज उनको फुरसत हो तो अच्छा, नहीं तो जब उनका जी चाहे।

खोजी – मैं उनसे पूछ कर आपको लिख भेजूँगा।

इंस्पेक्टर साहब चले गए तो मस्तियाबेग ने कहा – क्यों साहब, यह बात हमारी समझ में नहीं आई कि आपने आज़ाद पाशा से इसी वक़्त क्यों न पूछ लिया। एक ओहदेदार को दिक करने से क्या फायदा? खोजी ने त्योरियाँ बदल कर कहा – तुमसे हजार बार मना किया कि इस बारे में न बोला करो, मगर तुम सुनते ही नहीं। तुम तो हो अक्ल के दुश्मन, हम चाहते हैं कि आज़ाद पाशा जब किसी हाकिम से मिलें तो बराबर की मुलाकात हो। इस वक़्त यह वर्दी नहीं पहने हैं। कल जब यह फौजी वर्दी पहन कर और तमगे लगा कर हाकिम-जिला से मिलेंगे तो वह खड़ा हो कर ताजीम करेगा।

नवाब — अब समझे या अब भी गधे ही बने हो? ख्वाजा साहब को तौलने चले हैं! वल्लाह, ख्वाजा साहब, आपने खूब सोची। अगर इस वक़्त कह देते कि आज़ाद वह क्या बैठे हैं तो कितनी किरकिरी होती।

इतने में खाने का वक़्त आ पहुँचा। खाना चुना गया, सब लोग खाने बैठे, उस वक़्त खोजी ने एक किस्सा छेड़ दिया — हुजूर, एक बार जब अंगरेजों की डच लोगों से मुठभेड़ हुई तो अंगरेजी अफसर ने कहा, अगर कोई आदमी दूसरी तरफ के जहाजों को ले आए तो हमारी फतह हो सकती है, नहीं तो हमारा बेड़ा तबाह हो जायगा। इतना सुनते ही बारह मल्लाह पानी में कूद पड़े। उनके साथ पंद्रह साल का एक लड़का भी पानी में कूदा।

नवाब — समुद्र में, ओफ्फोह!

खोजी — खुदावंद, उनसे बढ़ कर दिलेर और कौन हो सकता है? बस अफसर ने मल्लाहों से कहा, इस लड़के को रोक लो। लड़के ने कहा, वाह, मेरे मुल्क पर अगर मेरी जान कुरबान हो जाय तो क्या मुजायका? यह कह कर वह लड़का तैरता हुआ निकल गया।

नवाब — ख्वाजा साहब, कोई ऐसी फिक्र कीजिए कि हमारी-आपकी दोस्ती हमेशा इसी तरह कायम रहे।

खोजी — भाई सुनो, हमें खुशामद करनी मंजूर नहीं, अगर साहब-सलामत रखना है तो रखिए, वरना आप अपने घर खुश और मैं अपने घर खुश।

नवाब — यार, तुम तो बेवजह बिगड़ खड़े होते हो।

खोजी — साफ तो यह है कि जो तजरबा हमको हासिल हुआ है उस पर हम जितना गरूर करें, बजा है।

नवाब — इसमें क्या शक है जनाब।

खोजी — आप खूब जानते हैं कि आलिम लोग किसी की परवा नहीं करते। मुझे दुनिया में किसी से दब के चलना नागवार है, और हम क्यों किसी से दबें? लालच हमें छू नहीं गया, हमारे नजदीक बादशाह और फकीर दोनों बराबर। जहाँ कहीं गया, लोगों ने सिर और आँखों पर बिठाया। रूम, मिस्र, रूस वगैरह मुल्कों में मेरी जो कदर हुई वह सारा जमाना जानता है। आपके दरबार में आलिमों की कदर नहीं। वह देखिए, नालायक मस्तियाबेग आपके सामने चंडू का दम लगा रहा है। ऐसे बदमाशों से मुझे नफरत है।

नवाब — कोई है, इस नालायक को निकाल दो यहाँ से।

मुसाहिब — हुजूर तो आज नाहक खफा होते हैं, इस दरबार में तो रोज ही चंडू के दम लगा करते हैं। इसने किया तो क्या गुनाह किया?

नवाब — क्या बकते हो, हमारे यहाँ चंडू का दम कोई नहीं लगाता।

खोजी — हमें यहाँ आते इतने दिन हुए, हमने कभी नहीं देखा, चंडू पीना शरीफों का काम ही नहीं।

मिर्जा — तुम तो गजब करते हो खोजी, जमाने भर के चंडूबाज, अफीमची, अब आए हो वहाँ से बढ़-बढ़ के बातें बनाने। जरा सरकार ने मुँह लगाया तो जमीन पर पाँव ही नहीं रखते।

नवाब — गफूर इन सब बदमाशों को निकाल बाहर करो। खबरदार जो आज से कोई यहाँ आने पाया।

मीर साहब — खुदावंद! बस, कुछ न कहिएगा, हम लोगों ने अपनी इज्जत नहीं बेची हैं।

नवाब — निकालो इन सबों को, अभी-अभी निकाल दो।

ख्वाजा साहब शह पा कर उठे और एक कतारा लेकर मस्तियाबेग पर जमाया। वह तो झल्लाया था ही, खोजी को एक चाँटा दिया, तो गिर पड़े, इतने में कई सिपाही आ गए, उन्होंने

मस्तियाबेग को पकड़ लिया और बाकी सब भाग खड़े हुए। खोजी झाड़ पोंछ कर उठे और उठते ही हुक्म दिया कि मस्तियाबेग को उस दरख्त में बाँधकर दो सौ कोड़े लगाए जायँ, नमकहराम अपने मालिक के दोस्तों से लड़ता है। बदन में कीड़े न पड़ें तो सही।

उधर मियाँ आज़ाद साहब से मिलकर लौटे तो देखा कि दरबार में सन्नाटा छाया हुआ है। नवाब साहब उन्हें देखते ही बोले — हजरत, आज से हमने आपकी सलाहों पर चलना शुरू कर दिया।

आज़ाद — दरबार के लोग कहाँ गायब हो गए?

खोजी — सबके सब निकाल दिए गए, अब कोई यहाँ फटकने भी न पाएगा।

नवाब — अब हम हुक्काम से मिला करेंगे और कोशिश करेंगे कि हर एक किस्म की कमेटी में शरीक हों। वाही-तबाही आदमियों की सोहबत में आप देखें तो मेरे कान पकड़िएगा।

आज़ाद — अब आप हर किस्म की किताबें पढ़ा कीजिए।

नवाब — आप तो कुछ फरमाते हैं, बजा है, मेरा पच्चीसवाँ साल है, अभी मुझे पढ़ने-लिखने का बहुत मौका है; और मुझे करना ही क्या है।

आज़ाद — खुदा आपकी नीयत में बरकत दे।

खोजी — बस, आज से आपको आलिमों की सोहबत रखनी चाहिए। ऐसा न हो, इस वक़्त तो सब कुछ तकरार कर लीजिए, और कल से फिर वही ढाक के तीन पात।

नवाब — खुदा ने चाहा तो यह सब बातें अब नाम को भी न देखिएगा।

दूसरे दिन आज़ाद सैर करने निकले तो क्या देखते हैं कि एक जगह कई आदमी एक छत पर बैठे हुए हैं। आज़ाद को देखते ही देखते ही एक आदमी ने आकर उनसे कहा — अगर आपको तकलीफ न हो, तो जरा मेरे साथ आइए। आज़ाद उसके साथ छत पर पहुँचे तो उन आदमियों में एक ही सूरत अपनी से मिलती-जुलती पाई। उसने आज़ाद की ताजीम की और कहा — आइए, आपसे कुछ बातें करूँ। आपने अपनी सूरत तो आईने में देखी होगी।

आज़ाद — हाँ और इस वक़्त बगैर आईने के देख रहा हूँ। आपका नाम?

आदमी — मुझे आज़ाद मिर्जा कहते हैं।

आज़ाद — तब तो आप मेरे हमनाम भी हैं। आपने मुझे क्योंकर पहचाना?

मिर्जा — मैंने आपकी तसवीरें देखी हैं और अखबारों में आपका हाल पढ़ता रहा हूँ।

आज़ाद — इस वक़्त आपसे मिल कर बहुत खुशी हुई।

मिर्जा — और अभी और भी खुशी होगी। सुरैया बेगम को तो आप जानते हैं?

आज़ाद — हाँ, हाँ, आपको उनका कुछ हाल मालूम है?

मिर्जा — जी हाँ, आपके धोखे में मैं उनके यहाँ पहुँचा था, और अब तो वह बेगम हैं। एक नवाब साहब के साथ उनका निकाह हो गया है।

आज़ाद — क्या अब दूर से भी मुलाकात न होगी?

मिर्जा — हरगिज नहीं।

आज़ाद — बे-अख्तियार जी चाहता है कि मिल कर बातें करूँ।

मिर्जा — कोशिश कीजिए, शायद मुलाकात हो जाय, मगर उम्मीद नहीं?

106

आज़ाद सुरैया बेगम की तलाश में निकले तो क्या देखते हैं कि एक बाग में कुछ लोग एक रईस की सोहबत में बैठे गपें उड़ा रहे हैं। आज़ाद ने समझा, शायद इन लोगों से सुरैया बेगम के नवाब साहब का कुछ पता चले। आहिस्ता-आहिस्ता उनके करीब गए। आज़ाद को देखते ही वह रईस चौंक कर खड़ा हो गया और उनकी तरफ देख कर बोला — वल्लाह, आपसे मिलने का बहुत शौक था। शुक्र है कि घर बैठे मुराद पूरी हुई। फर्माइए, आपकी क्या खिदमत करूँ?

मुसाहब — हुजूर, जंडैल साहब को कोई ऐस चीज पिलाइए कि रूह तक ताजा हो जाय।

खाँ साहब — मुझे पारसाल सबलवायु का मरज हो गया था। दो महीने डाक्टर का इलाज हुआ। खाक फायदा न हुआ। बीस दिन तक हकीम साहब ने नुस्खे पिलाए, मरज और भी बढ़ गया। पड़ोस में एक वैदराज रहते हैं उन्होंने कहा मैं दो दिन में अच्छा कर दूँगा। दस दिन तक उनका इलाज रहा, मगर कुछ फायदा न हुआ। आखिर एक दोस्त ने कहा — भाई, तुम सबकी दवा छोड़ दो, जो हम कहें वह करो। बस हुजूर, दो बार बरांडी

पिलाई। दो छटाँक शाम को, दो छटाँक सुबह को, उसका यह असर हुआ कि चौथे दिन में बिलकुल चंगा हो गया।

रईस — बरांडी के बड़े-बड़े फायदे लिखे हैं।

दीवान — सरकार, पेशाब के मरज में तो बरांडी अकसीर है। जितनी देते जाइए उतना ही फायदा करती है!

खाँ साहब — हुजूर, आँखों देखी कहता हूँ। एक सवार को मिर्गी आती थी, सैकड़ों इलाज किए, कुछ असर न हुआ, आखिर एक आदमी ने कहा, हुजूर हुक्म दें तो एक दवा बताऊँ। दावा करके कहता हूँ कि कल ही मिर्गी न रहे। खुदावंद, दो छटाँक शराब लीजिए और उसमें उसका दूना पानी मिलाइए, अगर एक दिन में फायदा न हो तो जो चोर की सजा वह मेरी सजा।

नवाब — यह सिफत है इसमें!

मुसाहब — हुजूर, गँवारों ने इसे झूठ-मूठ बदनाम कर दिया है। क्यों जंडैल साहब, आपको कभी इत्तिफ़ाक़ हुआ है?

आज़ाद — वाह, क्या मैं मुसलमान नहीं हूँ।

नवाब — क्या खूब जवाब दिया है, सुभान-अल्लाह!

इतने में मुसाहब जिनको औरों ने सिखा-पढ़ा कर भेजा था, चुगा पहने और अमामा बाँधे आ पहुँचे। लोगों ने बड़े तपाक से उनकी ताजीम की और बुला कर बैठाया।

नवाब — कैसे मिजाज है मौलाना साहब?

मौलाना — खुदा का शुक्र है।

मुसाहब — क्यों मौलाना साहब, आपके खयाल में शराब हलाल है या हराम?

मौलाना — अगर तुम्हारा दिल साफ नहीं तो हजार बार हज करो कोई फायदा नहीं। हर एक चीज नीयत के लिहाज से हलाल या हराम होती है।

आज़ाद — जनाब, हमने हर किस्म के आदमी देखे। किसी सोहबत से परहेज नहीं किया, आप लोग शौक से पीयें, मेरा कुछ खयाल न करें।

नवाब — नीयत की सफाई इसी को कहते हैं। हजरत आज़ाद, आपकी जितनी तारीफ सुनी थी, उससे कहीं बढ़ कर पाया।

एक साहब नीचे से शराब, सोडा की बोतलें और बर्फ लाए और दौर चलने लगे। जब सरूर जमा तो गप्पें उड़ने लगीं —

खाँ साहब — खुदावंद, एक बार नेपाल की तराई में जाने का इत्तिफ़ाक़ हुआ। चौदह आदमी साथ थे, वहाँ जंगल में शहद कसरत से है और शहद की मक्खियों की अजब ख़ासियत है कि बदन पर जहाँ कहीं बैठती हैं, दर्द होने लगता है। मैंने वहाँ के बाशिन्दों से पूछा, क्यों भाई, इसकी कुछ दवा है? कहा, इसकी दवा शराब है। हमारे साथियों में कई ब्राह्मण भी थे वह शराब को छू न सकते थे। हमने दवा के तौर पर पी, हमारा दर्द तो जाता रहा और वह सब अभी तक झींक रहे हैं।

नवाब — वल्लाह, इसके फायदे बड़े-बड़े हैं, मगर हराम है, अगर हलाल होती तो क्या कहना था।

मुसाहब — खुदावंद, अब तो सब हलाल है।

खाँ साहब — खुदावंद, हैजे की दवा, पेचिस की दवा, बवासीर की दवा, दम की दवा, यहाँ तक कि मौत की भी दवा।

दीवान — ओ-हो-हो, मौत की दवा!

नवाब — खबरदार, सब के सब खामोश, बस कह दिया।

दीवान — खामोश! खामोश!

खाँ साहब — तप की दवा, सिर-दर्द की दवा, बुढ़ापे की दवा।

नवाब — यह तुम लोग बहकते क्यों हो? हमने भी तो पी है। हजरत, मुझे एक औरत ने नसीहत की थी। तबसे क्या मजाल कि मेरी जबान से एक बेहूदा बात भी निकले। (चपरासी को बुला कर) रमजानी, तुम खाँ साहब और दीवान जी को यहाँ से ले जाओ।

दीवान — इल्म की कसम, अगर इतनी गुस्ताखी हमारी शान में करोगे तो हमसे जूती-पैजार हो जायगी।

नवाब — कोई है? जो लोग बहक रहे हों उन्हें दरबार से निकाल दो और फिर भूल के भी न आने देना।

लाला — अभी निकाल दो सबको!

यह कह कर लाला साहब ने रमजान खाँ पर टीप जमाई। वह पठान आदमी, टीप पड़ते ही आग हो गया। लाला साहब के पट्टे पकड़ कर दो-चार धपें जोर-जोर से लगा बैठा। इस पर दो-चार आदमी और इधर-उधर से उठे। लप्पा-डुग्गी होने लगी।

आज़ाद ने नवाब साहब से कहा — मैं तो रुखसत होता हूँ।

नवाब साहब ने आज़ाद का हाथ पकड़ लिया और बाग में ला कर बोले — हजरत, मैं बहुत शरमिंदा हूँ कि न पाजियों की वजह से आपको तकलीफ हुई। क्या कहें, उस औरत ने हमें वह

नसीहत की थी कि अगर हम आदमी होते तो सारी उम्र आराम के साथ बसर करते। मगर इन मुसाहबों से खुदा समझे; हमें फिर घेर-घार के फंदे में फाँस लिया।

आज़ाद — तो जनाब, ऐसे अदना नौकरों को इतना मुँह चढाना हरगिज मुनासिब नहीं।

नवाब — भाई साहब, यही बातें उस औरत ने भी समझाई थीं।

आज़ाद — आखिर वह औरत कौन थी और आपसे उससे क्या ताल्लुक था?

नवाब — हजरत, अर्ज किया न कि एक दिन दोस्तों के साथ एक बाग में बैठा था कि एक औरत सफेद दुलाई ओढ़े निकली। दो चार बिगड़े दिलों ने उसे चकमा दे कर बुलाया। वह बेतकल्लुफी के साथ आकर बैठी तो मुझसे बातचीत होने लगी। उसका नाम अलारक्खी था।

अलारक्खी का नाम सुनते ही आज़ाद ने ऐसा मुँह बना लिया गोया कुछ जानते ही नहीं, मगर दिल में सोचे कि वाह री अलारक्खी, जहाँ जाओ, उसके जानने वाले निकल ही आते हैं। कुछ देर बाद नवाब नशे में चूर हो ही गए और आज़ाद बाहर निकले तो पुराने जान-पहचान के आदमी से मुलाकात हो गई। आज़ाद ने पूछा — कहिए हजरत, आजकल आप कहाँ हैं?

आदमी — आजकल तो नवाब वाजिद हुसैन की खिदमत में हूँ। हुजूर तो खैरियत से रहे। हुजूर का नाम तो सारी दुनिया में रोशन हो गया।

आज़ाद — भाई, जब जानें कि एक बार सुरैया बेगम से दो-दो बातें करा दो।

आदमी — कोशिश करूँगा हुजूर, किसी न किसी हीले से वहाँ तक आपका पैगाम पहुँचा दूँगा।

यह मामला ठीक-ठाक करके आज़ाद होटल में गए तो देखा कि खोजी बड़ी शान से बैठे गप्पें उड़ा रहे हैं और दोनों परियाँ उनकी बातें सुन-सुन कर खिलखिला रही हैं।

क्लारिसा — तुम अपनी बीवी से मिले, बड़ी खुश हुई होंगी।

खोजी — जी हाँ, मुहल्ले में पहुँचते ही मारे खुशी के लोगों ने तालियाँ बजाईं। लौंडों ने ढेले मार-मार कर गुल मचाया कि आए-आए। अब कोई गले मिलता है, कोई मारे मुहब्बत के उठा के दे मारता है। सारा महल्ला कह रहा है तुमने तो रूम में वह काम किया कि झंडे गाड़ दिए। घर में जो खबर हुई तो लौंडी ने आकर सलाम किया। हुजूर आइए, बेगम साहब बड़ी देर से इंतजार कर रही हैं। मैंने कहा, क्योंकर चलूँ? जब यह इतने भूत

छोड़ें भी। कोई इधर घसीट रहा है, कोई उधर और यहाँ जान अजाब में है।

मीडा — घर का हाल बयान करो। वहाँ क्या बातें हुई?

खोजी — दालान तक बीबी नंगे पाँव इस तरह दौड़ी आईं कि हाँफ गईं।

मीडा — नंगे पाँव क्यों? क्या तुम लोगों में जूता नहीं पहनते?

खोजी — पहनते क्यों नहीं; मगर जूता तो हाथ में था।

मीडा — हाथ से और जूते से क्या वास्ता?

खोजी — आप इन बातों को क्या समझें।

मीडा — तो आखिर कुछ कहोगे भी?

खोजी — इसका मतलब यह है कि मियाँ अन्दर कदम रखें और हम खोपड़ी सुहला दें।

मीडा — क्या यह भी कोई रस्म है?

खोजी — यह सब अदाएँ हमने सिखाई हैं। इधर हम घर में घुसे, उधर बेगम साहब ने जूतियाँ लगाईं। अब हम छिपें तो कहाँ छिपें, कोई छोटा-मोटा आदमी हो तो इधर-उधर छिप रहे, हम यह डील-डौल ले के कहाँ जायँ?

क्लारिसा — सच तो है, कद क्या है ताड़ है!

मीडा — क्या तुम्हारी बीवी भी तुम्हारी ही तरह ऊँचे कद की हैं?

खोजी — जनाब, मुझसे पूरे दो हाथ ऊँची हैं। आकर बोलीं, इतने दिनों के बाद आए तो क्या लाए हो? मैंने तमगा दिखा दिया तो खिल गईं। कहा, हमारे पास आजकल बाट न थे अब इससे तरकारी तौला करूँगी।

मीडा — क्या पत्थर का तमगा है? क्या खूब कदर की है।

क्लारिसा — और तुम्हें तमगा कब मिला?

खोजी — कहीं ऐसा कहना भी नहीं।

इतने में आज़ाद पाशा चुपके से आगे बढ़े और कहा — आदाब अर्ज है। आज तो आप खासे रईस बने हुए हैं?

खोजी — भाईजान, वह रंग जमाया कि अब खोजी ही खोजी हैं।

आज़ाद — भई, इस वक़्त एक बड़ी फिक्र में हूँ। अलारक्खी का हाल तो जानते ही हो। आजकल वह नवाब वाजिद हुसैन के महल में है। उससे एक बार मिलने की धुन सवार है। बतलाओ, क्या तदबीर करूँ?

खोजी — अजी, यह लटके हमसे पूछो। यहाँ सारी जिंदगी यही किया किए हैं। किसी चूड़ी वाली को कुछ दे-दिला कर राजी कर लो।

आज़ाद के दिल में भी यह बात जम गई। जा कर एक चूड़ी वाली को बुला लाए।

आज़ाद — क्यों भलेमानस, तुम्हारी पैठ तो बड़े-बड़े घरों में होगी। अब यह बताओ कि हमारे भी काम आओगी? अगर कोई काम निकले तो कहें, वरना बेकार है।

चूड़ी वाली — अरे, तो कुछ मुँह से कहिएगा भी? आदमी का काम आदमी ही से तो निकलता है।

आज़ाद — नवाब वाजिद हुसैन को जानती हो?

चूड़ी वाली — अपना मतलब कहिए।

आज़ाद — बस उन्हीं के महल में एक पैगाम भेजना है।

चूड़ी वाली — आपका तो वहाँ गुजर नहीं हो सकता। हाँ, आपका पैगाम वहाँ तक पहुँचा दूँगी। मामला जोखिम का है, मगर आपके खातिर कर दूँगी।

आज़ाद — तुम सुरैया बेगम से इतना कह दो कि आज़ाद ने आपको सलाम कहा है।

चूड़ी वाली — आज़ाद आपका नाम है या किसी और का?

आज़ाद — किसी और के नाम या पैगाम से हमें क्या वास्ता। मेरी यह तसवीर ले लो, मौका मिले तो दिखा देना।

चूड़ी वाली ने तसवीर टोकरे में रखी और नवाब वाजिद हुसैन के घर चली। सुरैया बेगम कोठे पर बैठी दरिया की सैर कर रही थीं। चूड़ी वाली ने जा कर सलाम किया।

सुरैया — कोई अच्छी चीज लाई हो या खाली-खाली आई हो?

चूड़ी वाली — हुजूर, वह चीज लाई हूँ कि देख कर खुश हो जाइएगा; मगर इनाम भरपूर लूँगी।

सुरैया — क्या है, जरा देखूँ तो?

चूड़ी वाली ने बेगम साहब के हाथों में तसवीर रख दी। देखते ही चौंक के बोलीं — सच बताना कहाँ पाई?

चूड़ी वाली — पहले यह बतलाइए कि यह कौन साहब हैं और आपसे कभी की जान-पहचान है कि नहीं?

सुरैया — बस यह न पूछो, यह बतलाओ कि तसवीर कहाँ पाई?

चूड़ी वाली — जिनकी यह तसवीर है, उनको आपको सामने लाऊँ तो क्या इनाम पाऊँ?

सुरैया — इस बारे में मैं कोई बातचीत करना नहीं चाहती। अगर वह खैरियत से लौट आए हैं तो खुश रहें और उनके दिल की मुरादें पूरी हों।

चूड़ी वाली — हुजूर, यह तसवीर उन्होंने मुझको दी। कहा, अगर मौका हो तो हम भी एक नजर देख लें।

सुरैया — कह देना कि आज़ाद, तुम्हारे लिए दिल से दुआ निकलती है, मगर पिछली बातों को जाने दो, हम पराए बस में हैं और मिलने में बदनामी है। हमारा दिल कितना ही साफ हो, मगर दुनिया को तो नहीं मालूम है, नवाब साहब को मालूम हो गया, तो उनका दिल कितना दुखेगा।

चूड़ी वाली — हुजूर, एक दफा मुखड़ा तो दिखा दीजिए; इन आँखों की कसम, बहुत तरस रहे हैं।

सुरैया — चाहे जो हो, जो बा खुदा को मंजूर थी, वह हुई और उसी में अब हमारी बेहतरी है। यह तसवीर यहीं छोड़ जाओ, मैं इसे छिपा कर रखूँगी।

चूड़ी वाली — तो हुजूर, क्या कह दूँ। साफ टका सा जवाब?

सुरैया — नहीं, तुम समझा कर कह देना कि तुम्हारे आने से जितनी खुशी हुई, उसका हाल खुदा ही जानता है। मगर अब तुम

यहाँ नहीं आ सकते और न मैं ही कहीं जा सकती हूँ; और फिर अगर चोरी-छिपे एक दूसरे को देख भी लिया तो क्या फायदा। पिछली बातों को अब भूल जाना ही मुनासिब है। मेरे दिल में तुम्हारी बड़ी इज्जत है। पहल मैं तुमसे गरज की मुहब्बत करती थी, अब तुम्हारी पाक मुहब्बत करती हूँ। खुदा ने चाहा तो शादी के दिन हुस्नआरा बेगम के यहाँ मुलाकात होगी।

यह वही अलारक्खी हैं जो सराय में चमकती हुई निकलती थीं। आज उन्हें परदे और हया का इतना खयाल है। चूड़ी वाली ने जा कर यहाँ की सारी दास्तान आज़ाद को सुनाई। आज़ाद बेगम की पाकदामनी की घंटों तारीफ करते रहे। यह सुन कर उन्हें बड़ी तस्कीन हुई कि शादी के दिन वह हुस्नआरा बेगम के यहाँ जरूर आएँगी।

107

मियाँ आज़ाद सैलानी तो थे ही, हुस्नआरा से मुलाकात करने के बदले कई दिन तक शहर में मटरगश्त करते रहे, गोया हुस्नआरा की याद ही नहीं रही। एक दिन सैर करते-करते वह एक बाग

में पहुँचे और एक कुर्सी पर जा बैठे। एकाएक उनके कान में आवाज आई —

चले हम ऐ जुनूँ जब फस्ले गुल में सैर गुलशन को,
एवज फूलों के पत्थर में भरा गुलचीं ने दामन को।
समझ कर चाँद हमने यार तेरे रूए रौशन को;
कहा बाले को हाला और महे नौ ताके गरदन को।
जो वह तलवार खींचें तो मुकाबिल कर दूँ मैं दिल को;
लड़ाऊँ दोस्त से अपने मैं उस पहलू के दुश्मन को।
करूँ आहें तो मुँह को ढाँप कर वह शोख कहता है —
हवा से कुछ नहीं है डर चिरागे जेर दामन को।
तवाजा चाहते हो जाहिदो क्या बादा-ख्वारों से,
कहीं झुकते भी देखा है भला शीशे की गर्दन को।

आज़ाद के कान खड़े हुए कि यह कौन गा रहा है। इतने में एक खिड़की खुली और एक चाँद सी सूरत उनके सामने खड़ी नजर आई। मगर इत्तिफ़ाक़ से उसकी नजर इन पर नहीं पड़ी। उसने अपना रंगीन हाथ माथे पर रख कर किसी हमजोली को पुकारा, तो आज़ाद ने यह शेर पढ़ा —

हाथ रखता है वह बुत अपनी भौहों पर इस तरह;
जैसे मेहराब पर अल्लाह लिखा होता है।

उस नाजनीन ने आवाज सुनते ही उन पर नजर डाली और दरीचा बन्द कर लिया। दुपट्टे को जो हवा ने उड़ा दिया तो आधा खिड़की के इधर और आधा उधर। इस पर उस शोख ने झुँझला कर कहा, यह निगोड़ा दुपट्टा भी मेरा दुश्मन हुआ है।

आज़ाद — अल्लाह रे गजब, दुपट्टे पर भी गुस्सा आता है!

सनम — ऐ यह कौन बोला? लोगो, देखो तो, इस बाग में मरघट का मुर्दा कहाँ से आ गया?

सहेली — एक कहाँ, बहन, हाँ-हाँ, वह बैठा है, मैं तो डर गई।

सनम — अख्खाह, यह तो कोई सिड़ी सी मालूम होता है।

आज़ाद — या खुदा, यह आदमजाद हैं या कोहकाफ की परियाँ?

सनम — तुम यहाँ कहाँ से भटक के आ गए?

आज़ाद — भटकते कोई और होंगे हम तो अपनी मंजिल पर पहुँच गए।

सनम — मंजिल पर पहुँचना दिल्लगी नहीं है, अभी दिल्ली दूर है।

आज़ाद — यह कहाँ का दस्तूर है कि कोई जमीन पर हो, कोई आसमान पर? आप सवार, मैं पैदल, भला क्योंकर बने!

सनम — और सुनो, आप तो पेट से पाँव निकालने लगे, अब यहाँ से बोरियाँ बँधना उठाओ और चलता धंधा करो।

आज़ाद — इतना हुक्म दो कि करीब से दो-दो बातें कर लें।

सनम — वह काम क्यों करें जिसमें फसाद का डर है।

सहेली — ऐ बुला लो, भले आदमी मालूम होते हैं। (आज़ाद से) चले आइए साहब, चले आइए।

आज़ाद खुश-खुश उठे और कोठे पर जा पहुँचे।

सनम — वाह बहन, वाह, एक अजनबी को बुला लिया! तुम्हारी भी क्या बातें हैं।

आज़ाद — भई, हम भी आदमी हैं। आदमी को आदमी से इतना भागना न चाहिए।

सनम — हजरत, आपके भले ही के लिए कहती हूँ, यह बड़े जोखिम की जगह है। हाँ, अगर सिपाही आदमी हो तो तुम खुद ताड़ लोगे।

आज़ाद ने जो यह बातें सुनीं तो चक्कर में आए कि हिंदोस्तान से रूस तक हो आए और किसी ने चूँ तक न की, और यहाँ इस तरह की धमकी दी जाती है। सोचो कि अगर यह सुन कर यहाँ से भाग जाते है तो यह दोनों दिल में हँसेंगी और अगर ठहर जायँ

तो आसार बुरे नजर आते हैं। बातों-बातों में उस नाजनीन से पूछा — यह क्या भेद है?

सनम — यह न पूछो भई, हमारा हाल बयान करने के काबिल नहीं।

आज़ाद — आखिर कुछ मालूम तो हो, तुम्हें यहाँ क्या तकलीफ है? मुझे तो कुछ दाल में काला जरूर मालूम होता है।

सनम — जनाब, यह जहन्नुम है और हमारी जैसी कितनी ही औरतें इस जहन्नुम में रहती हैं। यों कहिए कि हमीं से यह जहन्नुम आबाद है। एक कुन्दन नामी बुढ़िया बरसों से यही पेशा करती है। खुदा जाने, इसने कितने घर तबाह किए। अगर मुझसे पूछो कि तेरे माँ-बाप कहाँ हैं, तो मैं क्या जवाब दूँ, मुझे इतना ही मालूम है कि एक बुढ़िया मुझे किसी गाँव से पकड़ लाई भी। मेरे माँ-बाप ने बहुत तलाश की, मगर इसने मुझे घर से निकलने न दिया। उस वक़्त मेरा सिन चार-पाँच साल से ज्यादा न था।

आज़ाद — तो क्या यहाँ सब ऐसी ही जमा हैं?

सनम — यह जो मेरी सहेली हैं, किसी बड़े आदमी की बेटी हैं। कुन्दन उनके यहाँ आने-जाने लगी और उन सबों से इस तरह की साँठ-गाँठ की कि औरतें इसे बुलाने लगीं। उनको क्या मालूम था कि कुन्दन के यह हथकंडे हैं।

आज़ाद — भला कुन्दन से मेरी मुलाकात हो तो उससे कैसी बातें करूँ!

सनम — वह इसका मौका ही न देगी कि तुम कहो। जो कुछ कहना होगा, वह खुद कह चलेगी। लेकिन जो तुमसे पूछे कि तुम यहाँ क्योंकर आए?

आज़ाद — मैं कह दूँगा कि तुम्हारा नाम सुन कर आया।

सनम — हाँ, इस तरकीब से बच जाओगे। जो हमें देखता है, समझता है कि यह बड़ी खुशनसीब हैं। पहनने के लिए अच्छे से अच्छे कपड़े, खाने के लिए अच्छे से अच्छे खाने, रहने के लिए बड़ी से बड़ी हवेलियाँ, दिल बहलाव के लिए हमजोलियाँ सब कुछ हैं; मगर दिल को खुशी और चैन नहीं। बड़ी खुशनसीब वे औरतें हैं जो एक मियाँ के साथ तमाम उम्र काट देती हैं। मगर हम बदनसीब औरतों के ऐसे नसीब कहाँ? उस बुढ़िया को खुदा गारत करे जिसने हमें कहीं का न रखा।

आज़ाद — मुझे यह सुन कर बहुत अफसोस हुआ। मैंने तो यह समझा था कि यहाँ सब चैन ही चैन है, मगर अब मालूम हुआ कि मामला इसका उलटा है।

सनम — हजारों आदमियों से बातचीत होती है, मगर हमारे साथ शादी करने को कोई पतियाता ही नहीं। कुन्दन से सब डरते हैं।

शोहदे-लुच्चों की बात का एतबार क्या, दो-एक ने निकाह का वादा किया भी तो पूरा न किया।

यह कह कर वह नाजनीन रोने लगी।

आज़ाद ने समझाया कि दिल को ढारस दो और यहाँ से निकलने की हिकमत सोचो।

सनम — खुदा बड़ा कारसाज है, उसको काम करते देर नहीं लगती, मगर अपने गुनाहों को जब देखते हैं तो दिल गवाही नहीं देता कि हमें यहाँ से छुटकारा मिलेगा।

आज़ाद — मैं तो अपनी तरफ से जरूर कोशिश करूँगा।

सनम — तुम मर्दों की बात का एतबार करना फजूल है।

आज़ाद — वाह! क्या पाँचों उँगलियाँ बराबर होती हैं?

इतने में एक और हसीना आकर खड़ी हो गई। इसका नाम नूरजान था। आज़ाद ने उससे कहा — तुम भी अपना कुछ हाल कहो। यहाँ कैसे आ फँसी?

नूर — मियाँ हमारा क्या हाल पूछते हो, हमें अपना हाल खुद ही नहीं मालूम। खुदा जाने, हिंदू के घर जन्म लिया या मुसलमान के घर पैदा हुई। इस मकान की मालिक एक बुढ़िया है, उसके काटे का मंत्र नहीं, उसका यही पेशा है कि जिस तरह हो

कमसिन और खूबसूरत लड़कियों को फुसला कर ले आए। सारा जमाना उसके हथकंडों को जानता है, मगर किसी से आज तक बंदोबस्त नहीं हो सका। अच्छे-अच्छे महाजन और व्यापारी उसके मकान पर माथा रगड़ते हैं, बड़े-बड़े शरीफजादे उसका दम भरते हैं। शाहजादों तक के पास इसकी पहुँच हैं, सुनते थे कि बुरे काम का नतीजा बुरा होता है, मगर खुदा जाने, बुढ़िया को इन बुरे कामों की सजा क्यों नहीं मिलती? इस चुड़ैल ने खूब रुपए जमा किए हैं और इतना नाम कमाया है कि दूर-दूर तक मशहूर हो गई है।

आज़ाद — तुम सब की सब मिलकर भाग क्यों नहीं जातीं?

सनम — भाग जायँ तो फिर खायँ क्या, यह तो सोचो।

आज़ाद — इसने अपनी मक्कारी से इस कदर तुम सबको बेवकूफ बना रखा है।

सनम — बेवकूफ नहीं बनाया है, यह बात सही है, खाने भर का सहारा तो हो जाय।

आज़ाद — तुम्हारी आँख पर गफलत की पट्टी बाँध दी है। तुम इतना नहीं सोचती कि तुम्हारी बदौलत तो इसने इतना रुपया पैदा किया और तुम खाने को मोहताज रहोगी? जो पसंद हो उसके साथ शादी कर लो और आराम से जिंदगी बसर करो।

सनम — यह सच है, मगर उसका रोब मारे डालता है।

आज़ाद — उफ् रे रोब, यह बुढ़िया भी देखने के काबिल है।

सनम — इस तरह की मीठी मीठी बातों करेगी कि तुम भी उसका कलमा पढ़ने लगोगे।

आज़ाद — अगर मुझे हुक्म दीजिए तो मैं कोशिश करूँ।

सनम — वाह, नेकी और पूछ-पूछ? आपका हमारे ऊपर बड़ा एहसान होगा। हमारी जिंदगी बरबाद हो रही है। हमें हर रोज गालियाँ देती है और हमारे माँ-बाप को कोसा करती है। गो उन्हें आँखों से नहीं देखा, मगर खून का जोश कहाँ जाय?

इस फिकरे से आज़ाद की आँखें भी डबडबा आईं, उन्होंने ठान ली कि इस बुढ़िया को जरूर सजा कराएँगे।

इतने में सहेली ने आकर कहा — बुढ़िया आ गई है, धीरे-धीरे बातें करो।

आज़ाद ने सनम के कान में कुछ कह दिया और दोनों की दोनों चली गईं।

कुन्दन — बेटा, आज एक और शिकार किया, मगर अभी बताएँगे नहीं। यह दरवाजे पर कौन खड़ा था?

सनम — कोई बहुत बड़े रईस हैं, आपसे मिलना चाहते हैं।

कुन्दन ने फौरन आज़ाद को बुला भेजा और पूछा, किसके पास आए हो बेटा! क्या काम है?

आज़ाद — मैं खास आपके पास आया हूँ।

कुन्दन — अच्छा बैठो। आजकल बे-फसल की बारिश से बड़ी तकलीफ होती है, अच्छी वह फसल कि हर चीज वक़्त पर हो, बरसात हो तो मेंह बरसे, सर्दी के मौसम में सर्दी खूब हो और गर्मी में लू चले, मगर जहाँ कोई बात बे-मौसम की हुई और बीमारी पैदा हो गई।

आज़ाद — जी हाँ, कायदे की बात है।

कुन्दन — और बेटा, हजार बात की एक बात है कि आदमी बुराई से बचे। आदमी को याद रखना चाहिए कि एक दिन उसको मुँह दिखाना है, जिसने उसे पैदा किया। बुरा आदमी किस मुँह से मुँह दिखाएगा?

आज़ाद — क्या अच्छी बात आपने कही है, है तो यही बात!

कुन्दन — मैंने तमाम उम्र इसी में गुजारी कि लावारिस बच्चों की परवरिश करूँ, उनको खिलाऊँ-पिलाऊँ और अच्छी-अच्छी बातें सिखाऊँ। खुदा मुझे इसका बदला दे तो वाह-वाह, वरना और

कुछ फायदा न सही, तो इतना फायदा तो है कि इन बेकसों की मेरी जात से परवरिश हुई।

आज़ाद — खुदा जरूर इसका सवाब देगा।

कुन्दन — तुमने मेरा नाम किससे सुना?

आज़ाद — आपके नाम की खुशबू दूर-दूर तक फैली हुई है।

कुन्दन — वाह, मैं तो कभी किसी से अपनी तारीफ ही नहीं करती। जो लड़कियाँ मैं पालती हूँ उनको बिलकुल अपने खास बेटों की तरह समझती हूँ। क्या मजाल कि जरा भी फर्क हो। जब देखा कि वह सयानी हुई तो उनको किसी अच्छे घर ब्याह दिया, मगर खूब देख-भाल के। शादी मर्द और औरत की रजामंदी से होनी चाहिए।

आज़ाद — यही शादी के माने हैं।

कुन्दन — तुम्हारी उम्र दराज हो बेटा, आदमी जो काम करे, अक्ल से, हर पहलू को देख-भाल के।

आज़ाद — बगैर इसके मियाँ-बीवी में मुहब्बत नहीं हो सकती और यों जबरदस्ती की तो बात ही और है।

कुन्दन — मेरा कायदा है कि जिस आदमी को पढ़ा-लिखा देखती हूँ उसके सिवा और किसी से नहीं ब्याहती और लड़की से पूछ

लेती हूँ कि बेटा, अगर तुमको पसंद हो तो अच्छा, नहीं कुछ जबरदस्ती नहीं है।

यह कह कर उसने महरी को इशारा किया। आज़ाद ने इशारा करते तो देखा, मगर उनकी समझ में न आया कि इसके क्या माने हैं। महरी फौरन कोठे पर गई और थोड़ी ही देर में कोठे से गाने की आवाजें आने लगीं।

कुन्दन — मैंने इन सबको गाना भी सिखाया है, गो यहाँ इसका रिवाज नहीं।

आज़ाद — तमाम दुनिया में औरतों को गाना-बजाना सिखाया जाता है।

कुन्दन — हाँ, बस एक इस मुल्क में नहीं।

आज़ाद — यह तो तीन की आवाजें मालूम होती हैं, मगर इनमें से एक का गला बहुत साफ है।

कुन्दन — एक तो उनका दिल बहलता है, दूसरे जो सुनता है, उसका भी दिल बहलता है।

आज़ाद — मगर आपने कुछ पढ़ाया भी है या नहीं?

कुन्दन — देखो बुलवाती हूँ, मगर बेटा नीयत साफ रखनी चाहिए।

उस ठगों की बुढ़िया ने सबसे पहले नूर को बुलाया। वह लजाती हुई आई और बुढ़िया के पास इस तरह गरदन झुका के बैठी जैसे कोई शरमीली दुलहिन।

आज़ाद – ऐ साहब, सिर ऊँचा करके बैठो, यह क्या बात है?

कुन्दन – बेटा, अच्छी तरह बैठो सिर उठा कर। (आज़ाद से) हमारी सब लड़कियाँ शरमीली और हयादार हैं।

आज़ाद – यह आप ऊपर क्या गा रही थीं? हम भी कुछ सुनें।

कुन्दन – बेटी नूर, वही गजल गाओ।

नूर – अम्माँजान, हमें शर्म आती है।

कुन्दन – कहती है, हमें शर्म आती है, शर्म की क्या बात है, हमारी खातिर से गाओ।

नूर – (कुन्दन के कान में) अम्माँजान, हमसे न गाया जायगा।

आज़ाद – यह नई बात है –

अकड़ता है क्या देख-देख आईना,
हसीं गरचे है तू पर इतना घमंड।

कुन्दन – लो, इन्होंने गा के सुना दिया।

महरी — कहिए, हुजूर, दिल का परदा क्या कम है जो आप मारे शर्म के मुँह छिपाए हैं। ऐ बीवी, गरदन ऊँची करो, जिस दिन दुलहिन बनोगी, उस दिन इस तरह बैठना तो कुछ मुजायका नहीं है।

कुन्दन — हाँ, बात तो यही है, और क्या?

आज़ाद — शुक्र है, आपने जरा गरदन तो उठाई —

बात सब ठीक-ठाक है, पर अभी
कुछ सवालो-जवाब बाकी है।

कुन्दन — (हँस कर) अब तुम जानो और यह जानें।

आज़ाद — ऐ साहब, इधर देखिए।

नूर — अम्माँजान, अब हम यहाँ से जाते हैं।

कुन्दन ने चुटकी ले कर कहा — कुछ बोलो जिसमें इनका भी दिल खुश हो, कुछ जवाब दो, यह क्या बात है।

नूर — अम्माँजान, किसको जवाब दूँ? न जान, न पहचान।

कुन्दन इन कामों में आठों गाँठ कुम्मैत, किसी बहाने से हट गई। नूर ने भी बनावट के साथ चाहा कि चली जाय, इस पर कुन्दन ने डाँट बताई — हैं-हैं, यह क्या, भले मानस हैं या कोई

नीच कौम? शरीफों से इतना डर! आखिर नूर शर्मा कर बैठ गई। उधर कुन्दन नजर से गायब हुई, इधर महरी भी चंपत।

आज़ाद — यह बुढ़िया तो एक ही काइयाँ है।

नूर — अभी देखते जाओ, यह अपने नजदीक तुमको उम्र भर के लिए गुलाम बनाए लेती है, जो हमने पहले से इसका हाल न बयान कर दिया होता तो तुम भी चंग पर चढ़ जाते।

आज़ाद — भला यह क्या बात है कि तुम उसके सामने इतना शरमाती रहीं?

नूर — हमको जो सिखाया है वह करते हैं, क्या करें?

आज़ाद — अच्छा, उन दोनों को क्यों न बुलाया?

नूर — देखते जाओ, सबको बुलाएगी।

इतने में महरी पान, इलायची और इत्र लेकर आई।

आज़ाद — महरी साहब, यह क्या अंधेर है? आदमी आदमी से बोलता है या नहीं?

महरी — ऐ बीबी, तुमने क्या बोलने की कसम खा ली है? ले अब हमसे तो बहुत न उड़ो। खुदा झूठ न बुलाए तो बातचीत तक नौबत आ चुकी होगी और हमारे सामने घूँघट कर लेती हैं।

आज़ाद — गरदन तक तो ऊँची नहीं करतीं, बोलना-चालना कैसा, या तो बनती हैं या अम्माँजान से डरती हैं।

महरी — वाह-वाह, हुजूर वाह, भला यह काहे से जान पड़ा कि बनती हैं? क्या यह नहीं हो सकता कि आँखों की हया के सबब से लजाती हों?

आज़ाद — वाह, आँखें कहे देती हैं कि नीयत कुछ और है।

नूर — खुदा की सँवार झूठे पर।

महरी — शाबाश, बस यह इसी बात की मुंतजिर थीं। मैं तो समझे ही बैठी थी कि जब यह जबान खोलेंगी, फिर बन्द ही कर छोड़ेंगी।

नूर — हमें भी कोई गँवार समझा है क्या?

आज़ाद — वल्लाह, इस वक़्त इनका त्योरी चढ़ाना अजब लुत्फ देता है। इनके जौहर तो अब खुले। इनकी अम्माँजान कहाँ चली गईं? जरा उनको बुलवाइए तो!

महरी — हुजूर, उनका कायदा है कि अगर दो दिल मिल जाते हैं तो फिर निकाह पढ़वा देती हैं, मगर मर्द भलामानस हो, चार पैसे पैदा करता हो। आप पर तो कुछ बहुत ही मेहरबान नजर आती

हैं कि दो बातें होते ही उठ गईं, वरना महीनों जाँच हुआ करती है, आपकी शक्ल-सूरत से रियासत बरसती है।

नूर — वाह, अच्छी फबती कही, बेशक रिसायत बरसती है!

यह कह नूर ने आहिस्ता-आहिस्ता गाना शुरू किया।

आज़ाद — मैं तो इनकी आवाज पर आशिक हूँ।

नूर — खुदा की शान, आप क्या और आपकी क़दरदानी क्या!

आज़ाद — दिल में तो खुश हुई होंगी, क्यों महरी?

महरी — अब यह आप जानें और वह जानें, हमसे क्या?

एकाएक नूर उठ कर चली गई। आज़ाद और महरी के सिवा वहाँ कोई न रहा, तब महरी ने आज़ाद से कहा — हुजूर ने मुझे पहचाना नहीं, और मैं हुजूर को देखते ही पहचान गई, आप सुरैया बेगम के यहाँ आया-जाया करते थे।

आज़ाद — हाँ, अब याद आया, बेशक मैंने तुमको उनके यहाँ देखा था। कहो, मालूम है कि अब वह कहाँ हैं?

महरी — हुजूर, अब वह वहाँ हैं जहाँ चिड़िया भी नहीं जा सकती; मगर कुछ इनाम दीजिए तो दिखा दूँ। दूर से ही बात-चीत होगी। एक रईस आज़ाद नाम के थे, उन्हीं के इश्क में जोगिन हो गईं। जब मालूम हुआ कि आज़ाद ने हुस्नआरा से शादी कर

ली तो मजबूर हो कर एक नवाब से निकाह पढ़वा लिया। आज़ाद ने यह बहुत बुरा किया। जो अपने ऊपर जान दे, उसके साथ ऐसी बेवफाई न करनी चाहिए।

आज़ाद — हमने सुना है कि आज़ाद उन्हें भठियारी समझ कर निकल भागे।

महरी — अगर आप कुछ दिलवाएँ तो मैं बीड़ा उठाती हूँ कि एक नजर अच्छी तरह दिखा दूँगी।

आज़ाद — मंजूर, मगर बेईमानी की सनद नहीं।

महरी — क्या मजाल, इनाम पीछे दीजिएगा, पहले एक कौड़ी भी न लूँगी।

महरी ने आज़ाद से यहाँ का सारा कच्चा चिट्ठा कह सुनाया — मियाँ, यह बुढ़िया जितनी ऊपर है, उतनी ही नीचे है, इसके काटे का मंत्र नहीं। पर आज़ाद को सुरैया बेगम की धुन थी। पूछा — भला उनका मकान हम देख सकते हैं?

महरी — जी हाँ, यह क्या सामने है।

आज़ाद — और यह जितनी यहाँ हैं, सब इसी फैशन की होंगी?

महरी — किसी को चुरा लाई है, किसी को मोल लिया है, बस कुछ पूछिए न?

इतने में किसी ने सीटी बजाई और महरी फौरन उधर चली गई। थोड़ी ही देर में कुन्दन आई और कहा – ऐं, यहाँ तुम बैठे हो, तौबा तौबा, मगर लड़कियों को (महरी को पुकार कर) क्या करूँ, इतनी शरमीली हैं कि जिसकी कोई हद ही नहीं। ऐ, उनको बुलाओ, कहो, यहाँ आकर बैठें। यह क्या बात है? जैसे कोई काटे खाता है!

यह सुनते ही सनम छम-छम करती हुई आई। आज़ाद ने देखा तो होश उड़ गए, इस मरतबा गजब का निखार था। आज़ाद अपने दिल में सोचे कि यह सूरत और यह पेशा! ठान ली कि किसी मौके पर जिले के हाकिम को जरूर लाएँगे और उनसे कहेंगे कि खुदा के लिए इन परियों को इस मक्कार औरत से बचाओ।

कुन्दन ने सनम के हाथ में एक पंखा दे दिया और झेलने को कहा। फिर आज़ाद से बोली – अगर किसी चीज की जरूरत हो तो बयान कर दो।

आज़ाद – इस वक़्त दिल वह मजे लूट रहा है जो बयान के बाहर है।

कुन्दन – मेरे यहाँ सफाई का बहुत इंतजाम है।

आज़ाद – आपके कहने की जरूरत नहीं।

कुन्दन — यह जितनी हैं सब एक से एक बढ़ी हुई हैं।

आज़ाद — इनके शौहर भी इन्हीं के से हों तो बात है।

कुन्दन — इसमें किसी के सिखाने की जरूरत नहीं। मैं इनके लिए ऐसे लोगों को चुनूँगी जिनका कहीं सानी न हो। इनको खिलाया, पिलाया, गाना सिखाया, अब इन पर जुल्म कैसे बरदाश्त करूँगी?

आज़ाद — और तो और, मगर इनको तो आपने खूब ही सिखाया।

कुन्दन — अपना-अपना दिल है, मेरी निगाह में तो सब बराबर, आप दो-चार दिन यहाँ रहें, अगर इनकी तबीयत ने मंजूर किया तो इनके साथ आपका निकाह कर दूँगी, बस अब तो खुश हुए।

महरी — वह शर्तें तो बता दीजिए!

कुन्दन — खबरदार, बीच में न बोल उठा करो, समझीं?

महरी — हाँ हुजूर, खता हुई।

आज़ाद — फिर अब तो शर्तें बयान ही कर दीजिए न।

कुन्दन — इतमीनान के साथ बयान करूँगी।

आज़ाद — (सनम से) तुमने तो हमें अपना गुलाम ही बना लिया।

सनम ने कोई जवाब न दिया।

आज़ाद – अब इनसे क्या कोई बात करे –

गवारा नहीं है जिन्हें बात करना,
सुनेंगे वह काहे को किस्सा हमारा।

कुन्दन – ऐ हाँ, यह तुममें क्या ऐब है? बातें करो बेटा!

सनम – अम्माँजान, कोई बात हो तो क्या मुजायका और यों ख़्वाहमख़्वाह एक अजनबी से बातें करना कौन सी दानाई है।

कुन्दन – खुदा को गवाह करके कहती हूँ कि यह सबकी सब बड़ी शरमीली हैं।

आज़ाद को इस वक़्त याद आया कि एक दोस्त से मिलने जाना है, इसलिए कुन्दन से रुखसत माँगी और कहा कि आज माफ कीजिए, कल हाजिर होऊँगा, मगर अकेले आऊँ, या दोस्तों को भी साथ लेता आऊँ? कुन्दन ने खाना खाने के लिए बहुत जिद की मगर आज़ाद ने न माना।

आज़ाद ने अभी बाग के बाहर भी कदम नहीं रखा था कि महरी दौड़ी आई और कहा – हुजूर को बीबी बुलाती हैं। आज़ाद अन्दर गए तो क्या देखते हैं कि कुन्दन के पास सनम और

उसकी सहेली के सिवा एक और कामिनी बैठी हुई है जो आन-बान में उन दोनों से बढ़ कर है।

कुन्दन — यह एक जगह गई हुई थीं, अभी डोली से उतरी हैं। मैंने कहा, तुमको जरी दिखा दूँ कि मेरा घर सचमुच परिस्तान है, मगर बदी करीब नहीं आने पाती।

आज़ाद — बेशक, बदी का यहाँ जिक्र ही क्या है?

कुन्दन — सबसे मिल जुल के चलना और किसी का दिल न दुखाना मेरा उसूल है, मुझे आज तक किसी ने किसी से लड़ते न देखा होगा।

आज़ाद — यह तो सबों से बढ़-चढ़ कर हैं।

कुन्दन — बेटा, सभी घर गृहस्थ की बहू-बेटियाँ हैं, कहीं आए न जाएँ, न किसी से हँसी, न दिल्लगी।

आज़ाद — बेशक, हमें आपके यहाँ का करीना बहुत पसंद आया।

कुन्दन — बोलो बेटा, मुँह से कुछ बोलो, देखो, एक शरीफ आदमी बैठे हैं और तुम न बोलती हो न चालती हो।

परी — क्या करूँ, आप ही आप बकूँ?

कुन्दन — हाँ यह भी ठीक है, वह तुम्हारी तरफ मुँह करके बात-चीत करें तब बोलो। लीजिए साहब, अब तो आप ही का कुसूर ठहरा।

आज़ाद — भला सुनिए तो, मेहमानों की खातिरदारी भी कोई चीज है या नहीं?

कुन्दन — हाँ, यह भी ठीक है, अब बताओ बेटा?

परी — अम्माँजान, हम तो सबके मेहमान हैं, हमारी जगह सबके दिल में है, हम भला किसी की खातिरदारी क्यों करें?

कुन्दन — अब फर्माइए हजरत, जवाब पाया।

आज़ाद — वह जवाब पाया कि लाजवाब हो गया। खैर साहब, खातिरदारी न सही, कुछ गुस्सा ही कीजिए।

परी — उसके लिए भी किस्मत चाहिए।

मियाँ आज़ाद बडे बोलक्कड़ थे, मगर इस वक़्त सिट्टी-पिट्टी भूल गए।

कुन्दन — अब कुछ कहिए, चुप क्यों बैठे हैं?

परी — अम्माँजान, आपकी तालीम ऐसी-वैसी नहीं है कि हम बन्द रहें।

कुन्दन — मगर मियाँ साहब की कलई खुल गई। अरे कुछ तो फर्माइए हजरत —

कुछ तो कहिए कि लोग कहते हैं —
आज 'गालिब' गजलसरा न हुआ।

आज़ाद — आप शेर भी कहती हैं?

नूर — ऐ वाह, ऐसे घबड़ाए कि 'गालिब' का तख़ल्लुस मौजूद है और आप पूछते हैं कि आप शेर भी कहती हैं?

परी — आदमी में हवास ही हवास तो है, और है क्या?

सनम — हम जो गरदन झुकाए बैठे थे तो आप बहुत शेर थे, मगर अब होश उड़े हुए हैं।

सहेली — तुम पर रीझे हुए हैं बहन, देखती हो, किन आँखों से घूर रहे हैं।

परी — ऐ हटो भी, एड़ी-चोटी पर कुरबान कर दूँ।

आज़ाद — या खुदा, अब हम ऐसे गए गुजरे हो गए?

परी — और आप अपने को समझे क्या हैं!

कुन्दन — यह हम न मानेंगे, हँसी-दिल्लगी और बात है, मगर यह भी लाख दो लाख में एक हैं।

परी — अब अम्माँजान कब तक तारीफ किया करेंगी।

आज़ाद — फिर जो तारीफ के काबिल होता है उसकी तारीफ होती ही है।

नूर — उँह-उँह, घर की पुटकी बासी साग।

आज़ाद — जलन होगी कि इनकी तारीफ क्यों की।

नूर — यहाँ तारीफ की परवा नहीं।

कुन्दन — यह तो खूब कही, अब इसका जवाब दीजिए।

आज़ाद — हसीनों को किसी की तारीफ कब पसंद आती है?

नूर — भला खैर, आप इस काबिल तो हुए कि आपके हुस्न से लोगों के दिल में जलन होने लगी।

कुन्दन — (सनम से) तुमने इनको कुछ सुनाया नहीं बेटा?

सनम — हम क्या कुछ इनके नौकर हैं?

आज़ाद — खुदा के लिए कोई फड़कती हुई गजल गाओ; बल्कि अगर कुन्दन साहब का हुक्म हो तो सब मिल कर गाएँ।

सनम — हुक्म, हुक्म तो हम बादशाह-वजीर का न मानेंगे।

परी — अब इसी बात पर जो कोई गाए।

कुन्दन — अच्छा, हुक्म कहा तो क्या गुनाह किया, कितनी ढीठ लड़कियाँ हैं कि नाक पर मक्खी नहीं बैठने देतीं।

सनम — अच्छा बहन, आओ, मिल-मिल कर गाएँ —

ऐ इश्के कमर दिल का जलाना नहीं अच्छा।

परी — यह कहाँ से बूढ़ी गजल निकाली? यह गजल गाओ —

गया यार आफत पड़ी इस शहर पर;
उदासी बरसने लगी बाम व दर पर।
सबा ने भरी दिन को एक आप ठंडी;
कयामत हुई या दिले नौहागर पर।
मेरे भावे गुलशन को आतश लगी है;
नजर क्या पड़े खाक गुलहाय तर पर।
कोई देव था या कि जिन था वह काफिर;
मुझे गुस्सा आता है पिछले पहर पर।

एकाएक किसी ने बाहर से आवाज दी। कुन्दन ने दरवाजे पर जा कर कहा — कौन साहब हैं?

सिपाही — दारोगा जी आए हैं, दरवाजा खोल दो।

कुन्दन — ऐ तो यहाँ किसके पास तशरीफ लाए हैं?

सिपाही — कुन्दन कुटनी के यहाँ आए हैं। यही मकान है या और?

दूसरा सिपाही — हाँ-हाँ, जी, यही है, हमसे पूछो।

इधर कुन्दन पुलिसवालों से बातें करती थी, उधर आज़ाद तीनों औरतों के साथ बाग में चले गए और दरवाजा बन्द कर दिया।

आज़ाद — यह माजरा क्या है भई?

सनम — दौड़ आई है मियाँ, दरवाजा, बन्द करने से क्या होगा, कोई तदबीर ऐसी बताओ कि इस घर से निकल भागें।

परी — हमें यहाँ एक दम का रहना पसंद नहीं।

आज़ाद — किसी के साथ शादी क्यों नहीं कर लेती?

नूर — ऐ है! यह क्या गजब करते हो, आहिस्ता से बोलो।

आज़ाद — आखिर यह दौड़ क्यों आई है, हम भी तो सुनें।

सनम — कल एक भलेमानस आए थे। उनके पास एक सोने की घड़ी, सोने की जंजीर, एक बेग, पाँच अशर्फियाँ और कुछ रुपए थे। यह भाँप गई। उसको शराब पिला कर सारी चीजें उड़ा दीं। सुबह को जब उसने अपनी चीजों की तलाश की तो धमकाया कि टर्राओगे तो पुलिस को इत्तला कर दूँगी। वह

बेचारा सीधा-सादा आदमी, चुपचाप चला गया और दारोगा से शिकायत की, अब वह दौड़ आई है।

आज़ाद — अच्छा! यह हथकंडे हैं।

सनम — कुछ पूछो न, जान अजाब में है।

नूर — अब खुदा ही जाने, किस-किस का नाश वह करेगी, क्या आग लगाएगी।

सनम — अजी, वह किसी से दबने वाली नहीं है।

परी — वह न दबेंगी साहब तक से, यह दारोगा लिए फिरती हैं!

सनम — जरी सुनो तो क्या हो रहा है।

आज़ाद ने दरवाजे के पास से कान लगा कर सुना तो मालूम हुआ कि बीबी कुन्दन पुलिसवालों से बहर कर रही हैं कि तुम मेरे घर भर की तलाशी लो। मगर याद रखना, कल ही तो नालिश करूँगी। मुझे अकेली औरत समझ के धमका लिया है। मैं अदालत चढूँगी। लेना एक न देना दो, उस पर यह अंधेर! मैं साहब से कहूँगी कि इसकी नियत खराब है, यह रिआया को दिक करता है और पराई बहू-बेटी को ताकता है।

सनम — सुनती हो, कैसा डाँट रही है पुलिसवालों को।

परी — चुपचाप, ऐसा न हो, सब इधर आ जायँ।

उधर कुन्दन ने मुसाफिर को कोसना शुरू किया — अल्लाह करे, इस अठवारे में इसका जनाजा निकले। मुए ने आ के मेरी जान अजाब में कर दी। मैंने तो गरीब मुसाफिर समझ कर टिका लिया था। मुआ उलटा लिए पड़ता है।

मुसाफिर — दारोगा जी, इस औरत ने सैकड़ों का माल मारा है।

सिपाही — हुजूर, यह पहले गुलाम हुसैन के पुल पर रहती थी। वहाँ एक अहीरिन की लड़की को फुसला कर घर लाई और उसी दिन मकान बदल दिया। अहीर ने थाने पर रपट लिखवाई। हम जो जाते हैं तो मकान में ताला पड़ा हुआ, बहुत तलाश की, पता न मिला। खुदा जाने, लड़की किसी के हाथ बेच डाली या मर गई।

कुन्दन — हाँ-हाँ, बेच डाली, यही तो हमारा पेशा है।

दारोगा — (मुसाफिर से) क्यों हजरत, जब आपको मालूम था कि यह कुटनी है तो आप इसके यहाँ टिके क्यों?

मुसाफिर — बेधा था, और क्या, दो-ढाई सौ पर पानी फिर गया, मगर शुक्र है कि मार नहीं डाला।

कुन्दन — जी हाँ, साफ बच गए।

दारोगा — (कुन्दन से) तू जरा भी नहीं शरमाती?

कुन्दन — शरमाऊँ क्यों? क्या चोरी की है?

दारोगा — बस, खैरियत इसी में है कि इनका माल इनके हवाले कर दो।

कुन्दन — देखिए, अब किसी दूसरे घर का डाका डालूँ तो इनके रुपए मिलें।

सिपाही — हुजूर, इसे पकड़ के थाने ले चलिए, इस तरह यह न मानेगी?

कुन्दन — थाने मैं क्यों जाऊँ? क्या इज्जत बेचनी है! यह न समझना कि अकेली है। अभी अपने दामाद को बुला दूँ तो आँखें खुल जायँ।

यह सुनते ही आज़ाद के होश उड़ गए। बोले, इस मुरदार को सूझी क्या।

महरी — जरा दरवाजा खोलिए।

आज़ाद — खुदा की मार तुझ पर।

कुन्दन — ऐ बेटा, जरी इधर आओ। मर्द की सूरत देख कर शायद यह लोग इतना जुल्म न करें।

दारोगा — अख्खाह, क्या तोप साथ है? हम सरकारी आदमी और तुम्हारे दामाद से दब जायँ! अब तो बताओ, इनके रुपए मिलेंगे या नहीं?

कुन्दन एक सिपाही को अलग ले गई और कहा — मैं इसी वक़्त दारोगा जी को इस शर्त पर सत्तर रुपए देती हूँ कि वह इस मामले को दबा दें। अगर तुम यह काम पूरा कर दो तो दस रुपया तुम्हें भी दूँगी।

दारोगा ने देखा कि यह मक्कार औरत झाँसा देना चाहती है तो उसे साथ ले कर थाने चले गए।

आज़ाद — बड़ी बला इस वक़्त टली। औरत क्या, सचमुच बला है।

सनम — आपको अभी इससे कहाँ साबिका पड़ा है।

आज़ाद — मैं तो इतने ही में ऊब उठा।

सनम — अभी यह न समझना कि बला टल गई हम सब बाँधे जायँगे।

आज़ाद — जरा इस शरारत को तो देखो कि मुझे थानेदार से लड़वाए देती थी।

सनम — खुश तो न होंगे कि दामाद बना दिया।

आज़ाद — हम ऐसी सास से बाज आए।

सनम — इस गली से कोई आदमी बिना लुटे नहीं जा सकता। एक औरत को तो इसने जहर दिलवा दिया था।

नूर — पड़ोसिन से कोई जा कर कह दे कि तुम अपनी लड़की का क्यों सत्यानाश करती हो। जो कुछ रूखा-सूखा अल्लाह दे वह खाओ और पड़ी रहो।

महरी — हाँ और क्या, ऐसे पोलाव से दाल-दलिया ही अच्छी।

सनम — बस जाके बुला लाओ तो यह समझा दें हीले से।

महरी जा कर पड़ोसिन को बुला लाई। आज़ाद ने कहा — तुम्हारी पड़ोसिन को तो सिपाही ले गए। अब यह मकान हमें सौंप गई हैं।

पड़ोसिन ने हँस कर कहा — मियाँ, उनको सिपाही ले जा कर क्या करेंगे? आज गई हैं, कल छूट आएँगी?

इतने में एक आदमी ने दरवाजे पर हाथ मारा। महरी ने दरवाजा खोला तो एक बूढ़े मियाँ दिखाई दिए। पूछा — बी कुन्दन कहाँ हैं?

महरी ने कहा — उनको थाने के लोग ले गए।

सनम — एक सिरे से इतने मुकदमे, एक, दो, तीन।

नूर — हर रोज एक नया पंछी फाँसती है।

बूढ़े मियाँ — बस, अब प्याला भर गया।

सनम — रोज तो यही सुनती हूँ कि प्याला भर गया।

बूढ़े मियाँ — अब मौका पाके तुम सब कहीं चल क्यों नहीं देती हो? अब इस वक़्त तो वह नहीं है।

सनम — जायँ तो बे सोचे-समझे कहाँ जायँ।

आज़ाद — बस इसी इत्तिफ़ाक़ को हम लोग किस्मत कहते हैं और इसी का नाम अकबाल है।

बूढ़े मियाँ — जी हाँ, आप तो नए आए हैं, यह औरत खुदा जाने, कितने घर तबाह कर चुकी है। पुलिस में भी गिरफ्तार हुई। मजिस्ट्रेटी भी गई। सब कुछ हुआ, सजा पाई, मगर कोई नहीं पूछता। मैं तो यहाँ तक कहता हूँ कि इनमें से जिसका जी चाहे, मेरे साथ चली चले। किसी शरीफ के साथ निकाह पढ़वा दूँगा, मगर कोई राजी नहीं होती।

एकाएक किसी ने फिर दरवाजे पर आवाज दी, महरी ने दरवाजा खोला तो मम्मन और गुलबाज अन्दर दाखिल हुए। दोनों ढाटे बाँधे हुए थे। महरी उन्हें इशारे से बुला कर बाग में ले गई।

मम्मन — कुन्दन कहाँ हैं?

महरी — वह तो आज बड़ी मुसीबत में फँस गई। पुलिसवाले पकड़ ले गए।

मम्मन — हम तो आज और ही मनसूबे बाँध कर आए थे। वह जो महाजन गली में रहते हैं, उनकी बहू अजमेर से आई है।

महरी — हाँ, मेरा जाना हुआ है। बहुत से रुपए लाई है।

गुलबाज — महाजन गंगा नहाने गया है। परसों तक आ जाएगा। हमने कई आदमियों से कह दिया था। सब के सब आते होंगे।

मम्मन — कुन्दन नहीं हैं, न सही! हम अपने काम से क्यों गाफिल रहें। आओ एक-आध चक्कर लगाएँ।

इतने में बाग के दरवाजे की तरफ सीटी की आवाज आई। गुलबाज ने दरवाजा खोल दिया और बोला — कौन है, दिलवर?

दिलवर — बस अब देर न करो। वक़्त जाता है भाई।

गुलबाज — अरे यार, आज तो मामला हुच गया।

दिलवर — ऐ, ऐसा न कहो। दो लाख नकद रखा हुआ है। इसमें एक भी कम हो, तो जो जुर्माना कहो दूँ।

मम्मन — अच्छा, तो कहीं भागा जाता है?

दिलवर — यह क्या जरूरी है कि कुन्दन जरूरी ही हो।

मम्मन — भाईजान, एक कुन्दन के न होने से कहीं यार लोग चूकते हैं? और भी कई सबब हैं।

दिलवर — ऐसे मामले में इतनी सुस्ती!

मम्मन — यह सारा कुसूर गुलबाज का है। चंडूखाने में पड़े छींटे उड़ाया किए, और सारा खेल बिगाड़ दिया।

दिलवर — आज तक इस मामले में ऐसे लौंडे नहीं बने थे। वह दिन याद है कि जब जहूरन की गली में छुरी चली थी?

गुलबाज — मैं उन दिन कहाँ था?

दिलवर — हाँ, तुम तो मुर्शिदाबाद चले गए थे। और यहाँ जहूरन ने हमें इत्तला दी कि सुल्तान मिर्जा चल बसे। सुल्तान मिर्जा के मुहल्ले में सब मोटे रुपए वाले, मगर उनके मारे किसी की हिम्मत न पड़ती थी कि उनके मुहल्ले में जाय।

मम्मन — वह तो इस फन का उस्ताद था।

दिलवर — बस जनाब, इधर सुल्तान मिर्जा मरे, उधर जहूरन ने हमें बुलवाया। हम लोग जा पहुँचे। अब सुनिए कि जिस तरफ जाते हैं, कोई गा रहा है, कोई घर ऐसा नहीं, जहाँ रोशनी और जाग न हो।

मम्मन — किसी ने पहले से मुहल्ले वालों को होशियार कर दिया होगा।

दिलवर — जी हाँ, सुनते तो जाइए। पीछे खुला न। हुआ यह कि जिस वक़्त हम लोगों ने जहूरन के दरवाजे पर आवाज दी, तो उनकी मामा ने पड़ोस के मकान में कंकरी फेंकी। उस पड़ोसी ने दूसरे मकान में। इस तरह मुहल्ले भर में खबर हो गई।

यहाँ तो ये बातें हो रही थीं, उधर बूढ़े मियाँ और आज़ाद में कुन्दन को सजा दिलाने के लिए सलाहें होती थीं -

आज़ाद — जिन-जिन लड़कियों को इसने चोरी से बेच लिया है, उन सबों का पता लगाइए।

बूढ़े मियाँ — अजी, एक-दो हों, तो पता लगाऊँ। यहाँ तो शुमार ही नहीं।

आज़ाद — मैं आज ही हाकिम जिला से इसका जिक्र करूँगा।

इन लोगों से रुखसत हो कर आज़ाद मजिस्ट्रेट के बँगले पर आए। पहले अपने कमरे में जा कर मुँह-हाथ धोया, और कपड़े बदल कर उस कमरे में गए, जहाँ साहब मेहमानों के साथ डिनर खाने बैठे थे। अभी खाना चुना ही जा रहा था कि आज़ाद कमरे

में दाखिल हुए। आप शाम को आने का वादा करके गए थे। 9 बजे पहुँचे तो सबने मिल कर कहकहा लगाया।

मेम — क्यों साहब, आपके यहाँ अब शाम हुई?

साहब — बड़ी देर से आपका इंतजार था।

मीडा — कहीं शादी तो नहीं तय कर आए?

साहब — हाँ, देर होने से तो हम सबको यही शक हुआ था।

मेम — जब तक आप देर की वजह न बताएँगे, यह शक न दूर होगा। आप लोगों में तो चार शादियाँ हो सकती हैं।

क्लारिसा — आप चुप क्यों हैं, कोई बहाना सोच रहे हैं?

आज़ाद — अब मैं क्या बयान करूँ। यहाँ तो सब लाल-बुझक्कड़ ही बैठे हैं। कोई चेहरे से ताड़ जाता है, कोई आँखों से पहचान लेता है; मगर इस वक़्त मैं जहाँ था, वहाँ खुदा किसी को न ले जाय।

साहब — जुवारियों का अड्डा तो नहीं था?

आज़ाद- नहीं वह और ही मामला था। इतमीनान से कहूँगा।

लोग खाना खाने लगे। साहब के बहुत जोर देने पर भी आज़ाद ने शराब न पी। खाना हो जाने पर लेड़ियों ने गाना शुरू किया

और साहब भी शरीक हुए। उसके बाद उन्होंने आज़ाद से कुछ गाने को कहा -

आज़ाद — आपको इसमें क्या लुत्फ आएगा?

मेम — नहीं, हम हिंदुस्तानी गाना पसंद करते हैं, मगर जो समझ में आए। आज़ाद ने बहुत हीला किया, मगर साहब ने एक न माना। आखिर मजबूर हो कर यह गजल गाई —

जान से जाती हैं क्या-क्या हसरतें;
काश वह भी दिल में आना छोड़ दे।
'दाग' से मेरे जहन्नुम को मिसाल;
तू भी वायज दिल जलाना छोड़ दे।
परदे की कुछ हद भी है परदानशीं;
खुल के मिल बस मुँह छिपाना छोड़ दे।

मेम — हम कुछ-कुछ समझे। वह जहन्नुम का शेर अच्छा है।

साहब — हम तो कुछ नहीं समझे। मगर कानों को अच्छा मालूम हुआ।

दूसरे दिन आज़ाद तड़के कुन्दन के मकान पर पहुँचे और महरी से बोले — क्यों भाई, तुम सुरैया बेगम को किसी तरह दिखा सकती हो?

महरी — भला मैं कैसे दिखा दूँ? अब तो मेरी वहाँ पहुँच ही नहीं!

आज़ाद — खुदा गवाह है, फकत एक नजर भर देखना चाहता हूँ।

महरी — खैर, अब आप कहते ही हैं तो कोशिश करूँगी। और आज ही शाम को यहीं चले आइएगा।

आज़ाद — खुदा तुमको सलामत रखे, बड़ा काम निकलेगा।

महरी — ऐ मियाँ, मैं लौंडी हूँ। तब भी तुम्हारा ही नमक खाती थी, और अब भी...।

आज़ाद — अच्छा, इतना बता दो कि किस तरकीब से मिलूँगा?

महरी — यहाँ एक शाह साहब रहते हैं। सुरैया बेगम उनकी मुरीद हैं। उनके मियाँ ने भी हुक्म दे दिया है कि जब उनका जी चाहे, शाह साहब के यहाँ जायँ। शाह जी का सिन कोई दो सौ बरस का होगा। और हुजूर, जो वह कह देते हैं, वही होता है। क्या मजाल जो फरक पड़े।

आज़ाद — हाँ साहब, फकीर हैं, नहीं तो दुनिया कायम कैसे है!

महरी — मैं शाह जी को एक और जगह भेज दूँगी। आप उनकी जगह जाके बैठ जाइएगा। शाह साहब की तरफ कोई आँख उठा कर नहीं देख सकता।

इसलिए आपको यह खौफ भी नहीं है कि सुरैया बेगम पहचान जाएँगी।

आज़ाद — बड़ा एहसान होगा। उम्र भर न भूलूँगा। अच्छा, तो शाम को आऊँगा।

शाम को आज़ाद कुन्दन के घर पहुँच गए। महरी ने कहा — लीजिए, मुबारक हो। सब मामला चौकस है।

आज़ाद — जहाँ तुम हो, वहाँ किस बात की कमी। तुमसे आज मुलाकात हुई थी? हमारा जिक्र तो नहीं आया? हमसे नाराज तो नहीं हैं?

महरी — ऐ हुजूर, अब तक रोती हैं। अकसर फरमाती हैं कि जब आज़ाद सुनेंगे कि उसने एक अमीर के साथ निकाह कर लिया, तो अपने दिल में क्या कहेंगे?

शाह साहब शहर के बाहर एक इमली के पेड़ के नीचे रहते थे। महरी आज़ाद को वहाँ ले गई और दरख्त के नीचे वाली कोठरी में बैठा कर बोली — आप यहीं बैठिए, बेगम साहब अब आती ही होंगी। जब वह आँख बन्द करके नजर दिखाएँ तो ले लीजिएगा। फिर आपमें और उनमें खुद ही बातें होंगी।

आज़ाद — ऐसा न हो कि मुझे देख कर डर जायँ।

महरी — जी नहीं, दिल की मजबूत हैं। वनों-जंगलों में फिर आई हैं।

इतने में किसी आदमी के गाने की आवाज आई।

बुते-जालिम नहीं सुनता किसी की;
गरीबों का खुदा फरियाद-रस है।

आज़ाद — यह इस वक़्त इस वीराने में कौन गा रहा है?

महरी — सिड़ी है। खबर पाई होगी कि आज यहाँ आनेवाली हैं।

आज़ाद — बाबा साहब को इसका हाल मालूम है या नहीं?

महरी — सभी जानते हैं। दिन-रात यों ही बका करता है; और कोई काम ही नहीं।

आज़ाद — भला यह तो बताओ कि सुरैया बेगम के साथ कौन-कौन होगा?

महरी — दो-एक महरियाँ होंगी, मौलाई बेगम होंगी और दस-बारह सिपाही।

आज़ाद — महरियाँ अन्दर साथ आएँगी या बाहर ही रहेंगी?

महरी — इस कमरे में कोई नहीं आ सकता।

इतने में सुरैया बेगम की सवारी दरवाजे पर आ पहुँची। आज़ाद का दिल धक-धक करता था। कुछ तो इस बात की खुशी थी कि मुद्दत के बाद अलारक्खी को देखेंगे और कुछ इस बात का खयाल कि कहीं परदा न खुल जाय।

आज़ाद – जरा देखो, पालकी से उतरीं या नहीं।

महरी – बाग में टहल रही हैं। मौलाई बेगम भी हैं। चल के दीवार के पास खड़े हो कर आड़ से देखिए।

आज़ाद – डर मालूम होता है कि कहीं देख न लें।

आखिर आज़ाद से न रहा गया। महरी के साथ आड़ में खड़े हुए तो देखा कि बाग में कई औरतें चमन की सैर कर रही हैं।

महरी – जो जरा भी इनको मालूम हो जाय कि आज़ाद खड़े देख रहे हैं तो खुदा जाने, दिल का क्या हाल हो।

आज़ाद – पुकारूँ? बेअख्तियार जी चाहता है कि पुकारूँ।

इतने में बेगम दीवार के पास आईं और बैठ कर बातें करने लगीं।

सुरैया – इस वक़्त तो गाना सुनने को जी चाहता है।

मौलाई – देखिए, यह सौदाई क्या गा रहा है।

सुरैया — अरे! इस मुए को अब तक मौत न आई? इसे कौन मेरे आने की खबर दे दिया करता है। शाह जी से कहूँगी कि इसको मौत आए।

मौलाई — ऐ नहीं, काहे को मौत आए बेचारे को। मगर आवाज अच्छी है।

सुरैया — आग लगे इसकी आवाज को।

इतने में जोर से पानी बरसने लगा। सब की सब इधर-उधर दौड़ने लगीं। आखिर एक माली ने कहा कि हुजूर, सामने का बँगला खाली कर दिया है, उसमें बैठिए। सब की सब उस बँगले में गईं। जब कुछ देर तक बादल न खुला तो सुरैया बेगम ने कहा — भई, अब तो कुछ खाने को जी चाहता है।

ममोला नाम की एक महरी उनके साथ थी। बोली — शाह जी के यहाँ से कुछ लाऊँ? मगर फकीरों के पास दाल-रोटी के सिवा और क्या होगा।

सुरैया — जाओ, जो कुछ मिले, ले आओ। ऐसा न हो कि वहाँ कोई बेतुकी बात कहने लगो।

महरी ने दुपट्टे को लपेट कर ऊपर से डोली का परदा ओढ़ा। दूसरी महरी ने मशालची को हुक्म दिया कि मशाल जला। आगे-

आगे मशालची, पीछे-पीछे दोनों महरियाँ दरवाजे पर आईं और आवाज दी। आज़ाद और महरी ने समझा कि बेगम साहब आ गईं, मगर दरवाजा खोला तो देखा कि महरियाँ हैं।

महरी — आओ, आओ। क्या बेगम साहब बाग ही में हैं?

ममोला — जी हाँ। मगर एक काम कीजिए। शाह साहब के पास भेजा है। यह बताओ कि इस वक़्त कुछ खाने को है?

महरी ने शाह जी के बावरचीखाने से चार मोटी-मोटी रोटियाँ और एक प्याला मसूर की दाल का ला कर रख दिया। दोनों महरियाँ खाना ले कर बँगले में पहुँचीं तो सुरैया बेगम ने पूछा — कहो, बेटा कि बेटी?

ममोला — हुजूर, फकीरों के दरबार से भला कोई खाली हाथ आता है? लीजिए, वह मोटे-मोटे टिक्कड़ हैं।

मौलाई — इस वक़्त यही गनीमत हैं।

ममोला — बेगम साहब आपसे एक अरज है।

सुरैया — क्या है, कहो तुम्हारी बातों से हमें उलझन होती हैं।

ममोला — हुजूर, जब हम खाना ले के आते थे तो देखा कि बाग के दरवाजे पर एक बेकस, बेगुनाह, बेचारा दबका दबकाया खड़ा भीग रहा है।

सुरैया — फिर तुमने वही पाजीपने की ली न! चलो हटो सामने से।

मौलाई — बहन, खुदा के लिए इतना कह दो कि जहाँ सिपाही बैठे हैं, वहीं उसे भी बुला लें।

सुरैया — फिर मुझसे क्या कहती हो?

सिपाहियों ने दीवाने को बुला कर बैठा लिया। उसने यहाँ आते ही तान लगाई —

पसे फिना हमें गरदूँ सताएगा फिर क्या,
मिटे हुए को यह जालिम मिटाएगा फिर क्या?
जईफ नालादिल उसका हिला नहीं सकता,
यह जाके अर्श का पाया हिलाएगा फिर क्या?
शरीक जो न हुआ एक दम को फूलों में,
वह फूल आ के लेहद के उठाएगा फिर क्या?
खुदा को मानो न बिस्मिल को अपने जबह करो,
तड़प के सैर वह तुमको दिखाएगा फिर क्या?

सुरैया — देखा न। यह कमबख़्त बे गुल मचाए कभी न रहेगा।

मौलाई — बस यही तो इसमें ऐब है। मगर गजल भी ढूँढ़ के अपने ही मतलब की कही है।

सुरैया — कमबख्त बदनाम करता फिरता है।

दोनों बेगमों ने हाथ धोया। उस वक़्त वहाँ मसूर की दाल और रोटी पोलाव और कोरमे को मात करती थी। उस पर माली ने कैथे की चटनी तैयार कराके महरी के हाथ भेजवा दी। इस वक़्त इस चटनी ने वह मजा दिया कि कोई सुरैया बेगम की जबान से सुने।

मौलाई — माली ने इनाम का काम किया है इस वक़्त।

सुरैया — इसमें क्या शक। पाँच रुपए इनाम दे दो।

जब खुदा खुदा करके मेंह थमा और चाँदनी निखरी तो सुरैया बेगम ने महरी भेजी कि शाह जी का हुक्म हो तो हम हाजिर हों। वहाँ महरी ने कहा — हाँ, शौक से आएँ; पूछने की क्या जरूरत है।

सुरैया बेगम ने आँखें बन्द कीं और शाह जी के पास गईं। आज़ाद ने उन्हें देखा तो दिल का अजब हाल हुआ। एक ठंडी साँस निकल आई। सुरैया बेगम घबराईं कि आज शाह साहब ठंडी साँसें क्यों ले रहे हैं। आँखें खोल दीं तो सामने आज़ाद को बैठे देखा। पहले तो समझीं कि आँखों ने धोखा दिया, मगर करीब से गौर करके देखा तो शक दूर हो गया।

उधर आज़ाद की जबान भी बन्द हो गई। लाख चाहा कि दिल का हाल कह सुनाएँ, मगर जबान खोलना मुहाल हो गया। दोनों ने थोड़ी देर तक एक दूसरे को प्यार और हसरत की नजर से देखा, मगर बातें करने की हिम्मत न पड़ी। हाँ, आँखों पर दोनों में से किसी को अख्तियार न था। दोनों की आँखों से टप-टप आँसू गिर रहे थे। एकाएक सुरैया बेगम वहाँ से उठ कर बाहर चली आईं।

ममोला ने पूछा – बेगम साहब, आज इतनी जल्दी क्यों की?

सुरैया – यों ही।

मौलाई – आँखों में आँसू क्यों हैं? शाह साहब से क्या बातें हुई?

सुरैया – कुछ, नहीं बहन, शाह साहब क्या कहते, जी ही तो है।

मौलाई – हाँ, मगर खुशी और रंज के लिए कोई सबब भी तो होता है।

सुरैया – बहन, हमसे इस वक़्त सबब न पूछो। बड़ी लंबी कहानी है।

मौलाई – अच्छा, कुछ करत-ब्योंत करके कह दो।

सुरैया – बहन, बात सारी यह है कि इस वक़्त शाह जी तक ने हमसे चाल की। जो कुछ हमने इस वक़्त देखा, उसके देखने की

तमन्ना बरसों से थी, मगर अब आँखें फेर-फेर के देखने के सिवा और क्या है?

मौलाई — (सुरैया के गले में हाथ डाल कर) क्या, आज़ाद मिल गए क्या?

सुरैया — चुप-चुप! कोई सुन न ले।

मौलाई — आज़ाद इस वक़्त कहाँ से आ गए! हमें भी दिखला दो।

सुरैया — रोकता कौन है। जाके देख लो।

मौलाई बेगम चलीं तो सुरैया बेगम ने इनका हाथ पकड़ लिया और कहा — खबरदार, मेरी तरफ से कोई पैगाम न कहना।

मौलाई बेगम कुछ हिचकती, कुछ झिझकती आकर आज़ाद से बोलीं — शाह जी कभी और भी इस तरफ आए थे?

आज़ाद — हम फकीरों को कहीं आने-जाने से क्या सरोकार। जिधर मौज हुई चल दिए। दिन को सफर, रात को खुदा की याद। हाँ, गम है तो यह कि खुदा को पाएँ।

मौलाई — सुनो शाह जी, आपकी फकीरी को हम खूब जानते हैं। यह सब काँटे आप ही के बोए हुए हैं। और अब आप फकीर

बन कर यहाँ आए हैं। यह बतलाइए कि आपने उन्हें जो इतना परेशान किया तो किस लिए? इससे आपका क्या मतलब था?

आज़ाद — साफ-साफ तो यह है कि हम उनसे फकत दो-दो बातें करना चाहते हैं।

मौलाई — वाह, जब आँखें चार हुईं तब तो कुछ बोले नहीं; और वह बातें हुईं भी तो नतीजा क्या? उनके मिजाज को तो आप जानते हैं। एक बार जिसकी हो गईं, उसकी हो गईं।

आज़ाद — अच्छा, एक नजर तो दिखा दो।

मौलाई — अब यह मुमकिन नहीं। क्यों मुफ्त में अपनी जान को हलकान करोगे।

आज़ाद — तो बिलकुल हाथ धो डालें? अच्छा चलिए, बाग में जरा दूर ही से दिल के फफोले फोड़ें।

मौलाई — वाह-वाह! जब बाग में हों भी।

आज़ाद — अच्छा साहब, लीजिए, सब्र करके बैठे जाते हैं।

मौलाई — मैं जा कर कहती हूँ, मगर उम्मीद नहीं कि मानें।

यह कह कर मौलाई बेगम उठीं और सुरैया बेगम के पास आकर बोलीं — बहन, अल्लाह जानता है, कितना खूबसूरत जवान है।

सुरैया — हमारा जिक्र भी आया था? कुछ कहते थे?

मौलाई — तुम्हारे सिवा और जिक्र ही किसका था? बेचारे बहुत रोते थे। हमारी एक बात इस वक़्त मानोगी? कहूँ?

सुरैया — कुछ मालूम तो हो, क्या कहोगी?

मौलाई — पहले कौल दो, फिर कहेंगे; यों नहीं।

सुरैया — वाह! बे-समझे-बूझे कौल कैसे दे दूँ?

मौलाई — हमारी इतनी खातिर भी न करोगी बहन!

सुरैया — अब क्या जानें, तुम क्या ऊल-जलूल बात कहो।

मौलाई — हम कोई ऐसी बात न कहेंगे जिससे नुकसान हो।

सुरैया — जो बात तुम्हारे दिल में है वह मेरे नाखून में है।

मौलाई — क्या कहना है। आप ऐसी ही हैं।

सुरैया — अच्छा, और सब तों मानेंगे सिवा एक बात के।

मौलाई — वह एक बात कौन सी है, हम सुन तो लें।

सुरैया — जिस तरह तुम छिपाती हो उसी तरह हम भी छिपाते हैं।

मौलाई — अल्लाह को गवाह करके कहती हूँ, रो रहा है। मुझसे हाथ जोड़ कर कहा है कि जिस तरह मुमकिन हो, मुझसे मिला दो। मैं इतना ही चाहता हूँ कि नजर भर कर देख लूँ।

सुरैया — क्या मजाल, ख्वाब तक में सूरत न दिखाऊँ।

मौलाई — मुझे बड़ा तरस आता है।

सुरैया — दुनिया का भी तो खयाल है।

मौलाई — दुनिया से हमें क्या काम? यहाँ ऐसा कौन आता-जाता है। डर काहे का है, चल के जरा देख लो, उसका अरमान तो निकल जाय।

सुरैया — ना, मुमकिन नहीं। अब यहाँ से चलोगी भी या नहीं?

मौलाई — हम तो तब तक न चलेंगे, जब तक तुम हमारा कहना न मानोगी।

सुरैया — सुनो मौलाई बेगम, हर काम का कोई न कोई नतीजा होता है। इसका नतीजा तुम क्या सोची हो?

मौलाई — उनका दिल खुश होगा। इस वक़्त वह आपे में नहीं हैं, मगर जब इस मामले पर गौर करेंगे तो उन्हें जरूर रंज होगा।

दोनों बेगम पालकियों पर बैठ कर रवाना हुई। आज़ाद ने मकान की दीवार से सुरैया बेगम को देखा और ठंडी साँस ली।

108

दूसरे दिन आज़ाद यहाँ से रुखसत हो कर हुस्नआरा से मिलने चले। बात-बात पर बाँछें खिली जाती थीं। दिमाग सातवें आसमान पर था। आज खुदा ने वह दिन दिखाया कि रूस और रूम की मंजिल पूरी करके यार के कूचे में पहुँचे। कहाँ रूस, कहाँ हिंदोस्तान! कहाँ लड़ाई का मैदान, कहाँ हुस्नआरा का मकान! दोनों लेडियों ने उन्हें छेड़ना शुरू किया —

क्लारिसा — आज भला आज़ाद के दिमाग काहे को मिलेंगे।

मीडा — इस वक़्त मारे खुशी के इन्हें बात करना भी मुश्किल है।

आज़ाद — बड़ी मुश्किल है। बोलूँ तो हँसवाऊँ, न बोलूँ तो आवाजें कसे जायँ।

क्लारिसा — क्या इसमें कुछ झूठ भी है? जिसके लिए दुनिया भर की खाक छानी, उससे मिलने का नशा हुआ ही चाहे।

एकाएक कमरे के बाहर से आवाज आई — भला रे गीदी, भला और जरा देर में मियाँ खोजी कमरे में दाखिल हुए।

क्लारिसा — आप इतने दिन तक कहाँ थे ख्वाजा साहब?

खोजी — था कहाँ, जहाँ जाता हूँ वहाँ लोग पीछे पड़ जाते हैं। इतनी दावतें खाईं कि क्या किसी ने खाई होंगी। एक-एक दिन में दो-दो सौ बुलावे आ जाते हैं। अगर न जाऊँ तो लोग कहें, गुरूर करता है। जाऊँ तो इतना वक़्त कहाँ! इसी उधेड़-बुन में पड़ा रहा।

आज़ाद — अब कुछ हमारे भी काम आओ।

खोजी — और दौड़ा आया किस लिए हूँ। कहो, हुस्नआरा को खबर हुई या नहीं? न हुई हो तो पहुँचूँ। मुझसे ज्यादा इस काम के लायक और किसी को न पाओगे। मैं बड़े काम का आदमी हूँ।

आज़ाद — इसमें क्या शक है भाईजान! बेशक हो!

खोजी — तो फिर मैं चलूँ?

आज़ाद — नेकी और पूछ-पूछ?

खोजी जाने वाले ही थे कि एक आदमी होटल की तरफ आता दिखाई दिया। उसकी शक्ल-सूरत बिलकुल खोजी से मिलती थी।

वही नाटा कद, वही काला रंग, वही नन्हे-नन्हे हाथ-पाँव। खोजी का बड़ा भाई मालूम होता था।

आज़ाद — वल्लाह, बिलकुल खोजी ही हैं।

मीडा — बस, इनको छिपाओ, उनको दिखाओ। उनको छिपाओ, इनको दिखाओ। जरा फर्क नहीं।

खोजी — तू कौन है बे? कहाँ चला आता है? कुछ बेधा तो नहीं है? तुझ जैसे मसखरों का यहाँ क्या काम?

मसखरा — कोई हमसे बद के देख ले। बड़ा मर्द हो तो आ जाय।

खोजी — क्या कहता है? बरस पड़ूँ?

मसखरा — जा, अपना काम कर। जो गरजता है, वह बरसता नहीं।

खोजी — बच्चा, तुम्हारी कजा मेरे ही हाथ से है।

मसखरा — माशे-भर का आदमी, बौनों के बराबर कद और चला है मुझे ललकारने!

खोजी — कोई है? लाना तो चंडू की निगाली। ले, आइए!

मसखरा — हम तो जहाँ खड़े थे, वहीं खड़े हैं, शेर कहीं हटा करते हैं। जमे, तो जमे।

खोजी — कजा खेल रही है तेरी। मैं इसको क्या करूँ। अब जो कुछ कहना-सुनना हो, कह-सुन लो; थोड़ी देर में लाश फड़कती होगी।

मसखरा — जरी जबान सँभाले हुए हजरत! ऐसा न हो, मैं गरदन पर सवार हो जाऊँ।

होटल में जितने आदमी थे, उनको शिगूफा हाथ आया। सभी इन बौनों की कुश्ती देखने के लिए बेकरार थे। दोनों को चढ़ाने लगे।

एक — भई, हम सब तो ख्वाजा साहब की तरफ हैं।

दूसरा — हम भी। यह उससे कहीं तगड़े हैं।

तीसरा — कौन? कहीं हो न। इनमें और उसमें बीस और सोलह का फर्क है। बोलो, क्या — क्या बदते हो!

खोजी — जिसका रुपया फालतू हो, वह इसके हाथ पर बदे। जो कुछ बना कर घर ले जाना चाहे, वह हमारे हाथ पर बदे।

मसखरा — एक लपोटे में बोल जाइए तो सही। बात करते-करते पकड़ लाऊँ और चुटकी बजाते चित करूँ,(चुटकी बजा कर) यों-यों!

खोजी — मैं इतनी दूर नहीं लगाने का।

मसखरा — अरे चुप भी रह! यह मुँह खाय चौलाई! एक ऊँगली से वह पेंच बाँधू कि तड़पने लगे -

लिया जिसने हमारा नाम, मारा बेगुनाह उसको।
निशाँ जिसने बनाया, बस, वह तीरों का निशाना था।

आज़ाद — बढ़ गए ख्वाजा साहब, यह आपसे बढ़ गए। अब कोई फड़कता हुआ शेर कहिए तो इज्जत रहे।

खोजी — अजी, इससे अच्छा शेर लीजिए —

तड़पा कर जरा खंजर के तले
सिर अपना दिया शिकवा न किया,
था पासे अदब जो कातिल का
यह भी न हुआ वह भी न हुआ।

मसखरा — ले, अब आ।

खोजी — देख, तेरी कजा आ गई है।

मसखरा — जरा सामने आ। जमीन में सिर खोंस दूँगा।

खोजी — (ताल ठोक कर) अब भी कहा मान, न लड़।

मसखरा — या अली, मदद कर —

कब्र में जिनको न सोना था, सुलाया उनको,
पर मुझे चर्ख सितमगर ने सोने न दिया।

आज़ाद — भई खोजी, शायरी में तुम बिलकुल दब गए।

खोजी जवाब देने ही वाले थे कि इतने में मसखरे ने उनकी गरदन में हाथ डाल दिया। करीब था कि जमीन पर दे पटके कि मियाँ खोजी सँभले और झल्ला के मसखरे की गरदन में दोनों हाथ डाल कर बोले — बस, अब तुम करे

मसखरा — आज तुझे जीता न छोड़ूँगा।

खोजी — देखो, हाथ टूटा तो नालिश कर दूँगा। कुश्ती में हाथा-पाई कैसी?

मसखरा — अपनी बुढ़िया को बुला लाओ। कोई लाश को रोने वाली तो हो तुम्हारी!

खोजी — या तो कत्ल ही करेंगे या तो कत्ल होंगे।

मसखरा — और हम कत्ल ही करके छोड़ेंगे।

ख्वाजा साहब ने एक अंटी बताई तो मसखरा गिरा। साथ ही खोजी भी मुँह के बल जमीन पर आ रहे। अब न यह उठते हैं

न वह। न वह इनकी गरदन छोड़ता है, न यह उसको छोड़ते हैं।

मसखरा — मार डाल, मगर गरदन न छोड़ूँगा।

खोजी — तू गरदन मरोड़ डाल, मगर मैं अधमरा करके छोड़ूँगा। हाय-हाय! गरदन गई! पसलियाँ चर-चर बोल रही हैं!

मसखरा — जो कुछ हो सो हो, कुछ परवा नहीं है।

खोजी — यहाँ किसको परवा है, कोई रोनेवाला भी नहीं है।

अब की खोजी ने गरदन छुड़ा ली; उधर मसखरा भी निकल भागा। दोनों अपनी-अपनी गरदन सहलाने लगे। यार लोगों ने फिर फिकरे चुस्त किए। भई, हम तो खोजी के दम के कायल हैं।

दूसरा बोला — वाह! अगर कच्ची आध घड़ी और कुश्ती रहती तो वह मार लेता।

तीसरे ने कहा — अच्छा, फिर अब की सही। किसी का दम थोड़ टूटा है।

यार लोग तो उनको तैयार करते थे, मगर उनमें दम न था। आधा घंटे तक दोनों हाँफा किए, मगर जबान चली जाती थी।

खोजी — जरा और देर होती तो फिर दिल्लगी देखते।

मसखरा — हाँ, बेशक।

खोजी — तकदीर थी, बच गए, वरना मुँह बिगाड़ देता।

मसखरा — अब तुम इस फिक्र में हो कि मैं फिर उठूँ।

आज़ाद — हुजूर, मैं बे नीचा दिखाए न मानूँगा।

खोजी — (मसखरे की गरदन पकड़ कर) आओ, दिखाओ नीचा।

मसखरा — अबे, तू गरदन तो छोड़ गरदन छोड़ दे हमारी।

खोजी — अब ही हमारा दाँव है!

मसखरा -(थप्पड़ लगा कर) एक-दो।

खोजी — (चपत दे कर) तीन।

फिकरेबाज — सौ तक गिन जाओ यों ही। हाँ, पाँच हुई।

दूसरा — ऐसे-ऐसे जवान और पाँच ही तक गिन के रह गए?

खोजी — (चपत दे कर) छह-छह और नहीं तो। लोग बड़ी देर से छह का इंतजार कर रहे थे।

अब की वह घमासान लड़ाई हुई कि दोनों बेदम हो कर गिर पड़े और रोने लगे।

खोजी — अब मौत करीब है। भई आज़ाद, हमारी कब्र किसी पोस्ते के खत के करीब बनवाना।

मसखरा — और हमारी कब्र शाहफसीह के तकिए में बनवाई जाय जहाँ हमारे वालिद ख्वाजा वलीग दफन हैं।

खोजी — कौन-कौन? इनके वालिद का क्या नाम था?

आज़ाद — ख्वाजा वलीग कहते हैं।

खोजी — (रो कर) अरे भाई, हमें पहचाना? मगर हमारी-तुम्हारी यों ही बदी थी।

मसखरे ने जो इनका नाम सुना तो सिर पीट लिया — भई क्या गजब हुआ! सगा भाई सगे भाई को मारे?

दोनों भाई गले मिल कर रोए। बड़े भाई ने अपना नाम मियाँ रईस बतलाया। बोले — बेटा, तुम मुझसे कोई बीस बरस छोटे हो। तुमने वालिद को अच्छी तरह से नहीं देखा था। बड़ी खूबियों के आदमी थे। हमको रोज दुकान पर ले जाया करते थे?

आज़ाद — काहे की दुकान थी हजरत?

रईस — जी, टाल थी। लकड़ियाँ बेचते थे।

खोजी ने भाई की तरफ घूर कर देखा।

रईस — कुछ दिन कंपू में साहब लोगों के यहाँ खानसामा रहे थे। खोजी ने भाई की तरफ देख कर दाँत पीसा।

आज़ाद — बस हजरत, कलई खुल गई। अब्बाजान खानसामा थे और आप रईस बनते हैं।

आज़ाद चले गए तो दोनों भाइयों में खूब तकरार हुई। मगर थोड़ी ही देर में मेल हो गया और दोनों भाई साथ-साथ शहर की सैर को गए। इधर-उधर मटर-गस्त करके मियाँ रईस तो अपने अड्डे पर गए और खोजी हुस्नआरा बेगम के मकान पर जा पहुँचे। बूढ़े मियाँ बैठे हुक्का पी रहे थे।

खोजी — आदाब अर्ज है। पहचाना या भूल गए?

बूढ़े मियाँ — आप तो कुछ अजीब पागल मालूम होते हैं। जान न पहचान; त्योरियाँ बदलने लगे।

खोजी — अजी, हम तो सुनाएँ बादशाह को, तुम क्या माल हो।

बूढ़े मियाँ — अपने होश में हो या नहीं?

खोजी — कोई महलसरा में हुस्नआरा बेगम को इत्तला दो कि मुसाफिर आए हैं।

बूढ़े मियाँ — (खड़े हो कर) अख्खाह! ख्वाजा साहब तो नहीं हैं आप! माफ कीजिएगा। आइए गले मिल लें।

बूढ़े मियाँ ने आदमी को हुक्म दिया कि हुक्का भर दो, और अन्दर जा कर बोले — लो साहब, खोजी दाखिल हो गए।

चारों बहनें बाग में गईं और चिक की आड़ से खोजी को देखने लगी।

नाजुक अदा — ओ-हो-हो! कैसा ग्रांडील जवान है!

जानी — अल्लाह जानता है, ऐसा जवान नहीं देखने में आया था। ऊँट की तो कोई कल शायद दुरुस्त भी हो, इसकी कोई कल दुरुस्त नहीं। हँसी आती है।

खोजी — इधर-उधर देखने लगे कि यह आवाज कहाँ से आती है। इतने में बूढ़े मियाँ आ गए।

खोजी — हजरत, इस मकान की अजब ख़ासियत है।

बूढ़े मियाँ — क्या-क्या? इस मकान में कोई नई बात आपने देखी है?

खोजी — आवाजें आती हैं। मैं बैठा हुआ था, एक आवाज आई, फिर दूसरी आवाज आई।

बूढ़े मियाँ — आप क्या फरमाते हैं, हमने तो कोई बात ऐसी नहीं देखी।

जानी बेगम की रग-रग में शोखी भरी हुई थी। खोजी को बनाने की एक तरकीब सूझी। बोलीं — एक बात हमें सूझी है। अभी हम किसी से कहेंगे नहीं।

बहार बेगम — हमसे तो कह दो।

जानी ने बहार बेगम के कान में आहिस्ता से कुछ कहा।

बहार — क्या हरज है, बूढ़ा ही तो है।

सिपहआरा — आखिर कुछ कहो तो बाजीजान! हमसे कहने में कुछ हरज है?

बहार — जानी बेगम कह दें तो बता दूँ।

जानी — नहीं, किसे से न कहो।

जानी बेगम और बहार बेगम दोनों उठ कर दूसरे कमरे में चली गईं। यहाँ इन सबको हैरत हो रही थीं कि या खुदा! इन सबों को कौन तरकीब सूझी है, जो इतना छिपा रही हैं। अपनी-अपनी अक्ल दौड़ाने लगीं।

नाजुक — हम समझ गए। अफीमी आदमी है। उसकी डिबिया चुराने की फिक्र होगी।

हुस्नआरा — यह बात नहीं, इसमें चोरी क्या थी?

इतने में बहार बेगम ने आकर कहा — चलो, बाग में चल कर बैठें। ख्वाजा साहब पहले ही से बाग में बैठे हुए थे। एकाएक क्या देखते हैं कि एक गभरू जवान सामने से ऐंठता-अकड़ता चला आता है। अभी मसें भी नहीं भीगीं। जालीलोट का कुरता, उस पर शरबती कटावदार अंगरखा, सिर पर बाँकी पगिया और हाथ में कटार।

हुस्नआरा — यह कौन है अल्लाह? जरा पूछना तो।

सिपहआरा — ओफ्फोह! बाजीजान, पहचानो तो भला।

हुस्नआरा — अरे! बड़ा धोखा दिया।

नाजक — सचमुच! बेशक बड़ा धोखा दिया! ओफ्फोह!

सिपहआरा — मैं तो पहले समझी ही न थी कुछ।

इतने में वह जवान खोजी के करीब आया और यह चकराए कि इस बाग में इसका गुजर कैसे हुआ। उसकी तरफ ताक ही रहे थे कि बहार बेगम ने गुल मचा कर कहा — ऐ! यह कौन मरदुआ बाग में आ गया। ख्वाजा साहब, तुम बैठे देख रहे हो और यह लौंडा भीतर चला आता है! इसे निकाल क्यों नहीं देते हैं?

खोजी – अजी हजरत, आखिर आप कौन साहब हैं? पराए जनाने में घुसे जाते हो, यह माजरा क्या है?

जवान – कुछ तुम्हारी शामत तो नहीं आई है? चुपचाप बैठे रहो।

खोजी – सुनिए साहब, हम और आप दोनों एक ही पेशे के आदमी हैं।

जवान – (बात काट कर) हमने कह दिया, चुप रहो, वरना अभी सिर उड़ा दूँगा। हम हुस्नआरा बेगम के आशिक हैं। सुना है कि आज़ाद यहाँ आए हैं; और हुस्नआरा के पास निकाह का पैगाम भेजने वाले हैं। बस,अब यही धुन है कि उनसे दो-दो हाथ चल जाय।

खोजी – आज़ाद का मुकाबिला तुम क्या खा कर करोगे। उसने लड़ाइयाँ सर की हैं। तुम अभी लौंडे हो।

जवान – तू भी तो उन्हीं का साथी है। क्यों न पहले तेरा ही काम तमाम कर दूँ।

खोजी – (पैंतरे बदल कर) हम किसी से दबनेवाले नहीं हैं।

जवान – आज ही का दिन तेरी मौत का था।

खोजी – (पीछे हट कर) अभी किसी मर्द से पाला नहीं पड़ा है।

जवान — क्यों नाहक गुस्सा दिलाता है। अच्छा, ले सँभल।

जवान ने तलवार घुमाई तो खोजी घबरा कर पीछे हटे और गिर पड़े। बस करौली की याद करने लगे। औरतें तालियाँ बजा-बजा कर हँसने लगीं।

जवान — बस, इसी बिरते पर भूला था?

खोजी — अजी, मैं अपने जोम में आप आ रहा। अभी उठूँ तो कयामत बरपा कर दूँ।

जवान — जा कर आज़ाद से कहना कि होशियार रहें।

खोजी — बहुतों का अरमान निकल गया। उनकी सूरत देख लो, तो बुखार आ जाय।

जवान — अच्छा, कल देखूँगा।

यह कह कर उसने बहार बेगम का हाथ पकड़ा और बेधड़क कोठे पर चढ़ गया। चारों बहनें भी उसके पीछे-पीछे ऊपर चली गईं।

खोजी यहाँ से चले तो दिल में सोचते जाते थे कि आज़ाद से चल कर कहता हूँ, हुस्नआरा के एक और चाहने वाले पैदा हुए हैं। कदम-कदम पर हाँक लगाते थे, घडी दो में मुरलिया बाजेगी। इत्तिफ़ाक़ से रास्ते में उसी होटल का खानसामा मिल गया, जहाँ

आज़ाद ठहरे थे। बोला — अरे भाई! इस वक़्त कहाँ लपके हुए जाते हो? खैर तो है? आज तो आप गरीबों से बात ही नहीं करते।

खोजी — घड़ी दो में मुरलिया बाजेगी।

खानसामा — भई वाह! सारी दुनिया घूम आए, मगर कैंडा वही है। हम समझे थे कि आदमी बन कर आए होंगे।

खोजी — तुम जैसों से बातें करना हमारी शान के खिलाफ है।

खानसामा — हम देखते हैं, वहाँ से तुम और भी गाउदी हो कर आए हो।

थोड़ी देर में आप गिरते-पड़ते होटल में दाखिल हुए और आज़ाद को देखते ही मुँह बना कर सामने खड़े हो गए।

आज़ाद — क्या खबरें लाए?

खोजी — (करौली को दाएँ हाथ से बाएँ हाथ में ले कर) हूँ!!!

आज़ाद — अरे भाई, गए थे वहाँ?

खोजी — (करौली को बाएँ हाथ से दाएँ हाथ में ले कर) हूँ!!

आज़ाद — अरे, कुछ मुँह से बोलो भी तो मियाँ!

खोजी — घड़ी दो में मुरलिया बाजेगी।

आज़ाद — क्या? कुछ सनक तो नहीं गए! मैं पूछता हूँ, हुस्नआरा बेगम के यहाँ गए थे? किसी से मुलाकात हुई? क्या रंग-ढंग है।

खोजी — वहाँ नहीं गए थे तो क्या जहन्नुम में गए थे? मगर कुछ दाल में काला है।

आज़ाद — भाई साहब, हम नहीं समझे। साफ-साफ कहो, क्या बात हुई? क्यों उलझन में डालते हो।

खोजी — अब वहाँ आपकी दाल नहीं गलने की।

आज़ाद — क्या? कैसी दाल? यह बकते क्या हो?

खोजी — बकता नहीं, सच कहता हूँ।

आज़ाद — खोजी, अगर साफ-साफ न बयान करोगे तो इस वक़्त बुरी ठहरेगी।

खोजी — उलटे मुझी को डाँटते हो। मैंने क्या बिगाड़ा?

आज़ाद — वहाँ का मुफस्सल हाल क्यों नहीं बयान करते?

खोजी — तो जनाब, साफ-साफ यह है कि हुस्नआरा बेगम के एक और चाहने वाले पैदा हुए हैं। हुस्नआरा बेगम और उनकी बहनें बाग के बँगले में बैठी थीं कि एक जवान अन्दर आ पहुँचा और मुझे देखते ही गुस्से से लाल हो गया।

आज़ाद – कोई खूबसूरत आदमी है?

खोजी – निहायत हसीन, और कमसिन।

आज़ाद – इसमें कुछ भेद है जरूर। तुम्हें उल्लू बनाने के लिए शायद दिल्लगी की हो। मगर हमें इसका यकीन नहीं आता।

खोजी – यकीन तो हमें भी मरते दम तक नहीं आता, मगर वहाँ तो उसे देखते ही कहकहे पड़ने लगे।

अब उधर का हाल सुनिए। सिपहआरा ने कहा – अब दिल्लगी हो कि वह जा कर आज़ाद से सारा किस्सा कहे।

हुस्नआरा – आज़ाद ऐसे कच्चे नहीं हैं।

सिपहआरा – खुदा जाने, वह सिड़ी वहाँ जा कर क्या बके। आज़ाद को चाहे पहले यकीन न आए, लेकिन जब वह कसमें खा कर कहने लगेगा तो उनको जरूर शक हो जायगा।

हुस्नआरा – हाँ, शक हो सकता है, मगर क्या क्या जाय। क्यों न किसी को भेज कर खोजी को होटल से बुलवाओ। जो आदमी बुलाने जाय वह हँसी-हँसी में आज़ाद से यह बात कह दे।

हुस्नआरा की सलाह से बूढ़े मियाँ आज़ाद के पास पहुँचे, और बड़े तपाक से मिलने के बाद बोले – वह आपके मियाँ खोजी कहाँ हैं? जरा उनको बुलवाइए।

आज़ाद — आपके यहाँ से जो अये तो गुस्से में भरे हुए। अब मुझसे बात ही नहीं करते।

बूढ़े मियाँ — वह तो आज खूब ही बनाए गए।

बूढ़े मियाँ ने सारा किस्सा बयान कर दिया। आज़ाद सुन कर खूब हँसे और खोजी को बुला कर उनके सामने ही बूढ़े मियाँ से बोले — क्यों साहब, आपके यहाँ क्या दस्तूर है कि कटारबाजों को बुला-बुला कर शरीफों से भिड़वाते हैं।

बूढ़े मियाँ — ख्वाजा साहब को आज खुदा ही ने बचाया।

आज़ाद- मगर यह तो हमसे कहते थे कि वह जवान बहुत दुबला-पतला आदमी है। इनसे-उससे अगर चलती तो यह उनको जरूर नीचा दिखाते।

खोजी — अजी, कैसा नीचा दिखाना? वह तलवार चलाना क्या जाने!

आज़ाद — आज उसको बुलवाइए, तो इनसे मुकाबिला हो जाय।

खोजी — हमारे नजदीक उसको बुलवाना फजूल है। मुफ्त की ठाँय-ठाँय से क्या फायदा। हाँ, अगर आप लोग उस बेचारे की जान के दुश्मन हुए हैं तो बुलवा लीजिए।

यह बातें हो ही रही थीं कि बैरा ने आकर कहा — हुजूर, एक गाड़ी पर औरतें आई हैं। एक खिदमतगार ने जो गाड़ी के साथ है, हुजूर का नाम लिया और कहा कि जरा यहाँ तक चले आएँ।

आज़ाद को हैरत हुई कि औरतें कहाँ से आ गईं! खोजी को भेजा कि जा कर देखो। खोजी अकड़ते हुए सामने पहुँचे, मगर गाड़ी से दस कदम अलग।

खिदमतगार — हजरत, जरी सामने यहाँ तक आइए।

खोजी — ओ गीदी, खबरदार जो बोला!

खिदमतगार — ऐं! कुछ सनक गए हो क्या?

बैरा — गाड़ी के पास के नहीं जो भई! दूर क्यों खड़े हो?

खोजी — (करौली तौल कर) बस खबरदार!

बैरा — ऐं! तुमको हुआ क्या है? जाते क्यों नहीं सामने?

खोजी — चुप रहो जी। जानो न बूझो, आए वहाँ से। क्या मेरी जान फालतू है, जो गाड़ी के सामने जाऊँ?

इत्तिफ़ाक़ से आज़ाद ने उनकी बेतुकी हाँक सुन ली। फौरन बाहर आए कि कहीं किसी से लड़ न पड़ें। खोली से पूछा — क्यों साहब, यह आप किस पर बिगड़ रहे हैं? जवाब नदारद। वहाँ

से झपट कर आज़ाद के पास आए और करौली घुमाते हुए पैतरे बदलने लगे।

आज़ाद — कुछ मुँह से तो कहो। खुद भी जलील होते हो और मुझे भी जलील करते हो।

खोजी — (गाड़ी की तरफ इशारा करके) अब क्या होगा?

खिदमतगार — हुजूर, इन्होंने आते ही पैतरा बदला, और यह काठ का खिलौना नचाना शुरू किया। न मेरी सुनते हैं, न अपनी कहते हैं।

खोजी — (आज़ाद के कान में) मियाँ, इस गाड़ी में औरतें नहीं है। वही लौंडा तुमसे लड़ने आया होगा।

आज़ाद — यह कहिए, आपके दिल में वह बात जमी हुई थी। आप मेरे साथ बहुत हमदर्दी न कीजिए, अलग जाके बैठिए।

मगर खोजी के दिल में खुप गई थी कि इस गाड़ी में वही जवान छिप के आया है। उन्होंने रोना शुरू किया। अब आज़ाद लाख-लाख समझाते हैं कि देखो, होटल के और मुसाफिरों को बुरा मालूम होगा, मगर खोजी चुप ही नहीं होते। आखिर आपने कहा — जो लोग इस पर सवार हों, वह उतर आएँ। पहले मैं देख लूँ, फिर आप जायँ।

आज़ाद ने खिदमतगार से कहा — भाई, अगर वह लोग मंजूर करें तो यह बूढ़ा आदमी झाँक कर देख ले। इस सिड़ी को शक हुआ है कि इसमें कोई और बैठा है।

खिदमतगार ने जा कर पूछा, और बोला — सरकार कहती हैं, हाँ, मंजूर है। चलिए, मगर दूर ही से झाँकिएगा।

खोजी — (सबसे रुखसत हो कर) लो यारो, अब आखिरी सलाम है। आज़ाद खुदा तुमको दोनों जहान में सुर्खरू रखे।

छुटता है मुकाम, कूच करता हूँ मैं,
रुखसत ऐ जिंदगी कि मरता हूँ मैं।
अल्लाह से लौ लगी हुई है मेरी;
ऊपर के दम इस वास्ते भरता हूँ।

खिदमतगार — अब आखिर मरने तो जाते ही हो, जरा कदम बढ़ाते न चलो। जैसे अब मरे, वैसे आध घड़ी के बाद।

आज़ाद — क्यों मुरदे को छेड़ते हो जी।

बग्घी से हँसी की आवाजें आ रही थीं। खोजी आँखों में आँसू भरे चले आ रहे थे कि उनके भाई नजर पड़े। उनको देखते ही खोजी ने हाँक लगाई — आइए भाई साहब! आखिरी वक़्त आपसे खूब मुलाकात हुई।

रईस — खैर तो है भाई! क्या अकेले ही चले जाओगे? मुझे किसके भरोसे छोड़े जाते हो?

खोजी भाई के गले मिल कर रोने लगे। जब दोनों गले मिल कर खूब रो चुके तो खोजी ने गाड़ी के पास जा कर खिदमतगार से कहा — खोल दे। ज्यों ही गरदन अन्दर डाली तो देखा, दो औरतें बैठी हैं। इनका सिर ज्यों ही अन्दर पहुँचा, उन्होंने इनकी पगड़ी उतार कर दो चपतें लगा दीं। खोजी की जान में जान आई। हँस दिए। आकर आज़ाद से बोले — अब आप जायँ, कुछ मुजायका नहीं है। आज़ाद ने होटल के आदमियों को वहाँ से हटा दिया और उन औरतों से बातें करने लगे।

आज़ाद — आप कौन साहब हैं?

बग्घी में से आवाज आई — आदमी हैं साहब! सुना कि आप आए हैं, तो देखने चले आए। इस तरह मिलना बुरा तो जरूर है; मगर दिल ने न माना।

आज़ाद — जब इतनी इनायत की है तो अब नकाब दूर कीजिए और मेरे कमरे तक आइए।

आवाज — अच्छा, पेट से पाँव निकले! हाथ देते ही पहुँचा पकड़ लिया।

आज़ाद — अगर आप न आएँगी तो मेरी दिलशिकनी होगी। इतना समझ लीजिए।

आवाज — ऐ, हाँ! खूब याद आया। वह जो दो लेडियाँ आपके साथ आई हैं, वह कहाँ हैं? परदा करा दो तो हम उनसे मिल लें।

आज़ाद — बहुत अच्छा, लेकिन मैं रहूँ या न रहूँ?

आवाज — आप से क्या परदा है।

आज़ाद ने परदा करा दिया। दोनों औरतें गाड़ी से उतर पड़ीं और कमरे में आईं। मिसों ने उनसे हाथ मिलाया; मगर बातें क्या होतीं। मिसें उर्दू क्या जानें और बेगमों को फ्रांसीसी जबान से क्या मतलब। कुछ देर तक वहाँ बैठे रहने के बाद, उनमें से एक ने, जो बहुत ही हसीन और शोख थी; आज़ाद से कहा — भई, यहाँ बैठे-बैठे तो दम घुटता है। अगर परदा हो सके तो चलिए, बाग की सैर करें।

आज़ाद — यहाँ तो ऐसा कोई बाग नहीं। मुझे याद नहीं आता कि आपसे पहले कब मुलाकात हुई।

हसीना ने आँखों में आँसू भर कर कहा — हाँ साहब, आपको क्यों याद आएगा। आप हम गरीबों को क्यों याद करने लगे। क्या

यहाँ कोई ऐसी जगह भी नहीं, जहाँ कोई गैर न हो। यहाँ तो कुछ कहते-सुनते नहीं बनता। चलिए, किसी दूसरे कमरे में चलें।

आज़ाद को एक अजनबी औरत के साथ दूसरे कमरे में जाते शर्म तो आती थी, मगर यह समझ कर कि इसे शायद कोई परदे की बात कहनी होगी, उसे दूसरे कमरे में ले गए और पूछा — मुझे आपका हाल सुनने की बड़ी तमन्ना है। जहाँ तक मुझे याद आता है, मैंने आपको कभी नहीं देखा है। आपने मुझे कहाँ देखा था?

औरत — खुदा की कसम, बड़े बेवफा हो। (आज़ाद के गले में हाथ डाल कर) अब भी याद नहीं आता! वाह से हम!

आज़ाद — तुम मुझे बेवफा चाहे कह लो; पर मेरी याद इस वक़्त धोखा दे रही है।

औरत — हाय अफसोस! ऐसा जालिम नहीं देखा -

न क्योंकर दम निकल जाए कि याद आता है रह-रह कर;
वह तेरा मुसकराना कुछ मुझे होठों में कह-कह कर।

आज़ाद — मेरी समझ ही में नहीं आता कि यह क्या माजरा है।

औरत — दिल छीन के बातें बनाते हो? इतना भी नहीं होता कि एक बोसा तो ले लो।

आज़ाद — यह मेरी आदत नहीं।

औरत — हाय! दिल सा घर तूने गारत कर दिया, और अब कहता है, यह मेरी आदत नहीं।

आज़ाद — अब मुझे फुरसत नहीं है, फिर किसी रोज आइएगा।

औरत — अच्छा, अब कब मिलोगे?

आज़ाद — अब आप तकलीफ न कीजिएगा।

यह कहते हुए आज़ाद उस कमरे से निकल आए। उनके पीछे-पीछे वह औरत भी बाहर निकली। दोनों लेडियों ने उसे देखा तो कट गईं। उसके बाल बिखरे हुए थे, चोली मसकी हुई। उस औरत ने आते ही आते आज़ाद को कोसना शुरू किया — तुम लोग गवाह रहना। यह मुझे अलग कमरे में ले गए और एक घंटे के बाद मुझे छोड़ा। मेरी जो हालत है, आप लोग देख रही हैं।

आज़ाद — खैरियत इसी में है कि अब आप जाइए।

औरत — अब मैं जाऊँ! अब किसी हो के रहूँ?

क्लारिसा — (फ्रांसीसी में) यह क्या माजरा है आज़ाद?

आज़ाद — कोई छटी हुई औरत है।

आज़ाद के तो होश उड़े हुए थे कि अच्छे घर बयाना दिया और वह चमक कर यही कहती थी – अच्छा, तुम्हीं कसम खाओ कि तुम मेरे साथ अकेले कमरे में थे या नहीं?

आज़ाद – अब जलील हो कर यहाँ से जाओगी तुम। अजब मुसीबत में जान पड़ी है।

औरत – ऐ है, अब मुसीबत याद आई! पहले क्या समझे थे?

आज़ाद – बस, अब ज्यादा न बढ़ना।

औरत – गाड़ीवान से कहो, गाड़ी बरामदे में लाए।

आज़ाद – हाँ, खुदा के लिए तुम यहाँ से जाओ।

औरत – जाती तो हूँ, मगर देखो तो क्या होता है!

जब गाड़ी रवाना हुई तो खोजी ने अन्दर आकर पूछा – इनसे तुम्हारी कब की जान-पहचान थी?

आज़ाद – अरे भाई, आज तो गजब हो गया।

खोजी – मना तो करता था कि इनसे दूर रहो, मगर आप सुनते किसकी हैं।

आज़ाद – झूठ बकते हो। तुमने तो कहा था कि आप जायँ, कुछ मुजायका नहीं है; और अब निकले जाते हो।

खोजी – अच्छा साहब, मुझी से गलती हुई। मैंने गाड़ीवान को चकमा दे कर सारा हाल मालूम कर लिया। यह दोनों कुन्दन की छोकरियाँ हैं। अब यह सारे शहर में मशहूर करेंगी कि आज़ाद का हमसे निकाह होने वाला है।

आज़ाद – इस वक़्त हमें बड़ी उलझन है भाई! कोई तदबीर सोचो।

खोजी – तदबीर तो यही हैं कि मैं कुन्दन के पास जाऊँ और उसे समझा-बुझा कर ढर्रे पर ले आऊँ।

आज़ाद – तो फिर देर न कीजिए। उम्र भर आपका एहसान मानूँगा।

खोजी तो इधर रवाना हुए। अब आज़ाद ने दोनों लेडियों की तरफ देखा तो दोनों के चेहरे गुस्से से तमतमाए हुए थे। क्लारिसा एक नाविल पढ़ रही थी और मीडा सिर झुकाए हुए थी। उन दोनों को यकीन हो गया था कि औरत या तो आज़ाद की ब्याहता बीवी है या आशना। अगर जान-पहचान न होती तो उस कमरे में जा कर बैठने की दोनों में से एक को भी हिम्मत न होती। थोड़ी देर तक बिलकुल सन्नाटा रहा, आखिर आज़ाद ने खुद ही अपनी सफाई देनी शुरू की। बोले – किसी ने सच कहा है, 'कर तो डर, न कर तो डर'; मैंने इस औरत की आज तक

सूरत भी न देखी थी। समझा कि कोई शरीफ़ज़ादी मुझसे मिलने आई होगी। मगर ऐसी मक्कार और बेशर्म औरत मेरी नजर से नहीं गुजरी।

दोनों लेडियों ने इसका कुछ जवाब न दिया। उन्होंने समझा कि आज़ाद हमें चकमा दे रहे हैं। अब तो आज़ाद के रहे-सहे हवास भी गायब हो गए। कुछ देर तक तो जब्त किया मगर न रहा गया। बोले — मिस मीडा, तुमने इस मुल्क की मक्कार औरतें अभी नहीं देखीं।

मीडा — मुझे इन बातों से क्या सरोकार है।

आज़ाद — उसकी शरारत देखी?

मीडा — मेरा ध्यान उस वक़्त उधर न था।

आज़ाद — मिस क्लारिसा, तुम कुछ समझीं या नहीं।

क्लारिसा — मैंने कुछ खयाल नहीं किया।

आज़ाद — मुझ सा अहमक भी कम होगा। सारी दुनिया से आकर यहाँ चरका खा गया।

मीडा — अपने किए का क्या इलाज, जैसा किया, वैसा भुगतो।

आज़ाद — हाँ, यही तो मैं चाहता था कि कुछ कहो तो सही। मीडा, सच कहता हूँ, जो कभी पहले इसकी सूरत भी देखी हो। मगर इसने वह दाँव-पेंच किया कि बिलकुल अहमक बन गए।

मीडा — अगर ऐसा था तो उसे अलग कमरे में क्यों ले गए?

आज़ाद — इसी गलती का तो रोना है। मैं क्या जानता था कि वह यह रंग लाएगी।

मीडा — यह तो जो कुछ हुआ सो हुआ। अब आगे के लिए क्या फिक्र की है? उसकी बातचीत से मालूम होता था कि वह जरूर नालिश करेगी।

आज़ाद — इसी का तो मुझे भी खौफ है। खोजी को भेजा है कि जा कर उसे धमकाए। देखो, क्या करके आते हैं।

उधर खोजी गिरते-पड़ते कुन्दन के घर पहुँचे, तो दो-तीन औरतों को कुछ बातें करते सुना। कान लगा कर सुनने लगे।

'बेटा, तुम तो समझती ही नहीं हो; बदनामी कितनी बड़ी है।'

'तो अम्माँ जान, बदनामी का ऐसा ही डर हो तो सभी न दब जाया करें?'

'दबते ही हैं। उस फौजी अफसर से नहीं खड़े-खड़े गिनवा लिए!'

'अच्छा अम्माँजान, तुम्हें अख्तियार है; मगर नतीजा अच्छा न होगा।'

खोजी से अब न रहा गया। झल्ला कर बोले — ओ गीदी, निकल तो आ। देख तो कितनी करौलियाँ भोंकता हूँ। बढ़-बढ़ के बातें बनाती हैं? नालिश करेगी, और बदनाम करेगी।

कुन्दन ने यह आवाज सुनी तो खिड़की से झाँका। देखा, तो एक ठिंगना सा आदमी पैतरे बदल रहा है। महरी से कहा कि दरवाजा खोल कर बुला लो। महरी ने आकर कहा — कौन साहब हैं? आइए।

खोजी अकड़ते हुए अन्दर गए और एक मोढ़े पर बैठे। बैठना ही था कि सिर नीचे और टाँगें ऊपर! औरतें हँसने लगीं। खैर, आप सँभल कर दूसरे मोढ़े पर बैठे और कुछ बोलना ही चाहते थे कि कुन्दन सामने आई और आते ही खोजी को एक धक्का दे कर बोली — चूल्हे में जाय ऐसा मियाँ। बरसों के बाद आज सूरत दिखाई तो भेस बदल कर आया। निगोड़े, तेरा जनाजा निकले। तू अब तक था कहाँ?

खोजी — यह दिल्लगी हमको पसंद नहीं।

कुन्दन — (धप लगा कर) तो शादी क्या समझ कर की थी?

शादी का नाम सुन कर खोजी की बाँछें खिल गईं। समझे कि मुफ्त में औरत हाथ आई। बोले — तो शादी इसलिए की थी कि जूतियाँ खायँ?

कुन्दन — आखिर, तू इतने दिन था कहाँ? ला, क्या कमा कर लाया है।

यह कह कर कुन्दन ने उनकी जेब टटोली तो तीन रुपए और कुछ पैसे निकले। वह निकाल लिए। वह बेचारे हाँ-हाँ करते ही रहे कि सबों ने उन्हें घर से निकाल कर दरवाजा बन्द कर दिया। खोजी वहाँ से भागे और रोनी सूरत बनाए हुए होटल में दाखिल हुए।

आज़ाद ने पूछा — कहो भाई, क्या कर आए? ऐं! तुम तो पिटे हुए से जान पड़ते हो।

खोजी — जरा दम लेने दो। मामला बहुत नाजुक है। तुम तो फँसे ही थे, मैं भी फँस गया। इस सूरत का बुरा हो, जहाँ जाता हूँ वहीं चाहने वाले निकल आते हैं। एक पंडित ने कहा था कि तुम्हारे पास मोहिनी है। उस वक़्त तो उसकी बात मुझे कुछ न जँची, मगर अब देखता हूँ तो उसने बिलकुल सच कहा था।

आज़ाद — तुम तो हो सिड़ी। ऐसे ही तो बड़ी हसीन हो। मेरी बाबत भी कुन्दन से कुछ बातचीत हुई या आँखें ही सेकते रहे?

खोजी — बड़े घर की तैयारी कर रखो। बंदा वहाँ भी तुम्हारे साथ होगा।

आज़ाद — बाज आया आपके साथ से। तुम्हें खिलाना-पिलाना सब अकारथ गया। बेहतर है, तुम कहीं और चले जाओ।

इस पर खोजी बहुत बिगड़े। बोले — हाँ साहब, काम निकल गया न? अब तो मुझसे बुरा कोई न होगा।

खानसामा — क्या है ख्वाजा जी, क्यों बिगड़ गए?

खोजी — तू चुप रह कुली, ख्वाजा जी! और सुनिएगा?

खानसामा — मैंने तो आपकी इज्जत की थी।

खोजी — नहीं, आप माफ कीजिए। क्या खूब। टके का आदमी और हमसे इस तरह पर पेश आए। मगर तुम क्या करोगे भाई, हमारा नसीबा ही फिरा हुआ है। खैर, जो चाहो, सुनाओ। अब हम यहाँ से कूच करते हैं। जहाँ हमारे कदरदाँ हैं, वहाँ जायँगे।

खानसामा — यहाँ से बढ़ के आपका कौन कदरदाँ होगा? खाना आपको दें, कपड़ा आपको दें, उस पर दोस्त बना कर रखें; फिर अब और क्या चाहिए?

खोजी — सच है भाई, सच है। हम आज़ाद के गुलाम तो हैं ही। उन्हीं से कसम लो कि उनके बाद-दादा हमारे बुजुर्गों के टुकड़े खा कर पले थे या नहीं।

आज़ाद — आपकी बातें सुन रहा हूँ। जरा इधर देखिएगा।

खोजी — सौ सोनार की, तो एक लोहार की।

आज़ाद — हमारे बाप-दादा आपके टुकड़खोरे थे?

खोजी — जी हाँ, क्या इसमें कुछ शक भी है?

इतने में खानसामा ने दूर से कहा — ख्वाजा साहब, हमने तो सुना है कि आपके वालिद अंडे बेचा करते थे।

इतना सुनना था कि खोजी आग हो गए और एक तवा उठा कर खानसामा की तरफ दौड़े। तवा बहुत गर्म था। अच्छी तरह उठा भी नहीं पाए थे कि हाथ जल गया। झिझक कर तवे को जो फेंका तो खुद भी मुँह के बल गिर पड़े।

खानसामा — या अली, बचाइयो।

बैरा — तवा तो जल रहा था, हाथ जल गया होगा।

मीडा — डाक्टर को फौरन बुलाओ।

खानसामा — उठ बैठो भाई, कैसे पहलवान हो!

आज़ाद — खुदा ने बचा लिया, वरना जान ही गई थी।

ख्वाजा साहब चुपचाप पड़े हुए थे। खानसामा ने बरामदे में एक पलंग बिछाया और दो आदमियों ने मिल कर खोजी को उठाया कि बरामदे में ले जायँ। उसी वक़्त एक आदमी ने कहा — अब बचना मुश्किल है। खोजी अक्ल के दुश्मन तो थे ही। उनको यकीन हो गया कि अब आखिरी वक़्त है। रहे-सहे हवास भी गायब हो गए। खानसामा और होटल के और नौकर-चाकर उनको बनाने लगे।

खानसामा — भाई, दुनिया इसी का नाम है। जिंदगी का एतबार क्या।

बैरा — इसी बहाने मौत लिखी थी।

मुहर्रिर — और अभी नौजवान आदमी हैं। इनकी उम्र ही क्या है!

आज़ाद — क्या, हाल क्या है? नब्ज का कुछ पता है?

खानसामा — हुजूर, अब आखिरी वक़्त है। अब कफन-दफन की फिक्र कीजिए।

यह सुन कर खोजी जल-भुन गए। मगर आखिरी वक़्त था, कुछ बोल न सके।

आज़ाद — किसी मौलवी को बुलाओ।

मुहर्रिर — हुजूर, यह न होगा। हमने कभी इनको नमाज पढ़ते नहीं देखा।

आज़ाद — भई, इस वक़्त यह जिक्र न करो।

मुहर्रिर — हुजूर मालिक हैं, मगर यह मुसलमान नहीं हैं।

खोजी का बस चलता तो मुहर्रिर की बोटियाँ नोच लेते; मगर इस वक़्त वह मर रहे थे।

खानसामा — कब्र खुदवाइए, अब इनमें क्या है?

बैरा — इसी सामनेवाले मैदान में इनको तोप दो।

खोजी का चेहरा सुर्ख हो गया। कमबख्त कहता है, तोप दो! यह नहीं कहता कि आपको दफन कर दो।

आज़ाद — बड़ा अच्छा आदमी था बेचारा।

खानसामा — लाख सिड़ी थे, मगर थे नेक।

बैरा — नेक क्या थे। हाँ, यह कहो कि किसी तरह निभ गई।

खोजी अपना खून पीके रह गए, मगर मजबूर थे।

मुहर्रिर — अब इनको मिल के तोप ही दीजिए।

आज़ाद — घड़ी दो में मुरलिया बाजेगी।

बैरा — ख्वाजा साहब, कहिए, अब कितनी देर में मुरलिया बाजेगी?

आज़ाद — अब इस वक़्त क्या बताएँ बेचारे अफसोस है!

खानसामा — अफसोस क्यों हुजूर, अब मरने के तो दिन ही थे। जवान-जवान मरते जाते हैं। यह तो अपनी उम्र तमाम कर चुके। अब क्या आकबत के बोरिये बटोरेंगे?

आज़ाद — हाँ, है तो ऐसा ही, मगर जान बड़ी प्यारी होती है। आदमी चाहे दो सौ बरस का हो के मरे, मगर मरते वक़्त यही जी चाहता है कि दस बरस और जिंदा रहता।

खानसामा — तो हुजूर, यह तमन्ना तो उसको हो, जिसका कोई रोनेवाला हो। इनके कौन बैठा है।

इतने में होटल का एक आदमी एक चपरासी को हकीम बना कर लाया!

आज़ाद — कुर्सी पर बैठिए हकीम साहब।

हकीम — यह गुस्ताखी मुझसे न होगी। हुजूर बैठें।

आज़ाद — इस वक़्त सब माफ है।

हकीम — यह बेअदबी मुझसे न होगी।

आज़ाद — हकीम साहब, मरीज की जान जाती है और आप तकल्लुफ करते हैं।

हकीम — चाहे मरीज मर जाय; मगर मैं अदब को हाथ से न जानू दूँगा।

खोजी को हकीम की सूरत से नफरत हो गई।

आज़ाद — आप तकल्लुफ में मरीज की जान ले लेंगे।

हकीम — अगर मौत है तो मरेगा ही, मैं अपनी आदत क्यों छोड़ूँ?

आज़ाद ने खोजी के कान में जोर से कहा — हकीम साहब आए हैं।

खोजी ने हकीम साहब को सलाम किया और हाथ बढ़ाया।

हकीम — (नब्ज पर हाथ रख कर) अब क्या बाकी है, मगर अभी तीन-चार दिन की नब्ज है; इस वक़्त इनको ठंडे पानी से नहलाया जाय तो बेहतर है, बल्कि अगर पानी में बर्फ डाल दीजिए तो और भी बेहतर है।

आज़ाद — बहुत अच्छा। अभी लीजिए।

हकीम — बस, एक दो मन बर्फ काफी होगी।

इतने मे मिस मीडा ने आज़ाद से कहा – तुम भी अजीब आदमी हो। दो-चार होटल वालों को ले कर एक गरीब का खून अपनी गरदन पर लेते हो। खोजी की चारपाई हमारे कमरे के सामने बिछवा दो और इन आदमियों से कह दो कि कोई खोजी के करीब न आए।

इस तरह खोजी की जान बची। आराम से सोए। दूसरे दिन घूमते-घामते एक चंडूखाने में जा पहुँचे और छींटे उड़ाने लगे। एकाएक हुस्नआरा का जिक्र सुन कर उनके कान खड़े हुए। कोई कह रहा था कि हुस्नआरा पर एक शाहज़ादे आशिक हुए हैं, जिनका नाम कमरुद्दौला है। खोजी बिगड़ कर बोले – खबरदार, जो अब किसी ने हुस्नआरा का नाम फिर लिया। शरीफ़ज़ादियों का नाम बद करता है बे!

एक चंडूबाज – हम तो सुनी-सुनाई कहते हैं साहब। शहर भर में यह खबर मशहूर है, आप किस-किसकी जबान रोकिएगा।

खोजी – झूठ है, बिलकुल झूठ।

चंडूबाज – अच्छा, हम झूठ कहते हैं तो ईदू से पूछ लीजिए।

ईदू – हमने तो यह सुना था कि बेगम साहब ने अखबार में कुछ लिखा था तो वह शाहज़ादे ने पढ़ा और आशिक हो गए, फौरन बेगम साहब के नाम से खत लिखा और शायद किसी बाँके

को मुकर्रर किया है कि आज़ाद को मार डाले। खुदा जाने, सच है या झूठ।

खोजी — तुमने किससे सुनी है यह बात? इस धोखे में न रहना। थाने पर चलकर गवाही देनी होगी।

ईदू — हुजूर क्या आज़ाद के दोस्त हैं?

खोजी — दोस्त नहीं हूँ, उस्ताद हूँ। मेरा शागिर्द है।

ईदू — आपके कितने शागिर्द होंगे?

खोजी — यहाँ से ले कर रूम और शाम तक।

खोजी शाहज़ादे का पता पूछते हुए लाल कुएँ पर पहुँचे। देखा तो सैकड़ों आदमी पानी भर रहे हैं।

खोजी — क्यों भाई, यह कुआँ तो आज तक देखने में नहीं आया था।

भिश्ती — क्या कहीं बाहर गए थे आप?

खोजी — हाँ भई, बड़ा लंबा सफर करके लौटा हूँ।

भिश्ती — इसे बने तो चार महीने हो गए।

खोजी — अहा-हा! यह कहो, भला किसने बनवाया है?

भिश्ती — शाहज़ादा कमरूद्दौला ने।

खोजी — शाहज़ादा साहब रहते कहाँ हैं?

भिश्ती — तुम तो मालूम होता है, इस शहर में आज ही आए हो। सामने उन्हीं की बारादरी तो है।

खोजी यहाँ से महल के चोबदार के पास पहुँचे और अलेक-सलेक करके बोले — भाई, कोई नौकरी दिलवाते हो।

दरबान — दारोगा साहब से कहिए, शायद मतलब निकले।

खोजी — उनसे कब मुलाकात होगी?

दरबान — उनके मकान पर जाइए, और कुछ चटाइए।

खोजी — भला शाहज़ादे तक रसोई हो सकती है या नहीं?

दरबान — अगर कोई अच्छी सूरत दिखाओ तो पौ बारह हैं।

इतने में अन्दर से एक आदमी निकला। दरबान से पूछा — किधर चले शेख जी?

शेख — हुक्म हुआ है कि किसी रम्माल को बहुत जल्द हाजिर करो।

खोजी — तो हमको ले चलिए। इस फन में हम अपना सानी नहीं रखते।

शेख — ऐसा न हो, आप वहाँ चल कर बेवकूफ बनें।

खोजी — अजी, ले तो चलिए। खुदा ने चाहा तो सुर्खरु ही रहूँगा।

शेख साहब उनको ले कर बारादरी में पहुँचे। शाहज़ादा साहब मसनद लगाए पेचवान पी रहे थे और मुसाहब लोग उन्हें घेरे बैठे हुए थे। खोजी ने अदब से सलाम किया और फर्श पर जा बैठे।

आगा — हुजूर, अगर हुक्म हो तो तारे आसमान से उतार लूँ।

मुन्ने — हक है। ऐसा ही रोब है हमारे सरकार का।

मिर्जा — खुदावंद, अब हुजूर की तबीयत का क्या हाल है?

आगा — खुदा का फजल है। खुदा ने चाहा तो सुबह-शाम शिप्पा लड़ा ही चाहता है। हुजूर का नाम सुन कर कोई निकाह से इनकार करेगा भला?

मुन्ने — अजी, परिस्तान की हूर हो तो लौंडी बन जाय।

खोजी — खुदा गवाह है कि शहर में दूसरा रईस टक्कर का नहीं है। यह मालूम होता है कि खुदा ने अपने हाथ से बनाया है।

मिर्जा — सुभान-अल्लाह! वाह! खाँ साहब, वाह! सच है।

शेख — खाँ साहब नहीं, ख्वाजा साहब कहिए।

मिर्जा — अजी, वह कोई हों, हम तो इंसाफ के लोग हैं। खुदा को मुँह दिखाना है। क्या बात कही है। ख्वाजा साहब, आप तो पहली मरतबा इस सोहबत में शरीक हुए हैं। रफ्ता-रफ्ता देखिएगा कि हुजूर ने कैसा मिजाज पाया है।

शेख — बूढ़ों में बूढ़ें, जवानों में जवान।

खोजी — मुझसे कहते हो। शहर में कौन रईस है, जिससे मैं वाकिफ नहीं?

आगा — भई मिर्जा, अब फतह है। उधर का रंग फीका हो रहा है। अब तो इधर ही झुकी हुई हैं।

मिर्जा — वल्लाह! हाथ लाइएगा। मरदों का वार खाली जाय?

आगा — यह सब हुजूर का इकबाल है।

कमरुद्दौला — मैं तो तड़प रहा था, जिंदगी से बेजार था! आप लोगों की बदौलत इतना तो हो गया।

खोजी — हैरान थे कि यह क्या माजरा है। हुस्नआरा को यह क्या हो गया कि कमरुद्दौला पर रीझीं! कभी यकीन आता था, कभी शक होता था।

आगा — हुजूर का दूर-दूर तक नाम है।

मिर्जा — क्यों नहीं, लंदन तक।

खोजी — कह दिया न भाईजान, कि दूसरा नजर नहीं आता।

शाहज़ादा — (आगा से) यह कहाँ रहते हैं और कौन हैं?

खोजी — जी, गरीब का मकान मुर्गी-बाजार में है।

आगा — जभी आप कुड़क रहे थे।

मिर्जा — हाँ, अंडे बेचते तो हमने भी देखा था।

खोजी — जभी आप सदर-बाजार में टापा करते हैं।

शाहज़ादा — ख्वाजा साहब जिले में ताक हैं।

खोजी — आपकी क़दरदानी है।

बातों-बातों में यहाँ की टोह ले कर खोजी घर चले। होटल में पहुँचे तो आज़ाद को बूढ़े मियाँ से बातें करते देखा। ललकार कर बोले — लो, मैं भी आ पहुँचा।

आज़ाद — गुल न मचाओ, हम लोग न जाने कैसी सलाह कर रहे हैं, तुमको क्या; बे-फिक्रे हो। कुछ बसंत की भी खबर है? यहाँ एक नया गुल खिला है!

खोजी — अजी, हमें सब मालूम हैं। हमें क्या सिखाते हो।

आज़ाद — तुमसे किसने कहा?

खोजी — अजी, हमसे बढ़ कर टोहिया कोई हो तो ले। अभी उन्हीं कमरुद्दौला के यहाँ जा पहुँचा। पूरे एक घंटे तक हमसे-उनसे बातचीत रही। आदमी तो खब्ती सा है और बिलकुल जाहिल। मगर उसने हुस्नआरा को कहाँ से देख लिया? छोकरी है चुलबुली। कोठे पर गई होगी, बस उसकी नजर पड़ गई होगी।

बूढ़े मियाँ — जरा जबान सँभाल कर!

खोजी — आप जब देखो, तिरछे ही हो कर बातें करते हैं? क्या कोई आपका दिया खाता है या आपका दबैल है? बड़े अक्लमंद आप ही तो हैं एक!

इतने में फिटन पर एक अंगरेज आज़ाद को पूछता हुआ आ पहुँचा। आज़ाद ने बढ़ कर उससे हाथ मिलाया और पूछा तो मालूम हुआ कि वह फौजी अफसर है। आज़ाद को एक जलसे का चेयरमैन बनने के लिए कहने आया है।

आज़ाद — इसके लिए आपने क्यों इतनी तकलीफ की? एक खत काफी था।

साहब — मैं चाहता हूँ कि आप इसी वक़्त मेरे साथ चलें। लेक्चर का वक़्त बहुत करीब है।

आज़ाद साहब के साथ चल दिए। टाउन-हाल में बहुत से आदमी जमा थे। आज़ाद के पहुँचते ही लोग उन्हें देखने के लिए टूट पड़े। और जब वह बोलने के लिए मेज के सामने खड़े हुए तो चारों तरफ समा बँध गया। जब वह बैठना चाहते तो लोग गुल मचाते थे, अभी कुछ और फरमाइए। यहाँ तक कि आज़ाद ही के बोलते-बोलते वक़्त पूरा हो गया और साहब बहादुर के बोलने की नौबत न आई। शाहज़ादा कमरुद्दौला भी मुसाहबों के साथ जलसे में मौजूद थे। ज्यों ही आज़ाद बैठे, उन्होंने आगा से कहा — सच कहना, ऐसा खूबसूरत आदमी देखा है?

आगा — बिलकुल शेर मालूम होता है।

शाहज़ादा — ऐसा जवान दुनिया में न होगा।

आगा — और तकरीर कितनी प्यारी है?

शाहज़ादा — क्यों साहब, जब हम मरदों का यह हाल है, तो औरतों का क्या हाल होता होगा?

आगा — औरत क्या, परी आशिक हो जाय।

शाहज़ादा साहब जब यहाँ से चले तो दिल में सोचा-भला आज़ाद के सामने मेरी दाल क्या गलेगी? मेरा और आज़ाद का मुकाबिला

क्या? अपनी हिमाकत पर बहुत शरमिंदा हुए। ज्योंही मकान पर पहुँचे, मुसाहबों ने बेपर की उड़ानी शुरू की।

मिर्जा — खुदावंद, आज तो मुँह मीठा कराइए। वह खुशखबरी सुनाऊँ कि फड़क जाइए। हुजूर उनके यहाँ एक महरी नौकर है। वह मुझसे कहती थी कि आज आपके सरकार की तसवीर का आज़ाद की तसवीर से मुकाबिला किया और बोलीं — मेरी शाहज़ादे पर जान जाती है।

और मुसाहबों ने भी खुशामद करनी शुरू की; मगर नवाब साहब ने किसी से कुछ न कहा। थोड़ी देर तक बैठे रहे। फिर अन्दर चले गए। उनके जाने के बाद मुसाहबों ने आगा से पूछा — अरे मियाँ! बताओ तो, क्या माजरा है? क्या सबब है कि सरकार आज इतने उदास हैं?

आगा — भई, कुछ न पूछिए। बस, यही समझ लो कि सरकार की आँखें खुल गईं।

आज़ाद के आने के बाद ही बड़ी बेगम ने शादी की तैयारियाँ शुरू कर दी थीं। बड़ी बेगम चाहती थीं कि बरात खूब धूम-धाम से आए। आज़ाद धूम-धाम के खिलाफ थे। इस पर हुस्नआरा की बहनों में बातें होने लगीं —

बहार बेगम — यह सब दिखाने की बातें हैं। किसी से दो हाथी माँगे, किसी से दो-चार घोड़े; कहीं से सिपाही आए, कहीं से बरछी-बरदार! लो साहब, बरात आई है। माँगे-ताँगे की बरात से फायदा?

बड़ी बेगम — हमको तो यह तमन्ना यहीं है कि बरात धूम ही से दरवाजे पर आए। मगर कम से कम इतना तो जरूर होना चाहिए कि जग-हँसाई न हो।

जानी बेगम — एक काम कीजिए, एक खत लिख भेजिए।

गेती — हमारे खानदान में कभी ऐसा हुआ ही नहीं। हमने तो आज तक नहीं सुना। शुनिये जुलाहों के यहाँ तक तो अंगरेजी बाजा बरात के साथ होता है।

बहार — हाँ साहब, बरात तो वही है, जिसमें 50 हाथी, बल्कि फीलखाने का फीलखाना हो, साँड़िनियों की कतार दो मुहल्ले तक जाय। शहर भर के घोड़े और हवादार और तामदान हों और कई रिसाले, बल्कि तोपखाना भी जरूर हो। कदम-कदम पर

आतिशबाजी छूटती हो और गोले दगते हों। मालूम हो कि बरात क्या, किला फतह किया जाता है।

नाजुक — यह बस बुरी बातें हैं, क्यों?

बहार — जी नहीं, इन्हें बुरी कौन कहेगा भला।

नाजुक — अच्छा, वह जानें, उनका काम जाने।

हुस्नआरा ने जब देखा कि आज़ाद की जिद से बड़ी बेगम नाराज हुई जाती हैं तो आज़ाद के नाम एक खत लिखा —

'प्यारे आज़ाद,

माना कि तुम्हारे खयालात बहुत ऊँचे हैं, मगर राह-रस्म में दखल देने से क्या नतीजा निकलेगा। अम्माँजान जिद करती हैं, और तुम इन्कार, खुदा ही खैर करे। हमारी खातिर से मान लो, और जो वह कहें सो करो।'

आज़ाद ने इसका जवाब लिखा — जैसी तुम्हारी मर्जी। मुझे कोई उज्र नहीं है।

हुस्नआरा ने यह खत पढ़ा तो तस्कीन हुई। नाजुकअदा से बोलीं — लो बहन, जवाब आ गया।

नाजुक — मान गए या नहीं?

हुस्नआरा — न कैसे मानते।

नाजुक — चलो, अब अम्माँजान को भी तस्कीन हो गई।

बहार — मिठाइयाँ बाँटो। अब इससे बढ़ कर खुशी की और क्या बात होगी?

नाजुक — आखिर फिर रुपया अल्लाह ने किस काम के लिए दिया है?

बहार — वाह री अक्ल! बस, रुपया इसीलिए है कि आतिशबाजी में फूँके या सजावट में लुटाये। और कोई काम ही नहीं?

नाजुक — और आखिर क्या काम है? क्या परचून की दुकान करे? चने बेचे? कुछ मालूम तो हो कि रुपया किस काम में खर्च किया जाय? दिल का हौसला और कैसे निकाले!

बहार — अपनी-अपनी समझ है।

नाजुक — खुदा न करे कि किसी की ऐसी उलटी समझ हो। लो साहब, अब बरात भी गुनाह है। हाथी, घोड़े, बाजा सब ऐब में दाखिल। जो बरात निकालते हैं, सब गधे हैं। एक तुम और दूसरे मियाँ आज़ाद दो आदमियों पर अक्ल खत्म हो गई। जरा आने तो दो मियाँ को, सारी शेखी निकल जायगी।

दूसरे दिन बड़ी धूम-धाम से माँझे की तैयारी हुई। आज़ाद की तरफ खोजी मुहतमिम थे। आपने पुराने ढंग की जामदानी की अचकन पहनी जिसमें कीमती बेल टँकी हुई थी। सिर पर एक बहुत बड़ा शमला। कंधे पर कश्मीर का हरा दुशाला। इस ठाट से आप बाहर आए तो लोगों ने तालियाँ बजाईं। इस पर आप बहुत ही खफा हो कर बोले — यह तालियाँ हम पर नहीं बजाते हो। यह अपने बाप-दादों पर तालियाँ बजाते हो। यह खास उनका लिबास है। कई लौंडों ने उनके मुँह पर हँसना शुरू किया, मगर इंतजाम के धुन में खोजी को और कुछ न सूझता था। कड़क कर बोले — हाथियों को उसी तरफ रहने दो। बस, उसी लाइन में ला-ला कर हाथी लगाओ।

एक फीलबान — यहाँ कहीं जगह भी है? सबका भुरता बनाएँगे आप?

खोजी — चुप रह, बदमाश!

मिर्जा साहब भी खड़े तमाशा देख रहे थे। बोले — भई, इस फन में तो तुम उस्ताद हो।

खोजी — (मुसकरा कर) आपकी क़दरदानी है।

मिर्जा — आपका रोब सब मानते हैं।

खोजी — हम किस लायक हैं भाईजान! दोस्तों का इकबाल है।

गरज इस धूम-धाम से माँझा दुलहिन के मकान पर पहुँचा कि सारे शहर में शोर मच गया। सवारियाँ उतरीं। मीरासिनों ने समधिनों को गालियाँ दीं। मियाँ आज़ाद बाहर से बुलवाये गए और उनसे कहा गया कि मढ़े के नीचे बैठिए। आज़ाद बहुत इनकार करते रहे; मगर औरतों ने एक न सुनी। नाजुक बेगम ने कहा — आप तो कभी से बिचकने लगे। अभी तो माँझे का जोड़ा पहनना पड़ेगा।

आज़ाद — यह मुझसे नहीं होने का।

जान बेगम — क्या फजूल रस्म है!

जानी — ले, अब पहनते हो कि तकरार करते हो? हमसे जनरैली न चलेगी।

बेगम — भला, यह भी कोई बात है कि माँझे का जोड़ा न पहनेंगे?

आज़ाद — अगर आपकी खातिर इसी में है तो लाइए, टोपी दे लूँ।

नाजुक बेगम — जब तक माँझे का पूरा जोड़ा न पहनोगे, यहाँ से उठने न पाओगे।

आज़ाद ने बहुत हाथ जोड़े, गिड़गिड़ाकर कहा कि खुदा के लिए मुझे इस पीले जोड़े से बचाओ। मगर कुछ बस न चला। सालियों ने अंगरखा पहनाया, कंगन बाँधा। सारी बातें रस्म के मुताबिक पूरी हुई।

जब आज़ाद बाहर गए तो सब बेगमें मिल कर बाग की सैर करने चलीं। गेतीआरा ने एक फूल तोड़ कर जानी बेगम की तरफ फेंका। उसने वह फूल रोक कर उन पर ताक के मारा तो आँचल से लगता हुआ चमन में गिरा। फिर क्या था, बाग में चारों तरफ फूलों की मार होने लगी। इसके बाद नाजुकअदा ने यह गजल गाई —

> वाकिफ नहीं है कासिद मेरे गमे-निहाँ से,
> वह काश हाल मेरा सुनते मेरी जबाँ से।
> क्यों त्योरियों पर बल है, माथे पर शिकन है?
> क्यों इस कदर हो बरहम, कुछ तो कहो जबाँ से।
> कोई तो आशियाना सैयाद ने जलाया,
> काली घटाएँ रो कर पलटी हैं बोस्ताँ से।
> जाने को जाओ लेकिन, यह तो बताते जाओ,
> किस तरह बारे फुरकत उठेगा नातवाँ से।

बहार — जी चाहता है, तुम्हारी आवाज को चूम लूँ।

नाजुक — और मेरा जी चाहता है कि तुम्हारी तारीफ चूम लूँ।

बहार — हम तुम्हारी आवाज के आशिक हैं।

नाजुक — आपकी मेहरबानी। मगर कोई खूबसूरत मर्द आशिक हो तो बात है। तुम हम पर रीझीं तो क्या? कुछ बात नहीं।

बहार — बस, इन्हीं बातों से लोग उँगलियाँ उठाते हैं। और तुम नहीं छोड़तीं।

जानी — सच्ची आवाज भी कितनी प्यारी होती है!

नाजुक — क्या कहना है! अब दो ही चीजों में तो असर है, एक गाना, दूसरे हुस्न। अगर हमको अल्लाह ने ऐसा हुस्न न दिया होता, तो हमारे मियाँ हम पर क्यों रीझते?

बहार — तुम्हारा हुस्न तुम्हारे मियाँ को मुबारक हो! हम तो तुम्हारी आवाज पर मिटे हुए हैं।

नाजुक — और मैं तुम्हारे हुस्न पर जान देती हूँ। अब मैं भी बनाव-चुनाव करना तुमसे सीखूँगी।

नाजुक — बहन, अब तुम झेंपती हो। जब कभी तुम मिलीं, तुम्हें बनते-ठनते देखा। मुझसे दो-तीन साल बड़ी हो, मगर बारह बरस की बनी रहती हो। हैं तुम्हारे मियाँ किस्मत के धनी।

बहार — सुनो बहन, हमारी राय यह है कि अगर औरत समझदार हो, तो मर्द की ताकत नहीं कि उसे बाहर का चस्का पड़े।

साचिक के दिन जब चाँदी का पिटारा बाहर आया, तो खोजी बार-बार पिटारे का ढकना उठा कर देखने लगे कि कहीं शीशियाँ न गिरने लगें। मोतिये का इत्र खुदा जाने, किन दिक्कतों से लाया हूँ। यह वह इत्र है, जो आसफुद्दौला के यहाँ से बादशाह की बेगम के लिए गया था।

एक आदमी ने हँस कर कहा — इतना पुराना इत्र हुजूर को कहाँ से मिल गया?

खोजी — हूँ! कहाँ से मिल गया! मिल कहाँ से जाता? महीनों दौड़ा हूँ, तब जाके यह चीज हाथ लगी है।

आदमी — क्यों साहब यह बरसों का इत्र चिटक न गया होगा?

खोजी — वाह! अक्ल बड़ी कि भैंस? बादशाही कोठों के इत्र कहीं चिटका करते हैं? यह भी उन गंधियों का तेल हुआ, जो फेरी लगाते फिरते हैं!

आदमी — और क्यों साहब, केवड़ा कहाँ का है?

खोजी — केवड़िस्तान एक मुकाम है, कजलीवन के पास। वहाँ के केवड़ों से खींचा गया है।

आदमी — केवड़िस्तान! यह नाम तो आज ही सुना।

खोजी — अभी तुमने सुना ही क्या है? केवड़िस्तान का नाम ही सुन कर घबड़ा गए।

आदमी — क्यों हुजूर, यह कजलीवन कौन सा है, वही न, जहाँ घोड़े बहुत होते हैं?

खोजी — (हँस कर) अब बनाते हैं आप। कजलीवन में घोड़े नहीं, खास हाथियों का जंगल है।

आदमी — क्यों जनाब, केवड़िस्तान से तो केवड़ा आया, और गुलाब कहाँ का है? शायद गुलाबिस्तान का होगा?

खोजी — शाबाश! यह हमारी सोहबत का असर है कि अपने परों आप उड़ने लगे। गुलाबिस्तान कामरू-कमच्छा के पास है, जहाँ का जादू मशहूर है।

रात को जब साचिक का जुलूस निकला तो खोजी ने एक पनशाखे वाली का हाथ पकड़ा और कहा — जल्दी-जल्दी कदम बढ़ा।

वह बिगड़ कर बोली — दूर मुए! दाढ़ी झुलस दूँगी, हाँ। आया वहाँ से बरात का दारोगा बन के, सिवा मुरहेपन के दूसरी बात नहीं।

खोजी — निकाल दो इस हरामजादी को यहाँ से।

औरत — निकाल दो इस मूड़ीकाटे को।

खोजी — अब मैं छूरी भोंक दूँगा, बस!

औरत — अपने पनशाखे से मुँह झुलस दूँगी। मुआ दीवाना, औरतों को रास्ते में छेड़ता चलता है।

खोजी — अरे मियाँ कांस्टेबिल, निकाल दो इस औरत को।

औरत — तू खुद निकाल दे, पहले।

जुलूस के साथ कई बिगड़े दिल भी थे। उन्होंने खोजी को चकमा दिया — जनाब, अगर इसने सजा न पाई तो आपकी बड़ी किरकिरी होगी। बदरोबी हो जायगी। आखिर, यह फैसला हुआ, आप कमर कस कर बड़े जोश के साथ पनशाखे वाली की तरफ झपटे। झपटते ही उसने पनशाखा सीधा किया और कहा — अल्लाह की कसम! न झुलस दूँ तो अपने बाप की नहीं।

लोगों ने खोजी पर फबतियाँ कसनी शुरू कीं।

एक — क्यों मेजर साहब, अब तो हारी मानी?

दूसरा — ऐं! करौली और छुरी क्या हुई!

तीसरा — एक पनशाखे वाली से नहीं जीत पाते, बड़े सिपाही की दुम बने हैं!

औरत — क्या दिल्लगी है! जरा जगह से बढ़ा, और मैंने दाढ़ी और मूँछ दोनों झुलस दिया।

खोजी — देखो, सब के सब देख रहे हैं कि औरत समझ कर इसको छोड़ दिया। वरना कोई देव भी होता तो हम बे कत्ल किए न छोड़ते इस वक़्त।

जब साचिक दुलहिन के घर पहुँचा, तो दुलहिन की बहनों ने चंदन से समधिन की माँग भरी। हुस्नआरा का निखार आज देखने के काबिल था। जिसने देखा, फड़क गई। दुलहिन को फूलों का गहना पहनाया गया। इसके बाद छड़ियों की मार होने लगी। नाजुकअदा और जानी बेगम के हाथ में फूलों की छड़ियाँ थीं। समधिनों पर इतनी छड़ियाँ पड़ीं की बेचारी घबड़ा गईं।

जब माँझे और साचिक की रस्म अदा हो चुकी तो मेहँदी का जुलूस निकला। दुलहिन के यहाँ महफिल सजी हुई थी। डोमिनियाँ गा रही थीं। कमरे की दीवारें इस तरह रँगी हुई थीं कि नजर नहीं ठहरती थी। छतगीर की जगह सुर्ख मखमल का था। झाड़ और कँवल, मृदंग और हाँड़ियाँ सब सुर्ख। कमरा शीशमहल हो गया था। बेगमें भारी-भारी जोड़े पहने चहकती

फिरती थीं। इतने में एक सुखपाल ले कर महरियाँ सहन में आईं। उस पर से एक बेगम साहब उतरीं, जिनका नाम परीबानू था।

सिपहआरा बोलीं — हाँ, अब नाजुकअदा बहन की जवाब देनेवाली आ गईं। बराबर की जोड़ है! यह कम न वह कम।

रूहअफजा — नाम बड़ा प्यारा है।

नाजुक — प्यारा क्यों न हो। इनके मियाँ ने यह नाम रखा है।

परीबानू — और तुम्हारे मियाँ ने तुम्हारा नाम क्या रखा है। चरबाँक महल?

इस पर बड़ी हँसी उड़ी। बारह बजे रात को मेहंदी रवाना हुई। जब जुलूस सज गया तो ख्वाजा साहब आ पहुँचे और आते ही गुल मचाना शुरू किया — सब चीजें करीने के साथ लगाओ और मेरे हुक्म के बगैर कोई कदम भी आगे न रखे। वरना बुरा होगा।

सजावट के तख्त बड़े-बड़े कारीगरों से बनवाए गए थे। जिसने देखा, दंग हो गया।

एक — यों तो सभी चीजें अच्छी हैं, मगर तख्त सबसे बढ़-चढ़ कर हैं।

दूसरा — बड़ा रुपया इन्होंने सर्फ किया है साहब।

तीसरा — ऐसा मालूम होता है कि सचमुच के फूल खिले हैं।

चौथा — जरा चंडूबाजों के तख्त को देखिए। ओहो-हो! सब के सब औंधे पड़े हुए हैं। आँखों से नशा टपका पड़ता है। कमाल इसे कहते हैं। मालूम होता है, सचमुच चंडूखाना ही है। वह देखिए, एक बैठा हुआ किस मजे से पौंडा छील रहा है।

इसके बाद तुर्क सवारों का तख्त आया। जवान लाल बानात की कुर्तियाँ पहने, सिर पर बाँकी टोपियाँ दिए, बूट चढ़ाए, हाथ में नंगी तलवारें लिए, बस यही मालूम होता था कि रिसाले ने अब धावा किया।

जब जुलूस दूल्हा के यहाँ पहुँचा तो बेगमें पालकियों से उतरीं। दूल्हा की बहनें और भावजें दरवाजे तक उन्हें लाने आईं। सब समधिनें बैठीं तो डोमिनियों ने मुबारकबाद गाई। फिर गालियों की बौछार होने लगी। आज़ाद को जब यह खबर हुई तो बहुत ही बिगड़े; मगर किसी ने एक न सुनी। अब आज़ाद के हाथों में मेहँदी लगाने की बारी आई। उनका इरादा था कि एक ही उँगली में मेहँदी लगाएँ, मगर जब एक तरफ सिपहआरा और दूसरी तरफ रूहअफजा बेगम ने दोनों हाथों में मेहंदी लगानी शुरू की तो उनकी हिम्मत न पड़ी कि हाथ खींच लें।

हँसी-हँसी में उन्होंने कहा — हिंदुओं के देखा-देखी हम लोगों ने यह रस्म सीखी है। नहीं तो अरब में कौन मेहंदी लगाता है।

सिपहआरा — जिन हाथों से तलवार चलाई, उन हाथों को कोई हँस नहीं सकता। सिपाही को कौन हँसेगा भला?

रूहअफजा — क्या बात कही है! जवाब दो तो जानें।

दो बजे रात को रूहअफजा बेगम को शरारत जो सूझी तो गेरू घोल कर सोते में महरियों को रँग दिया और लगे हाथ कई बेगमों के मुँह भी रँग दिए। सुबह को जानी बेगम उठीं तो उनको देख कर सब की सब हँसने लगीं। चकराईं कि आज माजरा क्या है। पूछा — हमें देख कर हँस रही हो क्या!

रूहअफजा — घबराओ नहीं, अभी मालूम हो जायगा।

नाजुक — कुछ अपने चेहरे की भी खबर है?

जानी — तुम अपने चेहरे की तो खबर लो।

दोनों आईने के पास जाके देखती हैं, तो मुँह रँगा हुआ। बहुत शरमिंदा हुईं।

रूहअफजा — क्यों बहन, क्या यह भी कोई सिंगार है?

जानी — अच्छा, क्या मुजायका है; मगर अच्छे घर बयाना दिया। आज रात होने दो। ऐसा बदला लूँ कि याद ही करो।

रूहअफजा – हम दरवाजे बन्द करके सो रहेंगे। फिर कोई क्या करेगा!

जानी – चाहे दरवाजा बन्द कर लो, चाहे दस मन का ताला डाल दो, हम उस स्याही से मुँह रंगेंगी, जिससे जूते साफ किए जाते हैं।

रूहअफजा – बहन, अब तो माफ करो। और यों हम हाजिर हैं। जूतों का हार गले में डाल दो।

इस तरह चहल-पहल के साथ मेहंदी की रस्म अदा हुई।

110

खोजी ने जब देखा कि आज़ाद की चारों तरफ तारीफ हो रही है, और हमें कोई नहीं पूछता, तो बहुत झल्लाए और कुल शहर के अफीमचियों को जमा करके उन्होंने भी जलसा किया और यों स्पीच दी – भाइयों! लोगों का खयाल है कि अफीम खा कर आदमी किसी काम का नहीं रहता। मैं कहता हूँ, बिलकुल गलत। मैंने रूम की लड़ाई में जैसे-जैसे काम किए, उन पर बड़े से बड़ा सिपाही भी नाज कर सकता है। मैंने अकेले दो-दो लाख आदमियों का मुकाबिला किया है। तोपों के सामने बेधड़क चला

गया हूँ। बड़े-बड़े पहलवानों को नीचा दिखा दिया है। और मैं वह आदमी हूँ, जिसके यहाँ सत्तर पुश्तों से लोग अफीम खाते आए हैं।

लोग — सुभान अल्लाह! सुभान-अल्लाह!!

खोजी — रही अक्ल की बात, तो मैं दुनिया के बड़े से बड़े शायर, बड़े से बड़े फिलास्फर को चुनौती देता हूँ कि वह आकर मेरे सामने खड़ा हो जाय। अगर एक डपट में भगा न दूँ तो अपना नाम बदल डालूँ।

लोग — क्यों न हो।

खोजी — मगर आप लोग कहेंगे कि तुम अफीम की तारीफ करके इसे और गिराँ कर दोगे, क्योंकि जिस चीज की माँग ज्यादा होती है, वह महँगी बिकती है। मैं कहता हूँ कि इस शक को दिल में न आने दीजिए; क्योंकि सबसे ज्यादा जरूरत दुनिया में गल्ले की है। अगर माँग के ज्यादा होने से चीजें महँगी हो जातीं तो गल्ला अब तक देखने को भी न मिलता। मगर इतना सस्ता है कि कोरी चमार, धुनिये, जुलाहे सब खरीदते और खाते हैं। वजह यह कि जब लोगों ने देखा कि गल्ले की जरूरत ज्यादा है, तो गल्ला ज्यादा बोने लगे। इसी तरह जब अफीम की माँग होगी, तो गल्ले की तरह बोई जायगी और सस्ती बिकेगी।

इसलिए हर एक सच्चे अफीमची का फर्ज है कि वह इसके फायदों को दुनिया पर रोशन कर दे।

एक — क्या कहना है! क्या बात पैदा की।

दूसरा — कमाल है, कमाल!

तीसरा — आप इस फन के खुदा हैं।

चौथा — मेरी तसल्ली नहीं हुई। आखिर, अफीम दिन-दिन क्यों महँगी होती जाती है?

पाँचवाँ — चुप रह! नामाकूल? ख्वाजा साहब की बात पर एतराज करता है! जा कर ख्वाजा साहब के पैरों पर गिरो और कहो कि कुसूर माफ कीजिए।

खोजी — भाइयो! किसी भाई को जलील करना मेरी आदत नहीं। गोकि खुदा ने मुझे बड़ा रुतबा दिया है और मेरा नाम सारी दुनिया में रोशन है; मगर आदमी नहीं, आदमी का जौहर है। मैं अपनी जबान से किसी को कुछ न कहूँगा। मुझे यही कहना चाहिए कि मैं दुनिया में सबसे ज्यादा नालायक, सबसे ज्यादा बदनसीब और सबसे ज्यादा जलील हूँ। मैंने मिस्र के पहलवान को पटकनी नहीं दी थी, उसी ने उठा के मुझे दे मारा था। जहाँ गया, पिट के आया। गो दुनिया जानती है कि ख्वाजा साहब का

जोड़ नहीं; मगर अपनी जबान से मैं क्यों कहूँ। मैं तो यही कहूँगा कि बुआ जाफरान ने मुझे पीट लिया और मैंने उफ तक न की।

एक — खुदा बख्शे आपको। क्या कहना है उस्ताद।

दूसरा — पिट गए और उफ तक न की?

खोजी — भाइयों! गोकि मैं अपनी शान में इज्जत के बड़े-बड़े खिताब पेश कर सकता हूँ; मगर जब मुझे कुछ कहना होगा तो यही कहूँगा कि मैं झक मारता हूँ। अगर अपना जिक्र करूँगा तो यही कहूँगा कि मैं पाजी हूँ। मैं चाहता हूँ कि लोग मुझे जलीज समझें ताकि मुझे गुरूर न हो।

लोग — वाह-वाह! कितनी आजिजी है! जभी तो खुदा ने आपको यह रुतबा दिया।

खोजी — आजकल जमाना नाजुक है। किसी ने जरा टेढ़ी बात की और धर लिए गए। किसी को एक धौल लगाई और चालान हो गया। हाकिम ने 10 रुपया जुर्माना कर दिया या दो महीने की कैद। अब बैठे हुए चक्की पीस रहे हैं। इस जमाने में अगर निबाह है, तो आजिजी में। और अफीम से बढ़ कर आजिजी का सबक देने वाली दूसरी चीज नहीं।

लोग — क्या दलीलें हैं! सुभान अल्लाह!

खोजी — भाइयों, मेरी इतनी तारीफ न कीजिए, वरना मुझे गुरूर हो जायगा। मैं वह शेर हूँ, जिसने जंग के मैदान में करोड़ों को नीचा दिखाया। मगर अब तो आपका गुलाम हूँ।

एक — आप इस काबिल हैं कि डिबिया में बन्द कर दे।

दूसरा — आपके कदमों की खाक ले कर ताबीज बनानी चाहिए।

तीसरा — इस आदमी की जबान चूमने के काबिल है।

चौथा — भाई, यह सब अफीम के दम का जहूरा है।

खोजी — बहुत ठीक। जिसने यह बात कही, हम उसे अपना उस्ताद मानते हैं। यह मेरी खानदानी सिफत है। एक नकल सुनिए — एक दिन बाजार में किसी ने चिड़ीमार से एक उल्लू के दाम पूछे। उसने कहा, आठ आने। उसी के बगल में एक और छोटा उल्लू भी था। पूछा, इसकी क्या कीमत है? कहा, एक रुपया। तब तो गाहक ने कान खड़े किए और कहा — इतने बड़े उल्लू के दाम आठ आने और जरा से जानवर का मोल एक रुपया? चिड़िमार ने कहा — आप तो हैं उल्लू। इतना नहीं समझते कि इस बड़े उल्लू में सिर्फ यह सिफत है कि यह उल्लू है और इस छोटे में दो सिफतें हैं। एक यह कि खुद उल्लू है, दूसरे उल्लू का पट्ठा है। तो भाइयो! आपका यह गुलाम सिर्फ उल्लू नहीं, बल्कि उल्लू का पट्ठा है।

एक — हम आज से अपने को उल्लू की दुम फाख्ता लिखा करेंगे।

दूसरा — हम तो जाहिल आदमी हैं, मगर अब अपना नाम लिखेंगे तो गधे का नाम बढ़ा देंगे। आज से हम आजिजी सीख गए।

खोजी — सुनिए, इस उल्लू के पट्ठे ने जो-हो काम किया, कोई करे तो जानें; उसकी टाँग की राह निकल जायँ। पहाड़ों को हमने काटा और बड़े-बड़े पत्थर उठा कर दुश्मन पर फेंके। एक दिन 44 मन का एक पत्थर एक हाथ से उठाकर रूसियों पर मारा तो दो लाख पच्चीस हजार सात सौ उनसठ आदमी कुचल के मर गए।

एक — ओफ्फोह! इन दुबले-पतले हाथ-पाँवों पर यह ताकत!

खोजी — क्या कहा? दुबले-पतले हाथ-पाँव! यह हाथ-पाँव दुबले-पतले नहीं। मगर बदन-चोर है। देखने में तो मालूम होता है कि मरा हुआ आदमी है; मगर कपड़े उतारे और देव मालूम होने लगा। इसी तरह मेरे कद का भी हाल है। गँवार आदमी देखे तो कहे कि बौना है। मगर जानने वाले जानते हैं कि मेरा कद कितना ऊँचा है। रूम में जब दो-एक गँवारों ने मुझे बौना कहा, तो बेअख्तियार हँसी आ गई। यह खुदा की देन है कि हूँ तो मैं इतना ऊँचा; मगर कोई कलियुग की खूँटी कहता है, कोई बौना

बनाता है। हूँ तो शरीफ़ज़ादा; मगर देखनेवाले कहते हैं कि यह कोई पाजी है। अक्ल इस कदर कूट-कूट कर भरी है कि अगर अफलातून जिंदा होता, तो शागिर्दी करता। मगर जो देखता है, कहता है कि यह गधा है। यह दरजा अफीम की बदौलत ही हासिल हुआ है। अब तो यह हाल है कि अगर कोई आदमी मेरे सिर को जूतों से पीटे, तो उफ न करूँ। अगर किसी ने कहा कि ख्वाजा गधा है, तो हँस कर जवाब दिया कि मैं ही नहीं, मेरे बाप और दादा भी ऐसे ही थे।

एक — दुनिया में ऐसे-ऐसे औलिया पड़े हुए हैं!

खोजी — मगर इस आजिजी के साथ दिलेर भी ऐसा हूँ कि किसी ने बात कही और मैंने चाँटा जड़ा। मिस्र के नामी पहलवान को मारा। यह बात किसी अफीमची में नहीं देखी। मेरे वालिद भी तोलों अफीम पीते थे और दिन भर दुकानों पर चिलमें भरा करते थे। मगर यह बात उनमें भी न थी।

लोग — आपने अपने बाप का नाम रोशन कर दिया।

खोजी — अब मैं आप लोगों से चंडू की सिफत बयान करना चाहता हूँ। बगैर चंडू पिए आदमी में इनसानियत आ नहीं सकती। आप लोग शायद इसकी दलील चाहते होंगे। सुनिए —

बगैर लेटे हुए कोई चंडू पी नहीं सकता और लेटना अपने को खाक में मिलाना है। बाबा सादी ने कहा है —

खाक शो पेश अजाँ कि खाक शवीं।

(मरने से पहले खाक हो जा।)

चंडू की दूसरी सिफत यह है कि हरदम लौ लगी रहती है। इससे आदमी का दिल रोशन हो जाता है। तीसरी सिफत यह है कि इसकी पीनक में फिक्र करीब नहीं आने पाती। चुस्की लगाई और गोते में आए। चौथी सिफत यह है कि अफीमची को रात भर नींद नहीं आती। और यह बात पहुँचे हुए फकीर ही को हासिल होती है। पाँचवीं सिफत यह है कि अफीमची तड़के ही उठ बैठता है। सबेरा हुआ और आग लेने दौड़े। और जमाना जानता है कि सबेरे उठने से बीमारी नहीं आती।

इस पर एक पुराने खुर्राट अफीमची ने कहा — हजरत, यहाँ मुझे एक शक है। जो लोग चीन गए हैं। वह कहते हैं कि वहाँ तीस बरस से ज्यादा उम्र का आदमी ही नहीं। इससे तो यही साबित होता है कि अफीमियों की उम्र कम होती है।

खोजी — यह आपसे किसने कहा? चीन वाले किसी को अपने मुल्क में नहीं जाने देते। असल बात यह है कि चीन में तीस बरस के बाद लड़का पैदा होता है।

लोग — क्या तीस बरस के बाद लड़का पैदा होता है! इसका तो यकीन नहीं आता।

एक — हाँ-हाँ होगा। इसमें यकीन न आने की कौन बात है। मतलब यह कि जब औरत तीस बरस की हो जाती है, तब कहीं लड़का पैदा होता है।

खोजी — नहीं-नहीं; यह मतलब हीं है। मतलब यह है कि लड़का तीस बरस तक हमल में रहता है।

लोग — बिलकुल झूठ! खुदा की मार इस झूठ पर।

खोजी — क्या कहा? यह आवाज किधर से आई? अरे, यह कौन बोला था? यह किसने कहा कि झूठ है?

एक — हुजूर, उस कोने से आवाज आई थी।

दूसरा — हुजूर, यह गलत कहते हैं। इन्हीं की तरफ से आवाज आई थी।

खोजी — उन बदमाशों को कत्ल कर डालो। आग लगा दो। हम, और झूठ! मगर नहीं, हमीं चूके। मुझे इतना गुस्सा न चाहिए। अच्छा साहब हम झूठे, हम गप्पी, बल्कि हमारे बाप बेईमान, जालसाज़ और जमाने भर के दगाबाज। आप लोग बतलाएँ, मेरी क्या उम्र होगी?

एक — आप कोई पचास के पेटे में होंगे।

दूसरा — नहीं-नहीं, आप कोई सत्तर के होंगे।

खोजी — एक हुई, याद रखिएगा हजरत। हमारा सिन न पचास का, न साठ का। हम दो ऊपर सौ बरस के हैं। जिसको यकीन न आए वह काफिर।

लोग — उफ्फोह, दो ऊपर सौ बरस का सिन है।

खोजी — जी हाँ, दो ऊपर सौ बरस का सिन है।

एक — अगर यह सही है तो यह एतराज उठ गया कि अफीमियों की उम्र कम होती है। अब भी अगर कोई अफीम न पिए, तो बदनसीब है।

खोजी — दो ऊपर सौ बरस का सिन हुआ और अब तक वही खमदम है कहो, हजार से लड़ें, कहो, लाख से। अच्छा अब आप लोग भी अपने-अपने तजरबे बयान करें। मेरी तो बहुत सुन चुके; अब कुछ अपनी भी कहिए।

इस पर गट्टू नाम का एक अफीमची उठ कर बोला — भाई पंचों, मैं कलवार हूँ। मुल शराब हमारे यहाँ नहीं बिकती। हम जब लड़के से थे, तब से हम अफीम पीते हैं। एक बार होली के दिन हम घर से निकले। ऐ बस, एक जगह कोई पचास हों, पैंतालिस

हों, इतने आदमी खड़े थे। किसी के हाथ में लोटा, किसी के हाथ में पिचकारी। हम उधर से जो चले, तो एक आदमी ने पीछे से दो जूता दिया, तो खोपड़ी भन्ना गई। अगर चाहता तो उन सबको डपट लेता, मगर चुप हो रहा।

खोजी — शाबाश! हम तुमसे बहुत खुश हुए गुट्टू।

गुट्टू — हुजूर की दुआ से यह सब है।

इसके बाद नूरखाँ नाम का एक अफीमची उठा। कहा — पंचो! हम हाथ जोड़ कर कहते हैं कि हमने कई साल से अफीम, चंडू पीना शुरू किया है। एक दिन हम एक चने के खेत में बैठे बूट खा रहे थे। किसान था दिल्लगीबाज। आया और मेरा हाथ पकड़ कर कानीहौज ले चला। मैं कान दबाए हुए उसके साथ चला आया।

इसके बाद कई अफीमचियों ने अपने-अपने हाल बयान किए। आखिर में एक बुड्ढे जोगादारी अफीमी ने खड़े हो कर कहा — भाइयों! आज तक अफीमियों में किसी ने ऐसा काम नहीं किया था। इसलिए हमारा फर्ज है कि हम अपने सरदार को कोई खिताब दे। इस पर सब लोगों ने मिलकर खुशी से तालियाँ बजाईं और खोजी को गीदी का खिताब दिया। खोजी ने उन सबका शुक्रिया अदा किया और मजलिस बरखास्त हुई।

111

आज बड़ी बेगम का मकान परिस्तान बना हुआ है। जिधर देखिए, सजावट की बहार है। बेगमें धमा-चौकड़ी मचा रही हैं।

जानी — दूल्हा के यहाँ तो आज मीरासिनों की धूम है। कहाँ तो मियाँ आज़ाद को नाच-गाने से इतनी चिढ़ थी कि मजाल क्या, कोई डोमिनी घर के अन्दर कदम रखने पाए। और आज सुनती हूँ कि तबले पर थाप पड़ रही है और गजलें, ठुमरियाँ, टप्पे गाए जाते हैं।

नाजुक — सुना है, आज सुरैया बेगम भी आने वाली हैं।

बहार — उस मालजादी का हमारे सामने जिक्र न किया करो।

नाजुक — (दाँतों तले उँगली दबा कर।) ऐसा न कहो, बहन!

जानी — ऐसी पाक-दामन औरत है कि उसका सा होना मुश्किल है।

नाजुक — यह लोग खुदा जाने, क्या समझती हैं सुरैया बेगम को।

बहार — ऐ है! सच कहना, सत्तर चूहे खा के बिल्ली हज को चली।

इतने में एक पालकी से एक बेगम साहब उतरीं। जानी बेगम और नाजुक अदा में इशारे होने लगे। यह सुरैया बेगम थीं।

सुरैया — हमने कहा, चल के जरी दुलहिन को देख आएँ।

रूहअफजा — अच्छी तरह आराम से बैठिए।

सुरैया — मैं बहुत अच्छी बैठी हूँ। तकल्लुफ क्या है।

नाजुक — यहाँ तो आपको हमारे और जानी बेगम के सिवा किसी ने न देखा होगा।

सुरैया — मैं तो एक बार हुस्नआरा से मिल चुकी हूँ।

सिपहआरा — और हमसे भी?

सुरैया — हाँ, तुमसे मिले थे, मगर बताएँगे नहीं।

सिपहआरा — कब मिले थे अल्लाह! किस मकान में थे?

सुरैया — अजी, मैं मजाक करती थी। हुस्नआरा बेगम को देख कर दिल शाद हो गया।

नाजुक — क्या हमसे ज्यादा खूबसूरत हैं?

सुरैया — तुम्हारी तो दुनिया के परदे पर जवाब नहीं है।

नाजुक — भला दूल्हा से आपसे बातचीत हुई थी?

सुरैया — बातचीत आपसे हुई होगी। मैंने तो एक दफा राह में देखा था।

नाजुक — भला दूसरा निकाह भी मंजूर करते हैं वह।

सुरैया — यह तो उनसे कोई जा के पूछे।

नाजुक — तुम्हीं पूछ लो बहन, खुदा के वास्ते।

सुरैया — अगर मंजूर हो दूसरा निकाह, तो फिर क्या?

नाजुक — फिर क्या, तुमको इससे क्या मतलब?

रूहअफजा — आखिर दूसरे निकाह के लिए किसे तजवीजा है।

नाजुक — हम खुद अपना पैगाम करेंगे।

रूहअफजा — बस, हद हो गई नाजुकअदा बहन! ओफ्फोह!

नाजुक — (आहिस्ता से) सुरैया बेगम, तुमने गलती की। धीरज न रख सकीं।

सुरैया —

हम जान फिदा करते, गर वादा वफा होता,
मरना ही मुकद्दर था, वह आते तो क्या होता!

नाजुक — हाँ, है तो यही बात। खैर, जो हुआ, अच्छा ही हुआ, मसलहत भी यही थी।

हुस्नआरा बेगम ने यह शेर सुना और नाजुक बेगम की बातें को तौला, तो समझ गईं कि हो न हो, सुरैया बेगम यही हैं। कनखियों से देखा और गरदन फेर कर इशारे से सिपहआरा को बुला कर कहा — इनको पहचाना? सोचो तो, यह कौन हैं?

सिपहआरा — ऐ बाजी, तुम तो पहेलियाँ बुझवाती हो।

हुस्नआरा — तुम ऐसी तबीयतदार, और कब तक न समझ सकीं?

सिपहआरा — तो कोई उड़ती चिड़िया तो नहीं पकड़ सकता।

हुस्नआरा — उस शेर पर गौर करो।

सिपहआरा — अख्खाह, (सुरैया बेगम की तरफ देख कर) अब समझ गई।

हुस्नआरा — है औरत हसीन।

सिपहआरा — हाँ हैं; मगर तुमसे क्या मुकाबला।

हुस्नआरा — सच कहना, कितनी जल्द समझ गई हूँ।

सिपहआरा — इसमें क्या शक है, मगर यह तुमसे कब मिली थीं? मुझे तो बाद नहीं आता।

हुस्नआरा — खुदा जाने। अलारक्खी बन के आने न पाती, जोगिन के भेस में कोई फटकने न देता। शिब्बोजान का यहाँ क्या काम?

सिपहआरा — शायद महरी-वहरी बन के गुजर हुआ हो।

हुस्नआरा — सच तो यह है कि हमको इनका आना बहुत खटकता है। इन्हें तो यह चाहिए था कि जहाँ आज़ाद का नाम सुनतीं, वहाँ से हट जातीं, न कि ऐसी जगह आना।

सिपहआरा — इनसे यहाँ तक आया क्योंकर गया?

हुस्नआरा — ऐसा न हो कि यहाँ कोई गुल खिले।

सिपहआरा ने जा कर बहार बेगम से कहा — जो बेगम अभी आई हैं, उनको तुमने पहचाना? सुरैया बेगम यही हैं। तब तो बहार बेगम के कान खड़े हुए। गौर से देख कर बोलीं — माशा-अल्लाह! कितनी हसीन औरत है! ऐसी नमकीनी भी कम देखने में आई।

सिपहआरा — बाजी को खौफ है कि कोई गुल न खिलाएँ।

बहार — गुल क्या खिलाएँगी। अब तो इनका निकाह हो गया।

सिपहआरा — ऐ है, बाजी! निकाह पर न जाना। यह वह खिलाड़ है कि घूँघट के आड़ में शिकार खेलें।

बहार — ऐ नहीं, क्यों बिचारी को बदनाम करती हो।

सिपहआरा — वाह! बदनामी की एक ही कही। कोई पेशा, कोई कर्म इनसे छूटा? लगावटबाजी में इनकी धूम है।

बहार — हम जब इस ढब पर आने भी दें।

उधर नाजुकअदा बेगम ने बातों-बातों में सुरैया बेगम से पूछा — बहन, यह बात अब तक न खुली कि तुम पादरी के यहाँ से क्यों निकल आईं। सुरैया बेगम ने कहा — बहन, इस जिक्र से रंज होता है। जो हुआ; वह हुआ, अब उसका घड़ी-घड़ी जिक्र करना फजूल है। लेकिन जब नाजुकअदा बेगम ने बहुत जिद की तो उन्होंने कहा — बात यह हुई कि बेचारे पादरी ने मुझ पर तरस खा कर अपने घर में रखा और जिस तरह कोई खास अपनी बेटियों से पेश आता है, उसी तरह मुझसे पेश आते। मुझे पढ़ाया-लिखाया, मुझसे रोज कहते कि तुम ईसाई हो जाओ; लेकिन मैं हँस के टाल दिया करती थी। एक दिन पादरी साहब तो चले गए थे किसी काम को, उनका भतीजा, तो फौज में नौकर है, उनसे मिलने आया। पूछा — कहाँ गए हैं? मैंने कहा — कहीं बाहर गए हैं। इतना सुनना था कि वह गाड़ी से उतर आया और अपनी जेब से बोतल निकाल कर शराब पी। जब नशा हुआ तो मुझसे कहने लगा, तुम भी पियो। उसने समझा, मैं राजी हूँ। मेरा हाथ पकड़

लिया। मैं उससे अपना हाथ छुड़ाने लगी। मगर वह मर्द, मैं औरत! फिर फौजी जवान, कुछ करते-धरते नहीं बनती थी। आखिर बोली — साहब, तुम फौज के जवान हो। मैं भला तुमसे क्या जीत पाऊँगी? मेरा हाथ छोड़ दो। इस पर हँस कर बोला — हम बिना पिलाए न मानेंगे। मेरा तो खून सूख गया। अब करूँ तो क्या करूँ। अगर किसी को पुकारती हूँ, तो यह इस वक़्त मार ही डालेगा। और बेइज्जत करने पर तो तुला ही हुआ है। चाहा कि झपट के निकल जाऊँ, पर उसने मुझे गोद में उठा लिया और बोला — हमसे शादी क्यों नहीं कर लेतीं? मेरा बदन थर-थर काँप रहा था कि या खुदा, आज कैसे इज्जत बचेगी, और क्या होगा! मगर आबरू को बचानेवाला अल्लाह है। उसी वक़्त पादरी साहब आ पहुँचे। बस, अपना सा मुँह ले कर रह गया। चुपके से खिसक गया। पादरी साहब उसको तो क्या कहते। जब बराबर का लड़का या भतीजा कमाता-धमाता हो, तो बड़ा-बूढ़ा उसका लिहाज करता ही है। जब वह भाग गया, तो मेरे पास आकर बोले — मिस पालेन, अब तुम यहाँ नहीं रह सकतीं।

मैं — पादरी साहब, इसमें मेरा जरा कुसूर नहीं।

पादरी — मैंने खुद देखा कि तुम और वह हाथापाई करते थे।

मैं — वह मुझे जबर्दस्ती शराब पिलाना चाहते थे।

पादरी — अजी, मैं खूब जानता हूँ। मैं तुमको बहुत नेक समझता था।

मैं — पूरी बात तो सुन लीजिए।

पादरी — अब तुम मेरी आँखों से गिर गईं। बस अब तुम्हारा निबाह यहाँ नहीं हो सकता। कल तक तुम अपना बंदोबस्त कर लो। मैं नहीं जानता था कि तुम्हारे यह ढंग हैं।

उसी दिन रात को मैं वहाँ से भागी।

उधर बड़ी बेगम साहब इंतजाम करने में लगी हुई थीं। बात-बात पर कहती जाती थीं कि अल्लाह! आत तो बहुत थकी। अब मेरा सिन थोड़ा हैं कि इतने चक्कर लगाऊँ। उस्तानी जी हाँ-में-हाँ मिलाती जाती थीं।

बड़ी बेगम — उस्तानी जी, अल्लाह गवाह है, आज बहुत शल हो गई।

उस्तारी — अरे तो हुजूर दौड़ती भी कितनी हैं! इधर से उधर, उधर से इधर।

महरी — दूसरा हो तो बैठ जाय।

उस्तानी — इस सिन में इतनी दौड़-धूप मुश्किल है।

महरी — ऐसा न हो, दुश्मनों की तबीयत खराब हो जाय। आखिर हम लोग किस लिए हैं?

बड़ी बेगम — अभी दो-तीन दिन तो न बोलो, फिर देखा जायगा। इसके बाद करना ही क्या है।

उस्तानी — यह क्यों? खुदा सलामत रखे; पोते-पोतियाँ न होंगे?

बड़ी बेगम — बहन, जिंदगानी का कौन ठिकाना है।

अब बरात का हाल सुनिए। कोई पहर रात गए बड़ी धूम-धाम से बरात रवाना हुई। सबके आगे निशान का हाथी झूमता हुआ जाता था। हाथी के सामने कदम-कदम पर अनार छूटते जाते थे। महताब की रोशनी से चाँद का रंग फक था। चर्खी की आनबान से आसमान का कलेजा धक था। तमाशाइयों की भीड़ से दोनों तरफ के कमरे फटे पड़ते थे। जिस वक़्त गोरों का बाजा चौक में पहुँचा और उन्होंने बैंड बजाया तो लोग समझे कि आसमान के फरिश्ते बाजा बजाते-बजाते उतर आए हैं।

इतने में मियाँ खोजी इधर-उधर फुदकते हुए आए।

खोजी — ओ शहनाईवालो! मुँह न फैलाओ बहुत।

लोग — आइए, आइए! बस आप ही की कसर थी।

खोजी — अरे, हम क्या कहते हैं? मुँह न फैलाओ बहुत।

लोग — कोई आपकी सुनता ही नहीं।

खोजी — ये तो नौसिखिए हैं। मेरी बातें क्या समझेंगे।

लोग — इनसे कुछ फर्माइश कीजिए;

खोजी — अच्छा, वल्लाह! वह समाँ बाँधू की दंग हो जाइए। यह चीज छेड़ना भाई —

करेजवा में दरद उठी;
कासे कहूँ ननदी मोरे राम।
सोती थी मैं अपने मँदिल में;
अचानक चौंक पड़ी मोरे राम।
(करेजवा में दरद उठी....।)

लोग — सुभान-अल्लाह! आप इस फन के उस्ताद हैं। मगर शहनाई वाले अब तक आपका हुक्म नहीं मानते।

खोजी — नहीं भई, हुक्म तो मानें दौड़ते हुए और न मानें तो मैं निकाल दूँ। मगर इसको क्या किया जाय कि अनाड़ी हैं। बस, जरा मुझे आने में देर हुई और सारा काम बिगड़ गया।

इतने में एक दूसरे आदमी ने खोजी के नजदीक जा कर जरा कंधे का इशारा किया तो खोजी लड़खड़ाए और उनके चेले अफीमी भाइयों ने बिगड़ना शुरू किया।

एक — अरे मियाँ! क्या आँखों के अंधे हो?

दूसरा — ईंट की ऐनक लगाओ मियाँ।

तीसरा — और ख्वाजा साहब भी धक्का देते तो कैसी होती?

चौथा — मुँह के बल गिरे होते और क्या।

पाँचवाँ — अजी, यों कहो कि नाक सिलपट हो जाती।

खोजी — अरे भाई, अब इससे क्या वास्ता है। हम किसी से लड़ते-झगड़ते थोड़े ही हैं। मगर हाँ, अगर कोई गीदी हमसे बोले तो इतनी करौलियाँ भोंकी हों कि याद करे।

जब बरात दुलहिन के घर पहुँची तो दूल्हे को दरवाजे के सामने लाए और दुलहिन का नहाया हुआ पानी घोड़े के सुमों के नीचे डाला। इसके बाद घी और शक्कर मिला कर घोड़े के पाँव में लगाया। दूल्हा महल में आया। दूल्हा की बहनें उस पर दुपट्टे का आँचल डाले हुए थीं। दुलहिन की तरफ से औरतें बीड़ा हर कदम पर डालती जाती थीं। इस तरह दूल्हा मड़वे के नीचे पहुँचा। उसी वक़्त एक औरत उठी और रूमाल से आँखें पोंछती हुई बाहर चली गई। यह सुरैया बेगम थीं।

आज़ाद मँड़वे के नीचे उस चौकी पर खड़े किए गए जिस पर दुलहिन नहाई थी। मीरासिनों ने दुलहिन के उबटन का, जो माँझे

के दिन से रखा हुआ था, एक भेड़ और एक शेर बनाया और दूल्हा से कहा — कहिए, दूल्हा भेड़, दुलहिन शेर।

आज़ाद — अच्छा साहब, हम शेर, वह भेड़, बस?

डोमिनी — ऐ वाह! यह तो अच्छे दूल्हा आए। आप भेड़, वह शेर।

आज़ाद — अच्छा साहब यों सही। आप भेड़, वह शेर।

डोमिनी — ऐ हुजूर, कहिए, यह शेर, मैं भेड़।

आज़ाद — अच्छा साहब, मैं भेड़, वह शेर।

इस पर खूब कहकहा पड़ा। इसी तरह और भी कई रस्में अदा हुई, और तब दूल्हा महफिल में गया। यहाँ नाच-गाना हो रहा था। एक नाजनीन बीच में बैठी थीं, मजाक हो रहा था। एक नवाब साहब ने यह फिकरा कसा — बी साहब, आपने गजब का गला पाया है। उसकी तारीफ ही करना फजूल है।

नाजनीन — कोई समझदार तारीफ करे तो खैर, अताई-अनाड़ी ने तारीफ की तो क्या?

नवाब — ऐ साहब, हम तो खुद तारीफ करते हैं।

नाजनीन — तो आप अपना शुमार भी समझदारों में करते हैं? बतलाइए, यह बिहाग का वक़्त है या घनाक्षरी का।

नवाब — यह किसी ढाड़ी-बचे से पूछो जाके।

नाजनीन — ऐ लो! जो इस फन के नुकते समझे, वह ढाड़ी-बचा कहलाए। वाह री अक्ल, वह अमीर नहीं, गँवार है, जो दो बातें न जानता हो — गाना और पकाना। आपके से दो-एक घामड़ रईस शहर में और हों तो सारा शहर बस जाय।

नाजनीन ने यह गजल गाई —

लगा न रहने दे झगड़े को यार तू बाकी;
रुके न हाथ अभी है रँगे-गुलू बाकी।
जो एक रात भी सोया वह गुल गले मिल कर;
तो भीनी-भीनी महीनों रही है बू बाकी।
हमारे फूल उठा के वह बोला गुँच-देहन;
अभी तलक है मुहब्बत की इसमें बू बाकी।
फिना है सबके लिए मुझ पे कुछ नहीं मौकूफ;
यह रंज है कि अकेला रहेगा तू बाकी।
जो इस जमाने में रह जाय आबरू बाकी।

नवाब — हाँ, यह सबसे ज्यादा मुकद्दम चीज है।

नाजनीन — मगर हयादारों के लिए। बगड़ेबाजों को क्या?

इस पर इस जोर से कहकहा पड़ा कि नवाब साहब झेंप गए।

नाजनीन — अब कुछ और फरमाइए हुजूर! चेहरे का रंग क्यों फक हो गया?

मिर्जा — आपसे नवाब साहब बहुत डरते हैं।

नवाब — जी हाँ, हरामजादे से सभी डरा करते हैं।

नाजनीन — ऐ है, जभी आप अपने अब्बाजान से इतना डरते हैं।

इस पर फिर कहकहा पड़ा और नवाब साहब की जबान बन्द हो गई।

उधर दुलहिन को सात सुहागिनों ने मिल कर इस तरह सँवारा कि हुस्न की आब और भी भड़क उठी। निकाह की रस्म शुरू हुई। काजी साहब अन्दर आए और दो गवाहों को साथ लाए। इसके बाद दुलहिन से पूछा गया कि आज़ाद पाशा के साथ निकाह मंजूर है? दुलहिन ने शर्म से सिर झुका लिया।

बड़ी बेगम — ऐ बेटा, कह दो।

रूहअफजा — हुस्नआरा, बोलो बहन। देर क्यों करती हो?

नाजुक — बस, तुम हाँ कह दो।

जानी — (आहिस्ता से) बजरे पर सैर कर चुकीं, हवा खा चुकीं और अब इस वक़्त नखरे बघारती हैं।

आखिर बड़ी कोशिश के बाद हुस्नआरा ने धीरे से 'हूँ' कहा।

बड़ी बेगम — लीजिए, दुलहिन ने हुँकारी भरी।

काजी — हमने तो आवाज नहीं सुनी।

बड़ी बेगम — हमने सुन लिया, बहुत से गवाह हैं।

काजी साहब ने बाहर आकर दूल्हा से भी यही सवाल किया।

आज़ाद — जी हाँ कुबूल किया!

काजी साहब चले गए और महफिल में तायफों ने मिल कर मुबारकबाद गाई। इसके बाद एक परी ने यह गजल गाई —

तड़प रहे हैं शबे-इंतजार सोने दे;
न छेड़ हमको दिले-बेकरार सोने दे।
कफस में आँख लगी है अभी असीरों की,
गरज न बाग में अबरे-बहार सोने दे।
अभी तो सोए हैं यादे-चमन में अहले-कफस;
जगा न उनको नसीमे बहार सोने दे।
तड़प रहे हैं दिले-बेकरार सोने दे।

शरबत-पिलाई के बाद दूल्हा और दुलहिन एक ही पलंग पर बिठाए गए। गेतीआरा ने कहा — बहन, जूती तो छुलाओ।

जानी — वाह! यह तो सिमटी-सिमटाई बैठी हैं।

बहार — आखिर हया भी तो कोई चीज है!

नाजुक — अरे, जूती कंधे पर छुआ लो बहन, वाह!

उस्तानी — अगले वक्तों में तो सिर पर पड़ती थीं।

नाजुक — इस जूती का मजा कोई मर्दों के दिल से पूछे।

जब दुलहिन ने जरा भी जुंबिश न की तो बहार बेगम ने दुलहिन के दाहने पैर की जूती दूल्हा के कंधे पर छुला ली।

नाजुक — कहिए, आपकी डोली के साथ चलूँगा।

रूहअफजा — और जूतियाँ झाड़ के धरूँगा।

जानी — और सुराही हाथ में ले चलूँगा।

आज़ाद — ऐ! क्यों नहीं, जरूर कहूँगा।

जानी — रंडियों से नखरे बहुत सीखे हैं।

इस फिकरे पर ऐसा कहकहा पड़ा कि मियाँ आज़ाद शर्मा गए। जानी बेगम इक्कीस पान का बीड़ा लाईं और उसे कई बार आज़ाद के मुँह तक ला-ला कर हटाने के बाद खिला दिया।

सिपहआरा — सुहाग लाईं और दूल्हा के कान में कहा — कहो, सोने में सुहागा मोतियों में धागा और बने का जी बनी से लागा!

इसके बाद आरसी की रस्म अदा हुई।

जानी — बन्नू, जल्दी आँख न खोलना।

नाजुक — जब तक अपने मुँह से गुलाम न बनें।

हैदरी — कहिए, बीबी, मैं आपका गुलाम हूँ।

आज़ाद — बीबी मैं आपका बिन दामों गुलाम हूँ।

बड़ी बेगम — बेटा, अब तो कहवा लिया, अब आँखें खोल दो।

जानी — एक ही बार तो कहा।

हैदरी — ऐ हुजूर, खुशामद तो कीजिए।

आज़ाद — यह खुशामद से न मानेंगी।

हैदरी — हो कहा है, उसका खयाल रहे। बीवी के गुलाम बने रहिएगा।

आखिर बड़ी मुश्किलों से दुलहिन ने आँखें खोलीं, मगर आँखों में आँसू भरे हुए थे। बे-अख्तियार रोने लगीं। लोग समझाते-समझाते आरी हो गए, मगर आँसू न थमे। तब आज़ाद ने सिर झुका कर कान में कहा — यह क्या करती हो, दिल को मजबूत रखो।

रूहअफजा — बहन, खुदा के लिए चुप हो जाओ। इसका कौन-सा मौका है?

बहार — अम्माँजान, आप ही समझाएँ। नाहक अपने को हलाकान करती हैं हुस्नआरा।

उस्तानी — तर कपड़े से मुँह पोंछो।

जब हुस्नआरा का जी बहाल हुआ तो आज़ाद ने सुहाग पुड़े से मसाला निकाल कर दुलहिन की माँग भरी। तब दुलहिन को गोद में उठा कर सुखपाल पर बिठा दिया। वहाँ जितनी औरतें थीं, सबकी आँखों में आँसू जारी हो गए और बड़ी बेगम तो पछाड़ें खाने लगीं। जब बरात रुखसत हो गई तो बातें होने लगीं -

रुहअफजा — अल्लाह करे, आज़ाद ने जितनी तकलीफें उठाई हैं, उतना ही आराम भी पाएँ।

अब्बासी — अल्लाह ऐसा ही करेगा।

जानी — मगर आज़ाद का सा दूल्हा भी किसी ने कम देखा होगा।

नाजुक — लाखों कुओं का पानी पी चुके हैं।

बहार — बड़े खुशमिजाज आदमी मालूम होते हैं।

जानी — इस वक़्त हुस्नआरा के दिल का क्या हाल होगा?

नाजुक — चौथी के दिन हम ताक-ताक निशाने लगाएँगे।

रूहअफजा — आज़ाद से कोई न जीत पाएगा।

जानी — कौन! देख लेना बहन, अगर हारी न बोलें जभी कहना। वह अगर तेज हैं, तो हम भी कम नहीं।

अन्त

प्रिय पाठक, शास्त्रानुसार नायक और नायिका के संयोग के साथ ही कथा का अंत हो जाता है। इसलिए हम भी अब लेखनी को विश्राम देते हैं। पर कदाचित कुछ पाठकों को यह जानने की इच्छा होगी कि ख्वाजा साहब का क्या हाल हुआ और मिस मीडा और मिस क्लारिसा पर क्या बीती। इन तीनों पात्रों के सिवा हमारे विचार में तो और कोई ऐसा पात्र नहीं है जिसके विषय में कुछ कहना बाकी रह गया हो। अच्छा सुनिए। मियाँ खोजी मरते दम तक आज़ाद के वफादार दोस्त बने रहे। अफीम की डिबिया और करौली की धुन ने कभी उनका साथ न छोड़ा। मिस मीडा औ मिस क्लारिसा ने उर्दू और हिंदी पढ़ी और दोनो थियासोफिस्ट हो गईं। दोनों ही ने स्त्रियों की सेवा करना ही अपने जीवन का उद्देश्य बना लिया। क्लारिसा तो कलकत्ता की

तरफ चली गई, मीडा बंबई से लौट कर आज़ाद से मिलने आई तो आज़ाद ने हँस कर कहा – अब तो थियासोफिस्ट हैं आप?

मीडा – जी हाँ, खुदा का शुक्र है कि मुझे उसने हिदायत की।

आज़ाद – तो यह कहिए कि अब आप पर खुदा का नूर नाजिल हुआ। इस मजहब में कौन-कौन आलिम शरीक हैं?

मीडा – अफसोस है आज़ाद, कि तुम थियासोफी से बिलकुल वाकिफ नहीं हो। इसमें बड़े-बड़े नामी आलिम और फिलासफर शरीक हैं, जिनके नाम के इस वक़्त दुनिया में झंडे गड़े हुए हैं। यूरोप के अकसर आलिमों का झुकाव इसी तरफ है।

आज़ाद – हमने सुना है कि थियासोफी वाले रूह से बातें करते हैं। मुझे तो यह शोबदेबाजी मालूम होती है।

मीडा – तुम इसे शोबदेबाजी समझते हो?

आज़ाद – शोबदा नहीं तो और क्या है, मदारियों का खेल?

मीडा – अगर इसका नाम शोबदा है तो न्यूटन और हरशेल भी बड़े शोबदेबाज थे?

आज़ाद – वाह, कहाँ न्यूटन और कहाँ थियासोफी। हमने सुना है कि थियासोफिस्ट लोग गैब का हाल बता देते हैं। बंबई में बैठे हुए अमेरिकावालों से बिना किसी वसीले के बातें करते हैं। यहाँ

तक सुना है कि एक साहब जो थियासोफिस्टों में बहुत ऊँचा दरजा रखते हैं वह डाक से खत न भेज कर जादू से भेजते हैं। वह खत लिख कर मेज पर रख देते हैं और जिन लोग उठा कर पहुँचा देते हैं।

मीडा — तो इसमें ताज्जुब की कौन बात है? जो लोग लिखना-पढ़ना नहीं जानते वह दो आदमियों को हरफों से बातें करते देख कर जरूर दिल में सोचेंगे कि जादूगर हैं। जिस तरह आपको ताज्जुब होता है कि मेज पर रखा हुआ खत पते पर कैसे पहुँच गया उसी तरह उन जंगली आदमियों को हैरत होती है कि दो आदमी चुप-चाप खड़े हैं, न बोलते हैं, न चालते हैं, और लकीरों से बातें कर लेते हैं। अफ्रीका के हबशियों से कहा जाय कि एक मिनट में हम लाखों मील पर बैठे हुए आदमियों के पास खबरें भेज सकते हैं तो वे कभी न मानेंगे। उनकी समझ में न आएगा कि तार के खटखटाने से कैसे इतनी दूर खबरें पहुँच जाती हैं। इसी तरह तुम लोग थियासोफी की करामात को शोबदा समझते हो।

आज़ाद — तुम मेस्मेरिज्म को मानती हो?

मीडा — मैं समझती हूँ, जिसे जरा भी समझ होगी वह इससे इनकार नहीं कर सकता।

आज़ाद — खुदा तुमको सीधे रास्ते पर लाए, बस और क्या कहूँ।

मीडा — मुझे तो सीधे रास्ते पर लाया। अब मेरी दुआ है कि खुदा तुमको भी सीधे ढर्रे पर लगाए।

आज़ाद — आखिर इस मजहब में नई कौन सी बात है।

मीडा — समझाते-समझाते थक गई मगर तुमने मजहब कहना न छोड़ा।

आज़ाद — खता हुई, मुआफ करना, लेकिन मुझे तो यकीन नहीं आता कि बिना किसी वसीले के एक दूसरे के दिल का हाल क्योंकर मालूम हो सकता है। मैंने सुना कि मैडम व्लेवेट्स्की खतों को बगैर खोले पढ़ लेती हैं।

मीडा — हाँ-हाँ, पढ़ लेती हैं, एक नहीं हजारों बार मैंने अपनी आँखों देखा है और खुदा ने चाहा तो कुछ दिनों में मैं भी वही करके दिखा दूँगी।

आज़ाद — खुदा करे, वह दिन जल्द आए। मैं बराबर दुआ करूँगा।

यह बातें हो रही थीं कि बैरा ने अन्दर आकर एक कार्ड दिया। आज़ाद ने कार्ड देख कर बैरा से कहा — नवाब साहब को दीवानखाने में बैठाओ, हम अभी आते हैं।

मीडा ने पूछा — कौन नवाब साहब हैं?

आज़ाद — मिर्जा हुमायूँफर के छोटे भाई हैं, जिनके साथ सिपहआरा की शादी हुई है।

मीडा — तो यों कहिए कि आपके साढे हैं। तो फिर जाइए। मैं भी उनसे मिलूँगी।

आज़ाद — मैं उन्हीं यहीं लाऊँगा।

यह कहते हुए आज़ाद दीवानखाने की तरफ चले गए।

•••